www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चेतना की शिखर यात्रा

संसिद्धि खण्ड

तृतीय भाग

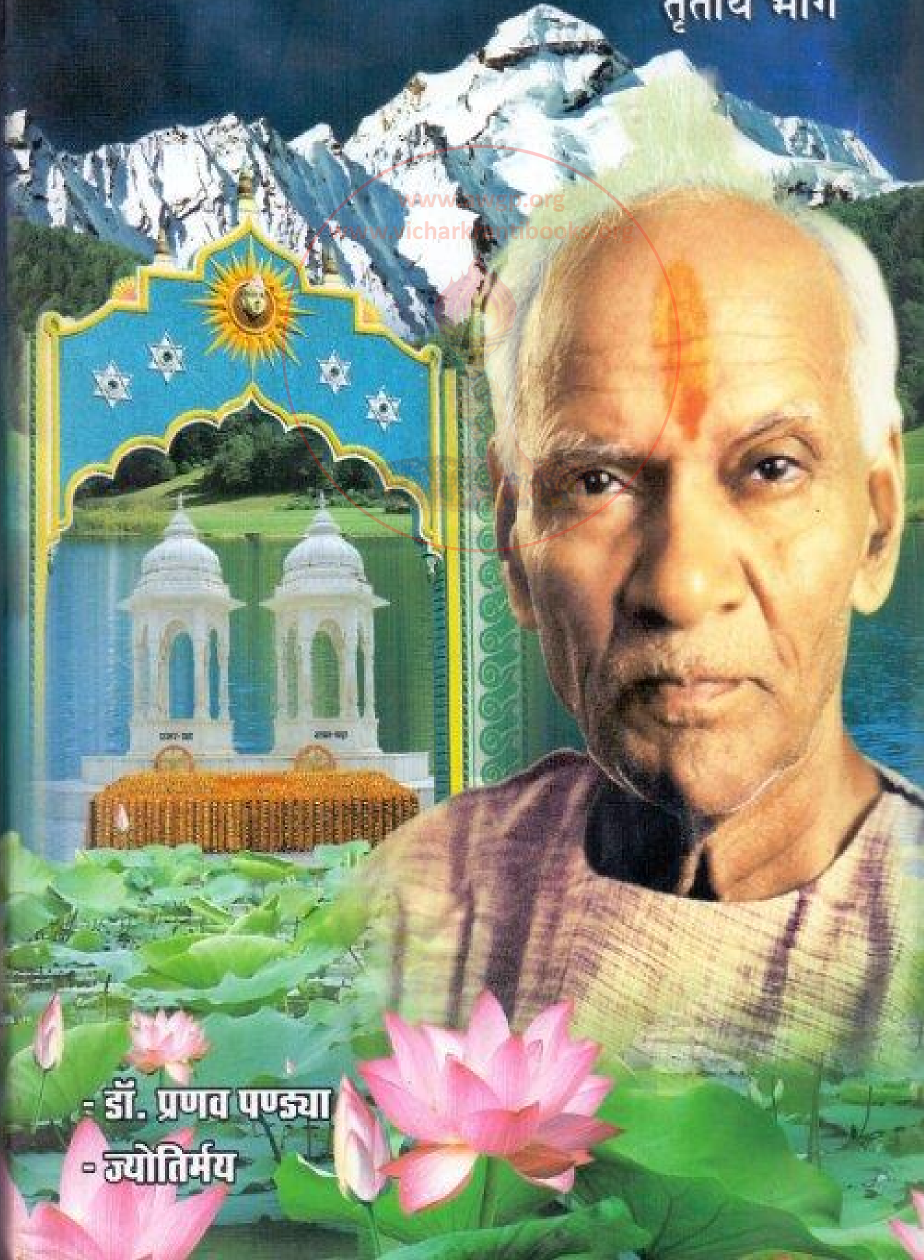

- डॉ. प्रणव पण्ड्या
- ज्योतिर्मय

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चेतना की शिखर यात्रा

(पं० श्रीराम शर्मा आचार्य : एक असमाप्त जीवनी)

तृतीय भाग

संसिद्धि खण्ड

लेखक

डॉ० प्रणव पण्ड्या

ज्योतिर्मय

प्रकाशक

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)

शान्तिकुञ्ज हरिद्वार

उत्तराखण्ड

पुनरावृत्ति सन्- 2013 मूल्य-150/-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लेखक

डॉ. प्रणव पण्ड्या

ज्योतिर्मय

प्रकाशक

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट(TMD)

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रथम खण्ड का प्रकाशन

गीता जयंती 26 दिसम्बर 2001

द्वितीय खण्ड

गुरु पूर्णिमा 13 जुलाई 2003

तृतीय खण्ड 15 जुलाई 2011

मूल्य- रु. 150.00

पत्र व्यवहार का पता

गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

249411

फोन:01334 260602 फैक्स: 01334 260866

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अंगुलिया थम जाती हैं, चिन्तन अवरुद्ध हो जाता है जब अपनी आराध्य सत्ता, जिसने हमें ढाला, सही अर्थों में मानव बनाकर हमारा जीवन धन्य बनाया, उनके जीवन पर कुछ लिखने की बात आती है। लेखन एक शगल है, व्यसन है, एक कला है, यह सुना है। पर लेखन मूर्च्छितों में भी जान डालकर उन्हें उठाकर खड़ा कर देता है, यह देखा है। युगऋषि आचार्य श्री ने अपनी कलम पंद्रह सोलह वर्ष की आयु में ही उठा ली थी। ग्रामवासियों-परतंत्र देशवासियों को चेतावनी देने का काम उनका लेखन व काव्य करता रहा। "सैनिक" समाचार (आगरा) के १९३१ से १९४० तक वे कार्यकारी सम्पादक रहे। पर जो कार्य उनने १९३७ में आँवलखेड़ा की छोटी सी कोठरी में "अखंड ज्योति" पत्रिका के माध्यम से आरंभ किया, वह एक सुदृढ़ स्थापना के रूप में आगे बढ़ा एवं उनके मथुरा (१९४१ से १९७१) एवं हरिद्वार (१९७१ से १९९०) के प्रवास में गायत्री परिवार की स्थापना का मूल आधार बना। उसी ने गायत्री मिशन खड़ा किया है, इसमें कुछ भी अत्युक्ति नहीं है।

जब हमने आज से १० वर्ष पूर्व गीता जयंती २०५८ मे "चेतना की शिखर यात्रा" युगऋषि की एक असमाप्त जीवनी का प्रथम खण्ड प्रस्तुत किया था तब सोचा तो था कि जब तक वे शक्ति देंगे उन पर लेखन जारी रहेगा, पर समय का अनुमान नहीं था। उनकी दी गई सभी जिम्मेदारियों को पूरा करते हुए यह काम भी करना था। इस काम में जो रस आता रहा, उसने लेखनी के प्रवाह को टूटने नहीं दिया। बार-बार श्री गीताजी का संदर्भ याद आता रहा, जिसमें श्रीकृष्ण कहते हैं-

मच्चित्ता मद्‌गत प्राणा बोधयन्तः परस्परम्।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च॥ १०/९

"निरन्तर मुझमें मन लगाने वाले और मुझमें ही प्राणों को अर्पण करने वाले भक्तजन मेरी चर्चा द्वारा आपस में मेरे प्रभाव को जनाते हुए तथा गुण और प्रभाव सहित मेरा कथन करते हुए ही निरंतर संतुष्ट रहते हैं और मुझ वासुदेव में ही ही निरंतर रमण करते हैं।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनकी चर्चा करना, मन में उनके कथा प्रसंगों की बार-बार स्मृति लाना शिष्य के लिए एक पाथेय है। वह स्मरण भक्ति को-समर्पण को पोषण तो देता है, साथ ही जीवन यात्रा को सरल और ऊर्ध्वगामी भी बनाता है। फिर नवधा भक्ति की दूसरी भक्ति याद आयी जो श्रीराम ने शबरी को बताई थी- ''दूसरी रति मम कथा प्रसंगा''-मेरे कथा प्रसंगों में ही निरत रहते हुए मेरे ही गुणों का गान करो। यह सब स्मरण होते ही लगा कि जो भी सौभाग्य मिला है उसे पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाना है। प्रथम खंड को परिजनों ने हाथोंहाथ लिया। औपन्यासिक शैली में गुरुवर की जीवनी पहली बार आयी थी। कई गुह्य कथा प्रसंग इसमें थे जिनके लिए व्यापक शोध की गई थी। दूसरा खण्ड (समर खण्ड) आचार्यश्री की घीयामंडी मथुरा से आरंभ हुई यात्रा एवं वहीं से १९७१ में विदाई तक केन्द्रित था। यह अवधि भी ऐसी थी जिसमें कई अविज्ञात प्रसंग जानने को मिले जो हमने यदाकदा पूज्यवर के श्रीमुख से निकलने पर डायरी में नोट किए थे अथवा तत्कालीन वरिष्ठ भाईयों से चर्चा के दौरान जानने में आये थे। आज का गायत्री परिवार कहाँ से आरंभ हुआ और कैसे मत्स्यावतार की तरह विराट रूप लेता चला गया, इसकी झांकी यह खंड देता है। वे एक यति थे, योद्धा थे जो अपनी बात को जन जन के हृदय पर स्नेह की स्याही से लिखने की कला जानते थे। अपने गुरु के प्रति उनका समर्पण अति प्रगाढ़ स्तर का था। उसी का प्रताप था कि वे एक विराट संगठन की सर्जना करते चले गए। १९४९-५० से १९७१ तक की उनकी जीवन यात्रा का साक्षी है यह खंड जिस पर हम लोगों ने अपनी लेखनी चलाकर अपने समर्पण के पुष्प उन पर अर्पित किए। गुरुपूर्णिमा २००४ को ये पुष्प समर्पित हुए।

इसके बाद की घड़ी संघर्षमय रही है। सभी को अचरज होगा कि क्या अन्यमनस्कता आड़े आ गई या प्रमाद हावी हो गया कि सात वर्ष के अंतराल बाद यह तृतीय खण्ड (संसिद्धि खंड) आपकी सेवा में गुरुपूर्णिमा २०११ पर देने की स्थिति में आ सके हैं। ऐसा थोड़ा कुछ हो भी सकता है पर सबसे बड़ी एवं महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे चरित्र नायक, लीलापुरुष, इस परिवार के अधिष्ठाता के जीवन का एक एक क्षण ऐसी वैविध्यपूर्ण घटनाओं का संसार है कि उसे कथाक्रम में गूंथना एक मालाकार द्वारा माला रूप में प्रस्तुत करने के समान है। एक और बड़ी समस्या थी कि उस काल खण्ड (१९७१ से १९८३) में कार्यरत परम पूज्य गुरुदेव के अंग अवयवों की जो उनके साक्षी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
बने थे। कहीं कोई थोड़ी सी भी चूक होने पर अंगुली उठने और अश्रद्धा उपजने का डर था।

कलम वे चलाते रहे, शक्ति वे देते रहे, कथा प्रवाह का सृजन भी वे ही करवाते रहे एवं अब जाकर यह कार्य पूरा हो पाया है, जिसे हमने प्रारंभ में ही "असमाप्त जीवनी" कहा है। "हरि अनंत हरि कथा अनंता" की तरह उनके जीवन को यदि विश्व कोश का रूप दिया जाये तो भी वह अधूरा ही रहेगा। उनके चौबीस घंटे के जीवन में विश्राम मात्र चार घंटे का ही होता था। वह भी योगनिद्रा स्तर का, जिसमें वे लोक लोकान्तरों की यात्रा कर आते थे। अगणित परिजनों का योगक्षेम वहन करते थे। पर बीस घंटों का यदि कभी कोई आकलन करे तो ही जान पायेगा कि किस तरह उन्होंने समय का सुनियोजन कर इतने विपुल परिमाण में साहित्य रच डाला। इसी अवधि में वे हिमालय की एवं विदेश की यात्रा भी कर आये। यही अवधि है जिसमें उनने १६ से २० वर्ष की सुकोमल कन्याओं को देवकन्याओं के रूप में गढ़ा एवं नारी शक्ति की प्रवक्ता के रूप में जन-जन के समक्ष खड़ा कर दिया। उनका पाण्डित्य देखकर लोग दाँतों तले अंगुली दबाने लगे। गहन स्तर का प्रशिक्षण, प्राण प्रत्यावर्तन सत्रों द्वारा शक्तिपात, प्रज्ञापुराण का सृजन, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान को इक्कीसवीं सदी का धर्म प्रस्तुत करने के लिए खड़ा करना, सत्तर वर्ष की आयु में स्वयं सारे देश के गाँव-गाँव और जनपदों कस्बों में जाकर शक्तिपीठों की स्थापना करना, जन जन में साधना के बीज बोना आदि कार्य इसी कालखंड में हुए। कैसे कोई इन्हें छपे पन्नों की परिधि में बंद कर सकता है। उन घटनाक्रमों को कलम रोककर लिखा, बार-बार संपादित किया तब यह कलेवर बना है। मात्र उनके शक्तिपीठ प्रवास-भूमि पूजन संकल्प तथा प्राण प्रतिष्ठा प्रवास से जुड़े संस्मरणों पर ही एक पूरा खंड लिखा जा सकता है। इससे कल्पना की जा सकती है उस महापुरुष के व्यक्तित्व के विराट स्वरूप की।

हम दोनों को यह सौभाग्य मिला कि हमने उनका निकट का सान्निध्य पाया। गंगा की गोद-हिमालय की छाया में उनके पास बैठने का पावन अवसर मिला। साक्षात आग के पास बैठने की अनुभूति थी यह। सौभाग्य औरों को भी मिला होगा पर जो भी देखा वह अंदर तक गहरी छाप छोड़ता चला गया। स्वयं की आपबीती एवं औरों के जीवन से जुड़ी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

घटनाओं को कई बार लिखा और काटा। यह लेखन संपादन भी तो उन्होंने ही हाथ पकड़कर सिखाया था। नहीं तो जीवन यात्रा ऐसे ही आमजनों की तरह कट रही होती।

एक संवेदनशील कालावधि के संस्मरणों को लिपिबद्ध करने में समय लगा। साथ साथ देश-विदेश के दौरे भी हुए। युवा चेतना को एक जुट कर एक नयी शक्ति का सृजन देश विदेश में हुआ। ये सारे कार्य एक साथ चलते रहे। यह किसी प्रकार का बहाना नहीं है कि यह खण्ड इन कारणों से विलम्ब से प्रकाशित हो रहा है। यह मात्र निवेदन है और स्थिति का आकलन है कि इस संसिद्धि खंड को जब आप स्वयं पढ़ेंगे तो एक मिशन की यात्रा से सही अर्थों से रूबरू होंगे। इस प्रस्तुतीकरण के लिए यह विलम्ब स्वाभाविक भी था। आशा है परिजन पाठक इस दीर्घ अंतराल को अन्यथा न लेंगे। गुरुवर के व्यक्तित्व के कतिपय पक्षों और घटनाक्रमों को स्पष्ट करने के लिए उनसे जुड़े कुछ नाम दिये गये हैं। कई नाम इनमें नहीं भी है। इसमें उनकी अवमानना नहीं है। मात्र यही कि आगे जब भी अगले खंड प्रकाशित होंगे, यथाप्रसंग उनके नाम भी जुड़ते चले जायेंगे। संपादन लेखन हमने किया है, ऐसा मानते हैं तो सभी त्रुटियों के लिए क्षमा करेंगे। यदि उन्होंने ही करवाया है तो इसे एक शिष्य भाव से लेंगे। गुरु पूर्णिमा पर्व पर इस अति महत्वपूर्ण खंड को प्रस्तुत करते हुए हमें भारी हर्ष है। प्रस्तुत है यह पुष्पांजलि-

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गुरुपूर्णिमा — **डॉ० प्रणव पण्ड्या**

संवत् 2068 (15 जुलाई 2011) — **ज्योतिर्मय**

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुक्रम

1. परिवर्तन का सूत्रपात ---------------------------- 11
• निकट आई गंगा • यज्ञ प्रभु के चरणों में • माँ के प्रणाम
• संन्सासी की दीक्षा कामना • कहां चले गए श्रीराम

2. चुनौतियां और मार्ग ---------------------------- 27
• विछोह की प्रेरणा • स्नेह और ऊर्जा का संचार • प्रतिबंध से अवकाश
• उथल पुथल का वह दौर • संकट का संदेश • चुपचाप आता बदलाव

3. अदृष्ट का निर्धारण ---------------------------- 48
• संपर्क का उपाय • संकट का अध्यात्म उपचार • इस पहल के तहत
• अनसुलझा रहस्य • पंचाक्षरी मंत्र और नाम
• जिन खोजा तिन पाइंया • विवाह आंदोलन की दिक्कतें

4. गुरुदेव की वापसी ---------------------------- 66
• हृदय रोग का आक्रमण • उत्कट अभिलाषा
• माताजी अभी चौबीस वर्ष और • निमित्त मात्र भव
• भावी योजनाएं • प्रचार न किया जाय

5. अफ्रीकी देशों में उद्घोष ---------------------------- 81
• लहरों के पार यात्रा • प्रवासी भारतीयों के लिए भी
• अफ्रीका और भारत की लुप्त कड़ियां • चौदह दिन में नई भाषा
• रोग मुक्ति की सामर्थ्य • जहाज ने रुख बदला
• खूंखार आदिवासियों का समर्पण • वायवीय शरीर से संपर्क
• ज्वाला मुखी पर अभय • सूर्य विज्ञान के प्रयोग

6. प्राण प्रत्यावर्तन सत्र ---------------------------- 102
• परिवार में मौजूद विघ्न • कुंडलिनी कल्पना
• अनुशासन से फलित साधना • हृदय में दीप जल
• चौबीस सिद्धों के सुरक्षित शरीर • भाव भरी अध्यात्म सेवा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

7. कुंभ पर्व का रहस्य ---------------------------------- 116

• अभिनव गंगावतरण • स्नान पर विवाद • अमृत दर्शन

8. विक्षोभ के वर्ष -- 129

• दिव्य आवरण • असंतोष का उबाल • राजनीति का संकट

• विशिष्ट साधना • अंधेरे में रोशनी का आह्वान • रामकथा से विश्राम

9. युवा धर्म की परख ---------------------------------- 146

• आपत्ति का समाधान • वानप्रस्थी की गिरफ्तारी • नई क्रांति की दीक्षा

• भागो नहीं बदलो • सरकार ने भी अपनाए कार्यक्रम

• हाथ से लिखने का पुण्य

10. रघुवर के गुन गाओं -------------------------------- 162

• कुपित हुए विद्वज्जन • वानप्रस्थी से समाधान • पोथियां छोड़ी

11. अनुभव और ऊर्जा का संगम ------------------------ 175

• आखिरी बार पत्थर • अनिष्ट ग्रहों का उपचार • पिता स्वयं रक्षक है

• सबसे बड़ी घटना • हार नहीं मानेंगे

12. कन्याओं का दैवी दायित्व ------------------------- 188

• महिलाओं का विद्या हठ • नवरात्र में आह्वान

• पुत्री के रूप में माँ • सभी दिशाओं में शान्तिकुञ्ज

• उदात्त भाव की जीत • घणी खमा बापजी

13. शक्तिरूपेण संस्थिता ---------------------------- 201

• व्यथा घुलने लगी • यात्रा करो-प्रवासी बनो • वैरागी की याद

• महिला वर्ष और दशक।

14. अवतार प्रक्रिया का रहस्य ------------------------ 215

• सुध लेने का आदेश • युगों का मर्म • अवतार तत्व की अनुभूति

• आहुतियों की दिव्य गंध • हनुमान का आदेश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

15. राजनीति से हटकर ---------------------------- 232
• राजधर्म निभाइए • नेता नहीं स्वयंसेवक • समर्थन की निराशा
• धर्मभावना का प्रभाव • बद्रीनाथ का जीर्णोद्धार • सेवा कोई भोग नहीं

16. विडम्बना और तथ्य ---------------------------- 248
• अपने ही कर्मों का साथ • वेदशास्त्रों का अध्यात्म-भाष्य
• आसन सिद्धि का रहस्य • कुण्डलिनी भस्म हुई • पिछले जन्म की याद
• गुरु भगवान से सावधान • दंड भोग लूंगा

17. गायत्री योग का प्रवर्तन ---------------------------- 265
• विष्णु की तपस्थली • सिद्धाश्रम की यात्रा • निर्बाध अस्तित्व
• सबके लिए उपयोगी साधन • विधान

18. कुछ अदृश्य पन्ने ---------------------------- 278
• सिद्धों से संचालित संग्राम • ह्यूम का रहस्योद्घाटन
• भूमि पर रक्षा विधान • एक ही जीवन में दूसरा जन्म

19. साधना स्वर्ण जयंती ---------------------------- 289
• मान्यता के मोहताज नहीं • समाधान की फिक्र नहीं
• यह भी भगवान का काम • समर्थन और विरोध भी
• शास्त्र सम्मत गायत्री योग

20. जल उपवास : प्रक्षालन प्रयोग ---------------------------- 304
• चौबीस वर्ष पुरानी याद • रमता जोगी तपता तपसी • परमहंस के संकेत
• पाप तापों का शमन • साधकों का परिमार्जन • चेन्ना रेड्डी को प्रेरणा

21. यथार्थ की कसौटी पर विश्वास ---------------------------- 319
• आकार लेता अभियान • अद्भुत एकाग्र तन्मयता
• अवधूत का सहयोग • प्रयोगशाला के लिए यंत्र • क्षय का यज्ञ उपचार
• प्रत्यक्ष को क्या प्रमाण • आराम भी एक काम
• साधना प्रयोगों के प्रतिबंध • प्रज्ञापुराण का वाचन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

22. प्रज्ञावतार के लीला केन्द्र ---------------------------------- 337
• मिशन से मुक्ति • शिष्य समर्पित • शिव का विक्षोभ
• विधि व्यवस्था की शोध • पहला शक्तिपीठ • तांत्रिकों का मेला
• सिद्धपीठों की प्रासंगिकता • माँ तारा की वापसी • प्रवास और स्थगन

23. गायत्रीतीर्थ : जहाँ लोग तर जाते हैं ----------------- 359
• ज्योतिर्विद्या का उन्मेष • आश्रम का नया रूप
• पूर्व जन्म की स्फुरणा • व्यसन के लिए द्वार बंद • महाकाल का नीड़

24. सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा ------------------------ 377
• आश्वासन • पूछें या न पूछें ? • गंगा की गोद में
• नया रूप कुछ दिनों बाद • यात्राओं को विराम

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

25. सूक्ष्म में प्रवेश ---------------------------- 386
• सीमित संपर्क • युगसंधि की वेला • गुरुदेव हर जगह
• अहं पर विजयी अनुग्रह • शताब्दी अंत के संकट
• प्रतीति की भावभूमि • अपवादों का क्षरण • प्रतिभा और अमानत

चित्र सूची

• प्रारंभिक दिनों में शान्तिकुञ्ज में ------------------------ 16-17
• विदेश प्रवास पर गुरुवर ---------------------------- 48-49
• नयनाभिराम शान्तिकुञ्ज ---------------------------- 80-81
• शान्तिकुञ्ज में सक्रिय आचार्य श्री की सत्ता -------------- 112-113
• विशिष्ट अभ्यागत गुरुवर के साथ -------------------- 144-145
• शान्तिकुञ्ज में प्रवचन, चिंतन, मनन, अध्ययन-अध्यापन ----- 176-177
• शक्तिपीठों के उद्घाटन हेतु आचार्य श्री का भारत प्रवास ------ 208-209
• वं. माताजी को कार्यभार सौंपते गुरुवरः सूक्ष्मीकरण की भूमिका -- 240-241

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक
परिवर्तन का सूत्रपात

पूर्व में लालिमा बिखेरते हुए सूरज ने झांका था। कलकल बहती हुई गंगा की धारा में उसकी स्वर्णिम आभा झिलमिलने लगी थी। सविता का अभिवादन करते हुए वृक्ष झूम रहे थे और कलरव करते हुए पक्षियों ने उसके स्वागत में जैसे कोई गान शुरू किया हुआ था। आषाढ़ में बहने वाला मंद समीर गंगा के तट पर लगे पुष्प पादपों और उपवनों से गंध बटोर कर यहां वहां बिखेर रहा था। तट पर बैठे जप-तप करते साधकों को भी प्रतीत हो रहा था कि नया दिन शुरु हुआ है और प्रकृति उत्सव मना रही है। उत्सव के रंग हरिद्वार के सप्त सरोवर क्षेत्र में बने शान्तिकुञ्ज में पूरी छटा के साथ बिखर रहे थे। वहां उत्साही साधकों का समूह एकत्रित हो रहा था। लोग आते ही जा रहे थे। पहले आए साधक आश्रम में जहां जगह मिली ठहर गए थे और नए आगंतुक प्रवेश द्वार पर कुछ देर ठिठक कर आश्रम की ऊपरी मंजिल की ओर दोनों हाथ उठाकर प्रणाम की मुद्रा मे खड़े हो जाते, कुछ देर रुकते और फिर आगे बढ़ जाते।

यह २१ जून १९७१ की सुबह थी। अभी हाल में ही बनकर तैयार हुए शान्तिकुञ्ज में उत्सव का माहौल था। शांत उत्सव। लोग उत्साहित थे, आतुर भी लेकिन उनकी उपस्थिति कोई कोलाहल नहीं रच रही थी। वे कुछ समय और अपने इष्ट आराध्य के सान्निध्य में रह लेने की आकांक्षा से यहां पहुंचे थे। पांच दिन पहले मथुरा में आरंभ और कल ही संपन्न हुए विदाई सम्मेलन से परिजनों तक यह संदेश अच्छी तरह पहुंच गया था कि गुरुदेव से मथुरा में अब भेट नही हो सकेगी। बहुतों को तो यह भी लग रहा था कि गुरुदेव से अब कभी भेंट नहीं हो सकेगी। गुरुदेव ने अपने संदेश में यद्यपि कहा था कि वे प्रत्यक्ष रूप से जा रहे है लेकिन परिजन उन्हें हमेशा अपने आसपास ही अनुभव करेंगे। मथुरा में और क्षेत्र में वे सशरीर नही होंगे लेकिन उनकी उपस्थिति और सन्निधि अब की तुलना में और गहन रहेगी। इस आश्वासन के बावजूद भावुक स्तर के परिजन शान्तिकुञ्ज पहुंचे थे। उनमें कुछ तो विदाई सम्मेलन का उद्बोधन पूरा होते ही यहां आ गए थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
गुरुदेव और माताजी कल शाम ही आठ बजे के आसपास शान्तिकुञ्ज पहुंचे थे। यहां पहुंचते ही माताजी ने अखंड दीपक की स्थापना की थी। पहली मंजिल पर बने गर्भगृह में आदिशक्ति वेदमाता की छवि पहले ही विराजित थी। अखंड दीपक की स्थापना के समय वहां गुरुदेव और माताजी के साथ देवकन्याएं थीं। नीचे परिसर में मथुरा के विदाई सम्मेलन से और सीधे क्षेत्र से आए परिजन हाथ बांधे गायत्री मंत्र का जप कर रहे थे। भाव जगत में गहरे उतर गए परिजनों ने अनुभव किया कि वे भी अखंड दीपक के सामने खड़े मातृसत्ता की आराधना कर रहे हैं। मार्गदर्शक सत्ता के प्रतीक दीपक का आलोक उन्हें भी सराबोर कर रहा है।

परिसर में जप ध्यान कर रहे परिजनों में कुछ ने आकाश की ओर नजरें उठाई और देखा नभमंडल में तारे टिमटिमा रहे हैं। अमावस्या से एक दिन पहले की निशा ने काली चादर ओढ़ ली है और उस पर टंके हुए तारे इस तरह झिलमिला रहे हैं जैसे कोई दैवी सत्ता इस क्षण की साक्षी बन रही हो। शान्तिकुञ्ज में जो क्षण घट रहा था, उसे देख कर वह सत्ता मानो पुलकित हो रही हो। परिजन जप ध्यान में निरत थे कि यकायक आकाश में जैसे बिजली कौंधी। उसका तेज प्रकाश परिसर में लपका और बादलों की गड़गड़ाहट सुनाई दी। क्षण भर पहले तो आसमान साफ था। बादलों की एक हलकी सी टुकड़ी भी नहीं थी। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी मास शिवरात्रि की उस निशीथ वेला में क्षण भर पहले रात्रि की देवी आनंद मनाती दिखाई दे रही थी। क्षण भर बाद ही पता नहीं किस दिशा से बादल आ गए और गरजने लगे, विद्युन्मालिका के रह-रह कर कौंध जाने का रहस्य भी परिजनों को समझ नहीं आया। जानने के लिए उन्होंने आंखे खोली और आकाश की तरफ देखा। वहां उन्हें विचित्र दृश्य दिखाई दिए। बिजली की चकाचौंध लुप्त हो गई थी और तारों की चमक भी फीकी होने लगी थी। वे दिखाई दे रहे थे, इसका आशय था कि बादलों ने तो अपनी उपस्थिति कही भी नहीं बनाई थी। कुछ समझें इससे पहले ही परिजनों ने अनुभव किया कि आकाश में एक त्रिशूल प्रकट हुआ है। त्रिशूल की उस आकृति में फलक के पास एक डमरू भी बंधा हुआ है। निरभ्र आकाश में वह त्रिशूल आरती की तरह गति कर रहा है।

त्रिशूल की आकृति स्पष्ट होते ही तत्क्षण जटाजूट धारी एक संन्यासी की आकृति स्पष्ट होने लगी। उस आकृति ने त्रिशूल ग्रहण कर रखा था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिजनों को बोध होने में क्षण भर भी नहीं लगा कि सदाशिव महाकाल ही इस रूप में प्रकट हुए हैं। यह आभास क्षण भर के लिए ही था। जिन्हें अनुभूति हुई, उन्होंने यह भी समझ लिया कि भूत भावन भगवान महाकाल इस क्षण की दिव्य महिमा निनादित करने प्रकट हुए हैं। फिर साधकों को कुछ ही पल में सब कुछ सहज और पूर्ववत प्रतीत होने लगा। दृश्य विलीन होने पर उनमें से कुछ ने एक दूसरे की तरफ देखा। कहा कुछ नहीं। उन्हें लग रहा था जैसे यह दृश्य सिर्फ उन्हें ही दिखाई दिया था। उन्होंने इस अनुभूति को दोहराया भी नहीं। एकाध ने सिर्फ इतना ही कहा-दिव्य भूमि है यह।

उस अनुभूति को अपनी चेतना में सहेजकर रखते हुए परिजन यहां वहां बिखर गए। अपना आश्रय तलाशने लगे। शान्तिकुञ्ज में तब निर्माण कार्य चल ही रहा था। मुख्य भवन में कुछ कमरों के अलावा पीछे कुछ कुटीर बने थे। कच्चे पक्के बने इन कुटीरों में भी ज्यादा जगह नहीं थी। इसलिए कुछ परिजनों ने खुले में अपनी दरी बिछाई और कुछ सप्त सरोवर क्षेत्र में चले गए जहां दूसरे आश्रमों में जगह उपलब्ध हो सकती थी।

सप्त सरोवर की बात चली तो इस क्षेत्र से थोड़ा परिचय करते हुए चलें। सात ऋषियों के लिए सात धाराओं में बंट कर उनके तप का संरक्षण करने वाली कथा प्रसिद्ध है। वह क्षेत्र गंगा की वर्तमान धारा और उसके किनारे तक ही सीमित नहीं था। पश्चिम में शिवालिक की पहाड़ियों से लेकर पूर्व में कदली वन तक गंगा का विस्तार था। जिस जगह आज शान्तिकुञ्ज है, यहां भी किसी समय भगवती गंगा सदानीरा के रूप में प्रत्यक्ष बहती थी। पौराणिक उल्लेखों और सिद्ध संतों की सम्मति में सप्तर्षि काल में तो सुनिश्चित ही। उन उल्लेखों के अनुसार यह क्षेत्र वसिष्ठ और विश्वामित्र की तपस्थली रहा है। सन १९२० तक यहां एक छोटा सा मंदिर था। उसमें दो ऋषियों की प्रतिमाएं थीं। श्रद्धालु उन प्रतिमाओं को शिव का विग्रह मानकर पूजते थे। मंदिर की देखभाल नहीं हो सकी। सन् १९२६ में आई बाढ़ में वह संरचना बह गई और दोबारा उसका निर्माण नहीं हो सका।

निकट आई गंगा

गंगा की मुख्य धारा तब कदली वन के पास बहती थी। सप्त सरोवर में रहने वालों को तब स्नान के लिए करीब दो किलोमीटर दूर जाना पड़ता था। १९६८ में गुरुदेव ने शान्तिकुञ्ज के लिए वर्तमान स्थान का चयन किया, तब भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यही स्थिति थी। जगह खरीद लेने के बाद निर्माण आरंभ हुआ। उसकी देखरेख के लिए यहां कुछ कार्यकर्त्ताओं को नियुक्त कर दिया। वे गुरुदेव के काम को पूरे मनोयोग से करते। विजन एकांत में होने वाली कठिनाइयों को निर्माण का ही एक हिस्सा मानकर वे दिन रात जुटे रहते। बस एक ही स्थिति खलती थी कि गंगा स्नान के लिए दो ढाई किलोमीटर चलकर जाना पड़ता था। इसके लिए उन्होंने किसी से कुछ कहा नहीं।

उस समय निर्माण की देखरेख कर रहे रामचंद्रसिंह बताया करते थे कि जुलाई १९६९ में गुरुदेव यहां आए। उस समय मन में सिर्फ भाव ही आया था ? कहा कुछ नहीं था। गुरुदेव ने स्वत: कहा रामचंद्र तुम लोगों को गंगा स्नान के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है न । रामचंद्र सिंह चुप रहे। उन्हें लगा कि गुरुदेव ने मन के भाव पढ़ लिए हैं। गुरुदेव फिर बोले आगे से गंगा स्नान के लिए जाना कष्टप्रद नहीं होगा। रामचंद्र सिंह समझे कि गुरुदेव शायद कुछ वाहन आदि का प्रबंध करायेंगे। या यहीं कोई झील या कुइयां बनवा देंगे। इतना कहने के बाद गुरुदेव ने निजी और पारिवारिक विषयों पर चर्चा की। निर्माण के बारे में कुछ निर्देश दिए और शाम तक रुक कर चले गए।

गंगा स्नान के बारे में गुरुदेव से हुई बातचीत कुछ ही दिनों में रामचंद्रसिंह आदि भूल गए। वे शान्तिकुञ्ज के काम में लीन हो गए। गुरुदेव के इस प्रवास के महीने भर बाद तेज बारिश हुई। गंगा में बाढ़ बाई। हफ्ते दस दिन तक सप्त सरोवर क्षेत्र में पानी भरा रहा। पुश्तों से टकाराती हुई धारा इस तरह बहने लगी कि वहीं की होकर रह गई। बाद में यही मुख्य धारा बन गई। प्रशासन ने किनारे ही घाट आदि बनवा दिए और गंगा की यही धारा मुख्य धारा बन गई। निर्माण कार्य में लगे कार्यकर्त्ताओं ने अनुभव किया कि यह गुरुदेव की कृपा से ही संभव हुआ है। उन्होंने हमारे लिए ही नहीं, उन लोगों के लिए भी गंगा मैया को समीप बहने के लिए मना लिया है जो भविष्य में शान्तिकुञ्ज आएंगे। यहां रहेंगे और कुछ दिन रहकर फिर आते जाते रहेंगे।

२१ जून को भी शान्तिकुञ्ज में रुके साधकों की जानकारी में यह तथ्य आया। वे अभिभूत हुए बिना न रहे। कुछ ने तत्काल गंगा की ओर रुख किया। भावना थी कि गुरुदेव ने उन सब पर अनुग्रह करते हुए गंगा को समीप बहने के लिए मना लिया था। वह भी करीब दो साल पहले ताकि इस अवधि में किनारे बंध सकें और घाट तैयार हो जाएं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुरुदेव को शान्तिकुञ्ज में दस दिन रुकना था। इस अवधि में यहां की व्यवस्था सुचारु बनाकर अज्ञातवास पर निकलने की योजना थी। दस दिन यहां रुकने की बात ज्यादा लोगों को पता नहीं थी। जिन्हें मालूम था, उनमें से कुछ इस अवधि में आते रहे थे। आने का उद्देश्य एक ही था कि गुरुदेव के दर्शन हो सकें। उन्हें सुनने और सान्निध्य पाने का अवसर मिले। गुरुदेव दस दिन यहां रुकने वाले थे, इसलिए कुछ साधकों ने नौ दिन के अनुष्ठान का संकल्प ले लिया। उन्होंने शान्तिकुञ्ज में ही जप तप शुरु कर दिया।

आगंतुकों में कुछ लौकिक प्रयोजन से भी आए थे जैसे मुंबई के फिल्म निर्माता बाबू भाई मिस्त्री। बाबू भाई मिस्त्री ने कई धार्मिक फिल्में बनाई थीं और वे सभी सफल रही थीं। वे अपनी टीम के साथा शान्तिकुञ्ज आए थे। उन्होंने शान्तिकुञ्ज में गुरुदेव की दिनचर्या के कई क्षणों को अपने कैमरे में उतारा। पैतीस एम.एम. की उस फिल्म में शान्तिकुञ्ज के दुर्लभ दृश्य थे। ऐसे दृश्य, जिनकी भविष्य में पुनरावृत्ति संभव नहीं। वे दृश्य आज भी बड़े दुर्लभ माने जाते हैं। उन्हें अब आधुनिक फार्मेट में बदल दिया गया है।

जबलपुर के कार्यकर्त्ता दानाभाई मेघजी राठौड़ पत्नी सहित २० जून से ही यहां पहुंचे हुए थे। वे चार दिन पहले भी यहां थे और सम्मेलन में भाग लेने के लिए ही मथुरा गए थे। कार्यक्रम पूरा होते ही यहां वापस आ गए थे। शान्तिकुञ्ज में निर्माण के समय, पेयजल की व्यवस्था का काम उनके जिम्मे था। गुजरात के एक कार्यकर्त्ता भूपेन्द्र भाई इस तैयारी से आए थे कि गुरुदेव के बाद वे भी वापस नहीं लौटेंगे। उनके पीछे-पीछे वे भी हिमालय चले जाएंगे। गुरुदेव माताजी के यहां आते ही उन्होंने अपनी भावना व्यक्त कर दी थी। उस समय गुरुदेव ने हंसकर टाल दिया था। गुरुदेव की हंसी को भूपेन्द्र भाई ने स्वीकृति माना और तीन चार दिन तक उसी भावभूमि में विचरते रहे। एक सांध्यवार्ता में उनके मन की गुत्थी सुलझी। गुरुदेव ने उसे समझाया था कि युगधर्म निबाहना ही तुम्हारा कर्त्तव्य, या गुरु का आदेश है। उसके पालन में जो कष्ट और असुविधा हो वही तप है।

यज्ञ प्रभु के चरणों में

गुरुदेव माताजी के शान्तिकुञ्ज आ जाने पर दो दिन बाद शान्तिकुञ्ज की पहली मंजिल पर स्थित गायत्री मंदिर के सामने आरती स्तवन में साधक भी आने लगे। गुरुदेव भी आरती में सम्मिलित होते थे। तब साधकों को उनके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
दर्शन और प्रणाम का अवसर मिल जाता। दस दिन की अवधि में तीन अवसर ऐसे भी आये जब शाम को चार पांच बजे के आसपास गुरुदेव नीचे उतरे। कुछ समय कार्यालय के सामने प्रांगण में रुके और शान्तिकुञ्ज आए परिजनों से बातचीत की। उनके मन में उठने वाले प्रश्नों और संदेहों का निराकरण किया। कुछ प्रसंग ऐसे भी उठे जिनमें देश दुनिया के भविष्य की चर्चा थी। उसमें नए मनुष्य की संभावना का विषय भी आ गया था। संभवतः दूसरे दौर का प्रसंग है। उसमें महायोगी श्री अरविंद के एक अनुयायी नीलरत्नम भी थे। इस प्रसंग से पहले उन्होंने गुरुदेव को कभी देखा नहीं था। शान्तिकुञ्ज के सामने से निकल रहे थे कि अचानक रुक गए और भीतर चले आए। वहां गुरुदेव परिजनों से घिरे हुए थे। नीलरत्नम ने एक झलक भर देखा कि गुरुदेव के चरणों में दंडवत लेट गए। कहने लगे कि आप ही है वह दिव्य पुरुष जिनके दर्शन मैं ध्यान में करता रहा हूँ। श्रीमां ने आपके बारे में ही संकेत किया है। उन्होंने यहां भेजा है।

गुरुदेव ने नीलरत्नम से उठने के लिए कहा और उसके कंधों पर हाथ रखा। उसे आश्वस्त किया कि तुम ठीक कह रहे हो। नीलरत्नम ने बाद में बताया कि आश्रम के सामने वह अपने आप नहीं रुके थे। निकल रहे थे और द्वार के पास से गुजर ही रहे थे कि श्रीमां की पुकार सुनाई दी। वे कह रही थी यही है महर्षि विश्वामित्र की तपस्थली। जिस यज्ञपुरुष को तुम ध्यान में देखते हो वह महासिद्ध यहीं और अभी विद्यमान है। नीलरत्नम को ध्यान की अवस्था में एक विराट् महायज्ञ होता दिखाई देता था। यज्ञस्थल पर बने कुंडों में उठती हुई ज्वालाओं से एक आकृति के दर्शन होते थे। ज्वालाओं की शीर्ष जिह्वा उस आकृति की केशराशि में बदल जाती और मध्यभाग तप्तवर्ण के मुखमंडल में रूपांतरित हो जाता था। गुरुदेव को देखते ही नीलरत्नम की चेतना में यह दृश्य कौंध उठा। वह उनके चरणों में लेट गया। दंडवत प्रणाम करने के बाद उठा तो अपलक गुरुदेव को देखने लगा। उसको चेत तब आया जब गुरुदेव ने कहा कि प्रत्यक्ष में लौटो नीलरत्नम। अपनी अनुभूति को इस तरह सार्वजनिक मत करो।

नीलरत्नम ने जिस समय गुरुदेव के सामने आत्मनिवेदन किया ठीक उसी दिन पांडिचेरी में श्रीमां ने एक साधक विमला जालान को बताया, नील अपने यज्ञप्रभु के पास पहुंच गया है। वह वहां भी नहीं रुकेगा क्योंकि वह सिद्ध संत भी उस स्थान से आगे जाने वाला है। यह संयोग इस बात का एक और प्रमाण है कि ईश्वर ने इस जगत में अपने आपको व्यक्त करने की योजना बना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आप क्या मिल गए स्वर्ग ही मिल गया।

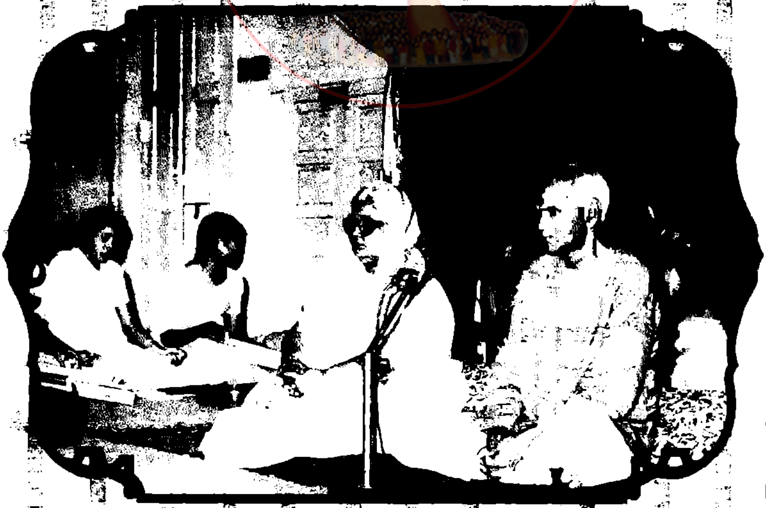

प्रभो ! प्यार का सिर पर हाथ रहे,
फिर और के दर पर जाना क्या?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आराध्य माँ गायत्री के विग्रह के साथ ऋषियुग्म (१९७१)

धन्य आपका जन्म दिवस है, धन्य–धन्य अभिराम,
देव आपके पद पंकज पर बारम्बार प्रणाम।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

१९७१–७२ के हिमालय प्रवास पर
"हिमालय पारस है, मेरा अभिभावक–संरक्षक है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जल उपवास के दिनों में पूज्यवर शान्तिकुञ्ज हरिद्वार में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ली है। वह मूर्त रूप लेने ही वाली है। फिर मनुष्य वैसा ही नहीं रह जायेगा, जैसा अभी है।

नया मनुष्य पूर्णतः स्वस्थ प्रज्ञावान और बलशाली होगा। दैन्य, रोग और शोक उसे नहीं व्यापेंगे। उसका शरीर अपेक्षाकृत कम भारी, लगभग वायवीय होगा। उसकी गति भी अब से कई गुना तीव्र होगी। ऐसे मनुष्य के अवतरण में समय लग सकता है। पचास साठ वर्ष या इससे ज्यादा भी, लेकिन यह निश्चित संभावना है। श्रीमां के इस भविष्य कथन का उल्लेख हाल ही में प्रकाशित हुई पुस्तक महायोगी श्री अरविंद, में किया गया है। जून १९७१ के अंतिम सप्ताह में श्री गुरुदेव भी शान्तिकुञ्ज में परिजनों को रोग, शोक, अभाव और अज्ञान से मुक्त मनुष्यता की संभावना के लिए आश्वस्त कर रहे थे। इस घोषणा के लगभग दस वर्ष पहले वे महाकाल की युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया का मर्म उद्घाटित करने लगे थे। अपनी मार्गदर्शक सत्ता के निर्देश पर अविज्ञात क्षेत्र में जाते हुए वे एक बार फिर यह आश्वासन दोहरा रहे थे।

अनागत की घोषणा का प्रसंग चला तो कुछ वर्ष पीछे लौटते हैं। सन् १९६८ के वसंत की घटना है, वैश्विक स्तर पर दुनिया उस समय दो खेमों में बंटी हुई थी। एक खेमा साम्यवादी था, जिसका नेतृत्व सोवियत संघ कर रहा था। दूसरा खेमा पूंजीवादी कहा जाता था और उनका नेतृत्व अमेरिका कर रहा था। दोनों देश महाशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित थे। दुनिया के तमाम देशों के पास इन दो खेमों में से किसी एक के साथ होने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। अपनी गुटनिरपेक्ष नीति के लिए प्रसिद्ध होते हुए भी भारत सरकार के वापपंथी रुझान स्पष्ट थे और यह देश सोवियत संघ के खेमे में समझा जाता था। सन् १९६६ में भारत पाक युद्ध और ताशकंद समझौते के साथ उसके समाप्त होने के बाद यह धारणा और मजबूत हो चली थी। याद रहे भारत के प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री इस समझौते के बाद जीवित भारत नहीं लौट सके थे। उनकी आकस्मिक मौत हो गई थी। इस घटना चक्र के जो भी प्रभाव परिणाम हुए हों, वे कई स्तरों पर दिखाई दे सकते हैं। एक प्रभाव तो स्पष्ट ही था किभारतीय राजनीति में पूंजीवादी साम्यवादी धाराएं चमचमाती चिंगारियां उगलती तलवारों की तरह टकराने लगी थीं।

वामपंथी और दक्षिणपंथी रुझानों में टकराव के चलते भारत में भी राजनैतिक और औद्योगिक वातावरण प्रभावित हो रहा था। उत्पादन में लगातार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गिरावट, कृषि का ह्रास राजनीति में अस्थिरता और समाज में विग्रह की काली छाया फैलती ही जा रही थी। १९६७ में अरब इजरायल युद्ध, यूनान में सैनिक तख्तापलट, अमेरिका के गांधी कहे जा रहे मार्टिन लूथर किंग की हत्या आदि घटनाएं इन टकरावों को चिह्नित करती थीं। भारत में भी जातिवाद, भाषा, प्रांत और क्षेत्रीयता का बोलबाला बढ़ रहा था। १९६६ में प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के बाद राजनैतिक अनिश्चय का दौर शुरू हो गया था। इस दौर में सर्वहारा और खुली प्रतियोगिता का द्वन्द्व इस कदर बढ़ गया कि चौथे आम चुनाव संपन्न होने के बाद भी वह थमने का नाम नहीं ले रहा था, बल्कि और बढ़ ही रहा था। उन परिस्थितियों से क्षुब्ध केन्द्रीय नेता गुलजारी लाल नंदा जनवरी १९६८ में गुरुदेव के पास मथुरा आए। वे १९६४ और ६६ में दो बार भारत के कार्यवाहक प्रधानमंत्री रह चुके थे। अपनी निर्मल और उज्ज्वल छवि के कारण संगठन और सरकार में उनकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। गायत्री तपोभूमि में गुरुदेव से उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों पर चर्चा की। स्पष्ट किया कि दुनिया विचारों और विश्वासों की टक्कर में उलझ कर रह गई है। इसका कहीं कोई अंत होता दिखाई नहीं दे रहा।

गुरुदेव ने कहा था, परिस्थितियां बदलेंगी। सूरज की तरह मुझे यह साफ दिखाई दे रहा है कि दुनिया में न साम्यवाद रहेगा और न ही पूंजीवाद। दोनों जल्दी ही क्षीण होने लगेंगे और इस सदी का अंत होने से पहले विदा हो जाएंगे। गुरुदेव ने यह बात सहज भाव से कही थी लेकिन गुलजारीलाल नंदा इससे बहुत आश्वस्त हुए थे। उन्होंने गुरुदेव की बात पूरी होते ही पूछा था, 'अगर दोनों विचारधाराएं और पद्धतियां क्षीण हो जाएंगी तो भविष्य को कौन सा प्रवाह नियंत्रित करेगा।'

गुरुदेव ने कहा था, 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद। भविष्य में यही विचार, विश्वास या प्रवाह विश्व समाज को दिशा देगा। सुनकर विभोर हो उठे थे गुलजारीलाल नंदा। उन्होंने पुलकित होकर कहा 'आप संत है। जाने माने इतिहासकार अर्नाल्ड टायनबी ने भी यही बात घुमा फिराकर कही है। उनके एक व्याख्यान की रिपोर्ट मैंने अपने सचिवालय में देखी है। उन्होंने कहा है कि इक्कीसवीं शताब्दी में जीवन के सभी क्षेत्र धर्मचेतना से संचालित होंगे। अभी जो टेक्नालाजी फैलती दिखाई दे रही है, उसका स्थान धर्म ले लेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुलजारीलाल नंदा की बात सुनकर गुरुदेव ने और स्पष्ट किया कि सभी जागृत और चैतन्य आत्माओं को इस तरह की स्फुरणा हो रही है। भगवान उनके माध्यम से सामान्य लोगों तक को भविष्य के प्रति आश्वस्त रहने का संदेश पहुंचा रहा है।'

१९६८ की इस घटना की चर्चा तीन साल बाद शान्तिकुञ्ज में फिर उठ गई थी। उथल पुथल अब भी कम नहीं हुई थी बल्कि बढ़ी ही थी। उन स्थितियों से चिंतित परिजनों को गुरुदेव का प्रस्थान और विकल कर देता था लेकिन गुरुदेव का आश्वासन उन्हें बल प्रदान करता था। दस दिन की इस अवधि में परिजनों के अलावा कुछ ऐसे लोगों का आना भी हुआ जो राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय थे। गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में वे सहयोगी सदस्यों के रूप में सम्मिलित होते थे। उनका ज्यादा समय राजनीति और समाज सेवा के क्षेत्र में ही बीतता पर वे गायत्री परिवार के संपर्क में भी रहते थे। गुरुदेव के अज्ञातवास की सूचना उन्हें भी विचलित कर गई थी। महाराष्ट्र के एक सामाजिक कार्यकर्त्ता मोहन पैठणकर ने शान्तिकुंज की एक सायंकालीन गोष्ठी में अपना परिचय दिया। वे सर्वोदय आंदोलन से जुड़े थे और एक जगह टिक कर रहने के बजाय घूम-घूम कर ग्राम स्वराज्य के विचार का प्रचार करते थे। अन्य सर्वोदयी कार्यकर्त्ताओं की तरह उन्हें भी प्रतीत होने लगा था कि राजनीति का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। वह जीवन के सभी क्षेत्रों में हावी होती जा रही है। समाज में और भी समस्याए फैली हुई हैं। मंहगाई, अभाव, बेकारी, अशिक्षा, अपराध और असुरक्षा ज्यादा बड़ी समस्या है। इनके कारण लोगों का जीवन दिनो दिन कठिन हो रहा है। लेकिन इनकी कोई चर्चा ही नहीं करता। राजनैतिक उठापटक और बनते बिगड़ते समीकरणों की चर्चा ही इतनी ज्यादा हो जाती है कि बाकी और मुद्दे पीछे छूट जाते हैं।

मोहन पैठणकर ने अपनी चिंता जताते हुए इस पृष्ठभूमि को विस्तार से नहीं रखा था। उन्होंने इतना ही कहा था कि मैंने राजनीति को नहीं, लोकनीति को अपना क्षेत्र चुना है गुरुदेव। आपके मार्गदर्शन में गायत्री परिवार जिस तरह समाज साधना कर रहा है उस से मुझ जैसे कार्यकर्त्ता को भी बहुत बल मिल रहा था। अब जबकि राजनीति और ज्यादा हावी होती जा रही है तो आपकी अनुपस्थिति हम लोगों को बहुत खलेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुदेव ने कहा स्थितियाँ सदा एक सी नहीं रहती, बदलती है और जो भगवान की पुकार सुन समझ पा रहे हैं वे अनुभव कर सकते हैं कि राजनीति के प्रभुत्व वाला युग अब समाप्त हो रहा है। कुछ ही वर्षों में, दस बीस सालों में कला, शांति और कर्मण्यता का बोलवाला होने वाला है। उसके बाद सत्व प्रधान प्रवृत्तियों का उभारत चारों ओर दिखाई देगा। मोहन पैठणकर सहित वहां उपस्थित साधकों ने अनुभव किया कि निश्चिंत हुआ जा सकता है उनके मन में उठने वाले प्रश्न और संदेह गिरने लगे थे। गुरुदेव ने उन्हें एक बार फिर आश्वस्त किया, 'निराश होने की जरूरत नहीं है। भगवान अपनी सृष्टि को हेय स्थिति में पड़ा नहीं रहने देंगे। यह हो सकता है कि संकट और विग्रह निकट भविष्य में ज्यादा घनीभूत हो। और नई समस्याएं उत्पन्न होने लगें लेकिन अशुभ छायाएं देर तक नहीं रहेंगी।'

मां के प्रणाम

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इस अवधि में दो विभूतियों का आगमन चुपचाप हुआ था। परिजनों ने उन्हें बाद में पहचाना। और हर कोई पहचान भी नहीं सका था। एक विभूति मातृशक्ति का प्रतिनिधित्व करती हुई थी। उनके प्रति श्रद्धा रखने वाले उन्हें मां कहकर पुकारते थे। वे श्वेत वस्त्र पहनती थीं और सहज ही शान्तिकुञ्ज पहुंच गई थीं। प्रशासन ने उनके आने जाने के लिए उत्कट व्यवस्था कर रखी थी। मीरा और रामकृष्ण परमहंस की तरह वे किसी भी क्षण सहज स्थिति से भाव समाधि में चली जाती थीं। चेतना के इस संक्रमण की स्थिति में उनके शरीर और स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए अनुयायियों ने परिचारिकाओं की नियुक्ति कर दी थी। वह विभूति जब भी कहीं जाती तो परिचारिकाएं साथ जाती। लेकिन शान्तिकुञ्ज में वे मात्र साध्वियों के साथ आई थीं। आमतौर पर मोटर कार का उपयोग करने वाली वह विभूति तांगे में बैठकर आई थीं और शान्तिकुञ्ज के गेट पर उतर कर सीधे ऊपर चली गई थीं। गुरुदेव तब दांई ओर वाले कक्ष में बैठे देवकन्याओं की भावी साधना और शिक्षा के बारे में चर्चा कर रहे थे। वह विभूति परामर्श कक्ष के सामने से होती हुई अखंड दीपक को प्रणाम करती हुई अर्चनाकक्ष के बाहर ही बैठ गईं। गुरुदेव ने उन्हें कक्ष के सामने से जाते हुए देखा और देखते ही पहचान लिया। माताजी से कहा मां आनंदमयी आई हैं। कहते हुए दोनों बाहर आ गए। अर्चनाकक्ष के बाहर पालथी मारकर बैठी मां को वे स्मित भाव से देखने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुरुदेव और माताजी के कक्ष से बाहर आते ही मां ने पीछे मुड़कर देखा और अर्चाग्रह को प्रणाम करती हुई खड़ी हो गईं। गुरुदेव और माताजी को उन्होंने उठकर अभिवादन किया। कहा, 'बिना बताए चली आई इसलिए हैरान तो नहीं हो न। लेकिन मैने निवेदन कर दिया था कि मैं आ रही हूँ।'

गुरुदेव ने कहा, 'सूचना मिल गई थी। आपके अभिवादन के लिए मैंने श्रीमाधव को पहले ही बुला लिया था। गुरुदेव के हाथों में भगवान कृष्ण का एक विग्रह था। कांसे से बनी हुई वह दुर्लभ प्रतिमा आगे बढ़ाते हुए गुरुदेव ने फिर कहा, आपके इन्हीं आराध्य ने आपके आगमन की सूचना दी थी मां।'

मां ने वह प्रतिमा ग्रहण की और निहारने लगीं, 'आपको बताने के लिए इन्हें वृंदावन से आना पड़ा। है न प्रभु! कहते हुए उन्होंने श्री माधव को हृदय से लगा लिया। फिर बोली, 'आप भी इन्हीं की लीलाभूमि से पधारे है ना। कहते-कहते उनकी मुख मुद्रा बदली। प्रतीत हुआ जैसे वे भाव समाधि से बाहर आ गई हो। साथ आई साध्वियों को उन्होंने नीचे ही रुकने के लिए कहा था। वे प्रतीक्षा करती हुई सीढ़ियों के पास ठहर गई थी। गुरुदेव और माताजी ने मां आनंदमयी को परामर्श कक्ष में चलने के लिए कहते हुए संकेत किया।

वे भीतर आ गई और आसन पर बैठ गई। फिर स्वगत ही कहने लगी 'याज्ञवल्क्य जब अपना आश्रम छोड़कर निर्जन में तप के लिए जाने लगे तो उन्होंने गार्गी और मैत्रेयी से कहा कि तुम इस संपदा को आपस में बांट लो। इस पर मैत्रेयी ने कहा मुझे यह संपदा नहीं चाहिए। इस संपदा को छोड़कर आप जिस वरेण्य को पाना चाहते है, मुझे उसी का अधिकार चाहिए।'

उपनिषद का यह सूत्र कह कर मां ने गुरुदेव की ओर देखा फिर कहा, 'मैं इस भूमि का स्पर्श करने आई थी। इस भूमि का जहां से भविष्य में मातृशक्ति को ब्रह्म विद्या और तेजस्वी जीवन का संदेश मिलेगा। 'जाके प्रिय न राम वैदेही-तजिए ताहि कोटि वैरी समय जदपि परम सनेही।'' कह कर मां चुप हो गई। गुरुदेव और माताजी ने कुछ कहा नहीं। चुप रहे। क्षण भर बाद गुरुदेव ने दाहिना हाथ थोड़ा सा ऊपर उठाया जैसे किसी स्वर का आह्वान कर रहे हों। उनके हाथ उठाते ही गायत्री मंत्र का गुंजन सुनाई दिया। लगा जैसे कोई जप कर रहा हो। पहले एक स्वर सुनाई दिया फिर और सुर जगे, उसके बाद और और स्वर जागने लगे। ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे उस परिसर का कण-कण गायत्री मंत्र का उच्चारण करने लगा हो। स्वर लहरियां गूंजती रही और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
धीरे-धीरे शांत होने लगी। साधक जैसे वाचिक जप से मानस और भाव जप की भूमिका में प्रवेश कर गया हो। अब वातावरण में सिर्फ गुंजन ही शेष रह गया था और धीरे-धीरे वह भी शांत होने लगा था। गुरुदेव का करतल नीचे आकर गोद में स्थिर हो गया। जप और गुंजार शांत होने के बाद मां ने आंखें खोली और हाथ जोड़ते हुए उठने लगीं। उठते-उठते वे बोली, 'आपका मंतव्य और आयोजन स्पष्ट हो गया है भगवान। यहां का कण-कण उस पराशक्ति की आराधना में लीन है। प्रतिक्षण यहां गायत्री के महापुरश्चरण संपन्न हो रहे हैं। एक-एक क्षण में हजार हजार आत्माएं भगवती की उपासना कर रही हैं।'

मां आनंदमयी उठ गई थीं । माताजी ने उन्हें कुछ मिष्ठान्न ग्रहण करने के लिए कहा तो वे बोली यह तो आदिशक्ति का प्रसाद है। कहकर उन्होंने एक टुकड़ा लिया और मुंह में रख लिया। उसके बाद अर्चाग्रह के पास गईं। वहां से तुलसी का एक पत्ता उठाया और अंजुली में रखकर कुछ देर आंखें बंद कर खड़ी रहीं। फिर उस तुलसीदल को भी मुंह में रख लिया। चलते-चलते उन्होंने गुरुदेव से कहा, 'मेरी अवस्था भी आठ दस वर्ष की रही होती तो मुझे भी आचार्यश्री की देवकन्या बनने का सौभाग्य मिल सकता होता।' कहते हुए वे ठठाकर हंस दी थीं। गुरुदेव उनके आगे-आगे सीढ़ियां उतरते हुए चल रहे थे। उन्होंने कहा, 'सभी कन्याएं आपका ही रूप हैं मां। कन्याएं ही क्यों ? अस्तित्व के अपने सभी रूपों में उसी मातृशक्ति की ही अभिव्यक्ति है।'

नीचे दोनों साध्वियां खड़ी मां की प्रतीक्षा कर रही थीं। मां के आने पर वे उनके दाएं बाएं चलने लगीं। मां को विदा करने के लिए गुरुदेव मुख्य द्वार तक गए थे। गुरुदेव को मुख्य द्वार जाते हुए जिन परिजनों ने देख लिया था, वे भी पीछे-पीछे हो लिए थे। उनमें से कई मां आनंदमयी को नहीं पहचान पाए थे। जो नहीं पहचान पाए थे, वे भी अनुभव कर रहे थे कि कोई महान विभूति है। उनके हाथ भी मां के सम्मान में प्रणाम भाव से उठ गए थे।

संन्यासी की दीक्षा कामना

एक और विभूति, एक संन्यासी स्वामी शारदानन्द सरस्वती थे। वे अपने तीन शिष्यों के साथ यहाँ आए थे। स्वामीजी की आयु अस्सी वर्ष के आसपास रही होगी। धवल केश और वैसी ही लंबी घनी दाड़ी। उनके शिष्य ही नहीं लोग भी उन्हें बाबा कहते थे। उत्तरकाशी से आए बाबा को शान्तिकुञ्ज तक छोड़ने के लिए उनके कुछ गृही शिष्य आए थे। वे अपने गुरु को यहां

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
छोड़कर वापस चले गए थे। वेश से ही नहीं बाबा निष्ठा से भी विरक्त थे। उनके पूर्व जीवन के बारे में लोगों को ज्यादा जानकारी नहीं थी। सिर्फ इतना ही मालूम था कि उन्होंने किशोरावस्था में ही घर छोड़ दिया था। वे अपने पैतृक परिवार का जिक्र कभी नहीं करते थे। जब भी कोई परिचय पूछता तो गुरु से आरंभ करते। कहते अपने पूर्व आश्रम का स्मरण नहीं किया जाता, संन्यासी की यही मर्यादा भी है।

बाबा बहुत प्रसिद्ध तो नहीं थे पर जितने भी लोग उन्हें जानते थे, वे उनमें बड़ी श्रद्धा रखते थे। कई का मानना था कि उनके मुंह से निकली बात चरितार्थ होकर रहती है। वैभव और सिद्धि की कोई कामना उनके मन में नहीं रह गई थी। शान्तिकुञ्ज भी वे बिना किसी निर्धारित कार्यक्रम के आए थे। स्वतः प्रेरणा से और तुरंत।

स्फुरणा हुई थी कि इस स्थान पर जाया जाए तो एक दिव्य महायोगी का साक्षात्कार संभव है। उनका सान्निध्य प्राप्त किया जा सकता है। स्फुरणा उठते ही वे चल दिए और शान्तिकुञ्ज पहुंचे तो गुरुदेव के दर्शन भी हो गए। भेंट के समय इच्छा जगी कि गुरुदेव से दीक्षा ली जाए। उन्होंने सीधे नहीं कहा। साथ आए साधकों की इच्छा का उल्लेख करते हुए अनुरोध किया कि मंत्रदीक्षा का एक कार्यक्रम हो जाए। गुरुदेव ने इसके लिए मना किया। पहले तो यही कहा कि मुश्किल से आठ दस दिन यहां है। इतना समय यहां की व्यवस्था बनाने और आगे की तैयारियों में ही व्यतीत हो जाएगा। किसी सामूहिक आयोजन या गोष्ठी का अवकाश नहीं है।

स्वामी शारदानंद को लगा कि दीक्षा की उनकी इच्छा पूरी नहीं हो रही है। वे अपने प्रस्ताव का औचित्य जताने की कोशिश करने लगे। उनके तर्कों में भावुकता ज्यादा थी। कहने लगे दस बारह वर्ष पहले हिमालय यात्रा से वापस लौटे थे तो आपने गायत्री यज्ञ अभियान आरंभ किया था। जगह जगह हुए यज्ञ आयोजनों में आपने हजारों लोगों को दीक्षा दी। अब आप यह क्रम बंद कर रहे हैं क्योंकि आप अज्ञातवास में जा रहे हैं। लेकिन जितने दिन यहाँ हैं, उतने दिन तो यह क्रम जारी रख सकते हैं।

गुरुदेव ने फिर समझाया कि मथुरा से रवाना होते समय ही अपनी कार्यपद्धति स्पष्ट कर दी गई थी। हमारी मार्गदर्शक सत्ता का निर्देश था कि हमारे बाद माताजी ही इस आध्यात्मिक दायित्व को निभाएंगी। दीक्षा, संरक्षण और दोष परिमार्जन अब वे ही करेंगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बाबा अपने आग्रह को फिर दोहराने ही वाले थे कि गुरुदेव ने उन्हें फिर समझाया, 'साधक को अपनी मार्गदर्शक सत्ता के निर्देशों का पालन करना चाहिए। अपनी छोटी-मोटी इच्छाएं पूरी कराने का अनुरोध नहीं करना चाहिए। किसी को यदि अपना गुरु चुन लिया है तो उसकी व्यवस्था को भी मानें। मर्यादा तो यही है। गुरुदेव का यह अनुशासन सुनने के बाद बाबा और उनके साथ आए अन्य संन्यासी अवाक रह गए थे। कुछ देर स्तब्ध से बैठे रहने के बाद बाबा ने मौन तोड़ा और कहने लगे कि हम लोग भी कैसी क्षुद्र कामनाओं के लिए संस्तुति कर रहे थे। आपको अपना तारणहार मान लिया है तो आपका दिया अनुशासन भी मानेंगे ही। उन्होंने और उनके शिष्यों ने गुरुदेव को प्रणाम किया और वहां से उठ गए।'

२१ जून के बाद एक एक कर पांच दिन खिसक गए। चार दिन और बचे थे। पांचवे दिन गुरुदेव किसी भी समय शान्तिकुञ्ज से प्रस्थान कर देंगे। परिजनों को जब भी यह बात स्मरण आती तो वे शान्तिकुञ्ज में यहां वहां देखने लगते। उनकी नजरें गुरुदेव की छवि को तलाशने लगतीं, इस आशा में दौड़ती दिखाई देती कि उनके इष्ट आराध्य वहां उपस्थित तो नहीं है। गुरुदेव को नहीं पाकर दृष्टि निराश होती और परिजन अपने आपको समझाने लगते कि गुरुदेव तो हमारे मन प्राण में बस गए हैं। अब उन्हें ढूंढ़ने की क्या जरूरत है। बावरा अहेरी मन फिर कहने लगता-प्रत्यक्ष में जो आनंद है वह सूक्ष्म और चैतन्य स्वरूप में कहां है? बुद्धि फिर फटकारती। चार दिन बाद जब गुरुदेव यहां से चले जाएंगे ता कहां ढूढ़ोगे? मन फिर कोई बहाना ढूंढ़ता और भावुक गति से बहने लगता। शान्तिकुञ्ज आए और, अभी गुरुदेव का सान्निध्य पा रहे परिजनों की यह मनोदशा थी। मथुरा में कार्यकर्त्ताओं और विदाई के बाद वहीं रुक गए परिजनों की स्थिति का सिर्फ अनुमान ही लगाया जा सकता है।

कहां चले गए श्रीराम

गायत्री तपोभूमि में गुरुदेव पिछले चौदह वर्षों से उपलब्ध थे। यज्ञ सम्मेलनों और कार्यक्रमों के दौरान जब कभी वे बाहर गए तब की बात अलग है, अन्यथा गुरुदेव नियत समय पर गायत्री तपोभूमि पहुँच जाते। २० जून से पहले तक वहां के प्रत्येक कार्यकर्त्ता को स्पष्ट था कि गुरुदेव इस समय आ जाएंगे। बाहर गए हों तो उनके आने की तिथि मालूम होती थी पर २० जून के बाद उनके पास इस तरह की सूचना और प्रतीक्षा का नितांत अभाव हो गया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
उन्होंने और शाखाओं में काम कर रहे कार्यकर्त्ताओं की आंखे लगातार भीगी रहती थी कि वे अब अपने आराध्य को इस जगह नहीं देख पाएंगे।

व्यथा वेदना घनीभूत थी। सिर्फ कराह ही नहीं निकलती थी वरना मन में तो सिसकियां उफन रही थीं। दोपहर ही गुरुदेव ने प्रस्थान किया था। माताजी ने भी विदा ली थी। चलते-चलते लीलापत शर्मा ने गुरुदेव और माताजी की पादुकाएं ले ली थी। गुरुदेव की पादुकाएं गायत्री मंदिर के गर्भगृह में दाहिनी ओर बने कक्ष में जहां जल रज रखा गया था, प्रतिष्ठित कर दी थीं। माताजी की पादुकाएं बांई ओर बने कक्ष में जहां मंत्रलेखन का संग्रह स्थापित है, रखी गई। संध्या आरती के बाद एक साधक ने भाव विह्वल कर देने वाला गीत गाया।

गीत के बोल इस प्रकार थे, 'पहले तो थी तजी अयोध्या, अब तज कर के ब्रजधाम। तुम कहां चले गए श्रीराम।' गीत के बोल तो हृदय को छूने वाले थे ही, जिस कंठ से वे निकल रहे थे उसमें भी प्राण छटपटा रहे थे। गाने वाले के मन की व्यथा पूरे वेग के साथ प्रकट हो रही थी। पादुकाओं की ओर निहारते हुए हाथ उठाकर जब वह साधक गाने लगा तो उसमें झलक रही व्यथा आरती में बैठे परिजनों के मन में जमी पीड़ा भी तोड़ गई। दोपहर को यहां से विदा हुए गुरुदेव के प्रत्यक्ष दर्शन नहीं हो पाएंगे, यह बोध गहराया और व्यथा वेदना आंखों के रास्ते बहने लगी। साधक सुबकने लगे। गाने वाले साधक का गला भी रुंध गया। उसने कुछ देर तक तो नियंत्रण रखा पर थोड़ी ही देर में बांध टूट गया। आवाज भीगने लगी और भीगते भीगते रुंध गई। कुछ पद गाने के बाद कठिनाई होने लगी। आगे गाना मुश्किल हो गया। फिर कुछ ही पलों बाद गीत की जगह सिसकियां निकलने लगीं। उसने हाथ उठाया, उसे मोड़ा और अपना मुंह छुपाकर सिसक उठा। दूसरे साधकों की सिसकियां भी सुनाई देने लगी। तपोभूमि में उस समय व्यथा वेदना के सिवा कुछ नहीं था। सांध्यकालीन आरती पूरी हुई-परिजनों ने परस्पर अभिवादन किया और दिन भर की घटनाओं अनुभवों के बारे में चर्चा करने लगे। मन भारी थे, उसे हलका करने के लिए यह तरीका अपनाया था पर कारगर नहीं हुआ। दस पंद्रह मिनट बाद ही परिजन अपने आवास में चले गए। गायत्री मंदिर में दीप जल रहे थे और शिखर, यज्ञशाला तथा प्रांगण में रोशनी जगमगा रही थी। उस रोशनी में अक्सर कोई कार्यकर्त्ता दिखाई दे जाता था। नींद किसे आ रही थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुबह चार बजे नित्य की भांति मंदिर की घंटिया बजी और कार्यकर्त्ताओं के साथ तपोभूमि में ठहरे साधक भी प्रांगण में आ गए। 'स्तुता मया वरदा वेदमाता' के स्तवन और सामूहिक जप के बाद परिजनों ने एक दूसरे का अभिवादन किया। अभिवादन के बाद एक साधक ने लीलापत जी से कहा पंडित जी सुबह भी कीर्तन का कार्यक्रम रखना चाहिए।

पंडित जी ने तपाक से कहा, 'स्तवन आरती का क्रम पूज्य गुरुदेव ने निश्चित किया है, हम लोग उसमें परिवर्तन नहीं करेंगे। न कुछ जोड़ेंगे और न ही घटाएंगे।'

कहकर पंडित जी रुके और कुछ याद करते हुए से बोले, 'कल शाम का गीत याद आ रहा होगा। है न!'

उस साधक ने पंडित जी की ओर देखा। आसपास से तीन परिजन और आकर खड़े हो गए थे। उन्होंने पंडित जी की बात सुन ली थी कि गुरुदेव ने आरती स्तवन का जो स्वरूप निश्चित किया था, उसमें कुछ भी घटाया बढ़ाया नहीं जाएगा। उन परिजनों में एक ने कहा था कि सही है, आरती स्तवन का यह स्वरूप समग्र है। कुछ संशोधन करना होगा तो गुरुदेव ही करेंगे। एक परिजन ने इसमें यह भी जोड़ा कि आरती स्तवन ही नहीं, हमारी जीवन साधना और कार्यपद्धति भी। उन्होंने हमें जो दायित्व सौंपे है, उन्हें निभाना ही अपनी अहर्निशि चलने वाली साधना है। अभिवादन का क्रम दो तीन मिनट चला और वहां उपस्थित परिजन कार्यकर्त्ता जाने लगे। वे दिन के कामों की तैयारी में जुट गए। चार पांच कार्यकर्त्ता १९५३ में स्थापित यज्ञशाला की ओर जाने लगे थे जहां अखण्ड अग्नि जल रही थी। उन कार्यकर्त्ताओं को प्रात:कालीन यज्ञ की तैयारी करनी थी। कुछ कार्यकर्त्ता विदाई सम्मेलन के लिए की गई व्यवस्थाओं को समेटने में जुट रहे थे। समारोह में आए परिजनों में अधिकांश जा चुके थे। उनमें से कई अब भी रुके हुए थे। वे भी अपने आज के कामों को संभालने लगे थे।

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दो
चुनौतियां और मार्ग

गुरुपूर्णिमा अभी एक सप्ताह दूर थी। परिजन मन ही मन मना रहे थे कि गुरुदेव तब तक रुक जाएं तो उनके चरणों में प्रणाम निवेदन कर लें। पर वे यह भी जान रहे थे कि यह सोचना मोहजनित अपेक्षा के सिवा कुछ नही है, जो कभी पूरी नहीं हो सकेगी। शान्तिकुञ्ज से उनके प्रस्थान का दिन आ गया था। मथुरा से प्रस्थान किए हुए दसवां दिन बीत रहा था-शान्तिकुञ्ज में नौवां दिन। २९ जून की संध्या आरती सम्पन्न हुई तो वहां आए परिजनों ने रात भर जागने की योजना बना ली। आशा तो यही थी कि वे जाएंगे तो साधकों को उनके दर्शन का एक अवसर और मिल सकेगा। उम्मीद थी कि दिन में किसी समय निकलेंगे लेकिन इस बारे में निश्चित समय का किसी को पता नहीं था। क्या पता, रात में ही निकल जाएं। उस समय परिजन सोए रहे तो उनके दर्शन से वंचित रह जाएंगे। नींद को टालते रहने के लिए वे तरह तरह की चर्चाओं में निरत हो गए थे। इन चर्चाओं में गुरुदेव से संबंधित अनुभव और अपने क्षेत्र की घटनाओं का अच्छा खासा विवरण भी था।

दो तीन कार्यकर्त्ताओं ने चुपचाप उनके पीछे जाने का निश्चय किया हुआ था। गुरुदेव जा रहे होंगे तो अपनी भावनाएं इस तरह व्यक्त करेंगे, यह कहेंगे, वह कहेंगे। मथुरा में दस दिन पहले संपन्न हुए विदाई सम्मेलन की तरह एक छोटा मोटा मिलने बिछुड़ने का एक आयोजन और हो जाएगा। इसी ऊहापोह में रात गहराने लगी और धीरे धीरे ढलने लगी। परिजन तरह-तरह की योजनाएं बनाते रहे। उनमें से कुछ को हवाओं ने थपकी देकर सुला दिया था।

सुबह चार बजे अर्चना गृह में शंख बजा और परिजनों ने अनुभव किया कि ब्राह्मवेला शुरु हो गई है। आरती वंदना का समय हो गया है। कुछ परिजन इस वेला का पूर्व अनुमान लगा, स्नानादि से निवृत्त होकर पहले ही तैयार थे। जो उनीदें हो रहे थे वे जागे और मिनटों में तैयार होकर सीढ़ियों की तरफ दौड़े। अर्चना गृह में स्तवन आरती होने लगी। गायत्री माता की दिव्य छटा, उनके सामने प्रज्वलित अखंड दीपक और फूलों से सजी हुई वेदी के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सामने माताजी गायत्री स्तुति का पाठ कर रही थीं। गुरुदेव को वहां नहीं देख कर कुछ साधकों का जी धक से रह गया। उन्हें आभास हो गया कि गुरुदेव चले गए हैं शायद। मन मानने को तैयार नहीं हो रहा था।

आरती, स्तवन और जप ध्यान का क्रम पूरा हुआ तो परिजनों ने माताजी को प्रणाम किया। उस समय तक सभी को लगने लगा था कि रात भर जागने का श्रम काम नहीं आया। गुरुदेव को जाते हुए देख लेने की साध अधूरी ही रह गई है। फिर भी उनमें से किसी ने पूछ ही लिया। माताजी ने उस बालसुलभ उत्कंठा का समाधान करते हुए कहा कि हां वे चले गए हैं। उन्होंने पहले ही कहा था कि यहां से जाते वक्त किसी से मिल नहीं पाएंगे।

यह सुनने के बाद परिजन कुछ और पूछने का साहस नहीं कर सके। प्रणाम करते हुए साधकों से माताजी सामान्य दिनों की तरह कुशलक्षेम पूछ रही थीं। उत्तर देते हुए परिजनों के मन में व्याप रही पीड़ा भी उनके ओठों तक आ जाती थी। वे बिलख उठते थे।

क्षुब्ध होने की स्थिति यहां तक पहुंची कि रमणीक भाई नामक एक कार्यकर्त्ता बुदबुदाते हुए नीचे उतरे और सप्त सरोवर की ओर चल दिए। मन में क्या घुमड़ रहा है, उन्हें खुद पता नहीं था। गंगा किनारे पहुंचे तो कुछ देर रुके रहे फिर कभी बैठ जाते और कभी टहलने लगते। देर तक वे इसी तरह बैठते और टहलते रहे। लग रहा था कि गुरुदेव के बिना जीवन व्यर्थ है। यह विचार भी आया कि गंगा की धारा में कूद कर अपना विसर्जन कर दिया जाए। डेढ़ दो घंटे बाद सहज हुए और वापस लौटे। उन्होंने अपने साथी परिजन को बताया कि इस तरह के संकल्प-विकल्प कई बार उठे। एक बार लगा कि कूद ही जाऊंगा। कूदने ही वाले थे कि किसी ने हाथ पकड़कर पीछे खींचा और फटकारा। पीछे मुड़कर देखा कोई नहीं था। हाथों पर पकड़ अब भी महसूस हो रही थी। किसने फटकारा? कुछ समझ नहीं आया। शायद गुरुदेव ही थे क्योंकि जो फटकार सुनाई दी वह उन्हीं के स्वर और शैली में थी। सुनाई दिया था कि मेरा काम किए बिना इस तरह थोड़े ही जाने दूंगा।

रमणीक भाई ने इस अनुभूति के बारे में माताजी को भी बताया। बताते हुए डर लग रहा था कि डांट न पड़ जाए लेकिन कहे बिना रहा नहीं गया। दोपहर तक आते जाते रहे संकल्प विकल्प और वापस आने की बात सुनकर माताजी ने कहा कि तुम्हें वापस आना ही था बेटा। तुम्हारा यह जीवन और शरीर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
अब तुम्हारा नहीं है। इसे गुरुदेव को समर्पित कर दिया है तो जैसे वे चलाएंगे, वैसा ही चलेगा। इसे क्षति पहुँचाने का विचार करना भी पाप है।

विछोह की प्रेरणा

वहां आए साधकों में से कई को इसी तरह के अनुभव हुए थे। अनुभूतियां आंतरिक ही थीं और भाव संवेदना की स्थिति में ही उपजी थीं। उनका संदेश यही था कि शेष जीवन और कर्म गुरुदेव का काम करते हुए व्यतीत करना है। न इस स्थिति से खिन्न होना है कि गुरुदेव का सान्निध्य सामीप्य नहीं मिल रहा और न ही उसकी कामना या अपेक्षा करनी है। उन्हें अपने भीतर ही समाहित अनुभव करना है।

गुरुदेव को जाते हुए देखने या प्रणाम करने की इच्छा मन में ही लिए रह गए साधकों को सहज होने में ज्यादा समय नहीं लगा। पछतावा कुछ देर तक ही रहा कि सावधान नहीं रहे। थोड़ा सजग रहते, तो प्रणाम कर सकते थे। इस ग्लानि से उबरने के लिए मन ही मन प्रणाम करने से काफी बल मिला। उनकी बताई युग साधना में निरत होने के संकल्प से भी संबल मिला। इस सबसे ज्यादा संतोष हुआ, भूपेन्द्र नामक साधक की अनुभूति सुनकर।

यों भूपेन्द्र २५ जून को शान्तिकुञ्ज आ गया था। गुरुदेव माताजी के वहां पहुंचने के चार दिन बाद। उसने पहले ही योजना बना रखी थी कि गुरुदेव अज्ञातवास जाएंगे तो पीछे-पीछे वह भी चल देगा। इस संकल्प के बारे में उसने किसी को कुछ नहीं बताया था। गुरुदेव और माताजी को भी नहीं। डर था कि उनसे कहूंगा तो डांट पड़ेगी और मनाही हो जाएंगी। एक बार मना कर देने पर निकलना मुश्किल हो जाएगा। भूपेन्द्र चुपचाप मानसिक तैयारी करता रहा। अपने अनुभवों और उपलब्धियों की चर्चा करते रहने के कारण भूपेन्द्र अपने साथियों में 'बातूनी' कहा जाता था। लेकिन इस अवधि में वह चुप्पी साधे हुए था। उसका मौन देख कर कोई नहीं कह सकता था कि वह बातों का रसिया है। उसके साथ आए दो सहयोगी जोगेन और प्रकाश अचंभित थे। यह स्थिति असामान्य थी।

गुरुदेव के प्रस्थान के बाद भूपेन्द्र अचानक कहीं चला गया। बिना बताए ही। शुरु में उसके साथियों ने ज्यादा परवाह नहीं की पर दोपहर तक भूपेन्द्र कहीं दिखाई नहीं दिया तो दोनों सहयोगी थोड़े चिंतित हुए। उन्होंने यहां वहां ढूंढ़ा। कहीं पता नहीं चला तो उनकी चिंता परेशानी में बदलने लगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
उन्होंने सीधे माताजी से संपर्क किया और अपनी परेशानी बताई। भूपेन्द्र की चुप्पी और बदले हुए स्वभाव के बारे में भी बताया। माताजी ने कहा कि चिंता मत करो। भूपेन्द्र जहां भी है, कुशल मंगल से है। वह गुरुदेव के लिए आया था, उसका अनिष्ट नहीं होगा। जल्दी ही वापस आ जाएगा।

दोनों साधक निश्चिंत हो गए थे। गंगा किनारे घूमने के इरादे से वे सप्त सरोवर की ओर चले। सोचा भूपेन्द्र आ जाएगा तभी सामान वगैरह समेटेंगे। घूमघाम कर शाम छह बजे के आसपास वे शान्तिकुञ्ज लौट रहे थे तो सप्तर्षि आश्रम से आगे घुमाव के पास पहुंच कर उन्होंने देखा, ऋषिकेश मार्ग की ओर से भूपेन्द्र लौट रहा है। जोगेन ने दौड़ लगाई। प्रकाश भी तेजी से चला और शान्तिकुंज के प्रवेश द्वार पर ही उसे पकड़ लिया। दोनों उसे झिड़कने लगे।

भूपेन्द्र अपने साथियों का सामना नहीं कर पाया। उसे संभलने में कुछ क्षण लगे। फिर कहने लगा, 'रात भर से जाग रहा था कि गुरुदेव शान्तिकुंज से जाएंगे तो मैं भी उनके पीछे पीछे जाउंगा। थोड़ी सी कामयाबी मिली भी लेकिन उनका पीछा नहीं कर सका। कुछ दूर तक ही जा पाया होऊंगा कि वे अंतर्ध्यान हो गए। फिर घंटों तक खोजता रहा। कहीं कुछ पता नहीं चला तो वापस आ गया।'

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कहते कहते भूपेन्द्र आश्रम के भीतर आ गया। वहां साधकों ने घेर लिया। अपनी यात्रा और अनुभूतियों के बारे में बताने लगा। शान्तिकुञ्ज से बाहर आने के बाद गुरुदेव के प्रत्यक्ष दर्शन नहीं हो सके थे। उनका आभास ही बना रहा। प्रतीत होता रहा कि वे साथ हैं आगे आगे चल रहे हैं, कुछ कह रहे हैं। जो कह रहे हैं वह सुनाई नहीं दे रहा है। लग रहा है जैसे अपना अंतराल ही प्रतिध्वनित हो रहा है। ऋषिकेश में लक्ष्मण झूला के पास अधिक स्पष्ट सुनाई दिया। अंतराल पूरी तरह गूंजने लगा, गुरुदेव जैसे कह रहे हों कि अब आगे मत बढ़ो। यहीं से वापस चले जाओ। फिर भी मन नहीं माना। ऋषिकेश से आगे निकला-उत्तरकाशी के रास्ते। गुरुदेव वहां दो तीन बार दिखाई दिए। हाथ से वापस जाने का इशारा करते हुए। मन में गुरुदेव के पीछे-पीछे उनके साथ जाने की ललक थी। उनका इशारा अनदेखा कर ही दिया। मन ही मन उत्तर भी दिया कि देखें कैसे वापस भेजते हैं। हम तो साथ ही आएंगे। यह उत्तर देते हुए कुछ ही कदम आगे बढ़ा होऊंगा कि गुरुदेव की वाणी सुनाई देना बंद हो गई। अब वे वापस जाने का संकेत भी नहीं कर रहे थे। फिर एक मोड़ पर दिखाई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
दिए और देखते ही देखते अंतर्ध्यान हो गए? उनके अंतर्ध्यान होने के बावजूद पीछे-पीछे जाने की कोशिश की तो लगा कि मार्ग ही नहीं मिल रहा है। देर तक याद करने मार्ग तलाशने की कोशिश की पर व्यर्थ। मतिभ्रम हो गया और वापस लौटने के सिवा कोई विकल्प नहीं बचा। भूपेन्द्र की बातों को सुन कर साधकों के भीतर मची हुई छटपटाहट कम हुई। यों कहें कि गुरुदेव के साथ नहीं जा पाने का क्षोभ मिटा।

भूपेन्द्र सुबह माताजी को प्रणाम करने गया। जाते हुए झिझक हो रही थी, मन में संकोच व ग्लानि भाव भी था। सूझ नहीं रहा था कि माताजी से बात कैसे शुरु की जाए। उन्होंने कुछ पूछ लिया तो क्या उत्तर दूंगा? जोगेन और प्रकाश ने भूपेन्द्र को पहले ही बता दिया था कि देर तक पता नहीं चला तो वे परेशान हो गए थे। अपनी चिंता लेकर माताजी के पास चले गए थे। माताजी ने भूपेन्द्र के बारे में उन्हें आश्वस्त किया था। प्रणाम के लिए जाते हुए भी भूपेन्द्र के मन में यही सब उथल पुथल मची हुई थी। उसे मन में लिए हुए-माताजी के सामने पहुंच गया। प्रणाम किया। माताजी ने भूपेन्द्र से कुछ नहीं पूछा और कहा, 'भागदौड़ करते हुए थक गए होगे। इस तरह की उछलकूद अब मत करना।

गुरुदेव के चले जाने से व्यथित और आकुल हुए साधकों में एक महिला भी थी। अलीगढ़ में अध्यापन कर रही सुमन नाम की यह साधक अविवाहित थी। परिवार को लोकमंगल की साधना में बाधक मानते हुए उसने विवाह नहीं किया था। अध्ययन, अध्यापन से जो समय मिलता उसे लोकसेवा में लगाती। मथुरा में वह नियमित रूप से गुरुदेव माताजी के पास आया करती थी। स्वजन संबंधियों की स्वाभाविक इच्छा थी कि सुमन गृहस्थी बसाए। सामान्य जीवन जिए। जब भी मौका मिलता वे इस बारे में कहते। सुमन सुनकर ऐसी कड़ाई से मना करती कि घर वालों को दोबारा हिम्मत बटोरने में महीनों लग जाते। स्वजनों ने इस विषय में गुरुदेव से भी अनुरोध किया। उनके सामने सुमन पहले ही अपना मन और संकल्प व्यक्त कर चुकी थी। उस अभिव्यक्ति में आवेग था और दृढ़ आग्रह भी। गुरुदेव ने उस संकल्प और निष्ठा को बदलना ठीक नहीं समझा। उसे स्नेह ही दिया।

माताजी के शान्तिकुञ्ज आ जाने के बाद सुमन ने अपना काम निर्धारित कर लिया था। गुरुदेव से अनुरोध किया था कि यहां रहने वाली देवकन्याओं की शिक्षण योजना में अपने आपको खपा देना चाहती है। गुरुदेव ने उससे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
अपना उत्साह बनाये रखने के लिए कहा। देवकन्याओं के लिए शिक्षा का काम बढ़ते जाने के साथ ही सुमन को भी ज्यादा समय देना था। इस काम की रूपरेखा बनाने, अपनी भूमिका निश्चित करने और उसे कुशलता से निभाने की कसौटी पर खरी उतरी सुमन के मन को भी गुरुदेव के प्रस्थान ने आंदोलित कर दिया। गुरुदेव के जाने के बाद वह भी ऋषिकेश की ओर चल दी।

शान्तिकुञ्ज में उसने किसी को नहीं बताया। उसे यह भी मालूम नहीं था कि गुरुदेव किस रास्ते से गए होंगे? कहां गए होंगे? मन में अस्पष्ट सी तैयारी थी। गुरुदेव के सुनाये और लिखे यात्रा वृत्तांतों से उसने अनुमान ही लगाया था कि गुरुदेव अपनी मार्गदर्शक सत्ता के पास उन्हीं की साधना भूमि में गए होंगे। गुरुदेव के यात्रा वृत्तांतों से सुमन ने अनुमान लगाया था कि गुरुदेव ऋषिकेश और देवप्रयाग होते हुए ही गए होंगे। उसने वही मार्ग पकड़ा।

सुमन ऋषिकेश में रुकी नहीं। मुनि की रेती पहुंच कर नौका की सवारी की और गंगा पार पहुंची। लक्ष्मण झूला तक उसने जगह जगह ताका झांका। हो सकता है गुरुदेव कहीं दिखाई दे जाएं। इस आशा से निहारते हुए निराशा मिलती तो सुमन आगे बढ़ जाती। हर जगह वह बड़ी उम्मीद से निरखती थी लेकिन मन के किसी कोने में एक आशंका हमेशा बनी रहती थी कि गुरुदेव यहां नहीं होंगे। इस आशंका के बावजूद वह ढूंढ़ती खोजती रहती। लक्ष्मण झूला पहुंची तो आगे देवप्रयाग का रास्ता पकड़ा। वहां तक बस जाती थी। लेकिन तीर्थदर्शन सुमन का उद्देश्य नहीं था। उद्देश्य तो गुरुदेव की तलाश करना था इसलिए पैदल ही मार्ग पकड़ा। लक्ष्मण झूला से गरुड़ चट्टी पहुंची। पहुंचते पहुंचते शाम हो गई थी। अंधेरा घिरने लगा था। कालीकमली क्षेत्र में अपने इष्ट को तलाशने के बाद बाहर निकली तो किसी साधु ने पुकारा। पूछा कि किसे ढूंढ़ रही हो? सुमन ने कुछ नहीं कहा। साधु ने कहा जिसे ढूंढ़ने आई हो वह बहुत आगे पहुंच गया है। तुम्हें नहीं मिलेगा। बेहतर होगा यहीं विश्राम करो और सुबह आगे की यात्रा पर जाओ।

साधु की बात सुनकर सुमन ठिठकी। उसने साधु से कुछ पूछना चाहा लेकिन यह सोचकर चुप रह गई कि स्वामी जी ने सहज भाव से ही यह सब कहा होगा। लोग बाबा जोगी बनने के लिए इस क्षेत्र में आते ही रहते हैं और उनमें से कई को तलाशते हुए उनके परिजन भी आ जाते हैं। साधु की बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं देते हुए सुमन आगे बढ़ गई। उस यात्रा में सुमन कोई तीन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सप्ताह तक घूमती रही। उद्देश्य गुरुदेव के दिव्यलोक में जाना था। देवप्रयाग और टिहरी होते हुए वह उत्तरकाशी गंगनानी तक गई थी। इस बीच उन्हें पांच छह वीतराग संन्यासी मिले। यों कई साधु संन्यासी दिखाई दिए। उन्होंने सुमन से बातचीत की। जिन संन्यासियों का यहां जिक्र कर रहे हैं, उन्होंने सुमन को बताया कि गुरुदेव हिमालय में दुर्गम क्षेत्र में चले गए हैं। उन्हें ढूंढा नहीं जा सकता। इन संन्यासियों में दो महात्मा तो गुरुदेव का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए ही इस क्षेत्र में आए थे। वे दिव्य सत्ताओं के संकेत मिलने पर ही गुरुदेव की तलाश छोड़कर वापस जा रहे थे।

स्नेह और ऊर्जा का संचार

शान्तिकुञ्ज के दाएं बाएं एक मठ और योग केन्द्र के अलावा सामने कुछ दूर सप्तर्षि आश्रम स्थित था। इसके सिवा आसपास कोई आबादी नहीं थी। पास ही जंगल से गुजरता हुआ हरिद्वार से बद्रीनाथ तक जाने वाला राजमार्ग था पर बसें गिनी चुनी ही थीं। ट्रेफिक ज्यादा नहीं था। पैदल चलने वाले भी कम ही दिखाई देते थे। उस निर्जन में शान्तिकुञ्ज की दिनचर्या प्राचीनकाल के आरण्यक आश्रमों की तरह चलने लगी थी। गुरुदेव के प्रस्थान के बाद माताजी के संरक्षण में चौबीस गायत्री महापुरश्चरणों का क्रम विधिवत शुरु हो गया था। महापुरश्चरण छह वर्ष में संपन्न होने थे और इस महातप में छह कन्याएं नियोजित की गई थीं। आठ से बारह वर्ष की उम्र वाली कन्याएँ एक-एक घंटे के लिए बारी-बारी से अखंड दीपक के सामने जप करती।

छह वर्ष में अनुष्ठान पूरा होने के बाद इन कन्याओं को समाज में लौट जाना था। समाज में रहने और गुरुदेव का काम करते रहने के लिए आवश्यक शिक्षा और संस्कार की व्यवस्था भी बन गई थी। उनकी देखभाल के लिए माताजी ने क्षेत्र से शारदा अम्मा नामक साधिका को बुला लिया था। वे देवकन्याओं की आवश्यकता का ध्यान रखती। ये सभी कन्याएं प्रत्यक्ष रूप से माताजी के ही स्नेह-सान्निध्य और संरक्षण में थी। कन्याओं की देखभाल के लिए एक व्यक्तित्व पूरी तरह सन्नद्ध रहे, इसलिए सहयोगी अम्मा का चुनाव किया गया। क्षेत्र से आने वाले परिजन इन देवकन्याओं को माताजी के सान्निध्य में देखते तो उन्हें भी उमंग उठती कि अपनी बच्चियों को यहां भेजा जाए। माताजी का सान्निध्य मिल सके तो उनका सौभाग्य जाग उठेगा। पर तुरंत तो इसकी संभावना नहीं थी। शुरु में आदर्श, गायत्री, पुष्पा, सावित्री और कीर्ति के अलावा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ और कन्याएं भी महापुरश्चरण के लिए आयीं। गुरुदेव ने इनके लिए शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध आश्रम में ही कराया था। प्राथमिक शिक्षा के लिए ट्यूटर आश्रम में ही बुलाया जाता था। इस औपचारिक शिक्षा के अलावा संगीत, कला और हस्तशिल्प सिखाने की व्यवस्था भी की गई। ध्यान जप के बाद कन्याओं का जो समय बचता वह अपनी योग्यताओं के विकास में बीतता। शान्तिकुंज में निवास की अवधि पूरी होने के बाद इन कन्याओं के लिए अच्छे घर और वर ढूंढे गये तथा उनका विवाह कर दिया गया। गुरुदेव और माताजी के संरक्षण में इस तरह जीवन आरंभ करने तथा पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियां निभाने लायक क्षमता पाने का सौभाग्य कितनी ही कन्याओं ने प्राप्त किया।

शहर से शान्तिकुञ्ज आने के लिए ज्यादा साधन नहीं थे। एक एक घंटे के अंतर से राज्य परिवहन निगम की सिटी बस आया करती थी। बसों का एक फेरा सप्त सरोवर की ओर और दूसरा फेरा शांतिकुंज के सामने से होते हुए सप्तर्षि आश्रम तक लगता था। हरिद्वार से जिन्हें जल्दी में आना होता वे आटो रिक्शा या तांगे का सहारा लेते। शहर से दूर और आने जाने की दृष्टि से पर्याप्त साधन नहीं होते हुए भी साधकों की संख्या बढ़ने लगी थी।

गुरुदेव के जाने के बाद क्षेत्र में कार्यक्रमों की बाढ़ सी आ गई थी। पूरे भारत में जगह-जगह पंचकुंडीय और ग्यारह कुंडीय गायत्री महायज्ञ होने लगे थे। उनके साथ युग निर्माण सम्मेलन भी होते। गुरुदेव ने बड़े आयोजनों पर कुछ समय के लिए प्रतिबंध लगा दिया था। बड़े और सीमित आयोजनों के स्थान पर छोटे और बड़ी संख्या में कार्यक्रम प्रभाव की दृष्टि से ज्यादा सफल हो रहे थे। उन कार्यक्रमों की रिपोर्ट देने और आगे के लिए मार्गदर्शन पाने की दृष्टि से भी परिजन शांतिकुञ्ज दौड़े आते। यज्ञ सम्मेलनों का संचालन गायत्री तपोभूमि से होता था। वहीं से प्रतिनिधि जाते थे। परिजन भी वहीं की व्यवस्था और देखरेख में आयोजन करते थे। परिजन फिर भी शान्तिकुंज आ जाते थे। कार्यक्रम तो एक निमित्त थे, असल उद्देश्य माताजी का सान्निध्य प्राप्त करना था।

विदाई सम्मेलन से पहले और उन दिनों भी गुरुदेव ने स्पष्ट कर दिया था कि उनके बाद माताजी साधकों को संरक्षण और मार्गदर्शन देंगी। निजी, आंतरिक या लौकिक जीवन में कोई कठिनाई हो तो समाधान के लिए उनसे कहा जा सकता है। वैसे कहने की शायद ही जरूरत पड़े। माताजी स्वयं ध्यान रखेंगी। साधकों ने भी अनुभव किया था कि संतान को अपनी आवश्यकता के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिए जिस तरह मां से कहने की जरूरत नहीं पड़ती। मां स्वयं ही समझ जाती और उस आवश्यकता की पूर्ति करती है। यहां शान्तिकुञ्ज में भी परिजनों को वैसा ही प्रतीत होता था। फिर भी प्रत्यक्ष सान्निध्य का अपना आनंद और तृप्ति है। उसके लिए साधक यहां आने और रहने लगे थे। कुछ साधक तो परस्पर चर्चा में भी इस बात को कहते सुनते रहते थे।

गुरुदेव के जाने के तीन सप्ताह की अवधि में विंध्यक्षेत्र के एक कार्यकर्त्ता दो बार यहां आए। दोनों बार उन्हें उत्तरकाशी के एक संन्यासी स्वामी वीतराग मिले। गौतम सेठी से उन्होंने यों ही पूछ लिया था। कहा कि गुरुदेव और माताजी का संरक्षण क्षेत्र में काम करते हुए भी सबको मिल ही रहा है। फिर भी लोग यहां क्यों आते हैं? उन्हें कोई विशेष लाभ मिलता है क्या?

गौतम पारिवारिक जिम्मेदारियों से निवृत्त हो गए थे। लगभग पूरा समय गायत्री और यज्ञ के प्रचार में लगाते थे। उन्होंने स्वामी वीतराग को उत्तर देने के बजाय उलट कर प्रश्न कर लिया? कहा कि हम तो दुनियादार हैं स्वामी जी। आप संन्यासी हैं। नाम भी वीतराग है। आप उत्तरकाशी छोड़ कर यहां क्यों दौड़े चले आते हैं?

प्रतिप्रश्न सुनकर स्वामी जी मुस्करा दिए थे। वह मुस्कराहट दोनों के भीतर हुलसने वाली एक ही भावना को व्यक्त कर रही थी। गोतम ने बात आगे बढ़ाई और कहा, 'मेरी मां बचपन में ही गुजर गई थी। उस समय मैं अबोध था। माताजी के पास आने से पहले कभी नहीं जाना कि ममता क्या होती है। उसी की अतृप्त प्यास यहां खींच लाती है। कह कर गौतम ने कुछ रुककर स्वामी जी से पूछा, 'और आप स्वामी जी?'

'मेरी स्थिति भी आप जैसी ही है गौतम बाबू।' कह कर दोनों ठठाकर हंस दिए। साधकों को एक अव्यक्त अभीप्सा यहां खींच लाती थी। उसमें ममता, दुलार और स्नेह की प्यास के साथ ऊर्जा, संबल और संरक्षण की उमंग भी प्रमुख कारण थी। आगंतुक साधकों से मिलने के लिए माताजी ने एक घंटा समय निश्चित किया हुआ था। जरूरी होता तो किसी अन्य समय में भी मिल लेती लेकिन एक घंटे का यह समय निश्चित ही था। दोपहर बाद दो बजे के आसपास वे साधकों से मिलती। आध्यात्मिक और आंतरिक विषयों को छेड़ते हुए साधक दो चार बातें ही कह पाते थे। इतनी सी चर्चा के बाद ही वे निजी विषयों पर आ जाते। घर परिवार की बातें, हारी, बीमारी, मुकदमेबाजी और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
झगड़े झंझटों की बातें। माताजी उनकी बातों को ध्यान से सुनती। उस समय वे मिशन आंदोलन और सामाजिक या राष्ट्रीय विषयों पर एक शब्द भी नहीं कहती थी। नितांत घरेलू और निजी विषयों पर जो कुछ कहती, साधक उसे अंगीकार करते। उन्हें लगता कि समाधान उनका और सिर्फ उनका ही हित देखने वाली मां के माध्यम से आ रहे हैं।

यज्ञ आयोजन से संबंधित सभी व्यवस्थाएं मथुरा से होती थीं। प्रतिनिधि वहीं से भेजे जाते। साहित्य, हवन सामग्री और कभी कभार तो यज्ञकुंड पंडाल भेजने की स्थिति भी आ जाती। यज्ञ आयोजनों की भरमार हो जाने से कार्यकर्त्ताओं की कमी पड़ने लगी। मथुरा में पांच छह प्रतिनिधि ही थे। वे केन्द्र की व्यवस्था के साथ क्षेत्रीय आयोजनों को भी संभालते। कुछ कार्यकर्त्ता क्षेत्र में भी थे जो यज्ञीय कार्यक्रमों के साथ मंच के संचालन में भी सक्षम थे। लेकिन वे भी अपर्याप्त लगने लगे थे। इस अभाव को पूरा करने के लिए मथुरा में एक एक महीने के कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण सत्र शुरु करने का निश्चय हुआ।

माताजी ने मथुरा में इस तरह के निर्देश दिए तो व्यवस्थापकों को असमंजस हुआ। पौरोहित्य कर्म सीखने के लिए सालों का समय चाहिए। एक एक महीने में लोग कैसे तैयार हो पाएंगे? माताजी के बुलावे पर लीलापतजी शांतिकुञ्ज दौड़े पहुंचे। वहां कार्यकर्त्ता शिक्षण की योजना पर बात शुरु होने से पहले ही उन्होंने अपना असमंजस रख दिया। यज्ञ, कर्मकाण्ड, संस्कार आदि सीखने के लिए कम से कम साल भर तो चाहिए। महीने भर में लोग कैसे तैयार हो जाएंगे?

अधिक कुछ न कहकर माताजी ने दो तीन वाक्य में ही समाधान कर दिया। उन्होंने कहा, 'यह मेरी व्यवस्था नहीं है। गुरुदेव का निर्देश है तो उन्हें ही पता होगा कि महीने भर में बड़े आयोजन संपन्न कराने लायक कार्यकर्त्ता कैसे तैयार होंगे। हमें सिर्फ उनके बताए पाठ्यक्रम को लागू करना है।

'धर्मतंत्र से लोकशिक्षण' पुस्तक का पहला खंड उन्हीं दिनों छप कर आया था। इस पुस्तक में यज्ञ आयोजनों की व्यवस्था, मंत्र, कर्मकांड और उनकी व्याख्या आदि के साथ कर्मकांडों का विवेचन भी था। प्रणाम के समय ही माताजी ने इस पुस्तक को आधार बनाकर प्रशिक्षण चलाने की व्यवस्था दी। लीलापतजी तब शांतिकुञ्ज दो दिन रुके। कार्यकर्त्ता सत्रों के विषय, अनुशासन और दिनचर्या आदि का निर्धारण कर वे अगले दिन शाम को बाहर निकल रहे थे तब उनके चेहरे पर विश्वास और उत्साह की चमक थी। यहां आते समय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनके मन में क्षेत्रीय चुनौतियों के साथ कार्यकर्त्ता शिक्षण का नया तनाव भी चुभ रहा था। वापस लौटते हुए उस तनाव से वे पूरी तरह मुक्त थे। मथुरा लौट कर उन्होंने अपने सहयोगियों को बताया कि रास्ते में गहरी नींद आई। लगा कि जैसे समाधि लग गई हो।

माताजी की इस बात को उन्होंने स्वयं बार-बार दोहराया कि सारी व्यवस्था गुरुदेव स्वयं संभाल रहे हैं। कहते कहते वे अपने आप पर हंस भी देते। खुद को उलाहना सा देते कि सौंपे गए काम को पूरा करने के बजाय हम लोग संभावना असंभावना में उलझ जाते हैं। मथुरा लौटने के बाद उन्होंने सायं संध्या आरती में एक उद्‌बोधन दिया। यह उद्‌बोधन शांतिकुञ्ज यात्रा के बारे में था। माताजी से चर्चा और उनके सान्निध्य की अनुभूति सुनाई।

उद्‌बोधन के बाद तपोभूमि के कार्यकर्त्ताओं ने देर तक जागकर नई योजनाओं की रूपरेखा बनाई। इस निर्धारण में सत्यभक्तजी भी शामिल थे। कार्यकर्त्ता उन्हें भी पंडितजी कहकर पुकारते थे। विचारधारा की दृष्टि से सत्यभक्तजी साम्यवादी थे। स्वतंत्रता के बाद वे कम्युनिस्ट आंदोलन से अलग हो गए थे। उनकी दृष्टि में स्वतंत्रता मिलते ही नागरिकों को जिम्मेदारी और अनुशासन का महत्त्व समझना चाहिए। यह काम किसी बड़े जन अभियान से ही पूरा हो सकता है।

भारत जैसे देश में इस तरह का अभियान धर्म के आधार पर ही चलाया जा सकता है। इसी भावना से उन्होंने पूरा समय गायत्री परिवार में लगाने का निश्चय किया और यहीं रहने लगे थे। प्रस्तुत शिक्षण योजना में माताजी ने उन्हें कार्यकर्त्ताओं के पाठ्यक्रम का जिम्मा सौंपा था। शिक्षण योजना का निर्धारण होते ही वे पाठ्यक्रम के संपादन नियोजन में जुट गए।

व्यवस्था में दो सप्ताह से ज्यादा समय नहीं लगा। इसी अवधि में उपयुक्त कार्यकर्त्ताओं के चुनाव और उन्हें बुलाने का काम भी हुआ। सक्रिय और प्रमुख कार्यकर्त्ताओं का विवरण कार्यालय में उपलब्ध था ही। उन्हीं में से चुनाव किया गया। पहली बार में करीब अस्सी लोगों को पत्र लिखे गए। मजे की बात कि सत्तर परिजनों ने तुरंत आने का उत्साह दिखाया। इतने लोगों को एक साथ न बुलाकर प्रशिक्षण दो सत्रों में बांटा गया। गुरुदेव के जाने के बाद तपोभूमि में यह पहली शिक्षण योजना थी। वहां के कार्यकर्त्ताओं में उत्साह, उमंग और विश्वास के साथ एक अनभ्यस्त पहल के नाते होने वाली स्वाभाविक हिचक भी थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रतिबंध से अवकाश

छत्तीसगढ़ में उन दिनों पिछले कुछ सालों से अकाल की छाया मंडरा रही थी। पानी नहीं बरस रहा था। खेतों में खड़ी फसल सूख जाती और तीसरे चौथे साल तो यह हालत हो गई कि बीज ही अंकुरित नहीं होते। बाद में लोगों ने बुवाई करना भी छोड़ दिया। गांव खाली होने लगे। कस्बों के लोग भी अपनी बस्तियां छोड़ कर शहरों की तरफ भागने लगे। रोजगार के अवसर दिनों दिन सिमटते गए और लोगों को मजदूरी भी नहीं मिलती। सरकार और सामाजिक संस्थाए राहत कार्यक्रम चला रही थीं। उन कार्यक्रमों के अंतर्गत छोटे मोटे निर्माण कार्य शुरु किए गए जैसे सड़कें बनाना, कुंए खोदना, इमारतों की मरम्मत कराना आदि। इन कामों से मजदूरों को कुछ कामकाज मिलता।

तमाम कोशिशों और राहत कार्यों के बावजूद अनाज की कमी से कमजोर वर्ग के लोगों के लिए खाने का संकट भी था। मध्यम और निम्न मध्यवर्ग के लोगों को भी अन्न संकट की मार झेलना पड़ रही थी। संयुक्त राष्ट्र और दूसरे देशों से आई मदद पर्याप्त नहीं थी। ऐसे संकट के समय में सरकार ने कुछ पाबंदियां लगाई थीं। उनके अंतर्गत बड़े समारोह करने, दावतें देने और बारात में ज्यादा लोगों को ले जाने पर रोक थी। जाहिर है धार्मिक आयोजन भी इस तरह की पाबंदियों में आते थे।

इधर छत्तीसगढ़ में गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता अपनी ही तरह से सोच रहे थे। उनका मानना था कि क्षेत्र में एक बड़ा गायत्री महायज्ञ हो जाए तो दुर्भिक्ष से जूझने में दैवी सहायता मिले। सूक्ष्मजगत के सक्रिय दिव्यशक्तियों को यज्ञ अग्निहोत्र से पोषण मिले और क्षेत्र के निवासी इस संकट से उबरे। गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं का विचार संकल्प में बदला और वे मथुरा पहुंचे। मथुरा में उन्होंने एक सौ आठ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का प्रस्ताव रखा। गायत्री तपोभूमि के कार्यकर्त्ता इस प्रस्ताव पर निर्णय लेने की स्थिति में नहीं थे। विदाई के समय गुरुदेव ने ग्यारह कुण्डीय यज्ञों से बड़े आयोजनों पर प्रतिबंध लगा दिया था। छत्तीसगढ़ के कार्यकर्त्ताओं का तर्क था कि यह प्रतिबंध सामान्य स्थितियों के लिए है। लोग जब अकाल और दुर्भिक्ष जैसी विभीषिकाओं से जूझ रहे हैं तो इस प्रतिबंध में छूट लेनी चाहिए। शास्त्रों में अनावृष्टि और अकाल आदि से जूझने के लिए महायज्ञों की व्यवस्था है। यही नहीं इस तरह के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
आयोजनों से संकट मिट जाने के प्रमाण भी है। उपाय मौजूद है तो संकट के समय उसे अपनाया क्यों नहीं जाना चाहिए?

गायत्री तपोभूमि के कार्यकर्त्ताओं के पास इस तर्क की कोई काट नहीं थी। छत्तीसगढ़ में महायज्ञ के संकल्प पर जोर दे रहे कार्यकर्त्ताओं का नेतृत्व सीताराम जायसवाल कर रहे थे। उन्होंने संकल्प के साथ व्रत अनुष्ठान भी आरंभ कर दिया था। महायज्ञ होने तक उपवास, भूमिशयन और महापुरश्चरण के लिए विशेष जप कर रहे सीताराम को मनाना संभव नहीं था और उनकी बात मानना भी नहीं। तीन या चार बैठकों में इस विषय पर चर्चा हुई। लीलापतजी और दूसरे कार्यकर्त्ताओं का कहना था कि इस प्रस्ताव के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। गुरुदेव के लगाए प्रतिबंधों का उल्लंघन कैसे किया जाए। सीताराम आपद्धर्म का तर्क दे रहे थे और यह भी कह रहे थे कि मर्यादा टूटती है तो उसका प्रायश्चित कर लेंगे। जो भी दंड मिलेगा उसे हम सहेंगे। लोक उपकार के लिए यह अनुष्ठान होना ही चाहिए।

तपोभूमि से अंततः कोई रजामंदी या स्वीकृति नहीं मिली। छत्तीसगढ़ के कार्यकर्त्ता अपने संकल्प को लेकर शान्तिकुञ्ज पहुंचे। मथुरा से हुए विचार विमर्श का ब्यौरा देने के बाद उन्होंने अपना पक्ष रखा। उस पर माताजी का कहना था कि प्रतिबंध हटाना या उसमें अवकाश लेना अपने अधिकार में भी नहीं है। ये मर्यादाएं गुरुदेव ने निश्चित की है। आवश्यक हुआ तो विशिष्ट स्थितियों में वे ही ढील दे सकते हैं।

माताजी ने आश्वस्त किया कि उस क्षेत्र की परिस्थितियां और कार्यकर्त्ताओं की भावना से गुरुदेव को वे अवगत करा देंगी। वे जो भी निर्देश देंगे, उसी के अनुसार निर्णय लेंगे। सीताराम ने तब अपने आग्रह पर एक और तर्क से जोर दिया। उन्होंने कहा कि गुरुदेव अंतर्यामी हैं। हम उन्हीं के चलाए चल रहे हैं। हमारे मन में शतकुंडीय आयोजन का विचार आया तो उन्हीं की प्रेरणा से आया। इस विचार को ही उनकी स्वीकृति क्यों नहीं मान लिया जाए?

माताजी ने इस तर्क को हलके फुलके ढंग से लिया। उन्होंने कहा, 'तुम्हारी बात सही हो सकती है लेकिन इस काम में हाथ बटाने की बात गुरुदेव ने तुम्हारे बड़े भाइयों से तो नहीं कही है। वे लोग शायद इसलिए पीछे हट रहे हैं।' इस बात पर सीताराम समेत दूसरे कार्यकर्त्ता भी हंस दिए। माताजी ने फिर समझाया, महायज्ञ की घोषणा और उसकी तैयारी के लिए सीधे निकल पड़ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
से तुम्हीं लोगों को कठिनाई होगी। बेहतर होगा कि तुम लोग इसके लिए माहौल बनाओ। गुरुदेव ने चाहा तो आयोजन होगा और नहीं चाहा तो नहीं होगा, लेकिन तुम लोग माहौल बना सके तो महायज्ञ का उद्देश्य अवश्य पूरा हो जाएगा।

'वह कैसे माताजी? सीताराम ने पूछा। माताजी ने इस पर कहा, 'विशाल स्तर पर होने वाले धर्म अनुष्ठानों का उद्देश्य लोगों में विश्वास और शक्ति का संचार करना है। माहौल बनाते समय लोगों को अपने उद्देश्य, भावना से अवगत कराना। राहत कार्य चलाना और यह विश्वास दिलाना कि यज्ञ से उन लोगों को रोजगार के थोड़े बहुत अवसर मिलेंगे। इतना कर सके तो भी पर्याप्त है।'

छत्तीसगढ़ से आए कार्यकर्त्ताओं को संतोष हुआ। उनके मन में आशा जगी और दिशा भी मिली। शान्तिकुञ्ज में ही उन्होंने महायज्ञ का स्वरूप, उसकी व्यवस्था और मर्यादा आदि के बारे में तय कर लिया। उस निर्धारण के अनुसार महायज्ञ में जड़ी बूटियों की आहुतियां दी जानी थी। जड़ी बूटी कहीं बाहर से नहीं लाई जाएगी। उस क्षेत्र में जो वनौषधियां मिलती हैं, उन्हीं की आहुतियां दी जाएं। घी की आहुतियां नहीं दी जाएंगी। आज्याहुति और स्विष्टकृत होम को छोड़ कर सभी आहुतियां वनौषधि से दी जाएं। यज्ञ में सम्मिलित होने वाले लोग उपवास रखें। उपवास से बचा अन्न भंडारों और अन्न क्षेत्रों में उपयोग करें।

महायज्ञ में आने वालों के लिए भोजन आदि का प्रबंध भी किया जाना था। निश्चित किया गया कि भोजन में अनाज का उपयोग नहीं होगा। आलू और जमीन के भीतर मिलने वाले कंदमूल ही पकाए और परोसे जाएं। इलाके में ज्यादातर लोग इसी आहार का उपयोग कर रहे हैं। यज्ञ में आने वाले लोग भी इसी तरह का खानपान रख कर लोगों से तादात्म्य बनाएं। एक मुख्य निर्णय आहुतियां देने वाले यजमानों के बारे में था। उनकी सूची यहां से जाते ही बनाना शुरु कर देनी थी। यजमानों से अनुरोध किया जाना था कि वे संकल्प लेते ही न्यूनतम अनुशासन का पालन करें। उसके अंतर्गत सप्ताह में एक दिन-रविवार का उपवास करें। उपवास के दिन अनाज, दाल, सब्जियां और वस्त्र आदि का दान करें। यह दान राहत कोष में दिया जाए।

आयोजन की इन मर्यादाओं को लेकर कार्यकर्त्ता माताजी के पास गए। इन अनुशासन नियमों को स्वकृति मिलना तय ही था। माताजी ने इन मर्यादाओं में एक बात और जोड़ी कि आयोजन की तैयारी में लगे लोग इस अवधि में अपने ही साधनों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
पर निर्भर रहेंगे। महायज्ञ के लिए किए जा रहे संचय से एक पाई भी दूसरे कामों में नहीं लगाई जाएगी। कार्यकर्त्ता भी महायज्ञ के निमित्त काम कर रहे हैं और उसके लिए साधनों की जरूरत है तो वह इंतजाम भी खुद ही करेंगे।

दूसरी मर्यादा यह जोड़ी कि महायज्ञ में लोग जो भी अनुदान देंगे उसका उपयोग आहुति, अग्निहोत्र आदि में बहुत ही मितव्ययता से किया जाए। कम से कम खर्च हो और जो बचत हो वह राहत कार्यों में लगाई जाए। उस बचत से यदि कोई छोटा मोटा उद्योग शुरु हो सके तो उसका प्रबंध किया जाए। माताजी ने चर्चा पूरी करते हुए कहा कि यह बात अपनी जगह है कि सौ कुंडीय महायज्ञ गुरुदेव की स्वीकृति मिलने पर ही होगा। यदि वहां से अनुमति नहीं मिली तो इक्कीस स्थानों पर पांच पांच कुंडीय आयोजन कर लिए जाएं। उनका स्वरूप और अनुशासन भी यही रहेगा। इस तरह के इक्कीस आयोजनों से ही संकल्प पूरा हुआ मान लिया जाए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

उन व्यवस्थाओं और निर्देशों को प्रणाम कर कार्यकर्त्ता अपने क्षेत्र के लिए चल दिए। अभी न तारीखें निश्चित हुई थी और न ही कार्यक्रम को स्वीकृति मिली थी। फिर भी उनके मन में एक विराट आयोजन के लिए जुट पड़ने की उमंग उफन रही थी। उस उमंग से सराबोर कार्यकर्त्ता गायत्री तपोभूमि होते हुए वापस गए। तपोभूमि में शान्तिकुञ्ज का अनुभव सुनाते हुए उनके चेहरे की चमक देखते ही बनती थी।

उथल पुथल का वह दौर

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर तब अलग ही तरह की विभीषिकाएं मंडरा रही थी। फरवरी १९७१ में हुए आम चुनाव के बाद केन्द्र में एक मजबूत सरकार उभर कर आई थी। सामाजिक परिवर्तन, जनवाद, धर्म निरपेक्षता और समाजवाद जैसे मुद्दों पर मतदाताओं ने पूर्ण सहमति जताई थी और इंदिरा गांधी की कांग्रेस दो तिहाई बहुमत से जीतकर आई थी। राष्ट्रीय परिवेश में सब कुछ ठीकठाक ही चल रहा था। पड़ोसी देश पाकिस्तान में उन दिनों जो उथल पुथल मची हुई थी, उसे लेकर विश्लेषक दूरगामी खतरे भांप रहे थे। उस उथल पुथल की थोड़ी तपिश भारत के भीतर भी महसूस हो रही थी।

स्थितियां दिन प्रतिदिन विषम होती जा रही थीं। बांग्लादेश (तब पूर्वी पाकिस्तान) से आने वाले शरणार्थियों का दबाव निरंतर बढ़ रहा था। उस कारण भारत की अपनी अर्थव्यवस्था प्रभावित हो रही थी। भारत सरकार ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
शरणार्थी कर लगाकर लोगों से साधन जुटाना शुरु किए। यह कर डाक की सामग्री से लेकर टिकटों की खरीद और निजी तथा सार्वजनिक जीवन में होने वाली खरीद फरोख्त तक हर चीज पर लगाया गया था। पाकिस्तानी सेना बांग्लादेश में सभी लोगों पर अत्याचार कर रही थी लेकिन उसने वहां बचे हुए हिंदुओं को अपना खास निशाना बनाया था। भारत में इस कारण भी बांग्लादेशी शरणार्थियों के प्रति सहानुभूति का विशेष भाव था। यद्यपि बांग्लादेश से हिंदुओं के अलावा मुसलमान और ईसाई भी बड़ी संख्या में भारत आ रहे थे।

इस राष्ट्रीय संकट में गायत्री परिवार के सदस्य भी देश के साथ थे। वे समझ रहे थे कि संकट की इस घड़ी में उन पर विशेष दायित्व आ जाते हैं। स्थानीय स्तर पर होने वाले प्रयासों में वे सक्रिय हिस्सा लेते और भारत को इस संकट से उबारने के लिए जप प्रार्थना करते। नैष्ठिक साधकों ने तब दो माला प्रतिदिन विशेष जप शुरु कर दिया था। कुछ कार्यकर्त्ता अनुभव कर रहे थे कि इन दिनों गुरुदेव होते तो कुछ और भी किया जा सकता था। वह कुछ अलग ही ढंग का होता और हम लोग अपने आपको विशिष्ट भूमिका में अनुभव कर रहे होते।

हजारीबाग के एक साधक भूदेव नारायण सिंह उन दिनों शान्तिकुञ्ज गए। आागंतुकों के लिए माताजी ने एक घंटा समय रखा हुआ था। वे प्रायः सुबह ही मिलतीं। आवश्यक हुआ तो कभी कभार दोपहर के वक्त भी मिल लेतीं। वह वक्त डाक देखने का होता। किसी खास प्रयोजन के लिए आए अतिथि से भी उसी समय मिल लेतीं। वे बातचीत करते हुए चिट्ठियां भी पढ़ लेती थीं। भूदेव बाबू भी दोपहर के वक्त ही माताजी से मिले थे। मुलाकात के समय उन्होंने कह दिया कि गुरुदेव को अभी हम लोगों के बीच होना चाहिए था। संकट की इस घड़ी में गायत्री परिवार के साधक अपने आपको काफी अकेला महसूस कर रहे हैं?

'गुरुदेव तो हम लोगों के बीच ही हैं बेटा।' माताजी ने तपाक से कहा, 'तुम अपने आपको अकेला महसूस क्यों कर रहे हो। बांग्लादेश में लड़ रहा यह सिपाही अपने आपको अकेला महसूस नहीं कर रहा। उसे प्रतीत होता है कि गुरुदेव उसके साथ हैं।' कहते हुए उन्होंने एक युवक का चित्र दिखाया, जो अभी आई डाक में किसी चिट्ठी के भीतर था। सैनिक वेशभूषा में दिखाई दे रहे उस युवक ने लिखा था कि वह मिदनापुर के पास आततायी सैन्यकर्मियों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोहा ले रहा है। उसकी टुकड़ी में चार सैनिक और हैं। वे रात को ही कूच करते हैं। उन्हें कई बार अनुभव हुआ है कि जैसे कोई दैवी सत्ता उन्हें रास्ता बताती है। उस सत्ता को युवक तो ठीक से पहचान लेता है बाकी और सदस्यों को भी अलग अलग अनुभव होते हैं।

श्वेत केश और भारतीय वेशभूषा धारण किए यह आकृति उन्हें आगे आने वाले खतरों के बारे में सतर्क करती। उन्हें रास्ता भी दिखाती है। जब कभी वे अपने आपको भूला भटका महसूस करते हैं तब यह आकृति खासतौर पर दिखाई देती है।

'किसी की चिट्ठी बताना ठीक नहीं है भूदेव। लेकिन इस लड़के ने अपना अनुभव अखंड ज्योति में छपने के लिए भेजा है। इसलिए बताने में कोई हर्ज नहीं है।' माताजी ने कहा, 'अपने मन में हीनता का भाव मत आने दो कि हम लोग कुछ नहीं कर रहे। हम देश से अलग थोड़े ही हैं। और गुरुदेव ने बार-बार कहा है कि विश्व की रचना में भारत को अग्रणी स्थान मिलेगा। संकट और चुनौतियों से जूझते हुए भारत महान बन कर ही उभरेगा। चिंता न करो।'

पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि राज्यों में भारत सरकार ने कई शरणार्थी शिविर लगाए थे। इन शिविरों में रहने वाले ज्यादातर लोग बांग्लादेश में चल रहे उत्पीड़न के सताए हुए ही थे। उन्हीं लोगों में शामिल होकर पाकिस्तानी जासूसों के आने की आशंका भी थी। शरणार्थियों की मदद करना इस तरह मुश्किल काम था। अंतरराष्ट्रीय जगत में पाकिस्तान ने यह प्रचार किया हुआ था कि पूर्वी पाकिस्तान में सब कुछ ठीकठाक है। भारत के रचे हुए षडयंत्र के कारण वहां आग लगी हुई है। वहां मचाए उपद्रव को ठंडा करने के लिए पाकिस्तानी सेना को कार्रवाई करना पड़ रही है।

पाकिस्तान के इस प्रचार को अमेरिका और चीन का समर्थन मिला हुआ था। अमेरिका तो पाकिस्तान को सैनिक सहायता भी दे रहा था। अमेरिका के कारण तब बांग्लादेश की समस्या भारत और पाकिस्तान के बीच एक विवाद के रूप में उभर रही थी। पहल नहीं कर पाने के कारण यहां के लोगों में भी असंतोष बढ़ रहा था। बांग्लादेश से आये शरणार्थियों के प्रति नागरिकों के मन में सहानुभूति तो थी लेकिन शिकायत का भाव भी साथ साथ पल रहा था। उन लोगों को लंबे समय तक यहां रखने के लिए जनमानस तैयार नहीं था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्षेत्र में चल रहे गायत्री महायज्ञों में सामाजिक और आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा होती। उस चर्चा के बीच में राष्ट्रीय संकट का उल्लेख भी आ जाता। वह उल्लेख इस समस्या की संभावना का एक द्वार निरूपित करते हुए होता। उस संभावना के अनुसार बांग्लादेश भारतीय धर्म परंपरा की जीत के रूप में मुक्त होना था। उस धर्म परंपरा की विजय, जिसमें विभिन्न साधना पद्धतियों और संप्रदायों का अस्तित्व स्वीकार किया गया है।

मथुरा में उन दिनों चल रहे प्रशिक्षण सत्रों में भी कार्यकर्त्ताओं को इस बारे में निर्देश दिए जाते। ये निर्देश गुरुदेव की वाणी से मिलते थे। विदाई सम्मेलन के बाद दस दिन तक शान्तिकुञ्ज में रहते हुए गुरुदेव ने ये प्रवचन टेप कराए थे। उन प्रवचनों में स्पष्ट कहा गया था कि निकट भविष्य में भारत एक महाशक्ति के रूप में उभरेगा। उसके उभरने से पहले यह धारणा खंडित होगी कि भारत में विभिन्न धर्मों के लोग आपस में लड़ते रहते हैं। मध्यकाल के अंधकार युग में पहले परस्पर विरोधी धाराओं के साथ साथ जीने और विकास करने के ढेरों प्रमाण हमारे यहां मिलते हैं।

प्रशिक्षण चला रहे प्रतिनिधि गुरुदेव के इस संदेश का सामयिक विवेचन करते। उस विवेचन में एक बार किसी कार्यकर्त्ता ने विभाजन के समय का एक प्रसंग याद किया। उन दिनों धर्म के आधार पर भारत पाक बटवारे की चर्चा चल रही थी। जिन्ना अपनी बात पर अड़े हुए थे। नेहरू के समझाने और माउंटबेटन के दबाव डालने के बावजूद वह टस से मस नहीं हो रहे थे। महात्मा गांधी ने कह दिया था कि पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा। जीते जी मैं इसे कभी स्वीकार नहीं करूंगा। जिन्ना की हठधर्मिता के आगे किसी की न चली। (पाकिस्तान बनने के बाद महात्मा गांधी की हत्या उनकी इस कसम को भी जैसे सही साबित कर गई) पाकिस्तान बनना तय हो गया। तब चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने जिन्ना से कहा कि जिस दिशा में तुम जा रहे हो वह देर सबेर तुम्हारे पाकिस्तान को भी खंडित कर देगी। तुम एक नहीं दो पाकिस्तान मांग रहे हो।

गुरुदेव के संदेश और उनकी व्याख्याओं का आशय यह था कि अलगाव और विखंडन की वजह धर्म नहीं राजनैतिक महत्वाकांक्षा है। भारतीय धर्म परंपरा एक बार फिर जीवंत सिद्ध होगी और यह उपमहाद्वीप अनेकता में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
एकता की विशेषता के साथ एक बार फिर विश्वशक्ति बनेगा। महायज्ञ सम्मेलनों में यथाअवसर इन प्रेरणाओं का पुट दिया जाता।

शान्तिकुञ्ज आने वाले साधकों की संख्या बढ़ने लगी थी। पचीस तीस लोग पहले भी आया करते थे। अब यह संख्या दोगुनी से ज्यादा हो गई थी। किसी दिन अस्सी नब्बे लोग भी आ जाते। आगंतुकों में पुराने लोग तो होते ही, नए साधक कहीं ज्यादा रहते थे। ये वे लोग थे जो उन दिनों चल रहे यज्ञ सम्मेलनों के दौरान संपर्क में आए थे। उन लोगों ने गुरुदेव को नहीं देखा था। यह सुनकर वे रोमांचित होते थे कि किसी संगठन का नायक सब कुछ छोड़ कर अज्ञात स्थान पर चला गया। वह भी उस दौर में, जब संगठन लोकप्रिय हो रहा हो। ये लोग मथुरा होते हुए शान्तिकुंज आते थे।

माताजी से भेंट संपर्क के लिए एक अवधि निश्चित थी लेकिन साधक उनकी उपस्थिति को प्रतिपल अनुभव करते। सुबह उष:पान, संध्या आरती, भोजन आदि के बाद साधक आसपास घूमने निकल जाते। आश्रम परिसर में ही रहने का प्रतिबंध नहीं था लेकिन यहां आने के बाद साधक एक बार माताजी से जरूर मिलते। उनसे मिलने और अपना कार्यक्रम बताने के बाद ही परिसर के बाहर निकलते।

इस भेंट में माताजी कुशलक्षेम पूछने के बाद साधकों की निजी समस्या पर भी चर्चा करतीं। उस चर्चा के साथ वे आसपास घूमने के बारे में सावधानी बरतने के लिए भी कहती। आसपास घने जंगल और खाइयां थीं। लहलहाते खेत थे। गंगा की तेज धारा थी। धारा कहीं उथली और कहीं गहरी थी। बीच में पत्थर और टापू भी दिखाई दे जाते। माताजी ने एक नए साधक को समझाया कि धारा उथली जान कर उतर मत जाना। प्रवाह बहुत तेज है। थोड़ा आगे बढ़ने पर पांव उखड़ने लगते हैं।

यह निर्देश साधक के लिए अप्रत्याशित था। वह विस्फारित नेत्रों से माताजी की ओर देखने लगा। उसे सूझ नहीं रहा था कि क्या कहे ? वह अपने स्थान से उठा और माताजी के सामने माथा टिकाते हुए बोला 'मैं पहले आपके पास क्यों नहीं आ गया माताजी।'

माताजी ने उसकी अभिव्यक्ति को स्नेह से लिया और उसके सिर पर हाथ फेरा। कहा, 'मां अपने बच्चों से दूर थोड़े रहती है बेटा। तुम्हारी आराध्य माता (गायत्री) शुरु से ही तुम्हारी देखभाल कर रही है।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक दिन किसी ने आकर बताया कि रेल लाइन पर हाथी का एक शावक कटा पड़ा है। शावक पटरी पार कर रहा होगा या अपने मस्त अबोध स्वभाव के वशीभूत खड़ा रह गया होगा। इसी बीच रेल आ गई और शावक उससे टकराकर मर गया। जिस साधक ने यह खबर दी थी, वह स्वयं शावक को देख कर आया था। यह खबर सुनकर माताजी ने आंखें बंद की और ध्यान मुद्रा में आ गईं। वे शावक की सद्गति के लिए प्रार्थना कर रही थीं। कुछ पल मौन रहने के बाद ध्यान मुद्रा से बाहर आईं। आंखे खोलते ही उन्होंने कहा, 'कुछ दिन तक तुम लोग ऋषिकेश रोड की ओर मत जाना। शावक के दुर्घटना ग्रस्त होने से हाथी कुपित होंगे। उस शावक की मां बौखलाई हुई होगी और वह किसी को भी चपेट में ले सकती है।'

सचमुच दो चार दिन बाद ही खबर आई कि हरिद्वार की तरफ से आ रहे एक रेल इंजिन को हाथी ने टक्कर मार दी है। भाप से चलने वाला इंजिन हाथी की टक्कर झेल नहीं पाया था और पटरी से उतर गया था। हाथी भी घायल हो गया था। वह मादा हाथी कुछ दिन पहले मरे शावक की जननी रही होगी। ममता आहत हुए बिना हाथी जैसा शांत पशु इतना आक्रामक नहीं हो सकता।

चुपचाप आता बदलाव

तपोभूमि में कार्यकर्त्ता सत्र कुछ समय के लिए स्थगित हो गए थे। लगा था कि इन दिनों हो रहे आयोजनों के लिए पर्याप्त कार्यकर्त्ता तैयार हो गए हैं। अगली गायत्री जयंती तक होने वाले यज्ञ सम्मेलनों की आवश्यकता इन कार्यकर्त्ताओं से पूरी हो जाएगी। युग निर्माण विद्यालय अबाध रूप से चल रहा था। उसमें आने वाले विद्यार्थी साल भर रहकर प्रेस या बिजली का काम सीख लेते। वे इतनी योग्यता अर्जित कर लेते कि अपनी जीविका चला सकें। यहां से प्रशिक्षित होकर जा रहे युवकों के बारे में अच्छी रिपोर्ट आ रही थीं। अपनी जीविका चलाने के अलावा ये युवक अपने आसपास के समाज और परिवेश बदलने के लिए भी प्रयत्न करते। ज्यादातर युवक तीन से चार घंटा समय युगसाधना में लगाते।

विद्यालय में प्रवेश और प्रशिक्षण पूरा होने के बाद युवकों में आया परिवर्तन नोट नहीं किया जा सकता था। उन्हें लगता कि हम तो जैसे के तैसे ही हैं। व्यक्तित्व में कोई परिवर्तन नहीं आया। कुछ लोग तो यहां तक महसूस करते कि वे और ज्यादा उद्दंड होकर जा रहे हैं। गुजरात के राजीव चौहान इसी अहसास से पीड़ित थे। राजीव की समस्या थी कि घर पर उसे चाचा चाची के नियंत्रण में रहना होता था। वह नियंत्रण कभी कदा सख्ती में बदल जाता। मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
आने के बाद राजीव को उस नियंत्रण से छुटकारा सा मिला था। अब घर जाते हुए अनागत सख्ती की आशंका परेशान करने लगी थी। बचपन से दबा हुआ व्यक्तित्व उसे अजीब मनोग्रंथि दे गया था। यह ग्रंथि पिछले एक साल में शायद घर से दूर रहने के कारण बढ़ गई थी।

राजीव घर नहीं जाना चाह रहा था। उसके चाचा ईसर सिंह उसे लेने आए तो वह यहां वहां छुपने लगा। किसी तरह समझा बुझा कर ईसरसिंह उसे शान्तिकुंज ले गए। माताजी के पास गए। माताजी ने उसे स्नेह से अपने पास बिठाया और उसके सिर को सहलाते हुए पूछा, 'बेटा क्या परेशानी है ?'

'मुझमें कोई सुधार नहीं हुआ है माताजी। मैं एक वर्ष और मथुरा रहना चाहता हूँ,' राजीव ने कहा। माताजी ने उसे यह कहते हुए निर्द्वन्द किया कि एक क्यों दो वर्ष रहो.। दस साल रहो। तुम्हारे माता पिता का घर है। पर तुम्हें कैसे लगा कि कोई सुधार नहीं हुआ है।

'बस मुझे महसूस होता है। मैं जैसा था, वैसा ही हूँ।' राजीव ने अपनी दुविधा रखी।

माताजी ने कहा, 'कोई कितना सुधर गया या विकसित हो गया है, वह स्वयं नहीं परख सकता। अब से दस साल पहले तुम तीन साढ़े तीन फुट के रहे होगे। अब साढ़े पांच फुट के हो। इन दस सालों में किसी भी दिन तुमने अनुभव किया कि तुम बड़े हो रहे हो। तुम्हारा कद बढ़ रहा है। भगवान की इस दुनिया में सभी चीजें विकसित हो रही हैं। यह कहना भगवान की अवमानना है कि कोई विकास नहीं हुआ।'

कहकर माताजी कुछ रुकीं। भोपाल के एक कार्यकर्त्ता दधीचि इस बीच वहां आ गए थे। वे माताजी की बात सुनने लगे थे। उनका अभिवादन लेकर माताजी ने राजीव से फिर कहा तुम यहां रहो, मथुरा रहो लेकिन यह बात मन से निकाल दो कि विकास नहीं हुआ है।

माताजी के पास कुछ देर बैठकर राजीव उठा पर वह वही राजीव नहीं था जो यहां आते समय था। उठते हुए उसने माताजी से कहा, 'मैं अभी देश ही जाऊंगा' फिर आपकी जैसी आज्ञा होगी। माताजी उसे जाते हुए देख रहीं थीं। उसके जाने के बाद दधीचि ने कहा, 'माताजी आप कह तो राजीव से रहीं थी लेकिन हम लोगों के लिए भी यह बड़ी भारी सीख थी। भगवान की यह सृष्टि भी पंखुड़ी दर पंखुड़ी खिल रही है। उसकी खिलावट का भान बीस पचीस साल बाद ही होगा।'

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तीन

अदृष्ट का निर्धारण

गुरुदेव की विदाई के बाद गायत्री परिवार के साधकों में अपूर्व उत्साह उभर आया था। जून १९७१ से दिसम्बर तक क्षेत्रों में पांच सौ से ज्यादा महायज्ञ सम्मेलन हुए। विदाई सम्मेलन और उसके बाद जो संकल्प हुए उनमें आयोजनों की संख्या २४० के आसपास थी। लेकिन कुछ सप्ताह में ही नए आयोजनों की बाढ़ सी आ गई। उन दिनों गुरुदेव के प्रवचन सुनने सुनाने का क्रम भी जोर पकड़ गया था। जहां आयोजन नहीं होते, वहां लोग टेप रेकार्डर और कैसेट आदि लेकर पहुंच जाते। किसी सभागार, पंचायत भवन या मंदिर में पचीस पचास लोगों को आमंत्रित करते और टेप चला देते। उस कार्यक्रम में सिर्फ वक्ता ही उपस्थित नहीं होते थे। आवाज, संदेश और भावात्मक संप्रेषण तो वही रहता।

टेप रिकार्डर और कैसेट आदि तब व्यापक प्रचलन में नहीं आए थे। किस्से कहानियों में इस यंत्र का उल्लेख जासूसी आदि के लिए किया जाता था। गीत संगीत के रूप में इसका चलन नहीं के बराबर था। इस स्थिति में कुछ श्रोता तो यंत्र को देखने और अनुभव करने भी चले आते थे। जाहिर है ये लोग नए होते थे और गुरुदेव का संदेश सुनने के बाद यंत्र को छोड़ कर उस अभियान की ओर आकर्षित हो जाते। इस तरह के नये साधकों में कुछ तुरंत गायत्री तपोभूमि या माताजी के पास शान्तिकुञ्ज जाने की तैयारी करने लगते।

राजस्थान में थेचड़ के एक व्यवसायी भगवत सिंह परमार भी टेप गोष्ठियों में गुरुदेव का संदेश सुनकर शांतिकुज दौड़े गए। शांतिकुज जाने से पहले वे मथुरा रुके। वहां दो दिन रहने के बाद उन्होंने माताजी की ओर रुख किया। भगवत सिंह जिस वेग और आतुरता से शान्तिकुञ्ज पहुंचे थे उसके लिए निर्धारित समय के बाद भी मिलने की गुंजाइश रखी गई।

उसकी आतुरता के पीछे गुरुदेव के संदेश के साथ उसका अपना कष्ट भी प्रधान कारण था। वह कष्ट माताजी के सामने ही रखा। कष्ट से पहले उसकी सात्विक अनुभूति का उल्लेख किया जाए। उदयपुर के पास एक गांव में गुरुदेव का टेप प्रवचन सुनने के बाद भगवत सिंह ने एक स्वप्न देखा। उनने देखा कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नैरोबी (केन्या) में परम पूज्य गुरुदेव ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नैरोबी नेशनल पार्क में आचार्य श्री

तन्जानिया, केन्या के परिजनों के साथ गुरुदेव ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मोम्बासा ब्रह्म समाज में
प्राण प्रतिष्ठा के बाद दर्शन हेतु विराजमान ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आने वाला कल भारत का है।

और कोई हो न हो, पर मैं तुम्हारा हूँ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
गुरुदेव समुद्र की लहरों से प्रकट होते हुए दीखते है। वे जैसे लहरों पर चलते हुए आ रहे हैं और भगवत सिंह उनके पास पहुंच कर नतमस्तक हो जाते हैं। गुरुदेव के सामने वह आत्म निवेदन करता है।

वह आकृति मुखरित होती है। उन्हीं की वाणी में परिचय मिलता है, मैं समुद्र हूँ। पृथ्वी से उसका सार लेता हूँ और उसे मधुर कर देता हूँ। भगवत सिंह आसपास नमक इकट्ठा कर रहे व्यापारियों को देखता और उनकी ओर इशारा करते हुए कहता है 'लेकिन गुरुदेव इन्हें तो खारापन ही मिल रहा है।' गुरुदेव कहते है 'क्योंकि ये अपने लिए नमक ही चाहते हैं। उन्हें सिर्फ अपने लिए चाहिए। लेकिन बादलों को देखो। वे दुनिया को बांटने के लिए यहां आते हैं। उनका रीतापन शुद्धजल से भरकर समुद्र उन्हें वापस भेजता है। वे यहां से पानी लेकर जाते हैं और तप्त धरती को शीतल कर वापस आ जाते हैं।'

अपनी अनुभूति सुनाने के बाद भगवत ने अपनी व्यथा सुनाई। उदयपुर के पास ग्रामीण क्षेत्र में उसके पास करीब दस एकड़ जमीन थी। साहूकारी के साथ कपड़ों का व्यवसाय भी चलता था। आर्थिक स्थिति ठीक ठाक ही थी। वैभव था लेकिन इतना भी नहीं कि नाम लेते ही गांव गंवई के लोग पहचान लें। स्थिति जो भी हो, उसकी अपनी समस्या विकट थी और मिलने जुलने वालों ने उसे बहुत डरा दिया था।

भगवत सिंह की कोई संतान नहीं थी। वह स्वयं भी अपने पिता का इकलौता पुत्र था। उसकी उम्र पैंतालीस वर्ष हो गई थी। निस्संतान होने का दुख या कहें कि दंश उसे बुरी तरह चुभ रहा था। यह भय भी खाए जा रहा था कि संतान नही होने पर वंश डूब जाएगा और वंश डूब गया तो श्राद्ध तर्पण के बिना सबकी आत्मा भटकेगी। अपनी व्यथा कहते हुए भगवत सिंह फूट फूट कर रोने लगा। फिर उसे अपने स्वप्न की इस समस्या से जोड़ कर कहने लगा, 'माताजी मुझे ऐसा लगता है कि गुरुदेव मुझे आशीर्वाद दे रहे हैं। वे मुझे सान्त्वना देने के लिए आ रहे हैं और शायद कह रहे हैं कि समाज की सेवा कर।'

माताजी ने भगवतसिंह का सिर थपथपाया और कहा, 'गुरुदेव का अनुग्रह सब पर बरस रहा है बेटा! तुम पर भी उनकी कृपा है। मैं भी तुम्हारी समस्या के लिए प्रार्थना करूंगी।'

वह थोड़ा आश्वस्त हुआ। फिर कहने लगा, 'समाज के लिए काम करने की बात मेरे मन में आती है। हमारे इलाके में गायों के चारे पानी का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बंदोबस्त ठीक नहीं है। लोग गायें पालते तो है लेकिन दूध दुहकर उन्हें खुला छोड़ देते है। मेरा मन है कि गोशाला बनवाऊं।'

माताजी ने कहा, 'अच्छा काम है बेटा लेकिन गोशाला में ऐसी गायों को रखना, जिनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं हो। लोग बूढ़ी, बीमार और दूध नहीं देने वाली गायों को उपेक्षित छोड़ देते हैं। दूसरे की पालतू गायों की सेवा के बजाय इन गायों पर ध्यान दो। जो लोग अपनी गायों को यूं ही छोड़ देते हैं। उन्हें तो सजा मिलनी चाहिए।'

कहकर माताजी रुकी। भगवत सिंह उनकी बात गौर से सुन रहा था। उसकी भंगिमा देखकर लगा कि उसे अभी कुछ सुनने की आस है। माताजी कह कर चुप हो गई थीं। भगवत सिंह से रहा नहीं गया। उसने पूछा, 'और कुछ भी करना चाहिए माताजी।'

'इतना भी काफी है बेटा। गोमाता की सेवा से तुम्हारे मन को शांति मिलेगी और कुछ करने का मन हो तो गोशाला के साथ ज्ञानमंदिर भी बना लेना। वहां साहित्य रखना। लोग उस साहित्य को पढ़कर अपना जीवन धन्य करेंगे। ज्ञानमंदिर के साथ यज्ञ हवन और आरती की व्यवस्था भी कर सकते हो।'

भगवत सिंह कुछ देर और बैठा रहा। फिर प्रणाम कर उठ गया। उसके उठने, प्रणाम करने और जाने के रंगढंग से साफ लगा रहा था कि वह अपने गांव जा कर कुछ करेगा। वापस जाने के कोई महीने भर बाद उसने अपने प्रयासों की रिपोर्ट भेजी। थेचड़ में गोशाला और ज्ञानमंदिर शुरु हो गया था। लोग आने लगे हैं। साहित्य ले जाते हैं। पढ़ कर वापस कर जाते हैं और नई किताबें ले जाते हैं। गुरुदेव के टेप प्रवचन और युग संगीत भी ज्ञानमंदिर की दिनचर्या में शामिल कर लिए गए हैं।

टेप प्रवचनों, गोष्ठियों और व्यक्तिगत संपर्क में आकर प्रभावित लोग शान्तिकुंज भी पहुंचने लगे थे। यों समयदानी कार्यकर्त्ता, पुराने साधक और यज्ञ सम्मेलनों में प्रभावित विचारशील व्यक्तियों की संख्या इससे अलग थी।

निजी समस्याओं और कष्ट कठिनाइयों से पीड़ित लोग अपनी बात भी कहते और क्षेत्र में काम करने के लिए भी परामर्श करते। माताजी उनकी निजी समस्याओं पर ही ज्यादा ध्यान देती थीं। युग साधना पर कम जोर देती थीं। आगंतुकों में स्वाभाविक ही गुरुदेव के बारे में जानने की उत्सुकता होती थी। वे माताजी से पूछते कि गुरुदेव कहां हैं? कभी वापस आएंगे या नहीं? आपको

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
उनका संदेश मिलता है या नहीं? इस तरह की जिज्ञासाओं का माताजी के पास कोई समाधान नहीं था। उनका सहज उत्तर यही होता कि गुरुदेव अज्ञातवास में हैं। अज्ञातवास का अर्थ है उनके बारे में किसी को कुछ नहीं मालूम।

संपर्क का उपाय

आतुर और व्यग्र साधकों को इससे संतोष नहीं होता था। वे पूछते रहते थे कि गुरुदेव से संपर्क का कोई उपाय होना चाहिए। उनसे प्रत्यक्ष संपर्क भले न हो उनकी चेतना से तो संपर्क हो ही सकता है। भगवान किसी को दिखाई नहीं देते, फिर भी भक्तजन ध्यान, धारणा द्वारा उनसे संबंध बना ही लेते हैं। इस उत्तर के बाद उपाय का आग्रह रखने वालों को माताजी ने ध्यान की एक सरल विधि बताई। उसके बारे में निर्देश दिया था कि कौतूहल वश इसका उपयोग नहीं करना है। जब कोई दुविधा हो, स्थितियां जटिल हो रही हों या विकट समस्या सामने आ गई हो तभी इसका उपयोग करना चाहिए। एक बार समाधान मिलने के बाद उसी समस्या के लिए दोबारा प्रयोग नहीं करना है।

उपाय में साधक को प्रात:काल पांच से सात बजे के बीच कोई समय चुनना था। संध्या और गायत्री जप के बाद हिमालय की ओर मुंह करके बैठना है। संध्या गायत्री में पूर्व की ओर मुंह करके बैठा जाता है। इस ध्यान धारणा में दिशा बदल लेनी है। उत्तर की ओर सुखासन से बैठने के बाद तीन बार प्राणायाम करें। प्राणायाम के बाद शांत चित्त होकर गुरुदेव का ध्यान करें। तीस सेकंड ध्यान के बाद चुपचाप बैठ जाएं और अपनी सांस पर ध्यान केन्द्रित करें। श्वास प्रश्वास को देखते भर रहें, मन में किसी तरह की प्रतिक्रिया न लाएं। साक्षी भाव से श्वास को आते जाते अनुभव भर करें। ध्यान और साक्षी भाव के उन क्षणों में ही कुछ स्फुरणा जगेगी और स्वत: अनुभव होगा कि गुरुदेव की ओर से समाधान आ रहा है। अपना चित्त जितना शांत और स्थिर होगा समाधान उतना ही स्पष्ट होगा।

माताजी यह उपाय युग साधना में लगे परिजनों को ही बताती थी। उपाय के साथ यह अनुशासन भी था कि गुरु द्वारा उपदिष्ट होने पर ही साधना सफल होगी। कहना न होगा कि उस समय माताजी ही गुरुदेव का प्रतिनिधित्व कर रही थीं। दूसरा अनुशासन निजी या लौकिक लाभों के लिए इस उपाय को प्रयोग में नहीं लाना था। निजी जीवन में कोई ऐसी समस्या आ गई हो कि और सभी प्रयास विफल हो गए हैं, उस स्थिति में कभी कभार इस उपाय का सहारा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिया जा सकता है। अन्यथा यह उपाय केवल और केवल 'युगसाधना' तथा 'आत्मविकास' में आ रही अड़चनों के लिए ही काम में लेना है।

हिमाचल प्रदेश में शिमला के पास किसी गांव से खबर आई थी कि वहां चंदना नामक एक महिला को गायत्री की सवारी आती है। वह रविवार को सुबह बैठक लगाती। धूप दीप जलाती और झूमने लगती। आसपास बैठे लोग गायत्री माता की जय का नारा लगाते फिर आरती गाते। इस अवधि में चंदना उठकर नाचते और झूमते हुए चारों तरफ दौड़ने भी लगती। आरती पूरी होने के बाद वह कमरे में बिछी चौकी पर बैठ जाती। सामने बैठे लोग एक एक कर उसके सामने जाते। अपनी इच्छाएं और समस्याएं कहते। चंदना उन लोगों को जवाब देती, समाधान बताती। समाधानों में व्रत, उपवास, पांच या सात चौकियों तक यह यहां आने, हाजिरी लगाने और भेंट पूजा चढ़ाने के लिए कहा जाता। चौकी में आए लोग पहली बार भी अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार भेंट पूजा लाते। इस तरह चंदना का धंधा चल निकला। हर रविवार को वहां पंद्रह बीस लोग पहुंचने लगे थे। सूचना मिली थी कि जाने वालों की संख्या धीरे धीरे बढ़ने लगी थी।

उस क्षेत्र के साधकों का शान्तिकुञ्ज आना जाना था। माताजी को इस बारे में बताया गया। साधकों की दुविधा यह थी कि लोग चंदना के बारे में उनसे पूछते थे। चौकी के बारे में तरह तरह के सवाल करते। क्या सचमुच गायत्री माता की सवारी आती है। आप लोग भी गायत्री के उपासक है, आपको भी उनके भाव आते हैं क्या? दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती आदि देवियों की चौकी नहीं लगती है। गायत्री की क्यों लगती है? आसपास के साधकों से इन प्रश्नों का उत्तर देते नहीं बनता था। अगर कहें कि चौकी लग सकती है तो चंदना की गतिविधियों को समर्थन मिलता है और मना करें तो संकोच होता है कि पता नहीं चंदना सही ही हो। कुछ साधकों ने चंदना का विरोध भी शुरु कर दिया था। लेकिन उसका कोई असर नहीं हुआ।

साधकों ने माताजी के सामने अपनी अपनी समस्या रखी। सुनकर माताजी हंसी फिर कहा कि इस तरह की घटनाओं से परेशान नहीं होना चाहिए। कुछ समय बीतने पर इस तरह की चौकियां, सवारियां या भाव अपने आप शांत हो जाते हैं।

कुछ और जगहों से भी गायत्री माता की चौकी और गुरुदेव के आवेश की सूचनाएं मिली थीं। उन सूचनाओं पर माताजी ध्यान नहीं देतीं। सुन कर वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हंस भर देतीं। अनुरोध होने लगा कि माताजी अपनी ओर से इस तरह की प्रवृत्तियों का खंडन करें। उन्हें प्रताड़ित करें। कुछ कार्यकर्त्ताओं ने पत्र भी लिखे कि पत्रिका में एक सूचना ही छाप दी जाए कि ऐसे प्रयास अनैतिक और पापपूर्ण हैं। उन्हें मान्यता नहीं दी जाए। परिजन इन प्रयत्नों को नकारें। माताजी ने उन साधकों को पत्र से ही उत्तर दिया और कहा कि उपेक्षा ही पर्याप्त है।

महाराष्ट्र से आवेश और चौकी की शिकायत लेकर आए आठवले, विष्णुजोशी और विट्ठलभाई आदि साधकों ने माताजी के सामने हठ ही कर लिया। वे कहने लगे कि जब तक इस तरह की प्रवृत्तियों को निरस्त करने के लिए ठोस कदम नहीं उठाए जाते, वे वापस नहीं जाएंगे। इन घटनाओं के कारण क्षेत्र में काम करने में अड़चन आती है। माताजी ने उनके हठ और तर्क को महत्त्व दिया। लेकिन वे किसी तरह के प्रतिकार को आवश्यक नहीं मान रही थीं। उन्होंने कार्यकर्त्ताओं को समझाया कि आजादी की लड़ाई के समय जब सत्याग्रह आंदोलन चरम पर था तब जानते हैं क्या हुआ? बिहार में कुछ लोगों ने महात्मा गांधी का मंदिर बना लिया। उनकी मूर्ति बनाकर लगा दी। पूजा पाठ करने लगे। गांधीजी को इस बात की खबर लगी तो वे थोड़े हैरान जरूर हुए लेकिन उन्होंने मंदिर बनाने वालों को कोसने के बजाय सिर्फ यही कहा कि वे लोग नादान हैं। पानी में उठे बुलबुले की तरह उनका काम अपने आप बुझ जाता है। और सचमुच स्थानीय लोगों के असहयोग उपहास से वह मंदिर कुछ ही दिनों में उजड़ गया।

माताजी विट्ठलभाई आदि को समझाए जा रही थीं कि कोई भी उपासक चौकियों के बारे में सोचेगा तो उसे विचार आएगा कि गायत्री माता का आवेश आ सकता है तो सबसे पहले महापुरश्चरण और अनुष्ठान करने वाले साधकों पर आना चाहिए। फिर गुरुदेव से कोई भी व्यक्ति थोड़ा सा अभ्यास कर निर्मल हुई चेतना से कहीं भी संपर्क कर सकता है। उसके लिए चौकी लगाने की जरूरत नहीं है। ये हरकतें बरसाती खर-पतवार की तरह अपने आप सूख जाएंगी। तुम इतना ही ध्यान रखो कि यह घासफूस जमीन के नम और अनुकूल होने की सूचना है। उसका उपयोग करो और नए विचारों के बीज बोओ।

संकट का अध्यात्म उपचार

आवेश और चौकी जैसी उन असाधारण विसंगतियों के अलावा अनिश्चय और अस्थिरता के बड़े उफान समाज में उभर रहे थे। ये उफान मामूली अंध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
विश्वासों की तुलना में हजार लाख गुना ज्यादा भीषण थे। इस भीषण भयावह से चिंतित लोग भी शान्तिकुञ्ज आ रहे थे। ऐसा ही विकट उफान १९७१ के आखिरी दिनों में भारत पाक सीमा पर उठ रहा था। उस उफान से चिंतित केन्द्र सरकार के एक प्रतिनिधि के.एस. अय्यर शान्तिकुञ्ज आए। उस समय सीमा पर युद्ध छिड़ गया था। छह महीने पहले सीमा पार से आ रही शरणार्थियों की बाढ़ ने भारत के सामने एक अलग तरह की समस्या पहले ही विकट रूप में खड़ी कर रखी थी। युद्ध ने इस जटिल स्थिति को और भी जटिल बना दिया था। इधर अंतर्राष्ट्रीय जगत में भारत के साथ कम ही देश खड़े दिखाई दे रहे थे। ज्यादातर विरुद्ध ही थे। महाबली देश अमेरिका ने तो स्पष्ट रूप से युद्ध में हस्तक्षेप करने और भारत को सबक सिखाने की चेतावनी भी दे दी थी।

प्रतिनिधि अय्यर ने माताजी के सामने मार्च १९७१ से अब तक की घटनाओं का ब्यौरा रखा। अनुरोध किया कि संकट के इस दौर में कुछ ऐसे आध्यात्मिक उपचार किए जाएं कि राष्ट्र के मानस में भी उसका प्रभाव दिखाई दे। लोग विश्वास से भरे हुए दिखाई दें। माताजी ने उन्हें बताया कि इस तरह के उपचार पहले ही किए जा रहे हैं। उनका प्रभाव भी हुआ है।

सुनकर प्रतिनिधि जानने की मुद्रा में माताजी की ओर देखने लगे। माताजी ने उनके भाव समझे और कहा कि आश्विन नवरात्रियों (सितम्बर) में गुरुदेव के निर्देश पर परिजनों ने विशिष्ट साधनाएं की थीं। उन्होंने स्वयं भी सूक्ष्म जगत में हस्तक्षेप किया था और आप भी जानते हैं कि उसके बाद भारतीय नेतृत्व में आत्मविश्वास का भाव हिलोरें मारने लगा था। के.एस. अय्यर ने अपनी स्मृति में तिथि क्रम को उलटा पलटा। उन्हें याद आया। नवरात्रियों के बाद भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने बीबीसी के एक प्रसारण में गर्जना सी की थी। उन्होंने कहा था कि दूसरे देश क्या सोचते हैं या हमसे क्या करवाना चाहते हैं, इसकी हमें जरा भी चिंता नहीं है। हम अच्छी तरह जानते हैं कि हम क्या करना चाहते हैं। यह भी कि हम क्या करने जा रहे हैं। कोई देश हमारी मदद करना चाहे तो स्वागत है और अगर वह नहीं मिले तो भी कोई परेशानी नहीं है।

अय्यर को लगा कि वह घोषणा फिर जीवंत हो उठी है। इस बोध के बाद उन्होंने माताजी से कहा कि गायत्री परिवार के साधकों की तरह मैं भी निश्चिंत हूं। उन्हीं ने बताया कि संकट की इस घड़ी में केन्द्रीय नेतृत्व सीमा पर मोर्चाबंदी और आंतरिक सुरक्षा के सभी उपाय करने के साथ अध्यात्म उपचारों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
के लिए भी यत्नशील है। मुझे यहां इसीलिए भेजा गया है। माताजी ने उन्हें यह कहते हुए विदा किया कि कार्यालय में गुरुदेव की घोषणाएं सहेज कर रखी हुई हैं। आप उन्हें देखते हुए जाएं। अय्यर ने कहा इसकी आवश्यकता नहीं है। मैं अखंड ज्योति पढ़ता रहा हूं और जानता हूं कि गुरुदेव मनुष्य में देवत्व और पृथ्वी पर दिव्य वातावरण रचने के लिए गए हुए हैं। भारत का भविष्य उज्ज्वल है।

युद्ध ग्यारह दिन तक चला था। इन ग्यारह दिनों में अमेरिकी सरकार ने हस्तक्षेप की योजना बनाई थी। उसके लिए पहल भी कर दी थी। अमेरिका के तत्कालीन विदेशमंत्री हेनरी किसिंगर के शब्दों में राष्ट्रपति निक्सन बांग्लादेश की जनता को जीतते हुए नहीं देखना चाहते थे। इसके लिए वे पहल करने को भी तैयार थे। अमेरिका ने भारत को आक्रमणकारी घोषित कर दिया और सभी तरह की आर्थिक मदद बंद कर दी । संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में हस्तक्षेप और दोनों सेनाओं के तुरंत वापस होने का प्रस्ताव रखा। उन प्रस्तावों को सोवियत संघ ने वीटो कर दिया।

इस पहल के तहत

हताशा की स्थिति में निक्सन प्रशासन ने सैनिक हस्तक्षेप की तैयारी की। अमेरिकी राष्ट्रपति ने सातवें बेड़े को बंगाल की खाड़ी में कूच करने का आदेश दिया। इस बेड़े का नेतृत्व परमाणु बम से लैस वायुयान वाहक यूएसएस एंटरप्राइज कर रहा था। बेड़ा ९ दिसम्बर १९७१ को बंगाल की खाड़ी के लिए रवाना हुआ। उसकी मारक क्षमता के बारे में जानकार लोगों को लगने लगा कि युद्ध में बाजी उलट सकती है। सचमुच बेड़े के आगे टिके रहना उस समय की किसी भी सेना के वश में नहीं था। खबरें आ रही थीं कि बेड़ा आज बंगाल की खाड़ी से इतने किलोमीटर दूर है, अगले दिन उसके खाड़ी में प्रवेश का समय और इससे अगले दिन हवाई हमलों के अब और तब शुरू हो जाने के अनुमान प्रकाशित होने लगे।

अनसुलझा रहस्य

इस बीच स्थितियों ने अचानक नाटकीय मोड़ लिया। दुनिया में किसी भी युद्ध के इतिहास में ऐसे क्षण नहीं आए होंगे कि हमले की निश्चित संभावनाएं अचानक उलट गई हों और बढ़े हुए कदम वापस ले लिए गए हों। सातवें बेड़े के आज कल और कुछ घंटों बाद ही सक्रिय हस्तक्षेप के समाचार आना थम गए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
और अगले दिन अचानक पता चला कि सातवें बेड़े ने अपनी दिशा बदल दी है। वह वापस जा रहा है। संभवत: वह गीता जयंती के आसपास के दिन थे।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने बेड़े को वापस रुख करने का आदेश किन परिस्थितियों में दिया, यह आज भी रहस्य बना हुआ है। बीस साल बाद किसी भी स्तर पर किए गए फैसलों को सार्वजनिक कर देने वाले देश के इस निर्णय का रहस्य अभी तक उजागर नहीं हुआ है। उन दिनों समाचार माध्यम आज की तरह तेज और सक्षम नहीं थे। सामरिक घटनाओं की जानकारी का स्रोत सरकारी विज्ञप्तियां या सैनिक घोषणाएं ही होती थीं। बेड़े की वापसी की खबर आने में समय लगा और उसका कारण तो अभी तक अज्ञात ही है।

उन स्थितियों में कुछ साधकों ने विचित्र अनुभव किए। अखबारों में तब युद्ध की गतिविधियों के समाचार आ रहे थे। सातवें बेड़े के कूच करने के साथ उसकी क्षमता और हस्तक्षेप के बाद युद्ध के परिणामों की कयासबाजियां भी छप रही थीं। उन दिनों राजनांदगांव मध्यप्रदेश के एक साधक ललित कुमार साहू ने प्रात:कालीन संध्या के समय ध्यान में एक अद्भुत दृश्य देखा। यह दृश्य उन्हें बाद में स्वप्न में भी दिखाई दिया। दृश्य में एक विराट जहाज और उसके आसपास सैकड़ों नौकाएं तैरती दिखाई दे रही हैं। जहाज पर विमानभेदी तोपें और युद्धक विमान भी लदे हुए हैं। यह बेड़ा तेजगति से भारतीय तट की ओर बढ़ रहा है।

स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि बेड़ा रामेश्वरम की सीध में आ गया है। अचानक समुद्र की छाती को चीरता हुआ एक विशाल हाथ निकलता है। उस हाथ की मुट्ठी तनी हुई है। लहरों से उभरकर हाथ आकाश की ऊंचाई तक उठता है और पंजा खुलने लगता है। वह पंजा जहाजी बेड़े को आवृत्त करने लगता है। बेड़े पर छा जाता है और उसे तोड़ता मरोड़ता हुआ वापस समुद्र के गर्भ में समा जाता है। रामेश्वर के सामने जहां बेड़ा धड़धड़ाता हुआ आगे बढ़ रहा था, वहां अब उसके अवशेष बचे हुए है। इस अनुभूति के साथ ध्यान पूरा होता है। रात स्वप्न में भी यही दृश्य दिखाई देता है और नींद खुलती है तो अपूर्व शांति की अनुभूति होती है। पूरे दिन शांति प्रतीत होती रही। इच्छा उमगी कि इस हाथ के बारे में औरों को बताया जाए। लेकिन कौन विश्वास करेगा, यह सोचकर अपने आपको रोक लिया। फिर विचार आया कि कम से कम माताजी को तो बताया ही जाए। दोपहर के समय उसने कलम उठाई और अपने अनुभव का विवरण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
लिखकर माताजी को भेज दिया। दो या तीन दिन बाद ही रेडियो पर समाचार सुना कि सातवां बेड़ा बंगाल की खाड़ी में प्रवेश से पहले ही वापस मुड़ गया है।

बेड़े की वापसी के तीन चार दिन बाद ही ढाका में भारतीय सेनाओं के विजयी होने का समाचार आया। इसके बाद की राजनैतिक और कूटनीतिक घटनाओं का एक लंबा सिलसिला है। शेख मुजीब की रिहाई, उनकी ताजपोशी, शरणार्थियों की समस्या हल होने और युद्धबंदियों के वापस जाने के ढेरों विवरण हैं। उनके विस्तार में जाना आवश्यक नहीं है।

महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि पूरा देश जब विजय की खुशियां मना रहा था तो गायत्री परिवार के साधकों ने शांति के लिए अनुष्ठान शुरु कर दिए थे। इन कार्यक्रमों में उन सैनिकों को सम्मिलित किया गया जिन्होंने युद्ध में भाग लिया था। वीरगति को प्राप्त हुए सैनिकों और नागरिकों के कल्याण की भावना और उनके परिजनों को सम्मानित करते हुए इन आयोजनों में स्थानीय लोग भी भाग लेते। ऐसे अवसरों पर युद्ध की घटनाएं, आप बीती और आध्यात्मिक अनुभवों की चर्चा भी होती। इन चर्चाओं में प्रायः एक ही निष्कर्ष निकल कर आता कि युद्ध जमीनी मोर्चे पर ही नहीं लड़ा गया है, सूक्ष्म जगत में भी इसका संचालन और नियंत्रण होता रहा है। यह भी कि प्रकट तौर पर यह युद्ध भले ही बांग्लादेश के अलग होने के रूप में दिखाई देता हो लेकिन आगे चलकर यह १९४७ की भूल सुधारने के रूप में दिखाई देगा। आजादी के समय विभाजित हुआ भारत देश वापस एक होगा। भले ही चालीस-पचास या सौ-सवा सौ साल लगें लेकिन भारतीय उपमहाद्वीप के एकसूत्र में बंधने के रूप में उसकी नियति चरितार्थ होगी। इन चर्चाओं के साथ गुरुदेव के दिए गए संदेशों और आश्वासनों की भी स्वाभाविक ही चर्चा होती थी।

पंचाक्षरी मंत्र और नाम

दिसंबर १९७१ बीतने तक क्षेत्र में गायत्री महायज्ञों और सम्मेलनों का वेग थमने लगा था। वसंत पंचमी करीब आ रही थी। साधक उसकी तैयारी में जुट रहे थे। यह पहली वसंत पंचमी थी, जिसमें गुरुदेव से संपर्क नहीं हो सकता था। कम से कम उस तरह तो कतई नहीं, जैसा कि पिछले वसंत उत्सवों पर होता रहा है। यद्यपि सभी साधक वसंत पंचमी पर उनके साथ नहीं होते थे, फिर भी उनका संदेश पत्र और कुछ नहीं तो गुरुदेव के मथुरा में उनके रहने का बोध भी प्रत्यक्ष संपर्क का आभास दे जाता था। इस बार ऐसी कोई संभावना नहीं थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
साधकों ने उनके सान्निध्य या अनुग्रह के लिए स्थानीय आयोजनों को ही कुशलता से मनाने की कसौटी मान ली थी। जो जहां जितना कुशल और कर्मठ होगा, उसे वहीं गुरुदेव का स्नेह अनुग्रह मिलेगा।

शान्तिकुंज और गायत्री तपोभूमि में भी वसंत पर्व पर कोई बड़ा आयोजन करने के बजाय नई गतिविधियों के सूत्रपात पर जोर था। शान्तिकुञ्ज में जप करने वाली कन्याओं की संख्या अब लगभग बारह हो गई थी। वे बारी से जप के लिए बैठती। सुबह डेढ़ घंटा और रात में एक घंटा। प्रत्येक कन्या को इस तरह प्रतिदिन ढाई घंटा जप करना होता था। बाकी समय वे पढ़ने लिखने में बिताती। पढ़ाने का दायित्व स्वयं माताजी संभाल रहीं थीं। कन्याएं स्कूली पाठ्यक्रम के अलावा संगीत और सिलाई भी सिखाती। बसंत पर्व आने तक उनकी शिक्षा दीक्षा को व्यवस्थित रूप देना निश्चित किया गया। इसके लिए विद्यालय बनाने की बात सोची गई। ऐसी व्यवस्थाएं बनाई जाने लगीं कि दो तीन महीनों में शिक्षण का काम शुरु हो जाए, बहुत हुआ तो मई जून तक।

भोजनालय की व्यवस्था माताजी और देव कन्याएं मिलकर संभालती थीं। हाथ बटाने के लिए दो सेविकाएं रखीं गईं थी। माताजी का मानना था कि उन पर सारा बोझ नहीं डाल देना चाहिए। इधर इन कन्याओं में से मई जून तक कुछ को वापस भी जाना था। वे छह महीने के लिए ही शांतिकुञ्ज आई थीं। माताजी के सान्निध्य में रहकर जप, अनुष्ठान, साधना और संजीवनी विद्या का आकर्षण और कन्याओं या उनके अभिभावकों को भी प्रेरित कर रहा था। कई अभिभावकों के आवेदन आए हुए थे। उनके बारे में विचार करते हुए माताजी ने कहा कि चौबीस महापुरश्चरण छह साल में पूरे होने हैं। साल भर तो हुआ जा रहा था अब पांच वर्ष का समय और शेष है। अच्छा हो कि जो भी कन्याएं आएं वे कम से कम पांच वर्ष तो यहां रहें। इस अवधि में व्यक्तिगत रूप से वे स्वयं भी कम से कम तीन महापुरश्चरण कर लेंगी। इतने समय यहां रहने पर वे अपनी योग्यताओं का विकास भी कर सकेंगी। साल छह महीने में जीवन की दिशाधारा तो तय की जा सकती है, तकनीकी ज्ञान या कला भी सीखी जा सकती है लेकिन व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो सकता।

देवकन्याओं के तौर पर आना चाह रही लड़कियों और उनके अभिभावकों को यह बात बता दी गई। भोजनालय की व्यवस्था के सहयोग के लिए सेविका की बात, 'अखंड ज्योति' में छपी। उससे पहले ही छत्तीसगढ़ क्षेत्र की दो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महिलाएं शान्तिकुञ्ज आईं। दरअसल वे क्षेत्र के किसी कार्यकर्त्ता के साथ माताजी से मिलने आई थीं। माताजी ने उन कार्यकर्त्ता को भोजनालय की आवश्यकता के बारे में बताया कि दो महिलाएं चाहिए। सेवाभावी हों और आश्रम के अनुशासन नियमों को भी लगन से निभा सकें। इस चर्चा के बीच में ही उन महिलाओं ने कहा कि हम यह काम करेंगी। अचानक ही कहा था इसलिए पहली बार में ध्यान नहीं गया। लेकिन वे बार-बार कहने लगीं। अपनी बात में वजन पैदा करने के लिए उन्होंने यह भी कहा कि हम पढ़ी लिखी नहीं हैं, इसलिए आप हमें सेवा का मौका नहीं दे रहीं। हम लोग तो सोचकर ही आईं थीं कि पहले किसी भी तरह की सेवा का मौका मिल जाए तो बाकी जीवन आपके चरणों में ही काट दें।

पढ़ा लिखा नहीं होने की बात जिस कातर भाव से कही थी, उससे माताजी को तरस आया। उन्होंने कहा कि सेवा के किसी भी क्षेत्र में शिक्षा से ज्यादा लगन और निष्ठा जरूरी है बेटी। तुम लोग दो सप्ताह यहां रुको। काम करना अच्छा लगे, तुम्हारा मन लग जाए तो आगे के बारे में सोचेंगे।

उन्हें साथ लेकर आए कार्यकर्त्ता ने ही बताया कि इन महिलाओं ने गुरुदेव से गायत्री मंत्र की दीक्षा ली थी। उन्होंने दीक्षा के समय कहा था कि पूरे गायत्री मंत्र का उच्चारण करना हमारे लिए संभव नहीं होगा। तब गुरुदेव ने कहा था पंचाक्षरी (ॐ भूर्भुवः स्वः) का जप कर लेना। उससे भी जप की आवश्यकता पूरी हो जाएगी। उन महिलाओं से पंचाक्षरी का उच्चारण भी नहीं हो पाया था तब गुरुदेव ने राम नाम की तरह गायत्री जपने के लिए कह दिया था। यह शर्त भी जोड़ दी थी कि जप के साथ विद्या का अभ्यास भी करते चलना है। घर में या आसपास कोई व्यक्ति पढ़ा लिखा हो तो उससे अक्षर ज्ञान सीख कर पढ़ने की आदत डालनी है। गायत्री मंत्र का संपूर्ण जप किया जाए तभी उद्धार होता है। पंचाक्षरी और गायत्री नाम का जप तो ग्लूकोज और विटामिन की तरह है।

कार्यकर्त्ता मनोहारी ढंग से बता रहे थे। ग्लूकोज और विटामिन की बात सुनकर माताजी को हंसी आ गई। उन्हीं कार्यकर्त्ता ने बताया कि गुरुदेव के निर्देश को गांठ बांधकर इन महिलाओं ने शाम के वक्त चलने वाली प्रौढ़ पाठशाला में जाना शुरु किया। प्रौढ़ पाठशाला गायत्री परिवार के स्थानीय कार्यकर्त्ता ही चलाते थे। उसमें चार पांच लोगों से ज्यादा कभी नहीं आए लेकिन जो आए वे रामचरित मानस का पाठ करना तो सीख ही गए। इन महिलाओं ने भी गायत्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मंत्र के उच्चारण करने और मानस पढ़ने जितना अभ्यास कर लिया था। यह विवरण जानकर उन महिलाओं को आश्रम में रख लिया गया।

जिन खोजा तिन पाइंया

मथुरा में कुछ कार्यकर्त्ताओं को पता नहीं क्यों लग रहा था कि वसंत पर्व पर गुरुदेव से संपर्क हो सकता है। वे शांतिकुञ्ज तो नहीं आएंगे लेकिन उत्तरकाशी या उसके आसपास किसी आरण्यक तीर्थ में आ सकते हैं। लीलापतजी ने इस आभास के बारे में माताजी से कहा। माताजी को गुरुदेव के बारे में इस तरह की कोई सूचना नहीं थी। लीलापतजी ने अपनी बात पर जोर दिया तो माताजी ने कहा कि गुरुदेव सबके मन में बसे हैं। वे प्रत्येक की भावना के अनुरूप अपने आपको रच और प्रकट कर सकते हैं। भगवान कृष्ण भी तो अपने भक्तों और गोपियों के लिए अलग-अलग रूप में प्रकट कर लेते थे। भगवान राम वनवास से लौटे थे तो अयोध्या वासियों से एक ही समय में अलग रूप में मिले थे।

विस्तार से कही गई इस बात ने लीलापतजी का मन रत्तीभर नहीं बदला था। उन्होंने उत्तरकाशी जाने के लिए माताजी से अनुमति मांगी। कहा कि मथुरा में प्रबंध दूसरे भाई-बंधु देख सकते हैं। इस पर माताजी ने डपट दिया। कहा कि इसके लिए उत्तरकाशी या दक्षिण काशी भटकने की जरूरत नहीं है। मथुरा में गुरुदेव का सौंपा हुआ काम संभालो। उस काम में ही गुरुदेव के प्रत्यक्ष और परोक्ष दर्शन करो।

तपोभूमि का काम संभालने के बाद लीलापतजी ने गायत्री मंदिर में-गुरुदेव के चित्र के सामने बैठना शुरू कर दिया था। प्रात: संध्या के बाद वे नियमित रूप से वहां बैठते थे। उनका कहना था कि संध्या-गायत्री जप पूरा होने के बाद गुरुदेव उन्हें दिनभर के कामों के बारे में निर्देश देते हैं। माताजी ने उस क्रम की याद दिलाई और कहा कि उनका सामीप्य और संपर्क तो तुम्हें प्रतिदिन मिल जाता है। प्रत्यक्ष मिलता है फिर क्यों लालायित हो? यह वसंत से काफी पहले की घटना है। लीलापतजी माताजी का निर्देश लेकर वापस आ गए थे।

कुछ साधकों ने उन्हीं दिनों निजी स्तर पर आध्यात्मिक प्रयोग भी किए थे। ये प्रयोग माताजी द्वारा बताई गई विशिष्ट विधि के अनुसार थे। प्रयोगों के लिए किसी ने कुछ कहा नहीं था, स्वत: स्फूर्त ही कर लिए थे। साधक प्रात: चार बजे उठे। स्नानादि के बाद सुबह की संध्या के लिए बैठे। संध्या जप के बाद

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
उन्होंने उत्तर दिशा में ध्यान लगाया और अपनी मार्गदर्शक सत्ता का आह्वान किया। उस आह्वान के बाद कितने ही साधकों ने अनुभव किया कि गुरुदेव से उनका संपर्क हो गया है। अनुभव करने वाले साधकों ने अपने संस्मरण प्राय:लिखे नहीं हैं। बहुतों ने तो उन्हें प्रकट भी नहीं किया। जितने लोगों ने प्रकट किया है, उनकी संख्या दस बारह है।

अनुभव करने वालों में एक कार्यकर्त्ता बद्रीप्रसाद पहाड़िया थे, जिन्हें गुरुदेव ने मथुरा मे पहली दीक्षा के लिए चुना था। पहाड़ियाजी तब बांदा में थे। संपर्क साधना के समय उन्होंने देखा कि शांतिकुञ्ज में बड़ी संख्या में लोग आ जा रहे हैं। बीसियों लोग साधना कर रहे हैं और वे साधकों के लिए सब्जियां खरीद रहे हैं, राशन ला रहे हैं। गुरुदेव कह रहे थे कि तुम्हें यहां यही जिम्मेदारी संभालनी है। वह कह रहे हैं कि आश्रम में इतने लोग हैं कहां? गुरुदेव कह रहे हैं कि हैं नहीं लेकिन आगे आएंगे। वे माताजी के सान्निध्य में आत्म विकास की साधना करेंगे।

१९७२ का वर्ष भारतीय स्वतंत्रता का रजत जयंती वर्ष था। बांग्लादेश की समस्या से उबर आने के बाद सरकार ने मिश्रित अर्थव्यवस्था का मार्ग चुना था। पिछले साल केन्द्र सरकार ने नए औद्योगिक कानून पास किए थे। उस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए बैंकों के राष्ट्रीयकरण और जमीन की हदबंदी के फैसले लागू होने जा रहे थे। दिल्ली के ही एक व्यवसायी साधक ने अनुभव किया कि एक हद तक जाने के बाद ये नीतियां भी व्यर्थ होने लगेंगी। समृद्धि और शक्ति के मार्ग पर इससे दूर तक नहीं जाया जा सकेगा। उन साधक ने पूछा कि क्या करना चाहिए? गुरुदेव की वाणी ही सुनाई दी, उनकी छवि नहीं दीखी। वे कह रहे थे नए मनुष्य का निर्माण करो। लोगों में संस्कार और निष्ठा का जागरण होना चाहिए।

एक अन्य साधक ने यज्ञ आंदोलन के विस्तार की प्रेरणा उभरती हुई अनुभव की। गुरुदेव कह रहे थे अपने क्षेत्र में चौबीस यज्ञ कराने हैं–एक वर्ष के भीतर। आयोजन बड़े नहीं हों। उनका स्वरूप छोटा ही रहे। छोटा स्वरूप रखते हुए भी कोशिश यह की जाए कि हर जगह कम से कम एक सौ आठ लोग तो संपर्क में आ ही जाए।

पुणे (महाराष्ट्र) के एक कार्यकर्त्ता रामचंद्र राव जोशी भी संपर्क-ध्यान के लिए बैठे। यह दिसंबर १९७१ की बात है। उनके मन में महीनों से इच्छा जाग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
रही थी कि चौबीस लाख का महापुरश्चरण किया जाए। उनकी आयु साठ वर्ष की रही होगी। शरीर की स्थिति इस योग्य नहीं थी कि साधना का इतना दबाव झेल सके। संपर्क-ध्यान का उद्देश्य इस विषय में गुरुदेव की अनुमति लेना है और अनुमति मिलते ही अनुष्ठान आरंभ कर देना था। जप ध्यान के लिए बैठने से पहले उन्होंने अनुष्ठान के लिए आवश्यक सामग्री भी जुटाली थी। वह सामग्री साथ रखकर ही बैठे थे।

ध्यान के लिए बैठते हुए वे प्रतीक्षा कर रहे थे कि गुरुदेव की छवि दिखाई देगी। वह छवि तो नहीं दिखाई दी एक दूसरा ही दृश्य दिखाई दिया। उस दृश्य में दिखाई दिया, युद्ध का मैदान है। बहुत से सैनिक यहां वहां आते जाते दिखाई दे रहे हैं। मेस में भोजन बन रहा है। तीन चार लोग भोजन बना रहे हैं और सैंकड़ों सैनिक भोजन कर रहे हैं। यह दृश्य लुप्त होता है। फिर एक कुंआ दिखाई देता है। कुंए के पास गांव के बहुत से लोग इकट्ठे हैं। वे पानी निकाल रहे हैं और उस पानी से नहाने धोने के बाद साथ लाए बर्तनों में भी पानी भर रहे हैं। वे पानी भर कर घर ले जा रहे हैं। कुंए का पानी खत्म हो जाता है। फिर बादल घिर आते हैं और वर्षा होने लगती है।

इन दृश्यों से जोशी ऊबने लगे थे। उन्हें प्रतीक्षा थी कि गुरुदेव दिखाई देंगे लेकिन यहां कुछ ओर ही चीजें दिख रही हैं। उन्होंने गुरुदेव को पुकारा। पुकारते ही लगा कि वे अभय मुद्रा में प्रकट हो गए हैं। कह रहे हैं कि संकट के समय, जब बहुत से लोगों को एक ही अभियान में जुटना हो तो अलग अलग भोजन बनाने और अलग अलग कुंआ खोदने में कोई समझदारी नहीं है। एक ही जगह व्यवस्था करना सही उपाय है। तुम्हारे विकास के लिए जितने साधन भजन की आवश्यकता है- उसकी पूर्ति हम कर देंगे। तुम अपनी युग साधना में लगो। जब सब कुछ ठीक हो जाएगा तो महापुरश्चरण क्या वाजपेय और राजसूय यज्ञ जैसे आयोजन भी कर लेना। इतना सुनने के बाद जोशीजी का ध्यान पूरा हो गया। उन्होंने समझ लिया कि महापुरश्चरण के लिए अनुमति नहीं है।

यज्ञ सम्मेलनों की धूम एक बार फिर शुरु हो गई थी। तपोभूमि में कार्यकर्त्ता शिविरों में पौरोहित्य सीख कर गए साधक इन आयोजनों को भलीभांति संपन्न करने लगे थे। साधना उपासना तक ही सीमित रहने वाले साधक भी अपनी प्रगति से संतुष्ट थे। इस तरह के लोग यदा कदा शान्तिकुंज आ जाते।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

माताजी से अपनी साधना उपासना की चर्चा करते। माताजी उनकी नितांत निजी और आत्मकल्याण तक ही सीमित चर्चाओं को माताजी सुनती। उनसे युग साधना या लोकमंगल के काम में जुटने के लिए नहीं कहती। जब तक कोई साधक स्वयं ही इच्छा व्यक्त नहीं करता तब तक वे चुप ही रहती। वह बातचीत माता और संतान के बीच या पारिवारिक सदस्यों के बीच होने वाली चर्चा जैसे ही होती। इस स्तर की बातचीत में कभी कभार साधक हैरान भी हो जाते। उदाहरण के लिए छिंदवाड़ा से एक कार्यकर्त्ता हरिदत्त ने माताजी से कहा कि गुरुदेव का साहित्य पढ़ने के बाद समाज में भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए जंग छेड़ने का मन है। जी करता है कि भ्रष्टाचारियों को फांसी पर लटका दूं।

हरिदत्त की बात सुनकर माताजी चुप रहीं। उसे आशा थी कि यह उत्साह देखकर माताजी पीठ थपथपाएगी। उसने अपनी बात जारी रखी और कहा कि छह लोगों के खिलाफ मुकदमे ठोके हुए हैं। जिन्हें भी रिश्वत लेते देखता हूँ उनके खिलाफ भ्रष्टाचार विरोधी विभाग या सतर्कता विभाग में शिकायत करूंगा। माताजी ने उसके उत्साह को सामान्य ढंग से लिया और हरिदत्त के घर परिवार के बारे में ही फिर पूछने लगीं। परिवार के बारे में ही फिर पूछने पर हरिदत्त अपने आपको रोक नहीं सका। वह अपनी समस्या पर आ ही गया।

छिंदवाड़ा में हरिदत्त के पुश्तैनी खेत पास पड़ोस के लोगों ने कब्जा लिए थे। खेतीबाड़ी गांव में थी। वह और उसका परिवार शहर में था। चार छह महीने में गांव जाना होता था। खेती बाड़ी लोगों के सुपुर्द की हुई थी। बटाई पर दी जमीन हिस्सेदारों ने धीरे धीरे कर हथिया ली। राजस्व विभाग के लोगों से मिलकर उन्होंने अपने नाम भी करा ली। हरिदत्त जब अपनी कहानी सुनाने लगा तो माताजी उत्सुकता जताती हुई आगे और आगे की बातें पूछने लगीं। अपनी व्यथा कहते कहते हरिदत्त रोने लगा।

माताजी ने धीरज बंधाया और कहा कि दूसरे लोगों ने सरकारी कर्मचारियों को खिला पिला कर जिस तरह अपनी तरफ मिला लिया यह तो गलत हुआ लेकिन तुम्हें सचाई के रास्ते पर अडिग रहना चाहिए। रिश्वत देकर काम कराने वालों को पग पग पर रिश्वत देना होती है लेकिन सचाई का साथ लेकर लड़ने वालों को जीत ही मिलती है। उन्हें जीतने में थोड़ी देर भले ही लगे लेकिन भगवान उसका साथ देता है। फिलहाल स्वयं उस तरह की अनीति नहीं करने और भ्रष्टाचार के खिलाफ माहौल बनाने पर ही ध्यान देना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विवाह आंदोलन की दिक्कतें

मथुरा में उन दिनों आदर्श विवाह आंदोलन के लिए एक अलग विभाग खोलना पड़ा था। बिना दान दहेज के विवाहों को समर्थन मिल रहा था। आंदोलन के ही एक कार्यक्रम के अंतर्गत विवाह योग्य लड़के लड़कियों के विवरण इकट्ठे किए जा रहे थे। निर्धारित प्रपत्र में दिए इन ब्यौरों का अंबार सा लग गया था। कठिनाई यह थी कि लड़कियों के विवरण तो ढेरों आ गए थे, बिना दहेज शादी के लिए तैयार लड़कों के विवरण उनसे आधे भी नहीं थे। जाहिर है लोग दहेज नहीं देने के लिए तो तैयार थे लेकिन लेने के नाम पर या लड़के के समय किनारे हो जाते थे। लीलापतजी हंस हंस कर सुनाते थे कि लड़के की बारी आने पर कई अभिभावक उस पर मां का अधिकार बताने लगते थे। सभी लोग इस तरह के नहीं होते थे लेकिन ज्यादातर मां, दादी, नानी, चाचा, ताऊ आदि के नाम पर दहेज नहीं लेने की प्रतिज्ञा से मुकर जाते थे। आदर्श विवाह आंदोलन की रिपोर्ट देते समय लीलापतजी ने यह स्थिति भी सामने रखी। उनका समाधान था कि दहेज नहीं लेने का प्रतिज्ञापत्र भरने वालों से उनकी संतान का नाम भी लिखाया जाए। वह भी आदर्श विवाह का संकल्प करें। जिनके पुत्र विवाह योग्य नहीं हैं, उनसे अपने संपर्क क्षेत्र में किसी एक युवक को आदर्श विवाह के लिए तैयार करने को कहा जाए।

उन्हीं दिनों बहराइच के पास से एक कार्यकर्ता नेमिशरण अपनी बेटी सविता की समस्या लेकर आए। उसकी ससुराल वालों ने विवाह के समय दान दहेज नहीं लिया था। समारोह में ज्यादा खर्च भी नहीं हुआ। गोधूलि वेला में संस्कार हुआ। बारात में आठ दस लोग ही गए थे। स्वेच्छा सुविधा से जो उपहार कन्या पक्ष सा संबंधियों ने दिए उसे स्वीकार कर लिया।

सात आठ महीने तक सब कुछ ठीक ठाक चला। बाद में ससुराल वाले सविता पर दबाव डालने लगे कि वह अपने मायके से पैसा लाए। ससुराल में वैसी विपन्नता नहीं थी कि आर्थिक सहायता की जरूरत हो। वे जिस तरह दबाव बना रहे थे उससे स्पष्ट था कि उद्देश्य दहेज की भरपाई करना था। शुरू में नेमिशरण ने दो-चार हजार रुपये दिए। अगले महीने फिर मांग आई। कुछ टालमटोल के बाद माता पिता ने इस बार भी मदद कर दी। तीसरे चौथे महीने फिर यही सिलसिला चला। मां बाप आखिर कब तक मदद करते। उन्होंने माफी मांगी तो सविता पर अत्याचार होने लगे। उत्पीड़न तो दरअसल पहले भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
होता था लेकिन वह अपमान और तिरस्कार तक ही सीमित था। अब वह प्रताड़ना तक पहुंच गया।

विवाह के डेढ़ साल बीतते तक पानी सिर से ऊपर गुजरने लगा। नेमिशरण के मन में भाव आने लगा कि इससे अपनी बेटी अपने पास ही रहे तो अच्छा। दूसरा रास्ता ससुराल वालों पर दबाव डलवा कर उन्हें बाज आने के लिए कहने का था। नहीं सुधरने पर कोर्ट कचहरी की शरण लेने का विचार भी आ गया था। कोई निर्णय लेने से पहले नेमिशरण ने माताजी से पूछना जरूरी समझा। इसी मकसद से वे शान्तिकुंज गए। माताजी के सामने अपनी व्यथा कही। सुनकर माताजी ने दो टूक शब्दों में कहा बेटी को उन दरिंदों के पास छोड़ने की कोई जरूरत नहीं है। वे अपना व्यवहार सुधारने की लाख कसम खाएं तो भी नहीं। सविता को अपने पास ले आओ। घर पर कोई व्यवस्था नहीं बने तो उसे यहां भेज दो। बिटिया को अपने पांव पर खड़ा होने लायक बनाओ। उसके बाद ससुराल वालों से कोई बात चले तो इस शर्त पर राजी होना कि वह अपने पति के साथ अलग बहराइच या आसपास के शहर में ही रहेगी। नेमिशरण को यह समाधान गले उतर रहा था। वह उठा और माताजी को प्रणाम कर उलटे पांव सविता के पास चला गया।

तीन चार दिन बाद ही संदेश आया कि बिटिया को अपने पास ले आया है। यहां बेसिक टीचर ट्रेनिंग कराने की व्यवस्था बन रही है। ट्रेनिंग के बाद किसी स्कूल में अध्यापक बन जाएगी और सविता अपनी जिंदगी जीने लगेगी। इस घटना के दो ढाई साल बाद वैसा ही हुआ जैसा माताजी ने कहा था। सविता की ससुराल वाले अपनी बहू को लिवाने आए। उन्होंने अपने किए की माफी मांगी। नेमिशरण ने आंसुओं की परवाह नहीं की और सविता को उसके पति के साथ अलग रहने का इंतजाम करके ही चैन की सांस ली।

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चार

गुरुदेव की वापसी

युद्ध विराम के बाद स्थितियाँ तेजी से सामान्य होने लगीं थीं। पाकिस्तान ने शेख मुजीबुर्रहमान को रिहा कर दिया। वे १२ जनवरी १९७२ को बांग्लादेश में सत्तारूढ़ हुए। कई देशों ने बांग्लादेश को तुरंत मान्यता दी। चीन और अमेरिका जैसे देश अरसे तक चुप्पी साधे रहे। बाकी विश्व जनमत ने महीने भर के भीतर ही बांग्लादेश को एक नये राष्ट्र के रूप में स्वीकार कर लिया। इस युद्ध के परिणाम कई तरह से भारत के लिए अनुकूल रहे। युद्ध के बाद दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन बदल गया था। भारत इस क्षेत्र में एक महाशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हुआ था। तीन चार सप्ताह में ही शरणार्थी समस्या भी सुलझा ली गई। करीब एक करोड़ शरणार्थियों को इस अवधि में कुशलता पूर्वक उनके घर भेज दिया गया।

अंतर्राष्ट्रीय जगत में भारत की भूरि भूरि सराहना की गई कि उसने कठिन परिस्थितियों में अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा कर ली थी। विश्व राजनीति के मर्मज्ञों की टिप्पणी थी कि इस युद्ध ने भारत की धर्मनिरपेक्षता को भी प्रमाणित कर दिया था। संकट में फंसे और गहरी वेदना से गुजर रहे मुस्लिम देश के लिए भारत में सभी धर्मों के लोग एकजुट होकर खड़े थे। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सभी एक साथ थे। युद्ध और उसके परिणामों से द्विराष्ट्र सिद्धांत को भारी धक्का लगा था। यह सिद्धांत १९४७ में विभाजन का आधार था। लोग अब यह साफ देख रहे थे कि इस सिद्धांत के रहनुमाओं ने अपने ही सहधर्मियों के साथ कैसा बर्ताव किया था। अंतर्राष्ट्रीय दबावों को झेलते और उनके आगे नहीं झुकते हुए भारत ने जो भूमिका अदा की थी, उसने देश को एक महाशक्ति के रूप में उभरता हुआ सिद्ध कर दिया था। प्रसिद्ध इतिहासकार विपिनचंद्र के शब्दों में, भारत अभी (सन् १९७१-७२) एक विश्व शक्ति नहीं हुआ था तो भी यह साबित हो गया था कि वह दुनिया के रंगमंच पर कोई कमजोर हस्ती नहीं है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हृदय रोग का आक्रमण

१९७२ का जनवरी का महीना था। उस दिन माताजी प्रात:कालीन संध्या आरती के बाद अपने कक्ष में आकर बैठी ही थीं कि कुछ असहज अनुभव करने लगीं। दाएं हाथ में हलकी सी पीड़ा उभरी और लहर की तरह फैलती चली गई। कल शाम ही किसी साधक से चर्चा चल रही थी। गोस्वामी तुलसीदास का प्रसंग चल रहा था। साधक ने पूछा था कि गोस्वामी जी महाराज ने हनुमान बाहुक स्तवन लिखा है। सुना है कि उन्हें बाहुशूल हुआ था। तब तक वे अपनी प्रसिद्ध चौदह रचनाओं में बारह लिख चुके थे। गोस्वामी जी महाराज ने बाहूशूल दूर करने के लिए हनुमानजी से प्रार्थना की थी। साधक पूछ रहा था कि क्या यह सही है? गोस्वामी जी जैसे भक्त भी सकाम आराधना करते थे?

माताजी ने कहा था कि तुलसीदास जिस आत्मिक स्थिति को उपलब्ध हो गए थे, वहां सकाम और निष्काम का अंतर मिट जाता है। यह प्रसंग भी तो याद होगा कि उनके विरोधी पंडित उनकी लिखी रामचरित मानस नष्ट करने पर तुले हुए थे। उन्होंने तुलसी की कुटिया में आग लगवाने और मानस की चोरी कराने का षडयंत्र भी रचा था। प्रसिद्ध है कि इस तरह के षडयंत्रों से भगवान राम का अनुग्रह ही बचाता था। एक बार तो सूबेदार ने गोस्वामी जी को जेल में भी बंद कर दिया था। हनुमान जी की सेना ने ही उन्हें बचाया। उन्होंने ऐसा उत्पात मचाया कि सूबेदार को उन्हें मुक्त करना ही पड़ा। संतो, साधकों और सिद्धों के जीवन में इस तरह के अनेक प्रसंग हैं जिनमें भगवान अपने उपासकों का योगक्षेम वहन करते हैं। वह चाहें या न चाहें।

उसी साधक ने पूछा था कि माताजी भगवान अपने भक्तों को कष्ट होने ही क्यों देते हैं? उनके उपासक तो निष्पाप और निर्मल होते हैं। माताजी ने कहा प्रारब्ध या प्रकृति के नियम भी होते हैं। उनमें किसी के लिए अपवाद थोड़े ही है। रोग, शोक, संताप शरीर और जगत का स्वभाव है। साधक की निष्ठा होती है कि उसे ये स्थितियाँ प्रभावित नहीं करतीं। उसका अंतस अछूता ही रहता है। माताजी ने स्वामी रामकृष्ण परमहंस का उदाहरण भी दिया। उनके परम सिद्ध होने में किसी को संदेह नहीं था फिर भी उन्हें गले का कैंसर हुआ। उसी कारण उनकी मृत्यु हुई। स्वामी विवेकानंद को मधुमेह एवं अस्थमा और महात्मा गांधी को अल्सर जैसी बीमारियां झेलना पड़ीं। ये सर्वथा निष्पाप और कलुष रहित आत्माएं थीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पिछली संध्या का छिड़ा यह प्रसंग एक संयोग ही था। माताजी को बाहूशूल ने पकड़ा और उन साधक को पता चला तो वे चिंतित से हो उठे। अनायास ही उनके मुंह से निकला कि माताजी ने कल शाम ही चर्चा की थी। कहीं कोई दुर्योग न बन जाए। माताजी का शूल बढ़ता जा रहा था। वह वक्ष के बीच में-अनाहत चक्र के पास भी अनुभव हो रहा था। वेदना बढ़ती जा रही थी। माताजी ने अपनी पीड़ा के बारे में बताया तो तुरंत डॉक्टर बुलाए गए। डॉक्टर के आने तक स्थानीय उपचार दिया गया। शान्तिकुंज के कुछ कार्यकर्त्ताओं को लग रहा था या आशंका हो रही थी कि माताजी को किसी गंभीर रोग ने पकड़ा है। उन्होंने अपनी चिंता वहां मौजूद अन्य साधकों को भी बताई। उनकी संख्या तीन चार ही रही होगी। आश्रम में तब उतने ही कार्यकर्त्ता थे।

डॉक्टर के आने में मुश्किल से दस मिनट का समय लगा। स्थानीय चिकित्सक डॉ० विक्रम ने जांच पड़ताल कर हार्ट अटैक बताया था। तत्काल राहत के लिए उपचार के बाद डाक्टर पर्याप्त समय बैठे रहे। उनकी राय थी कि यह पहला आघात है। जल्दी ही दूसरा अटैक भी हो सकता है। माताजी को किसी अच्छे अस्पताल में ले जाना चाहिए।

औषधियों के प्रभाव से कष्ट में कुछ आराम मिला था। उन्हें नींद आने लगी थी। लेकिन जैसे ही इलाज के लिए कहीं और ले जाने की बात उठी, उन्होंने सुना तो पूरी तरह सजग होकर बोली जो भी उपचार हो यहीं करना है। गुरुदेव ने यहीं रहने के लिए कहा है। उनका आदेश नहीं होने तक यहां से कहीं नहीं जाना है।

उपचार के लिए बाहर जाना अनिवार्य आवश्यक बताने पर भी माताजी ने मना ही किया। उनका कहना था कि अपनी चिंता मुझे नहीं है। गुरुदेव ने जो निश्चित कर रखा है वही होगा। माताजी के इस निश्चय को सुनकर आश्रम के साधक चुप रह गए। डॉक्टर ने जैसा कि बताया था, दो दिन बाद फिर हार्ट अटैक हुआ। यह पिछले दौरे से ज्यादा घातक था। स्वास्थ्य बिगड़ते देख डॉक्टरों की टीम बुलाई गई। डॉक्टर औषध उपचार करते रहे, शरीर कष्ट और वेदना सहता रहा। माताजी बाहरी परिस्थितियों के प्रति बेखबर सी अपनी भावधारा में तन्मय रहीं। माताजी ने उस समय की मन:स्थिति का चित्रण बाद में किसी अवसर पर किया था। पीड़ा के उन क्षणों में लग रहा था जैसे प्राण ही निकल जाएंगे। मन में पुकार उठने लगी कि गुरुदेव आसपास ही होते तो कितना अच्छा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
होता। जीवन यदि निशेष हो रहा है तो उन्हीं के सामने हो। आखिरी सांस उन्हीं के सामने आए और जाए।

यह भावधारा कब प्रार्थना में बदल गई। माताजी कहती थीं कि गुरुदेव के सामने कभी कोई मनोकामना व्यक्त नहीं की। कामना उठती भी नहीं थी लेकिन उन क्षणों में अनायास ही प्रार्थना उठने लगी। प्रार्थना यह थी कि यह जीवन और शरीर आपका ही है। इसका समापन आपकी उपस्थिति में ही हो तो अच्छा है। आपकी तप साधना में कोई रुकावट नहीं डालना है। वह जारी रहे। उसके जारी रहते कुछ समय के लिए यहां आया जा सके तो आ जाएं। यह अनुरोध पत्नी के नाते नहीं है, आपकी साधिका के नाते है। अपना आपा, अहं-अस्मिता और अस्तित्व सब कुछ समर्पित कर देने के बाद अपना कुछ नहीं बचा। शरीर रूप में बची एक छोटी सी चिंगारी अग्नि के महासमुद्र में खोने से पहले अपनी अंतिम आकांक्षा ही व्यक्त कर रही है।

उत्कट अभिलाषा

प्रार्थना के इन क्षणों में एक प्रतिलोम विचार यह भी आता था कि गुरुदेव को गए हुए सात आठ महीने ही हुए हैं। वे कभी लौटकर नहीं आने के लिए कह कर गए हैं। उनका आना कैसे संभव हो सकता है ? यह प्रार्थना और पुकार अनसुनी ही रह जाना तय थी, फिर भी मन मानने को राजी नहीं था। औषधियों का प्रभाव हटने पर जैसे ही चित्त थोड़ा चैतन्य होता, प्रार्थना और पुकार के साथ परिस्थितियों की विवशता का बोध भी होने लगता। रोग के उभार और शिथिल पड़ने के इसी दौर में तीसरा आघात आ गया। चिकित्सा विज्ञानी जानते हैं कि एक के बाद एक हार्ट अटैक होने पर जीवन की संभावना लगभग क्षीण ही हो जाती है।

तीसरे आघात के समय भी मन में गुरुदेव को पुकारने और प्रतीक्षा करने का भाव ही घनीभूत रहा था। पीड़ा और शांति में डूबते उतराते माताजी ने अनुभव किया कि गुरुदेव वास्तव में आ गए हैं। वे सामने बैठे दिखाई दे रहे हैं। लगा कि अब कोई कामना शेष नहीं रह गई। मन आप्तकाम हो गया। अब कुछ भी करने के लिए नही बचा है। उन्हें देखते देखते ही पलकें मुंदने लगीं जैसे कभी नहीं खुलने के लिए बंद हो रही हों। आत्यंतिक विश्रांति की अनुभूति हो रही थी। शरीर के साथ चेतना और प्राण ने भी गहन विश्राम में प्रवेश किया। पता नहीं कब तक यह स्थिति रही। इस स्थिति से बाहर आने पर देखा कि गुरुदेव वास्तव में सामने ही बैठे हुए हैं। वे कब आए, पता ही नहीं चला।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनकी उपस्थिति ने वातावरण में नई तरंगे भर दी थीं। पास ही मौजूद परिचारक और साधक भी प्रफुल्लित दिखाई दे रहे थे। माताजी के स्वास्थ्य को लेकर हाल तक पूरी तरह चिंतित दिखाई दे रहे वहां उपस्थित साधक कार्यकर्त्ता पूरी तरह निश्चिंत हो गए थे कि अब अनिष्ट की कोई आशंका नहीं है। फूल की कोमल पंखुड़ियों पर सुबह के समय बैठी हुई ओस की बूंदों जैसी ताजगी। ओस को छूती हुई सूरज की किरणें अपने स्पर्श के साथ जो संदेश पहुंचाती हैं वैसी ही अनुभूति वहां उपस्थित साधक भी कर रहे थे।

माताजी ने गुरुदेव को देखकर उठने की कोशिश की। गुरुदेव ने संकेत से मना किया और लेटे रहने के लिए कहा। माताजी वापस पूर्व स्थिति में आ गईं। गुरुदेव ने इसके बाद वहां मौजूद साधकों और वस्तुओं को निहारा। उनकी दृष्टि जैसे वहाँ के अस्तित्व का एक एक कण निरख रही थी। सब ओर घूमती हुई उनकी दृष्टि माताजी पर भी पड़ी। माताजी उन्हें ही देख रही थीं। क्षण भर उस दृष्टि निक्षेप से ही एक संदेश प्रेषित हुआ। माताजी ने कहा कि वे अपने इष्ट आराध्य का सान्निध्य निरंतर अनुभव करती रही हैं। दिनचर्या का प्रत्येक कृत्य और क्षण गुरुदेव के लिए निवेदित रहा है। लेकिन इस दृष्टि निक्षेप में सामान्य स्थिति से अलग सर्वथा विलक्षण ऊष्मा थी। गुरुदेव की स्मित मुद्रा जैसे कह रही थी कि अभी पटाक्षेप नहीं हुआ। जितने वर्ष हमने अखंड दीपक के सामने बैठकर महापुरश्चरण किए हैं अभी उतने ही वर्ष और तुम्हें भी इस दीपक के पास रहते हुए अपनी लोकयात्रा संपन्न करनी है।

माताजी को रोग से मुक्ति मिलने में कुछ समय लगा था। कष्ट और उपचार पहले की तरह ही चलते रहे। गुरुदेव ने कहा था कि अपने तप को अपना कष्ट सहने या मिटाने के लिए उपयोग में नहीं लाना है। तप साधना से मिली ऊर्जा महाकाल की आराधना में लगाई जाए। स्वयं पर आने वाली विपदाएं सामान्य जनों की तरह ही झेलें। इस निर्देश के बाद माताजी ने रोग को सामान्य रोगियों की तरह ही सहना, पीड़ित होना और उपचार लेना आरंभ कर दिया।

डॉक्टर प्रणव पण्ड्या (आगे डॉक्टर साहब के संबोधन से अभिहित) उन दिनों इंदौर में महात्मा गांधी मेमोरियल मेडिकल कालेज में पढ़ रहे थे। एमबीबीएस पूरा ही हुआ था। इंटर्नशिप चल रही थी और यदा कदा शान्तिकुञ्ज भी आया करते थे। माताजी का स्वास्थ्य खराब होने के दिनों में वे बिना किसी पूर्वसूचना के शान्तिकुञ्ज पहुंचे। वे माताजी की बीमारी या गुरुदेव के आने से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सर्वथा अनभिज्ञ आश्रम के प्रवेश द्वार से अंदर आए ही थे कि भीतर से आवाजें आती सुनाई दी। उन आवाजों से प्रतीत हुआ कि इनमें एक स्वर गुरुदेव का भी है। भरोसा नहीं हुआ। गुरुदेव अज्ञातवास में है और यहां प्रत्यक्ष उपस्थित प्रतीत हो रहे हैं।

इसी ऊहापोह में थे कि गुरुदेव बरामदे से द्वार की ओर आते दिखाई दिए। उन्हें देखते ही सुखद आश्चर्य में डूबे डॉक्टर साहब ने दौड़कर गुरुदेव को प्रणाम किया। कुशल क्षेम पूछने के दौरान ही ऊपर से किसी के कराहने की आवाज आई। डॉक्टर साहब ने पूछा तो गुरुदेव ने माताजी के अस्वस्थ होने की बात बताई। यह भी कहा कि उनके ठीक होने तक तुम्हीं उनकी देखभाल करो।

माताजी अभी चौबीस वर्ष और

थोड़ा संकोच हुआ। कोई डिग्री नहीं है। अभी इंटर्नशिप चल रही है। चिकित्सक की आचार संहिता का उल्लंघन तो नहीं होगा? फिर यह विचार भी मन में आया कि माताजी के अस्वस्थ होने के कारण ही शायद गुरुदेव का आना हुआ है। माताजी को उपचार के लिए बाहर ले जाने की मनाही थी। बाहर से विशेषज्ञ डॉक्टर भी ज्यादा नहीं बुलाए गए। गुरुदेव ने डॉक्टर साहब से कहा कि वे लोग इंजेक्शन लगाते हैं। माताजी को बहुत कष्ट होता है। कष्ट होता तो भी कोई बात नहीं थी। उस कष्ट और उपचार के बाहरी हस्तक्षेप से उनकी साधना में व्यवधान पड़ता है। इसलिए तुम्हीं (डॉक्टर साहब) उनके रोग का उपचार देखो। गुरुदेव ने बिना पूछे ही डॉक्टर साहब से कहा माताजी का उपचार ही तुम्हारी इंटर्नशिप है। चिंता मत करो। उन्हें स्वस्थ होना है और कम से कम चौबीस साल और काम करना है। कुछ भी कहे या पूछे बिना डॉक्टर साहब को अपने प्रश्नों का समाधान मिल गया था।

दिल्ली से आए हृदयरोग विशेषज्ञ और दूसरे चिकित्सकों की राय में खतरनाक दौर गुजर गया था। कुछ ही दिनों में स्वास्थ्य सुधरने लगा। हरिद्वार से डॉक्टर विक्रम करीब करीब रोज आकर दवाइयां दे जाते। पहले जब भी कभी छोटा मोटा रोग आया तो घरेलू नुस्खों या आयुर्वेदिक औषधियों से काम चलाया। एलोपैथिक चिकित्सा की नौबत कम ही आई।

माताजी का स्वास्थ्य बिगड़ने और गुरुदेव के आने की खबर कार्यकर्ताओं को नहीं लगी थी। मथुरा में भी तीन चार कार्यकर्ताओं तक ही यह बात पहुंच पाई। वहां से लीलापतजी खबर मिलते ही भागे चले आए। यहां आकर देखा कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
गुरुदेव आए हुए हैं। माताजी के अस्वस्थ होने से चिंतित और गुरुदेव को सामने देखकर आश्वस्त मन लीलापतजी ने गुरुदेव को प्रणाम किया। एक बारगी मन में आया कि गुरुदेव की अनुपस्थिति में जिन कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करना पड़ा है, उन्हें बता ही दिया जाए। फिर वे यह सोच कर चुप हो गए कि यह अवसर अपना दुखड़ा रोने के लिए ठीक नहीं है। वे इस ऊहापोह से उबरे भी नहीं थे कि गुरुदेव ने कहा 'कोई कठिनाई नहीं होगी लीलापत। पूरी दुनिया ही बहुत कठिन दौर से गुजर रही है। लेकिन जो इस दुनिया को चला रहा है न, उस पर विश्वास ही कठिनाइयों का निराकरण कर देता है। तुम अधीर न होओ।'

गुरुदेव शांतिकुञ्ज में मुश्किल से आठ दस दिन रहे होंगे। इस बीच कुछ कार्यकर्त्ता भी सहज भाव से नित्य क्रम में वहां आते रहे। उनसे मिलने के पहले आश्रम में कार्यकर्त्ता झिझक रहे थे। संकोच हो रहा था कि घोषित रूप से गुरुदेव अज्ञातवास में हैं। उनसे प्रत्यक्ष संपर्क नहीं हो सकता। यहां गुरुदेव मौजूद हैं। उनसे भेंट की व्यवस्था की जाए या नहीं। संकोच कार्यकर्त्ताओं को था और गुरुदेव सहज भाव से सीढ़ियां उतर कर नीचे आ जाते। आश्रम के पीछे बनी वाटिका में क्यारियों की देखभाल करने लगते।

गुरुदेव आए

शुरू दो-तीन दिन तो गुरुदेव आने वाले साधकों से सहज ही मिलते रहे। आश्रम के कार्यकर्त्ता ही झिझकते थे। उनकी झिझक खुली और एक दिन किसी वरिष्ठ कार्यकर्त्ता ने पूछ ही लिया कि आपका इस तरह लोगों से मिलना जुलना क्षेत्र में अपवाद का कारण बन सकता है।

उन्हीं कार्यकर्त्ताओं की सलाह थी कि आप आगंतुकों से नहीं मिलें तो अच्छा है। कार्यकर्त्ता इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि यह अनधिकार चेष्टा है। गुरु को निर्देश देना शिष्य का अधिकार नहीं है। गुरुदेव उन कार्यकर्त्ताओं के संकोच को समझ रहे थे। उन्होंने कहा, 'यहां आने वाले साधकों से अपने आपको छुपाने की जरूरत नहीं है। उनमें श्रद्धा होगी तो वे अन्यथा नहीं लेंगे और श्रद्धा नहीं होगी तो किसी भी तरह मीन मेख निकाल ही लेंगे।'

साधकों और कार्यकर्त्ताओं की मिलीजुली गोष्ठी में गुरुदेव ने स्थितियां स्पष्ट कीं। उस समय आठ दस लोग ही मौजूद थे। उन्होंने कहा कि माताजी का स्वास्थ्य यहां आने का मुख्य कारण नहीं है। जितने वर्ष हमने अखण्ड दीपक के सामने साधना की है- चौबीस वर्ष, यहां शान्तिकुञ्ज में उन्हें भी उतने वर्ष तपना है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मार्गदर्शक सत्ता ने क्षेत्र और समाज में सक्रिय गतिविधियों से उपराम होने का आदेश दिया था। १९६१ के अज्ञातवास में इन गतिविधियों के लिए दस वर्ष का समय मिला था। वह पूरा होते ही हम चले गए। जुलाई में हम उनके पास हिमालय गए। गुरुपूर्णिमा से अब तक का समय प्राय: उनके आसपास ही व्यतीत हुआ। वसंत के बाद हमने वह क्षेत्र छोड़ दिया। आदेश हुआ कि वन प्रांतरों में ही रहा जाए। वहां लुप्तप्राय विद्याओं और साधनाओं के सिद्धों से संपर्क में रहना हुआ। गुरुदेव कहते कहते कुछ रुके। फिर बोले यह सब लंबा ब्यौरा है।

माताजी के अस्वस्थ होने का कारण उन्होंने बताया कि पिछले छह आठ महीनों में माताजी को मुक्तहस्त से अनुदान बांटना पड़ा है। साधकों के निजी जीवन के लिए भी और सामाजिक राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए भी। वे अनुदान प्रकृति और चेतना की मर्यादाओं का अतिक्रमण कर दिए गए थे। उसी के कारण स्वास्थ्य में थोड़ा विकार आया। साधकों और कार्यकर्त्ताओं को हमारे यहां आने से अपवाद की चिंता है। उससे मुक्त होना चाहिए। आध्यात्मिक जीवन में कई बार ऐसे प्रसंग आते हैं जिनके तार्किक कारण समझ नहीं आते। उन्हें सिर्फ भाव से ही समझा जा सकता है।

गुरुदेव ने कहा कि यहाँ आने पर लोगों में क्या प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं ? आक्षेप और आलोचनाओं की झड़ी लग सकती है। इस तथ्य का भान हमें भी रहा है। यह भी कह सकते है कि आप लोगों या अन्य किन्हीं व्यक्तियों से ज्यादा ही रहा है। लेकिन हमारे लिए अपनी मार्गदर्शक सत्ता के निर्देश ही सब कुछ हैं। उनका पालन करना ही हमारे लिए महत्त्वपूर्ण रहा है। किसी भी शिष्य साधक के लिए उसके मार्गदर्शक के संकेतों का पालन ही सर्वोपरि धर्म होना चाहिए।

निमित्त मात्र भव

शान्तिकुञ्ज के भावी स्वरूप और गुरुदेव की आगामी योजनाओं के बारे में भी इस गोष्ठी में चर्चा चली। डॉक्टर साहब मौजूद थे। किसी प्रसंग में उन्होंने पूछा कि विज्ञान और अध्यात्म एक दूसरे के विरुद्ध खड़े हैं। दोनों में समन्वय कैसे होगा गुरुदेव ? और आप जब वैज्ञानिक अध्यात्मवाद कहते हैं तो बहुतों के लिए स्थिति और उलझन भरी हो जाती है।

गुरुदेव ने कहा कि दोनों में विरोध वस्तुत: है नहीं, सिर्फ दिखाई देता है। सिक्के के दो पहलू जैसे एक दूसरे की ओर पीठ किए हुए दिखाई देते हैं, दोनों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
में कोई आमना सामना नहीं होता लेकिन बात ऐसी है तो नहीं। पूरी इकाई में देखें तो दोनों अभिन्न अभेद हैं। विज्ञान सत्य को तर्क और तथ्य के आधार पर समझता है तथा अध्यात्म सूक्ष्म भावों और किसी भी परीक्षण में पकड़ नहीं आने वाले बिंदुओं से आरंभ होता है। अध्यात्म चेतना है और विज्ञान काया। दोनों का मेल मिलाप ही जगत का कल्याण करेगा।

धर्म अभी तक भावनाओं और विश्वासों के आधार पर चलता रहा। मनुष्य की चेतना जब अत्यंत निर्मल थी तब यह ठीक था लेकिन जब उसके भीतर विचार और तर्क का विकास होने लगा तो धर्मध्वजी लोग उस कसौटी पर धर्म को परखने के बजाय कोरा विश्वास करने के लिए ही कहते रहे। इससे विचारशील और बुद्धिजीवी लोगों के मन में संदेह का बीज पड़ा। समाधान नहीं होने पर वह बढ़ने लगा और अब इतना बढ़ गया कि धर्म अध्यात्म के स्वरूप पर प्रश्नचिह्न सा लग गया है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तुम्हें पता होगा कि पिछले चार पांच साल से हम लोग धर्म अध्यात्म को विज्ञान की कसौटियों पर कसने और जो प्रामाणिक हो उसका ही प्रतिपादन समर्थन करने में लगे हुए हैं। गुरुदेव अब डॉक्टर साहब को ही इंगित कर बोल रहे थे, 'चार पांच साल हमने ज्ञान विज्ञान की सभी धाराओं का अध्ययन शुरु किया। याद होगा कि विज्ञान की सभी धाराओं के विशेषज्ञों और निष्णात विद्वानों तथा समाज शास्त्र, राजनीति, अर्थशास्त्र, इतिहास आदि की आधुनिक प्रणालियों के नोट्स मंगाए थे। वह तात्कालिक आवश्यकता थी। उस ईंधन से बहुत काम चला। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की आधारशिला तैयार हुई। लोग नए ढंग से सोचने समझने के लिए तैयार हो रहे हैं। उनकी क्षुधा बढ़ रही है। उस आत्मिक क्षुधा की तृप्ति के लिए और इंतजाम अध्ययन चाहिए। याद रखना कि धर्म का प्रगतिशील स्वरूप ही जीवित रहेगा। पुरानी मान्यताएं और मंजिलें इमारतें तो खण्डहर की तरह ढेर हो जाएगीं।'

'नए स्वरूप को गढ़ने, अध्यात्म का नया ढांचा गढ़ने के लिए तुम्हें भी अपना समय देना पड़ेगा। बल्कि समय क्यों, पूरा जीवन ही देना पड़ सकता है। जो होना है, वह आगे होगा। अभी तो अपनी मन:स्थिति और तैयारी उस स्तर की रखो। अपनी अभिरुचि उस दिशा में बढ़ाओ। जो पढ़ाई तीन चार साल पहले हमने संक्षेप में की है, उसे विशद रूप में करो। पोस्ट ग्रेजुएट की डिग्री के लिए अभी जो प्रयास कर रहे हो वह तो करो ही पर अधिक ध्यान मानवी काया, उससे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
जुड़े वैज्ञानिक रहस्य, ब्रह्माण्ड की वैविध्यपूर्ण रचना, उससे जुड़ी आध्यात्मिक जानकारियों पर–ब्राह्मी चेतना के रहस्य को समझने पर केन्द्रित करो।'

गुरुदेव ने गोष्ठी में उपस्थित अन्य साधकों से भी अलग–अलग कुछ कहा पर डॉक्टर साहब का ध्यान तो अपने लिए मिले दिशा निर्देशों में ही रमा हुआ था। मन ही मन यह उधेड़ बुन शुरु हो गई थी कि जो निर्देश मिले हैं, उनका पालन कैसे हो? ज्ञान विज्ञान के विराट् स्वरूप को अक्षर, शब्द और स्वरूप में कैसे बांधें, कैसे उतारें। फिर समाधान भी भीतर से ही आया, यह चिंता भी अपने को क्यों होनी चाहिए? जिसने निर्देश दिए हैं, वही पालन कराएगा। अर्जुन की भांति स्वयं को–साधक को 'निमित्त मात्र' ही हो जाना है

गुरुदेव जितने दिन शांतिकुञ्ज रहे, उतने दिनों में उन्होंने गायत्री साधना के लिए नए दिशा निर्देश लिखवाए। स्वयं ही ऐसी सहज किंतु विशिष्ट साधना विधियों का उद्घाटन किया जो भविष्य में साधकों को अपनाना थीं। ये विधियां अखंड ज्योति के पन्नों पर और दूसरे सूक्ष्म माध्यमों से भी उपयुक्त साधकों तक पहुंचती रही।

इतिहास और लोक स्मृति में ऐसे कई प्रसंग हैं जब साधकों या सिद्ध महापुरुषों ने प्रचलित परंपरा या मानकों से हट कर व्यवहार किया। गुरुदेव के अज्ञातवास से लौट आने के प्रसंग के इन उदाहरणों से कोई संगति नहीं है। लेकिन शान्तिकुञ्ज से आए साधक जो इसे व्यतिक्रम की तरह देख रहे थे, अब दूसरी तरह सोचने लगे थे। मथुरा में गायत्री तपोभूमि के कार्यकर्त्ताओं को भी गुरुदेव के शान्तिकुञ्ज आने का पता चल गया था। माताजी का स्वास्थ्य बिगड़ने की सूचना उससे पहले मिली थी लेकिन उसके साथ माताजी का निर्देश भी था कि अपना कामकाज छोड़कर कोई यहां नहीं आए। यह रोग जैसे आया है उसी तरह चला भी जाएगा। निर्देश गुरुदेव की ओर से ही दिए गए थे, लेकिन उस समय खुलासा नहीं था कि वे प्रत्यक्ष यहां उपस्थित होंगे। पता चला तो तपोभूमि के दो तीन वरिष्ठ कार्यकर्त्ता शांतिकुञ्ज दौड़े गए। अचानक बिना बताए चले आने पर गुरुदेव ने एकाध को डपटा भी था कि इस शरीर को देखने के लिए इस तरह अधीर नहीं होना चाहिए। अपने कर्म और दायित्व में ही गुरु को देखा जाए।

भावी योजनाएं

गुरुदेव की यह यात्रा उनके अगले पांच नए कार्यक्रमों की शुरुआत के रूप में थी। वे कार्य अभी तक नहीं किए जा सके थे या इनकी तत्काल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
आवश्यकता नहीं समझी गई थी। इन कार्यक्रमों के बारे में जैसा कि गुरुदेव ने बताया, पहला तो विदेश यात्रा से संबंधित था। अंतरंग गोष्ठियों में उन्होंने कहा कि चार साल पहले इसका निर्धारण कर लिया गया था। तब मिशन के विचारों और कार्यक्रमों ने गुरुदेव के प्रतिपादनों ने शैलीगत मोड़ लिया था। सन् १९६८ के आसपास अखण्ड ज्योति में विज्ञान और अध्यात्मवाद के संबंध में विवेचनात्मक लेख माला शुरु हुई थी। गुरुदेव का कहना था कि वैज्ञानिक, आर्थिक, बौद्धिक, यांत्रिक और तत्संबंधी अगणित दिशा धाराओं की आश्चर्यजनक प्रगति ने मनुष्य को बुद्धिवाद का-प्रत्यक्षवाद का आश्रय लेने के लिए सन्नद्ध कर दिया था। कहा था कि अब किसी विचारशील को कोई बात हृदयंगम करानी हो तो प्रत्यक्षवादी आधारों के सहारे ही उसे संतुष्ट करना होगा।

गुरुदेव ने उन्हीं दिनों अपने अंतरंग सहयोगियों से कहा कि प्रतिपादन की अभिनव शैली ने चार वर्ष में आस्तिक वर्ग की निराशा या आशंका को चीरते हुए एक नई आशा का संचार किया है। आज की स्थितियां देखते हुए कहा जा सकता है कि अगले दिनों बुद्धिवाद का रुख पलट जाएगा और उसके कारण आस्तिकों को नास्तिक बनने का खतरा न रहेगा, वरन नास्तिकों को आस्तिक बनकर अपनी भूल सुधारना पड़ेगी।

यात्रा का उद्देश्य यह भी है कि विज्ञान के क्षेत्र में अभी तक जो नई जानकारियां विश्व भर में जुटाई जा सकी है, उन्हें तो प्राप्त किया ही जाए। साथ ही गुरुदेव ने स्वयं जो जाना है, उसकी जानकारी वहां के लोगों को भी दी जाए। गुरुदेव जब यह बात कह रहे थे तो माताजी भी वहां विद्यमान थीं। उनके कक्ष में ही चर्चा चल रही थी। उन्होंने बीच में ही कहा 'इससे उन लोगों को भी संतोष होगा गुरुदेव, जो आपसे प्रेरणा लेंगे। उन्हें लगेगा कि जानकारी का आदान प्रदान हुआ है। हमने कोई मुफ्त में सूचनाएं नहीं ली है। उनके बदले कुछ दिया भी है।'

वहां मौजूद एक कार्यकर्ता ने माताजी के बोलने पर व्यग्रता दिखाई। वे जैसे कहना चाह रहे थे कि अपने स्वास्थ्य को देखते हुए माताजी चुपचाप वार्तालाप सुनें तो ही अच्छा है। उन पर दबाव नहीं पड़ेगा। उन्होंने गुरुदेव की ओर मूक दृष्टि से देखा जैसे कहना चाह रहे हों कि माताजी को बोलने से मना करें। गुरुदेव ने उन कार्यकर्ता को अपनी ओर देखते हुए पाया तो कहा, 'चिंता मत करो। माताजी को बोलने दो। उनका कोई अनिष्ट नहीं होगा।'

फिर उन्होंने ही भगवान बुद्ध का एक प्रसंग बताया। सारनाथ में धर्मचक्र प्रवर्तन के बाद भगवान बुद्ध लोगों को धर्म का उपदेश देने के लिए निकले।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
उन्होंने सभा समितियां आयोजित की और आत्मिक प्रगति की दिशा शिक्षा देने लगे। सभा समितियों में दस पांच लोग भी नहीं आते। पांच सात दिन तक वे प्रयत्न करते रहे। इस प्रयोग की विफलता के बारे में सोचते हुए बैठे ही थे कि उनके सामने कालपुरुष प्रकट हुआ और बोला, "लोगों से कुछ लो तभी वे आपसे ज्ञान प्राप्त करेंगे। नहीं लोगे तो उनका अहं आड़े आएगा और वे कुछ भी ग्रहण नहीं करेंगे। हैं तो वे याचक और दीन ही, पर अपने आपके बारे में इस तरह का आभास नहीं होने देना चाहते।"

कालपुरुष के इस परामर्श के बाद ही महात्मा बुद्ध ने अपने हाथ में भिक्षापात्र पकड़ा और राह चलते हुए, लोगों के द्वार पर जाकर भिक्षा मांगी। इसके बाद ही उन्हें सद्धर्म का उपदेश दिया।

'तो क्या गुरुदेव आप परिजनों से अंशदान, मुट्ठी फंड या दस पैसे रोज मिशन के लिए निकालने को कहते हैं तो वह भी इसी तरह का प्रयोग है?' उस गोष्ठी में बैठे डॉक्टर साहब ने सहज भाव से पूछा। गुरुदेव ने कहा कि वे परिजन तो हम लोगों लोगों के साथ जन्म जन्मांतरों से जुड़े हुए हैं, जमाने को बदल देने की इस युग साधना में वे भी योगदान करते हुए दीखें इसलिए यह व्यवस्था की है। भगवान चाहें तो चुटकी बजाते दुनिया को उलट पुलट कर दें, पर वे अपने पुत्रों को सक्रिय देखना चाहते हैं।

वहां उपस्थित कार्यकर्ताओं के लिए यह स्पष्ट हो गया कि परिजनों से सीखना, सूचनाएँ आमंत्रित करना तो एक नैमित्तिक प्रक्रिया है। गुरुदेव वास्तव में विभूतिवान व्यक्तियों को कुछ देने के उद्देश्य से ही बाहर जा रहे हैं।

प्रचार न किया जाय

'हमारी इस यात्रा के बारे में अखबारों, रेडियो और अन्य प्रचार माध्यमों में नहीं लाना है। यात्रा प्रचार के लिए कतई नहीं है, उद्देश्य संसार की विभूतिवान आत्माओं से प्रत्यक्ष संपर्क करना है। उनसे परामर्श करना है कि वे अपने-अपने ढंग से अपने क्षेत्र में, अपनी सामर्थ्य के अनुसार तत्परतापूर्वक कैसे जुट जाएं।' कह कर गुरुदेव कुछ रुके। वे जब जा रहे है और महत्वपूर्ण लोगों से मिलेंगे भी सही तो इस बारे में किसी को बताया क्यों न जाए? वहां बैठे किसी कार्यकर्ता के मन में यह प्रश्न आया। गुरुदेव ने उन कार्यकर्ता की ओर देखा। फिर माताजी की ओर देखा जैसे कह रहे हों कि इस बारे में वही कुछ कहें। माताजी ने कहा, 'अगले दिनों गुरुदेव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की यात्रा से कई महत्वपूर्ण संभावनाएं सामने आएंगी। हम लोग सोचते हैं कि उनका श्रेय अनेक व्यक्तियों को मिले। गुरुदेव इसलिए उन्हें ही आगे रखेंगे।'

इन दिनों अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी धर्माध्यक्षों की भूमिका संदिग्ध और लांछित होने लगी है। वे राजनीति को प्रभावित करने और निहित स्वार्थों को पूरा करने में जुटे रहते हैं। गुरुदेव की विदेश यात्रा के समाचार आने, प्रचार होने से सामूहिक स्तर पर कोई लाभ होगा नहीं, एक वितंडावाद जरूर खड़ा हो सकता है। इसलिए भी यात्रा को प्रचार और सूचना विश्व से नहीं जोड़ना है। उस गोष्ठी में गुरुदेव ने यात्रा के संबंध में सावधानी बरतने का एक उद्देश्य यह भी बताया था। फिर इस विषय पर चर्चा समाप्त हुई। इस बैठक में इतना और कहा गया कि अगले दिनों जब भी कभी वे यहां आएंगे, चुने हुए साधकों को आध्यात्मिक सामर्थ्य प्रदान करेंगे। इसके लिए मार्गदर्शक सत्ता के निर्देश अनुसार योजना बना ली गई है। उस बारे में अगले किसी दिन चर्चा करेंगे।

www.vicharkrantibooks.org

इस बीच बाहर से आए कार्यकर्ताओं में भी कुछ को गुरुदेव के दर्शन का, उनसे भेंट का अवसर मिला। जो पंद्रह बीस लोग उस अवधि में आए और गुरुदेव से मिले, उनमें मुंबई की एक कार्यकर्ता जहानारा भी थीं। उन्हें लगता था कि गुरुदेव उनकी प्रार्थना सुनकर ही आए हैं। जहानारा पारसी धर्म की अनुयायी थीं और उनका परिवार गुजरात से जाकर मुंबई बसा था। स्वभाव से विनोदी, प्रसन्न मुख और निष्ठा से गुरुदेव को अपना एक मात्र इष्ट आराध्य मानने वाली जहानारा ने शान्तिकुञ्ज आते ही पूछा कि गुरुदेव कहां हैं। उनके आगमन की खबर ज्यादा लोगों को नहीं थी, कानों कान इक्का दुक्का लोगों को ही पता चला था। इसलिए मान सकते हैं कि जहानारा को भी किसी से पता चला होगा। उनके बारे में विलक्षण संयोग यह था कि दस ग्यारह वर्ष पहले गुरुदेव अज्ञातवास से मथुरा लौटे थे, तब भी वे अचानक इसी तरह आ गई थीं और कहने लगी थीं कि मुझे मेरे भगवान ने बुलाया था। शान्तिकुञ्ज में आने के बाद उनकी गुरुदेव से भेंट हुई। भेंट के साथ गुरुदेव कार्यकर्त्ताओं से बातचीत कर रहे थे। उन्हें अपनी आगामी योजनाओं और उनके लिए जरूरी व्यवस्थाओं के बारे में बता रहे थे। प्रसंग चल रहा था कि दस साल पहले गुरुदेव अज्ञातवास गए थे तो उन्होंने कई परिजनों को अपने पास बुलाया था। कुछ को पत्र लिख कर तो कुछ को सूक्ष्म संकेतों से प्रेरित कर। हिमालय के गुह्य क्षेत्र में ही उन्होंने इन परिजनों से कुछ महत्वपूर्ण साधनाएं कराई थीं। साधना मार्ग या प्रगति में कुछ अवरोध आ रहे थे तो उनका निराकरण अपने अवदानों से किया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मार्गदर्शक सत्ता जब किसी साधक शिष्य के संरक्षण का दायित्व संभालती है तो उससे होने वाली गलतियों को भी खुद ही ठीक करती है। संरक्षण और दोष परिमार्जन इसी व्यवस्था का नाम है। गुरुदेव ने इस बैठक में आगे सिखाई जाने वाली उच्च स्तरीय साधनाओं के बारे में बताते हुए कहा और स्पष्ट किया कि पिछली बार यानी दस साल पहले तो लोगों को पत्र लिख कर, संदेश भेजकर बुलाया गया था। इस बार किसी को बुलाया नहीं जाएगा। परिजन स्वयं अपने आपको प्रस्तुत करेंगे जो लोग आने की इच्छा व्यक्त करेंगे, उन्हीं में से तय किया जाएगा कि किसे अवसर दिया जाए। कारण कि इस साधना में दिए जाने वाले अनुदानों का स्तर अधिक उत्कट होगा।

उन शिविरों का नाम रखा गया था–प्राण प्रत्यावर्तन। गुरु के प्राण प्रवाह का साधक की चेतना में आरोपण, स्थापन। गुरुदेव ने इतना ही स्पष्ट किया कि इस योजना के अंतर्गत सजीव और संस्कारवान परिजनों को पांच पांच दिन के लिए अवसर दिया जाएगा। उन्हें एकांत साधना में रखेंगे उनमें गुरुसत्ता अपने बल का एक अंश उन्हें देंगे। करीब एक हजार साधक चुने जाएंगे जिन्हें अपने अपने क्षेत्र में बढ़ चढ़ कर भाग लेना है। उस क्षेत्र में काम कर रहे अन्य लोगों का मार्गदर्शन करना है। दूसरे शिविरों में भी प्राय: लोग व्यक्तिगत सुख स्वार्थ की कामना से आते रहते हैं। यह क्रम शायद इस धराधाम पर अपने (गुरुदेव के) बने रहने तक चलता रहे लेकिन प्रत्यावर्तन शिविरों में इसके लिए कड़ाई से मना कर दिया जाएगा। सूक्ष्म सत्ताएं कुछ ऐसी व्यवस्था करेंगी कि व्यक्तिगत सुख स्वार्थ सुख की बात मन में आते ही मिले हुए अवदान बर्तन में छेद हो जाने पर बह जाने वाले पानी की तरह निकल भागें और पात्र खाली का खाली ही रहे।

गोष्ठी में जहानारा भी चुपचाप आ कर बैठ गई थी। चर्चा पूरी होने लगी तो उन्होंने पूछा गुरुदेव मैं तो पारसी धर्म को मानती हूँ। मुझे निवेदन करने की छूट मिलेगी या नहीं। कहते हुए वह प्रणाम के लिए उठी। गुरुदेव ने वहीं बैठे रहने का इशारा किया और कहा काय कलेवर किसी भी धर्म, संप्रदाय या मत को मानता हो, आंतरिक चेतना इस योग्य होना चाहिए कि उन अनुदानों को ग्रहण कर सके। सुनते हैं न कि शेरनी का दूध सोने के पात्र में ही दुहा, निकाला और रखा जा सकता है। किसी ओर पात्र में रखें तो वह फट जाएगा। यह उक्ति प्रकट तौर पर सही हो या न हो, आध्यात्मिक अवदानों के लिए यह बात पूरी तरह सही है। वे सक्षम, पुष्ट और समर्थ आंतरिक चेतना में ही दुहे और सुरक्षित रखे जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकते हैं। धर्म, जाति और इष्ट आराध्य के आधार पर तुम्हारी पात्रता परखी ही नहीं जानी है जहानारा तो तुम्हारे लिए इस कारण प्रत्यावर्तन में प्रतिबंध का कोई सवाल ही नहीं उठता।

गुरुदेव ने इसी चर्चा के दौरान अगले पांच वर्षों में शान्तिकुञ्ज को शक्तिपुंज के रूप में काम करने की बात कही। कहा कि पांच वर्ष तक के लिए इसे महिला जागरण केन्द्र के रूप में परिणत कर दिया जाएगा। आने वाले युग का नेतृत्व भार नारी के कंधों पर ही रहेगा। धर्म, अध्यात्म, समाज, साहित्य और संस्कृति ही नहीं राजनीति और प्रशासन के क्षेत्र में भी उन्हें ही पहल करनी है। गुरुतर दायित्व उन्हीं के कंधों पर रहेगा। नारी जागरण के क्षेत्र में यहां चलने वाली गतिविधियों का स्वरूप इन्हीं दिनों निखर कर आएगा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गंगा की गोद, हिमालय की छाया में बना
तव का शान्तिकुञ्ज ।

जैसा नाम, वैसा ही उपवन, कुंजों से भरा
शान्ति का संदेश देता शान्तिकुञ्ज ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भ्रमण करते हुए प्रवचन हेतु जा रहे आचार्य श्री ।

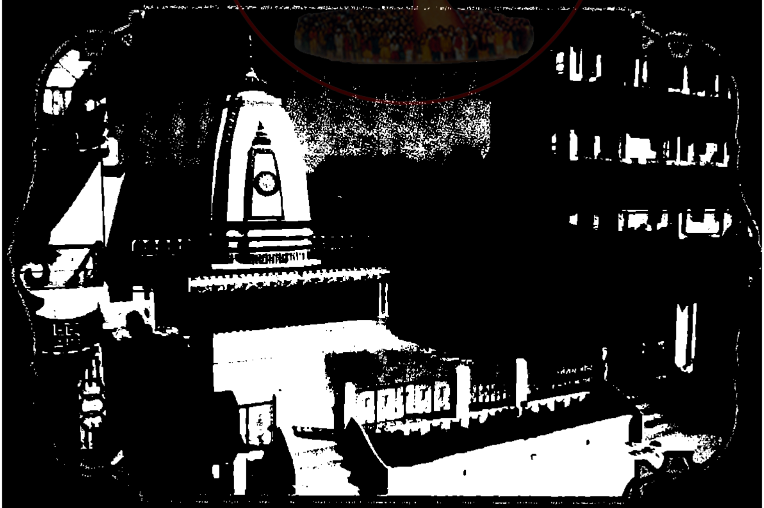

आचार्य श्री द्वारा प्राण प्रतिष्ठित गायत्री माता का मंदिर

X

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ओ धर्म की पताका, फहरो धरा गगन में।

ऋषियुग्म की अगवानी करतीं देव कन्याएँ ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नेतृत्व नारी शक्ति का ।

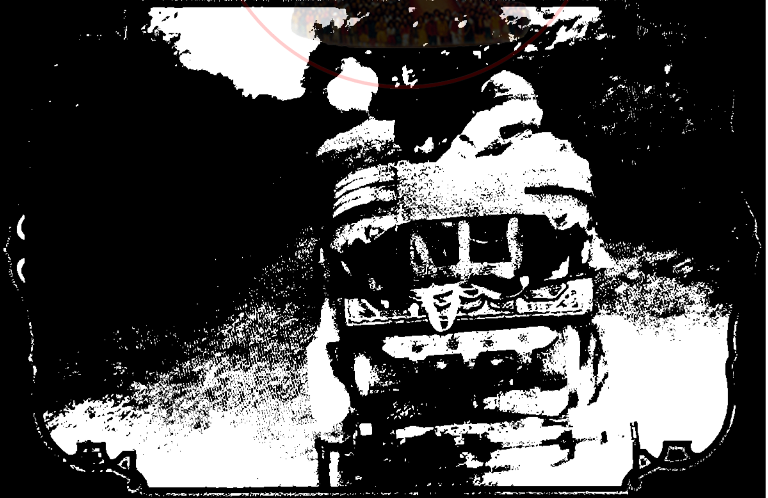

रिक्शे की सवारी थी उन्हें बहुत प्यारी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पांच
अफ्रीकी देशों में उद्घोष

करीब सात सौ यात्रियों को लेकर मुम्बई से रवाना हुआ जहाज मिरियांबो केन्या की समुद्री सीमा को छूने ही वाला था। यात्रा का अठारहवाँ दिन था। दो दिन बाद मोंबासा के बंदरगाह पर लगना था। जहाज में करीब चार सौ लोग केन्या और यूगांडा के थे। बाकी तंजानिया, रवांडा, पुरुडी आदि पूर्वी अफ्रीकी देशों के थे। इनमें वहाँ के मूल निवासी, ब्रिटिश और भारतीय नागरिक भी थे। मिरियांबों की तीसरी मंजिल पर बने केबिन में पिछले दो सप्ताहों से यात्रियों की आवाजाही जहाज के दूसरे हिस्सों की तुलना में कुछ ज्यादा ही थी। एक पूरे टापू की तरह लगने वाले जहाज की डेक पर और केबिन में लगे शीशों से झांकने पर चारों ओर अगाध जलराशि दिखाई देती थी, इसके सिवाय कुछ नहीं। हिंद महासागर में उठती हुई उत्ताल तरंगें और कभी समुद्र की शान्त निश्चल काया को देखते निरखते यात्रियों का मन भर जाता तो वे अपनी जगह आकर बैठ जाते, आपस में बातचीत करते या कुछ पढ़ने-लिखने में मन लगाते। बातचीत के विषय निजी, पारिवारिक और व्यावसायिक सभी स्तर के होते थे। इनमें जो लोग उल्लेखित केबिन में जाते, उनमें कई का मन घण्टों लौटने का नहीं होता। कुछ तो मन ही मन सोचने लगते कि इसी केबिन में यात्रा के बाकी दिन कट जाएं तो अच्छा। उस केबिन में रुके गुरुदेव के पास यात्रियों को विलक्षण शांति और ऊर्जा मिलती थी। आने जाने वाले यात्रियों में नब्बे प्रतिशत लोग ऐसे थे, जिन्होंने गुरुदेव को पहली बार देखा था। इन मुलाकातियों में सबसे विचित्र तो था जहाज का कैप्टन सदका देंगला। १९७३ की २७ फरवरी को मुंबई के बंदरगाह से जहाज ने समुद्र में अपने पांव बढ़ाए थे तो कैप्टन सदका के लिए गुरुदेव भी अन्य यात्रियों की तरह थे। गुरुदेव के साथ गायत्री परिवार के एक वरिष्ठ कार्यकर्त्ता ही थे। दूसरे केबिन या विशिष्ट श्रेणियों में यात्रा कर रहे लोगों के साथ निजी सहायक के अलावा सेवकों सहयोगियों की संख्या दस बारह तक थी। जहाज के कर्मचारी या परिचारक तो होते ही थे। कैप्टन सदका और जहाज के दूसरे कई विशिष्ट यात्रियों को शुरु में ऐसा कुछ नहीं लगा कि वे गुरुदेव की ओर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देखते। भारत की समुद्री सीमा पार मिरियांबों पड़ोसी देश मालदीव के पास पहुँचा ही था कि जहाज में सवार कुछ यात्रियों को मनोविक्षोभ ने घेर लिया। वे अपने घर, परिवार, परिजनों और मित्र संबंधियों को रह रह कर याद करने लगे।

समुद्री यात्रा में यह आमतौर पर होता है। मुश्किल से पचीस तीस किलोमीटर की गति से तैरने वाले जहाज पर यात्रियों को चारों तरफ पानी ही पानी दिखाई देने लगता है तो तरह तरह की कल्पनाएं कुंठाएं मन में उभरने लगती है। जहाज में साथ चल रहे चिकित्सक ऐसे यात्रियों को प्रायः शामक दवाएं देते हैं ताकि वे सो जाएं और समय तथा प्रकृति स्वयं उपचार कर दे।

मनोविक्षोभ के शिकार सोलह लोग तो दो तीन दिन में ही सामान्य हो गए लेकिन पांच की हालत नहीं सुधरी। मिरियांबो जहाज के चिकित्सा कक्ष में उनकी अब भी देखभाल हो रही थी। कैप्टन सदका उनके लिए थोड़ा चिंतित थे। चिंता थी कि उनकी हालत नहीं सुधरी तो जहाज का रुख न मोड़ना पड़े और रास्ते में आने वाले दियागो गार्शिया या सेशेल्स में उन्हें कहीं उतारना पड़े। अगर ऐसी नौबत आई तो यात्रा का समय दो तीन दिन और बढ़ जाएगा।

वह इन्हीं विचारों में डूबता उतराता डैक पर आया। वहाँ देखा कि गुरुदेव पास ही बिछी कुर्सियों में से एक को केबिन के पास खींच कर, जहाँ से समुद्र की जलराशि निकटतम दूरी पर दिखाई देती है, बैठे हुए हैं। कैप्टन ने उन्हें दो दिन पहले भी गुरुदेव को इसी मुद्रा में देखा था। लेकिन तब ध्यान नहीं गया था। अब उसका मन समुद्री विक्षोभ से बेहाल हो रहे यात्रियों के प्रति चिंतित हो रहा था तो गुरुदेव को डैक पर बैठे देख उनसे कुछ चर्चा की इच्छा हुई।

दूर कहीं समुद्र को छू रहे क्षितिज पर सूरज लहरों में उतरने की तैयारी कर रहा था। संध्या का समय था, कैप्टन ने देखा कि गुरुदेव सूर्य को निहार रहे थे। कुछ पल वह चुपचाप देखता रहा। फिर गुरुदेव के पास जाकर बातचीत शुरु की। कुछ ही मिनटों में वह गुरुदेव से खुल गया। दस पंद्रह मिनट के भीतर ही उसने जहाज में बीमार यात्रियों से लेकर अपने कामकाज, घर, परिवार और सामाजिक जीवन के बारे में बहुतेरी बातें कर लीं। सोलहवें मिनट में उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं बचा था।

जन्म से लेकर अब तक पैंतालिसवें वर्ष तक का पूरा हाल चाल बता दिया और अब पूछ रहा था, अपने बच्चों से मिले मुझे आठ महीने हो गए हैं। आप कोई उपाय कीजिए कि मैं उनसे मिल सकूं, उनके बारे में जान सकूं। अभी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो मुझे यात्रा के दौरान ही कहीं किसी पड़ाव पर उनके बारे में पता चल पाता है। उनसे तीन महीने पहले दार-एस-सलाम में पोर्ट पर टेलीफोन से ही बात हो सकी थी।

गुरुदेव ने कैप्टन सदका की ओर देखा। कुछ पल निहारने के बाद कहा, 'तुम चाहो तो अभी यहीं बैठे-बैठे ही उनसे मिल सकते हो। उन्हें देख सकते हो।'

कैप्टन चौंक उठा। व्यग्र होकर उसने पूछा, 'कैसे? मैं उनसे बात भी कर सकता हूँ क्या?'

'नहीं', गुरुदेव ने कहा, 'बात तो कर सकते हो लेकिन वे लोग शायद नहीं कर पाएं। अचानक तुम्हें अपने सामने देखकर वे डर सकते हैं।'

तो मुझे उन्हें देख ही लेने दीजिए साहब। मैं इतने में ही संतुष्ट हो जाऊंगा। बच्चों की तरह पुलकित होते हुए कैप्टन ने कहा। इस बीच गुरुदेव के पास ही खड़े परिजन ने कहा, 'हमारे लिए ये गुरुदेव हैं। बेहतर होगा कि आप भी इन्हें इसी तरह देखें। आपको आसानी रहेगी।'

'हां हां गुरुदेव, कैप्टन ने कहा, मुझे उनसे दूर से ही मिला दीजिए। मैं उनसे बाद में मिलूगां तब बातचीत कर लूंगा।' कहते हुए कैप्टन गुरुदेव के सामने घुटनों के बल बैठ गया। गुरुदेव ने उसके सिर पर दाहिना हाथ रखा और स्नेह से दुलराया। उन्होंने दो तीन बार कैप्टन के सिर पर हाथ फेरा ही था कि उसकी आंखें मुंद गई। घुटनों के बल बैठे बैठे वह पसर गया और पालथी मार कर बैठ गया। बैठने की मुद्रा में यह बदलाव अनायास ही आया था। फिर उसने अपनी दोनों हथेलियां गोद में रख ली जैसे ध्यान की अवस्था में चला गया हो। करीब दस मिनट तक वह इसी स्थिति में रहा। धीरे धीरे आंखें खोली और गुरुदेव की ओर देखा।

आँखें खोलते हुए पलकें उघाड़ते ही उसकी पुतलियों में खुशी की चमक नाच उठी थी और गालों पर आंसुओं की कुछ बूंदें लुढ़क आई थीं। उसके गलद अश्रु नयनों में कृतज्ञता के विभोर हुए भाव तैर रहे थे। देर तक गुरुदेव की ओर अपलक निहारने के बाद उसके मुंह से इतने ही शब्द निकले, 'आपकी दुआ से मैं अपने बच्चों को देख सका गुरुदेव। उनसे मिला भी और उन्हें प्यार भी किया। मेरी मां अब ठीक होती जा रही है और पत्नी उसकी अच्छी तरह देखभाल कर रही है। इतनी अच्छी तरह कि मुझे ऐसी उम्मीद नहीं थी।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लहरों के पार यात्रा

कैप्टन सदका ने पराभौतिक माध्यम से अपने परिजनों को देखा और उनके प्रति स्नेह लुटाया था। उन लोगों को भले ही अपने अभिभावक की सन्निधि का भान नहीं हुआ हो लेकिन कैप्टन उन्हें देख और अनुभव कर गदगद हो उठा। इस घटना के बाद तो वह गुरुदेव का भक्त हो गया। सदका फिर प्रायः गुरुदेव के केबिन में आने लगा, उनकी जरूरतों के बारे में पूछता, अपनी ओर से सुविधाएं देने की कोशिश करता और समय मिलने पर अपने अतीत, परिवार तथा आकांक्षाओं के बारे में बातें करता। कैप्टन क्योंकि मिरियांबो जहाज का सर्वोच्च अधिकारी था, इसलिए उसके देखा देखी जहाज के और अधिकारी भी गुरुदेव के पास आने लगे। दो तीन दिन में ऐसी स्थिति बन गई कि अधिकारी या जहाज का स्टाफ नहीं, यात्री भी गुरुदेव की सन्निधि पाने के लिए केबिन में, या आसपास मंडराते दिखाई देने लगे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रवासी भारतीयों के लिए भी

गुरुदेव की अफ्रीका-यात्रा का प्रकट उद्देश्य वहां रहने वाले प्रवासी भारतीयों की अभीप्सा पूरी करना था। वर्षों से वहां के प्रवासी जन गुरुदेव को अपने घर बस्ती और क्षेत्र में आमंत्रित कर रहे थे। केन्या, तंजानिया, मोजांबिक आदि देशों में हिन्दु, इस्लाम, ईसाई आदि सभी धर्म संप्रदायों के लोग रहते थे। इनमें भारत से गए प्रवासियों की संख्या सबसे ज्यादा थी। सातवीं, आठवीं शताब्दी में ब्रिटिश और अरब देशों ने अफ्रीकी देशों में उपनिवेश बनाए। वहां इन देशों के धर्म प्रचारकों ने लोगों को अपने विश्वासों और परंपराओं में दीक्षित किया और स्थानीय संस्कृति की जड़ें भी खोदी। शासक देश आक्रांत देश के रिवाजों, मान्यताओं के यथा संभव उन्मूलन की और अपने देश की मान्यताओं या मूल्यों की स्थापना पर जोर देते ही हैं। लगभग उसी तरह की प्रक्रिया अफ्रीकी देशों में भी चली, लेकिन भारत से गए प्रवासियों की स्थिति अलग थी। वे सत्रहवीं अठारहवीं शताब्दी में भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का राज्य स्थापित हो जाने के बाद फ्रांस और पुर्तगाल आदि देशों में होते हुए अफ्रीकी देशों में गए थे। वे इन शासक देशों या जातियों के अधीनस्थ कर्मचारी या मजदूर की हैसियत से गए थे। इसलिए उनकी स्थिति दोयम दर्जे के नागरिकों की सी थी।

बीसवीं शताब्दी में अंग्रेजी राज का सूर्य अस्त होने के बाद भारतीयों की स्थिति में थोड़ा परिवर्तन आया। अपनी योग्यता और प्रतिभा के बल पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
उन्होंने अपनी जगह बनाई और तंजानिया, केन्या, कांगो, यूगांडा, मोजांबिक, जांबिया आदि देशों के श्रेष्ठ वर्ग में गिने जाने लगे। तंजानिया, केन्या और यूगांडा में भारत के स्वतंत्र होने के बाद भी भारत से लोगों का जाना जारी था। उनके परिजन सम्बन्धी पूर्वज डेढ़ सौ-दो सौ साल से वहां थे। इसलिए उन्हें अफ्रीकी देशों में संभावना भी दिखाई दे रही थी और सुविधा भी। इन देशों में अपना भविष्य तलाशते और वर्तमान को संवारते लोगों को उद्‌बोधन देना गुरुदेव की यात्रा का प्रकट उद्देश्य था। इसके अलावा एक अव्यक्त उद्देश्य भी था , जिसकी ज्यादा चर्चा नहीं हुई थी। गुरुदेव के साथ गए कार्यकर्त्ता आत्मयोगी जहाज के कप्तान सदका और वर्षों बाद केन्या के राष्ट्रपिता जोमो केन्याता ने बताया। गुरुदेव जिन दिनों केन्या गए, उन दिनों केन्याता इस देश के राष्टपति थे। उन्होंने अपने देश की आजादी के लिए एक लंबी लड़ाई लड़ी थी और केन्या के आजाद होने के बाद देश की जनता ने उन्हीं के हाथों में देश की बागडोर सौंपी थी। केन्या प्रवास के दौरान गुरुदेव उनसे भी मिले थे। लेकिन उस बारे में बाद में। पहले आत्मयोगी की अनुभूति।

अफ्रीका और भारत की लुप्त कड़ियां

भारत लौटने के बाद आत्मयोगी ने अपने अनुभव विस्तार से बताने के बारे में यह कहते हुए मना कर दिया कि गुरुदेव ने उनकी चर्चा पर रोक लगाई हुई है। अपने निजी अनुभवों को तो वह नहीं ही बताएंगे। जो थोड़ी बहुत जानकारी आत्मयोगी ने दी और वे सूचनाएं किंचित इतिहास से भी मेल खाती हैं उनके अनुसार अफ्रीका भी भारत की तरह मानवीय सभ्यता और संस्कृति की उद्‌गम भूमि है। भारत में मनुष्य की चेतना ने उन्नति के शिखर छुए हैं और अफ्रीका में मनुष्य की पार्थिव सत्ता ने उसके कायिक स्वरूप ने अफ्रीका में उन्नत स्वरूप प्राप्त किया। मनुष्य की चेतना को सर्वांगीण विकसित करना हो तो इन दोनों ही सिरों, ध्रुवों या तलों को संवारने की जरूरत है। आत्मयोगी के अनुसार गुरुदेव की अफ्रीका यात्रा का उद्देश्य वहां के सूक्ष्म जगत में ऐसे बीज बो देना था, जिनका विकास भारतीय अध्यात्म चेतना के लिए सहयोगी और पूरक सिद्ध हो सके। अपनी इस धारणा या मान्यता के बारे में परिजनों ने आत्मयोगी से विस्तारपूर्वक बताने का अनुरोध किया तो उनके चेहरे पर भय की रेखाएं खिंचने लगीं, जैसे उन्हें किसी ने कीलित कर दिया हो। वे बताना चाह कर भी नहीं बता पा रहे हों।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जहाज पर ही कप्तान सदका ने यात्रा के चौथे दिन पूछा, 'गुरुदेव आपने जिस तरह मुझे अनुगृहीत किया' तंजानिया या जिन देशों में जा रहे हैं, वहां अन्य लोगों को भी उपकृत करेंगे क्या? गुरुदेव ने कहा, 'देखा जाएगा।'

कप्तान ने उन दो शब्दों को पकड़ लिया और कहने लगा, आप दूसरों को भी उपकृत करेंगे। मुझे विश्वास है। वहां किलोसा और शिनयांगा में मेरे चार पांच पारिवारिक मित्र और रहते हैं। मैं उन्हें आपके बारे में बता देता हूँ। हो सके तो उन पर भी कृपा कीजिएगा। गुरुदेव ने इस अनुरोध का कोई उत्तर नहीं दिया। कुछ पल सदका की ओर देखते रहे, 'देखो कैप्टन। तुम चाहो तो मेरा भी एक काम कर सकते हो।'

कैप्टन भारतीय ढंग से हाथ जोड़ कर गुरुदेव के सामने घुटनों के बल बैठ गया और बोला, 'कृपा करके आप मुझे कैप्टन मत कहिए गुरुदेव। मुझे मेरे नाम से ही बुलाइए सदका। सिर्फ सदका कहिए-देंगल भी नहीं।'

गुरुदेव ने कहा, 'ठीक है। पर यह तो बताओ कि तुम मेरा काम करोगे या नहीं। छोटा सा काम है।' सदका ने गुरुदेव का वाक्य बीच में ही पकड़ कर कहा 'आप आज्ञा तो करे जनाब। मेरा नाम भी सदका देंगल है जिसका मतलब होता है सच्ची खुशी। मैं अपने नाम के लिए सब कुछ करने को तैयार हूँ।'

सदका भाव विह्वल हो रहा था। गुरुदेव ने कहा, 'मेरा काम भी कुछ ऐसा ही है। अभी हम लोगों को दार-एस-सलाम पहुँचने में पंद्रह सोलह दिन लगेंगे।'

पर आपको तो मोंबासा जाना है न गुरुदेव, सदका ने कहा तो गुरुदेव ने जैसे अपनी बात में संशोधन किया, 'हां मोंबासा ही सही। लेकिन वहां तक पहुंचने में एकाध दिन और कम हो सकता है। समझ लो कि चौदह दिन। इस दौरान तुम मुझे अपनी भाषा सिखा सकते हो।'

सदका ने आश्चर्य से कहा, 'मुझे खुद अपनी जबान स्वाहिली भाषा नहीं आती गुरुदेव। मैं आप जैसे विद्वान व्यक्ति को क्या सिखा सकता हूँ।'

'मुझे कोई स्वाहिली का विद्वान थोड़े ही बनना है।' गुरुदेव ने कहा, 'इतनी जानकारी काफी है कि वहां के लोगों से बात कर सकूं। उन्हें अपनी बात कह सकूं और उनकी बात समझ सकूं।'

सदका ने तुरंत हामी भरी साथ ही अपना असमंजस भी व्यक्त किया कि उसे अध्यापन का कोई अनुभव नहीं है। वह कैसे सिखाएगा। गुरुदेव ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
उसका यह कहकर संकोच दूर कर दिया कि तुम्हें कुछ नहीं करना है। मैं खुद तुमसे पूछता चलूंगा। तुम उसका उत्तर देते चलना बस। मुझे जहां कुछ खास समझना होगा वहां अलग से पूछ लूंगा।

चौदह दिन में नई भाषा

गुरुदेव के इस उत्तर से सदका का संकोच दूर हो गया। याद रहे स्वाहिली पूर्वी अफ्रीका के चार प्रमुख देशों तंजानिया, केन्या, यूगांडा और कांगों की आधिकारिक भाषा है। १९७२-७३ में इस भाषा को राजकाज की भाषा का दर्जा प्राप्त था हालांकि सरकारी काम अंग्रेजी में ही होता था। यों स्वाहिली हिंद महासागर में स्थित अफ्रीकी द्वीपों के आदिवासी कबीलों में खूब बोली समझी जाती थी। व्यापार व्यवसाय में वैसे अंग्रेजी, अरबी और पश्तो का ही ज्यादा चलन था। चारों देशों में, जहां गुरुदेव को जाना था, पचास से साठ लोग अर्थात आबादी का दो तिहाई हिस्सा स्वाहिली में बोलता बातचीत करता था। आधे से ज्यादा लोग तो ऐसे थे, जो इस भाषा के सिवा दूसरी कोई और भाषा समझते ही नहीं थे।

केप्टन सदका ने गुरुदेव को स्वाहिली पढ़ाने की बात जैसे ही स्वीकार की। उन्होंने पूछा, 'इस भाषा का अर्थ क्या है? सदका ने कहा 'सीमा-समुद्री किनारा।' उसी ने बताया कि प्रारंभिक शिक्षा में सीखा था-स्वाहिली में पांच स्वर होते हैं और अड़तीस वर्ण। शुरु दिन उसने मैं, तुम, आप, यह, वह, पानी आदि सर्वनाम और संज्ञाओं से परिचय कराया। कुछ वाक्यांश बताए। ये जानकारियां अथवा अभ्यास गुरुदेव ने खुद पूछे थे।

गुरुदेव ने जिस क्षण स्वाहिली सीखने की इच्छा जताई थी, उसी क्षण से कैप्टन सदका गुरुदक्षिणा चुकाने के साथ अपनी खुद की योग्यता बढ़ाने में भी लग गया था। गुरुदेव ने अफ्रीका की लोक भाषा सीखने के लिए कहते ही विनोद में कह दिया था कि अब शिष्य को भी गुरु का दायित्व निभाना चाहिए। इस पर सदका बहुत दुखी हुआ था। रो रोकर अपना बुरा हाल कर लिया था। रोने का कारण यही था कि आप मुझे इस तरह दंड मत दें। मुझे गुरु क्यों कहा? गुरुदेव ने उसे बहुतेरा समझाया पर वह यही कहता रहा कि मेरी जगह आपके चरणों में है। गुरुदेव ने उसे दूसरी तरह समझाया कि शिष्य का कर्त्तव्य दक्षिणा देना भी होता है। तुम दक्षिणा देने के नाते ही मुझे अपनी भाषा सिखाओ। यह सुन कर सदका का संताप थोड़ा कम हुआ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लेकिन सदका का उल्लास या संतोष ज्यादा स्थिर नहीं रह सका। गुरुदेव ने स्वाहिली भाषा पर तीन दिन में ही अधिकार प्राप्त कर लिया। चौथे दिन वे सदका से स्वाहिली में बात कर रहे थे। इस भाषा के उन मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग कर रहे थे जो सदका को भी नहीं मालूम थे। गुरुदेव ने विभिन्न प्रखंडों में भारत तंजानिया, केन्या और अफ्रीका की भौगोलिक स्थिति, अति प्राचीन काल में उनके एक दूसरे से जुड़े होने और पूर्वी अफ्रीका में भी उन्नत सभ्यता होने के उल्लेख दिए। सदका ने उनमें से कई सूचनाओं की धुंधली सी जानकारी होने की बात कही। ये जानकारियां विद्यार्थी जीवन में मिली थीं। कुछ जानकारियों के बारे में उसने आश्चर्य जताया। गुरुदेव ने सदका से कहा कि तुमने मुझे स्वाहिली की शिक्षा दी है। इस नाते तुम मेरे गुरु हो। मुझे तुम्हें क्या दक्षिणा देनी चाहिए।

सुनकर सदका संकोच के मारे नीचे देखने लगा। उसकी नजरें ऊपर ही नहीं उठीं। गुरुदेव ने फिर याद दिलाया तो सदका बोला आप तो हम सबके मार्गदर्शक हैं गुरुदेव। दक्षिणा तो हम संसारी लोगों को देनी चाहिए। गुरुदेव ने कहा, 'यथा समय वह भी हम प्राप्त कर लेंगे लेकिन अभी तो दक्षिणा चुकाने की बारी मेरी है। कोई कितना भी बड़ा हो, किसी से कुछ सीखता है तो उसे बदले में कुछ देना ही पड़ता है। श्रद्धा और सम्मानपूर्वक तथा यथेष्ट।'

'लेकिन गुरुदेव मुझे तो बचपन से सिखाया गया है कि बड़ों की सेवा ही करना चाहिए,' सदका ने कहा। इस पर गुरुदेव ने सांदीपनि और कृष्ण का पौराणिक प्रसंग बताया। सांदीपनि सद्गृहस्थ ऋषि थे। भगवान कृष्ण, बलराम उनसे शिक्षा प्राप्त कर वापस जाने लगे तो दक्षिणा का आग्रह किया। गुरु जानते थे कि श्रीकृष्ण साक्षात परब्रह्म हैं। उन्होंने असमय मृत्यु को प्राप्त हुए अपने पुत्र को मांग लिया।

श्रीकृष्ण ने गुरु के पुत्र को यमलोक से वापस लाकर दिया और दक्षिणा चुकाई। सांदीपनि यद्यपि गुरु थे फिर भी उन्हींने श्रीकृष्ण की आराधना की। यह सब सुन कर सदका ने कहा कि आप मुझे बदले में कुछ देना ही चाहते हैं तो सिर्फ एक शक्ति दीजिए। गुरुदेव ने सदका के अगले वाक्य पर ध्यान दिया जिसमें वह कह रहा था, मुझे शक्ति दीजिए कि जो लोग उपचार नहीं करा पाने से रोग बीमारी के कष्ट झेल रहे हैं, उनके लिए दुआ कर सकूं। मेरी वह दुआ सुनी जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रोग मुक्ति की सामर्थ्य

गुरुदेव ने सदका के सिर पर हाथ रखा। उनके होंठ हिले और सदका को लगा कि उसके शरीर के भीतर विस्मयकारी तरंगें दौड़ने लगी हैं सिर्फ उसी ने महसूस किया और गुरुदेव के वचनों को सुना कि तुम्हारी आकाक्षां पूरी हो। डेक पर पास ही बैठे आत्मयोगी ने सुना, 'इस व्यक्ति ने गायत्री की सही मायने में उपासना की है। उसे अपने भीतर धारण किया है। तप किया हो या न किया हो, गायत्री की ऋषि आत्मा को जरूर सिद्ध कर लिया है।'

मिरियांबो जहाज पचीस तीस किलोमीटर की गति से समुद्र की छाती पर किसी विशाल बत्तख की सी मस्त चाल से तैरता हुआ जा रहा था। जहाज में गुरुदेव के केबिन और डेक पर जहां वे बैठते साधना स्वाध्याय की गतिविधियां चलती। शुरु के आठ दस दिन तो अपरिचय एकांत के वातावरण में ही बीते। उसके बाद गुरुदेव की उपस्थिति की रश्मियां बिखरने लगी और कैप्टन सदका के साथ उनके सहयोगी साथियों ने भी जहाज पर एक दिव्य पुरुष के होने की खबर फैलाई। दस बारह दिन बीतते बीतते गुरुदेव के आसपास जिज्ञासु और धर्मभाव संपन्न व्यक्तियों का जमावड़ा लगा रहने लगा। मार्च महीने की आठवीं तारीख को गुरुदेव ने इन उत्सुक श्रद्धालुओं के लिए नौ दिन के शिविर की घोषणा कर दी। नौ दिन के साधना अनुष्ठान का विधि विधान और महत्व सुनकर सत्रह साधक तैयार हुए। वे गायत्री जप और ध्यान के साथ व्रत उपवास और भूमिशयन के नियमों का पालन भी करते। करीब चालीस साधक ऐसे निकले जिन्होंने खानपान में सात्विकता का समावेश किया। निरामिष भोजन ओर भूख से कम खाने के नियमों का पालन करते हुए उन्होंने जप-तप ओर पूजा पाठ किया।

साधना उपासना के इस वातावरण का आस्वाद लेते हुए यात्री शिशेल्स द्वीप समूह को पार करते हुए केन्या के बंदरगाह मोंबासा का तट आ गया। अनुष्ठान आदि में दो दिन का समय बचा था। नौ दिन की साधना अवधि पूरी होना मुश्किल लग रहा था। गुरुदेव ने व्यवस्था दे दी थी कि दो दिन की साधना अपने घर पहुँच कर की जा सकती है। साधकों में से कई कहने लगे थे कि जहाज की गति धीमी हो जाए ओर गुरुदेव का सान्निध्य दो दिन और मिल सके तो मजा आ जाए। उनके प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में ही साधना पूरी हो जाए। सोमालिया के चिसीमायु बंदरगाह तक पहुँचते-पहुँचते सूचना मिली कि जहाज को मोंबासा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में रुकने की अनुमति नहीं मिल रही है। इसका कोई कारण नहीं बताया गया था। जहाज पर चली चर्चा के अनुसार कूटनीतिक कारण भी थे और तकनीकी भी। कूटनीतिक कारणों में एक तो यह कि सोमालिया और केन्या में तनाव चल रहा था। केन्या के अधिकारियों ने आशंका जताई थी कि मिरियांबों में सोमालिया से कुछ अवांछित प्रवासी भी सवार हो सकते हैं। उन्हें पहचानना और रोकना प्रशासनिक दृष्टि से मुश्किल काम होगा।

तकनीकी कारणों में जहाज के अधिकारियों के अनुसार कुछ यांत्रिक गड़बड़ियां थीं। उन्हें मोंबासा में ठीक नहीं किया जा सकता था। कूटनीतिक और तकनीकी कारणों में जो भी वजह हो, मिरियांबों में साधना कर रहे उपासकों के लिए तो यह वरदायी स्थिति थी। उन्हें बिना मांगे ही गुरुदेव के साथ दो दिन रुकने का अवसर और मिल गया। गुरुदेव को यद्यपि मोंबासा ही उतरना था किंतु जहाज को वहां रुकने की अनुमति नहीं मिली तो उन्होंने जरा भी शिकायत नहीं की। साथ चल रहे आत्मयोगी ने इस बारे में चर्चा छेड़ी तो गुरुदेव ने कहा, 'हमें यहां के लोगों के बीच कुछ दिन और रहने का मौका मिल जाएगा।'

जहाज ने रुख बदला

मोंबासा जाते हुए जहाज पेम्बा द्वीप से वापस मुड़ा और मुड़कर दक्षिण दिशा में जंजीबार के पास होते हुए दार-एस-सलाम पहुंचा। केन्या में कार्यक्रम बनाकर तैयारी कर रहे परिजनों को जरूर असुविधा हुई। उन्होंने जिन तारीखों में अपने यहां कार्यक्रम निश्चित किए थे, उन्हें आठ दस दिन तक आगे खिसकाना पड़ा। दार-एस-सलाम तंजानिया में था ओर वहां पहुंचने के बाद सड़क के रास्ते ही टांगा होते हुए मोम्बासा व नैराबी आदि शहरों में आया जा सकता था। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आयोजनों की शृंखला मोंबासा से शुरु होकर नैरोबी, मेबां, वडुंगा, आदि शहरों में और मार्ग में पड़ने वाले कस्बों गाँवों से होकर गुजरनी थी। अब यह क्रम उलट देना पड़ा और कार्यक्रम दार-एस-सलाम से शुरु हुआ।

दार-एस-सलाम में आयोजन अप्रैल के पहले सप्ताह में होने वाला था। अब वहां की तिथियों में थोड़ा फेरबदल करना पड़ा। गुरुदेव दार एस सलाम उतरे तो उन्होंने कार्यक्रमों में ज्यादा फेरबदल नहीं करने का सुझाव दिया। नए सिरे से विचार किया गया तो निश्चित हुआ कि दार एस सलाम से मोंबासा तक की यात्रा सड़क मार्ग से पूरी कर ली जाए। तीन चार दिन का समय लगेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
मुंबासा में शुरु होने वाले शुरुआती कार्यक्रमों की तिथियां बदली जाएं और बाकी स्थानों पर कार्यक्रम यथावत ही रखे जाएं। पूर्वी अफ्रीका में उन्नीस स्थानों पर आयोजन थे। इस क्षेत्र के प्रत्येक देश में कम से कम एक। यों परिजनों ने बुरुडी, कोमोरोस, जिकूती, इरीट्रिया, इथियोपिया, मेडागास्कर आदि देशों में दो दो तीन तीन आयोजन रखे थे लेकिन गुरुदेव का सभी कार्यक्रमों में जाना मुश्किल था। वे दो सप्ताह के लिए इन देशों की यात्रा पर आए थे और ठीक से आयोजनों में शामिल हो सकते थे। पूर्वी अफ्रीका के प्रवासी परिजनों ने इतने पर ही संतोष किया।

दार-एस-सलाम के शुरुआती कार्यक्रम और गोष्ठी के बाद गुरुदेव सड़क मार्ग से मुंबासा के लिए रवाना हुए। बंदरगाह के करीबी शहर कोरोग्वे से रवाना हुए ही थे कि तीन चार किलोमीटर चलने पर घना जंगल शुरु हो गया। गुरुदेव के साथ गायत्री परिवार के पांच परिजन और भारत से गए एक सहयोगी आत्मयोगी चल रहे थे। सात लोगों का यह काफिला तीन गाड़ियों में था। गुरुदेव बीच की गाड़ी में सवार थे। यात्रा आठ दस किलोमीटर आगे पहुंची ही होगी कि पत्तों की सरसराहट सुनाई दी। लगा जैसे पचास साठ पांव एक साथ कदमताल करते हुए चल रहे हों। आगे की गाड़ी में चल रहे परिजनों के माथे पर चिंता की लकीरें उभरी और गहराई। उन्हें लगा कि जंगली जानवरों का छोटा मोटा झुंड आ रहा है। साफ नहीं हो रहा था कि ये जानवर नीलगाय या बारह सिंघे सरीखे सामान्य पशु हैं या हिंस्र प्रकृति के हैं। गायत्री परिवार के सदस्य असमंजस की स्थिति में थे लेकिन तीनों गाड़ियों के ड्राइवर इन आवाजों को सुनकर चौकन्ने हो गए। आवाज जैसे ही पास आई उनमें से एक जोर से चिल्लाया "भागो-जान बचाओ"। कहते हुए वह अपने साथियों सहित जिधर से आए थे, उधर ही लपक लिया।

कुछ ही देर में परिजनों ने देखा के पच्चीस तीस आदिवासियों का समूह आकर प्रकट हो गया। उन लोगों ने कमर से नीचे रंग बिरंग कपड़े पहने हुए थे। घुटनों तक लटकते इन वस्त्रों के सिवा आधे शरीर पर कुछ नहीं था। गले में कौड़ियों की माला और हाथ में नुकीले सिरे वाले लोहे के लंबे सरिए। देखते ही देखते आदिवासियों के इस समूह ने तीनों गाड़ियों को घेर लिया। मुंह से अजीब आवाजें लगाते हुए वे गाड़ियों में बैठे यात्रियों की तरफ अपने नुकीले सरिए ताने कुछ कह रहे थे। गाड़ी में बैठे परिजनों को उनकी भयावह आवाजें सुनकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
पसीना सा आ रहा था। साथ चल रही दो महिलाएं तो थर-थर कांप रही थीं। एक परिजन बदहवास हालत में चुपचाप बाहर देख रहे थे। आदिवासियों ने तीन-चार बार गाड़ी में बैठे लोगों की ओर देखते चिल्लाते हुए अपने शस्त्र ताने और फिर कुछ शांत होते दिखाई दिए। उनकी शांति विचित्र थी। लगता था जैसे वे अपने अगले कदम के बारे में सोच रहे हों। लगा यकायक वे हमला करने वाले हैं। वे गाड़ी के चारों ओर बिखर कर फैलने लगे थे। इस बीच गुरुदेव ने अपना दाहिना हाथ उठाया और बांए हाथ से दरवाजा खोलते हुए, क्षण भर में नीचे उतर आए। उन्हें हाथ ऊपर उठाए देख कर आदिवासी कुछ पीछे हटे। गुरुदेव ने जैसे आश्वस्त करते हुए हाथ उठाया था। आदिवासियों के पीछे हटते ही गुरुदेव ने हाथ नीचे कर लिया और कुछ कहा। क्या कहा ? साथ चल रहे परिजनों में किसी को समझ नहीं आया लेकिन आश्वस्त भी हुए कि अनिष्ट आशंका टल गई है।

खूंखार आदिवासियों का समर्पण

गुरुदेव के हाथ नीचे करते ही आदिवासियों ने मशीनी तत्परता से हथियार नीचे रख दिए। जिस तेजी से हथियार नीचे रखे, शायद उससे भी ज्यादा तेजी से वे नीचे झुके। पहले अपना सिर जमीन पर टिकाया जैसे माथा टेक रहे हों, फिर अपने पांव पीछे फैलाए, अष्टांग प्रणिपात प्रणाम की मुद्रा में और तत्क्षण चित लेट गए। अपनी जीभ बाहर निकाली और हाथ ऊपर कर दिए। इतना सब करते देख गुरुदेव ने फिर पहले की तरह ही कुछ कहा। उसी स्वर और धुन में आदिवासियों ने भी उत्तर दिया और धीरे-धीरे उठकर खड़े हो गए। इस बीच गुरुदेव ने गाड़ी में बैठै परिजनों की ओर देखा। उनसे कहा कि निश्चिंत रहो। डरने की कोई जरूरत नहीं है। ये अपने ही लोग हैं।

निलोत जन जाति के ये लोग पूर्वी अफ्रीका के मूल निवासी कहे जाते हैं। नृतत्व शास्त्रियों का मानना है कि लाखों साल पहले पृथ्वी के इसी भू भाग पर मनुष्य जाति ने वर्तमान रूप प्राप्त करना शुरु किया था। उससे पहले वे हाथ पांव के बल पर चौपायों की तरह ही चलते थे। पहली बार मनुष्य के पूर्वजों की कमर सीधी हुई और वे पैरों के बल चलने लगे तो इसी क्षेत्र में। उस पीढ़ी की कुछ जनजातियां पृथ्वी के पंद्रह बीस क्षेत्रों में दिखाई पड़ी हैं। निलोत जनजाति उन्हीं वर्गों में एक है। गुरुदेव ने जिस भाषा में उन लोगों से संवाद किया वह पाँच सात सौ शब्दों में ही सिमटी है। उस भाषा को 'बांटू' कहते है। गुरुदेव जब निलोत कबीले के लोगों से बात कर रहे थे तो गाड़ी में बैठे आत्मयोगी को आश्चर्य हुआ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
मिरियांबों जहाज में यात्रा करते हुए गुरुदेव ने कप्तान सदका से स्वाहिली भाषा सीखी थी। बांटु के बारे में तो आत्मयोगी ने कभी नहीं सुना था। थोड़ी ही देर में आत्मयोगी का विस्मय तिरोहित हो गया। इस यात्रा में अब तक और इससे पहले भारत में भी उन्हें गुरुदेव के साथ इस तरह की कई अनुभूतियां हुई थीं।

निलोत कबीले के लोग गुरुदेव के सामने खडे थे, वहां चारों ओर प्रकाश की रेखा आवृत्त हो गई थी। लग रहा था जैसे बादल छा रहे हों और उनके भीतर सूर्य झांकता हुआ दिखाई दे रहा हो। इस आवृत प्रकाश में घिरे निलोत कबीले के लोग गुरुदेव को देखते हुए हर्षविभोर हो उठे। उनके भीतर आनंद और उमंग की न जाने कौन सी स्फुरणाएं जगी और वे नाचने गाने लगे।

उनकी उमंग थोड़ी स्थिर हुई तो गुरुदेव ने उन्हें संबोधित किया, 'तुम लोग भूल गए हो पर हमें याद है। हजारों साल पहले हम सबने एक साथ मिलकर काम किया था, इसी धरती पर। गुरुदेव ने उन्हें संबोधित करना शुरु ही किया था सामने खड़े लोगों में से एक ने दोनों हाथ ऊपर उठाकर कहा, 'आप ऊंचाई पर बैठ जाइए, हमारे देवता है, हमारे बराबर खड़े न हों। मेहरबानी होगी।'

उनकी बातचीत सुनकर गुरुदेव के आसपास देखा और पहले की तरह ही उन्हीं की बोली में कहा कि आसपास तो ऐसी कोई जगह नही है। आप लोग नीचे बैठ जाइए। मैं खड़ा होकर ही बात कर लूंगा। परिजन पहले ही भाग कर आसपास की झाड़ियों में छुपकर बैठ गए थे। गुरुदेव अकेले ही वहां खड़े थे। आदिवासियों को गुरुदेव की यह बात रास नहीं आई कि वे खड़े हो कर बोलते रहे और आदिवासी बैठ जाए।

वे गुरुदेव में अपने कबीले के आराध्य देव को देख रहे थे। उसी व्यक्ति ने जो संभवतः उस कबीले का मुखिया था, पीछे मुड़ कर देखा आसमान में बादलों से घिरा सूर्य अब भी चमक रहा था। फिर उस देवता की दुहाई देते हुए उस मुखिया ने कहा, 'मैं अनूड़ा आपसे विनती करता हूं कि आप किसी भी तरह हम लोगों से ऊपर खड़े हों। वहां भी तो आप खड़े हैं ना। कहते हुए उसने बादलों में खिले दिख रहे सूर्य की ओर इशारा किया। अनूड़ा के संकेत से लग रहा था जैसे सूर्य उस कबीले का लोक देवता हो। अनूड़ा दरअसल उस मुखिया का नाम नहीं था बल्कि उसका पद था। इस पद का एक अर्थ सारथी होता है। गुरुदेव ने अनूड़ा की बात रखते हुए पास खड़ी गाड़ियों की छत पर बैठने का इशारा किया। अनूड़ा और उसके साथियों ने हर्ष जताते हुए स्वीकार किया ओर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुदेव ने पास ही खड़ी गाड़ी की छत पर बैठ कर उन कबीलाई लोगों को संबोधित किया। उस संबोधन में उनके आराध्य सूर्य के और उसकी आराधना के रहस्य समझाए।

संबोधन का समापन गायत्री मंत्र के उच्चारण से किया। उस समय साथ चल रहे परिजन विस्मय विमुग्ध रह गए जब गुरुदेव ने उन कबीलाई लोगों से भी अपने साथ साथ गायत्री मंत्र का उच्चारण करने के लिए कहा और तमाम लोगों ने गायत्री मंत्र का सही शुद्ध स्पष्ट उच्चारण किया तो लगा जैसे वहाँ मौजूद लोगों के साथ और भी कई आवाजें उमड़ रही हैं। ज्यादा लोग गायत्री मंत्र का पाठ करने लगे हैं। तीसरी चौथी आवृत्ति में ये आवाजें और ज्यादा हुईं। पांचवी बार में तो दसों दिशाओं से गायत्री मंत्र का उच्चारण सुनाई देने लगा। फिर यह गूंज देर तक वन में तैरती रही। लगा हर वृक्ष और वृक्ष का पत्ता पत्ता गायत्री मंत्र का जप कर रहा है। धीरे-धीरे वातावरण शांत हुआ और एक गहरा मौन चारों ओर छा गया। करीब चालीस मिनट बाद कबीलाई वहां से प्रणाम करके चले गए। ड्राइवर और दूसरे परिजन भी लौट आए थे।

तंजानिया, यूगांडा, केन्या, जंजीवार आदि देशों की यात्रा में गुरुदेव के सार्वजनिक कार्यक्रम बहुत कम, लगभग नहीं के बराबर हुए। करीब चालीस दिन के इस प्रवास में वे चौदह स्थानों पर गए। परिजन इन यात्राओं के बारे में याद करते हैं कि चौदह स्थानों पर जैसे समुद्र मंथन के चौदह रत्न निकाले गए हों या इन जगहों पर रत्न छुपे थे, जिन्हें गुरुदेव ने ढूंढ़ निकाला हो। दार-एस-सलाम से मोंबासा जाते हुए रास्ते में कबाइली लोगों को उद्‌बोधन और उनमें सोए हुए दिव्य संस्कारों का जागरण इस प्रवास की दिखाई देने वाली पहली महत्त्वपूर्ण घटना थी। दिखाई देने वाली घटना इसलिए कि अदृश्य जगत में तो कई घटनाएं हुई, जिनका दृश्य संसार में कोई रिकार्ड नहीं रखा गया।

केन्या की राजधानी नैरोबी में गुरुदेव विद्या परिहार के निवास पर रुके। जोधपुर से वर्षों पहले नैरोबी जा कर बसे इस परिवार ने उस जमाने में प्रवासी भारतीयों और मूल अफ्रीकी लोगों को गायत्री मंत्र, उपासना और गुरुदेव के मिशन के बारे में काफी कुछ बताया, प्रशिक्षित किया था। गायत्री तपोभूमि की स्थापना और उससे भी पहले गायत्री परिवार से जुड़े इस परिवार की आस्था थी कि गुरुदेव के आशीर्वाद उनके जीवन में फलीभूत हुए है। विद्या तब दस बारह साल की रही होंगी। उनके भाई राम टांक चतुर एवं व्यावसायिक बुद्धि के थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
परिवार के अन्य सदस्यों ने १९५६ के सहस्रकुंडीय महायज्ञ में सक्रिय हिस्सा लिया था। केन्या के परिजनों का मानना था कि इसी परिवार ने गुरुदेव से नैरोबी आने और यहां के परिजनों को दिशा दर्शन देने का अनुरोध किया था। गुरुदेव जितने भी समय नैरोबी रहे, वहां के परिजनों में प्रत्यक्ष रूप से आने वाले बदलावों के बारे में बताते रहे। उस समय के अधिकांश परिजन अब पूर्वी अफ्रीका से निकल कर दूसरे देशों में बस चुके हैं।

१९७३ में गुरुदेव की यात्रा के बारे में अब भी लोगों को कई बातें याद हैं। विद्या परिहार के घर में तब एक तोता हुआ करता था। घर में कोई भी आता तो वह गायत्री मंत्र बोल कर उसका स्वागत करता। गुरुदेव ने उस परिवार में कदम रखा तो तोते ने उनका भी गायत्री मंत्र बोल कर स्वागत किया। गुरुदेव ने उस तोते की ओर स्नेह से देखा। किसी ने उस समय कहा, 'मंडन मिश्र के घर पर भी वहां के तोते वेदमंत्रों का उच्चारण करते थे।'

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गुरुदेव ने कहा कि इस तोते के पाठ से परिवार में गायत्री के वातावरण का पता चलता है। लेकिन तोते की तरह पाठ करने से साधक को कोई लाभ नहीं होता। उसके लिए तो उपयोगी यही है कि गायत्री उपासना के साथ साधना भी करें। उपासना बीज है तो साधना कृषि कर्म। बिना कृषिकर्म के खेत की तैयारी जुताई, बुआई और निराई के बीज का कोई महत्व नहीं है।

विद्या परिहार के निवास पर गुरुदेव की उपस्थिति में तीन चार बार नैरोबी के परिजनों का जमावड़ा लग जाता। मनुष्य, धर्म, समाज, संस्कृति और घर परिवार के साथ देश काल की चर्चाएं भी होती। दो गोष्ठियां संपन्न होने के बाद स्थानीय परिजन रोज चक्कर लगा जाते। गुरुदेव बाहरी कार्यक्रमों के बाद जो समय बचता उसे पूर्वी अफ्रीका और आसपास के देशों में निवास कर रहे परिजनों से संपर्क में भी लगाते। उनकी प्रेरणा होती थी कि अपने धर्म और संस्कृति की सेवा करते हुए जिस देश में निवास कर रहे हैं, वहां के राष्ट्रीय हितों की चिंता करना आप सबका प्रथम कर्तव्य है।

वायवीय शरीर से संपर्क

मोंबासा के रास्ते मोशी कस्बे में गुरुदेव कुछ समय रुके। अदृष्ट घटनाओं में एक का उल्लेख यहाँ के बारे में मिलता है। गुरुदेव के साथ गए कार्यकर्त्ता आत्मयोगी बताया करते थे कि हम लोग तीन दिन मोशी में रहे। वहां गुरुदेव ने परिजनों से मिलने जुलने का सिलसिला ही शुरु नहीं किया। ज्यादातर समय वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
एक कमरे में बंद रहे। आत्मयोगी और मेजबान परिवार के लोगों से कह दिया गया कि चौबीस घंटे तक उनके कक्ष की ओर नहीं आया जाए। आहार, जल और जरूरी चीजें पहुंचाने की फिक्र भी न की जाए। गुरुदेव के निर्देशों का पूरी तत्परता से ध्यान रखा गया। परिवार का कोई बच्चा गलती से भी उधर न चला जाए अथवा वहां आते-रहने वाले मित्र-परिचित भूल से भी दरवाजा न खटखटा दें, इसके लिए सावधान रहते हुए आत्मयोगी ने गुरुदेव के कक्ष के सामने ही डेरा जमा लिया था। परिवार के सभी लोग निश्चिंत होकर अपनी दिनचर्या के निर्धारित काम करते रहे। उन्होंने मान लिया कि गुरुदेव जैसे यहां आए ही नहीं हैं।

इस एकांत सेवन के दौरान किलि मंजारो, तिक और मरसाबिल कस्बों में विचित्र घटनाएं हुईं। तीनों कस्बे केन्या में हैं और परस्पर डेढ़ सौ से दो सौ किलोमीटर दूर हैं। मिशी समेत चारों कस्बों की दूरी का हिसाब लगाएं तो हजार आठ सौ किलोमीटर की दूरी बनती है। किलि मंजारो पर्वत भी है और हिल स्टेशन भी। समुद्रतल से करीब छह हजार फीट ऊँचाई पर स्थित इस कस्बे में एक परिजन रहते थे विक्रम देसाई। दो साल पहले भारत जाना हुआ था तब मथुरा भी गए। उन दिनों गुरुदेव के मथुरा छोड़कर हिमालय क्षेत्र में जाने की तैयारियां चल रही थीं।

विक्रम भाई का उन्हीं दिनों विवाह हुआ था और विदाई वर्ष में ही वे पत्नी सहित चार दिन के परामर्श शिविर में भी हो आए थे। मथुरा में गुरुदेव के सान्निध्य में पति पत्नी इतने अभिभूत हुए कि उन्होंने अपनी भावी संतान का नामकरण गुरुदेव से ही कराने का संकल्प कर लिया। जून १९७२ में हिमालय जाने के बाद गुरुदेव का क्या कार्यक्रम रहेगा, वे वापस आएंगे भी या नहीं अथवा आएंगे तो लोगों से मिलना जुलना हो सकेगा या नहीं, यह किसी को पता नहीं था। स्वयं गुरुदेव को भी नहीं। उनसे कोई पूछता तो अपने गुरुदेव और परिजनों के दादागुरु द्वारा मिले निर्देशों के अनुसार वे उत्तर दे देते। जो उत्तर देते उसके अनुसार भविष्य में किसी से भी प्रत्यक्ष संपर्क होना मुमकिन नहीं था। मिल पाएंगे या नहीं? इस बारे में गुरुदेव स्वयं भी निश्चिंत नहीं थे। मथुरा के परामर्श सत्र में विक्रम भाई को पता चला तो उन्हें निराशा हुई कि उनकी कामना पूरी न हो सकेगी। वे मन मसोस कर रह गए।

अब १९७२ में गुरुदेव के अफ्रीकी देशों की यात्रा का कार्यक्रम बना तो विक्रम भाई को अपनी मुराद पूरी होती दिखाई दी। लेकिन वह भी जल्दी ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
क्षीण हो गई, क्योंकि गुरुदेव को मोंबासा नहीं उतरने दिया गया था। रास्ते में हुई देरी के कारण कुछ कार्यक्रम स्थगित करना पड़े थे। इन कार्यक्रमों में ही एक जगह विक्रम भाई ने गुरुदेव से मिलने की योजना बनाई थी। अब गुरुदेव उस जगह पहुंच ही नहीं रहे थे तो विक्रम भाई का निराश होना स्वाभाविक था। लेकिन जिस दिन की यह घटना है उस दिन मार्च महीने का शायद कोई रविवार था। इस दिन की पिछली शाम से विक्रम भाई और उनकी पत्नी रत्ना देसाई के मन में हर्ष हिलोरें फूट रही थीं। कोई कारण समझ नहीं आ रहा था फिर भी मन था कि बावरा हुआ जा रहा था जैसे घर में कोई प्रिय परिजन–अत्यंत निकटवर्ती सदस्य आने वाला हो।

रात इसी हर्ष उल्लास में ठीक से नींद नहीं आई। रत्ना ने दो बार उठकर पति को जगाया और कहा, ऐसा लगता है जैसे गुरुदेव हमारे यहाँ पधारे हैं और यहीं ठहरे हैं। विक्रम को भी कुछ अचीन्ही संभावना तो महसूस हो रही थी लेकिन यह विचार जम नही रहा था कि गुरुदेव आने वाले हैं। कोई सूचना नहीं थी और घर आने के बारे में सपने में भी नहीं सोचा जा सकता था। रत्ना से कह दिया कि चुपचाप सो जाओ। किसी और से मत कह देना यह बात। हंसी होगी। रत्ना ने दूसरी बार फिर यही बात दोहराई तो विक्रम ने खीझ कर चुप रहने और सो जाने के लिए कहा।

उस समय तो बात आई गई हो गई लेकिन अगले दिन रविवार को पति पत्नी दोनों स्नान संध्या से निपट कर हवन करने बैठे। विक्रम और रत्ना दोनों ब्रह्म संध्या तथा गायत्री जप तो अलग अलग करते थे लेकिन रविवार के दिन गायत्री यज्ञ एक साथ किया करते थे। उस दिन पड़ौस से विश्वरंजन भाई का परिवार भी आ जाता था। चार पांच लोग हो जाते और चालीस पचास मिनट का यह आयोजन आत्मीयता और दिव्य भावों के मिले जुले माहौल में हो जाता। उस दिन इन पांच छह व्यक्तियों के साथ एक वयोवृद्ध सज्जन भी उपस्थित हुए। धोती कुर्ता और जाकिट पहने इन सज्जन के सिर पर श्वेत केश राशि थी। वे कब घर के भीतर आए किसी को पता नहीं चला, रत्ना और विक्रम को प्रतिपल लगता रहा कि उन्होंने द्वार पर आहट सुनी थी और दोनों ने दरवाजे खोल दिए। आते ही उन सज्जन ने यज्ञ में सम्मिलित होने की इच्छा जताई, जिसे देसाई दंपत्ति ने तुरंत मान लिया फिर ऐसा कुछ वातावरण बना कि उस दिन के यज्ञ आयोजन का पौरोहित्य ही उन अपरिचित आगन्तुक के हाथों होने लगा। यज्ञ पूर्णाहुति से पहले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन सज्जन ने कहा 'अब अपने बच्चे को लाइए। उसका नामकरण करेंगे,' सुनना था कि देसाई दंपत्ति की तंद्रा टूटी। अभी तक वे जैसे किसी अज्ञात शक्ति के वशीभूत से ही यज्ञ हवन करा रहे थे। 'नामकरण' की बात सुनकर उनकी बेहोशी टूटी और वे चैतन्य हो उठे। सामने बैठे, यज्ञ संपन्न करा रहे व्यक्तित्व की ओर देखा, दोनों के मुंह से बरबस निकला 'गुरुदेव आप'। इन दो शब्दों के अलावा उनके मुंह से तीसरा शब्द नहीं निकला।

नजारा ही बदल गया। बच्चे का नामकरण गौण हो गया और गुरुदेव के अर्चन आराधन पर ही दोनों का ध्यान केन्द्रित हो गया। विश्वरंजन बाबू को कुछ समझ नहीं आ रहा था। विक्रम भाई ने कहा, 'अरे ये हमारे गुरुदेव हैं। हम आप पर कृपा करते हुए यहां प्रकट हुए हैं।' विश्वरंजन को ध्यान आया कि कभी यज्ञ और पूजा पाठ के समय जब कभी वे यहां आते रहे हैं और जो चित्र यहां दिखाई देता है, उसमें और उपस्थित महात्मा में रत्ती भर अंतर नहीं है। उन्होंने भी उठकर प्रणाम किया। बाद में विश्वरंजन बाबू ने हैरानी भी जताई कि फोटो में छवि देखते रहने के बावजूद वे गुरुदेव को पहचान नहीं सके? विक्रम भाई ने भी आश्चर्य जताया।

एक अचंभा और भी हुआ। देसाई दंपत्ति और विश्वरंजन ने मिलकर पूर्णाहुति की और समापन होने लगा तो एक एक, दो दो कर पंद्रह बीस लोग और वहां आ गए। ये सब पास पड़ौस से ही थे। घर पर यज्ञ आयोजन कई बार हुए हैं लेकिन आने वालों की संख्या तीन चार लोगों से ज्यादा नहीं रही। इस बार तीन चार गुना लोग आए। उन्हें गायत्री और यज्ञ के सम्बन्ध में गुरुदेव का उद्बोधन भी सुनने को मिला।

ज्वाला मुखी पर अभय

रविवार को किलि मंजारो में एक परिवार में यह छोटा सा उत्सव हो रहा था, ठीक उसी समय दस साढ़े दस बजे मरसाबिल कस्बे के एक सभागार में डेढ़ सौ दो सौ लोग जुटे हुए थे। ये लोग शिक्षा और साहित्य से सम्बंधित थे। उस इलाके के प्रसिद्ध लेखक तथा साहित्य और विज्ञान के अध्यापक। इनमें विज्ञान और दर्शन शास्त्र पढ़ रहे विद्यार्थी भी थे। मरसाबिल केन्या के पूर्वी हिस्से में बसा शहर है। अब तो यह नामी जिला बन गया है और उस क्षेत्र के उद्योग व्यापार का केन्द्र भी है। केन्द्र तब भी था लेकिन यहां के प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता था। पर्यटकों की संख्या तब भी यहाँ खूब थी। धर्म परंपरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
अनुसार यहां ईसाइयों की संख्या ज्यादा है। लगभग ४२ प्रतिशत। उसके बाद इस्लाम में यकीन रखने वालों की बारी आती है-करीब ३२ प्रतिशत। २८ प्रतिशत लोग स्थानीय आदिवासी परंपराओं और पूजा विधियों को मानते हैं। कस्बा एक सुप्त ज्वालामुखी पर बसा हुआ है।

और यहां धर्मगुरु लोगों को उपदेश देते डराते रहे हैं कि इस शहर की पहाड़ी से किसी भी वक्त गरम गरम लावा और आग के गोले फूट पड़ सकते हैं। ईश्वर के कोप के कारण ऐसा होगा। उससे बचने के लिए तुम्हें हमारे धर्म की शरण में आना चाहिए। किसी जमाने में इलाके की पूरी आबादी स्थानीय देवी देवताओं और रीति रिवाजों को मानती थी। बाद में पहुंचे धर्म प्रचारकों ने उनमें से कई को अपने मत में दीक्षित किया। शिक्षा का प्रचार हुआ तो भी कई लोग आदिवासी और स्थानीय विश्वास छोड़कर संगठित व्यवस्थित धर्मों को अपनाने लगे।

जिस आयोजन का संदर्भ ऊपर की पंक्तियों में आया है, वह इलाके में बदल रहे धर्म विश्वासों के अनुपात और उसके प्रभाव पर ही था। चर्चा का विषय था 'प्रवासी संस्कृति का संकट और समाधान'। आयोजकों ने इस कार्यक्रम में गुरुदेव को भी आमंत्रित किया था। गुरुदेव की अफ्रीका यात्रा के बहुत से महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में एक यह भी था। जिन कारणों से मुंबासा पहुंचने और पहले से निर्धारित कार्यक्रमों में फेरबदल करना पड़ा, उसमें मरसाबित भी एक था। मरसाबिल की कुछ संस्थाओं ने तो गुरुदेव के न आने का दुष्प्रचार भी शुरु कर दिया। उनका कहना था कि मुंबासा नहीं उतरने देने की वजह एक बहाना है। गुरुदेव खुद इस कार्यक्रम में नहीं आना चाहते थे क्योंकि उनके पास अपने मत और विश्वास के बचाव में कोई दलील नहीं है और कोई तथ्य तो है ही नहीं। इस प्रचार के लिए दस बारह दिन का समय मिल गया था। जिस दिन यह कार्यक्रम होना था उस दिन गुरुदेव करीब सात सौ किलोमीटर दूर मिशी में थे और वहां से इतनी जल्दी मरसाबिल पहुंचने का कोई उपाय नहीं था।

रविवार ११ मार्च का दिन। मरसाबिल के सेंट्रल आडिटोरियम में विज्ञान और साहित्य के अध्यापकों, विद्वानों के साथ अध्ययनशील छात्र और सुधी नागरिक बैठे हुए थे। संयोजक संचालक प्रो. इसरार ने कहना शुरु किया 'मित्रों,' सभा की कारवाई शुरु की जाए। दो तीन को छोड़कर सभी विद्वान आ गए है। कुछ आ नही सके और कुछ ने नहीं आने के लिए बहाना तलाश लिया। प्रो. इसरार कह ही रहे थे कि द्वार पर कुछ चहल-पहल दिखाई दी। कोई विद्वान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
अतिथि आते प्रतीत हो रहे थे। उनके साथ चल रहे साथी सहयोगी कुछ वचनों और उद्घोषों का उच्चारण करते चल रहे थे। लोगों का वह समूह जब मंच के पास आ गया तो प्रो. इसरार ने आगंतुक विद्वान को पहचाना और कहा मित्रों हमें गलत सूचना मिली थी। आचार्यश्री हम लोगों के बीच आ चुके हैं।

उस गोष्ठी में प्रवासी लोगों के कारण स्थानीय संस्कृति और रिवाजों पर आ रहे संकटों के बारे में चर्चा होनी थी। शुरु में दो वक्ताओं ने इस विषय पर अपनी बात रखी लेकिन तीसरे और चौथे क्रम में ईसाई, इस्लाम, सिख तथा जैन धर्म के विद्वान अपने अपने मतों का पुरजोर समर्थन करते हुए उन्हें ही स्थापित करने पर जोर देने लगे। स्थिति अपने मत की पुष्टि के साथ दूसरों के मत का खंडन और फिर निंदा की दिशा में बढ़ने लगी।

गुरुदेव को नौवें क्रम पर बोलना था। उन्होंने अपना परिचय एक ऐसी धारा और परंपरा का अनुयायी विद्यार्थी होने के रूप में दिया जिसकी सैंकड़ों शाखाएं हैं और उनमें कोई भी व्यक्ति या समूह अपने लिए एक उपयुक्त शाखा चुन सकता है। चुनने का अर्थ उस धर्म परंपरा में दीक्षित होना नहीं, बल्कि अपने विश्वासों को उसके प्रकाश में समझना है।

सूर्य विज्ञान के प्रयोग

गुरुदेव ने इस गोष्ठी में सूर्य विज्ञान के कुछ प्रयोग बताए। उन प्रयोगों के आधार पर फूल खिलाए जा सकते हैं, संपदा प्रकट की जा सकती है और शून्य में से मनचाही वस्तुएं प्रकट की जा सकती हैं। उन्होंने दो तीन प्रयोग करके भी दिखाए। एक प्रयोग में प्रो. इसरार की चुनी हुई कुर्सी का पाया लकड़ी से लोहे में बदलकर दिखाया। चारों तरफ से बंद सभागार में तेज धूप को अपने इशारों से उतारकर दिखाया जैसे सूर्य की किरणों ने छत और दीवार की बाधाएं पार कर ली हों।

सभागार में ही बैठे एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को उन्होंने अपनी जगह से बिना सहारे उठाकर खड़ा कर दिया और कुछ कदम चलाया भी। इन प्रदर्शनों के बाद कहा कि ये प्रयोग प्रतीकात्मक हैं। यों न समझें कि सम्मोहन के कारण ये दृश्य दिखाई दिए। सविता देवता की, सूर्य नारायण की शक्ति का भलीभांति उपयोग किया जा सके तो आज की दुनिया में हम जितनी सफलताएं और उपलब्धियां हासिल कर इतराते हैं, उन सबसे हजार गुना चमत्कार किए जा सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुरुदेव के कुछ प्रयोग प्रदर्शन और प्रतिपादन के बाद आयोजन वहीं पूरा हो गया। उनके बाद तीन वक्ताओं को और बोलना था। उन्होंने अपने नाम वापस ले लिए और गुरुदेव से सविता विज्ञान पढ़ने की मंशा व्यक्त की। सभा संपन्न हुई। आयोजक और गोष्ठी में उपस्थित कुछ लोग गुरुदेव को बाहर छोड़ने गए। सभागार की सीढ़ियां उतरते तक तो लोगों ने उन्हें देखा। इसके बाद गुरुदेव किस वाहन पर बैठे, किस दिशा में गए, किसी को पता नहीं चला। ये घटनाएं पूर्वी अफ्रीका यात्रा की कुछ बानगियां हैं। उस यात्रा के जितने विवरण मिलते हैं, उन्हें ध्यान में रखें तो एक ही समय अलग अलग जगह अपने प्रेमियों और श्रद्धालुओं से संपर्क की सैंकड़ों घटनाएं हैं।

◈◈◈◈◈◈◈

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

छह

प्राण प्रत्यावर्तन सत्र

चारो ओर नील अगाध जलराशि लहरा रही है। प्रलय का जैसा वर्णन शास्त्रों या साहित्यकारों ने किया है, उसी तरह का दृश्य है। उस जलराशि में एक कोमल कमल-पत्र तैर रहा है। उस पत्ते पर सांवले सलोने रंग के बालमुकुंद हैं, उनके पांवों में पैंजनिया बंधी हुई हैं। शिशु भगवान दाएं पांव का एक अंगूठा मुंह में लेकर चूस रहे हैं। जैसे उसमें रस का प्रवाह आ रहा हो। उस दृश्य को देखते देखते साधक अवधेश प्रसाद की अपनी चेतना लुप्त होने लगी। प्रतीत होने लगा कि भीतर से कोई ज्योति निकली और कमलपत्र पर लेटे बालमुकुंद के कलेवर में जा समाई। फिर धीरे धीरे चित्त हलका होने लगा। इतना हलका हो गया कि अपना आपा ही जैसे गिर गया। अवधेश को प्रतीत होने लगा कि वह स्वयं बालमुकुंद हो गया है। या शिशु भगवान ही उसके अपने रूप में व्यक्त हो रहे हैं। लीला कर रहे हैं।

प्राण प्रत्यावर्तन साधना का यह पहला दिन था। समय रहा होगा सुबह सवा पांच और साढ़े पांच के बीच का । सुबह चार बजे ही नींद खुल गई थी। घर पर सामान्य जीवन में सुबह छह सात बजे से पहले बिस्तर छोड़ने का मन नहीं होता। यहां बिना जगाए ही नींद टूट गई। सुविधा के लिए सामने मेज पर अलार्म घड़ी रखी थी, लेकिन उसकी जरूरत नहीं हुई। उठते ही स्नानादि से निवृत्त हुआ गया।

शांतिकुञ्ज के मुख्य भवन में ही इसकी उपयुक्त व्यवस्था कर दी गई थी। आरंभ में बने आठ कमरों के बीच दीवारें खिंचवा कर चौबीस कक्ष बना दिए गए थे। कार्यालय के लिए एक बड़ा कक्ष उससे अलग था। चौबीस कक्षों में ही एक कक्ष में अवधेश प्रताप भी ठहरे थे। बाकी अन्य कक्षों में तेईस साधक थे। इन चौबीस साधकों को पांच दिन की अवधि में बाहर निकलने की मनाही थी। स्नान आदि के बाद दीपदर्शन, ऊष:पान और दर्शन प्रणाम के अलावा पूरे समय साधना कक्ष में ही रहना था। आश्रम परिसर से बाहर तो दूर, कक्ष के बाहर निकलने या आपस में बातचीत करने पर भी प्रतिबंध था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राण प्रत्यावर्तन साधना सत्रों की रूपरेखा निजी प्रयासों से ज्यादा अनुदान और दैवी अनुग्रह को ग्रहण करने की दृष्टि से निर्धारित की गई थी। विदेश प्रवास से लौटते ही गुरुदेव ने घोषित किया था कि इन सत्रों में भाग लेने वाले साधक अपने आपको ऊर्जा से भरा पाएंगे। दिव्य अनुदानों की वर्षा अनवरत होती रहती है। उसे ग्रहण करने के लिए पात्रता चाहिए। इस पात्रता के लिए साधना का अनुशासन पूरी निष्ठा से निभाना चाहिए। प्राण प्रत्यावर्तन साधना में उसी अनुशासन का अभ्यास होगा।

पांच दिन के सत्र में पहला ध्यान अपने आपको बाल भगवान के रूप में अनुभव करना था। उस अनुभूति से गुजरते हुए कई साधकों ने अनुभव किया कि बाद की ध्यान धारणा में वे अपने चित्र को पहले से ज्यादा निर्मल और शुचितापूर्ण बना कर गए थे। गंदगी से सने शिशु को दूर ही रखते हुए मां जैसे धो पोंछकर, नहा धोकर साफ करती है और फिर गोद में उठाती है, वैसी अनुभूति साधकों को हुई। भाव प्रवण साधकों ने बालमुकुंद या ध्यान करने के बाद अपने आपको कमलपत्र से उठकर गायत्री माता की गोदी में भी हंसते खेलते हुए अनुभव किया। प्रतीति हुई कि मां उन्हें स्नेह से दुलार रही है, लाड़ लड़ा रही है।

इस ध्यान के बाद खेचरी मुद्रा का अभ्यास। जिह्वा को उलटकर तालू से लगाने और ब्रह्मरंध्र से अमृत की बूंदे टपकने का अनुभव। यह अनुभूति भाव जगत में ही होती थी। इसके साथ दिव्य लोकों से उच्चस्तरीय अनुदान बरसने की कल्पना भी की जाती। भाव और कामना को कुछ साधकों ने सपने की तरह भी देखा। जागते हुए देखा गया सपना।

परिवार में मौजूद विघ्न

शिविर में आए साधकों को प्रतिदिन गुरुदेव से भेंट के लिए अलग समय मिलता था। उस समय साधक अकेला ही होता। गुरुदेव से साधना उपासना के बारे में चर्चा की खुली छूट थी। वे अपनी व्यक्तिगत बातें भी कह लेते। उनकी लौकिक और आत्मिक समस्याओं को गुरुदेव बराबर महत्त्व देते हुए सुनते थे। गुजरात से आए एक साधक नरेन भाई ने परामर्श के समय एक विचित्र समस्या रखी। उन्होंने कहा कि आप बताते हैं कि गायत्री मंत्र की उपासना से तुरंत कल्याण होता है। लेकिन मैं तो जब भी जप करने बैठता हूँ मन में क्लेश होता है ? नवरात्रि में साधना का संकल्प लेता हूं लेकिन कोई न कोई बाधा आ जाती है और अनुष्ठान नहीं हो पाता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुरुदेव ने नरेन भाई के पारिवारिक और व्यावसायिक जीवन के बारे में पूछा। वह मुंहजबानी बताने लगे। गुरुदेव ने उनके पारिवारिक जीवन में ही साधना का विघ्न पाया। वह समाधान करते हुए उन्होंने कहा कि तुम पत्नी के साथ सम्मान से पेश आया करो। उसके प्रति क्रूर व्यवहार करने के कारण ही बाधा आती है। नरेन भाई ने बताया कि वह तो पत्नी को कभी हाथ भी नहीं लगाते। शिक्षा दीक्षा की दृष्टि से वह काफी पिछड़ी हुई है और कई बार नुक्सान भी कर देती है। शिक्षित और संस्कारी नहीं होने से घर आने जाने वाले लोग भी परेशान होते हैं। इसलिए कभी कभार डांट जरूर देता हूं।

'मत डांटा करो,' गुरुदेव ने कहा, 'अगर वह शिक्षित और संस्कारी नहीं हो पाई तो इसके लिए तुम भी बराबर जिम्मेदार हो।' अभिभावक की तरह यह सीख देने के बाद गुरुदेव ने कहा, 'पत्नी को पीड़ित करने के बाद तुम्हारी अपनी चेतना में बैठी शक्ति प्राणशक्ति क्षुब्ध होती है। गायत्री साधना में प्राणशक्ति का ही संबल है। वह क्षुब्ध होती है तो उपासना में मन कैसे लगेगा? बाधाएँ आएंगी ही आएंगी।'

नाहरगढ़ से एक साधक राधावल्लभ ने कहा कि उन्हें उपासना के बाद रोष बहुत आता है। वे पंचलक्षी अनुष्ठान करते थे। अर्थात वर्षभर में पांच लाख गायत्री मंत्र का जप और ध्यान। सहस्रांशु अर्थात एक हजार गायत्री मंत्र का प्रतिदिन जप। नवरात्रियों, पूर्णिमा, एकादशी और रविवार के दिनों में तो ज्यादा जप करना होता था। इन दिनों वे इतने कुपित हो जाते थे कि परिवार और पास पड़ोस के बच्चे भी उनके पास नहीं फटकते थे। गुरुदेव ने राधावल्लभ के बारे में बारीकी से पूछा। सब सुनने और साधक के चेहरे को गौर से देखने के बाद वे बोले, तुम्हें ब्रह्मचर्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। यौन शुचिता और संयम के क्षेत्र में ढील छोड़ने के कारण ही स्वभाव में तल्खी आ गई है। उपासना से जो आत्मबल मिलता है, प्राणशक्ति का संचय होता है वह सब भोगवासना में क्षरित हो जाता है।

गुरुदेव का परामर्श था कि गायत्री साधक को अधिक से अधिक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। पूरी तरह संयम से रहा जा सके तो सबसे अच्छा है। नहीं रहा जाए तो यथासंभव तो रहना ही चाहिए।

एक साधक की समस्या थी कि वह संयमी था, सहृदय भी था और समर्पित भी। उसे लग रहा था कि साधना फिर भी सफल नहीं हो रही है। गुरुदेव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ने उसे गायत्री के सिद्ध साधक माधवाचार्य का किस्सा सुनाया। माधवाचार्य ने बारह वर्ष तक निरंतर साधना की थी। फिर भी उन्हें कोई प्रगति होती नहीं दिखाई दे रही थी। निराश होकर उन्होंने गायत्री साधना छोड़ दी और किसी तांत्रिक के कहने पर भैरव की उपासना करने लगे। भैरव की साधना एक वर्ष में ही सफल होने लगी। साधक को उनकी पुकार सुनाई दी।

पुकार सुन कर जब सामने देखा तो कोई नहीं था। फिर आगे पीछे देखा वहां भी किसी दैवीशक्ति के दर्शन नहीं हो रहे थे। पूछा कि आप कौन हैं? उत्तर आया 'तुम्हारा आराध्य भैरव'? पूछा कि सामने क्यों नहीं आते तो जवाब था 'सभी उग्र साधनाएं गायत्री उपासना के सामने हलकी पड़ती हैं। साधक में इतना तेज आ जाता है कि नई साधनाओं के इष्ट सामने नहीं आ पाते।' अब माधवाचार्य के चौंकने की बारी थी। उन्होंने पूछा कि गायत्री साधना की सफलता के प्रमाण अभी तक क्यों नहीं मिल रहे तो भैरव का उत्तर था कि उससे कषाय कल्मष धुले हैं। अब कोई अवरोध नहीं है। गुरुदेव ने संक्षेप में यह घटना सुनाई। इसके बाद उन साधक का संशय मिट गया था।

कुंडलिनी कल्पना

बिंदुयोग त्राटक का अभ्यास करते हुए महाराष्ट्र की योगमाया को अनुभव हुआ कि आंखें बंद करते ही तीव्र प्रकाश दिखाई देने लगता है। सविता देवता सूर्य पिंड के रूप में प्रत्यक्ष दिखाई दे रहे हैं। उन पर एकाग्र होते हुए अनुभव में आया कि मूलाधार चक्र से एक प्रवाह ऊपर उठ रहा है। योगमाया उस अनुभूति से गदगद हुई। स्वयं ही कल्पना करने लगी कि कुंडलिनी जागृत हो रही है। गुरुदेव से भेंट के समय उसने अपने अनुभव के बारे में उत्साह से बताया। उम्मीद कर रही थी कि गुरुदेव उसकी धारणा की पुष्टि करेंगे। हुआ उलटा ही। गुरुदेव ने कहा कि साधना मार्ग में कोई विघ्न उपस्थित हो रहा है। ध्यान करती रहो। विघ्न दूर हो जाएगा।

योगमाया अवाक रह गई। अपनी धारणा की पुष्टि न होती देख उसने खुद ही अपने निष्कर्ष को जिद की तरह पकड़ा। कहा कि यह कुंडलिनी नहीं जाग रही है क्या? गुरुदेव ने उसकी धारणा को कल्पना बताया और कहा कि कुंडलिनी जागरण इतना आसान नहीं है कि दो एक बार ध्यान करने से ही हो जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन दिनों कुछ धर्मगुरु कुंडलिनी जागरण के सामूहिक प्रयोग कर रहे थे। उन प्रयोगों में कई साधक एक साथ बैठते–गुरु के निर्देशों के अनुसार अभ्यास करते और फिर उसी के निर्देश पर उछलने कूदने, नाचने गाने और रोने चिल्लाने लगते थे। व्यायाम और मनोचिकित्सा में विरेचन जैसी इन क्रियाओं को कुंडलिनी जागरण का प्रभाव बताया जाता।

कुछ उपदेशक अपने सत्संग कार्यक्रमों में शक्तिपात से कुंडलिनी जगाने का प्रदर्शन भी करते थे। उनमें पचीस पचास या सौ दो सौ साधक एक जगह बैठ जाते। गुरु भगवान या गुरुमां का प्रवचन होता। सत्संग समय में मौजूद उन गुरु के शिष्य कार्यकर्त्ता ही शोर मचाते कि शक्तिपात हो रहा है। साधकों के मन में जो तरंगे उठ रही हैं उन्हें रोकें नहीं। शक्ति को मुक्त होने दें। वह जैसे भी क्रीड़ा करती है करें। उसके साथ सहयोग करें। इन सत्संगों में भी लोग मर्यादा और अनुशासन तोड़कर नाचने गाने लगते थे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इस तरह के प्रयोगों के बारे में देख सुनकर ही योगमाया समझने लगी थी कि थोड़े से अभ्यास और ध्यान प्रयोगों से कुंडलिनी महाशक्ति को जगाया जा सकता है। गुरुदेव ने कहा कि हाथ की सफाई या सम्मोहन के जरिए देखते देखते अगले में आम की गुठली गाड़ी जाती है। पौधा उगता है और एक डेढ़ फुट के इस पौधे की डाली मेंआम लगाए जा सकते हैं। लेकिन वे सिर्फ देखने के ही होते हैं। असली आम उगाने और लगाने के लिए बरसों की मेहनत चाहिए। बागवान, मालिक और मौसम तीनों का तालमेल बने तभी वास्तविक फल आते हैं। कुंडलिनी जागरण के लिए प्रायोगिक निर्देश तो दिए जा सकते हैं। वे पाठ पढ़ाने की तरह हैं। महाशक्ति का कृपा प्रसाद साधक, गुरु और साधना के उपयुक्त वातावरण का मेल बनने पर ही मिलता है।

अनुशासन से फलित साधना

पांच दिन के इस प्राण प्रत्यावर्तन उपक्रम में साधकों को विचित्र अनुभव हो रहे थे। साधना का कठोर अनुशासन ही अपने आप में एक अनूठा अनुभव था। पूरे समय मौन और अपने एकांत कक्ष तक ही सीमित रहने का निर्देश जहां तक हो सके अपने आपसे भी बातचीत नही करना है। मन में जो विचार उठें उन पर कोई प्रतिक्रिया नहीं करना और उन्हें देखते रहना है। विचारों और भावों में प्रतिक्रिया में उतरना ही अध्यात्म की भाषा में आत्मालाप है। इस अवधि में कोई मानवीय सान्निध्य चाहिए तो वह कक्ष में रखे दर्पण से प्राप्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किया जा सकता है। उसके लिए भी समय निश्चित था। अपने आपको दर्पण में देखते हुए अपने कलेवर में बैठे आत्मदेव को जगाने के लिए किए जाने वाले ध्यान के समय ही यह सान्निध्य मिलता था।

सुबह चार बजे से आरंभ हुई दिनचर्या में केवल एक ही बार अपने कक्ष से बाहर निकलना होता था। स्नान ध्यान के बाद माताजी के सान्निध्य में उष:पान के लिए जाने के अलावा साधना कक्ष में ही पूरा समय व्यतीत होता। उस एक घड़ी में साधकों को अपनी कोई समस्या, व्यथा या कठिनाई बताना होती तो वे माताजी से कह देते थे। यों परिजनों का अनुभव था कि कहने की जरूरत नहीं पड़ती थी–पल प्रतिपल लगता था कि गुरुदेव और माताजी का स्नेह दुलार मिल रहा है। प्रत्यक्ष की भांति वह सहज सुलभ है–ध्यान में, जप में, प्राणायाम के समय सोऽहम साधना में और नादयोग के समय उनके मार्गदर्शक उन्हें निरख परख रहे हैं। इस अनुभूति के बावजूद परिजनों को गुरुदेव से प्रत्यक्ष भेंट के लिए अपनी बारी का इंतजार रहता। पांच दिन के सत्र में वह अवसर एक बार ही आता था।

गुरुदेव के प्रवचन इन दिनों नहीं होते थे। साधना संबंधी निर्देश साधना कक्ष में रहते हुए ही मिल जाते थे। गुरुदेव की वाणी उस समय प्रत्यक्ष सुनाई देती थी। फिर भी उनके प्रत्यक्ष दर्शन और सान्निध्य की लालसा तो रहती ही थी। यह अवसर जब भी मिलता साधक की भाव भूमिका कुछ अलग और विशिष्ट स्तर की हो जाती। चौथा या पाचवां शिविर था। तीसरा दिन। उस दिन कर्नाटक से आए एक साधक स्वयं प्रकाश को लग रहा था कि अपने सौभाग्य सूर्य का उदय होने जा रहा था। अनुभव इसलिए भी था कि स्वयं प्रकाश विदाई सम्मेलन के बाद ही गुरुदेव की साधना परंपरा में आए थे। जून १९७१ के बाद उन्होंने एक क्षेत्रीय कार्यक्रम में हिस्सा लिया था। वहीं से गुरुदेव के विचार संपर्क में आए–स्वाध्याय करते हुए लगा कि अपना इष्ट, उपास्य ही सामने बैठ कर शिक्षण कर रहा है। पिता की तरह दुनियादारी सिखा रहा है, मां की तरह लाड़ दुलार कर रहा है।

नवंबर १९७१ में हैदराबाद के पास गुलबर्गा में एक महायज्ञ हुआ। स्वयं प्रकाश ने तब तक गुरुदेव से अपने तार इतने जोड़ लिए थे कि उसे विधिवत संस्कार का रूप देने का निश्चय कर लिया। महायज्ञ में आए क्षेत्रीय प्रतिनिधियों के संयोजन संचालन में उन्होंने गुरुदीक्षा ले ली। डेढ़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दो महीने बाद ही लगा कि गुरुदेव से प्रत्यक्ष भेंट हो सकती है। यह आशा अपेक्षा ही थी। पता नहीं कब प्रतीती में बदल गई और अपेक्षा अब निश्चित संभावना लगने लगी। तब तक गुरुदेव हिमालय से वापस नहीं आए थे। स्वयं प्रकाश का अंत:करण इस विश्वास से भरता जा रहा था कि उनके दर्शन होंगे और सान्निध्य भी मिलेगा।

कृपया नोट करें कि इस प्रसंग में साधक का नाम बदल दिया गया है। वे नहीं चाहते कि उनकी अनुभूति को उनके नाम से ही सार्वजनिक किया जाए। इसलिए साधक का नाम स्वयं प्रकाश लिखना पड़ा है। उन्होंने बताया कि गुलबर्गा में दीक्षा लेते समय उन्हें गुरुदेव के सान्निध्य की कई बार अनुभूति हुई। वे यज्ञशाला में सूक्ष्म रूप से दिखाई दिए। उनकी उपस्थिति कभी-कभी आकार भी ले लेती। गुरुदेव को स्वयंप्रकाश ने कभी प्रत्यक्ष नहीं देखा था, इसलिए पहचान नहीं पाए। उस आकृति के दो बार दर्शन हुए और तीसरी बार फिर लगा कि गुरुदेव आए हैं। उस समय दीक्षा संस्कार चल रहा था। यज्ञ मंडप में वेदी के पास गुरुदेव का एक चित्र रखा हुआ था। संस्कार का संचालन कर रहे पंडित हृदय नारायण निर्देश दे रहे थे कि दीक्षार्थी दोनों हाथों से मुट्ठी बांधकर अपने अंगूठों के नखभाग को देखें। भावना करें कि वहां सविता देवता व्यक्त हो रहे हैं।

स्वयंप्रकाश ने वैसा ही किया। सविता देव की भावना करते हुए उन्हें लगा कि गुरुदेव सामने खड़े हैं। नजर उठाकर देखा-सामने उज्ज्वल धवल धोती कुर्ता पहने एक प्रौढ़ पुरुष दिखाई दिए। उन्हें देखकर मन ही मन कहा कहां है गुरुदेव। यह तो मथुरा से आए कोई वरिष्ठ कार्यकर्त्ता हैं। उन्होंने आसपास देखा। भारतीय वेशभूषा धारण किए और कार्यकर्त्ता भी यज्ञशाला में व्यवस्था देख रहे थे। सामने उपस्थित आकृति ने अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ाया और स्वयंप्रकाश के सिर पर रख दिया। स्वयंप्रकाश को लगा कि माथे पर चंदन और केसर का तिलक खिंच रहा है। वैसी ही शीतलता और पवित्रता आसपास फैलती जा रही है। इस अनुभूति के बावजूद वे ज्यादा समझ नहीं पा रहे थे। तभी आंतरिक चेतना में एक चौपाई गूंजती सुनाई दी। उस चौपाई के स्वर चित्रकूट के घाट पर चंदन घिसते हुए गोस्वामी तुलसीदास को संबोधित करते हुए थे। चौपाई की दूसरी पंक्ति कह रही थी कि रघुबीर यानी भगवान राम स्वयं अपने हाथों से तुलसीदास को चंदन लगा रहे हैं। इस चौपाई का साहित्यिक अर्थ जो भी हो, स्वयंप्रकाश को लगा कि किसी ने गुरुदेव की प्रत्यक्ष उपस्थिति की घोषणा की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है। घोषणा इसलिए है कि वह अपने इष्ट को पहचान नहीं पा रहे हैं। यह दृश्य बनते-बनते दीक्षा संस्कार की प्रक्रिया पूरी हो गई थी। स्वयं प्रकाश ने सामने खड़ी आकृति के चरण पकड़ लिए और अपना सिर इस तरह पैरों में रख दिया कि भ्रूमध्य अंगूठों से स्पर्श करने लगे। यह प्रणाम स्वीकार करते हुए उस दिव्य आकृति ने अपने दोनों पांव सटा लिए थे। प्रणत साधक ने अनुग्रह माना कि यह गुरुदेव की कृपा है। उनके चरणों से कोई प्रवाह निकल रहा है। प्रकाश की तरंगों की तरह निकल रहा यह प्रवाह स्वयं प्रकाश को सभी दिशाओं से घेरे जा रहा था। लग रहा था कि अपना आत्म ही उस प्रकाश में डूबता उतराता सराबोर होता जा रहा है।

हृदय में दीप जले

दीक्षा के बाद स्वयंप्रकाश की साधना और उपासना निर्बाध चलने लगी थी। गुरुदेव के सान्निध्य में ही कहीं पढ़ा था कि गुरुसत्ता का वरण, उनके सामने आत्म निवेदन साधन मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करता है। लौकिक जीवन में भी प्रगति के द्वार खोलता है। प्रत्यावर्तन शिविरों की घोषणा हुई तो स्वयं प्रकाश ने अपने आपको प्रस्तुत करने में तनिक भी देर नहीं की। मांगी गई जानकारी तुरंत भेज दी। शान्तिकुञ्ज से माताजी का पत्र, शिविर की तिथियां और तब तक की जाने वाली साधनाओं का ब्यौरा भी था। उन साधनाओं को करते हुए शिविर की तिथियों का इंतजार होने लगा।

तिथियां करीब आ गई और सामने ही पहुंच गई तो स्वयं प्रकाश ने कहा कि गुरुदेव के सान्निध्य में कुछ समय बिताने की चिर अभिलाषा पूरी होने की घड़ी भी आ गई। भेंट के लिए तीसरा दिन निश्चित हुआ था। वह दिन और वह क्षण भी आ गया। स्वयं प्रकाश गुरुदेव के सामने उपस्थित था। उनके सामने पहुंचकर चुपचाप खड़ा हो गया। उनकी ओर अपलक देखने लगा। कई क्षण बीत गए स्वयं प्रकाश की नजरे गुरुदेव पर से हट ही नहीं रही थीं। उन्हें निहारे जा रहा था इतनी तन्मयता से कि प्रणाम करना भी भूल गया। गुरुदेव ने उसे तंद्रा से बाहर निकालते हुए कहा 'बैठ जाओ स्वयं प्रकाश। तुम्हें लगता है कि तुमने मुझे पहली बार देखा है लेकिन मैं तुम्हें बहुत पहले से जानता हूं।'

गुरुदेव के बैठ जाने का संकेत करते ही स्वयं प्रकाश ने दंडवत प्रणाम किया और उनके सामने बैठ गया। औपचारिक ढंग से गुरुदेव ने घर, परिवार, व्यवसाय आदि के बारे में कुशलक्षेम पूछा। स्वयंप्रकाश को लगा कि यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
उपयुक्त क्षण है अपने मन की बात कहने के लिए। उसने कुशल प्रश्न पूछते ही तपाक से कहा, गुरुदेव! घर में सब लोग ठीक हैं आप अंतर्यामी हैं। सब जानते हैं। मैं क्या कहूं? जो कहना चाहता हूं वह भी जानते हैं। मैं किसी भी स्थिति में विवाह नहीं करना चाहता। घर परिवार की जिम्मेदारियों से अलग रहकर आपका काम करता हूँ। आपके सान्निध्य में और आपके बताए मार्ग पर चलते हुए। मेरा आदर्श........। स्वयंप्रकाश ने एकाध पल का विराम लिया और इस बीच गुरुदेव ने उसकी बात पूरी की स्वामी विवेकानंद है न तुम्हारे आदर्श। अगर व्यक्ति के तौर पर कहो तो स्वामी विवेकानंद बनना बड़ा आसान है। उन्हीं की तरह बोलने, वस्त्र पहनने और व्यवहार करने लगो। बन जाओगे विवेकानंद। लेकिन उनके आदर्शों को जीना है तो अपनी चेतना को उनके स्तर तक ले जाना होगा।

कहकर गुरुदेव ने स्वयंप्रकाश के सिर पर हाथ रखा। हाथ रखते ही उसके मुंह से एक हलकी सी चीख निकली और उसकी बाह्य चेतना लुप्त होने लगी। शरीर निढाल सा हो गया। उस अवस्था में स्वयं प्रकाश ने देखा कि एक वैष्णव साधु से एक युवक कुछ मांग रहा है। सुनने की कोशिश की तो पता चला कि वह भगवान को पाने का उपाय पूछ रहा है। कह रहा है कि मुझे उनका दर्शन कराइए। साधु ने पूछा परिवार में कौन-कौन हैं? युवक ने कहा माता-पिता, भाई-बहिन सभी कोई हैं। फिर साधु ने पूछा पत्नी बच्चे। युवक ने कहा अभी घर नहीं बसाया है। साधु ने कहा जाओ पहले घर बसाओ। प्रेम, त्याग और सहिष्णुता का अभ्यास नहीं होगा तब तक तुम भगवान के मार्ग पर नहीं चल सकोगे।

स्वयं प्रकाश ने देखा कि सुनकर वह युवक चुपचाप चला गया। हावभाव से लग रहा था कि उसने साधु की बात मान ली है। दृश्य बदलता है। वह युवक परिवार में दिखाई देता है, पत्नी-बच्चों से घिरा हुआ। फिर वह युवक वृद्धावस्था में प्रवेश करता है और उसकी जीवन लीला भी पूरी हो जाती है। ये सारे दृश्य फिल्म की तरह दिखाई देते हैं। वह साधु जिसने युवक को दिशा दी थी अब भी उसी अवस्था में काशी के गंगाघाट पर स्नान-ध्यान करते दिखाई दे रहे हैं। फिर दृश्य बदलता है और कोई युवा संन्यासी दिखाई देता है, इस दृश्य के बाद स्वयं प्रकाश आंखे खोलता है अरे यह तो स्वामी विवेकानंद हैं, योद्धा संन्यासी स्वामी विवेकानंद। कहते हुए वह गुरुदेव की ओर देखकर पूछता है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
और वे वृद्ध संन्यासी कौन थे गुरुदेव। गुरुदेव ने कुछ नहीं कहा। स्वयं प्रकाश अपने आप बोला स्वामी रामानन्द रहे होंगे। उनके बारे में जैसा सुना पढ़ा है वैसे ही लग रहे थे। उसने फिर गुरुदेव की ओर देखा जैसे अपने निष्कर्ष की पुष्टि चाह रहा हो। गुरुदेव ने इस बार भी कुछ नहीं कहा।

स्वयं प्रकाश अपनी सहज अवस्था में आए और चुप हो गए। उन्हें लगा कि भीतर के सब द्वन्द्व मिट गए हैं। यह भी लगा कि हो न हो, वह युवक ही अगले किसी जन्म में विवेकानंद के स्तर तक पहुंचा हो। जो दृश्य दिखाई दिए वे स्वामी विवेकानन्द के पूर्वजन्म की यात्राओं में से एक वृत्तांत भी तो हो सकता है। उसे अपने वैयक्तिक जीवन के बारे में गुरुदेव से कुछ पूछने या जिज्ञासा करने की आवश्यकता नहीं रह गई थी। वह गुरुदेव के पास कुछ समय तक चुपचाप बैठा रहा। कुछ बोला नहीं। गुरुदेव ने भी कुछ नहीं कहा। स्वयं प्रकाश ने अपनी डायरी में लिखा कि सन्निधि के उन क्षणों में जैसे मैं गुरुदेव के स्पर्श को आत्मसात कर रहा था। उनकी उपस्थिति रोम-रोम में व्याप्त हो रही थी और मेरा 'स्व' तिरोहित होता जा रहा था। एक स्थिति ऐसी आई कि लगने लगा अब संवाद पूरा हो गया है। न गुरुदेव ने कुछ कहा और न ही मैंने। मुझे जानने समझने के लिए कुछ आवश्यक भी नहीं लगा। चुपचाप उठा। गुरुदेव को प्रणाम किया और अपने कक्ष में वापस लौट आया।

प्राण प्रत्यावर्तन साधना में आए साधकों को अलग-अलग तरह के अनुभव हो रहे थे। अनुभूतियां साधक के अपने आंतरिक उत्साह और आकांक्षा अभीप्सा की उत्कटता के अनुसार थीं, ये अनुभूतियां सत्र में अधिक और बार-बार होती थीं। सामान्य दिनों में स्वास्थ्य और रोग की परीक्षा कठिन होती है। उनके लक्षण चिकित्सक के सामने ही भलीभांति व्यक्त होते हैं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस गुरु की एक भूमिका वैद्य के रूप में भी बताते थे जिसकी उपस्थिति में रोग अधिक मुखर हो उठता था। रोग नहीं होता तो स्वास्थ्य भी उसी तीव्रता से प्रकट होता है।

चौबीस सिद्धों के सुरक्षित शरीर

अल्मोड़ा से आए एक साधक दयाशंकर ने गुरुदेव से विचित्र सवाल किया था। दरअसल वह सवाल नहीं, एक स्थिति का उल्लेख था। यह स्थिति अल्मोड़ा के पास एक वन्य क्षेत्र में हुई सामूहिक साधना से बनी थी। साधना बौद्ध लामा जिग्मे दोरजी के सान्निध्य में हुई थी। साधना के दौरान उद्‌बोधन के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
समय दोरजी ने कहा था कि हिमालय क्षेत्र की एक गुफा में चौबीस सिद्धों के शरीर सुरक्षित हैं। ये सिद्ध पिछले ढाई हजार वर्ष में विभिन्न अवसरों पर हुए हैं और सभी ने निर्वाण की अवस्था में शरीर छोड़ा है। उन सिद्धों के कई कई शिष्य भी थे। शिष्यों ने अपनी मार्गदर्शक सत्ता के निर्देश पर ही उन शरीरों को संभाल कर रखा। उन गुरुजनों ने शरीर संभालकर रखने का कोई उद्देश्य नहीं बताया था। अलग अलग तरह से यही कहा था कि इनका क्षरण नहीं होने देना है। गुह्य विद्या और विधि से तैयार किए लेपों का प्रयोग कर शरीरों की रक्षा की गई थी।

मिश्र में जिस तरह ममियों की रक्षा की गई थी, उनमें दिवंगत शरीर रखे गए थे, उससे भी ज्यादा जटिल विधि इन शरीरों की रक्षा के लिए अपनाई गई थी। क्योंकि ममियों के शरीर का उपचार तो एक ही बार किया गया था, सिद्धों के शरीर का ध्यान तो निरंतर रखना था। दोरजी के सान्निध्य में हुए शिविर में उन समेत आठ साधक ही शामिल हुए थे और दयाशंकर ने जैसा बताया उसके अनुसार चौबीस सिद्धों के काय कलेवरों पर भविष्य में कोई प्रयोग किए जाने वाले हैं।

दोरजी ने इस विवरण में एक महत्त्वपूर्ण बात कही थी। दयाशंकर उस का मर्म समझने के लिए गुरुदेव से यह वृत्तांत सुना रहा था। उन चौबीस शरीरों के बारे में दोरजी का कहना था कि सात शरीर एक ही साधना परंपरा से आए हैं। यह परंपरा अपने इष्ट का ध्यान सूर्य के रूप में करती रही है। सूर्य की शक्ति को वह मां के रूप में देखती है। उस परंपरा का एक सिद्ध अब भी जीवित है और पिछले सात सिद्धों की सम्मिलित शक्ति लेकर काम कर रहा है। दोरजी ने उस सिद्ध का जो स्वरूप बताया था, वह गुरुदेव से मिलता जुलता था। इन दिनों काम कर रहे सिद्ध का नाम भी उसने श्री से आरंभ होता हुआ कहा था।

बौद्ध लामा बस्ती से दूर ही रहता था। लोगों से मिलता जुलता भी कम था। उसका जन संपर्क लगभग नहीं के बराबर था। दयाशंकर खोजी किस्म का लगनशील साधक था, इसलिए वह अपनी तरह के कुछ और साथियों के साथ दोरजी के सान्निध्य में बैठ सका। उसने बताया कि दोरजी से इस युग के सक्रिय सिद्ध पुरुष के बारे में बहुत पूछा लेकिन वह ज्यादा कुछ नहीं बोला। दयाशंकर ने गुरुदेव से जिज्ञासा व्यक्त की कि वह सिद्ध योगी आप तो नहीं हैं।

गुरुदेव ने इस प्रश्न को महत्त्व नहीं दिया। उन्होंने कहा कि तुम यहाँ अध्यात्म की ऊंची कक्षा का अभ्यास करने आए हो। उसी पर ध्यान देना चाहिए। इस तरह की जिज्ञासाओं में नहीं उलझना चाहिए। दयाशंकर ने थोड़ी जिद की तो गुरुदेव ने कहा कि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसके लिए दोरजी ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रवास पर एक विशेष मुद्रा में युगऋषि

देखो भाई सभी का ध्यान रखना,
सभी मेरे अपने हैं। कोई छूट न जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मौन चिन्तक, भविष्य की योजना बनाते आचार्य श्री

आँधी हो या पानी, यह प्रवास कहीं रुकेगा नहीं।
चलते ही जाना है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इशारा किया है तो तुम्हें क्या फर्क पड़ता है? और अगर मैं वही व्यक्ति हूँ तो उससे तुम्हारी प्रगति ज्यादा होने लगेगी क्या?

दयाशंकर चुप रह गया था। कुछ क्षण बाद वह फिर बोला, 'दोरजी ने हिमालय की गुफाओं में चौबीस काय कलेवर बिना प्राण के सुरक्षित रखने की बात कही है? वह कहाँ तक सही है।' दयाशंकर के कौतूहल पर गुरुदेव मुसकराए। फिर बोले 'हिमालय अध्यात्म की एक विराट प्रयोग भूमि रहा है। वहाँ हजारों साल से तरह तरह के प्रयोग होते रहे हैं। जिन शरीरों की चर्चा दोरजी ने की है, वे अतीत में हो चुके महान साधकों के हैं। साधना करते करते शरीर के परमाणु भी चैतन्य हो उठते हैं। प्राण निकल जाने के बाद भी वे परमाणु जीवंत ही रहते हैं। आगे कभी उनका कोई उपयोग हो सके इसके लिए उन शरीरों को सुरक्षित रखा गया होगा। तुम्हें अभी इस ऊहापोह में नहीं जाना चाहिए।'

साधकों ने गुरुदेव से इस तरह के और भी प्रसंग कहे। उनमें कई रहस्यों से भरे हुए थे तो कई नितांत सामान्य किस्म के। गुरुदेव ने उनका समाधान तो किया लेकिन सावधान रहने के लिए कहा कि रहस्यों में उलझ कर नहीं रह जाना है। बहुत सी रहस्यमयी अनुभूतियां अपनी आंतरिक स्थिति की सूचना देती हैं। अगर उन्हीं में रस लेते रहे तो साधक की प्रगति रुक सकती है। शिविर आत्मिक प्रगति के लिए है इसलिए यहां अपनी अनुभूतियां कह कर फूलों और मधुर फलों के मोह से मुक्त हो जाना चाहिए।

भाव भरी अध्यात्म सेवा

शान्तिकुंज में जिन दिनों प्रत्यावर्तन सत्र चल रहे थे उन दिनों देश में उथल पुथल मची थी। गुरुदेव के हिमालय से लौटने वाले वर्ष में देश आजादी की रजत जयंती मना रहा था। देश के भीतर विभिन्न स्तर के दबाव पैदा हो रहे थे। इन दबावों के चलते साधारण बीमा का राष्ट्रीयकरण हुआ, उसके बाद कोयला उद्योग का राष्ट्रीयकरण हुआ। राष्ट्रीयकरण की हिमायती शक्तियां दूसरे उद्योगों को भी सरकारी क्षेत्र में लेने के लिए मचलने लगीं किन्तु सरकार इससे आगे नहीं बढ़ी। नतीजतन वामपंथी ताकतें भी सरकार से नाराज सी हो गईं। उद्योगपति पहले ही असंतुष्ट थे। उधर १९७३ में पूरी दुनिया में भयंकर तेल संकट उत्पन्न हुआ। विश्व बाजार में तेल की कीमतें चार गुना बढ़ गईं। भारत भी उससे अछूता नहीं रहा। यहाँ भी खाद और पैट्रोलियम उत्पादों की कीमतें आसमान छूने लगीं और आर्थिक मंदी गहराती गईं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कानून और व्यवस्था की हालत लगातार खराब होती जा रही थी। हड़तालें, छात्र प्रदर्शन और जुलूस अक्सर हिंसक हो उठते थे। कई कॉलेज और विश्वविद्यालय लंबे समय के लिए बंद कर दिए गए। मई १९७३ में उत्तर प्रदेश में प्रांतीय सशस्त्र सेना (पीएसी) ने बगावत कर दी और जब सेना को नियंत्रण पाने के लिए भेजा गया तो उसके साथ मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ में पैंतीस सिपाही और सैनिक मारे गए। गिरती हुई आर्थिक, राजनैतिक और कानून व्यवस्था की स्थिति से निपटने के लिए दृढ़ और स्पष्ट नेतृत्व की आवश्यकता थी पर ऐसा होता कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। कई अन्य पहलुओं के सक्रिय हो जाने से राजनीतिक स्थिति भी बदतर होती जा रही थी।

स्थिति का यह सांकेतिक आंकलन है। वास्तविकता समझनी हो तो उस समय के समाचार पत्र और पत्रिकाओं के पन्ने पलटने चाहिए। अस्थिरता और अनिश्चय का वह दौर किसी भी राष्ट्र, राज्य में लोकतंत्र की जड़ें खोद देने के लिए काफी था। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी जैसे देशों में तो अखबार यह भविष्यवाणियां भी करने लगे थे कि भारत में कुछ ही दिनों के भीतर सैनिक शासन आने वाला है या तानाशाही लोकतंत्र को खत्म कर देगी। भारत में लोकतंत्र अब तक की हालत में है। "न्यूयार्क टाइम्स" और "वाशिंगटन पोस्ट" जैसे अमेरिकी अखबार भारत की स्थिति पर व्यंग्य चित्र छापने लगे थे। उनमें भारत को एक खंडहर देश के रूप में चित्रित किया जाता था।

इन विषम स्थितियों से चिंतित सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्त्ता जगह जगह गोष्ठी, सम्मेलन, समितियां आयोजित करने लगे थे। इन आयोजनों का उद्देश्य कोई मार्ग तलाशना था। इस तरह के आयोजनों में विचार विमर्श ही ज्यादा होता था, कार्यक्रम भी बनते। लेकिन इन सबसे कोई समाधान नहीं निकल रहा था। पवनार आश्रम (महाराष्ट्र) में विनोबा भावे के पास तक एक उच्चस्तरीय गोष्ठी का सुझाव लेकर अमृत पटेल नामक सामाजिक कार्यकर्त्ता पहुंचे। उन्होंने सुझाव रखा तो बाबा ने तपाक से कहा जब घर में आग लगी हो तो उसे बुझाने के लिए बैठकर विचार नहीं किया जाता। सब चिंताए छोड़कर सक्रिय होना पड़ता है।

अमृत पटेल ने पूछा कि सक्रिय होने के लिए क्या करें? दो ही रास्ते हैं कि या तो आंदोलन करें अथवा समय बदलने का इंतजार करें। ईश्वरीय ही शायद स्थितियों को संभालें। विनोबा इस प्रश्न के उत्तर में चुप रह गए। उन दिनों वैसे भी बाबा ज्यादा कुछ बोलते नहीं थे। कहीं आते जाते भी नहीं थे। पवनार आश्रम में ही उन्होंने क्षेत्र संन्यास ले लिया था। इससे पहले विनोबा ने आसेतु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
हिमालय पूरे भारत की पदयात्रा कर ली थी और लाखों एकड़ जमीन भूदान करा लिया था। यह जमीन भूमिहीन किसानों में बांटने के लिए थी। भूदान यज्ञ से निपटकर बाबा तब वर्धा में अपने कार्यों और गतिविधियों को आध्यात्मिक आयाम दे रहे थे। अमृत पटेल भी भूदान आंदोलन में सक्रिय रहे थे।

बाबा को चुप देखकर उन्होंने दोबारा प्रश्न नहीं किया। वे जानते थे कि विनोबा से उत्तर पाने के लिए एक बार पूछना ही काफी है। अगर उत्तर देने जैसा कुछ हुआ तो बाबा अभी या कुछ क्षण चुप रहकर कह देंगे। बाबा यकायक उठे और ताली बजाकर खुशी जताने लगे। फिर रुक कर उन्होंने कहा ग्वालबाल अपना काम करेंगे और भगवान अपना काम करेंगे। करेंगे नहीं, कर रहे हैं। उत्तर दिशा में गंगा के तट पर दोनों तरफ से प्रयास चल रहे हैं।

अमृत पटेल ने समझ लिया कि विनोबा का संकेत शान्तिकुञ्ज की ओर है। कुछ समय पहले ही वे शान्तिकुञ्ज होकर आए थे। उस समय प्राण प्रत्यावर्तन शिविर चल रहे थे। गुरुदेव से तो भेंट नहीं हो सकी थी पर उनके मिशन और कार्यक्रमों ने उन्हें प्रभावित किया था। लौटते हुए वे यह टिप्पणी करते हुए गए थे कि अवसर मिला तो गुरुदेव के मार्गदर्शन में काम करेंगे। अमृत पटेल को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि विनोबा भावे शान्तिकुञ्ज से भविष्य के प्रति आशा कर रहे हैं। फिर वे स्वगत ही बोले, जो काम भौतिक स्तर पर नहीं हो पाता वह आध्यत्मिक उपायों से संभव हो जाता है। कोई सोच सकता था कि वियतनाम में लगी आग बुझ जाएगी। पर बुझ गई ना।

याद रहे उसी वर्ष १९७३ में अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन ने वियतनाम में युद्ध विराम की घोषणा की थी। करीब पैंतीस साल से चले आ रहे युद्ध के अंत की संभावना बनी थी। इस युद्ध में पंद्रह लाख से ज्यादा सैनिक और नागरिक मारे गए थे। हताहतों को मिला जुलाकर हिसाब लगाए तो संख्या करोड़ों तक पहुँचेगी। विनोबा ने कहा कि चार-पांच साल पहले जब यह युद्ध शिखर पर था तो इन्हीं गृहस्थ ऋषि ने कहा था कि निकट भविष्य में पुराना विचार (पूंजीवाद) कमजोर होने लगेगा। फिर उसके मुकाबले खड़ी व्यवस्था चरमराएगी। न पूंजीवाद रहेगा और न साम्यवाद। मनुष्यता का भविष्य जिसमें सुरक्षित और उज्ज्वल है उसे सींचने का प्रयोग उधर हो रहा है। बाबा ने उत्तर दिशा की ओर हाथ उठाते हुए कहा।

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सात

कुंभ पर्व का रहस्य

१९७४ में हरिद्वार में कुंभ पर्व आया। इस पर्व की अंतर्कथा प्रायः सभी जानते हैं। देवताओं और दानवों द्वारा मिलकर सागर मथने और उसमें से एक एक कर चौदह रत्न निकलने, असंख्य विभूतियाँ प्रकट होने तथा आपदाएं आने के प्रसंग प्रसिद्ध हैं। संसार में व्याप्त हर अच्छाई और बुराई उस मंथन में निकल कर आई। हलाहल निकलने और उसके दाहक ताप से दुनिया के त्रस्त हो उठने की कथा भी विख्यात है। भगवान शंकर द्वारा उस विष को पी लेने और कंठ में धारण करने की कथा भी विभिन्न धर्मकथाओं आयोजनों में कही सुनी जाती है। हलाहल को कंठ में धारण कर लेने पर भगवान शंकर के नीलकंठ कहे जाने के बाद अंत में अमृत प्रकट हुआ। भगवान धन्वंतरी उस मंथन में अमृत से भरा घट हाथ में लेकर प्रकट हुए थे। असुरों ने वह घट देखते ही झपट लिया और पीकर अमर हो जाने की इच्छा से भागे। वे देवताओं को उनका भाग नहीं देना चाहते थे। अमृत घट पर अपना ही वर्चस्व रखना चाहते थे। और इस तरह देवासुर संग्राम की भूमिका बनी।

आसुरी शक्तियों की इच्छा पूरी नहीं होने देने के लिए देवताओं ने उनका पीछा किया। इस भाग दौड़ और छीन झपट में अमृत से भरा घट चार जगह रखा गया। विश्वास किया जाता है कि उन चारों स्थानों पर अमृत की कुछ बूंदें झलक गई थीं। जिस क्षण मुहूर्त में ये बूंदें छलकीं, ग्रह नक्षत्रों के वे योग बारह वर्ष में एक बार आते हैं। उज्जैन, नासिक, प्रयाग और हरिद्वार में उन्हीं योगों में कुंभ पर्व होते हैं, पौराणिक मान्यता है कि देव और दानवों के संघर्ष के दौरान इन चारों स्थानों पर ही अमृत कुंभ रखा गया था। लोगों का विश्वास है कि ग्रह नक्षत्रों के उन विशिष्ट योगों में चारों स्थानों पर अमृत जैसी विशेषताएं विकसित हो जाती हैं। अमर कर देने वाला कोई रसायन वहां प्रकट होता हो या न होता हो पर उस समय जो वातावरण बनता है, वह मनुष्य को अमृतपुत्र होने के बोध से अवश्य भर देता है। साधु संतों और धार्मिक विभूतियों के इकट्ठे होने के अलावा उस अवसर पर कुछ गूढ़ और गुह्य आध्यात्मिक उपचार भी संपन्न होते हैं। ये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपचार सिद्ध स्तर की महान आत्माओं द्वारा किए जाते हैं। इनका लाभ आगंतुक तीर्थयात्रियों को मिलता है।

धर्मभावना के प्रचार के लिए यह अवसर बहुत अनुकूल रहता है। पर्व की पूरी अवधि में देश के कोने कोने से आए साधु संत और विद्वान इकट्ठे होते हैं। पर्व की अवधि कम से कम महीना भर होती है। स्नान पर्व इससे लंबे समय तक भी चलते रह सकते हैं। गुरुदेव ने ऐसे किसी भी पर्व स्नान में शिविर आदि लगाकर कभी भाग नहीं लिया। प्रयाग कुंभ एक अपवाद है। लेकिन वहां भी गायत्री यज्ञ का आयोजन भर हुआ था। व्यवस्था वहां के साधकों ने की थी। उस आयोजन में भाग लेते हुए एक साधक दंपत्ति के प्राण चले गए थे। गुरुदेव निजी रूप से उसी समय किसी कुंभ आयोजन में गए थे।

१९७४ में तो गुरुदेव स्वयं हरिद्वार में थे ही। साधकों की इच्छा थी कि इस बार कुंभ में गायत्री परिवार और उपासना का प्रचार कर लिया जाए। कुछ विशेष कार्यक्रम चलाए जाएं। साधना शिविर, गोष्ठी और जन संपर्क जैसे प्रयास तो किए ही जा सकते हैं। उसके लिए पंतद्वीप पर छोटा मोटा शिविर भी लगाएं। गुरुदेव वहां चलें तो ठीक और नहीं चलें तो संस्थान ही वह आयोजन कर ले। कुछ कार्यकर्त्ता शिविर में पूरे समय बने रहें और धर्म भावना का प्रचार करें। कार्यकर्त्ताओं ने गुरुदेव से अपने मन की बात कही। गुरुदेव ने उस विचार को ज्यादा महत्त्व नहीं दिया। सिर्फ इतना ही कहा कि शान्तिकुंज में रहते हुए ही जितना किया जा सके, करना चाहिए। कुंभ में झंडा गाड़ कर रहने की जरूरत नहीं है। सुनकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साह शिथिल पड़ने लगा।

गुरुदेव ने कहा, 'दरअसल यह समय कुंभ पर्व जैसे अवसरों में उपस्थिति दर्ज कराने का नहीं है। आगे ऐसे कई मौके होंगे जब तुम लोग स्वयं इस तरह के आयोजनों की धुरी बनोगे। गतिविधियों की कई धाराएं तुम्हारे ईर्दगिर्द घूमेंगी। तब के लिए तुम्हें अपने आपको अभी से तैयार करना चाहिए। वह तैयारी आंतरिक ही होनी चाहिए।'

गुरुदेव का आश्वासन सुनकर कार्यकर्त्ता खिल उठे थे। उन्होंने यह भी कहा था कि शिविर आदि लगा कर कुंभ में भाग नहीं लेने का अर्थ यह नहीं है कि इसका महत्त्व कम है या कुंभ की उपयोगिता नहीं है। ये आयोजन भारतीय धर्म और संस्कृति को एकता के सूत्र में बांधने वाले प्रमुख आधार हैं। कुंभ पर्व में भारत के कोने कोने से लोग आते हैं। उस तीर्थ के प्रति समान श्रद्धा संवेदना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
अनुभव करते और धर्म भावना प्रखर बनाते हुए वापस लौटते हैं। साधकों ने पूछा कि इस अवसर पर स्वयं जाया जा सकता है या नहीं। गायत्री परिवार संगठन के रूप में भले ही सम्मिलित न हों, उसके सदस्य यात्री बनकर तो भाग ले सकते हैं। गुरुदेव ने कहा, 'उस तरह तो जाया ही जा सकता है। बल्कि जाना चाहिए। परिव्राजक के रूप में जाने से साधकों को धर्म जगत के नए नए अनुभव होंगे।'

अनुमति मिलने के बाद कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढ़ा। वे पर्व स्नान के दिनों में जाने लगे और स्नान के अलावा अवसरों पर विभिन्न साधु संतों के यहां हो रहे शिविरों में भी जाने लगे। कुछ कार्यकर्त्ताओं का जत्था एक बार करपात्रीजी के शिविर में गया। करपात्रीजी का सनातन धर्म जगत में बड़ा नाम था। उनके गुरु स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती बदरीनाथ मठ के उद्धारकर्ता समझे जाते हैं। शंकराचार्य के चार प्रसिद्ध मठों में एक बदरीनाथ में भी है। यह मठ डेढ़-दो सौ साल से उजाड़ पड़ा था। स्वामी ब्रह्मानंद ने उसे फिर से बसाया और वहां की विच्छिन्न हो गई आचार्य परंपरा को पुनर्जीवित किया।

उन स्वामी ब्रह्मानंद ने करपात्रीजी को अपना उत्तराधिकारी चुना था। इस निर्णय के बारे में शिष्य को बताया ही था कि करपात्री जी ने विनम्र भाव से क्षमा मांग ली। कहा कि शंकराचार्य मठ में पीठासीन होने पर उस पद की मर्यादाएं और अनुशासन नियत लक्ष्य में बाधक बनेंगे। मठ की मर्यादाएं निभाएंगे तो नियत धर्मकार्य पूरा नहीं हो सकेगा। उदाहरण के लिए जो कार्य चुना है, उसे पूरा करने के लिए पूरे देश में भ्रमण करना आवश्यक है। शांकर मठ की मर्यादाएं निभाते हुए पूरे देश में निर्बाध भ्रमण नहीं हो सकेगा। शंकराचार्य अद्वैत मत का ही प्रतिपादन करते हैं। करपात्रीजी ने अपने लिए जो मार्ग चुना था उसमें सभी साधना परंपराओं का शिक्षण देना था। शांकर मठों के लिए निर्धारित विधि विधान 'महानुशासन' के अनुसार आचार्य को अपनी यात्रा में वैभव का पूरा प्रदर्शन करते हुए घूमना चाहिए। करपात्री जी ने हाथ में ही भोजन करने और दो जोड़ी वस्त्रों से ज्यादा नहीं रखने का व्रत लिया था। इसी तरह की अन्य मर्यादाओं के कारण करपात्रीजी ने शंकराचार्य बनने से मना कर दिया था।

अभिनव गंगावतरण

करपात्रीजी श्रीविद्या के अनन्य उपासक थे। धर्म अध्यात्म और शास्त्रों के प्रचार के साथ उन्होंने राजनीति में भी दखल दिया था। गोरक्षा आंदोलन के अलावा उन्होंने धर्म संस्थानों की मर्यादा के लिए भी आंदोलन किए थे। उनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
मर्यादाओं से कई विद्वानों को मतभेद था पर उनकी निष्ठा पर कभी किसी ने संदेह नहीं किया। गुरुदेव ने गायत्री और यज्ञ में सबके अधिकार की घोषणा की और जाति, वर्ग, वर्ण, लिंगभेद के बिना हर किसी को गायत्री की उपासना करना सिखाया। करपात्रीजी इस के लिए कई अवसरों पर गुरुदेव की आलोचना कर चुके थे। प्रयाग और वाराणसी में कुछ अवसरों पर उन्होंने गायत्री परिवार के कार्यक्रमों की तुलना उन्होंने बुद्ध अवतार से भी की थी। बुद्ध अवतार यानी अनधिकारी व्यक्तियों को भरमाने, भटकाने का अभियान। पौराणिक उल्लेखों में बुद्ध को जहां भगवान विष्णु का नवां अवतार बताया गया है, वहां यह भी कहा गया है कि वेदों और यज्ञों को शूद्रों से बचाने के लिए भगवान अपनी माया का उपयोग कर रहे हैं। करपात्रीजी ने गुरुदेव के संबंध में भी कभी कहा था कि वे ईश्वरीय इच्छा से अनधिकारी लोगों को वेद विद्या से विरत कर रहे हैं, उन्हें उपासना का मिथ्या मार्ग बता रहे हैं।

करपात्रीजी का यह अभियान १९५८ में हुए गायत्री महायज्ञ तक बहुत मुखर था। इसके बाद वे गोरक्षा और रामराज्य जैसे आंदोलनों में जुट गए। गायत्री परिवार पर उनकी खुली टिप्पणी कभी सुनाई नहीं दी। हरिद्वार कुंभ में वे सप्त सरोवर क्षेत्र के भूमा निकेतन आश्रम में आकर ठहरे थे। वहां 'श्रीविद्या' का कोई अनुष्ठान कर रहे थे। कई विद्वानों ने उनके आसपास अपना निवास बना रखा था। वे विद्वान स्वामी जी के प्रवचन और श्रीविद्या पर उनकी चर्चा सुनने के लिए ही ठहरे थे। पंडित दयाकृष्ण जोशी, माधवकांत, अरुण शर्मा, राजेन्द्र कमल, पंडित द्वारका दास शास्त्री, ऋतुराज शर्मा आदि विद्वान कुंभ में अपना शिविर छोड़ कर स्वामी जी से चर्चा का अवसर ढूंढा करते थे।

दिल्ली से 'टाइम्स आफ इंडिया' पत्र समूह के एक पत्रकार हरिदत्त शर्मा घूमते फिरते उस दिन करपात्री जी के पास भी पहुँचे। उन्होंने अपना परिचय दिया तो स्वामीजी ने कहा कि यह धर्म अवसर है। धर्म को राजनीति से अलग नहीं किया जा सकता पर इस समय केवल धर्म की ही चर्चा करें। राजनीति पर किसी और समय बात होगी। स्वामी जी का वह गंगावास श्रीविद्या के लिए ही समर्पित था। इसलिए धर्म अध्यात्म के अलावा अन्य विषय पर पाबंदी स्वाभाविक ही थी। हरिदत्त शर्मा ने स्वामी जी से कहा कि आप स्वयं धर्मपुरुष हैं। राजनीति को धर्मसम्मत बनाने के लिए आपने रामराज्य परिषद का गठन किया है। यहां के शिविर में राजनैतिक चर्चा पर प्रतिबंध क्या उपयुक्त है?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वामी जी ने कहा कि प्रतिबंध कोई कलिवर्ज्य प्रकरण की तरह नहीं है। राजनीति के सिद्धांत पक्ष पर चर्चा किसी भी समय की जा सकती है, यहां सिर्फ धार्मिक चर्चा ही। उन पत्रकार ने विषय को यहीं विराम दिया और पूछा कि इस समय कौन सा धार्मिक आंदोलन है, जो समाज का मंथन करने में लगा हुआ है और वह मंथन बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के परिणाम लाएगा।

करपात्रीजी कुछ क्षण चुप रहे। फिर वे बोले, 'पंडित श्रीराम शर्मा का गायत्री परिवार आंदोलन। मैं उनकी कार्यपद्धति और विचारधारा से सहमत नहीं हूँ, पर उनका प्रयास अधिक से अधिक लोगों के कल्याण के लिए है।' इस अभिव्यक्ति के समय कुछ ऐसे विद्वान भी वहां मौजूद थे जिन्होंने करपात्रीजी को गायत्री परिवार की मुखर आलोचना करते हुए देखा सुना था। स्वामी जी का यह अभिमत सुनकर वे चौंक उठे और की तरफ हैरत से देखने लगे। स्वामी जी ने उन विद्वानों के चेहरे देखे और कहा, 'मैं आज भी सहमत नहीं हूं। नैयायिक (न्याय दर्शन के विद्वान) और सांख्यों (सांख्य दर्शन के विद्वान) में आज भी विवाद है लेकिन दोनों वैदिक मार्ग के ही प्रतिनिधि हैं। श्रीराम से मेरा विरोध द्वेष के कारण नहीं है। वह विचारगत है।' कहते कहते स्वामी जी कुछ रुके और फिर बोले, 'इस विषय को विस्तार देने से कोई लाभ नहीं है। संक्षेप में यों समझें कि भागीरथ जब गंगा को पृथ्वी पर लाने लगे तो देवों और कई ऋषियों ने इसकी आलोचना की थी। उनका अपना मत था। पर गंगा जब पृथ्वी पर आई तो उससे करोड़ों लोगों का कल्याण ही हुआ।

वहां उपस्थित विद्वन्मंडली को करपात्रीजी की यह उक्ति अप्रिय लगी थी। स्वामी जी का साक्षात्कार लेने आए हरिदत्त शर्मा ने दूसरे विषयों पर भी सवाल किए। स्वामीजी ने उनका यथोचित उत्तर दिया और एक प्रसंग में यह भी कहा कि अब संन्यास की अपेक्षा वानप्रस्थ आश्रम की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। समाज में वानप्रस्थ सिद्ध हो जाएगा तो संन्यास की सार्थकता भी सिद्ध होने लगेगी। अभी संन्यास कृष्णपक्ष की अष्टमी के चंद्रमा की भांति है।

स्नान पर विवाद

१३ अप्रैल को वैसाखी का दिन। हरिद्वार कुंभ का प्रमुख स्नान पर्व। हर की पौड़ी पर दर्शनार्थियों का हुजूम उमड़ रहा था। वहां से सप्त सरोवर और उसके आगे तक तथा इधर दशाश्वमेध घाट से दक्ष प्रजापति के मंदिर तक गंगा का किनारा भी स्नानार्थियों से भरा हुआ था। साधु संतों और अखाड़ों का स्नान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्राह्ममुहूर्त में था। प्रमुख अखाड़े, उनके निशान और आश्रमों के महंत स्नान कर चुके थे। सुबह पहले स्नान के सवाल पर थोड़ी सी झड़प हुई थी। महानिर्वाणी अखाड़े के साधुओं ने दशनामी साधुओं से पहले स्नान करना चाहा। दशनामी साधु पहले जाना चाहते थे। यों कुंभ से पहले ही अखाड़ा परिषद ने सभी अखाड़ों के स्नान का क्रम तय कर दिया था, फिर भी कुछ विवाद हुआ ही। पुलिस और सामाजिक संगठनों के बीच बचाव करने पर संघर्ष की स्थिति टली।

यह विवाद चल ही रहा था कि काशी मठ के शंकराचार्य स्वामी विद्यानंद गिरि अपने दल बल के साथ हर की पौड़ी की ओर चले। नियम है कि साधु संन्यासियों के स्नान के समय सूचीबद्ध संन्यासियों के अलावा कोई और स्नान नहीं कर सकता। काशी के शंकराचार्य का नाम सूचीबद्ध संन्यासियों में नहीं था। उन्हें दूसरे संन्यासियों ने रोका। मठ के साधुओं ने तर्क दिया कि शंकराचार्य की परंपरा अत्यंत पुरानी है। उनका नाम संन्यासियों की सूची में होना चाहिए था। सूची में नहीं है तो उसे सम्मिलित करना चाहिए। विद्यानंद गिरि को रोक रहे साधुओं के दल में से एक ने कहा कि काशी मठ की मान्यता नहीं है। प्रतिपक्ष ने कहा वह बदरीनाथ मठ का अवांतर स्थान है। बद्रिकाश्रम जब उजड़ गया था तो वहां के आचार्य यहीं से धर्मानुशासन चलाते थे।

साधुओं ने कहा यह शास्त्रार्थ का विषय है। विद्वज्जन इस बारें में कोई व्यवस्था दे देंगे तो काशी वालों को साधुओं की जमात में आने दिया जाएगा। विवाद कहीं खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था। इस बीच मठ के एक संन्यासी ने दौड़कर गंगा में छलांग लगा दी। दूसरे संन्यासी चिल्ला उठे कि हो गया स्नान। विद्वत्परिषद अब जो चाहे व्यवस्था दे। अगले बारह वर्ष के लिए तो निपटारा हो ही गया। उधर दूसरे दल के साधु दौड़े और वे भी गंगा में कूदे। उन्होंने स्नान कर रहे संन्यासी को बाहर निकाला। स्नान के समय वह अर्घ्य नहीं चढ़ा पाया था इसलिए उसे मान्यता नहीं दी गई। शास्त्र की भाषा में बिना अर्घ्य दिए हुए स्नान को खग स्नान कहते हैं।

मठ और दूसरे संप्रदायों के संन्यासियों में इस घटना के बाद काफी देर विवाद चला। गनीमत थी कि मारपीट की नौबत नहीं आई। वह स्थिति बन ही रही थी कि पीछे किसी और संन्यासी संघ ने काशी के शंकर मठ से आने का दावा किया। उन्होंने पहले स्नान का हठ कर रहे संघ को फर्जी बताया और उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खदेड़ने के लिए हल्ला मचाने लगे। इस बीच महानिर्वाणी और दशनामी साधुओं का विवाद निपट गया था। पहले से तैयार की गई सूची के अनुसार ही अखाड़ों ने क्रम से स्नान किया। क्रम पहले की तरह आरंभ हो जाने के बाद शांति हो गई। दूर खड़े गृहस्थ और सूची में शामिल नहीं होने वाले नव संन्यासी साधुओं का स्नान निपट जाने के बाद अपनी बारी का इंतजार करते रहे।

साधुओं ने सुबह सात बजे तक स्नान कर लिया था। वहां जमा लोग अपनी बारी का इंतजार करने के अलावा साधु संतों के दर्शन के लिए भी खड़े रहते थे। गंगा किनारे आते जाते साधुओं की शोभा यात्रा और शाहियों (साधु संतों और अखाड़ों की शोभायात्रा) के दर्शन करना पुण्य समझा जाता है। साधुओं के उस मार्ग से निकल जाने के बाद सड़क की धूल मिट्टी उठाने के लिए लोग टूट पड़ते थे। इसे वे महात्माओं के चरणों की धूल कहते और अपने माथे पर लगाते। कुछ महिलाएं यह चरण धूलि थैलियों में रखती हुई दिखाई देतीं, जिन्हें वे इसी काम के लिए लाती थीं। कुछ अपनी साड़ी के पल्लू में बांधकर रख लेती। कुछ लोग साधुओं के उस रेले में शामिल हो जाते और उनके साथ ही स्नान कर लेते। इस घुसपैठ को वे चतुराई समझते और इस तरह के स्नान को अपना सौभाग्य समझते थे। इस तरह बैसाखी का वह स्नान पर्व निपट गया।

शान्तिकुञ्ज में अलग ही तरह का पर्व स्नान हुआ। लोग सुबह उठे। साधकों में से कई ने गंगा स्नान किया। कुछ ने यह माना कि शान्तिकुञ्ज में सभी तीर्थों और पुण्य सलिलाओं का वास है। इस मान्यता से प्रेरित होकर उन्होंने शान्तिकुञ्ज में ही स्नान किया। कुछ लोग हर की पैड़ी पर भी गए। इन सबसे अलग और विलक्षण स्नान राजस्थान के एक साधक बिहारी लाल का था। उनकी उम्र साठ वर्ष पार कर गई थी। शरीर स्वस्थ था पर वृद्धावस्था के साथ जो समस्याएं जुड़ जाती थी, वे उनके साथ भी थीं। उन्हें नींद कम ही आती थी। टुकड़ों टुकड़ों में वे तीन चार घंटे सोते थे। कमर सीधी करके चलने में उन्हें थोड़ी परेशानी होती थी और उनके दांत भी गिर गये थे। दांत गिर जाने के बाद उन्होंने नई बत्तीसी नहीं लगवाई थी। कहते थे कि भगवान ने जो चीज वापस ले ली, उसे अपनी ओर से क्या बसाना। हां, उनकी नजरें तेज थीं। कहते है कि जिसके दांत गिर जाते हैं उसकी नजरें भी कमजोर हो जाती हैं। बिहारीलाल जी के साथ यह बात नहीं थी। वे किसी स्वस्थ युवा व्यक्ति की तरह दूर की चीज देख और पहचान सकते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बिहारीलालजी ने वानप्रस्थ ले लिया था और राजस्थान के अपने क्षेत्र में ही काम कर रहे थे। यों वे शान्तिकुंज आते जाते रहते थे लेकिन इस बार कुंभ के लिए खास तौर पर आये थे। उनकी तमन्ना थी कि कुंभ पर किसी सच्चे और अधिकारी साधु के दर्शन हों। गुरुदेव से भी उन्होंने अपनी इच्छा व्यक्त की थी। इच्छा जताने के साथ अनुरोध भी किया था कि वे आकांक्षा पूरी करें। गुरुदेव उनकी बात सुन कर हंसते हुए चुप रह गए थे। बिहारीलालजी ने मान लिया था कि गुरुदेव ने आश्वस्त कर दिया है। फिर कुछ घटना भी इसी तरह की हुई। वैशाखी के स्नान पर्व के दिन सुबह के तीन बजे बिहारीलालजी अपने कमरे में सो रहे थे। थोड़ी देर पहले ही आंख लगी थी। उन्हें लगा कि गुरुदेव बुला रहे हैं।

बिस्तर के पास से ही उनकी आवाज आई जैसे गुरुदेव जगा रहे हों। आंख खुली तो देखा वे सामने खड़े हैं। कह रहे हैं कि तुम्हें कुंभ पर कुछ अनुभव करना है न! चलो उठो। स्नान कर लो और आओ मेरे साथ। गुरुदेव को सिरहाने खड़ा देख बिहारीलालजी तुरंत उठ कर खड़े हो गए। उठते ही उनके चरण छुए। कहा आप विराजिए गुरुदेव मैं अभी तैयार होता हूं।

गुरुदेव ने कहा, 'मैं यहाँ बैठने नहीं आया हूँ। तुम स्नान कर तैयार हो जाओ और सप्त सरोवर के पुश्ते पर मिलो। मैं वहीं तुम्हारा इंतजार करूंगा।' बिहारीलाल ने कहा कि आप वहां इंतजार क्यों करते हैं? मैं वहीं स्नान कर लूंगा। गुरुदेव ने इस पर समझाया कि यहीं स्नान कर लो। वहां गंगा किनारे अंधेरा होगा। अंधेरे में विषैले जीव जंतुओं का डर रहता है।

उस दिन वैशाख के कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि थी। आसमान में तारे चमक रहे थे। चंद्रमा को अस्त हुए काफी समय बीत गया था। बिहारीलालजी गुरुदेव की आज्ञा मानते हुए स्नान के लिए चल दिए। उन्हें रह रह कर आश्चर्य हो रहा था कि गुरुदेव इस समय यहां, उनके कमरे में कैसे आ गए? कभी किसी से सुना नहीं कि गुरुदेव इतनी सुबह किसी साधक के कमरे में गए हों। सुबह जगाने और कहीं ले जाने की बात होती तो संदेश पहुंचाना ही काफी था। इन विचारों में डूबते तैरते बिहारीलाल जी नित्य कर्मों से निवृत्त हुए। उस सुबह उन्होंने शान्तिकुञ्ज में नियमित गायत्री जप नहीं किया। गुरुदेव सप्त सरोवर में प्रतीक्षा कर रहे होंगे, यह विचार ही उन्हें व्यग्र किए दे रहा था। उन्होंने स्नान के बाद गायत्री माता की छवि के सामने दीपक जलाया, प्रणाम किया और मन ही मन गायत्री का जप करते हुए सप्त सरोवर की ओर चल दिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शान्तिकुञ्ज से निकलते हुए गेट के पास खड़े होकर गुरुदेव के साधना कक्ष की ओर देखा। वहां रोशनी जल रही थी। बाहर निकलते हुए उन्होंने गेट पर खड़े कार्यकर्त्ता से पूछा कि गुरुदेव चले गये हैं क्या? कार्यकर्त्ता पहले तो उनके प्रश्न का आशय ही नहीं समझ पाया। दोबारा पूछा तो वह कहने लगा, "कहां चले गए। उन्हें कहीं जाना है क्या?" कहते हुए वह सावधान की मुद्रा में खड़ा हो गया।

बिहारीलालजी ने पूछताछ में समय नहीं गंवाया। मान लिया कि गुरुदेव जा ही चुके हैं। तभी तो सप्तसरोवर पर मिलेंगे, वे गायत्री मंत्र का मानसिक जप करते हुए तेज कदमों से चलने लगे। लंबे लंबे डग भरते हुए वे पांच मिनट में ही सप्त सरोवर के मोड़ पर पहुँच गए। सीढ़ियों से पुश्ते के मोड़ पर चढ़े। वहां उन्हें कोई नहीं दिखाई दिया। सिर्फ आवाज सुनाई दी, 'इधर आओ। नीचे उतरो।' अवाज गुरुदेव की ही थी। उस दिशा में देखा तो गुरुदेव गंगा के किनारे वाली दिशा में पेड़ के पास खड़े दिखाई दिए। बिहारीलाल जी नीचे उतरे। गुरुदेव ने इशारे से अपने पीछे पीछे चलने के लिए कहा और गंगा में उतरने लगे। सप्त सरोवर पर मोड़ वाले घाट पर घुटनों से कमर तक गहरा पानी रहता है। बहाव तेज है और पिंडलियों तक उतरते उतरते पांव उखड़ने लगते हैं। बिहारीलालजी यह समझते थे। वे पहले भी गंगा की धारा में उतरते रहे हैं पर आगे तक नहीं गए थे। इस बार गुरुदेव आगे आगे चल रहे हैं, इसलिए चिंता नहीं थी। और सचमुच उन्होंने गंगा की सभी धारांए बिना कहीं रुके पार कर लीं।

गंगा पार कर बिहारीलाल जी गुरुदेव के साथ वन क्षेत्र में पहुंच गए। उस पार के वन को कदली वन कहते हैं। जंगल घना था। शेर चीते और हाथी आदि जंगली जानवर बहुतायत से वहां थे। बीच बीच में उनकी दहाड़ और चिंघाड़ सुनाई दे जाती थी। उस क्षेत्र में प्रवेश कर ही रहे थे कि गुरुदेव रुके। उन्होंने अपने पांव के जूते उतारे और बिहारीलालजी से भी वैसा ही करने के लिए कहा। नंगे पाव दोनों कदली वन के भीतर पहुँचे। कुछ कदम चलने के बाद बिहारीलाल ने अनुभव किया कि चारों ओर प्रकाश फैला हुआ है। प्रकाश जैसे चांदनी छिटकी हुई है-शीतल रोशनी। उन्होंने ऊपर देखा आकाश में चंद्रमा नहीं था। तारागणों के समूह पूरे आकाश में छाए हुए थे। बिना चांद तारों के छाई छिटकी चांदनी। रात में ही दिखाई दिया कि जहां तहां कुछ तापस बैठे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुरुदेव आगे आगे चल रहे थे। बिहारीलालजी उनसे कुछ पग पीछे थे। गुरुदेव रुके। बिहारीलालजी भी उनके पास आकर थम गये। गुरुदेव ने कहा, 'इन तपस्वियों को देख रहे हो न।'

बिहारीलाल ने इंगित दिशा में नजरें दौड़ाई और हां कहा। गुरुदेव ने कहा, 'कुंभ पर्व जिन महात्माओं की उपस्थिति से अमृत से परिपूर्ण होता है, ये उन्हीं विभूतियों में से हैं। ये अपने आरंभिक जीवन में कभी किसी ग्राम बस्ती में गए हों तो गए हों, अन्यथा इसमें से किसी ने भी कभी आबादी नहीं देखी होगी।'

'ये लोग यहीं निवास करते हैं गुरुदेव?' बिहारीलाल ने पूछा। गुरुदेव ने कहा, 'नहीं' और बताया कि कि ये हमेशा चलते ही रहते हैं। गांव बस्ती तो दूर किसी पेड़ के नीचे भी तीन दिन से ज्यादा नहीं ठहरते। यहां कल शाम तक के लिए ही आए हैं और स्नान कर चले जाएंगे। बिहारीलाल ने पूछा कि स्नान के समय तो संसारी लोगों के संपर्क में आते ही होंगे। गुरुदेव ने इस पर कहा कि तुम अपने आप देख लेना।

यह कहते हुए वे दोनों आगे बढ़े। कुछ डग चलने के बाद उन्होंने देखा कि एक साधु हवन करता हुआ बैठा है। वस्त्र के नाम पर उसने सिर्फ कौपीन बांध रखा था और दाहिनी ओर कमंडल रखा था। नीचे कुश से बना हुआ आसन बिछा था। सामने केले के पत्तों पर हवन सामग्री रखी थी। साधु मन ही मन कोई मंत्र बुदबुदाता और फिर एक आहुति हवनकुंड में छोड़ देता था। हवन सामग्री के जलते ही अग्नि की लपटें उठ आती और वातावरण में सुगंध का एक झोंका तैर जाता। यज्ञाग्नि से धुंए की एक रेखा भी नहीं निकल रही। सर्वथा निर्धूम अग्निशिखा। सफल और सिद्ध यज्ञ की एक कसौटी। दोनों की उपस्थिति से उस संन्यासी को कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। गुरुदेव हवन कुंड से कुछ हटकर बैठ गये। इशारे से बिहारीलालजी को भी बैठने के लिए कहा। दोनों की उपस्थिति पर ध्यान दिए बिना साधु हवन क्रिया में व्यस्त रहा। बिहारीलाल वहां बैठे बैठे, मन ही मन गायत्री का जप करने लगे। इस तरह कोई एक घड़ी समय बीता होगा। बिहारीलाल ने बीच बीच में अनुभव किया कि गुरुदेव जैसे वहां नहीं हैं। उठकर कहीं चले गए हैं, लेकिन कुछ ही क्षण बाद उन्हें अपनी अनुभूति भ्रम की तरह लगने लगती। गुरुदेव वहीं बैठे दिखाई देते।

एक घड़ी बीतते बीतते हवन पूरा हुआ। साधु ने अब नजरें उठाकर दोनों की ओर देखा। देखते हुए ही उसने नारियल के दो पात्र उन दोनों की ओर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
बढ़ाये और कहा इसमें रखे प्रसाद को पी लो। नारियल के पात्र में पंचामृत जैसा कोई पेय भरा हुआ था। दोनों ने वह पेय पी लिया। साधु पूर्णाहुति से पहले इस पेय की भी आहुति दे चुका था। पी चुकने के बाद साधु ने बिहारी लाल की ओर इशारा कर कहा, 'कुंभ का अनुभव करने आये हो। वहां देखो। कुछ देख सकते हो तो तुम्हें जरूर दिखाई देगा।'

साधु के कहते ही बिहारीलाल ने देखा-उत्तर दिशा से देवताओं जैसी आकृति वाले लोगों का समूह चला आ रहा है। वह समूह कदलीवन के इस पार ही रुक गया है। फिर देवताओं के सामने संन्यासियों और तपस्वियों के झुंड दिखाई दिए। ये झुंड गंगा की ओर चलने लगे। उनकी गति को निरखते निरखते बिहारीलाल उठकर खड़े हो गए, जैसे उन तपस्वियों के साथ ही जाने वाले हों।

साधु अपने स्थान से उठा और हवनकुंड के पास रखी एक लकड़ी उठाकर बोला, 'रुको। अपने स्थान से आगे मत बढ़ना।' यह कहते हुए साधु ने हवन कुंड की लकड़ी से एक रेखा खींचते हुए बिहारीलालजी के आसपास एक गोल घेरा खींच दिया। फिर कहा, 'इस घेरे के बाहर मत जाना वरना दुनिया के लिए किसी काम के नहीं रहोगे। तुम्हें यहीं से सब दिखाई देगा।'

बिहारीलालजी अपने स्थान पर खड़े खड़े ही सब देख रहे थे। उन्हें लगा कि गंगा की एक विशाल धारा प्रकट हुई है और सात भागों में बंट गई है। उन सात भागों के बीच में छह द्वीप बन गए हैं। पांचों द्वीपों पर विशाल जनमेदिनी है, जो उत्सव मना रही है। उत्सव चल रहा है। लोग स्नान कर रहे हैं। वेदमंत्रों की ध्वनियां गूंज रही हैं। उन द्वीपों में यज्ञ हवन के उपचार चल रहे हैं। चांदनी रात है। यज्ञ कुंड से उठ रही लपटों में उन द्वीपों की हलचल साफ दिखाई दे रही है। तभी गरुड़ जैसा एक विशाल पक्षी दक्षिण दिशा से उड़ता हुआ आता है। वह कदली वन में बैठे उस तापस की ओर ही बढ़ रहा है। पास आने पर स्पष्ट होता है कि वह पक्षी भगवान विष्णु का वाहन है। वह पंजों में एक कुंभ पकड़े हुए है। तापस के पास आते आते वह पक्षी एक चक्कर गंगा की सातों धाराओं और उनके कारण बने द्वीपों का लगाता है। उन द्वीपों और धाराओं के आकाश में उड़ते उड़ते पक्षी अपने पंजों से पकड़े कुंभ में रखा कोई द्रव जगह जगह उडेलता है। उस द्रव की बूंदे गंगा की धारा में जा मिलती हैं। क्षेत्र की परिक्रमा करने के बाद वह पक्षी तापस साधु के पास आकर बैठ जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बिहारीलालजी ने स्पष्ट अनुभव किया कि उस पक्षी पर भगवान विष्णु विराजमान हैं। उनके हाथों में चारों आयुध-शंख, चक्र, गदा, और पद्म स्थित है तथा वे मंद मंद मुस्करा रहे हैं। कुछ ही पल रुककर उनका वाहन उन्हें लेकर फिर दक्षिण दिशा की ओर ले जाता है और धीरे धीरे सब सामान्य होने लगता है। वह पक्षी अदृश्य हो जाता है। उस पर बैठे भगवान विष्णु की आकृति भी वाहन के साथ लुप्त हो जाती है। गंगा की सात धाराएं, उनसे बने हुए द्वीप, द्वीपों पर ऋषि और देवसत्ताओं का उत्सव सब धीरे-धीरे अंतर्ध्यान हो जाते है। बिहारीलालजी अपने स्थान पर बैठे चौंकते हुए पहले संन्यासी की ओर और फिर गुरुदेव की ओर देखते हैं। दोनों अपने स्थान पर बैठे हैं। हवन कुंड में अब भी अग्नि प्रदीप्त थी। तंद्रा से जगे हुए की तरह बिहारीलाल फिर उस संन्यासी की ओर देखते हैं। पूछते हैं, 'आप कौन हैं महात्मन्। आपके सान्निध्य में मैंने जो विलक्षण अनुभव किया, उसके बारे में निश्चित नहीं कर पा रहा हूँ कि वह स्वप्न था अथवा सत्य। और आप यहां निर्जन में क्या कर रहे हैं?'

'मैं इस क्षेत्र में तुम्हें दिखाई दे रहे संन्यासियों ओर तपस्वीजनों में से एक हूं। रही बात इस दृश्य के स्वप्न या सत्य होने की तो कुछ देर के लिए अपने चित्त को एकाग्र करो।' उन संन्यासी ने कहा। बिहारीलालजी ने अपनी असमर्थता जताई, 'वह मुझसे नहीं हो सकेगा। मेरा चित्त इस दृश्य के कारण बहुत व्याकुल है।'

'अच्छा तो फिर यहां हवनकुंड में जल रही अग्नि की ओर देखो। फिर सुनने की कोशिश करो।' उन साधु ने कहा। बिहारीलालजी ने वैसा ही किया। प्रतीत हुआ कि अग्निकुंड से कितने ही स्फुलिंग उड़ रहे हैं और धीरे धीरे उड़ते हुए उस सुनसान में फैल रहे हैं। उन स्फुलिंगों के साथ एक ध्वनि भी गूंजने लगती है। बिहारी लाल सुनने की कोशिश करते हैं। पहले अस्पष्ट और फिर स्पष्ट होने लगता है कि वह ध्वनि गायत्री मंत्र की है। उस ध्वनि में लय और सुर नहीं है। जप के समय साधक जिस तरह बिना विराम लिए गायत्री मंत्र का जप करता है और मनोलोक में जैसी ध्वनि सुनाई देती है, वैसा ही स्वर सब तरफ गूंज रहा था। प्रतीत होने लगा था कि वहां प्रकृति का कण कण गायत्री मंत्र का जप कर रहा है। जप भी मौन या उपांशु नहीं बल्कि वैखरी वाणी से। उस जप को हर कोई स्पष्ट सुन सकता है। पांच सात मिनट तक यह स्थिति रही फिर धीरे धीरे सब कुछ शांत होता चला गया। अग्निकुंड से जो स्फुलिंग यहां वहां जाते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
दिखाई दिए थे, वे एक बारगी चमके और वे भी अपने स्थान पर शांत हो गए।

'जाओ। अब अपनी लोक साधना में मन लगाओ।' उन तापस साधु ने कहा। बिहारीलाल ने हाथ जोड़े ओर गुरुदेव की ओर देखा। गुरुदेव अपने स्थान से उठने लगे थे। वे उठे और बिना कुछ कहे कदली वन से सप्तसरोवर की ओर चलने लगे। बिहारीलाल भी उनके पीछे पीछे चल दिए। कुछ दूर चलकर उस जगह आए जहां पांव से जूते उतारे थे। उन्हें वापस पांवों में पहना और गंगा किनारे आए। पहले जिस तरह नंगे पैर चलकर गंगा की धारा पार की थी उसी तरह वापस चलते हुए इस पार आ गए। गुरुदेव ने सप्तसरोवर पहुंचते ही कहा, 'अब तुम यहां से जैसे आये थे वैसे ही वापस चले जाओ।'

बिहारीलालजी ने कुछ नहीं कहा। चुपचाप गुरुदेव ने जैसा कहा था, वैसा ही किया। इस बार वे तेज कदमों से नहीं चल पाए थे। धीरे धीरे कदम उठाते हुए आराम से चल रहे थे। शान्तिकुञ्ज पहुंचने में दस बारह मिनट लगे। यहां आकर देखा शिविरार्थी जाग गए हैं। स्नानादि से निपट कर अपनी दैनंदिन साधना में जुट गए हैं। प्रवेश द्वार से शान्तिकुञ्ज में आते हुए बिहारीलाल ने ऊपर गुरुदेव के कक्ष की ओर देखा। वहां अब भी पहले की तरह बत्ती जल रही थी। उन्होंने अर्थ लगाया कि गुरुदेव अपने कक्ष में ही हैं। गुरुदेव अपने कक्ष में हैं तो सप्तसरोवर से जिनके सान्निध्य में कदली वन की यात्रा की थी, वे कौन थे? वे यदि गुरुदेव थे तो यहां अपने कक्ष में एक कार्यदिवस पूरा कर चुकी यह विभूति कौन है? ये प्रश्न थोड़ी देर तक मन को मथते रहे। फिर उन्होंने तमाम सवालों को झटक दिया। अपने मन को समझाया कि हमने गुरुदेव से कुंभ पर्व की यथार्थ झांकी देखने का अनुरोध किया था, वह झांकी देखने को मिल गई और उन्हीं के सान्निध्य में अनुभूति हुई। बस इतना ही काफी है। गुरुदेव यहां थे या वहां थे, यह वही जानें। बिहारीलाल ने गुरुदेव के कक्ष की ओर देखकर दोनों हाथ जोड़े और प्रणाम किया। प्रणाम करते हुए वे स्वयं अनुभव कर रहे थे कि उनकी आंखें भीग गई हैं।

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आठ
विक्षोभ के वर्ष

जून १९७५ का तीसरा सप्ताह था। भीषण गर्मियों के दिन। मथुरा का तापमान इन दिनों रेगिस्तानी इलाकों को भी मात कर देता था। जन जागरण प्रेस में अखंड ज्योति की छपाई लगभग पूरी होने जा रही थी। आखिरी फर्मे छप रहे थे। पत्रिका की पूरी सामग्री तो पहले ही आ जाती थी, 'अपनों से अपनी बात' की सामग्री सामान्य पृष्ठों के बाद आती थी। इन पन्नों में गुरुदेव का सामयिक संदेश रहता आया है। इस संदेश में अगले दिनों के कार्यक्रम भी हुआ करते थे। जुलाई १९७५ अंक के लिए 'अपनों से अपनी बात' की सामग्री भी आ गई थी। पूरी पत्रिका छपकर तैयार थी लेकिन आवरण पृष्ठ अभी नहीं आया था।

आमतौर पर आवरण पृष्ठ मथुरा में ही तय होता था। अखंड ज्योति कार्यालय में ही यह तय कर लिया जाता था। कभी कदा शान्तिकुञ्ज से इस बारे में परामर्श कर लिया जाता था। गुरुदेव जिन दिनों मथुरा में थे, तब आवरण पृष्ठ के बारे में वे निर्देश दे दिया करते थे। उनके मथुरा से चले जाने के बाद पत्रिका की सामग्री तो शान्तिकुञ्ज से आती थी पर आवरण पृष्ठ और भीतरी पन्नों की सज्जा मथुरा में संपादकीय विभाग ही तय करता था। इस बार शान्तिकुञ्ज से आवरण पृष्ठ के लिए तीन दिन पहले ही निर्देश आया था कि कुछ देर रुका जाए। आवरण का डिजाइन शान्तिकुञ्ज से तैयार होकर आएगा। उसी आधार पर नेगेटिव पाजिटिव तैयार होंगे, फिल्म बनेगी और छपाई के लिए बनने वाली प्लेट भी हू बहू वही रहेगी।

उस निर्देश के अनुसार संपादकीय विभाग के कार्यकर्त्ताओं में थोड़ा कौतूहल था। इस बार आवरण पर ऐसा क्या खास होगा? कोई विशेष संदेश होना चाहिए, वह संदेश क्या हो सकता है? इस बारे में भी कार्यकर्त्ता कभी कभार दो चार बातें कर लेते थे। कुछ के अनुसार कोई तांत्रिक आकृति हो सकती है-कुछ का मानना था कि गायत्री माता का विशेष चित्र हो सकता है-हो सकता है वह चित्र सिद्धि साधना से संबंधित हो। उस वर्ष गायत्री जयंती १८ जून को थी। इसलिए भी कार्यकर्त्ताओं ने अनुमान लगाया था कि आदिशक्ति की कोई सिद्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

छवि अवतरित होनी होगी। वही छपनी होगी। इसी तरह की एक सिद्ध छवि जून १९७३ के अखंड ज्योति अंक में भी छपी थी। उसमें सूर्यमंडल में स्थित गायत्री के ध्यान का बिंब प्रकाशित किया था। उस ध्यान का अभ्यास करने पर कई साधकों को विलक्षण अनुभव हुए थे। लेकिन गायत्री के ध्यान का वह स्वरूप तब गायत्री जयंती तक प्रकाशित हो गया था। साधकों ने उस छवि पर गायत्री जयंती से ही अभ्यास शुरु कर दिया था। इस बार गायत्री जयंती के लिए दो एक दिन ही बचे हैं।

आवरण पृष्ठ को लेकर कार्यकर्त्ताओं में प्रतीक्षा का भाव तो था पर कोई चिंता नहीं थी। पत्रिका की प्रसार संख्या एक लाख से भी ज्यादा पहुँच गई थी। जो उपकरण उस समय उपलब्ध थे, उनके अनुसार छपने में तीन चार दिन लग सकते थे। बाइंडिंग आदि में भी चार पांच दिन लगते। सामान्य स्थिति में पत्रिका के अगले महीने का अंक चालू माह के चौथे सप्ताह तक डिस्पेच कर दिया जाता था ताकि २७-२८ तारीख तक पाठकों को मिल जाए। इस हिसाब से आवरण अभी तक तैयार हो जाना चाहिए था। कार्यकर्त्ताओं में इस बात को लेकर चिंता नहीं थी कि आवरण देर से आया तो छपेगा कैसे? जो मार्गदर्शक सत्ता नया निर्धारण कर रही थी, वह विलंब को पाटने का सरंजाम भी जुटा लेगी। कार्यकर्त्ता निश्चिंत थे।

१८ जून की सुबह अखंड ज्योति कार्यालय में शान्तिकुञ्ज से फोन आता है कि एक कार्यकर्त्ता आज शाम आवरण पृष्ठ का डिजायन लेकर चलेगा, पत्रिका तैयार हो ही गई होगी। आवरण पृष्ठ छपते ही उसे लगा देना है और पत्रिका तुरंत डिस्पेच कर देनी है। डिस्पेच की व्यवस्था इस तरह करनी है कि अखंड ज्योति परिवार के परिजनों को २५-२६ जून तक मिल जाए।

अगले दिन सुबह आठ साढ़े आठ बजे शान्तिकुञ्ज से एक कार्यकर्त्ता अखंड ज्योति कार्यालय पहुंचे। उन्होंने डाक का लिफाफा दिया। खोला गया तो आसपास संपादकीय विभाग के कार्यकर्त्ता अपनी अपनी सीट छोड़कर डिजाइन के पास आ गए। उन्हें जानने की उत्सुकता थी कि आवरण में ऐसा क्या है, जिसके लिए पत्रिका रोकी गई। लिफाफा खुला और जुलाई माह के आवरण का डिजायन सामने आया तो कार्यकर्त्ता देखते रह गए। एक बहुरंगा चित्र था, जो रेखाओं से बनाया गया था। इस रेखांकन में भगवान् श्रीकृष्ण युद्ध के मैदान में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
खड़े थे। उनके दांए हाथ की तर्जनी अंगुली में सुदर्शन चक्र था-सामने अर्जुन ठौड़ी पर हाथ लगाए झुके हुए बैठे थे। कार्यकर्त्ताओं को कुछ पल असमंजस रहा कि चित्र में गीता का उपदेश देते हुए भगवान् की छवि है और वे भीष्म पितामह का संहार करने के लिए सन्नद्ध है। उस चित्र की कार्यकर्त्ता अपने अपने ढंग से व्याख्या कर रहे थे कि जनजागरण प्रैस के प्रबंधक पहुंच गए। वह डिजायन उन्हें सौंप दिया गया ताकि उसके छपने की प्रक्रिया आगे बढ़े।

अखंड ज्योति के लिए कवर डिजायन के साथ छपाई के लिए स्केच, ब्लाक आदि बनाने का काम तब ब्रजभूषण नामक आर्टिस्ट किया करते थे। गुरुदेव जिन दिनों मथुरा में थे तभी से वे यह काम कर रहे थे। अखंड ज्योति परिवार से वे कामकाजी तौर पर ही नहीं जुड़े थे, गुरुदेव के प्रति श्रद्धाभाव भी रखते थे। उन्होंने १९६६ में गुरुदेव से दीक्षा ली थी और उनके मार्गदर्शन में सहस्रांशु साधना भी शुरु की थी। साधना का अभ्यास अब भी चल रहा था। बृजभूषण के पास अखंड ज्योति का आवरण पृष्ठ पहुँचा तो उस पर ब्रश चलाने से पहले अखंड ज्योति कार्यालय में फोन किया। इधर कार्यालय में सतीश जी बैठे थे। फोन उन्होंने उठाया। बृजभूषण ने फोन उठाते ही कहा, 'भाई साहब इस कवर को देखकर मुझे विचित्र अनुभूति हो रही है।'

सतीश जी ने बातचीत का सिरा आगे बढ़ाया तो बृजभूषण कहने लगे, पिछले तीन चार दिन से स्वप्न में अजीब दृश्य दिखाई दे रहे हैं। कभी कहीं भागवत कथा होती दिखाई दे रही है, कहीं रासलीला हो रही है, कभी भगवान् कृष्ण कुरुक्षेत्र में अर्जुन को गीता का उपदेश दे रहे हैं। सपना खुलने पर चारों ओर देखते हैं। कुछ समय तो लगता है कि भगवान कृष्ण यहीं कहीं आसपास ही हैं। पूरी तरह जागने पर यथार्थ में आते हैं तो झटका सा लगता है।

सतीश जी ने मजाक करते हुए कहा, 'दिन रात शास्त्रियों और भागवत के विद्वानों के यहाँ चक्कर काटते रहते हो न इसलिए सपने आ रहे होंगे भैया। परेशान क्यों होते हो? भगवान् ही तो सपने में दिखते हैं न। कोई डरावनी चीजें तो नहीं दिखाई देती।'

बृजभूषण ने कहा, 'और आगे भी तो सुनो भाई साहब। आपने अभी जो कवर भिजवाया है न, उसे देखकर लगा कि ठीक यही दृश्य मैंने सपने में देखा है। आज सुबह हीं देखा है। सुबह उठते ही लगा कि बना ही लूं। पर न जाने क्या सोचकर रुक गया।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'अच्छा ही हुआ कि नहीं बनाया। वरना मेहनत बेकार जाती। सपने में देखी बातों का वैसे भी ज्यादा भरोसा नहीं करते।' सतीश जी ने एक बार फिर मजाक किया। इसके बाद उधर से पता नहीं क्या कहा गया और बात आई गई हो गई।

दिव्य आवरण

चर्चा पूरी हुए कुछ ही समय बीता होगा कि मथुरा से रामवृक्ष चौहान नामक एक कार्यकर्त्ता ने कार्यालय की सीढ़ियां चढ़ी। गुरुदेव की विदाई से पहले ये कार्यकर्त्ता अखंड ज्योति संस्थान में ही काम करते थे। वे रहते तो गायत्री तपोभूमि परिसर में थे-काम करने घियामंडी आते थे। विदाई के बाद अखंड ज्योति का बहुत सा काम गायत्री तपोभूमि ही चला गया तो यहां के कार्यकर्त्ता भी तपोभूमि कार्यालय में ही काम करने लगे। उनका अखंड ज्योति संस्थान आना बंद हो गया। कार्यकर्त्ता के तौर पर न सही, सामान्य और निजी तौर पर तो कार्यकर्त्ता आते जाते ही रहते थे। रामवृक्ष ने आते ही बिना किसी भूमिका के सतीश जी से कहना शुरु किया 'पता नहीं क्या बात है भाई साहब। उपासना के समय मैंने देखा कि सामने गायत्री माता की तस्वीर के सामने अखंड ज्योति रखी हुई है और उसमें से आलोक की किरणें बिखर रही हैं।' सतीश जी उनकी बात सुनकर चुप रहे फिर रामवृक्ष ने ही अपनी बात पूरी की और पूछा, 'इस बार अखंड ज्योति में कोई विशेष सामग्री जा रही क्या? गुरुदेव का कोई विशेष संदेश।'

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'अखंड ज्योति के हर अंक में गुरुदेव का संदेश ही जाता है और वह विशेष ही होता है।' सतीश जी ने कहा, 'खास बात यह है कि इस बार कवर पेज बदल गया है। इसके लिए शान्तिकुञ्ज से निर्देश आया था।' उन्होंने रामवृक्ष से अपनी बात की और फिर स्वगत ही कहने लगे, 'पता नहीं सुबह से कई कार्यकर्त्ता कवर और अखंड ज्योति के नये अंक को लेकर एक ही तरह की मिली जुली सी बात कह चुके हैं।'

अखंड ज्योति का आवरण पृष्ठ बदलने की यह घटना दो चार दिन याद रही और यादों में धुंधली होने लगी। आवरण छप गया, पत्रिका बाइंड हो गई और डाक में भेज देने के साथ मथुरा में कार्यकर्त्ताओं के लिए भी बात सामान्य हो गई, लेकिन कुछ सजग साधकों के लिए यह घटना सामान्य नहीं थी। गुरुदेव के साथ वर्षों से काम कर रहे सत्यभक्तजी ने नए आवरण की बात तपोभूमि में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही सुनी थी और सुनते ही कहा था गुरुदेव ने इस तस्वीर के जरिये गायत्री परिवार और समाज को विशेष संदेश दिया है।

२० जून सायंकाल की आरती के बाद उन्होंने कार्यकर्त्ताओं के चर्चा करने पर कहा था। उनकी राय सुनकर कार्यकर्त्ताओं ने पूछ ही लिया था कि यह विशेष संदेश क्या है? सत्यभक्त जी ने कहा कि इस समय देश समाज की जो हालत है उसमें गुरुदेव कहना चाह रहे हैं कि राजनीति विफल रही। उसके हाथों सौंपी गई कमान ठीक से संभली नहीं और समाज में अराजक और उपद्रवी स्थितियां बन गयीं। समाज को दिशा देने का काम अब 'धर्मतंत्र' के हाथों संपन्न होगा। भगवान् स्वयं युग की कमान संभालेंगे-उसे दिशा देंगे और नया समाज रचेंगे। इसके लिए कुछ समय तक कष्ट और विग्रह की स्थितियां सभी को झेलना पड़ेंगी।

जून १९७५ की वे तिथियां सचमुच दिनोंदिन विकट होती जा रही थीं। यो उथल पुथल का दौर पिछले कई वर्षों से चल रहा था। आजादी के अट्ठाइस वर्ष पूरे होते होते भारत में लोकतंत्र एक बड़े संकट में फंसने लगा। उन दिनों संकट का जो स्वरूप सामने खड़ा दिखाई दे रहा था, उसकी पृष्ठभूमि १९७३ के आसपास बनने लगी थी। उस समय देश में मंदी, बेरोजगारी, मंहगाई और आवश्यक वस्तुओं की कमी लोगों का जीना दिनोदिन दूभर करने लगी। इससे समाज में असंतोष फैलना शुरू हुआ। असंतोष के फैलते ही देश के विभिन्न भागों में हड़तालों और आन्दोलनों की लहर चलने लगी। इसकी चरम परिणति १९७४ में देशव्यापी रेल हड़ताल के रूप में देखने को मिली। यह हड़ताल २२ दिन तक चली और आखिर में तोड़ दी गई।

असंतोष का उबाल

कानून और व्यवस्था की हालत लगातार बिगड़ती ही जा रही थी। हड़तालें, प्रदर्शन और जुलूस हिंसक हो उठते थे। १९७४ में २२ दिन चली रेल हड़ताल तो तोड़ दी गई पर उसका असर काफी दिन तक रहा। हड़ताल तोड़ देने और मजदूरों की कोई भी मांग नहीं मानने के कारण सरकार की लोकप्रियता में बुरी तरह गिरावट हुई। दूसरे क्षेत्रों के मजदूर और कर्मचारी भी असंतोष के मारे उबलने लगे। आर्थिक संकट का दौर तो १९७२-७३ से ही शुरू हो गया था। उस समय का कुख्यात तेल संकट, विश्व बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में चार गुना उछाल, परिणाम स्वरूप खाद और पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में बेतहाशा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
वृद्धि, विदेशी मुद्रा भंडार का खाली होना, गहराती हुई आर्थिक मंदी और इस सबके साथ कीमतों का लगातार बढ़ते जाना। ये स्थितियाँ गरीब और मध्य वर्ग दोनों को प्रभावित कर रही थीं। उनकी हताशा असंतोष के रूप में कानून व्यवस्था के लिए चुनौती खड़ी करने लगी थी। घेराव, चक्का जाम और काम बंद जैसी गतिविधियाँ जोर पकड़ रही थीं। कई कालेज और विश्वविद्यालय लम्बे समय के लिए बंद कर दिये गये। सन् १९७३ में उत्तर प्रदेश में प्रादेशिक सेना ने बगावत कर दी। उस पर काबू पाने के लिए सेना को भेजा गया। प्रादेशिक सेना और पुलिस में मुठभेड़ हुई। उसमें पैंतीस सिपाही और सैनिक मारे गये। इधर समाज में असंतोष, विक्षोभ और अव्यवस्था का बोलबाला बढ़ता ही जा रहा था। उससे निपटने में सरकार निरंतर अक्षम होती जा रही थी। राज्य सरकारें तो विफल हो ही रही थीं, केन्द्र सरकार भी निरुपाय सी देख रही थी।

अव्यवस्था और आर्थिक दुर्दशा से उत्पन्न प्रतिक्रिया में गुजरात और बिहार में सरकार के खिलाफ जबरदस्त आंदोलन शुरू हुए। गुजरात में इस आंदोलन की कमान छात्रों ने संभाली। जनवरी १९७४ में गुजरात में उस समय भारी उथल पुथल मच गयी, जब अनाज, मिट्टी के तेल और रसोई ईंधन-लकड़ी कोयला आदि और अन्य दैनंदिन उपयोगी वस्तुओं की कीमतें आसमान छूने लगीं। इस मंहगाई और सरकारी स्तर पर मची लूट खसोट से क्षुब्ध लोगों का आक्रोश भड़क उठा और शहरों, कस्बों में छात्र आन्दोलन के रूप में फूट पड़ा। आंदोलन इतना उग्र हो गया कि ढाई महीने तक राज्य में कानून व्यवस्था नाम की कोई चीज ही नहीं बची। दिन प्रतिदिन छात्रों, नागरिकों और पुलिस वालों में बढ़ती मुठभेड़ और राजनीतिक अस्थिरता से छुटकारा पाने के लिए केन्द्र ने राज्य सरकार से इस्तीफा देने के लिए कहा। इस्तीफा देने के कुछ समय बाद मार्च १९७५ में विधान सभा भंग कर दी गई और जून में नये चुनाव तय हुए।

जिन दिनों गुजरात में आंदोलन छाया हुआ था उन दिनों बिहार में भी छात्र सक्रिय होने लगे थे। मार्च १९७४ में छात्रों ने विधान सभा के घेराव से शुरुआत की और पुलिस के साथ टकराव का एक सिलसिला शुरू हुआ। आन्दोलन शुरू होते ही इतना उग्र रूप ले गया कि एक सप्ताह में कोई सत्ताईस लोग मारे गये। बिहार का छात्र आन्दोलन इस मायने में भी गुजरात आंदोलन से समानता रखता था कि यहां भी विपक्षी दल छात्रों के साथ आ मिले थे। लेकिन आंदोलन इस अर्थ में भिन्न था कि वर्षों पहले राजनीति से संन्यास ले चुके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सर्वोदयी नेता जयप्रकाश नारायण छात्रों का नेतृत्व करने के लिए निकल आये थे। जवाहरलाल नेहरू के बाद महात्मा गांधी के राजनैतिक-सामाजिक उत्तराधिकारी के रूप में विख्यात जयप्रकाश नारायण ने संपूर्ण क्रांति का नारा दिया। उन्होंने कहा कि संघर्ष उस पूरी व्यवस्था के खिलाफ है जिसने हर व्यक्ति को भ्रष्ट होने के लिए विवश कर दिया है। उन्होंने सरकार से त्यागपत्र देने और विधानसभा भंग करने की मांग करते हुए छात्रों और लोगों से कहा कि वे विधायकों पर त्यागपत्र देने के लिए दबाव डालें, सरकारी कार्यालयों में नहीं जायें, वहाँ का कामकाज ठप्प हो जाने दें। विधान सभा का घेराव करें, कर देना बंद कर दें और पूरे राज्य में समानांतर जन सरकार बनाएं।

गुजरात में विधानसभा भंग करने के बाद केन्द्र सरकार बिहार में भी इसी तरह की मांग मानने के लिए किसी भी कीमत पर तैयार नहीं थी। उनके दौरे लोगों को बड़ी संख्या में आकर्षित कर रहे थे। सभाओं में हजारों लोग इकट्ठे होते। जेपी उन्हें संगठित होने और आंदोलन चलाने के लिए प्रेरित कर रहे थे। उनके आह्वान, आंदोलन को छात्रों, मध्यवर्ग के लोगों, व्यापारियों और बुद्धिजीवियों के एक हिस्से का व्यापक समर्थन मिला। गैर कांग्रेसी दल पूरी तरह जेपी आंदोलन के साथ जुड़ गए। इन दलों में वामपंथी पार्टियाँ शामिल नहीं थीं। उस समय की राजनैतिक स्थितियों की समीक्षा करते हुए बाद के विश्लेषकों ने लिखा है कि जिन दलों को १९७१ के चुनाव में मुंह की खानी पड़ी थी, उन्हें जय प्रकाश नारायण के रूप में एक जननेता मिल गया था। जेपी से उन्हें उम्मीद बंधने लगी थी कि वे उन्हें कांग्रेस के विकल्प के रूप में मान्यता दिला सकते हैं। जेपी के लिए ये संगठन आंदोलन के लिए व्यवस्था बनाने, कार्यकर्त्ता देने और सरकार का मुकाबला करने लायक जनशक्ति जुटाने के माध्यम साबित हो रहे थे।

वह आंदोलन १९७४ के अंत तक कमजोर पड़ने लगा था। जेपी आंदोलन की सरगर्मियां उस समय थोड़ी ठंडी पड़ने लगीं जब उसके छात्र अनुयायी अपनी कक्षाओं में वापस जाने लगे। गुजरात और बिहार में आंदोलन शहरी और कस्बाई मध्यवर्ग को ही आकर्षित कर पाया था। गरीबों और ग्रामीण क्षेत्रों में उसका ज्यादा प्रभाव नहीं हुआ था। जेपी आंदोलन में जन सरकार, जन पंचायतें और जन प्रशासन बनाने चलाने पर जोर दिया तो सत्ता पक्ष और वामपंथी दलों ने इसे गैर संसदीय रुझान बताया। वे जेपी आंदोलन को लोकतंत्र विरोधी करार देने लगे। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और उनके समर्थकों, ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चुनौती दी। जयप्रकाश नारायण और उनका आंदोलन अपनी परीक्षा आगामी आम चुनाव में कर लें। तब यह साबित हो जाएगा कि आंदोलन को कितना समर्थन मिला हुआ है। उस समय के नियत क्रम के अनुसार आम चुनाव फरवरी-मार्च १९७६ में होने वाले थे। जेपी ने चुनौती स्वीकार की और उनके साथ चल रहे राजनैतिक दलों ने एक राष्ट्रीय सहमति सहयोग समिति बनाई।

ये घटनाएं अप्रैल-मई १९७५ के आसपास की हैं। उस समय इंदिरा गांधी द्वारा दी गई चुनौती और जेपी तथा उनके समर्थकों द्वारा उसे स्वीकार करने के बाद लगने लगा कि फैसला लोकतांत्रिक तरीके से ही हो जाएगा। जयप्रकाश नारायण और संपूर्ण क्रांति के नेताओं ने आंदोलन शांतिपूर्वक चलाने की अपील की, साथ ही अपने आपको चुनाव की तैयारी में लगा देने के लिए भी कहा। बहुत तेजी से तो नहीं पर स्थितियां थोड़ी शांत होती दिखाई देने लगीं। गुरुदेव उन दिनों देश, राजनीति में घट रही हलचलों पर बारीक नजर रखे हुए थे। अखबार पढ़ते हुए या कार्यकर्त्ताओं के सामने कभी कभार कुछ टिप्पणियां भी कर देते थे। अप्रैल १९७५ की एक सायंकालीन गोष्ठी में उन्होंने कहा था कि राजनैतिक स्थितियां उलटती पलटती रहती हैं, सुधरती नहीं हैं। उनसे ज्यादा उम्मीद नहीं करनी चाहिए। आज हालात थोड़े सुधरते दिखाई दे रहे हैं, कौन जाने कल और ज्यादा बिगड़ जाएं।

राजनीति का संकट

उस दिन अक्षय तृतीया थी। जून महीने की १३ तारीख। शान्तिकुञ्ज के सांस्कृतिक मंच पर वानप्रस्थ सत्र के शिविरार्थियों ने एक नाटक खेलने की योजना बनाई। नाटक का नाम था 'परिव्रज्या'। भगवान बुद्ध के अनुयायियों के क्रियाकलाप पर आधारित था। उसमें उपगुप्त नामक एक भिक्षु की जीवनचर्या मंचित की गई। शुरूआत एक स्त्री के कंठ से निकल रही कराह से होती है। उपगुप्त उस कराह को सुनकर रुकता है और उसी दिशा में जाता है। कक्ष में प्रवेश करने पर देखता है कि एक अधेड़ स्त्री बिस्तर पर लेटी हुई है और पीड़ा से छटपटा रही है। उपगुप्त उस स्त्री की परिचर्या करते हैं। वह थोड़ी स्वस्थ होती है, पीड़ा कुछ थमती है तो वह कहती है 'तुम यहाँ कहां आ गए उपगुप्त? जिस रूप और सौंदर्य के लोभी श्रेष्ठिजन जो मेरे चारों ओर मंडराते थे, उनमें से कोई नहीं आया। तुम कैसे आ गए?'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उपगुप्त कहता है कि मैं तुम्हें भलीभांति जानता हूँ यशिका। एक दिन तुमने मुझे अपने निवास पर ही रुक जाने के लिए कहा था। मैं प्रव्रज्या पर था और भिक्षा लेकर लौट गया था। तुमने पूछा था कि आते रहना। फिर मैंने कहा था आऊंगा और ऐसे समय आऊंगा जब तुम्हें मेरी आवश्यकता होगी।

कह कर भिक्षु चुप हो गया। यशिका ने कहा, 'अब तो नहीं जाओगे।' भिक्षु ने कहा, 'जिस तरह आया हूं उसी तरह वापस भी जाऊंगा। जहां भी पीड़ा और पतन है, वहां जाना और विचरण करना मेरा धर्म है।'

नाटक के दूसरे अंक में महास्थविर प्रव्रज्या पर जा रहे भिक्षु से पूछते हैं, 'वत्स। उस देश के नागरिक असभ्य हैं। तुम उन्हें उपदेश दोगे तो वे तुम्हें गालियां देंगे।' भिक्षु-'मैं उन्हें धन्यवाद दूंगा कि उन्होंने मुझे मारा नहीं।' महास्थविर-'वे तुम्हें मार भी सकते हैं।'

भिक्षु-'मैं उनका आभारी होऊंगा कि उन्होंने मेरे प्राण नहीं लिए।' महास्थविर-'वे तुम्हारे प्राण भी ले सकते हैं।' भिक्षु-'मैं उन्हें धन्यवाद दूंगा कि उन्होंने मुझे इस जीवन से मुक्त कर दिया।' महास्थविर विस्मय से देखते रह जाते हैं। पार्श्व ध्वनि गूंजती है-'धन्य हैं जो सहिष्णु और करुणावान हैं। भगवान बुद्ध का अनुग्रह उन्हें ही प्राप्त होगा।'

करुणा और सहिष्णुता को आत्मसात करते हुए समाज में जाने का संस्कार तब हर वानप्रस्थी को दिया जा रहा था। इस नाटक से पहले मंच पर ही परशुराम का स्मरण किया गया। उनकी पूजा आराधना हुई और शिविरार्थियों को गुरुदेव ने संदेश दिया कि राजनीति जब विफल हो जाती है तो धर्मनीति को उस मोर्चे पर भी सक्रिय होना पड़ता है। कनिष्ठ वानप्रस्थ योजना पिछले महीने ही शुरू हुई थी। इसमें रामायण कथा के आधार पर प्रवचन, संस्कार, यज्ञ हवन और कर्मकांड आदि सिखाकर कार्यकर्त्ताओं को क्षेत्र में भेजा जाना था। उद्देश्य यह था कि कार्यकर्त्ता लोगों को नए युग का संदेश सुनाएं-उन्हें इसके स्वागत के लिए तैयार करें और समाज में सुख-शांति का वातावरण बने।

कनिष्ठ या सावधिक वानप्रस्थ शिविरों में एक विशेषता देखने में आ रही थी कि इनमें नई पीढ़ी के लोगों की संख्या ज्यादा थी। ज्यादातर लोग २५-३० वर्ष की उम्र के थे। इस उम्र के लोगों की संख्या साठ प्रतिशत थी और चालीस की उम्र के लोगों को भी जोड़ लें तो संख्या नब्बे प्रतिशत के आसपास पहुंच जाती थी। इन युवकों में पढ़ लिखकर दुनियादारी में उतर रहे युवाओं के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
अलावा समाज सेवा के क्षेत्र में पहले से सक्रिय जनों की संख्या भी अच्छी खासी थी। कनिष्ठ वानप्रस्थ का नया आयाम उद्घाटित करते हुए गुरुदेव ने कहा था कि अगले दिनों राजनीति और शुष्क नीरस समाज सेवा से क्षुब्ध लोगों का एक बड़ा वर्ग धर्ममंच की ओर आकर्षित होगा। शुष्क और नीरस समाज सेवा से मतलब शौकिया या राजनीति की पायदान चढ़ने के लिए अपनाए जाने वाले क्रियाकलाप हैं। गुरुदेव की कही हुई बात डेढ़ दो महीने में ही चरितार्थ होने लगी थी।

अक्षय तृतीया को, जिस दिन शान्तिकुञ्ज के सांस्कृतिक मंच पर प्रव्रज्या अभियान का संदेश देता हुआ नाटक मंचित हुआ था, एक महत्त्वपूर्ण घटना राजनीति के क्षितिज पर आकार ले चुकी थी। उस दिन गुजरात में विधान सभा चुनाव के नतीजे आये थे। राज्य में कांग्रेस बुरी तरह हार गई थी। विपक्षी गठबंधन जनता मोर्चे को मतदाताओं ने राज्य की बागडोर संभालने का फैसला दिया। इससे एक दिन पहले एक और महत्त्वपूर्ण घटना हुई जिसमें भारतीय राजनीति को नए मोड़ पर ला खड़ा कर दिया। १२ जून १९७५ को इलाहाबाद उच्चन्यायालय ने इंदिरा गांधी के खिलाफ राजनारायण द्वारा दायर की गई चुनाव याचिका पर फैसला सुनाया। फैसले में श्रीमती गांधी को चुनाव जीतने के लिए भ्रष्ट तरीके अपनाने का दोषी बताते हुए उनके चुनाव को अवैध करार दे दिया। फैसले के अनुसार श्रीमती गांधी अगले छह वर्ष के लिए न तो चुनाव में खड़ी हो सकती थी और न ही किसी पद पर रह सकती थीं। फैसले के मुताबिक उन्हें प्रधानमंत्री पद से हट जाना था। इस फैसले के बाद गुजरात के चुनाव परिणाम आये। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले ने ही शांत और सहज होती जा रही राजनैतिक परिस्थितियों में भूचाल ला दिया था, गुजरात के चुनाव परिणामों ने तो जैसे सोये हुए ज्वालामुखी ही जगा दिए। विपक्षी दल श्रीमती गांधी से तुरंत इस्तीफा देने की मांग करने और आंदोलन को सक्रिय करने लगे।

उच्च न्यायालय के फैसले में श्रीमती गांधी के चुनाव को छोटे-मोटे तकनीकी आधार पर अवैध करार दिया गया था। उन्होंने इस फैसले के कारण त्याग पत्र देने से इंकार कर दिया और सर्वोच्च न्यायालय में अपील दायर की। सर्वोच्च न्यायालय ने सुनवाई के लिए १४ जुलाई की तारीख तय की। इस बीच देश में श्रीमती गांधी के खिलाफ जबर्दस्त हवा बहने लगी। इसी बीच सर्वोच्च न्यायालय के अवकाश कालीन न्यायाधीश वी. आर. कृष्ण अय्यर ने फैसला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दिया कि सर्वोच्च न्यायालय की संपूर्ण पीठ का फैसला आने तक श्रीमती गांधी अपने पद पर बनी रह सकती हैं। इस फैसले से श्रीमती गांधी के समर्थकों का मनोबल बढ़ा और वे भी सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन करने रैलियां निकालने, सभाएं करने और आंदोलन चलाने लगे।

विपक्षी दलों ने इस बीच दिल्ली में एक बड़ी रैली का आह्वान किया। रैली का उद्देश्य श्रीमती गांधी पर इस्तीफा देने की मांग करना और उसके लिए दबाव बनाना था। चार छह महीने पहले सरकारी कामकाज को ठप्प करने की जो मांग चारों ओर उठ रही थी और साल डेढ़ साल बाद चुनाव में जोर आजमाइश की चुनौती के बाद ठंडा पड़ने लगी थी, वह फिर हुंकार भरती हुई उठने लगी थी। हर किसी को प्रतीत होने लगा था कि आपाधापी और अराजकता का ऐसा दौर शुरु होने वाला है, जिसका कोई ओर-छोर नहीं होगा।

विशिष्ट साधना

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता भी असमंजस की स्थिति में थे। महीने भर पहले उन्हें अपना संगठन मजबूत करने और घर-घर युग संदेश पहुँचाने के निर्देश दिये गये। नये युग का संदेश अपने आसपास के लोगों तक पहुँचाना वैसे ही प्रत्येक परिजन की साधना का अंग था पर गुरुदेव ने इस बार खासतौर पर पांच सप्ताह तक विशेष अभियान चलाने पर जोर दिया था। बहुत से कार्यकर्त्ता इस अभियान को देश काल की परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में देख समझ रहे थे और उत्साहित थे। नए साधकों को इस संदेश का निहितार्थ पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो पाया था, सो वे शान्तिकुञ्ज से पत्राचार कर रहे थे। इस तरह के पत्रों का अंबार प्रतिदिन की डाक में लगा रहता था। गुरुदेव उन्हें एक ही समाधान दे रहे थे कि निष्ठा पूर्वक युगसाधना में लगे रहें, जब जैसी स्थितियां होंगी, उसी के अनुरूप अपने भीतर से ही समाधान उभरेंगे। यह भी निश्चित हो जाएगा कि जो समाधान उभर रहे हैं, वे युग देवता के ही स्फुरित किये हुए हैं।

विशिष्ट परिजनों को गायत्री जयंती से गुरुपूर्णिमा तक के लिए निर्दिष्ट अनुष्ठान खासतौर पर याद आ रहा था। गुरुदेव ने इसके लिए महीने डेढ़ महीने पहले कहा था। गुरुदेव ने उन साधकों से कहा था कि १८ जून बुधवार से यह विशेष अनुष्ठान आरंभ किया जाये और पांच सप्ताह तक चले। अनुष्ठान की पूर्णाहुति आषाढ़ सुदी पूर्णिमा-गुरुपूर्णिमा को की जाए। गुरु पूर्णिमा उस वर्ष २३ जुलाई को आ रही थी। इस साधना में जप, तप और उपवास आदि नियमों का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पालन नहीं करना था बल्कि अपने क्षेत्र में अधिकाधिक लोगों से संपर्क करना था। उन्हें नवनिर्माण में जुट जाने के लिए तैयार करना था। जिन साधकों को इस अनुष्ठान के लिए कहा गया था, उन्हें सावधान भी किया गया था कि भीड़ बढ़ाने की जरूरत नहीं है। जिन्हें थोड़ा भी यह आभास या विश्वास हो कि भगवान अपनी सृष्टि को नया रूप देने जा रहे हैं और जो अपने मिशन की विचारधारा से थोड़े बहुत परिचित हैं-नियमित रूप से गायत्री जप और स्वाध्याय भी करते हैं। ऐसे लोगों को इकट्ठा कर अपने क्षेत्र, शहर, गांव और मोहल्ले में संगठन खड़ा किया जाये। जहाँ संगठन हो, वहाँ उसका विस्तार किया जाये। गायत्री जयंती से गुरुपूर्णिमा के बीच पांच सप्ताह होते हैं। इन पांच सप्ताहों में कम से कम पांच जगह गोष्ठियां की जाएं और वहां अभियान में रुचि ले रहे व्यक्तियों को अपने परिवार का सदस्य बनाया जाए।

चैत्र नवरात्रि और उसके आसपास जो परिजन शान्तिकुञ्ज गए थे उनसे गुरुदेव ने इस अनुष्ठान की तैयारी के लिए निजी तौर पर कहा था। जो लोग नहीं आ सके थे-उन्हें पत्र लिखवा कर कहा। इन कार्यकर्त्ताओं ने एक महीने तक परिश्रम कर अपने क्षेत्र में कुछ वातावरण बनाया था। बाद में गुरुदेव ने अखण्ड ज्योति के जून १९७५ अंक में 'अपनों से अपनी बात' स्तंभ में भी इस अनुष्ठान के लिए प्रेरित किया था। अनुष्ठान में क्या किया जाना है-इसकी विस्तृत रूपरेखा शांतिकुञ्ज आने वाले कार्यकर्त्ताओं को अच्छी तरह समझा दी गई थी।

गायत्री परिवार से इतर, देश में राजनैतिक स्तर पर बड़ी उथल-पुथल मची हुई थीं। दिल्ली में २५ जून को रैली आयोजित की गई। रैली में हजारों लोगों के शामिल होने की संभावना थी। शहरों और कस्बों में वातावरण बन रहा था। राजनीति में सक्रिय लोग बड़ी संख्या में पहुँचने के लिए मन बना रहे थे। सर्वोदय आंदोलन के एक वरिष्ठ कार्यकर्त्ता हरिभाई उन दिनों शान्तिकुंज पहुँचे। यह २२ जून की बात है। वे वर्धा से विनोबा भावे का संदेश लेकर आए थे। गुरुदेव से उन्हें मिलवाया गया। भेंट के दौरान उन्होंने विनोबा का संदेश दिया। संदेश मौखिक ही था। हरिभाई ने कहा कि बाबा शान्ति चाहते हैं। सभी जन मिलकर शांति पूर्वक रचनात्मक कार्यों में लगें। इसके लिए विचारशील लोगों का संगठन चाहिए। सर्वोदय आंदोलन में ऐसे लोगों की पर्याप्त संख्या रही है पर इन दिनों वे राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय हो गए हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
गुरुदेव ने हरिभाई से कहा कि हम लोग नए युग की साधना में लगे हुए हैं। यह काम राजनैतिक कर्म से बड़ा है। अभी और उथल-पुथल होनी है। बाबा से कहना कि उथल-पुथल के एक दौर में उनके बहुत से अनुयायी वापस समाज साधना में लौटेंगे पर इस बार वे गांधीवादी संगठनों के बजाय आध्यात्मिक संगठनों में जाएंगे।

उन दिनों विनोबा भावे ने मौन व्रत लिया हुआ था। वे किसी से बोलते नहीं थे। कुछ कहना बेहद जरूरी हुआ तो इशारों में ही अपनी बात कहते थे। हरिभाई से बात करते हुए गुरुदेव को भी विनोबा के मौन की याद आई थी। यह शंका की जा सकती थी कि हरिभाई विनोबा के बहाने यहां कुछ टटोलने तो नहीं आए हैं। वे राजनैतिक संगठन के कार्यकर्त्ता किसी बड़े राजनेता के दूत या किसी सरकारी गुप्तचर एजेंसी के अधिकारी भी हो सकते हैं। इस स्थिति को समझते हुए भी गुरुदेव ने हरिभाई को आश्वस्त किया, आपको या बाबा को चिंता करने की जरूरत नहीं है। यह दुनिया भगवान की है, वही संभाल रहा है, साधक स्तर के लोग उसके उपवन को संवारने में लगे हुए हैं। राजनीति से थककर या निराश होकर जो लोग आएंगे वे भी हमारे साथ इस उपवन को संवारने में लगे जाएंगे।

हरिभाई की तरह तीन और व्यक्ति दो दिन के अंतराल में शान्तिकुञ्ज आए। उनमें एक ने अपने आपको जयप्रकाश नारायण का संदेशवाहक बताया और एक ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का। तीसरे अपने आपको केन्द्र सरकार का कोई विभागीय अधिकारी बता रहे थे पर वे निजी तौर पर आए थे। इन प्रतिनिधियों के वास्तविक या छद्मवेशी होने पर विचार किये बिना गुरुदेव ने उन्हें मिलने का वक्त दिया। ऐसे लोगों से मिलने में जोखिम तो था ही। शान्तिकुञ्ज के कुछ वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने सुबह होने वाली अंतरंग गोष्ठियों में अपनी यह आशंका जताई तो गुरुदेव ने कहा कि जोखिम तो हमेशा है। देश में जैसे हालात बनते जा रहे हैं, उनके चलते अगले दिनों सैकड़ों लोग शान्तिकुञ्ज आएंगे, अपनी पहचान छुपाकर वे यहां शरण लेंगे, रुकेंगे। उस समय खतरा और भी ज्यादा होगा पर हमें इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। गुरुदेव ने यह भी कहा था कि जून का महीना बीत जाने पर सैकड़ों लोग यहाँ आ सकते हैं। अपने आपको छुपाने के लिए भी और भूमिगत होकर काम करने के लिए भी।

शान्तिकुञ्ज के एक वरिष्ठ कार्यकर्त्ता ने इस संभावना पर अपनी चिन्ता जताई और कहा 'अगर इस तरह के राजनैतिक लोग हमारे यहाँ घुलने मिलने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लगेंगे तो मिशन की छवि पर भी आंच आ सकती है। और साहब अब तो स्थितियां बदलती जा रही हैं। राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं के करने के लिए नया क्षेत्र फिर से खुल गया है। वे आन्दोलन आदि में व्यस्त हो जाएंगे, हमारे पास क्यों आएंगे?'

गुरुदेव ने कहा, 'आंदोलन वगैरह चार छह दिन की बात है। सूक्ष्म जगत में जैसा कुछ घट रहा है, उसके अनुसार अभी जो जोश खरोश दिखाई दे रहा है, उसमें जबरदस्त ब्रेक लगने वाला है। हो सकता है कुछ महीनों के लिए ये लोग आंदोलनों की बात ही भूल जायें और अपने आपको बचाने की फिकर करें।' कुछ पल रुककर गुरुदेव ने कहा, 'धर्ममंच पर बड़ी जिम्मेदारी आ गई है। यह संदेश देने के लिए ही इस बार अखंड ज्योति का कवर बदला है।'

राजनैतिक दल २५ जून की रैली कामयाब बनाने के लिए सघन जनसंपर्क कर रहे थे। उसका प्रचार और आन्दोलन का माहौल बनाने के लिए जैसी मुहिम चली थी उसमें अच्छी गरमाहट पैदा कर ली थी। २५ जून को दिल्ली में एक विशाल रैली हुई। इसमें गैर कांग्रेसी और गैर वामपंथी राजनैतिक दलों के तमाम कार्यकर्त्ता देश के कोने-कोने से इकट्ठे हुए। उनके साथ राजधानी और आसपास के राज्यों से आये सामान्य जन भी थे। रैली को जयप्रकाश नारायण के अलावा मोरारजी देसाई, अटल बिहारी बाजपेई, चौधरी चरण सिंह और चन्द्रशेखर आदि नेताओं ने संबोधित किया।

इस रैली में आह्वान किया गया कि २९ जून से राष्ट्रव्यापी सविनय अवज्ञा आन्दोलन छेड़ा जाये। आन्दोलनकारी सरकार का कामकाज चलना असंभव कर दें। सशस्त्र सेनाओं, पुलिस बल और सरकारी अधिकारियों से अपील की गई कि वे किसी भी सरकारी आदेश को नहीं मानें। इस समय जो सरकार काम कर रही है, वह पूरी तरह 'गैरकानूनी' और 'गैरसंवैधानिक' है। मोरारजी देसाई ने अपने संदेश में कहा कि मौजूदा सरकार को हट जाने के लिए हम लोग मजबूर कर देंगे। हजारों कार्यकर्त्ता प्रधानमंत्री निवास को घेरकर बैठ जाएंगे। वे दिन रात धरना दिए रहेंगे और त्यागपत्र देने के लिए चिल्लाते रहेंगे।

राजनैतिक पर्यवेक्षकों के अनुसार आन्दोलन के जो तरीके अपनाये जा रहे थे वे लोकतंत्र की मर्यादा में ही आते थे। जयप्रकाश नारायण और उनके साथ जुड़े नेताओं के निरंकुश हो जाने या सत्ता बदलने की कोई हिंसक योजना के मूर्त रूप लेने का कोई खतरा नहीं था। तत्कालीन सरकार अपनी कमजोर वैधानिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्थिति और आन्दोलन को मिल रहे समर्थन के कारण चिंतित थी। उसने अपने बचाव की एक योजना बनाई। लोकतांत्रिक अधिकारों को स्थगित करना और आन्दोलन कारियों की धर पकड़ करना उस योजना का एक हिस्सा था। २५ जून की रैली देखकर यह समझ लिया गया कि योजना को मूर्त रूप देने का समय आ गया है।

अंधेरे में रोशनी का आह्वान

२५ जून की रैली संपन्न होने के कुछ ही घंटों बाद उस योजना पर काम शुरू हो गया। रात गहराने लगी और उसके साथ ही अंधेरे की वह 'चादर' भी, जिसमें भारतीय लोकतंत्र एक अनिश्चित काल के लिए ढक गया। उस रात प्रमुख राजनेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार लोगों में जयप्रकाश नारायण, मोरारजी देसाई, अटलबिहारी वाजपेई, लालकृष्ण आडवानी, चंद्रशेखर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख बालासाहब देवरस समेत संघ के कई प्रमुख अधिकारी और जेपी आन्दोलन के सैकड़ों अग्रणी कार्यकर्त्ता शामिल थे। कई शिक्षा शास्त्री, पत्रकार, ट्रेड यूनियन नेता और छात्र नेता भी जेल में बंद कर दिए गये। उन्हें किस अपराध में बंद किया गया, यह नहीं बताया गया। कोई आरोप पत्र भी नहीं दिए गये। २५-२६ जून की उस रात को सभी सामान्य राजनीतिक प्रक्रियायें निलंबित करते हुए संविधान की धारा ३५२ के तहत आंतरिक आपातकाल लागू कर दिया गया। उस घोषणा में संविधान के संघीय प्रावधानों को निलम्बित कर दिया गया। प्रेस पर कड़ी सेंसरशिप लागू की गई और सरकार का किसी भी स्तर पर विरोध कर रहे सामान्य से सामान्य व्यक्ति को भी पकड़कर बंद कर दिया गया। घोषणा की गई कि जैसे ही परिस्थितियाँ अनुकूल होंगी, सामान्य हालात बहाल कर दिये जायेंगे।

२५-२६ जून की उस रात जब धरपकड़ शुरू हुई तो कई आन्दोलनकारी नेता और कार्यकर्त्ता छुप गए। भनक लगते ही उन्होंने अपना कर्त्तव्य निश्चित कर लिया और पहले से निर्धारित या किसी अज्ञात अनिश्चित स्थान के लिए रवाना हो गए। उस तिथि में कुछ कार्यकर्त्ता शान्तिकुञ्ज भी पहुँचे। वे इस सावधानी के साथ आए थे कि पहचाने नहीं जायें। परिस्थितियों पर निगाह रखने और उसके अनुरूप काम करने का निश्चय कर वे क्षेत्रों में निकलने वाले थे। इसके लिए उन्होंने एक सप्ताह तक परिसर में रहकर मिशन की विचारधारा का अध्ययन किया और प्रवचन आदि की तैयारी भी की। जो प्रेरणा इन कार्यकर्त्ताओं को यहाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तक खींच लाई थी, उसी तरह की उमंग क्षेत्र में कई राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं के भीतर भी जगी थी। उन्होंने पहला काम तो अपनी जगह छोड़ देने का किया था और इसके साथ अभ्यस्त वेषभूषा छोड़कर धोतीकुर्ता पहनने लगे थे। कुर्ता भी पीले रंग का।

अखंड ज्योति का जुलाई ७५ अंक जून के आखिरी सप्ताह में परिजनों तक पहुंचा। उस पर भगवान कृष्ण का चित्र छपा था जिसमें वे हाथ में रथ का पहिया चक्र की भांति उठाये हुए थे। बहुत से कार्यकर्त्ताओं के पास यह अंक २६ या २७ जून को पहुँचा। उस समय राजनीतिक परिस्थितियां जो रूप ले चुकी थीं, उनमें कार्यकर्त्ताओं ने सहज ही संदेश प्राप्त कर लिया कि उनकी भूमिका क्या है? पन्ने पलटे तो और भी स्पष्ट हो गया। पाया कि गुरुदेव ने कार्यकर्त्ताओं से अपने यहाँ रामायण के माध्यम से लोकशिक्षण की गतिविधियाँ चलाने के लिए कहा है। 'अपनों से अपनी बात' स्तंभ में यह निर्देश सिर्फ जनमानस के परिष्कार के लिए पूरी तरह सक्रिय हो जाने के लिए दिया गया था। इस संदेश और भगवान कृष्ण के चित्र वाले कवर ने आंदोलन में लगे राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं को भी प्रेरित किया कि वे धर्ममंच के माध्यम से लोगों में आस्था और संकल्प जगाने का काम करें।

रामकथा से विश्राम

यों शान्तिकुञ्ज में रामायण सत्र १५ मई से शुरु हो गए थे। आपातकाल लगने के करीब डेढ़ महीने पहले शुरु हुए इन सत्रों का राजनीति से कोई लेना देना नहीं था। पर अंधकार और अनिश्चय का जो धुंधलका उन दिनों छा रहा था, उसमें रामकथा का महत्व तो था ही। सत्र शुरु होने के दिनों में रामायण के प्रसिद्ध विद्वान कपीन्द्र जी हरिद्वार आए। उनकी यह यात्रा रामकथा के एक आयोजन के सम्बंध में थी। गायत्री परिवार से उनका पुराना सम्बंध था। अफरा तफरी के इस दौर में वे शान्तिकुञ्ज आये और गुरुदेव से मिले। उन्होंने रामायण शिविर की कक्षा और पाठ्यक्रम को देखा और एक मजेदार बात कही। उन्होंने जो वृत्तान्त सुनाया वह ऐतिहासिक है पर उसका सामयिक महत्त्व भी था। उन्होंने कहा कि गोस्वामी महाराज के समय में चारों ओर अराजकता और अव्यवस्था का माहौल था। कहने को सम्राट अकबर का राज था, जिन्हें हम अकबर महान कहते हैं उस युग में हुए बादशाहों में वे सबसे अच्छे थे पर राजकाज चलाने वाले अधिकारी और कर्मचारी तो वही थे। फिर बादशाह भी कहां तक ध्यान दे, कितना दे और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

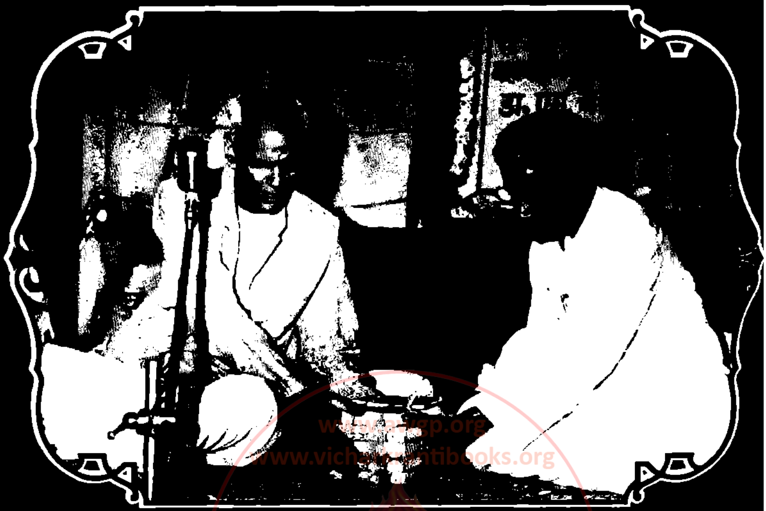

महामहिम को युग–साहित्य के रूप में अमूल्य उपहार ।

स्वयं निहार रहे अपने ही लिखे साहित्य को ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

केन्द्र सरकार के एक मंत्री को
तीर्थ का भ्रमण करा रही गुरुसत्ता

महात्मा आनन्द स्वामी और पवन दीवान के साथ ऋषि युग्म

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कभी विश्राम न कर लाखों—करोड़ों की
पीर हरने वाले ब्राह्मण—लोकसेवी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शान्तिकुञ्ज में विभिन्न मुद्राओं में आचार्य श्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्यों दे ? सो प्रजा का दोहन होता था। अधिकारी उसे सताते थे। लोग निरुपाय-जाएं तो कहां जाएं ? संतों और विद्वानों ने जनता को समझाया कि भगवान राम की शरण में जाएं। उनकी कथा कहें सुनें, उसमें आनंद तलाशें। पर वह संभव नहीं हो रहा था क्योंकि वाल्मीकि रामायण संस्कृत में थी और इसका लोगों को अभ्यास नहीं था। संस्कृत ही क्या-भाषा का भी अभ्यास नहीं था।

कपीन्द्रजी ने कहा कि गोस्वामी जी को रामकथा लिखने की प्रेरणा हुई। उन्होंने कथा लिखना आरंभ किया। वे संस्कृत में काव्य लिखने लगे पर आश्चर्य की बात कि वे पद्य लिखते और सहेज कर रखते जाते थे, सुबह उठकर देखते तो पाते कि वे पद गायब हो गए हैं। एक दिन-दो दिन-तीन दिन सात दिन तक यह क्रम चला। गोस्वामी जी परेशान। उन्होंने भगवान शिव की आराधना की ओर पूछा कि क्या बात है ? भगवान शिव ने स्वप्न में कहा, 'भाषा में रचना करो। लोक समाज का कल्याण भाषा में निबद्ध रामकथा से ही होगा।' गोस्वामी जी ने भाषा में रामचरित लिखना शुरु किया और वह कथा जन मन के लिए रंजनी सिद्ध हुई। उसने अपने समय और समाज की विपदाओं से टूट रहे मानस को संबल प्रदान किया। कपीन्द्रजी ने यह प्रसंग सुनाकर कहा था कि रामकथा का यह मंगलकारी प्रशिक्षण लोगों को दिशा देगा। लोगों को तो सुख मिलेगा ही, यह प्रशिक्षण लेकर गए लोग भी सुखी और संतुष्ट होंगे। उन्हें भी यश मिलेगा। आराधक ही नहीं इस वटवृक्ष के नीचे आकर बैठने वाले सामान्य बटोही भी यश और पुण्य के भागी होंगे।

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नौ
युवा धर्म की परख

'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' और 'ज्ञान यज्ञ की लाल मशाल-सदा जलेगी-नहीं बुझेगी' जैसे उद्घोष गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में हमेशा लगते रहे हैं। इन कार्यक्रमों से परिचित अधिकारियों और राजनेताओं ने आपात काल लागू होने के बाद सुनाई दे रहे इन नारों पर ज्यादा गौर नहीं किया। पर कुछ शहरों में अधिकारियों ने अतिरिक्त उत्साह दिखाया। वे गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं को रोकने-टोकने लगे। उस रोकटोक की दास्तान से पहले मथुरा की घटनाएं जान लेना जरूरी होगा। आपातकाल लागू होते ही सभी जिला केन्द्रों में सेंसर अधिकारी सक्रिय हो गए थे।

जिला सूचना अधिकारी के रूप में काम कर रहे प्रशासनिक अधिकारियों को यह नाम दिया गया था। उनका काम था अखबारों में छपने वाले समाचारों और आलेखों पर नजर रखना। छपने से पहले उन्हें पढ़ना और कहीं कोई सरकार विरोधी बात दिखाई दे तो उसे रोकना। इसके बावजूद कहीं कोई सामग्री छप जाए तो उस प्रकाशन के खिलाफ कार्रवाई करना। इस कार्रवाई में पत्र पत्रिका का प्रकाशन, रजिस्ट्रेशन रद्द करने और प्रकाशन रोक देने जैसे निर्णय भी लिए जा सकते थे। सूचना अधिकारियों ने २६ जून के बाद तुरंत ही अपने अधिकारों का खुलकर प्रयोग किया। इस प्रयोग का कारण दायित्व निभाने से ज्यादा अपनी नौकरी बचाना था ।

इस अतिरिक्त सतर्कता का ही परिणाम था कि मथुरा के सूचना अधिकारी रमेशचंद्र शर्मा ने गायत्री तपोभूमि मथुरा के पते पर एक नोटिस भेजा। नोटिस में युग निर्माण योजना के जुलाई ७५ अंक में छपे एक प्रसंग की क्लीपिंग नत्थी थी। प्रसंग महत्मा गांधी से संबंधित था। उसके अनुसार कुछ युवक महात्मा गांधी के पास यह शिकायत लेकर आते हैं कि अहिंसा ने हमारी हालत बुरी कर दी है। हमारे यहाँ के उद्दंड लोग हमें चैन से जीने नही देते। हम उनका मुकाबला नहीं कर सकते क्योंकि हमने अहिंसा का व्रत लिया हुआ है और वे बाज नहीं आते क्योंकि उन्हें कहीं से चुनौती नहीं मिल रही। महात्मा गांधी उन युवकों से कहते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
हैं कि अहिंसा में तुम्हारी आस्था अधूरी है। अगर आस्था पक्की होती तो तुम लोग यह शिकायत लेकर नहीं आते। उन लोगों का मुकाबला अहिंसा से ही करते रहते। युवकों ने पूछा कि अहिंसा से मुकाबला कैसे किया जा सकता है ? वे लोग तो हमें मारने पीटने लगते हैं। गांधी जी ने कहा कि वे लोग मारने पीटने लगते हैं तो अहिंसा के हिसाब से बहादुरी यह होती कि तुम उन्हें सहन करते और ईश्वर से प्रार्थना करते कि उन्हें क्षमा करें। लेकिन उनकी ज्यादितियों का विरोध जारी रखते। अहिंसा का असली अर्थ तो यही है। तुम लोग आतताइयों के सामने टिके रहने के बजाय भाग आये। यह तो कायरता है। इस तरह की कायरता से तो हिंसा ही अच्छी है। अहिंसा कायरों के लिए नहीं हो सकती।

आपत्ति का समाधान

पत्रिका में यह प्रसंग संक्षेप में छपा था। सेंसर विभाग ने इसे आपत्तिजनक माना और गायत्री तपोभूमि में एक नोटिस भेज दिया। नोटिस में कहा गया था कि यह सामग्री प्रकाशित करने के लिए पत्रिका का पंजीयन क्यो न रद्द कर दिया जाये ? पंडित लीलापत शर्मा ने नोटिस लिया और पढ़ा तो चिंतित हुए। एक क्षण को लगा कि तपोभूमि पर संकट के बादल आने वाले हैं। कार्यालय में जिस जगह वे बैठते हैं, वहां ऊपर गुरुदेव का एक बड़ा चित्र लगा हुआ था। पंडित जी ने एक बार फिर नोटिस पर निगाहें दौड़ाई और अपनी गर्दन उठाकर ऊपर देखा। पंडित जी को लगा कि गुरुदेव जैसे मुस्कुरा रहे हैं। मन ही मन पंडित जी ने कहा ढाढ़स बंधाने और रास्ता दिखाने के बजाय आप हंस रहे हैं। फिर स्वयं ही अपने आपसे कहा, 'हो सकता है इसमें भी कोई भलाई हो।'

पंडित जी यह सब सोच ही रहे थे कि फोन की घंटी बजी। रिसीवर उठाया। शान्तिकुञ्ज से फोन था। उधर से संदेश था कि कुछ अप्रत्याशित स्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। परेशान मत होना। समाधान अपने आप निकल आएगा। पंडित जी ने बताया कि सेंसर विभाग से नोटिस आया है। महात्मा गांधी वाले प्रसंग को आपत्ति जनक माना है। क्या किया जाये ? उधर से शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता बोल रहे थे। वे गुरुदेव का निर्देश बता रहे थे। उन्होंने कहा, 'गुरुदेव की आज्ञा है कि बताई गई तारीख को सेंसर अधिकारी से मिल लो। उन्हें अपनी और अपनी व्यवस्था प्रक्रिया के बारे में बता दो कि सामग्री का चयन कैसे होता है ? पत्रिका कितने दिन पहले तैयार हो जाती है ? यह प्रसंग बहुत प्रसिद्ध है और इसमें महात्मा गांधी ने अहिंसा का ही महत्व बताया है।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस वार्तालाप के बाद उधर से फोन रख दिया गया। पंडित जी इसके बाद भी रिसीवर हाथ में पकड़े हुए कुछ सोचने से लगे थे। मन में शायद यही भाव आ रहे थे कि व्यर्थ ही चिंता की। सेंसर विभाग का नोटिस मिला तो विचलित नहीं होना चाहिए था। माना कि कोई व्यग्रता नहीं हुई पर मन में आई तो सही। गुरुदेव जब स्वयं संभाल रहे हैं तो हम लोगों को निश्चिंत ही रहना चाहिए। थोड़ा भी विचलित होना, अपने आपको कमजोर करना है। इन भावों में वे पता नहीं कब तक डूबे ही रहते कि अखंड ज्योति संस्थान से एक वरिष्ठ कार्यकर्त्ता ने आकर पंडित जी को पुकारा। उस पुकार या प्रणाम को सुनकर पंडित जी जैसे जागे। उन कार्यकर्त्ता से पता चला कि अखंड ज्योति के नए अंक में छपे कवर को लेकर भी सेंसर अधिकारियों ने आपत्ति की है। सेंसर का नोटिस आने के बाद वहां भी शान्तिकुञ्ज से फोन आया और सहज सामान्य रहने के लिए कहा है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इस प्रसंग का उल्लेखनीय अंश यह है कि दो दिन बाद पंडित जी और सतीश जी सेंसर कार्यालय गए। उन्होंने अखंड ज्योति और युग निर्माण योजना के कुछ पुराने अंक भी साथ रख लिए थे। उन्होंने संस्थान को मिले नोटिस का लिखित उत्तर भी तैयार किया हुआ था। दोनों ने कक्ष में प्रवेश किया ही था कि अधिकारी ने अपनी कुर्सी से उठकर उनका अभिवादन किया। पंडित जी और सतीश जी के हाथ उन्हें नमस्कार के लिए उठें उससे पहले ही सूचना अधिकारी अपनी कुर्सी से उठकर उनके पास आए और आदर के साथ अपनी मेज के पास ले गए। उन अधिकारी ने कहा, 'आप दोनों को कष्ट करना पड़ा। इसके लिए मैं निजी तौर पर क्षमाप्रार्थी हूँ पर विभागीय मजबूरी है। आप अन्यथा मत लीजिएगा।'

पंडित जी और सतीश जी ने समवेत कहा, 'हमें कोई परेशानी नहीं हुई। आप अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहे हैं।' कहते हुए वे दोनों अधिकारी के सामने कुर्सियों पर बैठ गए। अधिकारी ने कहा, 'सनातन धर्म में मेरी पूरी आस्था है। मैं जानता हूँ कि अखंड ज्योति और युग निर्माण योजना से देश का कितना बड़ा हित हो रहा है। आप जो जवाब लिखकर लाए हैं, वह जो भी है, काफी होगा। भविष्य में आपको किसी तरह की कठिनाई नहीं होगी।'

पंडित जी या सतीश जी को कुछ कहने की जरूरत ही नहीं पड़ रही थी। आर.सी.शर्मा के नाम से जाने जा रहे अधिकारी ने अपनी बात जारी रखते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हुए कहा, 'आप और आपकी पत्रिकाओं के लिए हम लोगों ने अलग तरह की व्यवस्था सोची है। सामान्य पत्र-पत्रिकाओं के लिए तो जरूरी है कि उन्हें छपने के पहले सारी सामग्री दिखाना होगी। सेंसर विभाग उस सामग्री को देखकर पास करेगा, उस पर विभाग की मुहर लगेगी और तब सामग्री प्रकाशित होगी। 'अखंड ज्योति' और 'युग निर्माण योजना' के लिए यह व्यवस्था दी जा रही है कि आपकी पत्रिका टाइप होकर, कंपोज, मेकअप आदि के बाद जब छपने के लिए भेजें तो उसे दिखा लें। उस पर विभाग की मुहर लग जायेगी। कहीं कोई सुधारने जैसी बात हुई तो उसी स्तर पर ठीक कर ली जाएगी। वैसे मैं जानता हूँ कि इसकी नौबत आएगी नहीं।'

नोटिस का जवाब देखे बिना या सफाई में कुछ सुने बिना ही आर.सी. शर्मा ने अपनी व्यवस्था दे दी। पंडित जी और सतीश जी चकित थे कि उन्होंने जिस स्थिति की कल्पना की थी, उससे उलटी और आशातीत रूप से अनुकूल स्थिति बन गई है। सूचना अधिकारी दोनों को स्तब्ध देखकर फिर बोले, 'चिंता मत कीजिए। यह व्यवस्था भी थोड़े दिनों के लिए ही है। हालात हमेशा एक जैसे नहीं रहेंगे, महीने दो चार महीने में सामान्य होंगे ही।'

इसके बाद अधिकरी ने खुलकर बातें शुरू की और वातावरण कुछ ही देर में अनौपचारिक सा हो गया। आर.सी. शर्मा ने तपोभूमि के प्रति आदर और श्रद्धा का भाव व्यक्त किया और पंडित जी तथा सतीश जी ने उन्हें समय निकाल कर आश्रम आने का निमंत्रण दिया।

वानप्रस्थी की गिरफ्तारी

गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता राजनीति में कहीं भी सीधे तौर पर सक्रिय हिस्सा नहीं लेते थे। सभी जानते थे कि इस विराट परिवार में विश्राम और ऊर्जा ग्रहण करने के लिए सभी राजनैतिक दलों और सरकारी विभागों के लोग आते हैं। आपातकाल लागू होने के बाद जिन अधिकारियों को कड़ाई बरतने की जिम्मेदारी दी गई थी, वे भी इस तथ्य को जानते थे पर कुछ कर दिखाने की जिद ने उन्हें भी मजबूर कर दिया। ऐसे अधिकारियों ने कुछ ज्यादा ही दंड और दमन का प्रयोग किया। गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता भी शुरुआती दिनों में इस अति का शिकार हुए। उदाहरण के लिए मध्यप्रदेश के रायपुर शहर में पुलिस ने कुछ वानप्रस्थियों को पकड़ा। उनका दोष यह था कि वे पीले वस्त्र पहनते थे और हाथ में दो ढाई फुट का एक दंड भी रखते थे। अति उत्साही उमगाए पुलिस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
कर्मियों ने इस दंड को हथियार माना और उन्हें पकड़ लिया। दो तीन दिन में न जाने क्या हुआ कि उन्हें छोड़ दिया गया।

गिरफ्तार हुए और छूट कर आए एक कार्यकर्त्ता का नाम बलवंत मेहता था। उनकी उम्र करीब ७० वर्ष थी और वे रामायण कथा कहा करते थे। कुछ जगह कथा प्रवचनों में उन्होंने हनुमान चरित्र का विवेचन जोर देकर किया। हनुमान द्वारा लंका दहन का प्रसंग सुनाते हुए वे अक्सर कह उठते थे कि संस्कृति की सीता को जिन लोगों ने बंदी बना लिया है, उनकी लंका जला देनी चाहिए। बलवंत मेहता यह विवेचन सहज भाव से करते थे पर उन्हें गिरफ्तार किया गया। पुलिस अधिकारी ने कहा कि इस तरह वे लोगों को सरकार के खिलाफ भड़का रहे हैं। बलवंत मेहता ने अपने बचाव में कुछ नहीं कहा। जैसा कि उन्होंने बाद में बताया, मन ही मन गुरुदेव और गायत्री माता का स्मरण किया और प्रार्थना की कि हे प्रभु यह मेरा सौभाग्य है। आपका काम करते हुए मेरे प्रयत्न इतने प्रखर हो गए कि सत्ता को भय लगने लगा और मुझे पकड़ लिया गया। मुझे शक्ति देना प्रभु कि मैं संकट की इस घड़ी को परीक्षा मानकर उसमें पास हो जाऊं।

उस समय जिस आंतरिक सुरक्षा कानून का उपयोग किया जा रहा था, उसमें गिरफ्तारी की वजह बताने या पकड़े गए व्यक्ति को बचाव का मौका देने की जरूरत नहीं थी। अदालत में पेश किए या मुकदमा चलाए बिना भी गिरफ्तार व्यक्ति को अनिश्चित काल के लिए बंद रखा जा सकता था। लेकिन बलवंत मेहता से कुछ भी नहीं पूछा गया। उन्हें जिस हवालात में बंद किया गया वहां आठ नौ लोग और थे। दो तीन दिन बाद उन सभी को जिला जेल भेजा जाना था। बलवंत भाई ने भीतर जाते ही 'जय श्रीराम' का उद्घोष किया। उद्घोष करते हुए उनके मानस में गुरुदेव की छवि थी। फिर उच्च स्वर से 'गायत्री माता की जय' और 'परम पूज्य गुरुदेव की जय', के नारे लगाये। वहां मौजूद हवालाती एक बुजुर्ग वानप्रस्थी को अपने बीच देखकर दंग थे। इन उद्घोषों ने उन्हें और विस्मित कर दिया। वहां बंद व्यक्ति अपनी राजनैतिक सक्रियता के कारण पुलिस के हत्थे चढ़े थे। बलवंत पहले ऐसे शख्स थे जो धार्मिक कारणों से या उनके बहाने पकड़े गए थे।

अंदर पहुंच कर बलवंत ने कहा, 'भाइयों! आप लोग जिस किसी भी कारण यहां हैं, वह अलग बात है। हम लोग पिछली बातों को सोचने और उनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
चिंता करने के बजाय वर्तमान का सदुपयोग करें। भगवान के चरित्र सुनने, उस पर चर्चा करने का यह एक अच्छा मौका है।' यह कहते हुए बलवंत ने आनन फानन में रामकथा का एक कार्यक्रम घोषित कर दिया। यही नहीं वहां मौजूद हवालातियों से भी कहा कि आप लोग भी इस विषय में अपने विचार और अनुभव रखना। इतना कहने के बाद उन्होंने भगवत्कथा शुरू कर दी। करीब एक घंटे तक जमकर प्रवचन दिया। फिर चुप हो गए और दूसरे लोगों से अपनी बात कहने का अनुरोध किया।

दूसरे लोगों ने अपने धार्मिक या आध्यात्मिक अनुभव सुनाने के बजाय व्यवस्था से अपनी नाराजी, आंदोलन और आंदोलन के अनुभव बताना शुरु किया। कोई ढाई तीन घंटे तक इसी तरह चलता रहा। उसी दिन शाम को जिला पुलिस अधिकारी थाने का निरीक्षण करने आए। निरीक्षण के दौरान वे हवालात भी गए। उन्होंने देखा कि बुजुर्ग व्यक्ति पीले वस्त्र पहनकर ध्यान मुद्रा में बैठा है। उन्होंने बलवंत मेहता से उनका परिचय पूछा। कहा कि आंदोलन के फेर में पड़कर आपको क्या मिलेगा बाबा? क्यों यह सब करते हो।'

बलवंत ने कहा, 'क्या किया है हमने? हम भगवान की कथा कहते और उसी का काम करते हैं। अगर यह अपराध है तो हम अपराधी हैं। हमें आपसे कोई शिकायत नहीं।'

सुनकर उन अधिकारी आश्चर्य जताते हुए पूछा, 'भगवान की कथा और भगवान का काम। कैसा काम? किस तरह करते हो।' जवाब में बलवंत मेहता ने गायत्री परिवार का परिचय दे दिया। सुनकर उन अधिकारी ने पास ही खड़े दरोगा से कहा, 'अरे इन्हें क्यों ले आये? क्या किया था इनने,' फिर खुद ही बोले, 'इस तरह के बुजुर्ग व्यक्ति को परेशानी हुई तो भगवान क्या, अपनी आत्मा भी माफ नहीं करेगी। छोड़ो इन्हें।'

इसके बाद बलवंत भाई छोड़ दिए गए। बाहर आते हुए उन्होंने फिर 'जय श्रीराम' और 'परम पूज्य गुरुदेव की जय' का उद्घोष किया। बलवंत भाई की गिरफ्तारी और रिहाई की यह घटना उन्हीं के मुँह से और फिर कानोंकान गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं में भी चर्चित हुई। इस घटना का अर्थ यह नहीं है कि रायपुर में गिरफ्तार किए गए दूसरे कार्यकर्त्ताओं को भी तत्काल छोड़ दिया। बलवंत भाई के बाद गिरफ्तार कार्यकर्त्ताओं में कुछ दो चार दिन बाद और कुछ थोड़े अंतराल के बाद छूटे। कुछ तो ठीक आम रिहाई के समय छूटे। इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
तरह की गिरफ्तारियां रायपुर के अलावा दूसरे शहरों में भी हुई थीं। गुजरात के अहमदाबाद, बड़ोदरा, राजकोट आदि मध्यप्रदेश में भोपाल, इंदौर, जबलपुर आदि, उत्तर प्रदेश में लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, गौंडा, बिहार में पटना, जमशेदपुर, रांची, मुजफ्फरपुर, राजस्थान में जयपुर, अजमेर, उदयपुर, महाराष्ट्र, में नागपुर, पूना, अहमदनगर आदि शहरों और अन्य राज्यों में भी गिरफ्तारियां हुईं। दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, बंगलुरु, हैदराबाद आदि महानगरों में भी दमन का चक्र पूरे जोर से चला था। गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता भी आंशिक रूप से उस चक्र की लपेट में आए थे।

इस दमन से घबराकर कुछ कमजोर मनःस्थिति के कार्यकर्त्ताओं ने अपनी गतिविधियां शिथिल कर दीं। उन्होंने गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में भाग लेना कम कर दिया। वे शाखाओं और सामूहिक कार्यक्रमों में भाग न लेकर घर में ही जप-अनुष्ठान तक सीमित हो गए। संभलपुर से इसी तरह के एक कार्यकर्त्ता हरे मुरारी शान्तिकुंज के वानप्रस्थ शिविर में आए। उनका ख्याल था कि यहां शिविर करेंगे तो क्षेत्र में किन्हीं कार्यक्रमों में नहीं जाना पड़ेगा। शान्तिकुंज में रहते हुए साधना, उपासना और स्वाध्याय आदि मे ही समय बीत जाएगा। ऐसा कुछ नहीं करना होगा कि पुलिस या प्रशासन के फेर में आना पड़े। उनका डर व्यर्थ ही था, फिर भी वे आए।

उन्होंने शिविर के लिए स्वीकृति भी नहीं ली थी। बहुत पुराने कार्यकर्त्ता थे, इसलिए उन्हें शिविर में भाग लेने की अनुमति मिल गई। कम से कम दो महीने का प्रशिक्षण लेने और शान्ति से रहने का संतोष करते हुए उन्होंने तीन दिन ही बिताये थे कि अचानक अपने बेटे से सामना हुआ। उनका बेटा राजमोहन करीब महीने भर पहले घर से निकला था। परिवार को यही पता था कि वह संपूर्ण क्रांति आंदोलन में है। राजमोहन ज्यादा समय घर से बाहर ही रहता था और आंदोलन का प्रचार करते हुए दूर-दूर की यात्राएं करता था। आपात्काल लागू होने के पहले ही वह संभलपुर से बाहर था। २६ जून के बाद हरे मुरारी और परिवार के लोगों ने मान लिया था कि अन्य युवकों की तरह वह भी गिरफ्तार हो गया होगा। उसके लौटने की उम्मीद मां-बाप खो चुके थे। पता नहीं लौटेगा भी या नहीं? अनिश्चय और आशंका का यह दंश उस समय और चुभने लगता, जब पुलिस थाने से कोई राजमोहन को तलाशते हुए घर पहुँच जाता। बेटे के कारण होने वाली इस परेशानी ने भी हरे मुरारी को अपनी सक्रियता कम करने या उनसे उपराम होने के लिए मजबूर किया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शान्तिकुञ्ज में उन्होंने राजमोहन को रामायण कथा का अभ्यास करते देखा। वह हमेशा पेंट कमीज या कुरता पायजामा पहनता था। अभ्यास के समय उसने पीले कपड़े पहने हुए थे। कंधे तक झूलते बाल और बढ़ी हुई दाढ़ी मूंछ देखकर यकायक पहचान नहीं पाए। कुछ पल अपलक देखने और आवाज सुनने के बाद उन्होंने 'अरे मोहन' कहकर पुकारा। घर में राजमोहन को सब मोहन ही कहते थे। कोई और आवाज होती तो शायद अनसुनी कर देता पर पिता की आवाज थी, जिसे सुनकर नींद में भी व्यक्ति जाग उठता है। मोहन अभ्यास छोड़कर उठ आया। दौड़कर हरे मुरारी के पैर छुए और हतप्रभ सा बोला, 'पिताजी आप?'

'हां मैं!' हरे मुरारी ने कहा, 'मैं तुम्हें ढूंढ़ने नहीं आया हूँ। यहां वानप्रस्थ शिविर में आया हूँ। पर तू यहां क्या कर रहा है।'

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

राजमोहन ने उत्तर दिया, 'मैं अकेला नहीं हूँ। मेरी तरह अपने क्षेत्र के और भी साथी हैं। हमारी तरह और भी कई लोग हैं और यहां प्रशिक्षण ले रहे हैं। सुनकर पिता ने हैरानी जताई। कहने लगे, 'प्रशिक्षण'। तुम किस तरह का प्रशिक्षण ले रहे हो। तुम तो इन सब बातों के खिलाफ थे। आलोचना करते थे। जेपी के प्रभाव में आकर तुमने यज्ञोपवीत भी उतारकर फेंक दिया था। अब फिर कैसे यह सब धारण किया। खुद इसको जीने लगे,' कहते कहते हरे मुरारी का गला रुंधने लगा। पुत्र ने समझाया कि वे बातें गई बीती हो गई। उन्हें याद मत करो। हम लोग यहां गुरुदेव के सान्निध्य में सामाजिक कर्म का अच्छा अभ्यास कर रहे हैं। हमें संरक्षण भी मिला हुआ है। यहां से सीखकर क्षेत्रों में जाएंगे और इन कार्यक्रमों को चलाएंगे।

हरे मुरारे को यह सब सुनकर अपना बेटा सुरक्षित लगा। उन्होंने कहा भी कि अब कोई चिंता नहीं है। उन्होंने अपनी पत्नी को भी खबर करने का इरादा जताया फिर आप ही बोले कि वहां किसी को पता चल गया तो ठीक नहीं होगा। हो सकता है संभलपुर में कोई अधिकारी डाक वगैरह भी चेक करते हों। बिना वजह परेशानी बढ़ जाएगी। इस पर राजमोहन ने कहा, 'माँ को बताना चाहिए। मैं खुद पत्र लिखने की सोच रहा था। अपने शहर में अफसरों को यही तो पता चलेगा ना कि मैं यहाँ हूँ। यह तो कोई चिंता की बात नहीं। यहां किसी तरह का खतरा नहीं है। अभी गिने चुने आंदोलनकारी ही हैं, पर जल्दी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
यहां और लोग भी आएंगे। ढाई तीन सौ लोगों के यहां पहुंचने की संभावना है और वे लोग जगह-जगह से आएंगे।'

हरे मुरारी ने दोनों हाथ उठाकर इन बातों को सुना जैसे कह रहे हों कि बस काफी है। ज्यादा कहने की जरूरत नहीं है। यहां मोहन के सुरक्षित होने को लेकर वह पूरी तरह आश्वस्त हैं। फिर उन्होंने पूछा, 'तुमने तो गायत्री और युग निर्माण साहित्य कभी पढ़ा नहीं। यहां कौन से कार्यक्रम सीख रहे हो, जिनका प्रचार करने क्षेत्र में जाओगे। मोहन ने उन्हें पांच सूत्री कार्यक्रम के बारे में बताया। जून के आखिरी सप्ताह में गुरुदेव ने इन्हीं कार्यक्रमों पर जोर दिया था। पांच कार्यक्रमों में हरीतिमा संवर्धन या वृक्षारोपण, संतति नियमन, दहेज उन्मूलन, साक्षरता और अस्पृश्यता निवारण के प्रति लोगों को तैयार करने के लिए शिविरार्थियों को सिखाया उभारा जा रहा था। राजमोहन ने अपने पिता से इन कार्यक्रमों के बारे में कहा। उन्हें पिछले दो तीन दिन में-वानप्रस्थ शिविर शुरु करते समय ही इन कार्यक्रमों के बारे में पता चल गया था। बेटे को इन कार्यक्रमों की चर्चा करते और उनमें रुचि लेते देख उन्हें विश्वास हो गया कि मोहन अब सृजन सैनिक की भूमिका में ढल जाएगा। वह इधर उधर भटकेगा नहीं और बिना जोखिम उठाए भगवान का काम करता रहेगा।

पिता पुत्र में बातचीत चल रही थी कि किसी मोड़ पर राजमोहन ने कहा, 'पिताजी आप यहां प्रशिक्षण लेने आए हैं। क्यों नहीं अब अपना पूरा समय भगवान की सेवा में लगा देते हैं?'

हरे मुरारी को पुत्र से इस तरह के परामर्श की अपेक्षा नहीं थी। वे चौंके और फिर बोले, 'अभी घर गृहस्थी की बहुत सी जिम्मेदारियां बाकी हैं। उन्हें पूरा किए बिना नहीं आ सकता।'

'सब होशियार हो गए हैं पिताजी। क्या जिम्मेदारियां बाकी हैं? हम लोग अपना-अपना दायित्व खुद उठाने में समर्थ हैं।' पुत्र ने कहा। इस पर हरे मुरारी ने फिर दलील दी, 'तुम लोग भले ही सक्षम हो पर तुम्हारी मां की देखभाल तो जरूरी है। उसे कौन देखेगा?'

'क्यों? हम लोगों पर भरोसा नहीं है क्या?' पुत्र ने पिता के बहाने को फिर चुनौती दी। हरे मुरारी को इससे आगे कुछ कहने के लिए सूझ नहीं रहा था। उन्होंने अंतिम हथियार चलाया। तुम लोगों पर भरोसा तो है पर घर में बहू आ जाए। तुम्हारी बहिन भी ससुराल में ठीक ठाक जम जाए। तुम्हारी मां नाती-पोतों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में रम जाए तो मैं बेफिक्र होकर वानप्रस्थ ले सकता हूँ। फिर सारा जीवन ही मिशन के काम में लगा दूंगा।'

हरे मुरारी की दलील में एक कमजोर मन की चीत्कार सुनाई दे रही थी। उन्हें लग रहा था कि बेटा वानप्रस्थ के लिए मजबूर कर रहा है या दबाव बना रहा है। उसे निरुत्तर करने के लिए पिता ने कहा, 'कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम मुझसे छुटकारा पाना चाहते हो, इसलिए दलीलें दे रहे हो।'

'नहीं! पिताजी नहीं।' राजमोहन ने कहा, 'मैं तो दरअसल यह चाह रहा हूँ कि आज की विषम वेला में जब सभी जाग्रत आत्माएं भगवान का काम करने के लिए अकुला रही है तो हमारे परिवार से कोई एक व्यक्ति पूरा नहीं तो अधिकांश समय इस युग साधना में लगाए।'

राजमोहन ने यह बात पिता के मन में पैदा हुए कांटे को दूर करने के लिए कही थी। पर इसका उलटा असर हुआ। वे खीझकर और बोले, 'मुझे घर से निकालने के बजाय तुम ही क्यों नहीं जीवन दानी बन जाते। तुम्हें तो वैसे भी कोई काम नहीं है।'

'आप अनुमति देंगे तो मैं गुरुदेव के काम में खुशी खुशी पूरा जीवन लगा दूंगा पिताजी।' हरे मुरारी ने पिता की ओर भीगी नजरों से देखते हुए कहा। फिर बोला, 'फिलहाल चार महीने तक तो मैं घर नहीं लौटूंगा। गुरुदेव के बताए पांच सूत्रीय कार्यक्रमों के प्रचार में ही यह समय व्यतीत करूंगा।'

भागो नहीं बदलो

'भगोड़ा कहीं का! डरपोक।' हरे मुरारी ने खिसियाते हुए कहा। वे समझ भी रहे थे कि वास्तव में कौन भगोड़ा और डरपोक है। घर परिवार की जिम्मेदारियों का बहाना बनाकर वानप्रस्थ से बचने की कोशिश करते वे स्वयं या उनका पुत्र जो समाज को बदलने की कोशिश करते हुए एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे पर अपने आपको खपा देने के लिए सन्नद्ध है। उन्हें यह भी समझ आ रहा था उनका वानप्रस्थ भी असल में एक बचाव ही है। संभलपुर में प्रशासन का दबाव नहीं झेला जा रहा था तो वे यहां आ गए थे। समाज के लिए अपने आपको नियोजित करने के उद्देश्य से तो वे नहीं आए थे। इस ग्लानि या आभास से अपने आपको उबारते हुए उन्होंने राजमोहन से कहा, 'ठीक है चार महीने गुरु का काम करने से तुम्हारी भी सुरक्षा होगी और परिवार का भी भला होगा।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पिता पुत्र का यह मिलन, उनकी पृष्ठ भूमि और दोनों के बीच का संवाद कोई अनोखी घटना नहीं थी। इस तरह की प्रवृत्ति हमेशा व्याप्त रहती है। संक्रमण के दिनों में और भी ज्यादा फैली दिखाई देती है। जीवन पर ढीली होती जा रही पकड़ से भयभीत बड़ी उम्र के लोग अपने आसपास फैले संबंधों में, उनके मोह में और भी मजबूती से जकड़ने लगते हैं।

१९७५-७६ के जमाने में गुरुदेव ने पचास के बाद की उम्र वालों के घर परिवार से बाहर निकलने और निरंतर समाज सेवा में लगने का आह्वान किया तो कई लोग निकल कर आए। दो वर्ष में तीन हजार से ज्यादा वानप्रस्थी तैयार हो गए। जीवन का उत्तरार्द्ध समाज के लिए ही लगा देने का साहस करने वाले उन साधकों के अलावा बड़ी संख्या में ऐसे लोग भी थे जो अपने घर में और दुबक गए या किसी विपत्ति से बचने के लिए उन्होने पीले वस्त्र पहने। इस तरह के हरे मुरारी नुमा लोगों को राह दिखाने के लिए युवा पीढ़ी बाहर आई और हरे मोहन की तरह रचनात्मक कामों में लगी।

सावधिक या अंशकालिक वानप्रस्थ युवापीढ़ी को आकर्षित कर रहा था। शुरुआत तो जून के पहले सप्ताह में ही हो गई थी पर आपातकाल लागू होने के बाद युवकों का रुझान इस ओर ज्यादा बढ़ता दिखाई दिया। आपातकाल की ज्यादतियां क्या दिशा लेती हैं? वे किस परिणाम तक ले जाती हैं? इसकी चिंता किए बिना युवकों को प्रेरित करने वाले कार्यक्रम मिल गए थे। इन कार्यक्रमों के प्रति आकर्षण इस कदर बढ़ा कि राजनैतिक दलों के लोग भी इन्हें अपनाने में जुट गए। जिन दलों पर पाबंदी लगी थी या जिनके कार्यकर्त्ताओं पर सरकार की निगाह थी, उनके कार्यकर्त्ताओं के लिए तो यह अभियान एक आश्रय साबित हो रहा था।

आपातकाल के कुछ सुखद परिणाम भी दिखाई दिए थे। रेलगाड़ियां समय पर चलने लगीं थीं, लोग समय पर दफ्तर पहुंचने लगे, सरकारी कार्यालयों में काम होने लगा, स्कूल कालेजों में पढ़ाई फिर से शुरू हो गई। बाजार में बढ़ती हुई कीमतों पर भी अंकुश लगा। मंहगाई घटनी शुरू हुई और रिश्वतखोरी भी काबू में आती दिखाई देने लगी। लेकिन यह प्रभाव ज्यादा दिन नहीं रहा। पुलिस प्रशासन ने शुरु में जो कड़ाई बरती थी, उसका तोड़ लोगों ने ढूंढ़ लिया। वे चुप जरूर हो गए पर धीरे-धीरे अपने ढर्रे पर आने लगे। महीने डेढ़ महीने में वही सामाजिक बुराइयां फिर उभरने लगीं जो २५ जून के बाद कुछ समय तक थमती दिखाई दे रही थीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जुलाई ७५ के तीसरे सप्ताह में मध्यप्रदेश के एक वरिष्ठ कांग्रेसी नेता शान्तिकुंज आए। केन्द्र में उनका अच्छा प्रभाव था और आपातकाल के बाद वे उस अंतरंग मंडली में भी गिने जाने लगे थे जो स्थितियों पर निगाह रखे हुई थी और जिसके जिम्मे वातावरण बनाने का काम था। वे कार्यकर्त्ता पहले भी शान्तिकुंज आते रहे थे और गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में तो अक्सर जाते थे। गुरुदेव से चर्चा के दौरान उन्होंने बताया कि २५ जून के बाद स्थिति नियंत्रण में आती लग रही थी पर ऐसा नहीं है। देश भर में, खास कर उत्तर भारत में बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां हुई हैं लेकिन आंदोलनकारी कार्यकर्त्ता अब भी बड़ी संख्या में बाहर हैं। वे भूमिगत होकर काम कर रहे हैं..........कहते कहते वे थोड़ा रुके और फिर गुरुदेव के थोड़ा और करीब आकर धीमी आवाज में बोले, 'क्षमा करना गुरुदेव मुझे कुछ लोग यहां भी दिखाई दिए है जो अपने परिवार के कम ओर राजनैतिक ज्यादा लगते हैं।'

सुनकर गुरुदेव ने कहा, 'हो सकता है। यह परिवार है। आदि शक्ति गायत्री माता का परिवार। उसके पास सभी कोई आ सकते हैं। किसी की दलगत निष्ठा के बारे में छानबीन थोड़े ही की जाती है। आप जैसे लोग भी तो हैं जो पूरी तरह राजनीति में हैं लेकिन भीतर से गायत्री परिवार के हैं।' इतना कह कर गुरुदेव ने उन नेता के पिछली बातों का जिक्र छेड़ा, 'सरकार ने दरअसल दमन का रास्ता अपनाया है। इससे तत्काल तो कुछ असर हो सकता है लेकिन लोगों का मन नहीं बदला जा सकता। दमन से तो वह और उबाल खाने लगता है।'

सरकार की मंशा लोगों का दमन करने की नहीं है। सिर्फ असामाजिक तत्वों को रोका गया है। उन नेता ने कहा, 'कुछ निर्दोष लोगों को भूल से परेशानी हो सकती है। जहां उस भूल का पता चलता है, वहां सुधार भी लिया जाता है।'

लोगों तक सरकार की सद्भावना का संदेश देने के लिए तब २५ जून के बाद तुरंत बाद बीस सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की गई थी। कार्यक्रमों का जिक्र करते हुए उन नेता ने कहा कि इन्हें सरकारी स्तर पर लागू किया जा रहा है। गुरुदेव का परामर्श था कि रचनात्मक कार्यक्रम राजनैतिक या प्रशासनिक स्तर पर चलने के बजाय लोकसेवा की तरह चलाने चाहिए। समाज में उनका प्रभाव तभी ज्यादा होता है। सरकारी और राजनैतिक स्तर पर चलने वाले कार्यक्रम औपचारिक बनकर रह जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सरकार ने भी अपनाए कार्यक्रम

गुरुदेव से मिलकर वे नेता नीचे उतर कर आए। कुछ देर कार्यालय में बैठे और वानप्रस्थ प्रशिक्षण की प्रक्रिया देखने के लिए प्रांगण में चले गए। उन्होंने कनिष्ठ वानप्रस्थियों द्वारा सीखे जा रहे पांच सूत्री कार्यक्रमों में खासी दिलचस्पी ली। उन कार्यक्रमों से संबंधित साहित्य के दस बारह सेट भी अपने साथ रख लिए। इसे संयोग कहें या उन नेता के परामर्श और सुझाव का परिणाम कि दो तीन दिन बाद प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के छोटे पुत्र संजय गांधी ने युवकों के लिए चार सूत्री कार्यक्रमों की घोषणा की। ये कार्यक्रम गायत्री परिवार के चलाए पांच सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रमों से मेल खाते थे। चार सूत्र में विवाह के समय दहेज नहीं लेना, परिवार को दो बच्चों तक ही सीमित रखना, वृक्ष लगाना और साक्षरता का प्रचार करना।

जुलाई ७५ के तीसरे सप्ताह में संजय गांधी ने युवक कांग्रेस के कार्यकर्त्ताओं को चार सूत्री कार्यक्रम चलाने का निर्देश दिया तो समाचार माध्यमों और प्रचार तंत्र ने इसे हाथों हाथ लिया। इन कार्यक्रमों की गूंज देखते ही देखते शहरों, कस्बों और गांवों में फैल गई। जिन नेता ने शान्तिकुञ्ज में इन कार्यक्रमों को देखकर अपने नेता तक यह संदेश पहुंचाया था, उनकी स्थिति पार्टी में और अच्छी हो गई। हफ्ते दस दिन बाद वे एक बार फिर शान्तिकुञ्ज आए। उन्होंने गुरुदेव से पांच सूत्री कार्यक्रमों को राष्ट्रीय कार्यक्रम बना लेने की बात कही, उस पर जोर दिया और दूसरे लोगों ने भी इसके महत्त्व को स्वीकारा। साथ ही यह भी बताया कि कार्यक्रम अपना लेने के बाद उच्चस्तरीय नेतृत्व ने किस तरह खुशी जताई। उन्होंने आला कमान के नेताओं को यहां लाने या उनके आने की इच्छा के बारे में बताया। गुरुदेव ने उन लोगों के आने की बात का यह कहते हुए स्वागत किया कि बड़ी खुशी की बात है पर साथ ही यह भी कहा कि रचनात्मक कार्यक्रम ठीक से चलाए जाएं यह जरूरी है। कहीं ऐसा न हो कि पार्टी और प्रशासन अपने नेताओं को खुश करने के लिए ज्यादा जोश में आ जाए। इन कार्यक्रमों को लेकर वे जोर जबर्दस्ती करने लगें और लोग उससे इतने घबरा जाएं कि इनमें सहयोग देने के बजाय इन से कतराने लगें।

सचमुच हुआ भी ऐसा ही। सत्तारूढ़ पार्टी के दबाव में आकर अधिकारियों ने इन कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया। साक्षरता और वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रम सफल बनाने के लिए कड़ी मेहनत की जरूरत थी। लोगों को समझाए बिना, प्रौढ़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यक्तियों को अक्षर ज्ञान कराने और वृक्ष लगाने की मुहिम चलाई नहीं जा सकती। जोर जबर्दस्ती से भी ये कार्यक्रम नहीं चल सकते। दहेज उन्मूलन के लिए लोगों से संकल्प ही कराए जा सकते थे। उसके परिणाम प्राप्त नहीं किए जा सकते थे। सरकारी अधिकारियों को लगा कि परिवार नियोजन का कार्यक्रम ही चलाया जा सकता है। इसके परिणाम या उपलब्धियों का हिसाब भी रखा जा सकता है।

अधिकारियों और सरकार समर्थक लोगों ने परिवार नियोजन को ही मजबूती से बढ़ावा देने का फैसला किया। इसके लिए कानून कायदों और मानवीय मर्यादाओं को ताक पर रख दिया। समझा बुझाकर आकर्षित करने के बजाय जोर जबरदस्ती और दबाव को धीरे-धीरे बढ़ाया जाने लगा। सरकारी कर्मचारियों, स्कूल शिक्षकों और अस्पतालों में काम करने वाले लोगों के लिए मनमाने तौर पर एक निश्चित कोटा तय कर दिया गया। कोटा पूरा करने के लिए दबाव दिया जाने लगा कि निश्चित संख्या में केस नहीं लाने पर वेतन रोक लिया जाएगा। और सचमुच ऐसा किया भी जाने लगा। तरक्की, नई भरती और यहां तक कि छुट्टियों की अर्जी मंजूर करवाने के लिए भी परिवार नियोजन के कोटे नियत कर दिए गए। उधर आला अफसर अपना लक्ष्य पूरा करने के लिए पुलिस का भी उपयोग करने लगे। किसी भी मामले में पकड़े या दो चार दिन के लिए हिरासत में रखे गए लोगों की नसबंदी सीधे हवालात से ही होने लगी।

परिवार नियोजन यों एक जरूरी और सबके लिए उपयोगी कार्यक्रम था पर इसके लिए जो तरीका अपनाया जा रहा था, उसने लोगों के मन में गुस्सा भर दिया। सरकारी अमले द्वारा लोग सताए जाने लगे। उन पर अत्याचार बढ़ने की खबरें आने लगीं। गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता इन कार्यक्रमों के प्रचार के लिए जो तरीका अपना रहे थे, उसमें भी कहीं कहीं कठिनाई आने लगी। जो लोग गायत्री परिवार की कार्यपद्धति और प्रेरणाओं से अवगत थे, उनके मन में किसी तरह का संशय या संदेह नहीं आया। कुछ इलाकों में नए लोग गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं को सरकारी कार्यक्रमों से जोड़कर देखने लगे। उन नए लोगों की टिप्पणियों और आक्षेपों से कार्यकर्त्ता थोड़ी परेशानी महसूस करते। कुछ देर परेशान रहकर फिर अपने काम में लग जाते।

इस तरह की परेशानी का निराकरण भी सामने आया लेकिन इससे पहले एक नया आयाम प्रकट हुआ। उस वर्ष गुरुपूर्णिमा २३ जुलाई को थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
गायत्री जयंती को गुरुदेव ने पांच सप्ताह के जिस अनुष्ठान का निर्देश दिया था, उसके पूरा होने का समय था। गुरु पूर्णिमा पर नए पुराने साधक शान्तिकुंज पहुंचते रहे हैं। उस वर्ष ज्यादा संख्या में पहुँचे थे क्योंकि उनके मन में अपने यहाँ गायत्री परिवार को नए सिरे से संगठित करने का उल्लास था। गुरुदेव ने कहा था कि अच्छा हो यह उत्सव अपने यहां ही मनाया जाए। किसी को आने के लिए मना नहीं किया गया था इसलिए उत्साही कार्यकर्त्ताओं ने अपने यहां गुरुपूर्णिमा के आयोजन की व्यवस्था बनाने के साथ शान्तिकुंज पहुंचने की तैयारी भी कर ली थी।

हाथ से लिखने का पुण्य

गुरुपूर्णिमा पर पहुंचने वालों में नए साधकों की खासकर युवाओं की संख्या ज्यादा थी। सुबह प्रणाम और संदेश के बाद दिन भर कार्यकर्त्ताओं में परिचय और विचार विमर्श का क्रम चला। वे क्षेत्र में आ रही कठिनाइयों का जिक्र करते हुए अपने अनुभव सुना रहे थे। इन चर्चाओं में यह भी शामिल था कि सरकारी तंत्र द्वारा कभी कभार कैसी बाधाएं खड़ी की जाती हैं।

दोपहर बाद तीन बजे के आसपास वाटिका में बैठे कुछ कार्यकर्त्ता इसी तरह अपनी आपबीती सुना रहे थे। इन लोगों में ज्यादातर नए थे और कुछ डेढ़ महीने का रामायण सत्र पूरा कर क्षेत्र में हो भी आए थे। उन्हें क्षेत्र में रामायण कथा कहने के तीन चार मौके मिल चुके थे। महाराष्ट्र के दत्तात्रेय जोशी ने बताया कि लोगों को पढ़ने लिखने की बात कहें तो उनके गले नहीं उतरती पर अध्यात्म का पुट लगा दें तो आसानी से मान जाते हैं। कार्यकर्त्ताओं ने अध्यात्म के पुट का अर्थ पूछा। दत्तात्रेय जोशी ने कहा, 'हम लोग कहते हैं कि रामायण की चौपाई का पाठ करने से पुण्य मिलता है। उसे अपने हाथ से लिखकर पाठ करें तो पाठ का प्रभाव सौ गुना बढ़ जाता है। यह समझाने पर लोग प्रौढ़ शाला में आने के लिए आसानी से तैयार हो जाते हैं।'

प्राचीन काल में पढ़ी हुई विद्या को याद करने और उसे अपने हाथ से लिखने का उदाहरण भी दिया जाता। परिवार नियोजन, वृक्षारोपण, दहेज उन्मूलन और अस्पृश्यता निवारण के लिए भी धार्मिक प्रसंगों से काफी सहायता मिल रही थी अपनी बात लोगों के गले उतारने के लिए ज्यादा तर्क वितर्क नहीं करना पड़ता और प्रमाण आदि भी नहीं देना पड़ते थे। वाटिका में बैठे आठ दस कार्यकर्त्ता भी अपने-अपने अनुभव सुनाने लगे। उस टोली के ही एक सदस्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
प्रियरंजन दास भी वहां आ गए। वे साहित्य स्टाल की ओर थे। आते ही उन्होंने कोई सूचना देने के अंदाज में कहा, 'सुना है यहाँ माधवराव जी आए हैं।'

माधवराव महाराष्ट्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता थे। उनके आने की बात सुनकर वाटिका में बैठे कार्यकर्त्ता थोड़ा चौंके। फिर दत्तात्रेय ने कहा, 'त्रेता में जब असुरों के अत्याचार बढ़ने लगे थे तो ऋषि मुनियों ने विश्वामित्र के आश्रम में शरण ली थी या नहीं, ऐसा ही समझो बंधुओं। बहुत लोग इस मिशन में आएंगे और यहां से पोषण संरक्षण लेंगे।

बातचीत चल ही रही थी कि किसी ने बीच में रोका, 'ऋषि मुनियों के आश्रम में सभी विश्वासों और निष्ठाओं के लोग जाया करते थे। हमारे सामने तो समस्या यह है कि क्षेत्र में जो कठिनाइयां आ रही हैं उनका मुकाबला कैसे करें? उन कार्यकर्त्ता के कहने पर टोली के ही किसी सदस्य ने कहा, 'गुरुदेव ने सुबह ही (प्रवचन में) कहा है न कि तुम सिर्फ भगवान का काम शुरु कर दो। यह चिंता छोड़ दो कि उसके नतीजे क्या बनते हैं। यह चिंता भगवान स्वयं कर लेंगे।'

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दस
रघुवर के गुन गाओं

वर्ष १९७५ की गुरु पूर्णिमा पर गुरुदेव के एक और निर्देश ने कार्यकत्ताओं की कठिनाई बहुत कुछ दूर कर दी थी। गायत्री जयंती को पांच सप्ताह का सृजन अनुष्ठान तय कर गुरुदेव ने परिजनों से सृजन सैनिक की भूमिका में खरा उतरने के लिए कहा था। इस अवधि में गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं को प्रतिदिन लोगों के बीच जाने और अपनी बात करने का निर्देश था। कम से कम दस लोगों तक नए युग का संदेश पहुंचाने की प्रेरणा हमेशा दी ही जाती रही है, इस बार पांच सप्ताह में ही दस नए लोगों से संपर्क करना था। उत्साही कार्यकर्त्ताओं ने इस निर्देश को पूरी तरह अपनाया। अपना काम निष्ठापूर्वक पूरा करने वाले कार्यकर्त्ताओं में कई शान्तिकुंज पहुंचे थे और वे भी अपने अपने अनुभवों का आदान-प्रदान कर रहे थे।

www.vicharkrantibooks.org

पांच सूत्री कार्यक्रम करीब डेढ़ महीने पहले ही घोषित किए जा चुके थे, उनके बारे में कार्यकर्त्ताओं ने अपने आसपास के लोगों को बताना समझाना शुरु कर दिया था। सरकार ने या सरकार समर्थित युवा संगठनों ने इन कार्यक्रमों को बाद में उठाया था, इसलिए भी लोगों को ज्यादा असमंजस नहीं हुआ। फिर भी गुरुपूर्णिमा पर गायत्री परिवार ने इन कार्यक्रमों का अतिक्रमण किया। इनका शिक्षण और प्रचार तो चलता ही रहा, परिजनों को शान्तिकुञ्ज आने और यहां प्रशिक्षण लेने के लिए कहा गया। गुरुदेव ने अगले वर्ष दस नए शिक्षण शिविरों की घोषणा की थी। उनमें एक रामायण सत्र चल ही रहा था। जिन कार्यकर्ताओं ने पांच सप्ताह का अनुष्ठान भलीभांति पूरा किया था, उन्हें इस सत्र में जरूर शामिल होने के लिए कहा गया था। गुरुपूर्णिमा पर शान्तिकुंज आए उन कार्यकर्त्ताओं में से कुछ रामायण सत्र में आने की मनःस्थिति बना रहे थे। तैयारी भी कर रहे थे।

करीब तीन महीने पहले शुरु हुए रामायण सत्रों में प्रशिक्षण ले चुके वानप्रस्थियों की संख्या तीन अंकों की संख्या पार कर चुकी थी। अब इस सत्र में युवा परिजनों को भी प्रवेश दिया जाता था। उनके लिए संक्षिप्त कार्यक्रम तैयार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने के काम में काशी से आए एक साधक रामचरित द्विवेदी को लगाया गया। वे चालीस दिन का अनुष्ठान करने शान्तिकुंज आए थे। नियमित जप ध्यान के साथ रामचरित मास पारायण भी कर रहे थे। उनके अनुष्ठान में दस दिन और बाकी थे। पाठ्यक्रम तैयार करने में कुछ ज्यादा समय लग सकता था। इसके लिए पूछा गया तो उन्होंने उत्साह और उमंग के साथ हामी भर ली। गुरुदेव ने कहा कि इसके लिए दो तीन दिन का समय भी काफी है। इस अवधि में पाठ्यक्रम का आधार और स्वरूप तैयार हो जाएगा। बाकी काम आगे चलता रहेगा। रामचरित ने गुरुदेव के इन वचनों को अपने लिए एक अवसर माना और तय कर लिया कि काम पूरा हो गया तो भी वे आगे रुके रहेंगे। गुरुदेव कहेंगे तभी यहां से जाने का विचार करेंगे। उससे पहले जाने के बारे में सोचेंगे ही नहीं।

रामचरित अगले दिन ही मानस की पोथी और कागज कलम लेकर गुरुदेव के पास चले गए। सुबह का वक्त था। सामान्य दिनों में वे रामचरित अनुष्ठान के लिए जप ध्यान करते थे। उस दिन जप अनुष्ठान बाद में करने का निश्चय किया और संक्षिप्त पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए चले गए। गुरुदेव ने उन्हें रामायण के विशिष्ट अंशों पर टिप्पणियां लिखाना शुरु किया। वे संकेत कर देते थे और द्विवेदी जी उन संकेतों के अनुसार मानस के प्रसंग नोट करते चले जाते। दो दिन में ही मानस से ऐसे प्रसंगों का चयन पूरा हो गया, जिनका उपयोग सप्ताह कथा के लिए किया जाना था। रामचरित को दोनों दिन गुरुदेव के पास आधा-आधा घंटा बैठना पड़ा था। दोनों दिन गुरुदेव के सान्निध्य में बैठकर रामचरित ने बहुत आनंद अनुभव किया। लगा कि जैसे एक बड़ा अनुष्ठान पूरा हो गया। गुरुदेव ने जिन प्रसंगों पर चिह्न लगवाए और उनके रहस्य को उद्घाटित करती हुई टिप्पणियां लिखाई थीं, उनके आधार पर करीब सोलह सौ पृष्ठों की पाण्डुलिपि तैयार हुई थी। अगर इतने पृष्ठ सिर्फ लिखना ही होते तो कम से कम डेढ़ महीना समय लगता। आश्चर्य था कि डेढ़ महीने में कठिनाई से होने वाला काम डेढ़ सप्ताह में ही पूरा हो गया।

दो दिन तक गुरुदेव के सान्निध्य में रहने के दौरान, उनसे टिप्पणियों के नोट लेते समय रामचरित को कुछ विलक्षण अनुभूतियां भी हुईं। उनका कहना था कि इन अनुभूतियों ने रामकथा के सम्बंध में ऐसी ग्रंथियों को खोला जो अभी तक अगम्य थीं। अगम्य होने के कारण मैंने उनके बारे में सोचना ही छोड़ दिया था। गुरुदेव जब रामकथा के प्रसंग नोट करा रहे थे तो उन प्रसंगों की बारी भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
आई और मेरा मन उन्हें लेकर एक बार फिर अटका। मैंने ऐसे प्रसंगों के बारे में पूछना चाहा लेकिन पूछने की स्थिति ही नहीं आई। इस सम्बंध में प्रश्न करने से पहले ही समाधान हो गया।

एक प्रसंग राम और लक्ष्मण द्वारा विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा का था। मारीच और सुबाहु नामक राक्षसों के उपद्रव रोकने के लिए राम और लक्ष्मण दिव्य अस्त्रों का उपयोग करते हैं। वे भगवान हैं। संकल्प मात्र से कुछ भी करने में समर्थ हैं लेकिन वे मनुष्य की लीला कर रहे हैं। उस अवस्था में उन्होंने जिन अस्त्र शस्त्रों का उपयोग किया, वे दैवी थे या वास्तविक थे? उन्हें क्या इसी लोक में बनाया गया था? यज्ञ रक्षा का प्रसंग नोट करते समय रामचरित के मन में यह प्रश्न बार-बार गूंजने लगा। प्रश्न का यह अंश भी गूंजने लगा कि क्या आज भी इस तरह के अस्त्र शस्त्र बनाए जा सकते हैं? यह भाव उनके मन में दो तीन बार आया। उन्होंने अपने प्रश्न या संशय के बारे में गुरुदेव से कुछ भी नहीं कहा। संशय को वे दबाते ही रहे। तभी टिप्पणियों को छोड़कर गुरुदेव ने कहा, 'रामचरित तुम्हारे मन में जो सवाल उठ रहा है न कि इस तरह के शस्त्र अस्त्र संभव है या नहीं तो सुन लो बेटा कि जो लिखा गया है वह सही है। योग और तप से उस तरह की शक्तियां प्राप्त की जा सकती है। आज भी और इस समय भी।'

रामचरित ने गद्‌गद भाव से गुरुदेव के निहारा और सिर्फ इतना ही कहा, 'जी गुरुदेव।' उनकी स्वीकारोक्ति में संशय दूर हो जाने की संतुष्टि सुनाई दे रही थी। गुरुदेव ने फिर कहा 'इस तथ्य को तुम अपनी साधना से भी समझ सकते हो और यहां अभी इसी वक्त भी।' रामचरित किसी निश्चय पर पहुंचे उससे पहले ही गुरुदेव ने उठने का इशारा किया और उनके कक्ष के बाहर वाले बरामदे में ले गये। वहां खिड़की से बाहर झांकने के लिए कहा। रामचरित ने देखा कि बरामदे से बाहर शान्तिकुंज की सीमा शुरु होने तक जैसे बिजली का करण्ट दौड़ रहा है। आकाश में चमकने वाली बिजली की तरह विद्युतधारा प्रवाहित हो रही है और उसकी रोशनी में परिसर नहाया हुआ है। कुछ क्षण तक दृश्य दिखाई दिया और फिर लुप्त हो गया। गुरुदेव ने रामचरित को वापस चलने का इशारा किया और कक्ष में लौटते हुए बोले, 'यह इन दिनों रचा गया रक्षा विधान है। एक बार इसकी परिधि में आने के बाद किसी साधक को अवांछित विघ्न बाधाओं का भय नहीं रहेगा। वे उन्हें नहीं सताएगीं।'

गुरुदेव ने कहा 'तुम क्षेत्रों में कार्यकर्त्ताओं को होने वाली दिक्कतों के बारे में जानते सुनते ही रहते हो। उन्हें एक बार यहां आने और कुछ समय तक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
साधना करने के लिए कहा है। इसी उद्देश्य से कहा है कि वे अपने भीतर स्वयं ऊर्जा जगाने के अलावा यहां के व्यवस्था विधान से भी संपृक्त हो जाएं।' कहते हुए गुरुदेव अपनी जगह बैठ गए थे।

बैठते हुए उन्होंने कहा, 'अब तुम पूछोगे कि इस व्यवस्था के बारे में तुम्हें बताने की क्या जरूरत थी तो सुनो! विश्वामित्र के आश्रम में राम और लक्ष्मण को जिस ऊर्जा से ओतप्रोत वातावरण में रखा गया था, वहां दिव्यास्त्रों का निर्माण भी किया जा सकता था और तुम्हें यह अनुभव कराना इसलिए जरूरी था कि जब साधक अपनी कही और विचारी हुई बात में प्रत्यक्ष की भांति विश्वास करे तभी उसके प्रतिपादन में बल आता है। रामायण कथा कहते हुए इस बल का ध्यान रखना चाहिए। तथ्य में थोड़ी बहुत चूक हो तो कोई बात नहीं पर आस्था और निष्ठा में कहीं कोई संशय नहीं होना चाहिए।'

कुपित हुए विद्वज्जन

रामकथा पर आधारित पहले वानप्रस्थ शिविर में करीब साठ समयदानी आए थे। डेढ़ महीने में उन्होंने इतनी कुशलता अर्जित कर ली कि क्षेत्र में जाकर लोगों को रामकथा का मर्म समझा सकें। अगले शिविर में फिर करीब पचास रामायणी वानप्रस्थी तैयार हुए। सौ सवा सौ मानस वक्ता तैयार होने और कार्यक्रमों में जाने लगने की खबर धार्मिक जगत में आग की तरह फैल गई। उसकी अलग अलग प्रतिक्रिया हुई। प्रसन्न होने वाले लोग कम थे। आलोचना करने वालों की संख्या ज्यादा थी। आलोचना करने वालों ने रामायणी वानप्रस्थों को अधूरे, अविद्वान और भीड़तंत्र की उपज बताया था। कुछ पंडितों ने तो विरोध की योजना भी बनाई। उनमें से कुछ की दलील थी कि मानस के कम से एक सौ आठ पारायण करने के बाद ही उस पर प्रवचन का अधिकार मिलता है। जो रामायणी वानप्रस्थ कथा कह रहे हैं, उन्होंने एक सौ आठ तो क्या आठ बार भी पाठ नहीं किया होगा।

रामायण सप्ताह और प्रवचनों का विरोध यहां तक बढ़ा कि कुछ लोग शान्तिकुंज भी पहुंच गए। इनमें मानस मर्मज्ञ त्रिलोचन शर्मा, रामकथा के प्रसिद्ध वक्ता कपिल महाराज के शिष्य अनिकेत स्वामी, पंडित रामाधार शुक्ल, मैथिलीशरण आदि शामिल थे। उन्होंने अपने आने की सूचना तो दी पर मंतव्य नहीं बताया कि वे विवाद या विरोध के लिए आ रहे हैं। गुरुदेव से भेंट निश्चित करते हुए उन्होंने अपने मानस मर्मज्ञ होने का परिचय विस्तार से दिया था। उन विद्वानों ने आश्विन नवरात्रियों से पहले का समय चुना। तिथियां संभवतः १७-१८ अगस्त १९७५ थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यथासमय रामायणी विद्वानों ने शान्तिकुंज के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में वे तरह-तरह की कल्पनाएं करते आ रहे थे। उन कल्पनाओं में रंग भरकर वे उसके मजे भी लेते। वे सोच रहे थे कि गुरुदेव उनके पक्ष को सुनने से कतराएंगे या सुनेंगे तो भी समाधान नहीं कर पाएंगे। उनकी एक कल्पना यह भी थी कि गुरुदेव मिलने से पहले अपना बड़प्पन जताने के लिए तमाम तरह की औपचारिकताएं बरतेंगे। इस बड़प्पन में विद्वानों की आवभगत के तमाम तामझाम होंगे। हो सकता है शिविर प्रवचन के दौरान ही गुरुदेव उन्हें भी मंच पर आमंत्रित करें। उनकी बात सुनें और फिर जवाब दें। विद्वज्जन यह भी सोच रहे थे कि रामायण कथा और सप्ताह के शास्त्रीय पक्ष की चर्चा प्रभावपूर्ण होगी। उनमें और गुरुदेव में जो शास्त्रार्थ या संवाद होगा, वह शिविर में आए कुछ साधकों को तो विमुख कर ही देगा। यानी उन्हें शान्तिकुंज में अपने नए शिष्य बनने की संभावना दिखाई दे रही थी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विद्वानों के मन में इस तरह की अपेक्षा और आशाएं शान्तिकुञ्ज पहुंचने तक जोरशोर से फलती फूलती रहीं। शान्तिकुञ्ज पहुंचते ही उन्हें सब कुछ उलटा होता दिखाई दिया। सोचा था कि उनकी अगवानी बहुत भव्य तरीके से होगी। बैण्ड बाजे वाले खड़े होंगे, आश्रम के वरिष्ठ कार्यकर्ता फूल मालायें लिए खड़े होंगे। उनकी आरती उतारी जायेगी, पारंपरिक रीति से स्वागत किया जाएगा आदि आदि, लेकिन आश्रम में ऐसा कुछ नहीं हुआ। विद्वानों का स्वागत करने के लिए प्रबंधक स्तर के दो वरिष्ठ कार्यकर्ता शान्तिकुञ्ज के मुख्य द्वार पर खड़े थे। विद्वानों के पहुँचते ही उन्होंने आगे बढ़कर स्वागत किया। झुककर हाथ जोड़े और नमस्कार कहा। द्वार पर ही कहा कि आप लोगों की हम सभी प्रतीक्षा कर रहे थे। यहां के शिविरार्थी भी आपको सुनने के लिए उत्सुक हैं।

पंडित त्रिलोचन शर्मा ने कहा 'प्रवचन का समय हो गया है क्या? हम लोगों को शायद देर हो गई।' प्रतिनिधि कार्यकर्ता ने कहा, 'नहीं। प्रवचन तो गुरुदेव के ही होते हैं। आपका कार्यक्रम शाम के समय है।' सुनकर त्रिलोचन जी को लगा कि उनके आने से आश्रम में कोई हड़बड़ी नहीं है। उन लोगों की चुनौती और आने की सूचना पर आश्रम में स्वागत का भाव तो है पर कोई आवेश या उत्तेजना नहीं है। मुख्य कार्यकर्ताओं ने विद्वानों की अगवानी सामान्य किन्तु आत्मीय ढंग से की थी। उससे विद्वज्जन अभिभूत हुए थे। आठ दस लोग साथ साथ चलने लगे। वरिष्ठ कार्यकर्ता विद्वानों को उनके कक्ष में ले गये, जहाँ उनके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ठहरने की व्यवस्था की गई थी। वहाँ उन्हें विधिवत ठहराया, जलपान कराया और बता दिया कि कुछ देर विश्राम कर लें। गुरुदेव चार बजे के आसपास आपसे भेंट करेंगे।

सुनकर अनिकेत स्वामी ने कलाई में बंधी घड़ी देखी। उस समय सवा ग्यारह बज रहे थे। चार बजे मिलने की बात पर वे बोले, 'ओहो! लगता है आचार्यश्री को हम लोगों की यात्रा के बारे में मिनट मिनट की जानकारी है। कितने सुविचारित ढंग से चर्चा का समय निश्चित हुआ। हम लोग यात्रा की थकान दूर कर तरोताजा हो जाएंगे।'

कह कर अनिकेत स्वामी हंस दिए और अन्य विद्वान भी मुसकरा उठे। विद्वानों को कक्ष तक छोड़ने आए प्रतिनिधि उनसे भोजन आदि के बारे में पूछकर उसकी व्यवस्था बनाकर चले गए। उनके जाने के बाद पंडित रामाधार शुक्ल ने कहा, 'इस बार हमारा पाला कोरे पंडिताऊ लोगों से नहीं है। कोई धुरंधर विद्वान ही सामने हैं।'

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अनिकेत स्वामी ने कहा, 'व्यवहार और सत्कार तो बढ़िया ही दिखाई देता है। असल स्थिति तो प्रत्यक्ष मिलने और संवाद के बाद ही पता चलेगी।' तीनों विद्वान इसी तरह की चर्चाएं करते रहे और गुरुदेव से भेंट के समय अपनी रणनीति बनाते सुधारते रहे। इसी बीच भोजन आ गया। भोजन लेकर आए कार्यकर्ताओं ने जिस ढंग से भोजन कराया, उसने भी विद्वानों को मुग्ध कर दिया। उन्हें लग रहा था कि किसी आश्रम या संस्था में नहीं बल्कि अपने किसी करीबी रिश्तेदार के घर पर ही आए हैं। भोजन के बाद कुछ देर बातचीत करते हुए ही पंडित गण विश्राम में चले गए।

गहरी नींद आई। उन लोगों ने बाद में बताया कि किसी नई जगह पर आराम में स्वाभाविक कठिनाई होने जैसा कुछ लगा ही नहीं। अपने घर में खा पीकर सो जाना जितना सहज और स्वाभाविक लगता है, वैसा ही यहाँ भी प्रतीत हुआ। एक क्षण के लिए भी यह नहीं लगा कि किसी नई जगह आए हैं। इसीलिए सोते सोते कब ढाई बज गए कुछ पता ही नहीं चला। यात्रा की थकान भी शायद एक कारण रही हो कि करवट बदलने की सुध भी नहीं रही। नींद उस समय खुली जब शान्तिकुञ्ज के एक कार्यकर्ता ने आकर जगाया। गुरुदेव से मिलने का समय हो रहा था। उसी का स्मरण दिलाने और तैयार होने के लिए कहने वह कार्यकर्ता आए थे। उनकी सूचना पाकर पंडित जन तैयार होने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समय की पाबंदी और नियमानुवर्तिता पर उन्होंने एक बार फिर अहोभाव जताया। उन्होंने तैयारी के नाम पर अपने पोथी पत्र संभाले। घर से चलते समय जो नोट्स तैयार किए थे, उनका अवलोकन किया। आवश्यक संदर्भ पुस्तकों के साथ उन टिप्पणियों को भी साथ रख लिया। पंडित लोग गुरुदेव से चर्चा के लिए पूरी तैयारी के साथ आए थे। अपने कमरे से निकलकर जब वे गुरुदेव से मिलने जा रहे थे तो पोथी पत्रे उठाए जाते लोगों ने उनकी विद्वत्ता को नमन किया। कुछ शिविरार्थियों ने उनकी और विचित्र भाव से भी देखा। उन्हें गुरुदेव से चर्चा के लिए ग्रंथ आदि लेकर जाते हुए इन पंडितों को देखकर आश्चर्य हो रहा था। कुछ साधकों के चेहरों पर उपहास के भाव भी आए।

इन प्रतिक्रियाओं पर ध्यान दिए बिना पंडितजन गुरुदेव से मिलने के लिए उत्कंठा से जा रहे थे। सीढ़ियों तक पहुंचे ही थे कि सामने से आ रहे एक वानप्रस्थी ने पंडितों को प्रणाम किया। अनिकेत स्वामी ने उसका अभिवादन स्वीकार करते हुए आशीर्वाद मुद्रा में हाथ उठाया। रामाधार, त्रिलोचन शर्मा और मैथिलीशरण आदि ने भी इसी तरह अभिवादन किया। उन वानप्रस्थी ने निवेदन सा करते हुए कहा, 'कुछ क्षण हम लोग यहां कार्यालय में बैठ लें, गुरुदेव से मिलने में अभी समय है। वहां अभी शिविरार्थी हैं।'

रामाधार शुक्ल ने कलाई में बंधी घड़ी देखी। साढ़े तीन बज रहे थे। अभी आधा घंटा बाकी है। वे उन वानप्रस्थी के साथ कार्यालय के पास बने कक्ष में चले गए। वानप्रस्थी स्वयंसेवक भी उनके साथ थे। उन्होंने अपना परिचय दिया, 'मेरा नाम जयदयाल है। मुझे आपकी सेवा में रखा गया है।'

बैठते हुए उन विद्वानों ने भी एक एक कर अपना परिचय दिया। इस काम में एक मिनट समय ही लगा होगा कि जयदयाल वानप्रस्थी ने कहा, 'आप लोगों को यहां चल रहे रामायण सत्रों से कुछ नाराजी है। आप अन्यथा न लें तो हम लोग उस विषय में थोड़ी चर्चा यहीं कर लें।'

'रामायण के आयोजनों से किसे नाराजी हो सकती है?' पंडित त्रिलोचन शर्मा ने कहा, 'गुरुदेव ने उन आयोजनों के स्वरूप में जो परिवर्तन किया है, दरअसल हमें उस पर आपत्ति है।'

'गुरुदेव ने पारंपरिक स्वरूप में तो कोई परिवर्तन नहीं किया है पंडित जी। कथा विधि विधान से ही होती है।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'हां,' त्रिलोचन ने कहा, 'आपके अनुसार वह कोई परिवर्तन नहीं है लेकिन रामकथा के गायक सभी सुधी जन मानते हैं कि आपने जो व्यवस्था शुरु की है उससे पारंपरिक आयोजन विकृत हुए हैं।'

पंडित जी के स्वर में थोड़ा आवेश उभरने लगा था। अपनी बात में और खुलापन तथा आक्रामकता लाते हुए उन्होंने कहा, 'रामायण कथा करने के लिए सभी विद्वान एक सौ आठ से एक हजार पाठ तक करते हैं। आप आठ बार भी पाठ नहीं कराते। और तो और पांच छह सप्ताह में ही थोड़ा बहुत सिखाकर रामायणी की उपाधि दे देते हैं।'

जयदयाल ने बीच में टोका, 'यहां कोई उपाधि वगैरह तो नहीं दी जाती। न ही गुरुदेव किसी को रामकथा का मर्मज्ञ या विद्वान घोषित करते हैं।'

इस बार रामाधार शुक्ला बोले। उनका स्वर कुछ ऊंचा हो चला था। उन्होंने कहा, 'तो फिर यह क्या झमेला है? आप लोग किस तरह का शिक्षण देते हैं? लोगों को क्या सिखाते हैं? पंडित रामाधार का स्वर ऊंचा होते देख उन्हीं के साथ आए विद्वान अनिकेत स्वामी ने रोका। उन्होंने कहा, 'पंडित जी हम लोग यहां संवाद के लिए आए है, विवाद के लिए नहीं। हमें अपनी बात शास्त्रीय आधार पर करनी चाहिए और जयदयाल जी को सुनने का धैर्य भी रखना चाहिए।'

'कोई बात नहीं स्वामी जी', जयदयाल वानप्रस्थी ने अनिकेत स्वामी को संबोधित करते हुए कहा, 'त्रिलोचन जी और रामाधार जी जिस तरह कहना चाहें, कहने दीजिए। उनका रोष अपनी जगह सही है। उनके रोष में रामकथा की पवित्रता और गरिमा की चिंता ही है। हम अपनी बात उन तक शायद ठीक से पहुंचा नहीं पाए हैं।'

वानप्रस्थी का यह उत्तर सुनकर पंडित जन अवाक रह गए। इतना सौम्य उत्तर उनके लिए अप्रत्याशित था। वे सोच रहे थे कि जवाब में इतनी ही तीखी प्रतिक्रिया होगी पर शान्त और संयत उत्तर सुनकर वे चुप रह गए। उन्हें चुप देखकर वानप्रस्थी ने कहा, 'आप जैसा सोच रहे हैं, वैसी बात है नहीं मान्यवर! गुरुदेव ने पारंपरिक आयोजनों से कोई छेड़छाड़ नहीं की है बल्कि जनसाधारण में मानस के पाठ और आपसी चर्चा का जो स्वरूप है उसे ही व्यवस्थित किया है।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुनकर तीनों विद्वान उत्सुक हुए। तीखे तेवर दिखा चुके पंडितों के मुंह से अनायास ही 'जी' निकल गया। वानप्रस्थी जी ने कहना जारी रखा, 'हम सब लोग देखते हैं कि रामायण सिर्फ विद्वानों के लिए ही उपयोगी नहीं है। सामान्यजन भी इसका अध्ययन करते हैं, आपस में चर्चा करते हैं, पाठ पारायण करते हैं। चौपालों और खेत खलिहानों तक में मानस की चर्चा और कथा होती है।'

अनिकेत स्वामी ने हामी भरी कि आप ठीक कहते हैं। वानप्रस्थी जी कहे जा रहे थे कि, 'उस लौकिक स्वरूप को निकट से देखने पर आसानी से समझा जा सकता है कि मानस के वे आयोजन सिर्फ लोकरंजन के लिए ही हैं। भगवान राम के चरित्र से लोगों को जो शिक्षा मिलनी चाहिए वह नहीं मिल पाती। राम ने सूर्पणखा की नाक काटी। लक्ष्मण ने शबरी का मखौल उड़ाया और रावण ने अशोक वाटिका में यह कहा, वह कहा। इस तरह की बातों में ही समय बीत जाता है। उस चर्चा से सार्थक कुछ उभरकर नहीं आता।'

'हां यह तो है!' इस बार पंडित त्रिलोचन ने हामी भरी। वानप्रस्थी ने कहा, 'यहां मानस और रामकथा के शास्त्रीय और पारंपरिक स्वरूप को छुआ भी नहीं है। लोक में प्रचलित चर्चा को क्रमबद्ध और संगठित भर किया गया है। यहां जो पाठ्यक्रम चलाया जाता है, उसमें सहज श्रद्धालु लोग ही आते हैं। वे मानस या रामकथा का विद्वान होने का दावा नहीं करते। उन्हें निर्धारित पाठ्यक्रम का अभ्यास भर कराया जाता है। उस अभ्यास को सीख कर कार्यकर्ता चौपालों, मंदिरों और जहां तहां मानस की चर्चा में हिस्सा लेने वाले लोगों को इकट्ठा करते हैं। उनसे रामकथा की चर्चा करते हैं और उस चर्चा में आदर्श परिवार, आदर्श समाज बनाने के लिए आवश्यक प्रेरणाएं उभारते हैं। भाई भाई के संबंध कैसे होने चाहिए, माता और संतान के, पिता पुत्र के, मित्र के स्वामी और सेवक के तथा यहां तक कि दो शत्रुओं के संबंध और व्यवहार की व्याख्या भी रामकथा में है। हमारे कार्यकर्ता उसी व्याख्या को उभारते हैं।''

कह कर वानप्रस्थी कुछ देर के लिए रुके। उन्होंने तीनों विद्वानों की ओर देखा। उन विद्वानों के चेहरे पर भाव बदल रहे थे। वे मंत्र मुग्ध से दिखाई दिए। त्रिलोचन पंडित ने मानस की एक टीका भी सामने खोल रखी थी। उन्होंने वह ग्रंथ बंद करके एक ओर रख दिया और ध्यान से सुनने लगे थे। अनिकेत स्वामी ने कहा, ''मानस के लोकरंजन पक्ष को ही हम लोग महत्त्व दे रहे थे शायद। उसके लोक मंगलकारी पक्ष की ओर तो हमने ध्यान भी नहीं दिया था।''

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"नहीं पंडित जी, ऐसी बात नहीं है," वानप्रस्थी ने अनिकेत स्वामी को देखते हुए कहा, "मानस का विद्वानों और बुद्धिजीवियों के लिए भी उपयोग है। उसका अपना महत्त्व है। बुद्धिजीवी समुदाय में किसी शास्त्र को महत्त्व नहीं मिलेगा तो सामान्यजनों में भी उसकी प्रतिष्ठा नहीं होगी। प्राचीन काल में वेदों का अध्ययन मनन कुछ विशेष मेधावी विद्वानों में ही प्रचलित था। पर सामान्य जनों में संध्या उपासना और मंत्र आराधना के रूप में चलते थे। उसके लिए विशिष्ट विद्वत्ता की आवश्यकता नहीं थी। विद्वानों से सामान्यजनों की श्रद्धा स्थिर होती थी और सामान्य जनों से विद्वानों को बल मिलता था।'

वानप्रस्थी यह कह ही रहे थे कि बाहर से शिवप्रसाद मिश्र की पुकार सुनाई दी। वे कह रहे थे, 'जयदयाल जी पंडित जी को गुरुदेव के पास ले जाओ भाई। वहां से संदेश आ गया है।' सुनकर पंडित जन तुरंत उठकर खड़े हो गए। वानप्रस्थी जी उनकी अगवानी करते हुए चले। पीछे-पीछे होते हुए उन विद्वानों ने कहा, 'ये पुस्तकें और पोथी वगैरह यहीं रहने दें। गुरुदेव के दर्शन कर लौटते हुए वापस ले लेंगे।'

पोथियां छोड़ी

'जैसा आप उचित समझें,' वानप्रस्थी ने कहा। पंडित गण वे पुस्तकें गुरुदेव से चर्चा और विवाद में उपयोग के लिए लाए थे पर अब उन्हें इनकी तनिक भी जरूरत नहीं रह गई थी। लगा कि सारा विरोध और वितर्क शांत हो गया है। समाधान से जो तृप्ति मिलती है, उसका आस्वाद लेते हुए वे गुरुदेव के पास पहुंचे। कक्ष में पहुंचकर देखा गुरुदेव अपने आसन के पास खड़े उन्हें ही निहार रहे थे। द्वार तक पहुंचने और कक्ष के भीतर आ जाने तक उन्हें प्रतिपल लगता रहा कि गुरुदेव उन्हें ही देख रहे थे। उन्हें भीतर आते देख गुरुदेव ने अभिवादन के लिए दाहिना हाथ उठाया ही था कि त्रिलोचन शर्मा ने लगभग दौड़ते हुए से प्राणिपात प्रणाम किया। रामाधार शुक्ल और अनिकेत स्वामी ने भी उनका अनुकरण किया। गुरुदेव ने उनका कुशल क्षेम पूछा। जानने के बाद वे बोले, 'आप लोगों को रामकथा के हमारे तौर तरीके में कोई त्रुटि दिखाई देती है। बताइए! हम लोग उसे दूर करने की कोशिश करेंगे।'

गुरुदेव ने यह बात अत्यन्त सहज ढंग से कही थी। इस सहजता ने या गुरुदेव के कक्ष के वातावरण ने या किसी सूक्ष्म अनुभूति ने उन विद्वानों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
अभिभूत कर दिया। तीनों के कंठ से एक साथ निकला, 'नहीं नहीं गुरुदेव। कोई त्रुटि नहीं है। हम लोगों को ही दृष्टिदोष हो गया था। वह अब मिट गया है। आप हमारे दोष को क्षमा कीजिए।'

तीनों विद्वानों की ग्लानि को दूर करते हुए गुरुदेव ने पूछा, 'मानस चतुश्शती समारोह कैसा चल रहा है? आप लोग भी इसमें भाग ले रहे हैं या नहीं?'

'वह तो सरकारी आयोजन है गुरुदेव।' इन विद्वानों ने सहज होने के प्रयास में कहा, 'गोष्ठियां सम्मेलन सेमिनार और पुरस्कार आदि। कुछ संस्थाएं बन गई हैं। रामायण का अध्ययन अध्यापन करने वालों को इन संस्थाओं के कार्यक्रमों में बुलाया जाता है। हम लोगों को भी कभी कभार बुलाते हैं। चले जाते हैं पर इन सम्मेलनों और भाषणों से हमें संतोष नहीं होता।'

'संतोष का केन्द्र आपको स्वयं ढूंढ़ना चाहिए। वह मिल ही जाएगा। भगवान की यह दुनिया इतनी विराट और विशाल है कि प्रत्येक के लिए करने को पर्याप्त अवसर है।' गुरुदेव ने कहा। इसके बाद तीनों विद्वान अपने आपको रोक नहीं सके। उनके मुंह से निकल ही गया, 'हमें अपनी शरण में ले लें गुरुदेव। आप ही हमें मार्ग बताइए।'

जिस समय तीनों विद्वान यह निवेदन कर रहे थे, उस समय उन्हें लग रहा था कि उनका अपना आपा पिघल रहा है। अपने व्यक्तित्व से कोई गरम और तरल पदार्थ बहता हुआ निकल रहा है। उसके स्थान पर एक शीतलता फैलती जा रही है। बर्फ जैसी यह शीतलता गुरुदेव की छवि से निकल कर उन तक आ रही है। इस अनुभूति ने उन्हें अपने भीतर प्रवेश कराया। अंतर्जगत में गहराई तक गए और वहां एक वृद्ध वैष्णव संन्यासी की छवि दिखाई दी। स्मृति पर थोड़ा जोर देते ही स्पष्ट हो गया कि यह छवि गोस्वामी तुलसीदास की है। गोस्वामीजी संस्कृत में कुछ पद लिख रहे हैं। लिखते लिखते उनका ध्यान इन तीनों पंडितों की ओर जाता है। उन्हें देखकर तुलसीदास कहते हैं, 'अब आप कुछ भी नहीं ले जा सकेंगे। मैंने अपना सब कुछ भगवान श्रीराम के चरणों में निवेदित कर दिया है।'

तुलसीदास इतना ही कहते हैं और अंतर्ध्यान हो जाते हैं। उनके लुप्त होते ही तीनों पंडित जैसे अंतर्जगत से बाहर आए। उन्होंने आंखें खोली, देखा सामने गुरुदेव खड़े हैं। उन्हें देखते हुए त्रिलोचन, अनिकेत और रामाधार पंडित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
ने अपनी आंखें मलीं। अभी, हाल में जो देख रहे थे, वह सपना है या यह सपना है। सामने गुरुदेव दिखाई दे रहे हैं, पलक झपकती है तो धनुष बाण लिए भगवान राम की छवि दिखाई देती है। जिस क्षण छवि दिखाई देती है, उस क्षण लगता है कि उनके कंधे पर धनुष बाण सजा हुआ है और वे पहरा दे रहे हैं। इस अनुभूति के साथ एक अपराध बोध गहराता है।

यह अपराध बोध बाबा तुलसीदास की कुटिया में रामचरित मानस की प्रति उठाने गए उन चोरों जैसा है, जो भगवान को पहरा देते देख डर गए थे और डर के मारे उलटे पांव लौट आए थे। पंडित त्रिलोचन की घबराहट तो इतनी तीव्र थी कि उनके मुंह से चीख निकलते-निकलते रही। उन्होंने आंख खोलकर देखा और गुरुदेव को सामने खड़ा पाया। अगले ही पल उनके नेत्र फिर मुंद गए और प्रतीत हुआ कि सामने प्रभु राम अभय मुद्रा में खड़े हैं। तीनों को आश्वस्त कर रहे हैं और इन तीनों की आंखों से आसुंओं की धारा बह रही है।'

इस बार आंख खोली तो गुरुदेव ने बारी बारी से तीनों के सिर पर हाथ रखा ओर कहा, 'कुछ और जानना बताना है त्रिलोचन।' नाम त्रिलोचन का लिया था पर पूछा सभी से था। सो तीनों ने समवेत स्वर में कहा, 'सारी शंकाए मिट गई प्रभु। अब आप ही कहेंगे कि हमें क्या करना है? हमारा कहना, हमारा शिकायत करना व्यर्थ हुआ।'

गुरुदेव ने सुनकर कहा, 'ठीक है जाओ। तुम लोग भी भगवान का काम करो और प्रसन्न रहो।' संकेत पाकर तीनों उठे और तरोताजा अनुभव करते हुए नीचे आ गए। तीनों चर्चा करते हुए आ रहे थे। अनिकेत ने अपने दोनों साथियों से पूछा 'काशी में जब गोस्वामी महाराज के भीतर कवित्व शक्ति का स्फुरण हुआ तो उस समय की घटनाओं का स्मरण होगा ही!'

त्रिलोचन पंडित ने कहा, 'हां हां। कवित्व शक्ति का स्फुरण होने पर वे संस्कृत में पद रचना करने लगे थे। दिन में पदों की रचना करते और रात को वे पद लुप्त हो जाते। गोस्वामी जी इससे बहुत परेशान हो गए थे। उन्हें लग रहा था कि उनके पद कोई चुरा लेता है। यह घटना प्रतिदिन घटती। गोस्वामी जी निगरानी करते करते थक गए।'

रामाधार ने कहा, आठवें दिन भगवान शंकर ने स्वप्न में आदेश दिया कि तुम अपनी भाषा में काव्य रचना करो। इसके बाद अनिकेत स्वामी बोले, 'हां

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और गोस्वामी जी काशी जाकर रहने लगे थे। वहां हिंदी में काव्य रचना की और वह रचना अमर हो गई। अनिकेत स्वामी की बात पूरी भी नहीं हुई थी और त्रिलोचन पंडित ने कहा!' वहां तो भगवान ने स्वप्न में निर्देश दिया। यहां हम लोग जागते हुए उनका आदेश लेकर आ रहे हैं। उन्होंने हमारे पाण्डित्य का अभिमान भी पिघला दिया और राह भी दिखा दी। अब चलना है न उन्हीं की राह पर।

तीनों एक दूसरे को निहारने लगे थे। एक दूसरे के मौन में सहमति की गंध अनुभव करते हुए वे उस कक्ष में आ गए, जहां अपनी पोथी पत्री छोड़ कर गए थे।

◈◈◈◈◈◈◈

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ग्यारह

अनुभव और ऊर्जा का संगम

ओडिशा में बरगढ़ तहसील के ठाकुर राज राजेन्द्र सिंह को एक अजीब समस्या का सामना करना पड़ रहा था। यह सन् १९७४ की घटना है। प्रकृति की गोद में बसे और भगवान जगन्नाथ के क्षेत्र में स्थित इस कस्बे के पास एक गांव है अमलपुर। ठाकुर साहब, उस गांव को छोड़कर कुछ समय पहले बरगढ़ के पुश्तैनी मकान में आकर रहने लगे थे। उम्र पैंसठ को पार कर गई थी और इस अवस्था में जो तकलीफें होती हैं गठिया वात और उदर विकार आदि, वे उन्हें रहने लगी थी। गांव में चिकित्सा की सुविधा कुछ खास नहीं थी इसलिए सोचा कि कस्बे में ही चलकर रहा जाए। यहां उनके साथ उनकी पत्नी और दो तीन चाकर भी आ गए। गांव में भाई भतीजे और बेटे-बहू पोते-पोतियों का भरा पूरा परिवार था। वहां से भी कोई न कोई बना ही रहता था। उन लोगों ने भी इस समस्या को देखा तो सन्न रह गए।

हुआ यह कि बरगढ़ के मकान में आने के दो तीन दिन बाद शाम के समय ठाकुर साहब के पास अचानक कुछ पत्थर आकर गिरे। पत्थर अज्ञात दिशा से आए थे और फेंकने वाला कोई दिखाई नहीं दिया था। यूं ही किसी बच्चे ने खेलते कूदते फेंक दिए होंगे, यह सोच कर ठाकुर साहब ने बात आई गई कर दी। लेकिन तीन चार दिन बाद फिर ऐसा ही हुआ। उस दिन दोपहर में पत्थर गिरे। साथ में ईंटों के टुकड़े भी थे। अगले दिन दोपहर को फिर ऐसा ही हुआ और शाम को जैसे किसी ने टोकरा भर कर पत्थर, ईंटें और रोड़ी की झड़ी ही लगा दी। ठाकुर साहब बुरी तरह घबरा गए। उन्होंने उसी शाम गांव से अपने भाई और बेटे को बुलाया। उनके सामने भी इसी तरह की घटना हुई। हैरानी की बात यह कि पत्थर और ईटों के टुकड़े ठाकुर साहब के आसपास ही गिर रहे थे। फेंकने वाला कोई दिखाई नहीं देता था। जिस समय यह घटना होती, उस समय शरारत करने वाले को ढूंढ़ने की कोशिश की जाती पर कोई हाथ नहीं आता था। कभी-कभी तो यह भी पता नहीं चलता था कि पत्थर आ किधर से रहे हैं?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शुरु में शंका हुई कि कोई ऐसा व्यक्ति इस घटना को अंजाम दे रहा है, जो इस मकान पर नजर गड़ाए हुए है। ठाकुर साहब के आकर रहने लगने से अपनी मंशा में अड़चन महसूस कर रहा है। शाय हरकतें वही कर रहा है ताकि ठाकुर साहब यहां से डर कर भाग जाए, इस आशंका के आधार पर जांच पड़ताल की गई पर कोई सूत्र हाथ नहीं लगा। पत्थर बहुत पास गिरते थे, उनसे चोट नहीं लगती थी और फेंकने वाला भी कहीं दिखाई नहीं देता था। इन बातों से यही निष्कर्ष निकाला गया कि घटना के पीछे कोई दैवी या तांत्रिक कर्म हैं। पराविद्या के जानकारों से सलाह ली गई। उन्होंने इस बात की पुष्टि तो की पर कारण और समाधान नहीं बता पाए। पुरी के एक ज्योतिषी पंडित उदयन त्रिपाठी ने बताया कि यह घटना पितरों के प्रकोप से हो रही है। उन्हें मनाना चाहिए। इसके लिए पूजा उपचार कर लिए गए पर कोई हल नहीं निकला। तंत्र मंत्र के जानकारों ने भी प्रयोग किए। रात्रिपूजा, बलि, उतारा, त्रिकूट उपचार और श्मशान पूजा जैसे कर्म भी कर लिए गए। इन उपचारों के संपन्न किए जाने तक तो कुछ देर पत्थर बरसना कम होते लेकिन एकाध दिन बाद फिर वही सब विपत्ति शुरु हो जाती।

नवम्बर १९७४ में एक वानप्रस्थी अयोध्यानाथ बरगढ़ आए। उन्होंने बरजी के गौरीशंकर मंदिर में एक गायत्री यज्ञ किया। वानप्रस्थी जी ने महीने भर पहले ही शान्तिकुञ्ज में वानप्रस्थ शिविर में प्रशिक्षण लिया था और शिविर में पौरोहित्य, लोकशिक्षण और साधना विज्ञान सीखकर आए थे। वहां लिए प्रशिक्षण के अनुसार वे क्षेत्र में गायत्री योग का प्रचार करते हुए घूम रहे थे। बरगढ़ स्थित गौरीशंकर मंदिर में वहां के प्रबंधक पुजारी बाबूलाल शर्मा ने उन्हें आमंत्रित किया था। यज्ञ प्रवचन की व्यवस्था भी उन्हीं ने की थी। आयोजन में पचीस तीस लोगों ने हिस्सा लिया। यज्ञ अग्निहोत्र संपन्न कराने के बाद पंडित जी लोगों को गायत्री उपासना का महत्त्व समझाने लगे। उन्होंने कहा कि गायत्री उपासना से हर तरह के संकट दूर हो जाते हैं। विपत्तियाँ टल जाती हैं।

वे प्रसंग आगे बढ़ा ही रहे थे कि पुजारी बाबूलाल ने बीच में रोका- 'क्या इससे ठाकुर साहब का संकट भी टल जाएगा।' वानप्रस्थी ने कहा कि हां टल जाएगा तो पुजारी ने थोड़ा जोर देकर कहा कि नहीं टल सकता। उद्‌बोधन बीच में रोककर वानप्रस्थी जी ने कहा कि मैं अपने गुरु और आदिशक्ति के संबल से कह रहा हूँ। ठाकुर साहब का संकट कैसा भी हो, निश्चित रूप से हल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हम तुम्हारे थे दयानिधि, तुम हमारे हो।

अरे! मेरी बातों को गंभीरता से समझने का प्रयास करो।

XXI

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

थकान नहीं, आने वाले समय की योजनाबद्ध रणनीति पर चिंतन।

मंच पर उद्बोधन हेतु विराजे युगऋषि।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सहज, सरल सबके आराध्य श्रीराम

प्रवास क्रम में एक विशेष मुद्रा में आचार्य श्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हो जाएगा। इतना कहने के बाद उन्होंने कार्यक्रम पूरा हो जाने देने के लिए कहा और यह भी कि फिर देखते हैं।

आखिरी बार पत्थर

उद्‌बोधन समाप्त होने के बाद उन्होंने ठाकुर साहब की विपद कथा पूछी। सुनकर कहा कि मुझे नहीं मालूम पितरों का प्रकोप है या प्रेतबाधा, लेकिन एक उपाय जरूर कर लेना चाहिए। पुजारी जी ने और वहां मौजूद लोगों ने उत्सुकता दिखाई। तुरंत ठाकुर साहब से कहा। उपाय पूछा गया और उसे करने के तौर पर मकान के पूजा कक्ष में एक चौकी पर गायत्री माता का चित्र स्थापित किया, सामने एक कलश रखा गया और ठाकुर साहब से संकल्प कराया गया कि वे सुबह से ही गायत्री का नौ दिन का अनुष्ठान शुरु करेंगे। उन्हें अनुष्ठान के नियम अनुशासन समझा दिए और संकल्प के तौर पर कलावा भी बांध दिया गया। जिस समय कलावा बांधा जा रहा था, ठीक उसी समय कुछ पत्थर गिरे पर ठाकुर साहब ने देखा कि पत्थरों में मिट्टी के ढेलों की संख्या ज्यादा थी और उनमें कुछ फूल भी थे। उस दिन पत्थर गिरने की यह आखिरी घटना थी। अगले दिन अनुष्ठान शुरु किया तो आश्चर्य कि पूरे दिन एक बार भी पत्थर गिरने की घटना नहीं हुई। शाम के वक्त दो चार पत्थर जरूर गिरे। उसके बाद अगले दिन यह सिलसिला थम सा गया।

अनुष्ठान शुरु करा कर वानप्रस्थी अयोध्यानाथ दूसरी जगह चले गए थे। उन्हें रोकने की बहुतेरी कोशिश की गई क्योंकि पहले दिन का अनुभव ही पुलकित कर देने वाला था। डर था कि दूसरे उपचारों की तरह यह भी कहीं अस्थाई साबित न हो लेकिन वानप्रस्थी ने पहले ही अपने विश्वास को अक्षुण्ण घोषित कर दिया था कि संकट टल गया। अगर विपत्ति टली नहीं तो वे याद करते ही फिर हाजिर हो जाएंगे। यह कह कर वे अपने प्रवास पर चले गए। पूरा अनुष्ठान होने तक यह दावा शत प्रतिशत सही सिद्ध हुआ था कि संकट टल जाएगा।

अनुष्ठान पूरा होने के बाद स्थापित की गई गायत्री माता की छवि के सामने यज्ञ किया गया। पूर्णाहुति यज्ञ गौरीशंकर मंदिर के पुजारी बाबूलाल ने संपन्न कराया। जप अनुष्ठान की इस अवधि में ठाकुर साहब ने मौन व्रत रखा था। पूर्णाहुति के बाद उन्होंने मौन व्रत खोला। उन्होंने अनुष्ठान के समय के कई अनुभव सुनाए। उनमें एक अनुभव सुनाते हुए वे बहुत रोमांचित हो उठे थे। उनके अनुसार जप-ध्यान करते समय कई बार आशंका उठती। ऐसा लगता कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
अब पत्थर बरसने ही वाले हैं। इस डर से वे आंख खोलते और देखने की कोशिश करते। उन्हें दिखाई देता कि धोती कुर्ता पहने एक ऋषि उन्हें अभय आश्वस्त करते हुए खड़े हैं। कह रहे हैं कि घबराओ मत। उन लोगों को मैंने रोक दिया है। वे तुम्हें अब नहीं सताएंगे।

यह प्रसंग सुनने के बाद बाबूलाल शर्मा ने ठाकुर साहब को गुरुदेव का एक चित्र बताया। पूछा कि कहीं यही महापुरुष तो नहीं थे। ठाकुर साहब ने उनके हाथ से चित्र लपकते हुए से कहा, 'हां हां, यही देवात्मा थे जिन्होंने मुझे आश्वस्त किया था।' उन्होंने प्रणाम किया और कहा कि आपके पास कोई और चित्र हो तो मुझे दीजिए न। ठाकुर साहब ने पुजारी जी से कहकर वह चित्र मंगाया और अपने पूजा कक्ष में स्थापित कराया।

शान्तिकुञ्ज में वानप्रस्थ शिविर जनवरी १९७४ में शुरु हुए थे। २० जनवरी से १९ मई तक हुए चार शिविरों में करीब चार सौ वानप्रस्थी तैयार हुए। इनमें अधिकांश अपने क्षेत्र में नवयुग का संदेश पहुंचाने में अरसे तक लगे रहे। प्राण प्रत्यावर्तन शिविरों के अगले चरण और जीवन के उत्तरार्द्ध को लोकसेवा में नियोजित करने का यह प्रयोग वर्षों तक फलता-फूलता रहा। प्रवचनों और लोक संपर्क के प्रचलित उपायों के अलावा वानप्रस्थी कुछ और अनूठे उपायों से अपने संपर्क क्षेत्र में प्रकाश उत्पन्न कर रहे थे। इस दौरान कुछ रोचक घटनाएं भी हुईं। इन्हें घटनाओं के बजाय अनुभूति कहना ज्यादा ठीक होगा।

अनिष्ट ग्रहों का उपचार

कर्नाटक के रघुमणि राव का ख्याल था कि वानप्रस्थी बनने के बाद जंगल में रहना पड़ेगा। वहीं कंद मूल खाकर गुजारा करना होगा और जप ध्यान में ही समय बिताना होगा। रघुमणि नए-नए ही मिशन के संपर्क में आए थे। उन्होंने साहित्य और कार्यक्रमों का ज्यादा अध्ययन भी नहीं किया था। उनके संपर्क में आने और वानप्रस्थ तक की यात्रा करने की कहानी विचित्र है। कर्मकाण्डी ब्राह्मण परिवार रघुमणि के पिता और पितामह ज्योतिषी थे। वे स्वयं भी ज्योतिष जानते थे पर उन्होंने व्यवसाय के तौर पर भवन निर्माण का क्षेत्र चुना था। इसमें काफी सफल भी हुए थे। जमीन खरीदना, उसके प्लाट काटना, मकान बनाना और बेच देने का काम उन्हें खूब रास आया था-अच्छी कमाई हुई थी। दस पंद्रह वर्ष में वे लखपति बन गए। उन दिनों लखपति होने का अर्थ है आज के हिसाब से करोड़ों के मालिक। फिर अचानक धंधे में नुकसान होने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
लगा। रघुमणि का कहना था कि उनके दादा चिंतामणि राव ने जन्म कुंडली के आधार पर पहले ही कह दिया था कि लाखों कमाओगे और दस पंद्रह साल बाद कमाई घटने लगेगी। व्यवसाय मंदा हो जाएगा और हो सकता है कमाया हुआ धन किन्हीं दूसरे कामों में लगने लगे। ऐसे कामों में लगने लगे जहाँ से कोई वापसी नही हो।

रघुमणि चालीस वर्ष के थे कि पिता बीमार हो गए। उन्हें गले का कैंसर हो गया। रेडियो थैरेपी और दूसरे उपचार उपायों में धन खर्च होने लगा। इससे पहले कारोबार ठप होने लगा था। दादाजी पहले ही गुजर चुके थे इसलिए सलाह भी किससे लें? पिता के बीमार पड़ने से कुछ महीने पहले पुत्र का विवाह हो गया था। वह भी कामधंधे में हाथ बटाता था, लेकिन पिता की बिगड़ती हालत देखकर अपना काम अलग से करने लगा। इससे भी रघुमणि के काम को धक्का लगा। वह ठप होने लगा। कुछ धन पिता के इलाज में खर्च होने लगा और कुछ बेटे ने ले लिया। दोनों ही मद में होने वाले खर्च की कोई वापसी नहीं थी। रघुमणि को अपने दादा की भविष्यवाणी सही होती लगी। आगे क्या होगा यह जानने के लिए वह ज्योतिषियों से संपर्क करने लगा। बंगलूरू के एक ज्योतिषी विश्वामित्र ने कुंडली देखकर रघुमणि के पितामह की भविष्यवाणी के बारे में बिना पूछे ही इन विपदाओं का कारण शनि की साढ़े साती बताया। कहा कि इस तरह की कठिनाइयां आगे कई वर्ष और झेलनी हैं। उन्होंने यह सलाह भी दी थी कि विपत्तियों से कुछ पार पाना हो तो गायत्री उपासना का आश्रय लो। इस परामर्श को मान कर ही वे गायत्री परिवार की ओर आकर्षित हुए थे।

रघुमणि ने १९७३ में गायत्री उपासना की दीक्षा ली। उसी वर्ष शान्तिकुञ्ज हरिद्वार जाकर प्राण प्रत्यावर्तन शिविर में भाग लिया। उन दिनों वानप्रस्थ शिविरों की योजना बन रही थी। कहीं सुना था कि वानप्रस्थियों अथवा संन्यासियों को शनि ज्यादा पीड़ित नहीं करता। इसलिए उत्कंठा जगी कि यह शिविर भी कर लिया जाए। शान्तिकुञ्ज के एक वरिष्ठ कार्यकर्त्ता से उन्होने पूछा कि वानप्रस्थी को क्या जंगल में कंदमूल खाकर रहना होता है। उन कार्यकर्त्ता ने रघुमणि के प्रश्न का समाधान किया। कहा कि किसी जमाने में वानप्रस्थी को अरण्य में रहना होता था। वहां रहकर अपनी क्षमताएँ बढ़ाने के लिए तप करना पड़ता था। ये बीते जमाने की बातें हैं। नए समय के अनुसार गुरुदेव ने उस स्वरूप में परिवर्तन किया है। आज की परिस्थिति में यही उचित है कि घर परिवार में पूरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तरह घुले रहने की अपेक्षा उससे कुछ दूरी बनाई जाए और समाज का काम किया जाए।

उन कार्यकर्त्ता ने वानप्रस्थ का वास्तविक अर्थ बताते हुए कहा कि वर्णाश्रम धर्म के अनुसार एक एक चौथाई आयु ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास के लिए है। व्यवस्था लड़खड़ा गई है। पर प्रकृति इस विभाजन के अनुसार मनुष्य को आज भी नियंत्रित करती है। प्राचीन काल में यह अवधि सौ वर्ष की आयु के अनुसार निर्धारित थी। अब सौ वर्ष कौन जीवित रहता है? बड़ी मुश्किल से लोग सत्तर वर्ष की उम्र पूरी कर पाते हैं। ऐसी दशा में चारों विभाग कम से कम साढ़े सत्रह वर्ष के होने चाहिए। कायदे से ब्रह्मचर्य और गृहस्थ आश्रम पैंतीस वर्ष में पूरे हो जाने चाहिए, लेकिन आज की लोभ, मोह, ग्रस्थ स्थिति में ऐसा कठिन लगता है। इसलिए सौ वर्ष की मान्य पूर्ण आयु में से पचास वर्ष तक की उम्र गृहस्थ के लिए रखी जा सकती है। गुरुदेव कहते हैं कि इसके बाद पचास से साठ पैंसठ वर्ष तक का समय ही ऐसा रह जाता है, जिससे शरीर और मन से कुछ साधना संभव होती है। पैंसठ वर्ष के बाद तो शरीर थक जाता है। उसमें लोगों की सेवा करने के बजाय उनकी सेवा सहायता पर निर्भर रहना पड़ता है। यह पचास से पैंसठ वर्ष की आयु ही वानप्रस्थ के लिए उपयुक्त और निर्धारित आयु है।

पिता स्वयं रक्षक है

आश्रम व्यवस्था जिन दिनों जीवंत थी उन दिनों भिक्षा पर या कंदमूल से निर्वाह किया जाता था। अब वह संभव नहीं है। भिक्षा के अन्न में न सात्विकता है और न ही सम्मान। कंदमूल भी अब कहाँ मिलते हैं। उन्हें पाना हो तो खेती का ही सहारा लेना पड़ेगा। इसलिए समाज सेवा करते हुए गुजारा चलाने के लिए पहले से यदि कुछ संचित किया गया हो तो ही, उसमें से लेना चाहिए या थोड़ी बहुत मेहनत कर खुद कमाना चाहिए। पेंशन आदि का प्रबंध हो तो और अच्छा। यदि वैसा इंतजाम नहीं हो तो गुजारे भर के लिए समाज से भी लिया जा सकता है।

वेश विन्यास की दृष्टि से भी वानप्रस्थ अलग ही दीखना चाहिए। पीले रंग की धोती हो और कुर्ता भी इसी रंग के कपड़े का सिलवाया जाए। उन कार्यकर्त्ता ने समझाया कि कम उम्र के लोग, युवा वानप्रस्थ कंधे पर पीला तौलिया या दुपट्टा रखें तो भी पर्याप्त है। इससे वर्णाश्रम परंपरा के प्रतीक की रक्षा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
होती रहेगी। साथ ही अपने कर्त्तव्य और दायित्व का बोध भी होता रहेगा। वस्त्र विन्यास से यह विशेषता लोगों को भी वानप्रस्थ परंपरा का, उसकी गौरव गरिमा का परिचय देती रहेगी।

आधुनिक संदर्भों में वानप्रस्थ का यह परिचय रघुमणि ने पूरे मनोयोग से सुना। उस परिचय से इतना प्रेरित हुआ कि शान्तिकुञ्ज के कार्यालय में जाकर वानप्रस्थ शिक्षण के लिए फार्म मांगने लगा। प्रत्यावर्तन साधना में उन दिनों गुरुदेव प्रत्येक शिविरार्थी से कम से कम एक बार जरूर मिलते थे। इस मुलाकात में साधक को अपने मन की बात कहने का मौका मिलता था। मनोव्यथा को साधक लिख कर तो देते ही थे, गुरुदेव से कहते भी थे। रघुमणि को जब गुरुदेव के पास जाने का अवसर मिला तो उसने पहली व्यथा यही खोली कि वह वानप्रस्थी होना चाहता है। गुरुदेव ने उसे आगे की बात कहने के लिए प्रेरित किया। उसने कहा मैं इसलिए भी वानप्रस्थी होना चाहता हूँ कि उस पर शनि मंगल आदि ग्रहों का प्रभाव नहीं होता। इसके बाद उसने अपना अतीत खोलकर रख दिया।

गुरुदेव ने रघुमणि के सिर पर हाथ रखा, उसे थपथपाया और कहा कि बेटा सिर्फ इसी कारण से वानप्रस्थी होना चाहते हो तो मत होओ। यह तुमसे वायदा है कि सब ग्रहों का जो पिता है, वह तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम उसकी, शनि और मंगल के भी पिता सविता देवता की शरण में हो। उनके उपासक हो।

सुनते ही रघुमणि की चिंताए जैसे मोम की तरह पिघल गई। वह गुरुदेव की तरफ ताकता रह गया। कुछ कहते नहीं बना। थोड़ी देर में अपने आपे में आया तो कहने लगा मेरा मन इसके बावजूद समयदानी वानप्रस्थी होने के लिए करता है। मुझे अनुमति दीजिए। गुरुदेव ने उसे आश्वस्त किया और कहा कि प्रत्यावर्तन शिविर में जो साधना सीखी है उसका एक वर्ष तक अभ्यास करो। इस बीच तुम्हें जो अनुभव हों, उन्हें समझना। उनके बारे में सोचना और फिर वानप्रस्थी बनने का फैसला करना। अभी अपने पिता की सेवा करो। तुम्हारे लिए यही व्यावहारिक वानप्रस्थ है। रघुमणि सुन कर आज्ञा पाकर नीचे आ गया। शिविर पूरा किया और घर चला गया। इसके बाद साल भर तक उसने वानप्रस्थ के बारे में सोचा भी नहीं। इस बीच पिता का रोग चमत्कारिक ढंग से ठीक हो गया। काम धंधा चलने लगा और परिवार में पहले वाली खुशहाली लौटने लगी। लेकिन रघुमणि का मन साल भर पहले स्थापित किए हुए निर्णय में अटका रहा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साल पूरा होते ही उसने शान्तिकुञ्ज पत्र लिखा। वहां से स्वीकृति का उत्तर भी आ गया। उसने कई बार अपने आप से पूछा कि गुरुदेव ने पिछले साल वानप्रस्थ के लिए मना क्यों किया होगा ? मन में मौजूद दूसरा रघुमणि कई उत्तर सुझाता था। उसमें रघुमणि को एक उत्तर गले उतरता था कि पिछला निर्णय दुर्भाग्य के डर से लिया जा रहा था, शनि या साढ़े साती से बचाव के लिए लिया था। गुरुदेव ने इसी लिए मना किया। अब निर्णय स्वविवेक से, समस्त भयों और चिंताओं से अप्रभावित रहते हुए किया गया है। इसलिए यह ज्यादा उपयुक्त है और गुरुदेव ने भी शायद यही सोच कर अनुमति दी है।

सन् १९७४ में जब वानप्रस्थ के रूप में एक अभिनव प्रयोग जन्म ले रहा था, तब समाचार माध्यम राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय खबरों से भरे हुए थे। खबरें इतनी बड़ी थीं कि कुछ राष्ट्रीय समाचार पत्रों ने तो इन्हें युगांतरकारी घोषित कर दिया था। यहां सिर्फ दो महत्वपूर्ण घटना चक्र। एक तो यह कि वियतनाम में दक्षिण वियतनाम सरकार ने वहां के राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे के सामने समर्पण कर दिया था। दक्षिण वियतनाम सरकार को अमेरिका का समर्थन प्राप्त था। उसे विजयी बनाने या अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए अमेरिका ने पूर्ण सैनिक शक्ति लगा दी। इसके बावजूद वह राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे को शिकस्त देने में सफल नहीं हो सका था। बीस वर्ष से भी ज्यादा समय तक चले इस युद्ध में लाखों लोग मारे गए थे। मारे गए लोगों में सैनिक ओर नागरिक दोनों ही थे। स्वयं अमेरिकी नागरिक इस युद्ध के खिलाफ थे लेकिन नाक का सवाल था। इसलिए अमेरिका ने हजारों मील दूर बसे इस देश को लगभग पैरों तले रौंद देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अंततः वियतनाम की स्वतंत्र चेता जनता का प्रतिरोध नहीं झेल पाने के कारण अमेरिका को वापस लौटना पड़ा तो समाचार पत्रों की टिप्पणी थी कि यह एक नए युग की शुरुआत है। पूंजीवाद हार गया और जनवाद जीत रहा है।

सबसे बड़ी घटना

उसी वर्ष भारत ने पोखरण में पहला परमाणु विस्फोट किया और अणुशक्ति संपन्न राष्ट्र बन गया। भारत की इस सफलता को अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों में रोष के साथ देखा गया। सोवियत संघ ने भले ही प्रसन्नता जताई पर विश्व बिरादरी में ज्यादातर देश आंखे तरेर रहे थे। इस उपलब्धि को राष्ट्रीय क्षितिज पर भारत के महाशक्ति बनने की दिशा में छलांग बताया जा रहा था। इन दो घटनाओं के बीच की एक तीसरी घटना और है जो इन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
सबसे अलग है और अतुलनीय है। समाचार पत्रों और विभिन्न माध्यमों में इन घटनाओं का उल्लेख जब समय की नई रफ्तार और युग के नए मोड़ की तरह किया जा रहा था तो प्रसिद्ध योगी देवरहा बाबा एक अलग ही सूत्रपात की ओर इशारा कर रहे थे। दिल्ली के एक प्रमुख राष्ट्रीय दैनिक 'द हिन्दुस्तान टाइम्स' की संवाददाता जयंती वर्धन उनके पास वर्ष की प्रमुख घटनाओं पर राय पूछने के लिए गई। देवरहा बाबा का उत्तर दीपावली अंक में छपना था। संवाददाता को आशा थी कि बाबा वियतनाम युद्ध या पोखरण विस्फोट जैसी घटनाओं में से किसी एक उल्लेख करेंगे। देवरहा बाबा ने ऐसी किसी भी घटना का जिक्र किए बिना एक पंक्ति में वहा, 'हमारे श्रीराम ने इस साल सनातन धर्म में वानप्रस्थ को जीवित कर दिया। यह है इस साल की सबसे बड़ी घटना।'

जयंती वर्धन ने कहा, 'पर बाबा इसके बारे में किसी को मालूम तो है नहीं।' बाबा ने कहा कि मालूम नहीं होने से क्या होता है। तुमने घटना की पूछा तो घटना तो यहां है। इसके बाद साधु संन्यासियों के मायने ही बदल जाएंगे। देख लेना! जयंती वर्धन ने बाबा की बात को जस का तस लिख दिया। गायत्री तपोभूमि के व्यवस्थापक पंडित लीलापत शर्मा, संयोग से उसी समय वहां पहुंचे थे। बाबा ने उनकी ओर इशारा किया, 'वह देखो उधर श्रीराम के शिष्य आ गए हैं। हम उनके माध्यम से गुरुदेव का अभिवादन करना चाहते हैं।'

कहते हुए देवरहा बाबा ने अपने एक शिष्य सेवक से शाल मंगाई और लीलापत जी के कंधों पर ओढ़ाई। उन्हें फूलों का हार पहना कर सम्मानित किया। देवरहा बाबा ने कहा कि देश में साठ लाख साधु बाबा हैं। सात लाख गांवों में ये लोग अपने धर्म का पालन करें तो देश में धर्मराज्य की स्थापना हो जाए। सारा देश तरक्की करने लगे। लेकिन कोई अपने धर्म का पालन करना ही नहीं चाहता। इसलिए वानप्रस्थ परंपरा को जगाकर श्रीराम ने ऐतिहासिक काम किया है। इसका महत्व आज नहीं पचास साठ साल बाद समझ में आएगा। और जिसे तुम बड़ी ऐतिहासिक घटनाएं समझ रहे हो न, वैसी कई और घटनाएं होंगी। ये सारी घटनाएं एक एक लाइन में लिखी जाने लायक रहेंगी।

'उन घटनाओं में से कुछ के बारे में बताइए बाबाजी,' संवाददाता ने पूछा। इस पर बाबा ने कहा, 'उनके बारे में भी श्रीराम जी ने पांच सात साल पहले लिख दिया है। दो चार का जिक्र कर दूं। वियतनाम में अमेरिका के हटने पर साम्यवाद की जीत मनाने से कोई फायदा नहीं है। यह भी खत्म होने वाला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है। इसका सबसे बड़ा रक्षक देश (सोवियत संघ) पंद्रह बीस साल में बिखर जाएगा। फिर उसके बाद दूसरे धड़े के लोग (पूंजीवाद) हारेंगे, टूटेंगे और दुनिया में शुद्ध धर्म अध्यात्म बचेगा। यह मैं नहीं कर कह रहा, श्रीराम कह रहे हैं। उनकी बात को पढ़ो, सुनो और समझो।'

शान्तिकुञ्ज में जिस समय वानप्रस्थ सत्र शुरु किए गए, उस समय जगह कम थी। आश्रम में प्रत्यावर्तन सत्र चल रहे थे। वानप्रस्थ की महत्ता उपयोगिता से प्रभावित होकर अपने आप को सौंपने वाले मनस्वी कार्यकर्त्ताओं का उत्साह उमड़ रहा था। उन कार्यकर्त्ताओं से धीरज रखने और अपनी बारी का इंतजार करने के लिए कहते हुए एक व्यवस्था बनाई गई। गुरुदेव ने तब परिजनों के आग्रह का उत्तर देते हुए लिखा भी था कि कुछ ही दिनों में ऐसा प्रबंध हो जाएगा कि एक सौ वानप्रस्थी एक साथ प्रशिक्षित किए जा सकें। प्रत्यावर्तन सत्र थोड़े बहुत अंतर और संशोधन के साथ पांच वर्ष तक चलेंगे। वानप्रस्थियों के लिए उनके सत्र भी कम से कम एक हजार का आंकड़ा पार कर लेने तक तो चलते ही रहेंगे। संख्या इससे आगे भी बढ़ सकती है।

मई-जून ७४ तक चार शिविर हो चुके थे। जो वानप्रस्थी तैयार हुए थे, उनकी कार्यपद्धति अनुभव और प्रमाण को आधार बनाए हुए थी। लोगों के मनोबल और आत्मबल को क्षीण करने में अंधविश्वासों का बड़ा हाथ है। उन्हें निरस्त करने के लिए रचनात्मक उपायों को अपनाने का एक उदाहरण बरगढ़ के ठाकुर राजेन्द्र सिंह के रूप में देख ही चुके हैं। चेतना के स्वच्छ शुद्ध और निर्मल बनाने के लिए गायत्री उपासना के विभिन्न प्रयोग सिखाने के साथ वानप्रस्थी समाज सुधार और परिवार निर्माण के सूत्र भी समझा रहे थे।

एक प्रसंग राजस्थान का। कन्या और पुत्र में भेद आमतौर पर पूरे भारत की ही समस्या है, पर राजस्थान में यह कुछ ज्यादा ही है। जोधपुर जिले के दामोदरपुरा गांव में वैसे शिक्षा का प्रचार नहीं था। प्राथमिक स्कूल ही था। उसमें लड़के ही पढ़ने जाते थे। लड़कियों को स्कूल भेजने के बारे में कोई नहीं सोचता था। बड़ी उम्र की लड़कियों के लिए एक समस्या और थी कि जरा जरा सी बात पर उन्हें ससुराल वाले मारपीट कर भगा देते। बेचारी अपने मायके में रहने लगती और समाधान का इंतजार करती रहती। समाधान एक ही था, मायके वाले ससुराल पक्ष को कुछ देकर मनाएं और उनसे माफी मांगे। माता-पिता को इस तरह नीचा देखने का संताप नहीं झेल पाने के कारण एक साल में तीन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लड़कियों ने आत्महत्या कर ली। आखिरी घटना के समय गांव में एक वानप्रस्थी मोहन राणा आए हुए थे। एक दिन का यज्ञ आयोजन कराकर वे उद्बोधन दे ही रहे थे कि स्त्रियों की दुर्दशा का प्रसंग छिड़ गया। इस प्रसंग पर चर्चा के दौरान दो दिन पहले रेशम नाथ की एक लड़की द्वारा आत्महत्या का जिक्र आया। मोहन राणा ने इस घटना पर दुख जताया और कहा कि करना चाहें तो इस तरह के हादसों का इलाज है। इन्हें रोका जा सकता है। लोगों ने उस इलाज के बारे में पूछा तो मोहन राणा ने कहा कि आप लोग अपनी बच्चियों को भी स्कूल भेजें। उनमें आत्मविश्वास आएगा और ब्याह शादी के बाद उनके साथ कोई ज्यादती हुई तो वे मुकाबला करने लायक बनेंगी।

हार नहीं मानेंगे

गांव वालों में कुछ ने इस सुझाव का महत्व समझा और अपनी बेटियों को स्कूल भेजने के लिए तुरंत रजामंदी जता दी। अगले उपाय के तौर पर मोहन राणा ने कहा कि जिन लड़कियों को ससुराल वालों ने सता कर, डरा धमका कर भगा दिया है उन्हें वापस भेजने के बारे में सोचना फिलहाल बंद कर दें।

किसी ने सवाल किया 'फिर क्या करें। बेटी को घर बिठा लें क्या?' मोहन राणा ने कहा, 'बेटा विपत्ति में पड़ता है तो उसकी भी सहायता करते हैं या नहीं। उसे हम ससुराल तो नहीं भगा देते। बेहतर होगा कि प्रताड़ित बेटी को लाड़ प्यार से घर में ही रखें। उसे कोई काम-धंधा सिखाएं। साथ ही ससुराल वालों को कानून का डर बताएं। पंचायत बिठाने के बारे में सोचें। आपने बेटी का ब्याह किया है, भेड़-बकरी की तरह बेच तो नहीं दिया है। आप लोग थोड़ी हिम्मत करेंगे तो कानून और समाज भी आपका साथ देगा और आज किसी तरह माफी मांग कर, ससुराल वालों का मुँह भर कर बेटी को वापस भेज दिया तो कल उनका मुँह और ज्यादा फटेगा। यह सिलसिला चलता ही रहेगा और बेटी की समस्या जहां की तहां बनी रहेगी।'

यह प्रेरणा सुनते ही वहां बैठे रतन लाल ने उठकर कहा, 'मेरी बेटी दो महीने से घर आई हुई है। ससुराल वालों ने उसे लड़कर भगा दिया। मैं उन लोगों से सुलह-समझौते के बारे में सोच रहा था पर अब वैसा नहीं करूंगा। अपनी बेटी को प्यार से अपने पास ही रखूंगा और उसके हक के लिए लड़ूंगा भी सही। रतनलाल ने बाद में सचमुच ऐसा ही किया।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वानप्रस्थी धीरे-धीरे क्षेत्रों में फैलने लगे थे। उनके काम और उपलब्धियों को देखकर युवाओं में भी उत्साह उमड़ा। नई उम्र के युवकों ने आग्रह करना शुरु किया कि पचास वर्ष की उम्र से ज्यादा आयु वालों को ही वानप्रस्थी क्यों बनाया जाए? उम्र कम है तो क्या हुआ, हमारे मन में उत्साह है और हम समाज के लिए समय देना चाहते हैं तो हमें भी अवसर मिलना चाहिए। वानप्रस्थ परंपरा को पुनर्जीवन देने के बाद गुरुदेव ने आयु का बंधन शिथिल किया और सावधिक वानप्रस्थ की व्यवस्था दी। सावधिक या कनिष्ठ वानप्रस्थ का आशय था कि कोई व्यक्ति महीने दो महीने के लिए वानप्रस्थी बनना चाहे तो बन सकता है। यह अवधि चार छह महीने भी हो सकती है और साल भर भी। संकल्पित अवधि के बाद वानप्रस्थी वापस अपने कार्यक्षेत्र में लौट सकते हैं। इस नई व्यवस्था ने वानप्रस्थ आंदोलन में प्रवाह उत्पन्न कर दिया था। युवकों के समूह उमड़ने लगे और कुछ स्थानों पर तो छात्रों ने साल भर के लिए पढ़ाई स्थगित कर इस साधना को जीने का फैसला किया। उनके उत्साह को मान्यता दी गई और अपनाया भी गया।

आरंभ से ही वानप्रस्थ शिक्षा के दो वर्ग रखे गए थे। एक वर्ग उन लोगों के लिए था जिसमें उन्हें रहना तो अपने ही घर में था। अपने घर में रहते हुए ही उन्हें आसपास के क्षेत्र में काम करना था। ऐसे व्यक्तियों के थोड़े बहुत पारिवारिक उत्तरदायित्व शेष थे। घर गांव या नगर में रहते हुए वे परिवार के दायित्व और समाज साधना दोनों ही साथ-साथ चला सकते थे। दूसरा वर्ग उन लोगों का था जो पारिवारिक दायित्वों से पूरी तरह मुक्त हो गए थे। पूरा देश समाज ही उन्हें अपना परिवार लगता था। शान्तिकुंज का वानप्रस्थ विभाग उन्हें जन जागरण के अभियान में जहां भी भेजना आवश्यक समझता, वहां भेज सकता था। ऐसे वानप्रस्थियों की कक्षा और स्तर में सावधिक वानप्रस्थियों की तुलना में अवधि की दृष्टि से ही अंतर था। बाकी साधनाएं तो दोनों से एक ही तरह की कराई जाती, प्रशिक्षण भी एक ही तरह का रहता। सावधिक वानप्रस्थी शिक्षण प्राप्त कर अपने घर लौट जाते जबकि स्थाई साधक अपने आपको पूरी तरह मिशन के हाथों सौंप देते थे।

सैंकड़ों की संख्या में वानप्रस्थी क्षेत्रों में उतर गए और जगह जगह गायत्री यज्ञों की धूम मचने लगी तो समाज के मूर्धन्य लोगों का ध्यान भी इस ओर गया। सामाजिक और राजनैतिक कर्म में लगे नेतृत्व को यह पद्धति प्रेरक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और अनुकरणीय लगी। संपूर्ण क्रांति आंदोलन के नायक जयप्रकाश नारायण ने कई जगह नाम ले कर कहा कि जो लोग पारिवारिक दायित्वों से मुक्त हो गए हैं वे वानप्रस्थियों और बौद्ध भिक्षुओं की तरह अपना समय व्यवस्था को बदलने में लगाएं। गायत्री परिवार के युवा वानप्रस्थियों से प्रेरणा लेकर सर्वोदय और संपूर्ण क्रांति आंदोलन ने भी कार्यक्रम दिया कि हो सके तो युवक एक साल के लिए स्कूल कॉलेज छोड़ दें। साल भर नहीं पढ़ेंगे तो कुछ नहीं बिगड़ेगा पर इस अवधि में व्यवस्था परिवर्तन के सूत्र साधने की कोशिश गरम लोहे पर चोट की तरह होगी। इस अवसर को नहीं चूकना चाहिए।

सामाजिक और राजनैतिक आंदोलन द्वारा की गई इस अनुकृति का जो भी असर हुआ हो, वानप्रस्थ आंदोलन उत्तरोत्तर गति पकड़ने लगा था। सावधिक वानप्रस्थी ही नहीं युवा कार्यकर्त्ता भी अपने कंधों पर पीला दुपट्टा रखने लगे थे। ज्यादा नहीं तो पांच मिनट ही सही जप ध्यान करने, सत्साहित्य पढ़ने और समाज में शिक्षा का माहौल बनाने जैसे कार्यक्रम युवकों को ज्यादा लुभा रहे थे। वे इन कार्यक्रमों में जुटने भी लगे थे।

◈◈◈◈◈◈◈

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बारह

कन्याओं का दैवी दायित्व

सभागार श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ था। करीब ढाई तीन सौ लोग जमा हुए थे। बारह तेरह साल की लड़कियाँ नवयुग का संदेश सुनाने आई हैं, इस सूचना ने ही लोगों को रोमांचित कर दिया था। जिस उम्र में बच्चे ठीक से बोलना, उठना बैठना और व्यवहार करना भी नहीं सीख पाते, उस उम्र में कन्याएँ अच्छे-अच्छे वक्ताओं को मात देती हुई प्रवचन करने आई हैं। यह जानकारी लोगों में चर्चा का विषय बनी हुई थी। महाराष्ट्र के रामटेक नगर की घटना है। शहर धर्मशास्त्री, संस्कृत और आध्यात्मिक विषयों के जानकार विद्वानों के लिए प्रसिद्ध है। उस शहर में देव कन्याओं के पधारने की क्या प्रतिक्रिया होगी ? कुछ लोग उस प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करते हुए भी इकट्ठे हुए थे।

देव कन्याओं के बारे में किसी ने कहा-इन विदुषियों ने पैठण के वैदज्ञ विद्वानों को निरुत्तर कर दिया था। दूसरे ने जिज्ञासा की कि इस उम्र में ऐसी प्रतिभा कहाँ से आती होगी ? पहले ने कहा पूर्व जन्म के संस्कार होते हैं भाई! विद्या, ज्ञान और तप जन्मान्तरों तक साथ-साथ चलते हैं। तीसरे ने गुरुदेव का ही एक प्रसंग सुनाया। उसने कहा सन् १९६७ में रायपुर के एक कार्यक्रम में सात आठ साल की एक बच्ची ने गीता रामायण के श्लोक और चौपाइयां उद्धृत करते हुए धाराप्रवाह प्रवचन दिया था। वह गुरुदेव के मंच पर बोली थी। उसके बाद में पूज्यवर का कहना था कि इस बालिका के रूप में ऋषि आत्मा का अवतरण हुआ है। उसी आत्मा का ज्ञान मुखरित हो रहा है, बताने वाला श्रोता गायत्री परिवार का ही सदस्य था। उसका कहना था कि आज वैसा ही प्रसंग देखने को मिल रहा है। कहते-कहते वह व्यक्ति गदगद हो उठा। यह कानाफूसी चल ही रही थी कि मंच पर देवकन्याओं के पहुँचने के संकेत मिले। उद्घोषक ने शांत रहने की अपील की और घोषणा भी कि, देवकन्या पहुँच गई हैं। गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में लगने वाले जयघोष वातावरण में गूंजने लगे। देवकन्याएं मंच पर पहुँची और स्वस्तिवाचन शुरु हुआ। पाठ पूरा होते ही मंच पर और सभागार में शांति छा गई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्रोता देवकन्याओं को मंत्रमुग्ध से देख रहे थे। पीले रंग की भारतीय वेषभूषा पहने, चेहरे पर उद्दीप्त आत्म विश्वास, गति में त्वरा और वाणी में ओज के लिए जानी जा रही देवकन्याओं में से एक ने उठकर माइक संभाला। अंजना (नाम बदल दिया है) नाम की की वह देवकन्या बोलने ही वाली थी कि सभागार में बैठा एक व्यक्ति हाथ में पर्चा लहराते हुए उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, 'आदरणीय देवकन्याएं जी। आप किस अधिकार से यहाँ गायत्री और यज्ञ विषय पर संबोधित करेंगी? आपने तो वेदाध्ययन भी नहीं किया है।'

अंजना ने कहा 'हमारा निज का कोई अधिकार नहीं है। हम अपने गुरुदेव का संदेश लेकर आई हैं-हम सिर्फ संदेशवाहक हैं। हम गुरुदेव के दिये अधिकार से यहाँ मंच पर हैं।'

उस व्यक्ति ने कहा, 'फिर आप किसी प्रश्न का उत्तर भी नहीं देंगी। कोई शंका हो तो उसका समाधान भी नहीं करेंगी।'

'आपके सभी प्रश्नों का उत्तर और शंकाओं का समाधान गुरुसत्ता से ही आयेगा।' अंजना ने कहा, 'जैसे यह माइक है न, जिस पर मैं बोल रही हूं। यह माइक वही सुनाता है, जो वक्ता बोलता है। हमारे कंठ और स्वरतंत्र भी उन्हीं प्रेरणाओं को व्यक्त करेंगे जो गुरुदेव की ओर से मिली या आई होंगी।'

इस संवाद के बाद वह व्यक्ति चुप होकर बैठ गया। बैठते हुए बुदबुदा रहा था, 'इन लोगों से क्या बात करना? ये तो एक माध्यम ही हैं। उसके बैठने के बाद अंजना ने स्त्रियों के वेदाधिकार विषय पर प्रभावशाली और धाराप्रवाह व्याख्यान दिया। जिस शास्त्र का सूत्र और आधार मंत्र गायत्री ही स्त्रीसंज्ञक हो, उसमें स्त्रियों के अधिकार का प्रश्न उठाना ही गलत है। वक्तव्य में यह भी कहा गया कि महिलाओं को वेदशास्त्रों से विद्या के अवगाहन से वंचित कर दिया गया, इसीलिए देश और संस्कृति की दीन दुर्दशा हुई। यदि इस अधिकार की वंचना नहीं की गई होती तो हमारा देश आज उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचा होता, वह पूरे विश्व का नेतृत्व कर रहा होता।'

अंजना के बाद और देव कन्याओं ने भी गुरुदेव का संदेश सभागार में सुनाया। प्रत्येक ने अपने अपने ढंग से यह व्यक्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी कि वे गुरुदेव के विचारों और प्रेरणाओं को संदेश की तरह लेकर आई हैं और उन्हीं के शब्दों, भावों को यहां दोहरा रही हैं। प्रभावपूर्ण और ओजस्वी वक्तृता के साथ इस तरह की विनय और समर्पण की भावना लोगों को अध्यात्म संवेदना से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सराबोर किये दे रही थी। पैठण में हुआ विवाद बहुत चर्चित हुआ था। उसमें पंडितों और शास्त्रज्ञों ने तर्क, प्रमाण और शास्त्रीय आधार पर कहने की कोशिश की थी कि महिलाओं या लड़कियों को यज्ञोपवीत नहीं पहनना चाहिए। जवाब ने देवकन्याओं ने ऋषिकाओं और ऋषि कन्याओं के उदाहरण देकर प्रतिप्रश्न किया कि यदि महिलाओं के लिए उपवीत वर्जित है तो आश्रम में वे शिक्षा कैसे प्राप्त करती थीं। यज्ञ में कैसे भाग लेती थीं? यज्ञ कैसे कराती थीं? और मंत्रदृष्टा कैसे बन पाई थीं? ये सभी पात्रताएं और स्थितियां यज्ञ में भाग लेने की अर्हता सिद्ध करने पर ही मिल सकती है। उपवीत उस अर्हता की घोषणा स्वरूप ही है। शास्त्रज्ञ और विद्वान पण्डितों से इन प्रश्नों का उत्तर देते नहीं बना था। वे यहां वहां से रटे हुए संस्कृत के श्लोक पढ़कर ही चुप रह गये थे। विवाद या विमर्श सुनने वाले उनके तर्कों और प्रतिपादनों पर बार-बार हंस उठते थे।

महिलाओं का विद्या हठ

हैदराबाद के पास निजामपुर में मुसलमान परिवारों का बाहुल्य था। उनमें परदा, बुरका, चादर आदि से ढकी स्त्रियों की देखादेखी हिन्दू महिलाओं में भी दबे-ढके रहने की प्रवृत्ति घर कर गई थी। पर्दे का जोर इतना ज्यादा था कि मंदिर में जाने पर देव प्रतिमा के सामने भी वे सीने तक घूंघट खींचे रहती थी। अक्टूबर १९७५ में वहां के कार्यकर्त्ताओ ने देवकन्याओं का एक आयोजन रखा। छोटी उम्र में ही बड़ों-बड़ों को चकित कर देने वाली देवकन्याओं ने हुंकार भरी कि कौन कहता है आप अबला हैं? अरे आप तो महिला है, महिला। महिला का अर्थ जानती हैं? मही को भी जो हिला दे वह महिला होती है। यह वाक्य सुन कर चार पांच महिलाओं ने तुरंत अपना घूंघट खोल दिया। उनके देखा-देखी और स्त्रियों ने भी साहस किया।

कार्यक्रम के दो तीन दिन बाद उन महिलाओं के पास पड़ोस की मुस्लिम महिलाओं ने भी बुरके से बाहर आने की कसमसाहट दिखाई। उन्होंने घर और आसपास के परिवारों में आते जाते समय खुले मुंह निकलना शुरु किया। इस पर कुछ पुरुषों ने आपत्ति की। बड़ी बुजुर्ग महिलाओं ने भी उन्हें रिवाज और कायदे का हवाला देकर समझाना चाहा। बुर्का और पर्दा अस्वीकार करने वाली स्त्रियों ने देवकन्याओं के तर्क दोहराए। कहा कि अगर हम जेवर और गहनों की तरह ढकी दबी रहेंगी तो आपके वारिसों को बहादुर कैसे बनाएंगी? वे भी हमारी तरह दबे कुचले और बुझे हुए मन वाले होंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जरीना बेगम नाम की एक मुस्लिम महिला अपनी हिंदू सहेली के साथ देवकन्याओं की गोष्ठी में हो भी आई थी। यह गोष्ठी सिर्फ महिलाओं के लिए ही थी। इसमें देवकन्याओं ने कहा था कि जानती हैं संतानें अपराधी और असामाजिक क्यों बनती हैं? इसलिए कि उनके माता-पिता और खास तौर पर मां का दिल बुझा हुआ होता है। उसमें ताकत नहीं होती है। अरे! जो स्त्री हर पल यही ध्यान रखती रहे कि सिर से पल्लू कहीं खिसक तो नहीं गया, कहीं घूंघट बालिश्त भर ऊपर तो नहीं चढ़ गया, वह स्त्री अपने आपको ताकतवर कैसे बनाएगी। जो मां ताकतवर नहीं है, उसके बच्चे भी कमजोर होंगे और वे आसानी से बहका लिए जाएंगे या खुद बहक जाएंगे। जरीना ने यही दलीलें, दोहराते हुए तीस साल की उम्र में फिर से पढ़ने का निश्चय कर लिया था और ओपन यूनिवर्सिटी योजना के अंतर्गत मैट्रिक की परीक्षा देने की जिद पकड़ ली थी। इस जिद के आगे पति और ससुराल वालों को झुकना पड़ा। उस जिद में दी गई दलीलों के आगे मायके वालों को भी झुकना पड़ा। इस संघर्ष में जरीना का बुर्का और पर्दा बहुत पीछे छूट गया था।

१९७४ में देवकन्याओं के प्रवास और आयोजनों की यह एक बानगी है। उनके उद्बोधनों ने बड़ी संख्या में लोगों का ध्यान आकर्षित किया था। इससे पहले बटुक और ब्रह्मचारी तो धर्म प्रचार के लिए बहुत निकलते थे, लेकिन आठ दस से चौदह पंद्रह वर्ष की कन्याओं के धर्म प्रवास पर निकलने का प्रयोग इतिहास में कहीं नहीं दिखाई दिया। आरंभ कैसे हुआ? गुरुदेव से किसी ने भी कभी जिज्ञासा की या उन्होंने स्वगत भी बताया तो इतना कि हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने आदेश दिया और हमने उसका पालन किया। बस आरंभ हो गया, विस्तार भी और पल्लव पुष्प भी खिल उठें।

नवरात्र में आह्वान

कार्यकर्त्ताओं में कुछ ने इस आरंभ को लेकर तरह-तरह की अनुभूतियां की। शान्तिकुञ्ज के सबसे पुराने कार्यकर्त्ता यहां की स्थापना और शिलान्यास के समय से जुड़े रहे रामचंद्र सिंह बताया करते थे कि उन्हें मार्च १९७४ नवरात्रियों में थोड़ी सी झलक मिली थी। वे चैत्र और आश्विन की नवरात्रियों में नियम पूर्वक अनुष्ठान करते थे। कभी कभार ऊपर माताजी के कक्ष के पास स्थित मंदिर के बाहर बैठकर भी जप ध्यान कर लिया करते थे। दूसरा या तीसरा नवरात्र होगा। गुरुदेव और माताजी को प्रणाम कर वे वेदमाता की प्रतिमा के सामने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
माताजी के कक्ष के पास सट कर बैठे। आंख बंद कर विग्रह का ध्यान करने लगे। ध्यान की अवस्था में ही उन्हें लगा कि गायत्री के विग्रह में स्पंदन हो रहा है। आदिशक्ति जैसे अभी अपने आसन से उठने वाली है। रामचंद्र सिंह ने आंखें खोली और देखा। प्रतिमा पूर्ववत थी। उन्होंने आंखें बंद कर ली और आदिशक्ति को निहारने लगे। निहारते हुए प्रतीत हुआ कि चार पांच कन्याएं माता की प्रतिमा के आसपास खेल रही है। वे कन्याएं मां की प्रतिकृति जैसी ही लग रही थी। फिर आंखे खोली और देखा तो सब कुछ सामान्य था। सब कुछ सहज पा कर एक बार फिर ध्यान लगाया। इस बार प्रतिमा के स्थान पर गुरुदेव की छवि दिखाई दी। इस बार भी वहां कन्याएं खेलती दिखाई दे रही थी।

रामचंद्र सिंह को यह अनुभव विचित्र लगा। उन्होंने शान्तिकुञ्ज के ही एक सहयोगी कार्यकर्त्ता बद्रीप्रसाद पहाड़िया को बताया। पहाड़िया जी ने मजाक के लहजे में कहा नवरात्र के उपवास शुरु कर दिए है न। इसलिए भूख के कारण भांति-भांति के दृश्य दिखाई दे रहे होंगे। रामचंद्र सिंह हंसने लगे। अब पहाड़िया जी थोड़े गंभीर हुए और कहने लगे कोई विशेष बात होने वाली है शायद। मुझे भी सुबह उपासना के समय कन्याएं दिखाई दी थी। मैने यही अर्थ लगाया कि नवरात्र में देवी के नौ रूप दिखाई दे रहे हैं। भगवती दुर्गा की आराधना इन दिनों कन्या के रूप में ही तो होती है।

इन्हीं नवरात्रियों में चौथे या पांचवे दिन नागपुर की एक कार्यकर्त्ता अदिति भावे ने देखा कि एक राजकुमारी पीले वस्त्र पहन कर दक्षिण दिशा में जा रही है। अदिति को यह अनुभव जागते हुए पूरे होशोहवास में हुआ था। उस राजकुमारी के साथ चल रहे कई लोग उसे संघमित्रा के रूप में पहचान रहे हैं। उसकी आयु चौदह पंद्रह वर्ष रही होगी। अदिति भावे इस अनुभूति का मर्म समझ नहीं पाई। कुछ दिन बाद उसकी बेटी रागिनी का पत्र आया। तब वह अर्थ समझ पाई। रागिनी शान्तिकुञ्ज में पढ़ रही थी। उसने अपनी मां को लिखा कि वह भी वानप्रस्थी बनना चाहती है। यहां व्यवस्था नहीं है लेकिन मन करता है वानप्रस्थ शिविर में प्रशिक्षण लूं। उम्र की अड़चन है। किसी तरह अपने आपको पचास वर्ष से ज्यादा उम्र का साबित करूं और शिविर में घुस जाऊं। प्रशिक्षण लेकर अपने आपको जाहिर करूं। रागिनी के इन भावों को पढ़ कर अदिति को हंसी आ गई। उसके मुंह से सिर्फ इतना ही निकला कि क्या पागल लड़की है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इन अनुभवों के अर्थचिंतन से परे नवरात्र पूरी होते होते गुरुदेव ने देवकन्याओं के प्रशिक्षण का कार्यक्रम घोषित कर दिया। निर्धारण वसंत पर ही हो गया था। उसके लिए सूक्ष्म जगत से इस संकल्प और योजना का अवतरण इन दिनों हो रहा था। इस योजना के अंतर्गत किशोर वय की कन्याओं को युग क्रांति के लिए क्षेत्र में भेजने की व्यवस्था की जानी थी। उनके शिक्षण, वस्त्र विन्यास, कार्यक्रम, कार्यपद्धति और दायित्वों का निर्धारण भी तुरंत हो गया। नवरात्रियां पूरी होते होते उन सबकी व्यवस्था बन गई और देवकन्याओं का प्रशिक्षण शुरु हो गया। आरंभ में माताजी के सान्निध्य में बारी-बारी से अखंड जप कर रही कन्याओं में से ही चुनाव किया गया। प्रशिक्षण आगे बढ़ने पर संख्या बढ़ा दी गई।

देव कन्याओं को चार-चार, पांच-पांच की टोली में भेजा जाना था। उनके साथ एक वानप्रस्थ कार्यकर्ता अभिभावक के रूप में रखना निश्चित हुआ। देवकन्याओं के प्रवास कार्यक्रमों की योजना जब क्षेत्र में घोषित हुई तो तुरंत प्रतिक्रिया हुई। गायत्री परिवार की शाखाएं इस घोषणा से उत्साह से झूम उठी थीं। शान्तिकुंज में शाखा विभाग के आंकड़े बताते हैं कि एक महीने में ही करीब डेढ़ हजार आवेदन आ गए। तीन-तीन दिन के कार्यक्रम होने थे। फिलहाल तीन या चार टोलियां भेजने के बारे में ही सोचा जा रहा था। साढ़े चार हजार कार्यदिवसों का हिसाब लगाएं तो टोलियां तैयार होने से पहले ही तीन वर्ष के लिए व्यस्त हो गई थीं। उन्हें यहाँ से वहाँ जाने की फुरसत भी नहीं मिलनी थी। टोलियों की संख्या बढ़ाना पड़ी और परिजनों से भी धैर्य रखने के लिए कहा गया।

पुत्री के रूप में मां

अपनी मां अदिति को येन केन प्रकार से वानप्रस्थ प्रशिक्षण लेने का इरादा लिखने वाली रागिनी ने भी देवकन्या बनने की इच्छा व्यक्त की। एक दिन अवसर पाकर माताजी के सामने अनुरोध कर दिया। माताजी ने पहले अपनी मां और पिता को बताने के लिए कहा। रागिनी ने अपनी मां को पत्र लिखा। कहा कि लड़कियों के लिए वानप्रस्थ जैसी योजना शुरू हो गई है। वह भी इस योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण लेना चाहती है। पत्र पढ़ते ही मां का कलेजा धक से रह गया। उसे कुछ दिन पहले देखा स्वप्न याद हो आया। उस स्वप्न में संघमित्रा नाम की एक राजकुमारी सी लड़की को दक्षिण दिशा में जाते हुए देखा था। अदिति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को लगा कि हो ना हो यह स्वप्न उसकी बेटी के बारे में ही है। पत्र में आगे पढ़ा कि देवकन्याएं भी वानप्रस्थियों की तरह पीले वस्त्र पहनेंगी और धर्मप्रचार के लिए क्षेत्रों में जाएंगी। इस पंक्ति पर ही वह ठहर गई और निश्चय कर लिया कि आज ही शान्तिकुंज जाएंगी और वहां से अपनी बेटी को वापस लायेगी। इस तरह तो रागिनी संन्यासी हो जाएगी। अदिति अच्छी तरह जानती थी कि गायत्री परिवार में संन्यास जैसी कोई व्यवस्था या श्रेणी नहीं है। फिर भी मां का मन ही तो ठहरा।

रागिनी का पत्र पढ़ने के बाद हरिद्वार जाने की ऊहापोह में ही थी कि दफ्तर से पति श्रीकांत भावे अचानक आ गए। उनकी तबियत कुछ गड़बड़ हुई लग रही थी। घर में प्रवेश करते ही अदिति ने अंदाज लगा लिया। श्रीकांत को हल्का सा बुखार था। दवा ली और ओढ़कर सो गए। अदिति अपने काम में लग गई। उसे ख्याल आया कि श्रीकांत की तबियत खराब है इसलिए शान्तिकुंज तुरंत जाना शायद नहीं हो सके। उसने यह भी सोचा कि श्रीकांत कुछ स्वस्थ हों और जागें तो बातचीत करें। लड़की को देवकन्या-वानप्रस्थी या संन्यासी होने देने की अनुमति किसी कीमत पर नहीं देनी चाहिए।

अदिति ने उस दिन स्कूल जाने का इरादा छोड़ दिया। मन सुबह से ही उदास था लेकिन असमंजस था कि पढ़ाने जाऊं या नहीं? फिर रागिनी का पत्र पढ़कर मन नहीं जाने की ओर झुका। श्रीकांत के दफ्तर से लौट आने से मन पूरी तरह एक तरफ ही हो गया कि नहीं जाना है। छुट्टी की खबर भिजवा कर वह घरेलू कामों में लग गई। बीच बीच में श्रीकांत को भी देखती रही। वह आराम से सोया हुआ था। घर के कामों से निपटने के बाद वह खाली हुई तो दोपहर ढाई तीन बजे के आसपास पूजा कक्ष में गई। अखंड ज्योति का नया अंक उलटने पलटने लगी। फिर गायत्री महाविज्ञान का पहला भाग उठाया और उसमें 'माता से वार्तालाप की साधना' नामक प्रकरण पढ़ने लगी। इस प्रकरण को वह पहले भी पढ़ चुकी थी। एक बार फिर पढ़ने का मन हुआ तो दृष्टि अटक गई। पढ़ने की चेष्टा कर ही रही थी कि पालथी लगाकर गायत्री माता के सामने बैठने का मन हुआ। वह बैठने के लिए उठ ही रही थी कि उसे बिटिया रागिनी की आवाज सुनाई दी, जैसे वह पुकार रही हो।

आवाज रागिनी की लग रही थी पर थी नहीं क्योंकि उन स्वरों ने अदिति का नाम लेकर पुकारा था। अदिति ने आसपास देखा, कुछ नहीं दिखाई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
दिया। कानों में कुछ यूं ही बज गया होगा, सोचकर वह आगे बढ़ी कि फिर आवाज आई 'बेटी अदिति, मुझे अपनी पुत्री के रूप में स्वीकार नहीं करोगी क्या?' इस बार पूरा वाक्य सुनाई दिया था। यह भी प्रतीत हुआ कि आवाज पूजा स्थल की ओर से आई है। अदिति ने पूजा स्थल की ओर देखा तो वहां अदिति का रूप धारण किए एक सूक्ष्म आकृति दिखाई दी। स्वरूप से वह दिव्य देह धारिणी लग रही थी। अदिति उस आकृति को पहचानने की कोशिश करते हुए बोली, 'आप मां है न देवी' उसका आशय गायत्री माता से था। उस आकृति ने कहा हम सब आदिशक्ति की ही संतान हैं। इसलिए मां का ही रूप समझो। कहते हुए वह आकृति खिलखिलाकर हंस दी। उस हंसी में रागिनी की ध्वनि सुनाई दी थी। अदिति ने कहा-'अरे रागिनी, तुम यहाँ कैसे?' उस आकृति ने कहा, 'मैं रागिनी नहीं हूँ पर वह भी गायत्री के एक हजार आठ नामों में से एक है। महाकाल ने उसे भी अपना संदेश पहुँचाने के लिए चुना है। यह उसका सौभाग्य है। निश्चिंत रहो अब।'

कहकर वह सूक्ष्म आकृति तिरोहित हो गई। उसने जिस ढंग से 'अब' कहा था, उससे लग रहा था जैसे वह आश्वस्त कर रही हो। यह संदेश भी दे रही हो कि सहस्रनाम्रा गायत्री का एक नाम अदिति के रूप में भी प्रकट हुआ है। इस संदेश को ग्रहण करने के बाद रागिनी को देवकन्या बनने देने की अनुमति के लिए जो संशय चित्त में उठ रहे थे वे सब तिरोहित हो गए। संकल्प उभरा कि रागिनी को देवकन्या बनने देना है और इस में यदि श्रीकांत भी असहमति जताते हैं तो उन्हें भी मना लेना है।

सभी दिशाओं में शांतिकुंज

उस दिन गायत्री जयंती थी। सन् १९७४ में जून की तारीख २९। धरती तपने लगी थी लेकिन शान्तिकुञ्ज में बह रही हवाओं में ताप की जगह शीतलता का स्पर्श था। सुबह के करीब नौ बजे का समय। माताजी के कक्ष से उतरने वाली सीढ़ियों से शुरु होकर गेट तक कार्यकर्त्ता और शिविरार्थी दोनों तरफ कतार लगाए खड़े थे। शिविरार्थियों में यद्यपि प्राण प्रत्यावर्तन शिविरों में आए साधक भी थे लेकिन वानप्रस्थियों की संख्या ही अधिक थी। शान्तिकुञ्ज के मुख्य परिसर में पीछे तक आवासीय भवनों का दो मंजिला निर्माण हो चुका था। इन दिनों जहां सप्तऋषियों की झांकी है, वहां सभागार हुआ करता था। पूज्य गुरुदेव इसी सभागार में साधकों को संबोधित करते थे। शाम के समय कभी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
वानप्रस्थ कार्यकर्त्ताओं और कभी देवकन्याओं का अभ्यास चलता था। सभागार से मुख्य भवन तक आने वाली सड़क के दोनों ओर कुंज और क्यारियों का निर्माण भी हो गया था। वसिष्ठ और विश्वामित्र कुंज के नाम से अभिहित इन स्थलों पर सीमेंट और पत्थर की चौकियां बनी हुई थीं। उन चौकियों, चबूतरों पर बैठ कर साधक अपने अंतरंग में झांक लिया करते थे।

गायत्री जयंती १९७४ के दिन इन कुंजों को भी विशेष रूप से सजाया गया था। यह सज्जा कार्यकर्त्ताओं और शिविरार्थियों ने की थी। गायत्री जयंती का दिन तो था ही, उसके साथ एक विशेष संदर्भ भी जुड़ रहा था। इस दिन देवकन्याओं के जत्थे क्षेत्र में नवजागरण के लिए प्रस्थान करने वाले थे। शिविरार्थियों, साधकों और वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने इस घटना का साक्षी बनने के लिए अपनी उपस्थिति दर्ज कराई हुई थी।

ऊपर माताजी के कक्ष में पांच देवकन्याओं ने गुरुदेव और माताजी को प्रणाम किया। वहां से चलकर अखंड दीपक और गायत्री माता की प्रतिमा के सामने तक आईं। दर्शन वंदन और स्वस्तिवाचन के बाद माताजी ने बारी-बारी से देवकन्याओं को टीका लगाया। पहले जत्थे में शामिल देवकन्याएं जब सीढ़ियों की ओर रवाना हुई तो बाहर स्वागत के लिए खड़े साधकों ने जयघोष किया। गुरुदेव और माताजी इन देवकन्याओं को विदा करने सीढ़ियों तक आए थे। नीचे उतरने से पहले देवकन्याओं ने गुरुदेव और माताजी को एक बार फिर वंदन किया। चरण स्पर्श कर उठते हुए देवकन्याओं की आंखें भर आई थीं। पलकों में चमक उठे मोतियों में कुछ समय के लिए अपने आराध्यों के प्रत्यक्ष सान्निध्य से दूर जाने की व्यथा के साथ उन अश्रु बिंदुओं में किसी महत्कार्य को संपन्न करने के लिए जाने का उत्साह और विजयी होकर लौटने का संकल्प भी जगमगा रहा था। इन अभिव्यंजनाओं से अलग गुरुदेव माताजी से दूर जाने की पीड़ा भी थी। उसका निवारण करते हुए गुरुदेव ने स्नेह स्पर्श दिया और कहा कि तुम हम लोगों को हर घड़ी, हर पल अपने आसपास अनुभव करोगी। देखना, जहां भी जाओगी वहां चारों तरफ शान्तिकुञ्ज ही शान्तिकुञ्ज दिखाई देगा। उल्लास और विषाद का अनूठा संगम लिए देवकन्याएं विदा हुईं।

गुरुदेव के इस स्नेह में महीनों तक दिए गए प्रशिक्षण का सार मंत्र की तरह गुंथा हुआ था। उसे माथे पर लगाकर, आत्मा में धारण कर और सांसों में बसाने का भाव करते हुए देवकन्याएं नीचे उतर आईं। पीले वस्त्र पहने और हाथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
में दंड धारण किए देवकन्याओं को प्रस्थान करते हुए देखना एक अनुभव से गुजरना था। उस अनुभव को अपनी स्मृति में समेटते हुए साधकों ने देवकन्याओं के उठते हुए एक एक पग पर शुभकामनाएं दी और जयघोषों से वातावरण को मंगल भावों से भर दिया। विश्वास और आत्मबल से दीप्त देवकन्याओं ने वहां उपस्थित सभी परिजनों का हाथ जोड़कर अभिवादन किया और फूलमालाओं से सजे वाहन में शान्तिकुञ्ज के बाहर निकलीं।

देवकन्याओं को क्षेत्रों में तरह-तरह के अनुभव हुए थे। उनकी आंतरिक और आत्मिक स्थिति को व्यक्त करने वाले इन अनुभवों में गुरुदेव और माताजी को प्रतिक्षण अपने साथ रहने की प्रतीती सबमें सामान्य थी। मंच पर पहुंचने और व्यासपीठ पर बैठने तक शुरु में हर किसी को घबराहट हुई। व्याख्यान और संगीत का अभ्यास हफ्तों तक किया था फिर भी झिझक दूर नहीं हुई थी। झिझक और संकोच के इन क्षणों में कई बार अंधेरा छाता दिखाई दिया लेकिन धीरे धीरे स्थितियां स्पष्ट होने लगीं। अनन्या नाम की देवकन्या को लगा कि अब बोल ही नहीं सकेगी कंठ सूख रहा था। आवाज निकलने का नाम नहीं ले रही थी और लग रहा था कि चक्कर खाकर अभी गिर जाएगी।

चारों तरफ छाते जा रहे उस अंधेरे में पहला दृश्य यह दिखाई दिया कि गुरुदेव माताजी अपना वरद हस्त उठाए सामने खड़े हैं। फिर उनकी उपस्थिति सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होती जा रही है और प्रकाश की एक रेखा बनकर मुंह के सामने तक पहुंच गई है। इसके बाद कुछ ध्यान नहीं रहा। होश आया तो पता चला कि अभिभावक वानप्रस्थी समेत साथी देवकन्याएं शाबासी दे रही हैं। व्याख्यान प्रभावशाली बन पड़ा था और साथियों का कहना था कि चालीस मिनट के उस उद्‌बोधन में लोगों ने आठ दस बार तालियां बजाई थीं।

औंध-महाराष्ट्र में इसी तरह अनुराधा को बुरी तरह हिचक महसूस हुई थी। यद्यपि वह पिछले कई कार्यक्रमों में व्याख्यान दे चुकी थी लेकिन यहां संस्कृत महाविद्यालय में व्याख्यान देना था। जाने माने विद्वान, शास्त्री और पंडितजन इस सभा में मौजूद थे। अपने विषय के धुरंधर जानकार। कहीं भी चूक हो सकती है और चूक पकड़ी गई तो किरकिरी होगी। यह अहसास जबान खुलने नहीं दे रहा था। वह मंच पर जाते हुए कांप सी रही थी। उसे घबराते देख साथी देवकन्या ने गुरुवंदना छेड़ दी। 'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः..' की ध्वनि कानों में पड़ते ही अनुराधा को लगा कि सामने गुरुदेव खड़े हैं और वही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
प्रवचन कर रहे हैं। उन्हें प्रवचन करते हुए वह प्रत्यक्ष देख रही थी और देखते देखते ही उनका अनुकरण करने लगी। वे जो बोल रहे थे, उसे ही दोहराने लगी। बोलते बोलते जब वह अपने आपे में आई तो देखा कि सभा में उपस्थित विद्वज्जन मंत्रमुग्ध से सुन रहे हैं। अनुराधा के माध्यम से जो भी प्रतिपादन हो रहे हैं, उन्हें सुन कर विद्वानों के चेहरे पर अहोभाव झलक रहा था। जैसे वे यह सब पहली बार सुन रहे थे। अनुराधा को निरंतर लग रहा था कि उसका अपना कोई अस्तित्व ही नहीं है। काय कलेवर ही सिर्फ अपना है बाकी शक्ति, अभिव्यक्ति, विचार, भाव सब चेतना के महासूर्य से आ रहे हैं। वही अपने आपको इस माध्यम से साधकों तक पहुंचा रहे हैं।

उदात्त भाव की जीत

देवकन्याओं का विरोध भी कम नहीं हुआ था। वैचारिक और सैद्धांतिक स्तर पर हुए विरोध का समाधान तो आसानी से हो गया। पैठण, रामटेक, वाराणसी, रामनाथपुरम, और कांची के विद्वानों ने देवकन्याओं की अवधारणा का शास्त्रीय आधार पर विरोध किया। उन्हें ऋषिकन्या, आश्रमों और आरण्यकों में रहने वाली गौतमी, उत्तरा, नंदिनी, अन्वया, अंबुजा, सौदामिनी, जानकी आदि वैदिक पौराणिक चरित्रों के उदाहरण दिए गए। इन उदाहरणों और प्रतीकों को सामने रख कर संवाद किया गया तो उनका समाधान भी हो गया। भावना और उद्देश्य की उदात्तता समझ कर कई विद्वत्जन सहयोग भी करने लगे। इस तरह के विरोध से देवकन्या के विचार को विस्तार ही मिला। थोड़ी कठिनाई अड़ियल और विचारहीन विरोध के कारण हुई। लेकिन समाधान उस विरोध का भी हो गया।

विरोध में कई जगह निहित स्वार्थों के कारण संगठन बन गए थे। राजस्थान में जोधपुर के पास रुणीचा में तो लोगों ने आयोजन स्थल पर ही धरना दे दिया। यहां लोकदेवता बाबा रामदेव का तीर्थ है। तेरहवीं शताब्दी में हुए इन संत को राजस्थान और गुजरात में श्रद्धाभाव से पूजा जाता है। भाद्रपद महीने में एक बड़ा मेला लगता है। उस में दूर दूर से लोग पहुँचते हैं और बाबा के मंदिर में कलावा बांध कर फरियाद करते हैं। अपने समय के बाबा रामदेव की ख्याति करुणावान और परोपकारी राजा के रूप में थी। पीड़ा और संकट की सूचना मिलते ही वे सारे काम छोड़ कर उस स्थान पर दौड़े चले जाते थे और पीड़ितजनों की सेवा सहायता करते थे। उनके इसी रूप की लोग आज भी आराधना करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस तीर्थ से हटकर स्थानीय साधकों ने एक यज्ञ का आयोजन रखा। मेले के आसपास की तिथियां इसलिए चुनी कि लोग आसानी से आ सकें। इस कार्यक्रम में देवकन्याओं को संबोधित करना था। रुणीचा के पुरोहितों को पता चला तो उन्होंने अनुरोध किया कि आयोजन मंदिर के पास ही रख लिया जाए। वहां बाबा रामदेव के कुछ उपासक कलाकार भी भजन कीर्तन प्रस्तुत कर लेंगे। इस प्रस्ताव को अमली रूप देने का सिलसिला चल ही रहा था कि कुछ सनातन धर्मी संस्थाओं ने विरोध के सुर छेड़ दिए। उन्होंने कहा कि लड़कियां अबोध हैं। उन्हें बुलाने, गायत्री मंत्र का जप और यज्ञ कराने से अनिष्ट होगा क्योंकि यह शास्त्र मर्यादा के विरुद्ध है। कुछ पंडितों ने यह भी कहा कि इससे रामदेवरा की पवित्रता पर आंच आएगी। उन लोगों ने आयोजन के खिलाफ पर्चेबाजी भी कर दी और माहौल बनाने लगे कि देवकन्याएं आई तो उन्हें बोलने नहीं दिया जाएगा।

इस स्थिति में मंदिर प्रशासन ने आसपास आयोजन का विचार छोड़ दिया और पूर्व निर्धारित स्थल पर ही सहयोग देने का वायदा किया। विरोधियों को इस पेशकश की सूचना मिल गई और उन्होंने भी अपनी योजना बना ली। रामदेवरा के सामने प्रदर्शन और आयोजन स्थल पर धरने की घोषणा कर दी। प्रशासन ने मंदिर के बाहर प्रदर्शन की योजना तो खैर बदलवा दी लेकिन धरने कार्यक्रम नहीं टलवा सके। गायत्री परिवार के सदस्यों ने स्थानीय प्रशासन से निश्चिंत रहने के लिए कहा और अपनी आस्था जताई कि जिसका यह आयोजन है, वह महाशक्ति अपने आप संभालेगी।

घणी खमा बापजी

आयोजन की तिथियां आईं। यज्ञशाला बनाने सजाने के साथ कार्यक्रम का प्रचार भी किया जाने लगा। विरोधी पंडितों ने अपनी तरह से इन प्रयासों को निष्फल बनाने की कोशिश की। कोई असर नहीं हुआ तो उन्होंने विरोध को उग्र रूप देने की कोशिश की। तैयारियां अपनी गति से चल रही थीं। यज्ञकुंड बनाए जाने वाले दिन की घटना है। शास्त्रीय विधि से कुंडों का खनन कर ईंटों से उनकी दीवारें चिन दी गई थीं। इस क्रम में शाम हो गई। कुंड कच्चे और गीले ही थे। सूखने में एकाध दिन लग सकता था। अगले दिन आगे की तैयारियों की योजना बनाते हुए आयोजक अपने अपने घर चले गए। विरोधियों ने सोचा कि इन कुंडों को ही खोदकर नष्ट भ्रष्ट कर दिया जाए। हो सकता है ये लोग फिर बना लें। तब फिर इसी तरह बाधा खड़ी करेंगे। हम लोगों की ताकत दिखाई देगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुंडों की ईंटे हटाने और खुदाई को भरने के इरादे से तीन चार लोग तैयारी स्थल पर गए। अंधेरी रात थी। भादों महीने का कृष्ण पक्ष। आसमान पर टिमटिमा रहे तारों की रोशनी के अलावा कोई प्रकाश नहीं था। विघ्नकर्ताओं ने अपने हाथ में एक लालटेन रखी हुई थी। तैयारी स्थल पर पहुंच कर उन्होंने तीली जलाई। माचिस से तीली रगड़ी ही थी कि घोड़े की टाप सुनाई दी। लगा कोई घुड़सवार इधर ही आ रहा है। विघ्नकर्ताओं ने लालटेन जलाने का विचार स्थगित कर आवाज की दिशा में देखा। आवाज पास आती जा रही थी। एक ने कहा कुछ नहीं है, अपना काम करो। कहते हुए माचिस की तीली जलाई ही थी कि लगा घोड़ा पास ही पहुंच गया है और कुछ कदम पर रुक गया है। उसके एक ही जगह खड़े होने और पैर उठाने, जमीन पर पटकने की दो चार ध्वनियां हुईं। लालटेन जल चुकी थी उसकी रोशनी में उन्होंने आवाज की दिशा में देखा तो पाया कि राजसी वेश में एक तेजस्वी पुरुष घोड़े पर सवार है। सफेद रंग के घोड़े की पीठ पर बैठे उस व्यक्ति ने चमकदार पगड़ी बांध रखी है। अंगरखा भी जरीदार और चमकदार है। चेहरे पर घनी दाढ़ी मूंछ है और आंखों में जैसे अग्निशिखा बसी हुई है। हाथ में एक माला है और कमर में तलवार बंधी हुई है।

उस राजपुरुष ने कहा कुछ नहीं। सिर्फ घूर कर देखा ही। उस दृष्टि में इतनी फटकार थी कि लालटेन जलाकर देख रहे लोगों ने अपना सामान वहीं छोड़ा और डर से थर थर कांपते हुए खड़े हो गए। एक के मुंह से बरबस निकला-अरे यह तो बापजी है। औरों ने भी उस आकृति की ओर देखा। आंखों में वही रोष चमक रहा था। आकृति ने कुछ कहा नहीं-सिर्फ देखती रही। उन लोगों के मुंह से समवेत निकला खता हो गई बापजी। घणी खमा। अब हम आपका हुकुम ही बजाएंगे। मेवाड़ी में कही गई इस पंक्ति का अर्थ था बहुत अपराध हो गया पिताजी। क्षमा करो प्रभु। हम आपकी आज्ञा का पालन करेंगे। उस आकृति के मुंह से सिर्फ 'हूं' निकला। चारों व्यक्तियों ने उन्हें दण्डवत प्रणाम किया। उस रूप में तीर्थ के अधिष्ठाता पुरुष बाबा रामदेव ही दिखाई दिए थे। बाबा को लोग श्रद्धा भाव से 'बापजी' कहते हैं। उन विघ्नकर्ताओं ने बापजी को पहचान लिया था। आकृति के मुंह से एक बार फिर हुंकार निकली और उसने घोड़े की लगाम खीची। घोड़ा हिनहिनाया और मुड़ने लगा। उन चारों व्यक्तियों में से एक ने कहा-'बापजी ने माफ कर दिया। हम लोग भी सुबह से इस पुण्य में हाथ बटाएंगे जिसकी रखवाली बाबा खुद कर रहे हैं।'

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तेरह

शक्तिरूपेण संस्थिता

महानदी के किनारे बसे खाखरिया (केंद्रपाड़ा) गांव में रहती थी अवंती। चालीस की हो गई थी। अभी तक मां नहीं बन सकी थी और यही उसका सबसे बड़ा दुख था। घर में सास ननद के ताने तो सुनने ही पड़ते, बाहर पास पड़ोसी भी सामने पड़ने से कतराते थे। किस्मत से पति सुलझे विचारों के थे, वरना परिवार का दबाव तो पड़ रहा था कि दूसरी शादी कर ले। पति वल्लभ शर्मा केंद्रपाड़ा जिले के सिखोली गांव में अध्यापक थे और गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता थे। वे अवंती को समझाते कि संतान हो जाती तो भी ठीक रहता और नहीं है तो भी ठीक है। इसे लेकर व्यथित न होओ। संतान से नहीं, अपने कर्मों से अपना यश चलता है। गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज को ही देखो उनका यश किस संतान के कारण बढ़ा है, सारी दुनिया उन्हें याद कर धन्य हो रही है।

पति समझा रहे होते तो अवंती के मन का नासूर और बहने लगता। रो उठती और कहने लगती–तुम्हें कौन सा परिवार या पास–पड़ोस के लोगों के बीच रहना पड़ता है। रहती तो मैं हूं। ताने उलाहने मुझे सुनने पड़ते थे। सोचो तो जरा सुबह उठते ही कोई तुम्हारा मुख देख ले और 'राम' 'राम' कहता हुआ दूर भाग जाए तो कैसा लगेगा ? अवंती की इस व्यथा के आगे वल्लभ शर्मा निरुत्तर हो जाते। दिन इसी तरह रोते कलपते बीत रहे थे। एक दिन वल्लभ शर्मा ने चर्चा छेड़ी। तब शान्तिकुञ्ज में महिला शिक्षण शिविर शुरु हो गए थे। अक्टूबर १९७५ के आसपास की बात रही होगी। गुरुदेव ने महिला जागरण अभियान का उद्घोष किया था। आह्वान था कि महिलाएं घर परिवार में ही व्यस्त न रहें, थोड़ा समय निकालें घर से बाहर आए और समाज का काम करें।

वल्लभ शर्मा को यह आह्वान अपनी पत्नी के दुख का निवारण उपाय लग रहा था। उन्होंने कहा, 'गुरुदेव के प्रति तुम्हारी श्रद्धा है। उनसे तुमने अपनी व्यथा कभी नहीं कही, लेकिन उन्होंने तुम्हारे लिए उपाय बना दिया है।' अवंती सुनती रही। पति ने कहना जारी रखा, 'संतान नहीं है तो इस स्थिति को अपना सौभाग्य बना सकती हो। वहां तीन महीने का महिला शिक्षण शुरु होने वाला है। एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
बार हो आओ और जो सीखो उसे अपनी समाज साधना बनाओ।' अवंती ने बीच में ही बात काटी, कहा, 'लेकिन मैं इससे मां थोड़े ही बन जाऊंगी।'

वल्लभ ने समझाया, 'क्या पता? गुरुदेव की कृपा हो जाए और न भी बनो तो कोई हर्ज नहीं है। जिन बच्चों और समाज के लोगों के बीच काम करोगी, वही तुम्हारे परिवार में शामिल हो जाएंगे। संतान नहीं होने का दुख आनन फानन में भूल जाओगी।'

अवंती को फिर भी बात गले नहीं उतरी। पति ने आखिरी दलील दी और कहा चलो, 'कुछ नहीं होगा पर तीन महीने यहां के माहौल से तो दूर रहोगी। गुरुदेव के सान्निध्य में, आश्रम के दिव्य वातावरण में तुम्हारे भीतर बहुत से परिवर्तन आएंगे। एक बारगी मान भी लें कि कोई बदलाव नहीं आएगा पर उपेक्षा और तिरस्कार के इस वातावरण से तो बचोगी।'

तरह-तरह से समझाने के बाद अवंती मान गई और शान्तिकुञ्ज जाने की तैयारी करने लगी। पत्राचार और आवेदन की स्वीकृति होने में जितना समय लगा, उस अवधि में जप अनुष्ठान करती रहीं। नियत समय पर शान्तिकुञ्ज पहुंची, वहां शिविर की दिनचर्या में शामिल हुई तो दो चार दिन अटपटा लगा। फिर दिनचर्या की व्यस्तता और आश्रम के दैवी वातावरण में जल्दी ही मन रम गया। बहुत अच्छा लगा कि खाखरिया में जहां सुबह उठ कर घर से बाहर निकलना संताप बन जाता था, वहां अब चार बजे उठते ही वेदमंत्रों की ध्वनियां सुनाई देती हैं, वंदनीया माताजी और गुरुदेव के उद्‌बोधन कानों में पड़ते हैं। समाज की साधना का अभ्यास करते हुए दिन बीतता है। नई विधाएं सीखते और साधन अनुष्ठान करते हुए तीन महीने का समय कब बीत गया, कुछ पता नही चला।

शिविर पूरा होते ही वल्लभ शर्मा शान्तिकुञ्ज पहुंचे। दोनों ही उद्देश्य थे कि पत्नी को भी साथ लिवा लाएंगे और गुरुदेव तथा माताजी को भी प्रणाम कर लेंगे। वल्लभ शर्मा को गुरुदेव ने अगले ही दिन बुला लिया। अवंती भी साथ हो गई। दोनों ने एक साथ प्रणाम किया। गुरुदेव ने अवंती की ओर देखा और पूछा, 'कैसा लगा बेटी शिविर। घर जाकर अब पहले की तरह संताप में जलती भुनती तो नहीं रहोगी न।'

सुनकर अवंती को तुरंत कुछ नहीं सूझा कि क्या कहे? शिविर के दौरान वह मुश्किल से दो या तीन बार गुरुदेव के पास आई थी। वह भी समूह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
में। तब वह अपने मन की व्यथा कुछ कह ही नहीं पाई थी। न बोल कर और न ही लिखकर। यहां गुरुदेव ने अपनी ही ओर से संताप का जिक्र कर दिया। अवाक रह गई थी क्योंकि अपनी व्यथा को व्यक्त करने के लिए 'संताप' शब्द उसकी जबान पर बस गया था। गुरुदेव से वही शब्द सुना तो चौंकी और बोली 'आपका काम ही करूंगी गुरुदेव। अब मैंने जीवन का सच समझ लिया है।'

गुरुदेव ने कहा, 'तुम्हारी इच्छा भी पूरी होगी बेटी। कोई ऋषि आत्मा तुम्हारी कोख से जन्म लेगी। तुम भगवान का काम करती रहना।' इतना कहकर गुरुदेव ने अवंती का सिर थपथपाया और वल्लभ शर्मा से उस क्षेत्र के, वहां चल रही गायत्री परिवार की गतिविधियों के बारे में बात करने लगे। पाँच सात मिनट में चर्चा पूरी हो गई और दंपत्ति गुरुदेव के कक्ष से बाहर आ गए। अपने गांव जाने की तैयारी में जुट गए। वल्लभ ने पत्नी से शिविर के बारे में और यहां के प्रभाव से मन में आए संकल्प के बारे में कुछ नहीं पूछा। दोनों चुपचाप सामान बांधते रहे। वहां से रवाना हुए तो जरूर रास्ते भर बातें करते रहे। इस वार्तालाप में भी अवंती की भागीदारी ज्यादा थी। उसके पास सुनाने के लिए बहुत कुछ था। शान्तिकुञ्ज में व्यतीत किए दिन, महिला शिक्षण के बिंदु और उन सबसे ज्यादा गुरुदेव तथा माताजी के संबंध में अपनी अनुभूतियाँ।

व्यथा घुलने लगी

खाखरिया पहुंच कर अवंती ने महिला प्रौढ़ शाला की शुरुआत की। शाला के बजाय कक्षा कहना ज्यादा उचित होगा क्योंकि हफ्ते भर के प्रयास के बाद पांच महिलाएं ही जुट पाई थीं। इनमें तीन तो सर्वथा निरक्षर थीं, दो को मामूली अक्षरज्ञान था। अपना नाम लिख लेती थीं, कुछ वाक्य भी आधी अधूरी भाषा में लिख लेती और चिट्ठी पत्री बांच लेती थीं। पांचों महिलाओं ने आना शुरु किया तो अवंती ने दोनों निरक्षर स्त्रियों को अक्षर ज्ञान और वर्णमाला के अभ्यास के लिए अतिरिक्त समय दिया। उनके लिए खुद एक घंटा ज्यादा बैठी और उनसे डेढ़ दो घंटे घर पर अभ्यास करने के लिए भी कहा। पांच छात्राओं से शुरु की गई यह कक्षा धीरे-धीरे बढ़ने लगी।

१९७५ में शुरु हुए महिला जागरण अभियान की यह एक व्यक्तिगत बानगी थी। प्रशिक्षण सत्रों की शुरुआत वर्ष के अंत में हुई थी लेकिन अभियान का उद्घोष अप्रैल में चैत्र नवरात्रियां बीतते ही कर दिया गया था। गुरुदेव ने अपने उद्बोधन में कहा था कि लड़कियां भी अब पढ़ने के लिए जाने लगी हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
उन्हें घर में, चौके चूल्हे तक ही सीमित रखने वाली मान्यता ढीली पड़ने लगी है। लेकिन लड़कियों को पढ़ लिखकर बड़े होने तक का इंतजार नहीं करना है। वे बड़ी होंगी और दस पंद्रह साल बाद समाज को कुछ ऊंचे स्तर तक पहुंचाने में सफल होंगी। समस्या उन महिलाओं की ज्यादा है जो प्रौढ़ हैं। वे ही घर परिवार संभाल रही हैं, उन्हीं की देखभाल में नए नागरिक तैयार हो रहे हैं और दुखद स्थिति यह है कि वही शिक्षा और चेतना से वंचित है।

अवंती की चेतना में गुरुदेव के स्वर गूंजते रहते। प्रवचन में सुने गए शब्द और अपनों से अपनी बात (अखंड ज्योति) में छपी पंक्तियां सुनते, पढ़ते याद करते और प्रौढ़ महिलाओं को पढ़ने के लिए तैयार करते करते उसकी अपनी व्यथा गायब हो गई। दिन भर मेहनत करने, गांव की महिलाओं को गायत्री कथा सुनाते समझाने में बीतने लगा। इन कामों में व्यस्त रहते हुए अवंती भूल ही गई कि वह निस्संतान है। शान्तिकुञ्ज से आने के बाद दिन, हफ्ते, महीने कब बीत गए कुछ पता ही नहीं चला। उसकी शुरु की गई महिला कक्षा में पैतीस छात्राएं आने लगी थीं। उन्हें पढ़ाने और व्यवस्था संभालने के लिए दो और महिला कार्यकर्त्ताएं तैयार हो गई।

चार पांच महीने बीते होंगे कि अवंती की तबियत कुछ खराब रहने लगी। चक्कर आते और घबराहट होती। शुरु में समझा कि ज्यादा भागदौड़ करने से यह परेशानी हो रही होगी। थोड़ा आराम करने से ठीक हो जाएगी। दो तीन दिन आराम किया फिर भी तबियत में सुधार नहीं हुआ तो डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने नाड़ी देखकर और लक्षण पढ़कर जो बताया उससे अवंती और बल्लभ शर्मा दोनों के चेहरे खिल उठे। दोनों को अपने जीवन में शिशु की आहट सुनाई देने लगी। मारे प्रसन्नता के दोनों की आंखें छलक उठीं और उन्होंने तुरंत गुरुदेव को एक पत्र लिख कर अपनी खुशी बताई।

महिला जागरण अभियान की पृष्ठभूमि अप्रैल १९७४ में बन गई थी। संभवत: वैसाखी का दिन था। सुबह कार्यकर्त्ता गोष्ठी में गुरुदेव ने इस अभियान की घोषणा की। आश्रम की व्यवस्था और गायत्री परिवार की गतिविधियों की चर्चा के दौरान उन्होंने अनायास ही कहा, अगले दिनों दुनिया भर में महिलाएं सभी क्षेत्रों में ज्यादा सक्रिय होती दिखाई देंगी। वे पुरुषों से कंधा मिलाकर ही नहीं, उन्हें मात देते हुए आगे बढ़ेंगी। दिखाई दे रहा है कि नारी शक्ति को उभरने से कोई रोक नहीं सकता। इस उभार के साथ खतरा यह है कि दिशा नहीं मिली

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
तो कहीं भटकाव न आ जाए। और अपने देश में तो हालत और भी विचित्र है। यहां स्त्रियों में शिक्षा का नितांत अभाव है। पारिवारिक मूल्यों और समाज के पारंपरिक ढांचे के कारण थोड़े संस्कार बचे हैं। उनका संरक्षण नहीं किया गया तो हालत और बिगड़ जाएगी। शिक्षा और संस्कार के अभाव में नारी शक्ति का उभार नई समस्याएं खड़ी करेगा। इसलिए महिलाओं के लिए अपने मिशन का एक नया अध्याय शुरु करना आवश्यक हो गया है।

इस उद्‌बोधन के साथ उन्होंने महिला जागरण अभियान का पूरा खाका खींच दिया था। गोष्ठी में बैठे किसी कार्यकर्त्ता ने सुनकर यह भी कहा कि आज के दिन ही गुरु गोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी और पुरुषों में शौर्य, संघ तथा संघर्ष का आह्वान किया था। महिला जागरण का आह्वान भी उसी तरह का ऐतिहासिक क्षण है। गुरुदेव ने उन कार्यकर्त्ता को टोका, 'हमें इस संकल्प को किसी ऐतिहासिक घटना से जोड़ कर नहीं देखना चाहिए। प्रत्येक घटना का अपना महत्व है।'

गुरुदेव ने कार्यकर्त्ता गोष्ठी में इस नए अभियान के बारे में बताया। ठीक उसी दिन सुबह दस बजे के आसपास की बात है। दक्षिण भारत में सबरीमलै तीर्थ के पास स्थित करुणाकर आश्रम में एक साध्वी मां मीरा अपने संस्थान को विसर्जित करने की योजना बना रही थीं। मां मीरा दरअसल पांडिचेरी स्थित श्री अरविंद आश्रम की अधिष्ठात्री श्रीमां से प्रभावित थीं। इस कदर प्रभावित कि उनकी स्थिति को श्रीमां के रंग में रंग जाना भी कह सकते हैं। साध्वी का मूल नाम कुछ और था, श्रीमां के मूल नाम की छाया ग्रहण करते हुए उन्होंने भी अपना नाम मीरा रख लिया था। श्री अरविंद आश्रम की मां ने गुह्य विद्याओं के अब तक रहस्य ही रहे अध्यायों के साथ, अध्यात्म, धर्म, समाज, संस्कृति, शिक्षा और विश्व व्यवस्था की अनेक धाराओं का उन्मेष किया था। उनका अनुगमन करती हुई मां मीरा तंत्र और भक्ति पर ही जोर देती थी।

यात्रा करो–प्रवासी बनो

मां मीरा के आश्रम में सात महिलाएं थीं। वे सभी अपनी अधिष्ठात्री मां के साथ योग और तंत्र की साधना कर रही थीं। आश्रम का नाम था आद्या शक्तिपीठ। चैत्र नवरात्र की अंतिम तिथि थी। पूर्णाहुति का दिन था। मीरा अपनी साधक शिष्याओं के साथ यज्ञ अग्निहोत्र संपन्न करने ही वाली थी कि पूर्णाहुति के समय विचित्र अनुभव हुआ। 'वसोपवित्रमसि शतधारं.....' मंत्र पढ़ते हुए यज्ञकुण्ड

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
में घी की धार बांधना शुरु किया ही था कि यज्ञाग्नि तीव्र होकर उठने लगी। मां मीरा को यज्ञ अग्निहोत्र अनुष्ठानों का अच्छा अनुभव था। वे जानती थीं कि वसोधारा के समय अग्नि प्रचंड हो उठती है। लेकिन इस बार अग्नि सामान्य ढंग से प्रचंड नहीं हुई थी। मां का कहना था कि शास्त्रों में जिस प्रकार बताया गया है कि अग्नि अपनी सातों जिह्वाओं के साथ ज्वलंत हो उठती है तो साधक को अपने अनुष्ठान की सफलता का आभास होने लगता है। लगता है कि उपास्य देव प्रकट हो रहे हैं।

मां मीरा के नवरात्र अनुष्ठान और पूर्णाहुति यज्ञ के पीछे कोई लौकिक कामना नहीं थी। वे चाहती थीं कि 'आद्या शक्ति' पीठ का विस्तार हो और यह ज्यादा से ज्यादा महिलाओं के लिए आश्रय स्थान बने। वे अपनी सांसारिक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर सकें। वसोधारा के समय यज्ञाग्नि जब अपने पूरे और अतिशय वेग के साथ प्रकट होने लगी तो मां मीरा ने समझा कि अब भगवती प्रकट होने ही वाली है। इस आशा अपेक्षा के जागने और तीव्र होते जाने के किसी क्षण में ही मां ने अनुभव किया कि यज्ञाग्नि में से धीरे-धीरे एक दिव्य आकृति प्रकट हो रही है। निमिष मात्र में ही उसने सिंहवाहिनी दुर्गा का रूप ले लिया। मां मीरा ने उस आकृति को प्रणाम किया। आकृति ने-भगवती दुर्गा ने आशीर्वाद मुद्रा में हाथ उठाया और कहा, 'आश्रम से बाहर भी निकलो! यात्रा करो, प्रवासी बनो और नारियों में सोए स्फुलिंगों का आह्वान करो।'

मां मीरा ने भगवती के इस आदेश को शिरोधार्य करने की मुद्रा में सिर झुकाया। उन्हें भगवती की वाणी सुनाई दे रही थी, 'भगवती गंगा के तट पर देवियों के आह्वान का महत्कार्य आरंभ होने जा रहा है। उस महत्कार्य में स्वयं को लीन कर दो। तुम्हारी तरह और भी साधक प्रत्यक्ष और परोक्ष भागीदार बनने वाली हैं। उस महत्कार्य में तुम्हें और भी उच्चस्तर की विभूतियों का संसर्ग मिलेगा।'

इस उद्‌बोधन के बाद भगवती की आकृति वापस अग्निशिखा में लीन हो गई। वसोधारा का चरण पूरा हो गया था और अब पूर्णाहुति यज्ञ की शेष क्रियाएं पूरी हो रही थीं। माँ मीरा ने उसी समय आश्रम को विसर्जित करने का मन बना लिया। यहां निवास करने वाली साधक चाहें तो वे चलाएं और विस्तार दें। स्वयं तो यहीं तक सीमित नहीं रहना है। आठ दस दिन मां मीरा ने अपनी साथी संन्यासिनियों से विचार विमर्श किया और तय रहा कि बाकी महिलाएं भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने घरों में लौट जाएं और भगवती दुर्गा ने जिस महत्कार्य में जुटने के लिए कहा है, उसी में लग जाएं। मां ने डेढ़ दो महीने के भीतर ही आश्रम को विराट में विलीन करने की योजना बनाई और उसे पूरा भी कर दिया। इसके बाद स्वयं शान्तिकुञ्ज की ओर चल दीं।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में अगरतला (त्रिपुरा) के पास एक कस्बा है बीसलगढ़। आसपास मीलों तक घना जंगल फैला हुआ है। बीसलगढ़ से ढाई तीन किलोमीटर एक आश्रम था विशालाक्षी मंदिर। वहां कुछ साधक भी निवास करते थे। ज्यादा समय वहीं बिताते और रात में विश्राम के लिए अथवा मंदिर के लिए कभी कभार बीसलगढ़ भी आ जाया करते थे। मंदिर डेढ़ सौ साल पुराना बताया जाता है। उपेक्षित होने के कारण ढहता जा रहा था। अब तो शायद वहां भग्नावशेष ही हैं लेकिन १९७५ में वहां साधन भजन चला करता था। उस वर्ष और उसके बाद तक ज्येष्ठ मास की बात है-शुक्ल पक्ष की नवरात्रियों में आराधन बरुआ, सोमनाथ, गार्गी विश्नोई, रमानी और जगदंबी आदि साधकों ने भगवती अर्चन का कार्यक्रम रखा।

चौबीस घंटे के इस अखंड आयोजन में कुछ साधक तीन-तीन घंटे तक बारी बारी से जप करते थे और कुछ मंदिर गर्भगृह के बाहर स्वाध्याय, संदोह, चर्चा विमर्श में व्यस्त रहते। संदोह विमर्श कभी एक ही मंच से संचालित होता तो कभी तीन-तीन चार के अलग अलग समूहों में। यह अर्चना व्यवस्थित और पहले से तय चरणों के अनुसार होती। जप, साधन और संदोह की प्रक्रिया चलते हुए दस ग्यारह घंटे बीत गए। सुबह सात बजे शुरु हुई अर्चना अगले दिन इसी समय पूरी होनी थी। शाम पांच बजे का समय रहा होगा। वह समय संध्या पूजा से पहले मंचीय चर्चा का था। साधक विमर्श के लिए एकत्रित हो रहे थे। पंद्रह सोलह साधक आए होंगे कि उनका ध्यान अपने बीच मौजूद एक गेरुआ वस्त्रधारी साधक पर गया। साधक सबके लिए नया था। किसी ने उसे आसपास तो क्या मीलों दूर तक भी नहीं देखा था। जगदंबी ने पहल की और प्रश्न वाचक दृष्टि से देखा। फिर पूछा कि आप कहां से? उस साधक ने अपना परिचय दिया कि मैं ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर रहने वाला साधु वैरागी हूं। इधर से गुजर रहा था और कुछ प्रेरणा उठी तो यहां चला आया। उस साधक ने तत्परता से उत्तर दिया। जैसे वह पूछे जाने का इंतजार कर रहा था। जगदंबा ने अभिवादन किया और कहा, 'आप को नमन है। हम लोग आपके अनुभव भी सुनना चाहेंगे।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साधु वैरागी नाम का वह संन्यासी जगदंबा का निमंत्रण सुनकर मुसकराया और साथ-साथ चल दिया। फिर मंच पर गया और बिना कोई भूमिका बनाए कहने लगा, 'अब यह पाखंड ज्यादा नहीं चलने का। हम लोग मां के दिव्य रूप की तो आराधना करते हैं और उसके जागतिक रूप को पैरों तले रौंदते हैं। यह पाखंड है, ज्यादा नहीं चलेगा। समय बदल रहा है। जल्दी ही मां का दिव्य रूप जगत में भी व्यक्त होगा और हम लोग नहीं सुधरे तो मां दंडित करेगी।'

लगभग दस मिनट तक साधु के मुंह से दिव्य और जागतिक रूपों के बारे में सूत्रवाक्य निकलते रहे। फिर वह बोला जिसे हम नद कहते है न, ब्रह्मपुत्र महानद। देखना वह भी महानदी के रूप में बहेगी। हम इसी नाम से पुकारने लगेंगे। साधु वैरागी की वाणी में जैसे सम्मोहन था। वहां उपस्थित साधकों ने मंत्रमुग्ध होकर सुना। सुनते-सुनते साधक इतने तल्लीन हो गए कि साधु वैरागी ने अपनी बात कब पूरी की, कुछ पता ही नहीं चला। यह भी ध्यान नहीं रहा कि साधु अपनी बात कह कर कब मंच से उतरा और कब चला गया। साधकों को सुध आई तो वे वैरागी को खोजने लगे। कुछ मंदिर से बाहर भी ढूंढ़ने गए पर कहीं पता नहीं चला। उन लोगों में से किसी ने कहा कि कोई अलौकिक व्यक्ति होगा। कृपा करने आया होगा। औरों ने भी इसकी पुष्टि की और अपनी निर्धारित चर्चा में लग गए।

वैरागी की याद

करीब महीने भर बाद साधकों को उस रहस्यमय संन्यासी की फिर याद आई। मंदिर में पीले वस्त्र पहने कुछ लोग साइकिलों पर आए थे। उन्होंने गांव वालों को बुलाया और गायत्री मंत्र, यज्ञ, मातृशक्ति आदि के बारे में बताया। तीन दिन के प्रवास में उन्होंने सत्संग चर्चा के अलावा गायत्री यज्ञ भी किया। साधकों को भगवती अर्चना के समय आए संन्यासी की याद इसलिए आई कि पीतवस्त्रधारी कार्यकर्त्ताओं ने मातृशक्ति के बारे में उन्हीं बातों की विस्तार से विवेचना की थी। यह भी कहा था कि गायत्री परिवार के संपर्क में आएं और शान्तिकुञ्ज जाकर देखें। फिर विचार करें कि अपने परिवार की महिलाओं को वहां भेजने का इरादा बनता है या नहीं। हालात बनते दिखाई दें तो वहां जरूर भेजें वरना आसपास के गांवों में इन बातों को पहुंचाए। कम से कम महिलाओं के लिए पढ़ने लिखने की व्यवस्था तो करें ही। जैसी भी बन पड़े, शुरुआत तो करें। आगे का काम भगवान संभालेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शान्तिकुञ्ज के युगान्तर चेतना वाहन से प्रवास पर निकले गुरुवर।

मेरी संवेदना सब के लिए है। आम भी, खास भी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुजरात प्रवास पर निकले आचार्य श्री ।
इनसेट में पंडित लीलापत जी,
जो उनकी छाया की तरह उनके साथ रहे।

दिल्ली स्टेशन पर
परिजनों का अभिवादन स्वीकार करते गुरुवर।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शक्तिपीठ प्राण प्रतिष्ठा प्रवास पर
राजस्थान के कांवट क्षेत्र में गुरूवर ।

आरती उतारते परिजन ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक कन्या आचार्य श्री को तिलक लगाती प्रवास में।

प्रवास अवधि में भोजन लेते आचार्य श्री।
साथ में बैठे हैं दाना भाई मधजी राठोड़।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अक्टूबर १९७४ से शान्तिकुञ्ज में महिला शिक्षण शिविर शुरु हो गए। महीने भर के इस सत्र में प्रारंभ में पचास महिलाएं आई। बाद में यह संख्या बढ़ने लगी। शिविर से पहले ही महिला जागरण की गतिविधियां चल पड़ी थीं। गुरुदेव ने गायत्री परिवार के पुरुष कार्यकर्त्ताओं से कहा कि पहल वे करें। घर परिवार में कोई महिला इतनी शिक्षित और प्रभावशाली हो कि तीसरे पहर तीन घंटे का समय निकाल कर महिला विद्यालय चला सकें तो उन्हें तैयार किया जाए। तीसरे पहर इसलिए कि तब घर गृहस्थी का काम कम होता है। परिवार में महिला जागरण के लिए समय निकालने वाली एक महिला निकल आए तो भी काफी है। किसी अन्य परिजन के यहां भी इस तरह की महिला तैयार हो सकती है। ऐसी दो चार महिलाएं इकट्ठी हों तो उस क्षेत्र में महिला जागरण अभियान शुरु हो सकता है। निर्देश था कि इस टोली का नाम महिला युग निर्माण शाखा रखा जा सकता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अप्रैल १९७४ में शान्तिकुञ्ज में चल रहे शिविर में गुरुदेव ने शिविरार्थियों को इस आरंभ के साथ आगे का उपक्रम भी समझाया। इन निर्देशों को पत्राचार द्वारा भी परिजनों तक पहुंचाया गया और अगले महीने मिशन की मासिक और पाक्षिक पत्रिकाओं के माध्यम से संदेश लगभग सभी परिजनों तक पहुंच चुका था। उसका परिणाम जून १९७४ में गायत्री जयंती तक दिखाई देने लगा। क्षेत्र में चार हजार महिला युग निर्माण शाखाओं की स्थापना हो गई। बाद में इस संगठन को महिला जागृति अभियान नाम दिया गया।

क्षेत्र में पहली समस्या प्रौढ़ महिला कक्षाओं के लिए छात्राएं जुटाने में आई। बीस पच्चीस परिवार में घूमने पर कोई एक प्रौढ़ महिला पढ़ने के लिए तैयार होती। यद्यपि वह जानती थीं कि कुछ पढ़ने लिखने योग्य सीख लेगी तो इसमें लाभ ही होगा। लेकिन वर्षों की अभ्यस्त चर्या में आलस्य जड़ें जमाए हुए था। वह निकल नहीं पाता था। बात शुरु करते ही वे पूछती कि पैतीस चालीस वर्ष की उम्र में पढ़ लिख कर क्या करना है ? कोई नौकरी तो करना नहीं है।

इस तरह का सवाल करने या जवाब देने वाली महिलाओं को समझाना कठिन हो जाता कि शिक्षित या साक्षर होने के क्या लाभ हैं। वे मानने को तैयार ही नहीं होती कि सिर्फ पढ़ना लिखना ही सीख लिया जाये, आगे नहीं सीखें तो भी व्यावहारिक जीवन में कदम कदम पर फायदा है। बाहर निकलने पर अता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पता पूछने के लिए भटकने की जरूरत नहीं होगी। अपने स्वजन संबंधियों को चिट्ठी लिखाने के लिए किसी की चिरौरी नहीं करना पड़ेगी। हिसाब किताब स्वयं रख सकेंगी। दूसरों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा, घर गृहस्थी के कामकाज से बचने वाला समय किताबें पढ़ने, अखबार और पत्र-पत्रिकाएं बांचने या इनमें दिलचस्पी नहीं हुई तो गीता रामायण के पाठ प्रवचन में लगाया जा सकेगा। गपबाजी छूटेगी तो कई झंझटों से छुटकारा मिलेगा। अपने आसपास अच्छा वातावरण बनाया जा सकेगा। इस तरह की तमाम बातें विस्तार से कहना समझाना पड़ती। इस सबके बावजूद बीस पचीस घरों में एकाध जगह ही सफलता मिलती।

लेकिन परीक्षा या चुनौती यहीं तक सीमित नहीं थी। प्रौढ़ महिलाएं तैयार हो जाती तो घर में सास ससुर आड़े आते। उन्हें यह अच्छा नहीं लगता कि बहू घर की चौखट से बाहर जाए। राजस्थान में अजयगढ़ की कार्यकर्त्ता गौरी व्यास ने बताया है कि उन्हें प्रौढ़ महिलाओं के आलस्य और संकोच को तोड़ने में खास दिक्कत नहीं हुई। सास ससुर की ओर से ज्यादा रुकावटें आई। गांव के प्रतिष्ठित पंडित विश्वनाथ शर्मा शास्त्रों और सामयिक विषयों में गहरी पैठ रखते थे उन्होंने अपनी बहू को प्रौढ़ शाला में भेजने से मना करते हुए विद्वत्तापूर्ण तर्क दिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा का अर्थ अक्षर ज्ञान या किताब पढ़ाना ही नही है। व्यक्ति का संस्कारवान और ग्रहणशील होना ही पर्याप्त है।

गौरी ने कहा, 'व्यक्तित्व के विकास में स्वाध्याय की उपयोगिता भी तो है। आप इससे सहमत नहीं है क्या?'

'पूरी तरह सहमत हूँ। लेकिन हम लोग जिस तरह के वातावरण में रहते हैं उसके अभ्यस्त हो चले हैं और उसमें सुखी संतुष्ट हैं। अब उस व्यवस्था को तोड़ कर बहुएं बाहर जाएंगी तो असुविधा होगी,' पंडित विश्वनाथ ने कहा, 'और वे घर के भीतर रहकर ही स्वाध्याय कर रही हैं।'

गौरी ने फिर बात आगे बढ़ाई, 'कुछ समय के लिए वे घर से बाहर निकलें, तो उनके गुणों का लाभ गांव की दूसरी स्त्रियों को भी मिलेगा। वे महिलाएं बहुओं से कुछ सीखेंगी।'

पंडित जी ने कहा, 'जिन्हें सीखना है वे हमारे घर आ जाएं। यहीं बहुओं से सीखें।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस पर गौरी ने कहा, 'किंतु महाराज जी, यह ट्यूशन पढ़ना नही हैं। हम लोग गायत्री परिवार के सिद्धान्तों का प्रचार कर रहे हैं। इस पर पंडित जी ने कहा कि गायत्री परिवार के बारे में मैं भी अच्छी तरह जानता हूँ। पूज्य आचार्यजी से भेंट भी हुई है। मैं उनके प्रति भक्तिभाव रखता हूँ लेकिन क्या करूं? अपनी कुल मर्यादा का उल्लंघन नहीं कर सकता।'

गौरी और पंडितजी इस विषय पर करीब आधा घंटे तक चर्चा करते रहे। बातचीत में पता नहीं किन भावों ने पंडित जी का मन छुआ कि अचानक उन्होंने कहा, 'अच्छा आप बहुओं के बाहर निकलने पर जोर न दें तो मैं एक व्यवस्था कर सकता हूँ।' गौरी ने उनके अगले वाक्य सुनने की उत्कंठा जताते हुए पंडितजी की ओर देखा। उन्होंने कहा, 'अगर आप लोग चाहें तो प्रौढ़ कक्षाएं हमारी हवेली में ही लगाएं। मैं दो कमरे का इंतजाम कर सकता हूँ। आप लोग यहीं आ जाया करें।'

प्रस्ताव आकर्षक था। गौरी को लगा कि हमारा उद्देश्य महिलाओं में जागृति लाना है। वे घर में रहें या बाहर, क्या फर्क पड़ता है? प्रौढ़ शाला के लिए स्थान की व्यवस्था भी तो करना होगी। व्यवस्था अपने आप हुई जा रही है। क्यों न इसे भगवान की भेजी हुई सहायता के रूप में स्वीकार किया जाए। वह इन विचारों में डूब उतरा ही रही थी कि पंडित जी ने टोका, 'प्रस्ताव पसंद नही आया? है न?'

'नहीं नहीं। ऐसी बात नहीं है।' गौरी ने कहा, 'दरअसल मैं कुछ और ही सोच रही थी। मैं सोचती हूँ कि इस बारे में मैं अकेले तो फैसला नहीं कर सकती। अपनी कार्यकर्त्ता बहनों से भी विचार करना होगा। मैं कल सुबह आपको बता दूंगी।'

उस दिन की चर्चा वहीं पूरी हो गई। शाम को अजयगढ़ की महिला कार्यकर्त्ताएं जुटी तो पंडित जी के प्रस्ताव की चर्चा हुई। थोड़े बहुत मतांतर से सभी ने स्वीकार किया कि पंडितजी के प्रस्ताव को मान लेना चाहिए। उनकी बहुएं सामान्य स्कूली पढ़ाई तो किए हुए हैं ही। वे गायत्री परिवार के विचार और संस्कार ग्रहण करते हुए स्वयं भी नई विद्यार्थियों को पढ़ाएंगी। दूसरे गांव में पंडितजी की प्रतिष्ठा का लाभ भी मिलेगा। वहां पढ़ने जाने की बात पर महिलाएं आसानी से तैयार हो जाएंगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पंडित जी की हवेली में महिला शाला की कक्षाएं शुरु होना एक सुखद उपलब्धि थी। शुरु में कठिनाई और चुनौती लग रही स्थिति जिस तरह अनुकूलता में बदली, उससे कार्यकर्त्ताओं का हौसला बढ़ा। लेकिन इस तरह के अनुभव हर कहीं नहीं हुए। ज्यादातर जगह अनथक परिश्रम ही करना पड़ा।

महिला वर्ष और दशक

महिला जागरण शाखाओं के विस्तार और आंदोलन की गतिविधियां तीव्र से तीव्रतर होते जाने के साथ कुछ कार्यकर्त्ताओं को साल छह महीने पुरानी घटनाएं याद आ रही थीं। उन घटनाओं का सीधा संबंध गायत्री परिवार के महिला जागरण आंदोलन से नहीं था। फिर भी वे घटनाएं और उनके संदर्भ महत्वपूर्ण है। संभवत: अगस्त १९७५ की बात है। शान्तिकुञ्ज परिसर में महिला जागरण शिविर चल रहा था। शिविर में भाग ले रहीं कुछ महिलाएं रक्षाबंधन की चर्चा कर रही थीं। शिविर की चर्चा का ही हिस्सा रही इस गोष्ठी में मुंबई से आई कार्यकर्त्ता जानकी बजाज अपनी बात कह ही रही थी कि राजस्थान की एक कार्यकर्त्ता राजलक्ष्मी ने कहा, 'बहनों को यह तो पता चल ही गया होगा कि संयुक्त राष्ट्र ने हमारे अभियान से मिलते जुलते कुछ और कार्यक्रम घोषित किए हैं।'

महिलाओं ने उनकी ओर उत्सुकता से देखा। जानकी ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहना जारी रखा। सरकारी स्तर पर यह वर्ष महिला वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है, जगह जगह कार्यक्रम हो रहे हैं, महिलाओं के लिए प्रौढ़शालाएं शुरु की जा रही हैं, उन्हें अपने अधिकारों के बारे में बताया, समझाया जा रहा है।'

राजलक्ष्मी ने कहा, 'सो तो है। संयुक्त राष्ट्र ने आठ मार्च को महिला दिवस घोषित किया है। हर वर्ष यह तारीख महिलाओं के अधिकार और उनकी स्थिति में सुधार के लिए याद की जाती रहेगी।'

चर्चा चल रही थी कि वृंदावन से आई सविता पांडे को हंसी आ गई। आसपास बैठी दो तीन महिलाएं और हंस उठीं। उन्हें हंसी का कारण पता नहीं था लेकिन प्रतिध्वनि की तरह और महिलाओं की खिलखिलाहट भी गूंज उठी। गोष्ठी का संचालन कर रही जानकी बजाज ने पूछा। 'क्या हुआ बहिन। हमें भी बताओ न। हो सकता है, हम लोग भी थोड़ा हंस लें।'

सविता पाण्डे ने 'पहले तो कोई बात नहीं' 'कुछ नहीं हुआ' कह कर टालने की कोशिश की। दूसरी कार्यकर्त्ता बहिनों ने भी आग्रह किया तब बोली,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
'न जाने क्यों यह ध्यान आते ही हंसी आ गई कि गुरुदेव ने जिस अभियान को साल भर से छेड़ रखा है, उसके बारे में दुनिया के कर्त्ताधर्ता बन रहे संगठनों को अब याद आ रही है। वे अब नकल कर रहे हैं।'

'नकल नहीं बहन, ये प्रेरणाएं और हलचलें भी गुरुदेव द्वारा प्रवाहित की गई प्रेरणाओं का ही प्रताप है।' फिर वह बताने लगी कि पिछले साल जुलाई १९७४ में जब वे यहां आई थीं तो महिला जागरण अभियान का तानाबाना बुना जा रहा था। गुरुदेव ने देवकन्याओं की एक गोष्ठी में कहा था कि आने वाला समय महिलाओं का होगा। तुम लोगों की साधना सीप में पड़ने वाली ओस की बूंद की तरह सिद्ध होगी जो मोती बन कर विश्व इतिहास रचेगी।'

पिछले वर्ष गुरुदेव के श्रीमुख से सुनी और बातों का जिक्र भी जानकी बजाज ने किया। उसमें विश्व स्तर पर महिलाओं में जागरुकता लाने के प्रयासों और वार्षिक पंचवर्षीय, दस वर्षीय और शताब्दि योजनाओं के संकेत भी। वे संकेत जो गुरुदेव ने महिला जागरण अभियान के उद्घोष से पूर्व किए थे और शुरुआत के बाद तो उन्हें और विस्तार से स्पष्ट किया था। सविता पांडे, राजलक्ष्मी और अन्य कार्यकर्त्ता बहनें जब दुनिया के रंगमंच पर महिलाओं के लिए चिंता का जिक्र कर रही थीं, तब अधिकांश भारत में महिलाओं के उत्कर्ष को हलचलें व्याप उठी थीं।

८ मार्च को ही महिला दिवस क्यों? गोष्ठी में एक बहिन ने पूछा, जानकी ने कहा, 'अब से करीब सत्तर साल पहले इसी दिन ब्रिटेन में महिलाओं ने 'रोटी और गुलाब' का नारा लगाते हुए जगह जगह प्रदर्शन किए थे। रोटी उनकी आर्थिक सुरक्षा और गुलाब अच्छी जीवन शैली का प्रतीक था। बाद में यह आंदोलन आस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विटजरलैण्ड आदि देशों में भी फैला। दुनिया के दूसरे देशों में स्त्रियों पर जिस तरह की पाबंदियां रही हैं उनकी हम भारतीय नारियां कल्पनाएं भी नहीं कर सकतीं।

'यहां भी तो बहुत बुरी हालत है,' राजलक्ष्मी ने टोका तो जानकी बताने लगी, 'निश्चित ही भारत में भी अच्छी स्थिति नहीं है लेकिन इसके बावजूद महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा प्राप्त है। परिवार में, संयुक्त परिवार में, ससुराल और मायके में महिलाओं का जैसा ध्यान रखा जाता है, उसकी कल्पना भी पश्चिम की बहनें नहीं कर सकतीं।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शान्तिकुञ्ज की एक गोष्ठी में हुई यह चर्चा तो एक प्रतीक है। असल में पूरे देश में जहाँ जहाँ भी महिला जागरण का प्रकाश पहुँचा था, यह तथ्य अनुभव किया जा रहा था कि बाहरी समाज में इन दिनों जो घट रहा है, उसकी स्फुरणा गायत्री परिवार के सामूहिक जप से ही आई है। राष्ट्रसंघ ने १९५२ में भारी बहुमत से महिलाओं के राजनैतिक अधिकारों का नियम पास किया था लेकिन भारत में यह अधिकार शुरु से ही प्राप्त था। १९७५ में अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष का भारत में उद्घाटन करते हुए, १६ फरवरी को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरागांधी ने भी कहा था कि अपना देश नारी शक्ति को मान्यता देने के क्षेत्र में दुनिया के सभी देशों में आगे है। ऐसा कोई काम नहीं है जिसे महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर न कर सकें। इस क्षेत्र में कुछ धार्मिक और सामाजिक संगठनों की भूमिका उल्लेखनीय है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चौदह

अवतार प्रक्रिया का रहस्य

आन्ध्र प्रदेश में नलगोड़ा के पास एक गांव में रह रही दामिनी बिना अनुमति लिए ही अचानक शान्तिकुञ्ज आ गई थी। उसने गायत्री परिवार या गुरुदेव के बारे में तीन चार महीने पहले तक सुना भी नहीं था। तिरुपति के प्रसिद्ध दैवज्ञ पंडित वेंकट शास्त्री ने उससे कहा था कि तुम्हारी दारुण समस्या का हल उत्तर दिशा में जाने पर ही होगा। वहां का कोई ऋषि ही मदद कर सकता है। दामिनी की समस्या वाकई दारुण थी। उसका पति अनिल नायडू ट्रेवल एजेन्सी में काम करता था। अच्छा वेतन मिल रहा था, खेती-बाड़ी थी। आठवें दशक में दो ढाई लाख रुपये सालाना आमदनी हो जाती थी। दामिनी और अनिल की शादी हुए पांच साल हो गए थे। परिवार में दो बच्चे भी आ गये थे। सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था। इस बीच अनिल ने जमीन जायजाद का व्यवसाय शुरु किया। इस क्षेत्र का कोई अनुभव नहीं था। एक भागीदार चुना। दोनों मिलकर काम कर रहे थे।

कुछ दिन बाद पता नहीं क्या हुआ कि अनिल दामिनी से कुछ खिंचा खिंचा रहने लगा। व्यापार व्यवसाय ही नहीं, घर परिवार के बारे में भी दामिनी से कोई बात नहीं करना। और एक दिन ऐसा हुआ कि अनिल सुबह घर से निकला और वापस नहीं आया। शाम और देर रात तक तो दामिनी ने इंतजार किया । अगली सुबह भी वापस नहीं आया तो चिन्ता हुई। संबंधियों और परिचितों से पूछा-ताछा। यहां वहां तलाशा कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला। फिर नाते रिश्तेदारों और जान पहचान वालों से पूछा। वहां भी निराशा ही हाथ लगी। पार्टनर ने भी अनिल की खोज में मदद की और दामिनी के दुख में हिस्सा बटाया लेकिन सब बेकार। अनिल की कोई खोज खबर नहीं मिली। दिन-हफ्ते और महीने बीत गए। अब दूसरा साल चल रहा था। दामिनी पति के बारे में सूचना मिलने का इंतजार करते हुए उसे ढूंढने के लिए अपनी तरह से जतन करती। तीर्थ, मंदिर, सिद्ध स्थल और न जाने कहाँ-कहाँ यात्रा कर आई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पंडित वेंकट शास्त्री का बड़ा नाम सुना था। दामिनी ने उनसे अपना दुख बताया। जन्मपत्री देखे बिना ही उन्होंने कह दिया कि उत्तर दिशा में जाओ। वहाँ तुम्हारी समस्या का हल हो जायेगा। शास्त्री जी ने यह नहीं बताया कि उत्तर दिशा में कहाँ जाना है। दामिनी ने पूछा तो सिर्फ इतना ही कहा कि मैंने यह बात ज्योतिर्विद्या के आधार पर नहीं बताई है। तुम्हारे यहाँ आते ही लगा कि जैसे तुम मेरी पुत्री हो और बहुत कष्ट में हो। फिर अनायास ही जो प्रेरणा हुई उसे मैंने तुम्हें कह दिया। मुझे सिर्फ यही लग रहा है कि जिस महापुरुष के पास तुम्हारे कष्ट का निवारण होना है, वह किसी प्राचीन विद्या का उन्मेष करने में लगा हुआ है।

पण्डित जी के इतना बताते ही दामिनी ने तत्क्षण निश्चित कर लिया कि उन महापुरुष के सान्निध्य में जाना है। इस निश्चय के बाद दो तीन दिन में ही गंतव्य स्थान का पता भी चल गया। और जाने की व्यवस्था भी हो गई। दामिनी खुद हैरान थी कि कैसे यह सब हो रहा है। जिस ढंग से साधन जुट रहे थे, उससे दामिनी के मन में विश्वास जन्म लेता और बढ़ता जा रहा था कि उसकी समस्या हल हो जायेगी। उजड़ा हुआ संसार फिर बस जायेगा लेकिन शान्तिकुञ्ज पहुँच कर गुरुदेव से मिली तो निराशा ही हुई। मुश्किल से दो मिनट मुलाकात हुई होगी। दामिनी के हिसाब से गुरुदेव ने मामूली ढंग से ही कुशलक्षेम पूछा था। अपनी व्यथा के बारे में बताना शुरु ही किया था कि गुरुदेव ने कहा, 'चिन्ता न कर बेटी तुम्हारा पति आज कल में ही वापस आ जायेगा।'

दामिनी ने कहना चाहा था कि यह कैसे होगा गुरुदेव ? मैं तो यहाँ हूँ। अभी दो दिन बाकी हैं। मेरे पति वापस कैसे आ जायेंगे। उसने कहने के लिए मुँह खोला ही था कि गुरुदेव ने कहा, 'मन में कोई दुविधा मत पाल। तुम लोग फिर पहले की तरह सुखी रहोगे और तरक्की करोगे। तुम शिविर में आई हो न। शाम को गंगा किनारे जरूर हो आना। मन को शान्ति मिलेगी।'

दामिनी फिर दुविधा में फंसी। गुरुदेव में उसे कोई विलक्षणता नहीं दिखाई दे रही थी। पंडित जी से सुनकर सिद्ध महापुरुष का जो चित्र मन में बना था, वह गुरुदेव के व्यक्तित्त्व से कतई मेल नहीं ख़ाता था। गुरुदेव उसे महापुरुष, ऋषि या सिद्ध के स्थान पर अपने परिवार के बड़े बुजुर्ग ज्यादा लग रहे थे। दामिनी को लग रहा था कि वे कोई सहायता करने के बजाय सान्त्वना दे रहे थे। गुरुदेव ने जब शाम को गंगा किनारे हो आने के लिए कहा तब वह और ज्यादा क्षुब्ध हो गई। मन में विचार आया कि शायद गलत जगह आ गई है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दिन का बाकी समय अपने कक्ष में ही जप तप करते हुए बिताने के बाद वह शाम को गंगा किनारे घूमने गई। वहाँ उसके मन में क्षोभ और निराशा के भाव ही घनीभूत हो रहे थे। गंगा के जिस घाट पर वह कुछ देर के लिए बैठी थी, वहाँ और लोग भी आ जा रहे थे। उनमें से कुछ किनारे बैठकर जप ध्यान और स्तोत्र पाठ कर रहे थे। दामिनी किनारे बैठी गंगा की धारा को देख रही थी। उस समय भी नलगोड़ा में परिवार के साथ बिताये क्षण और उसके बाद पति के चले जाने से अब तक की कई स्मृतियाँ मन में आ जा रही थीं। वह बैठी हुई अपने अतीत के बारे में सोच ही रही थी कि कुछ क्षण पहले ही घाट पर आकर बैठे दो युवा साधुओं की आपस में चल रही बातचीत सुनाई दी। उनकी चर्चा में कुछ वाक्य ऐसे आ गये थे जिससे दामिनी के कान खड़े हो गये और वह गौर से सुनने लगी।

दोनों साधु आश्रम में आए किसी व्यक्ति के बारे में बात कर रहे थे जिसे अगले रविवार को संन्यास की दीक्षा दी जानी थी। वह व्यक्ति कुछ सप्ताह पहले यहाँ आया था और जैसा कि सुनाई पड़ा आन्ध्रप्रदेश के किसी शहर का था। वह व्यापार व्यवसाय में लगा हुआ था और वैराग्य होने के कारण यहाँ आ गया। आंध्रप्रदेश, वहाँ के शहर और व्यापार व्यवसाय की अस्पष्ट चर्चा से दामिनी को लगा कि कहीं वह व्यक्ति अनिल ही तो नहीं है। मन कुछ देर तक इस सम्भावना में अटका रहा और फिर उसने सुने हुए वाक्यांशों को मन से झटक दिया। कुछ देर और वहाँ बैठकर, गंगा की धारा में हाथ मुँह धोकर अर्घ्य प्रणाम के बाद दामिनी वहाँ से उठकर आ गई।

रात में दामिनी के मन में गुरुदेव से कल की भेंट, उनके आश्वासन और शाम को गंगा तट पर सुनी साधुओं की बातें आती रहीं। यह सब सोचते हुए कब नींद आ गई कुछ पता ही नहीं चला। लेकिन अगले दिन सुबह जो कुछ हुआ वह दामिनी की कल्पना से परे था। जप के बाद यज्ञशाला में हवन कर वह गुरुदेव माताजी के दर्शन करने ऊपर गई। वहां से नीचे उतरी तो सीढ़ियों के पास ही उसे अनिल खड़ा दिखाई दिया। उसे देखते ही हृदय धक से रह गया। इच्छा हुई कि उसे कस कर पकड़ ले और जी भर कर रोए। लेकिन दामिनी ने अपने आपको संभाला और वह अनिल की ओर देखने लगी, अनिल भी उसे देख रहा था। मन ही मन वह कह उठी, कहां थे इतने दिनों से निष्ठुर। इस बीच हम लोगों की तनिक भी याद नहीं आयी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुध लेने का आदेश

मुलाकात इतनी शान्त और संयत थी कि पास से गुजर रहे किसी व्यक्ति को आभास तक नहीं हो रहा था। अनिल ने कहा कि याद तो आती थी दामिनी पर मैं इस कदर हार और टूट गया था कि लौट नहीं पा रहा था। दामिनी ने लाड़ से डांटते हुए पूछा कि अब कैसे हिम्मत हुई तो अनिल ने एक विचित्र अनुभव सुनाया। उसने बताया कि कल रात भर नींद नहीं आई। घर परिवार छोड़ने के बाद वैसे भी नींद नहीं आती थी। लेकिन कल तो गजब ही हो गया। जैसे ही आँख लगती एक अवधूत संन्यासी दिखाई देते। जटा जूटधारी यह संन्यासी अनिल को झिंझोड़ कर उठा देते और कहते कि तुम्हारी पत्नी तुम्हें खोजती हुई यहाँ तक आई है और अब मेरे संरक्षण में है। ज्यादा कमाने और जल्दी से मालदार होने के चक्कर मे जो खो दिया है उसे भूल जाओ। अब उसकी सुध लो जो तुम्हें आठों पहर याद करती है।

रात भर में चार बार इस तरह की प्रतीति हुई। सुबह हुई तो पैर अपने आप इस दिशा में चल पड़े। पता नहीं था कि कहाँ जाना है। लेकिन यहाँ आते तक एक पल को भी नहीं लगा कि कहीं कुछ पूछने तलाशने की जरूरत है। जैसे कोई हाथ पकड़कर यहाँ ला रहा हो या आगे आगे रास्ता बताते हुए चल रहा हो। इस तरह यहाँ पहुँचा और कार्यालय में आकर तुम्हारे बारे में पूछा, पता किया। यह सब उन महात्मा का आदेश पालन करते हुए किया। दामिनी वृत्तांत सुन तो रही थी लेकिन उसके चित्त और भाव जगत में गुरुदेव के कल कहे हुए शब्द गूंज रहे थे। वह अपने पति को विस्मित और विस्फारित नेत्रों से देख रही थी लेकिन चेतना में गुरुदेव और उनके अनुग्रह से अभिभूत थी।

दामिनी थोड़ी सहज हुई तो पति को लेकर कार्यालय में गई। वहाँ उपस्थित प्रभारी कार्यकर्त्ता से अपने पति का परिचय कराया और गुरुदेव से मिलने का अनुरोध किया। यह भी कि अनुमति मिल जाए तो दोनों साथ ही गुरुदेव को प्रणाम करने जाएंगे। कार्यकर्त्ता ने यह सब नोट कर लिया और अनिल को अतिथि कक्ष में ठहरा दिया। दोपहर बाद का समय मिला। दोनों गुरुदेव से मिलने गए। दामिनी ने कल से घटी घटनाओं का ब्यौरा दिया और गुरुदेव के आशीर्वाद के प्रति कृतकृत्य होने लगी। अनिल ने अपनी गलती के लिए पश्चाताप जताया और दामिनी को हुए कष्ट के लिए गुरुदेव से माफी मांगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
गुरुदेव ने कहा, 'अब बच्चों का अच्छी तरह ध्यान रखना। मेहनत, ईमानदारी और धीरज से काम करना। जल्दी से धनवान बनने की होड़ में मत पड़ना।'

गुरुदेव की बात सुनकर अनिल का उत्साह बढ़ा। पश्चाताप, भूल सुधार और नया कुछ करने की उमंग उठने लगी। उसने कहा कि आपके आशीर्वाद से हम नई जिन्दगी शुरु करने जा रहे हैं गुरुदेव! हमें कोई आशीर्वाद दीजिए। हम और क्या करें? गुरुदेव ने कहा 'भगवान का काम करो बस। सब ठीक होगा। और हां याद रखो अधीर मत होना, अधीरता और उतावली के कारण ही राजा नल जैसे साधुपुरुष को अपना राजपाट खोना पड़ा था। पांसों या पत्तों से खेलना ही जुआ नहीं है, जल्दबाजी और बिना सोचे समझे दांव पर लगाने वाला हर कृत्य जुआ है। इससे बचना। तुम लोग खुश रहोगे।'

अनिल और दामिनी गुरुदेव को प्रणाम कर नीचे लौटे। कार्यालय में प्रबंधक स्वयंसेवक को उन्होंने अपना अनुभव बताया। उस समय कार्यालय में कुछ और कार्यकर्त्ता भी थे। दो एक शिविरार्थी भी। किसी शिविरार्थी ने कहा यह तो महाभारत काल में नल दमयन्ती की सी घटना हो गई। राजा नल भी तो जुआ खेलकर अपना राज पाट हार चुके थे। फिर दमयंती समेत परिवार और राज्य छोड़कर चले गये थे। जुआ है क्या आखिर। जल्दी से अमीर बनने की उतावली में उठाया गया कदम ही तो है न?

शिविरार्थी की बात सुनकर अनिल के अंतस में और गदगद अनुभूति हुई। लगा उसके प्रकाश का संसार और फैल गया है। कुछ पल के लिए वह अपने आपको नल और पत्नी को दमयन्ती के रूप में देखने लगा। उन्हीं शिविरार्थी ने कहा, रामायण, महाभारत और इतिहास पुराण के पात्र वास्तविक दुनिया मे जब हुए तब हुए होंगे, हमारे जीवन और व्यक्तित्व में तो वे हमेशा ही बसते हैं। सुनकर अनिल को लगा कि उसके सम्बन्ध में यह बात शत प्रतिशत चरितार्थ हुई है। उसने और दामिनी ने सचमुच नल दमयंती का जीवन जिया है।

युगों का मर्म

स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरि के शिष्य जगदीश मुनि भी उन दिनों शान्तिकुञ्ज आये थे। प्रसिद्ध योगी श्यामाचरण लाहिड़ी के शिष्य और जगदीश मुनि के गुरु श्री युक्तेश्वर गिरि की विभूतियों के बारे में बहुतों को पता होगा। योग, और हिमालय के गुह्य क्षेत्रों में तपश्चर्या कर रहे दिव्य योगियों के संपर्क में रहने वाले श्री युक्तेश्वर गिरि का एक और अवदान भी महत्त्वपूर्ण है। उस अवदान की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ज्यादा चर्चा नहीं हुई पर श्री युक्तेश्वर गिरि की इस स्थापना से युगों के सम्बन्ध में प्रचलित धारणा में आमूलचूल परिवर्तन आए हैं। परम्परावादी विद्वानों ने उनकी धारणा को अब भी स्वीकार नहीं किया है। जबकि पिछले पांच हजार साल की ऐतिहासिक घटनाओं से उनकी स्थापनाएं सही साबित हुई हैं।

श्री युक्तेश्वर गिरि क्रिया योग के प्रवर्तक और प्रचारक स्वामी योगानन्द परमहंस के गुरु भी रहे हैं। ज्यादा लोग उन्हें इसी रूप में जानते हैं। लेकिन ज्योतिष और काल मीमांसा उनके व्यक्तित्व का अविज्ञात या बहुत कम सामने आया पक्ष है। श्री युक्तेश्वर गिरि ने युगों की मीमांसा करते हुए लिखा है कि सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग की अवधि लाखों करोड़ों वर्ष नहीं होती। पौराणिक ग्रंथों में जहाँ भी इस अवधि का उल्लेख आया, वह प्रतीकात्मक है। यदि उस विभाजन और उसके अनुसार समय समाज की प्रवृत्तियों को यथावत न लें तो संसार चक्र मशीन की तरह हो जाए। मनुष्य के वश में कुछ रह ही नहीं जाएगा। उस हालत में वह काल और नियति से प्रेरित होकर ही अपना निजी और सामाजिक जीवन जियेगा।

जगदीश मुनि ने अपने गुरु की प्रणीत काल मीमांसा का परिचय देते हुए शिविरार्थियों से कहा कि चारों युगों में कुछ खास प्रवृत्तियों की प्रधानता रहती है और कुछ प्रवृत्तियाँ क्षीण हो जाती हैं। लेकिन वह अवधि हजारों वर्ष की नहीं होती। उनके गुरु के अनुसार चारों युगों की अवधि बारह-बारह हजार वर्ष के चक्रों में निर्धारित है। बारह हजार वर्ष के चार युगों में सतयुग के चार हजार, त्रेता के तीन हजार, द्वापर के दो हजार और कलियुग के एक हजार वर्ष होते हैं। दो युगों के बीच उस अवधि का दसवां हिस्सा संधिकाल कहलाता है। दस प्रतिशत आरंभ में और दस प्रतिशत अंत के संधिकाल को मिलाकर पूरा चक्र बारह हजार वर्षों का बनता है। पुराणों में भी मूल रूप में युगों का विभाजन इसी क्रम से हुआ है। इस संख्या या वर्षों को दिव्य और ब्रह्मा के समयमान से विभाजित कर लाखों करोड़ों वर्षों में फैला दिया गया है।

युगों की धारणा को मूल रूप में व्याख्यायित करते हुए श्री युक्तेश्वर गिरि कहा करते थे कि प्रत्येक युग में उसकी अंतर और प्रत्यंतर दशा भी चलती है। वह दशा, अंतर्दशा और प्रत्यंतर दशा प्रत्येक युग के भीतर चारों युगों का एक चक्र और प्रवाहित करती है। उदाहरण के लिए इन दिनों यदि कलियुग का प्रवाह चल रहा है तो एक हजार वर्ष की दिव्य या मानवीय मान वाली इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अवधि में भी चार सौ, तीन सौ, दो सौ और सौ वर्षों का एक और चक्र चल रहा है। इस गणना के अनुसार सन् १९०० से २१०० तक कलि और सतयुग का संधिकाल है। अपने गुरु के सिद्धान्त को और सरल और बोधगम्य बनाते हुए जगदीश मुनि ने बताया कि बीसवीं और इक्कीसवीं शताब्दी मात्र इतिहास में परिवर्तन का एक महान दौर लेकर आयी है। आरंभ के सौ वर्ष पतन और पराभव के हैं। तो आगामी सौ वर्ष अर्थात इक्कीसवीं शताब्दी उत्कर्ष और वैभव का दौर लेकर आ रही है।

जगदीश मुनि ने शिविर के दौरान हुई एक गोष्ठी में अपने गुरु की स्थापना का परिचय दिया था। स्थापना नई नहीं है। लेकिन वहाँ आये परिजनों के लिए कौतूहल वर्धक तो थी ही। जगदीश मुनि ने अपने गुरु की स्थापना को और स्पष्ट करते हुए कहा कि सूक्ष्म अर्थों में तो वर्षों और युगों के विस्तार में जाने की जरूरत भी नहीं है। भगवान वेदव्यास ने तो यहाँ तक कहा है कि कोई देश समाज जब निष्क्रिय और प्रसुप्त हो जाता है तो वह कलियुग का शिकार हो जाता है। जब जागता है तो द्वापर में प्रवेश करता है। उस समय देश समाज को अपने 'आत्मा' और 'धर्म' का बोध रहता है। जब वह उठकर बैठ जाता है, कुछ करने के लिए संकल्प बद्ध होने लगता है तो त्रेता युग का प्रभाव मानना चाहिए। देश समाज सक्रिय हो जाता है, चलने लगता है तो सतयुग में प्रवेश कर जाता है। इस तरह व्यक्ति और समाज में जो प्रवृत्तियाँ प्रबल होती हैं, उन्हीं के अनुसार युग बदलते हैं। यह नियम किसी समूह, परिवार और व्यक्ति पर भी लागू हुआ देखा जा सकता है।

अमेरिकन वैदिक इन्स्टीट्यूट के डेविड फ्राली (अब स्वामी वामदेव शास्त्री) ने स्वामी युक्तेश्वर गिरिके युग सिद्धान्त को ऐतिहासिक घटनाओं से जोड़ कर भी देखा है। उनके अनुसार युगों का प्रवाह अपसर्ग और उपसर्ग क्रम से होता है अपसर्ग अर्थात सत, त्रेता, द्वापर और कलि इसके बाद उपसर्ग क्रम शुरु होता है यानी कलि, द्वापर, त्रेता और सतयुग। इस क्रम को अवरोहण और आरोहण भी कहते हैं। ऐसा नही है कि कलियुग समाप्त होने के बाद यकायक सतयुग आरंभ हो जाए। अथवा कालक्रम पूरा होते ही कोई महा विलक्षणकारी चमत्कार हो और रातों रात स्थितियाँ बदल जाए। ज्योतिष के ग्रंथों में युगों के साथ इसीलिए संधिकाल का उल्लेख भी किया गया। इस संधिकाल में परिवर्तन प्रक्रिया तेजी से संपन्न होती है। स्वामी युक्तेश्वर गिरि और उनके सिद्धान्त की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्याख्या करने वाले विद्वानों के अनुसार कलि के अंत और कल्कि अवतार के प्रकट होने का यही समय है।

अवतार तत्व की अनुभूति

भगवान अपने संकल्प मात्र से ही विश्व की धारा बदल सकते हैं, ब्रह्माण्ड का कायापलट कर सकते हैं? तो फिर उन्हें जन्म लेने या अवतार ग्रहण करने की क्या आवश्यकता है? स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती से अवतार तत्त्व का उपदेश सुनने के बाद भी शिष्य ऋषि प्रसाद के मन में सवाल घुमड़ रहा था। ऋषि आगामी शरद पूर्णिमा को संन्यास धर्म में दीक्षित होने वाला था। यह प्रसंग संवत २०३५ के आश्विन शुक्ल पक्ष की चतुर्थी या पंचमी तिथि का है। स्वामीजी दिल्ली के लक्ष्मीनारायण मंदिर में वेदान्त पर प्रवचन कर रहे थे। ऋषि उनके प्रवचनों को नोट करना चाह रहा था। ताकि आगे लिपिबद्ध किया जा सके और पुस्तक रूप में प्रकाशित हो। अवतार तत्त्व का उल्लेख आया तो ऋषि के मन में तुरंत यह प्रश्न कौंधा। उस समय तो प्रवाह में होने के कारण शंका या जिज्ञासा को स्थगित कर दिया। लेकिन प्रवचन पूरा होने के बाद मन फिर उसी प्रश्न में उलझ गया।

अगले दिन जब ऋषि स्वामी जी की सेवा में था तो अनायास ही चर्चा चल पड़ी। स्वामीजी ने स्वयं पूछा, लगता है ऋषि, अवतार संदर्भ में तुम्हारे मन में ऊहापोह है। ऋषि ने हामी भरी और साथ ही यह भी कहा कि ऐसी कोई शंका भी नहीं है कि मन व्यग्र हो रहा हो। स्वामी जी ने कहा, 'भविष्य में तुम्हें वेदान्त का ही प्रचार करना है। इस दर्शन से अवतार का सामंजस्य आसान नहीं है। रात मैंने तुम्हारे बारे में तय किया है कि प्रवचन पूरे होने के बाद तुम यहाँ से हरिद्वार चले जाओ। वहाँ मैं तुम्हें एक ऐसे महापुरुष के सान्निध्य में कुछ समय रखना चाहता हूँ जो युगों के सामंजस्य की गुत्थी सुलझा दे। लोग उन्हें सिद्ध संत, विद्वान, मनीषी और अवतारी भी कहते हैं। सनातन धर्म की प्राचीन पौराणिक धारा के संतों को यह स्वीकार नहीं है, लेकिन मेरा मानना है कि उनका सान्निध्य तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी होगा।'

ऋषि प्रसाद ने गुरु का निर्देश सुनते ही हरिद्वार जाने की मनोभूमि बना ली। समर्पित शिष्य की भाँति यह पूछने की जरूरत भी नहीं समझी कि हरिद्वार में किन संत के पास जाना है? या किस आश्रम में ठहरना है? गुरु ने भी नहीं बताया। इस निर्देश और स्वीकार के बाद चार पांच दिन तक प्रवचन, सत्संग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
और साधकों के आने जाने और स्वामी जी से उनकी भेंट मुलाकात की व्यवस्था करने आदि का क्रम चलता रहा। नवरात्र पूरे होने के ठीक एक दिन पहले स्वामी जी ने ऋषि से कहा, कल का प्रवचन पूरा होने के बाद प्रस्थान करना है। हम लोग वृन्दावन जाएंगे और तुम राधिका रमण जी के साथ हरिद्वार चले जाना। यहाँ से सात आठ घंटे का सफर है। (उन दिनों सड़क मार्ग से इतना ही वक्त लगता था) राधिका जी तुम्हें मोटर गाड़ी से ले जायेंगे। दो तीन दिन वे भी हरिद्वार ऋषिकेश ही रहेंगे। लौटते हुए तुम्हें पूछेंगे। जिन के पास मैं भेज रहा हूँ, अनुमति दें तो वापस आ जाना। अन्यथा, जब तक वे कहें।

सुनकर ऋषि प्रसाद ने हां में सिर हिलाया। एक बार भी नहीं पूछा कि कहां जाना है? तैयारी में क्या करना है? वह अपने वस्त्र और सामान समेटने लगा। पता था कि कल प्रवचन का अंतिम दिन है, इसलिए सामान समेटने का वक्त नहीं मिलेगा। ऋषि को इसी तैयारी में रात के ग्यारह बज गये। आमतौर पर वह दस बजे तक सो जाता था। सुबह चार बजे उठना होता और दिन में विश्राम का वक्त नहीं मिलता, यों भी कह सकते है कि ब्रह्मचारी होने के कारण दिन में सोना निषिद्ध था। इसलिए आज थोड़ी देर हो गयी। वैसे भी शिष्य का जागना और सोना गुरु सेवा की श्रेणी में ही आता है। इसलिए देरी और जल्दी की क्या चिंता करना? शरीर का अपना नियम है। वह उसी के अनुसार चलता है, इसलिए ऋषि को बिस्तर पर जाते ही नींद आ गई।

सुबह राधिकाजी ने आकर जगाया। ऋषि ने तैयारियाँ तो रात में ही कर ली थीं। आधा पौन घंटा नित्यकर्मों में लगा और हरिद्वार के लिए रवाना हो गया। रास्ते में राधिकाजी से कई विषयों पर चर्चा हुई लेकिन एक बार भी नहीं पूछा कि किन महापुरुष या सिद्ध संत के पास चल रहे हैं। खुद ऋषि का सरोकार अपने गुरु का आदेश पूरा करने से था और उसकी समझ थी कि वह पूरा हो रहा है तो ठीक है। गुरु के प्रति इस निष्ठा से प्रेरित होकर ऋषि ने प्रवास और निवास के बारे में कुछ भी पूछने की जरूरत नहीं समझी। तीन चार घंटे की यात्रा तो बातचीत में ही निकल गई। दिल्ली मेरठ का शहरी परिवेश पीछे छूटने लगा था और गंगा के स्पर्श वाला क्षेत्र शुरु हो गया था। आश्विन के इन दिनों में गर्मी भी विदा होने लगती है, सुबह शाम का तापमान गुलाबी शीतलता का आभास कराने लगता है। ऋषि भी गंगा क्षेत्र की शीतल हवाओं के स्पर्श के कारण तंद्रा अनुभव करने लगा था। उसकी पलकें अपने आप मुंद गई और लगा कि नींद उतर आई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है लेकिन गाड़ी की आवाज, आसपास के दृश्यों और पास ही बैठे राधिका जी की उपस्थिति का बोध भी बना हुआ था। ऋषि अपने आप में खोया हुआ चुपचाप अपनी सीट पर बैठा था–लगभग सोई हुई अवस्था में।

अर्धसुषुप्ति या तंद्रा की अवस्था में ही ऋषि ने अनुभव किया कि सड़क पर दौड़ रही गाड़ी के साथ जैसे कई घोड़े भी चल रहे हैं। चल क्या रहे हैं, दौड़ रहे हैं तभी तो वे खिड़की के बाहर गाड़ी के साथ साथ दिखाई दे रहे हैं। उन घोड़ों पर एक युवक सवार है। हाथ में तलवार लिये वह युवक राजोचित वेशभूषा में है। लगता था कोई सेनानायक या युवराज है। दृश्य को समझने के लिए ऋषि ने आँखें पूरी तरह खोली और सजग होकर देखा तो पाया कि बाहर कुछ नहीं था। पहले की तरह आते जाते वाहन और किनारे खड़े वृक्ष, उनके पीछे लहलहाते खेत थे। ऋषि ने समझा कि अभी जो दृश्य देखा था वह सपना ही था और टकटकी लगाकर बाहर देखने लगा। इस बीच राधिका जी को भी निहारा, वे भी सीट पर पीछे की तरफ सिर टिकाकर अधलेटी मुद्रा में सोये हुए थे।

कुछ पल बाहर देखते रहने के बाद ऋषि को फिर तंद्रा ने आ घेरा। इस बार अलग ही दृश्य दिखाई दिया। लगा जैसे आसपास कई यज्ञकुण्ड बने हुए हैं। उनमें अग्नि प्रदीप्त है और कुण्ड से उठते हुए धूम्र से लग रहा था कि अभी अभी आहुतियों का सत्र पूरा हुआ है। लोग प्रदीप्त अग्नि को सुरक्षित रखने का उपक्रम कर रहे हैं। दौड़ती हुई गाड़ी के साथ घोड़ों की पदचाप फिर सुनाई दी, लेकिन इस बार कोई अश्वारोही नहीं दिखाई दिया। कुछ समय इस दृश्य में रमे रहने के बाद ऋषि की तंद्रा टूटी तो वह अचकचा कर खिड़की के बाहर झांकने लगा। अब तक जो दिखाई दे रहा था, उसके चिह्न कहीं भी नहीं थे लेकिन जो प्रतीति बनी हुई थी, वह यथार्थ से भी ज्यादा अनुभव हो रही थी।

इन दृश्यों को समझने की कोशिश में ऋषि सोचने लगा था कि पिछला दृश्य और यह प्रतीति सिर्फ स्वप्न या मन की कल्पना नहीं है। निश्चित ही एक आध्यात्मिक अनुभूति है। गुरुदेव ने इन अनुभूतियों को जीने और संग्रहित करने के लिए ही शायद भेजा हो। कुछ ही पलों में ऋषि ने इस विवेचन को मन से झटक दिया और अपने गुरुदेव स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती का स्मरण करने लगा। इस बीच राधिकाजी की नींद भी टूट गई थी। वे सम्भल कर बैठ गए और ऋषि की तरफ देखने लगे। मुख मुद्रा देखकर लगा जैसे कुछ कहना चाह रहे हों। उन्हें देखकर ऋषि ने अपना अनुभव बाँटने का मन बनाया ही था कि राधिका जी ने पूछा, 'कमाल है। आपको भी कुछ विचित्र अनुभव हुआ है क्या?'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ऋषि ने पूछा कि किस तरह का अनुभव? इस पर राधिकाजी ने कहा कि मैं देख रहा हूं। इसी इलाके में आसपास के मैदान में युद्ध चल रहा है। स्त्रियां उस युद्ध में भाग ले रही हैं और आक्रमणकारियों को खदेड़ कर भगा रही हैं। उन सैनिक नारियों का नेतृत्व एक राजोचित वेशभूषा पहने एक राजपुरुष कर रहा है। अपने बचाव के लिए उसने कवच आदि कुछ भी धारण नहीं कर रखा है। उसकी उपस्थिति ही उन नारियों और उनका साथ दे रहे पुरुषों को प्रेरित कर रही है। इस विवरण को ऋषि ने गौर से सुना और बाद में अपने अनुभव भी बताये। राधिकाजी ने घुड़सवार राजपुरुष की आकृति के बारे में बताया और ऋषि से पूछा तो दोनों को बड़ी हैरानी हुई। दोनों द्वारा देखे गए राजपुरुषों में अद्भुत साम्य था। दोनों यह भी कह रहे थे कि दृश्यावलि मानस पटल पर किसी अलौकिक घटना की तरह आ जा रही थी।

आहुतियों की दिव्य गंध

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तीसरा पहर शुरु होते तक राधिका जी और ऋषि हरिद्वार पहुँच गये। दोनों पहले भी इस नगरी में कई बार आ जा चुके थे। लेकिन इस बार पता नहीं क्यों लग रहा था कि शहर बदला बदला है। ज्वालापुर पार करते ही ऋषि और राधिका भी गाड़ी से बाहर झांकने लगे। बाद में दोनों ने एक दूसरे से पूछा और इस अनुभव की पुष्टि की कि इस क्षेत्र में यज्ञ में दी जा रही औषधि आहुतियों की गंध आ रही है। तीर्थनगरी है, हरिद्वार में आश्रमों की भरमार है इसलिए आहुतियों की गंध आना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। दोनों को आश्चर्य इस बात पर हुआ कि हर की पौढ़ी से आगे ऋषिकेश मार्ग पर निकल जाते तक सुगंध आती रही लेकिन आसपास कोई बड़ा आयोजन होता नहीं दिखाई दिया। हर की पौड़ी से आगे निकलते हुए दोनों के मुख से बरबस निकला कि ऐसा पहले कभी अनुभव नहीं हुआ। अद्भुत गंध है जो दिव्य वनस्पतियों की आहुतियों से ही आ सकती है। लेकिन आश्चर्य कि पिछले दस बारह किलोमीटर की यात्रा में इस तरह का आयोजन कहीं दिखाई नहीं दिया। बिना आयोजन के ही विराट यज्ञ में भागीदारी।

ऋषि को पल भर के लिए अपने गुरुदेव (स्वामी अखंडानंद सरस्वती) का सामीप्य अनुभव हुआ। लगा जैसे वे कह रहे थे कि जिस आध्यात्मिक सत्य के सम्बन्ध में तुम्हारे मन में उथल पुथल मचती रहती है, उसके समाधान का यही उपयुक्त समय है, और स्थान भी। उन सिद्ध संत से साक्षात्कार भी यहाँ हो जायेगा। इस सान्निध्य और उद्‌बोधन का अनुभव करते हुए राधिका जी और ऋषि शान्तिकुञ्ज में प्रवेश कर रहे थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आश्रम में नियमित शिविरार्थियों के अलावा नवरात्रि साधना कर रहे साधक थे। उपलब्ध आवास व्यवस्था उन शिविरार्थियों और साधकों के लिए कई बार अपर्याप्त होती थी। नवरात्रि अनुष्ठान के दिनों में तो जगह की तंगी और भी ज्यादा रहती थी। लेकिन दोनों आगन्तुकों के आने की सूचना जैसे पहले ही पहुँच गई थी और उनके लिए व्यवस्था पहले से ही थी। उन्हें ठहरने में जरा भी समय नहीं लगा। आधा पौन घंटे के लिए सुस्ताए ही होंगे कि गुरुदेव ने अपने पास बुला लिया। ऋषि को शान्तिकुञ्ज पहुँचकर प्रतीत हुआ कि उनके गुरु ने कहां भेजा है? अपने गुरु के मुख से वह इस स्थान, क्षेत्र, विद्या परंपरा के अधिष्ठाता के बारे में यदा कदा सुनते रहते थे, लेकिन उस संस्थान की झलक पहली बार देखी थी। गुरुदेव के पास पहुँचकर दोनों ने श्रीचरणों में प्रणाम किया और अपने आने का उद्देश्य बताया। ऋषि को कुछ कहने की जरूरत नहीं पड़ी। वह प्रणाम करके बैठे ही थे कि कुशल क्षेम के बाद राधिकाजी ने कहा, 'महाराज श्री ने ऋषि जी को कुछ समय के लिए आपके सान्निध्य में भेजा है। मैं दो चार दिन के लिए बाहर रहूँगा। लौटते आप आज्ञा देंगे और महाराज श्री कहेंगे तो मैं इन्हें वापस लेता जाऊंगा।'

गुरुदेव ने राधिकाजी से कुशलक्षेम पूछने और स्वामी अखंडानंदजी का स्मरण करते हुए राधिकाजी की बात सुनी। उन्होंने स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में चर्चा की। उनका कुशल क्षेम पूछा और अपने प्रति उनके स्नेह का उल्लेख भी किया। सामान्य चर्चा के बाद उन्होंने बिना किसी संदर्भ के कहा, 'इन दिनों स्थितियां इतनी विषम और विकट हैं कि अवतारी सत्ता ही उन्हें साध और संभाल सकती है। भगवान अपनी प्रिय सृष्टि को ज्यादा समय तक हेय स्थिति में पड़े नहीं रहने देंगे। शास्त्रों और सिद्ध पुरुषों ने अवतार के लिए उपयुक्त समय और स्थितियों के लिए जो लक्षण बताये हैं, वे इन्हीं दिनों प्रकट होते दिखाई भी दे रहे हैं। कठिनाई एक ही है कि भगवान अपनी सूक्ष्म सत्ता को अवतारी रूप में प्रकट कर भी चुके हों तो पहचाने कौन? उसके लिए अंतर्दृष्टि और निर्मल विवेक चाहिए। अन्यथा भगवान राम और कृष्ण को भी लोगों ने साधारण मानव, वनचारी और ग्वालबाल कहा था।'

इस तरह गुरुदेव ने सूत्र रूप में कुछ बातें कहीं और बोले, 'महाराजश्री ने आपको यहाँ भेजा। आप यहाँ रहिए और जैसा वातावरण यहाँ उपलब्ध है, उसमें अपने अभीष्ट की खोज कीजिए।' पांच सात मिनट की इस भेंट के बाद राधिका जी और ऋषि नीचे आ गये। राधिका जी ऋषि के ठहरने की व्यवस्था

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को एक बार और देखकर तथा आश्रम के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं से मिलकर चले आये। ऋषि अकेले रह गए। कुछ देर बैठे रहकर वे बाहर निकले और शिविर में आये साधकों से परिचय बढ़ाने, बातचीत करने की कोशिश करने लगे। कुछ एक साधकों से बातचीत हुई तो पता चला कि उनमें से कई स्वामी अखण्डानन्द के बारे में जानते ही नहीं थे।

स्वामी अखण्डानन्द ही क्या दूसरे साधु संतों के बारे में भी उन्हें ज्यादा नहीं पता था। उनकी बातचीत से लगता था कि गायत्री परिवार के माध्यम से वे पहली बार धर्म, अध्यात्म के परिचय में आये हैं। अपनी समझ और शिक्षा के अनुसार वे किंचित पूजा पाठ तो करते रहे थे लेकिन संस्कारवश आसपास के परिवेश और कुल परंपरा ने जितना सिखा दिया था, वहीं तक सीमित थे। उन लोगों से गुरुदेव के बारे में सुना तो लगा कि वे अपने मार्गदर्शक को भगवान के रूप में समझते हैं। वह दिन दो-चार साधकों से बातचीत करते और आश्रम में घूमते रहने में ही बीत गया।

संध्या के समय ऋषि गंगा तट की ओर गये। शान्तिकुञ्ज के दूसरे कार्यकर्त्ता और साधक भी उस समय भगवती गंगा के सान्निध्य में कुछ समय व्यतीत करने जाते थे। ऋषि की इस चहलकदमी का उद्देश्य गंगा किनारे घूमना तो था, सप्त सरोवर में स्थित फोगला आश्रम और परमार्थ निकेतन देखना भी था। कुछ वर्ष पहले इन आश्रमों में उनके गुरुदेव स्वामी अखण्डानंद जी का आना हुआ था उनके सत्संग कार्यक्रम भी हुए थे। ऋषि का मन था कि अब वहां की स्थिति को सामान्य साधक की तरह देखा जाए। उन आश्रमों का भ्रमण कर पाए या नहीं, यह अलग बात है। ऋषि को इस तरह गंगा किनारे घूमते हुए साठ पैंसठ वर्ष के एक व्यक्ति से परिचय हुआ। बिना लांग की धोती बांधे और अधोवस्त्र के रूप में सिर्फ एक बनियान या कुर्ता पहने इन सज्जन से बातचीत हुई तो पता चला कि वे सत्यभक्त जी हैं। सत्यभक्त जी के बारे में ऋषि को इतना ही पता था कि उन्होंने भारत में सबसे पहले कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की थी। बाद में पत्रकारिता से जुड़े और एकता समता के आदर्शों का प्रचार करते हुए गायत्री परिवार से आ जुड़े। (सत्यभक्त जी का उल्लेख चेतना की शिखर यात्रा के द्वितीय खण्ड में भी आ चुका है।)

ऋषि ने सत्यभक्त जी को अपना परिचय दिया । शान्तिकुञ्ज आने का उद्देश्य और अपने गुरु के बारे में बताया। सत्यभक्त जी ने स्वामी जी के बारे में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
अतिरिक्त जानकारी भी दी जो ऋषि को शायद पता नहीं थी। उन्होंने कहा कि महाराजश्री सनातन धर्म के पारंपरिक और प्राचीन आश्रम व्यवस्था के साक्षात विग्रह हैं। वे चाहते तो स्वयं भी आपको अवतार तत्त्व का रहस्य समझा सकते थे। मुझे लगता है, यहाँ भेजने का उनका एक विशेष उद्देश्य रहा होगा।

सत्यभक्त जी ने अखंडानंद जी महाराज से सम्बंधित जो कुछ बातें बताई, उन्हें सुनकर ऋषि के मन में श्रद्धा का वेग और बढ़ उठता था। उनमें एक प्रसंग का उल्लेख उपयुक्त रहेगा। स्वामी जी के एक गृहस्थ शिष्य थे, संभवतः जबलपुर के पास किसी गांव से आए थे। भगवान राम के प्रति उनके मन में अगाध भक्तिभाव था। मन ही मन उन्होंने स्वामी अखण्डानन्द जी को अपना गुरु मान लिया था। स्वामीजी मूलतः भागवत और वेदान्त शास्त्र पर व्याख्यान देते थे। उन किशोर का आग्रह रामकथा के प्रति था। स्वामी अखंडानंद यों रामकथा भी कहते थे। मुंबई में मानस पर दिए गए उनके कई प्रवचन प्रसिद्ध हैं। जबलपुर से आए वे ब्रह्मचारी किशोर उन कथाओं को सुनते सुनते संन्यास का आग्रह करने लगे। स्वामी जी अक्सर कहा करते कि सनातन धर्म की परम्परा के अनुसार गृहस्थ धर्म का पालन कर लेने के बाद ही संन्यासी बनना चाहिए। उन ब्रह्मचारी शिष्य का आग्रह फिर भी बना रहा। जब भी कथा होती तो वे अविचल स्थिति में मुग्ध भाव से सुनते रहते।

एक दिन वृंदावन में रामकथा का आयोजन शुरु ही हुआ था कि विचित्र घटना घटी। वृंदावन में यों वानरों की कमी नहीं है। उनके उत्पात से क्या स्थानीय और क्या यात्री सभी त्रस्त रहते हैं और उनकी शरारतें देखकर खुश भी होते हैं। लेकिन यह प्रसंग अलग तरह का है। कथा चल रही थी, एक वानर शांत और गंभीर भाव से आया। मानो इसका उद्देश्य कथा सुनना ही हो। उसके हाथ में एक नारियल था। मंथर गति से चलता हुआ वह वानर व्यासपीठ के पास पहुंचा और कुछ क्षण बाद मंच पर भी चढ़ गया। लोगों ने उसे हटाने की कोशिश की। स्वामी जी ने हाथ के इशारे से वानर को बैठे रहने देने के लिए कहा। वानर ने अब भी नारियल दोनों हाथों में थाम रखा था। कभी महाराजश्री की ओर तो कभी श्रोताओं की ओर देखता था। उसकी दृष्टि संन्यास का आग्रह कर रहे जबलपुर के उस निष्ठावान विद्यार्थी साधक पर टिकी। फिर वानर को पता नहीं क्या सूझा कि उसने साधक को मंच पर आने का संकेत किया और खुद स्वामी जी के पास जाकर उनके सामने नारियल रख दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हनुमान का आदेश

वानर का संकेत देखकर वह विद्यार्थी साधक मंच की ओर बढ़ा। उधर मंच पर नारियल प्रस्तुत करने के बाद वानर तो चला गया। स्वामी जी ने उस श्रीफल को उठाया और साधक के हाथ में थमाते हुए कहा, 'तो रामकिंकर। अब हनुमान जी महाराज का आदेश हो गया है कि तुम भी रामकथा कहो। श्रद्धालुजनों को उनके अवतार तत्त्व का रहस्य समझाओ और उनकी भक्ति का प्रचार करो।'

स्वामी अखण्डानंद के मुंह से अनायास ही रामकिंकर का संबोधन निकल गया था। उन साधक ने इस नाम को गुरु का प्रसाद माना और उनके हाथों से नारियल ग्रहण कर लिया। सत्यभक्त जी से इस घटना का उल्लेख सुनकर ऋषि के मन में अपने गुरु के प्रति श्रद्धा और भी दृढ़ हो गई। लेकिन यह प्रश्न भी जोर से घुमड़ने लगा कि अवतार तत्त्व का रहस्य तो वे स्वयं ही समझा सकते थे। इसके लिए यहां शान्तिकुञ्ज आश्रम में क्यों भेजा? उन्होंने सत्यभक्त जी से ही यह प्रश्न पूछ लिया। सत्यभक्त जी ने कहा कि विश्वास और विचार की दृष्टि से मैं कम्युनिस्ट हूँ। इसलिए मैं आस्थापरक व्याख्या नहीं कर सकूंगा। लेकिन इतना निश्चित है कि संसार में ऐसी घटनाएं होती हैं जिनका रहस्य समझना मुश्किल है। अर्थ वास्तव में समझा ही नहीं जा सकता। लेकिन वे होती हैं। उन घटनाओं को सामान्य रूप में देखें तो वे इतिहास की आवश्यकता और एक प्रक्रिया दिखाई देती हैं। लेकिन वस्तुतः इतनी ही नहीं होती।

सत्यभक्त जी ने गंगा किनारे बैठे हुए ही इस तत्त्व की मीमांसा की। उसका सार यह था कि मनुष्य अपने सामान्य प्रयत्नों और साधना उपासना से अपना, अपने आसपास का उत्कर्ष करता है तो वह स्थिति आरोहण कही जाती है। आरोहण अर्थात मानवीय चेतना का भगवान की ओर उठना। इस दर्शन का एक विशिष्ट पक्ष भी है। उसके अनुसार स्थितियां विकट और विषम हो जाती हैं। इतनी विषम कि सामान्य प्रयत्नों के वश की बात नहीं रह जाती तो भागवत चेतना स्वयं मानवीय कलेवर में आती है, उतरती है। उस स्थिति को अवतरण कहते हैं। अवतरण का यह स्वरूप जिस रूप में दिखाई देता है, इसी का नाम अवतार है।

सत्यभक्त जी ऋषि को जब यह मर्म समझा रहे थे तो आसपास और भी साधक आ गए थे। सुनकर वे भी बैठ गए। करीब आठ दस लोगों के इस समूह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
में कुछ सदस्यों के मन में और भी जिज्ञासाएं उठने लगी थीं। सत्यभक्त जी ने उन पर फिर कभी चर्चा करने की बात कही और सब लोग टहलते हुए वापस शान्तिकुञ्ज आ गए यहां पहुंच कर अपने अपने कक्ष में चले गए। उस दिन के शेष बचे साधना उपचार संपन्न करने लगे।

स्वामी अखंडानंद जी ने अपने शिष्य को यहाँ क्यों भेजा था? इसका रहस्य न तो ऋषि को समझ आ रहा था और न ही राधिकाजी को। ऋषि ने इसका मर्म जानने में सिर नहीं खपाया। गुरु की आज्ञा कल्याण कर ही होती है, उसका पालन करना चाहिए, विचार नहीं। इस आस्था ने प्रश्न में ज्यादा नहीं उलझने दिया लेकिन गंगा तट पर रामकिंकर जी वाले प्रसंग ने मन के किसी तार को जरूर छू लिया। ऋषि को न जाने क्यों सप्ताह भर बाद होने वाली संन्यास दीक्षा के बारे में संदेह होने लगा। संदेह यह कि महाराजश्री कहीं उस दीक्षा को स्थगित तो नहीं कर देंगे। कहीं उसे गृहस्थ आश्रम में प्रवेश की आज्ञा तो नहीं देंगे और कहेंगे कि पचास या पचहत्तर वर्ष की अवस्था होने के बाद संन्यास में आने की व्यवस्था दें।

इस संदेह के साथ आश्वासन की स्थिति भी उभर रही थी। महाराज श्री ने जिस आश्रम में–शान्तिकुञ्ज में भेजा था वहां परंपराओं की नई व्याख्याएं और नए उन्मेष के दर्शन हो रहे थे। कम उम्र के लोगों, युवकों और विवाहित व्यक्तियों के लिए कनिष्ठ वानप्रस्थ–सावधिक संन्यास का प्रयोग कुछ वर्ष पूर्व ही शुरु हुआ था। यह प्रयोग काफी सफल रहा था। ऋषि को लगा कि महाराज श्री ने संपूर्ण संन्यास की अनुमति नहीं दी तो हो सकता है, वानप्रस्थ के लिए ही कहें। यहां भेजने का कोई प्रयोजन तो होगा ही। वह प्रयोजन सिर्फ अवतार रहस्य को समझना समझाना तो नहीं हो सकता।

सोचते-सोचते ऋषि को कब नींद आ गई, कुछ पता ही नहीं चला। सुबह नींद खुली तो नित्य कर्मों से निवृत्त होने के बाद माताजी और गुरुदेव के पास प्रणाम के लिए गया। उनका आशीर्वादात्मक स्पर्श और प्रसाद मिला। एक मंदस्मिति भी और इसके बाद वापस अपने कक्ष में। उन दिनों साधक प्रायः अपने कक्ष में ही रहते और जप तप करते थे। नौ दिन के अनुष्ठान में साढ़े तीन चार घंटे जप में बीत जाते। नित्य अग्निहोत्र में भी कुछ समय लगता। इसके बाद स्वाध्याय और सत्संग में समय लग जाता। दिनचर्या का क्रम इस तरह निर्धारित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
था कि किसी को एक दूसरे से वार्तालाप का समय ही नहीं मिलता। दोपहर तक ऋषि ने भी अपना समय स्वाध्याय में बिताया। कुछ समय सत्यभक्त जी के साथ भी रहा फिर सोचने लगा कि साधना अनुष्ठान का कोई व्रत अपने लिए तो है नहीं। क्यों नहीं कुछ समय आसपास के क्षेत्रों को देखने अध्ययन करने में बिता लिया जाए। अपने इस विचार के बारे में कार्यालय में बताया। प्रबन्धकों को मालूम था कि ऋषि न तो गायत्री परिवार के शिष्य हैं और न ही अतिथि। उन्हें स्वामी अखंडानंद जी ने यहां भेजा है। इस जानकारी के अनुरूप वे ऋषि की आवश्यकताओं का ध्यान रख रहे थे। ऋषि ने बाहर जाने की इच्छा व्यक्त की तो तदनुरूप व्यवस्था भी कर दी।

◈◈◈◈◈◈◈

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पंद्रह

राजनीति से हटकर

यह सिर्फ संयोग ही नहीं था कि राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी शान्तिकुञ्ज आए और कुछ ही देर बाद इसी राज्य में विपक्ष के प्रमुख प्रभावशाली नेता भैरोसिंह शेखावत के हरिद्वार पहुँचने की खबर मिली। यह संदेश भी कि वे भी गुरुदेव से मिलने आ रहे हैं। यह १९७७ के शुरूआती दिनों की बात है। जनवरी महीने की कोई तारीख थी। शेखावत जी तब राज्यसभा के सदस्य थे। देश में आपातकाल लागू था। कुछ माह पूर्व केन्द्र सरकार ने लोकसभा की अवधि एक वर्ष के लिए और बढ़ा दी थी और आम चुनाव साल भर के लिए टल गए थे। शेखावत जी तब मध्यप्रदेश से राज्यसभा सदस्य थे और राजस्थान में जनसंघ (बाद में भारतीय जनता पार्टी) की रीढ़ समझे जाते थे। कहना कठिन है कि उन्हें राजस्थान के मुख्यमंत्री के शान्तिकुञ्ज आने की सूचना थी या नहीं? यही बात हरिदेव जोशी के लिए भी कही जा सकती है। लेकिन शान्तिकुञ्ज के जीवन साधना सत्र में शामिल परिजनों का मानना था कि यह सिर्फ संयोग ही नहीं है। इस मिलन के लिए नियति का कोई विधान या गुरुदेव की कोई सूक्ष्म प्रेरणा विद्यमान थी। उन दिनों और आज भी सत्तापक्ष और विपक्ष के नेता एक दूसरे संगठनों के सिद्धान्तों, नीतियों और कार्यक्रमों के कठोर आलोचक होते हैं। कभी कदा तो यह विरोध वैर और शत्रुता जैसा दिखाई देने लगता है। विरोध और आलोचना के जैसे संदेश सामने आते हैं, उन्हें देखते हुए तो यह भी लगता है कि नेताओं में भी छत्तीस का आंकड़ा रहता होगा। कुछ हद तक यह बात सही भी है। निजी तौर पर उनमें कितना ही मेलमिलाप रहता हो लेकिन सार्वजनिक अवसरों और स्थानों पर वे कम ही मिलते जुलते हैं। इन स्थितियों से परिचित और अपने विश्वासों में मगन शिविरार्थी क्रांग्रेस और जनसंघ के दो बड़े नेताओं के आगे-पीछे शान्तिकुञ्ज आने की सूचना से विस्मित थे।

मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी शान्तिकुञ्ज पहुँचने पर पाँच सात मिनट तक स्वागत कक्ष में रुके और फिर गुरुदेव के पास चले गए। इसके पंद्रह बीस मिनट बाद ही शेखावत जी ने भी आश्रम परिसर में प्रवेश किया और वे भी कुछ ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
मिनटों में गुरुदेव के पास चले गये। शान्तिकुञ्ज पहुंचने पर उन्हें पता चल गया था कि जोशी जी आए हुए हैं। बाहर किसी मंच या अवसर पर शायद ही कभी साथ दिखाई देने वाले इन नेताओं का यह मिलन अनोखा था। करीब आधा घंटे दोनों गुरुदेव के पास रहे और कुछ अंतर से वापिस चले गए। उन्होंने गुरुदेव से क्या बातचीत की, कुछ नहीं पता। इस बारे में आश्रम से कोई सूचना या विज्ञप्ति भी जारी नहीं हुई। वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं से किसी ने पूछा तो यही उत्तर मिला कि मंदिर में जिस तरह कोई भी व्यक्ति आ जा सकता है, गुरुदेव के परिसर में उससे भी ज्यादा उन्मुक्त मन से प्रवेश कर सकता है।

इस मुलाकात के तीन सप्ताह बाद राजस्थान सरकार ने दो निर्देश जारी किये। एक निर्देश ब्याह शादियों में अनाप-शनाप खर्च रोकने के लिए था। उसमें एक हद के बाद पुलिस प्रशासन को हस्तक्षेप करने की छूट दी गई थी। दूसरे निर्देश में धार्मिक स्थलों पर किसी को भी आने जाने से रोकना आपराधिक करार दिया गया था। यद्यपि हरिजनों के लिए मंदिर प्रवेश का कानून पहले से मौजूद था। नए निर्देश में उसे प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए प्रशासन को कुछ अधिकार दिए गए थे। ब्याह शादियों के मामले में बारातियों की संख्या बीस से ज्यादा नहीं रखने और दावतों में पचास से ज्यादा लोग नहीं बुलाने की मर्यादा तय थी।

विवाह संबंधों में एक अनर्थ उन दिनों और होता था, जो धीरे-धीरे कम होता गया। वह किसी न किसी रूप में आज भी जारी है। यह अनर्थ खुले आम बाल विवाह के रूप में है। अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ल तीज) पर राजस्थान में निर्द्वन्द्व रूप से बाल विवाह होते हैं। हजारों लाखों की संख्या में होने वाले इन आयोजनों को कोई सख्त कदम उठाकर रोकना मुश्किल ही था। जिन्हें वहाँ के बारे में पता है, वे जानते हैं कि गर्भस्थ शिशुओं के ब्याह शादी भी इस अवसर पर तय हो जाते हैं। दो परिवारों की महिलायें गर्भवती हों तो उनके प्रमुख निश्चय कर लेते हैं कि यदि एक घर में कन्या का जन्म हुआ और दूसरे में पुत्र का तो दोनों का विवाह हुआ मान लिया जाए। इस तरह के करारों पर रोक लगाना तो मुश्किल था पर दोनों राजनीतिक दलों-कांग्रेस और जनसंघ ने अपने कार्यकर्त्ताओं के लिए यह मर्यादा निश्चित कर दी कि वे अपने परिवार में इस तरह के करार नहीं होने दें। बाल विवाह तो बिल्कुल ही नहीं होने दिए जाएं और न ही इस तरह के आयोजनों में शरीक हों। उन दिनों शारदा कानून के अनुसार विवाह के लिए उपयुक्त उम्र अठारह (वर) और चौदह (कन्या) वर्ष नियत थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिन परिजनों को इन दोनों नेताओं के शान्तिकुञ्ज आने की बात पता थी वे राजस्थान सरकार के निर्देशों को उस मुलाकात के संदर्भ में ही देख रहे थे। उन्हें लग रहा था कि इस निर्णय में गुरुदेव की प्रेरणा का ही असर रहा होगा। इस मुलाकात के कुछ ही दिनों बाद एक और महत्त्वपूर्ण घटना हुई। जनवरी १९७७ में केन्द्र सरकार ने लोकसभा भंग करने और जल्दी ही आम चुनाव कराने का फैसला किया। इस बारे में घोषणा भी कर दी। कुछ महीने पहले जिस तरह लोकसभा का कार्यकाल एक वर्ष के लिए और बढ़ाया गया था, उसके अनुसार तो कम से कम साल भर तक चुनाव होने ही नहीं थे। यह अवधि और आगे भी बढ़ सकती थी। अचानक आम चुनाव की घोषणा ने परिजनों को संदेश दिया कि इस निर्णय में सूक्ष्म जगत में चल रहे मंथन की भूमिका भी है। बाद में राजस्थान के मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी ने जयपुर के कुछ पार्टी कार्यकर्त्ताओं को गुरुदेव के हवाले से कहा भी था कि लोकसभा की अवधि भले ही बढ़ा दी गई हो लेकिन आप लोगों को चुनाव समर के लिए तैयार रहना चाहिए। भारत में लोकतांत्रिक प्रक्रिया को ज्यादा समय तक स्थगित नहीं रखा जा सकता था। उसी वर्ष यानि मार्च १९७७ में हुए आम चुनावों में कांग्रेस के हार जाने पर पार्टी की कार्यकारिणी समिति में भी उन्होंने यह बात 'हरिद्वार के एक संत' का हवाला देते हुए कही थी। उनका मानना था कि पिछले सवा दो साल में हम लोगों ने जो ज्यादतियाँ की हैं उसी का परिणाम पराजय के रूप में देखने को मिला है।

१९७७ के चुनाव के पहले ही नहीं, आपातकाल के दिनों में भी गुरुदेव के पास विभिन्न राजनीतिक दलों के शीर्षस्थ नेताओं का आना जाना बढ़ गया था। आपातकाल के दिनों में तो कोई सोच ही नहीं सकता था कि ये नेता गायत्री परिवार के परिजनों में अपना जनाधार बनाने की मंशा से आते होंगे। उस समय सत्तारूढ़ दल के नेताओं को अपने प्रभुत्व पर कहीं से कोई आंच आती दिखाई भी नहीं देती थी। वे इस विश्वास से लबालब भरे थे कि जीवन भर इसी तरह सत्ता सुख भोगते रहेंगे। दूसरी तरफ विपक्षी दलों को लग रहा था कि अंधेरा शायद इसी तरह छाया रहेगा।

राजधर्म निभाइए

जनवरी १९७७ में आम चुनाव की घोषणा के बाद तो शान्तिकुञ्ज आने वाले राजनेताओं का आना जाना अचानक बढ़ गया। यह सिलसिला महीने भर तो बहुत तेजी से चला। उस समय के उपलब्ध विवरणों के अनुसार केन्द्र और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राज्यों की राजनीति में सक्रिय ५० से ज्यादा शीर्षस्थ नेता गुरुदेव के पास आए। ज्यादातर इस आशा अपेक्षा से आए थे कि उनके दल को या उन्हें गुरुदेव का समर्थन मिलेगा। इसके लिए अनुरोध करेंगे। उनका समर्थन मिल गया तो चुनाव में गायत्री परिवार के सदस्यों की एक बड़ी संख्या कार्यकर्त्ता के रूप में उपलब्ध हो जायेगी। इस उम्मीद से आए नेताओं को निराश ही होना पड़ा। गुरुदेव ने उन्हें समय तो दिया पर अपने परिजनों के लिए कोई संदेश, निर्देश देने के बजाय उन नेताओं को राजधर्म निभाने के लिए ही चुनाव में उतरने की सलाह दी। यह परामर्श आगन्तुक अतिथियों की मनःस्थिति और पृष्ठभूमि के अनुसार व्यावहारिक दृष्टि से थोड़ा अदल-बदल जाता था लेकिन जोर 'राजधर्म' के निर्वाह पर ही होता था। उदाहरण के लिए उत्तर प्रदेश के एक प्रसिद्ध संन्यासी ने चुनाव लड़ने की इच्छा व्यक्त की। वे महात्मा होते हुए भी राजनीति में दखल रखते थे और इसी हिस्सेदारी के चलते आपातकाल के दौरान करीब एक वर्ष तक कारावास में भी रह आए थे। गुरुदेव ने उनसे कहा कि आप अपने अंतःकरण की प्रेरणा के अनुसार चलें। सिर्फ इतना ही ध्यान रखें कि राजनीति आपका वास्तविक कार्यक्षेत्र नहीं है। उस क्षेत्र में आप आपद्धर्म निभाने के लिए जा रहे हैं। उद्देश्य पूरा होते ही लौट आएंगे।

उन दिनों मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे श्यामाचरण शुक्ल भी एक दिन अचानक शान्तिकुञ्ज पहुँचे। यों वे पहले भी आते जाते रहे थे लेकिन इस बार उनके आने की सूचना कुछ घंटे पहले ही मिली। आम चुनाव की घोषणा के बाद वे केन्द्रीय नेतृत्व से मार्गदर्शन लेने के लिए संभवतः दिल्ली आए होंगे। वहां बने कार्यक्रम के साथ उन्होंने शान्तिकुञ्ज आना भी तय कर लिया था। उनके छोटे भाई विद्याचरण शुक्ल तब केन्द्र में सूचना प्रसारण मंत्री थे और आपातकाल के दौरान अपने फैसलों और नीतियों के कारण काफी चर्चित हुए थे। लोग समझ और सोच सकते थे कि उनके आने का तात्कालिक कोई राजनीतिक प्रयोजन होगा। लेकिन श्यामाचरण शुक्ल इस तरह शान्तिकुञ्ज आया जाया करते थे, जैसे गायत्री परिवार के ही कार्यकर्त्ता हों। यही नहीं वे अपने क्षेत्र में, होने वाले यज्ञ-सम्मेलनों में भी कार्यकर्त्ता की हैसियत से शामिल होते थे। इसलिए उनके प्रवास का जो भी अर्थ लगाया जाए, आश्रम के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता अच्छी तरह समझ रहे थे कि उनकी यह यात्रा व्यक्तिगत ही होगी। शान्तिकुञ्ज के परिसर में कदम रखते ही उन्होंने और स्पष्ट कर दिया। उनके स्वागत के लिए मुख्य द्वार पर उपस्थित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
वरिष्ठ कार्यकर्त्ता द्वारा अभिवादन करते ही उन्होंने तपाक से कहा, "मैं गुरुदेव से अपनी पार्टी के लिए समर्थन या आशीर्वाद लेने नहीं आया हूँ। इस बार यहाँ आने का उद्देश्य उनसे सिर्फ आत्मबल मांगना है।"

मुख्य मंत्री महोदय उन कार्यकर्त्ता के साथ कुछ मिनट कार्यालय में रुके और वहीं से गुरुदेव के पास चले गए। उन दिनों शान्तिकुञ्ज में चल रहे शिविर में मध्यप्रदेश के कार्यकर्त्ता भी अच्छी संख्या में थे। राज्य के मुख्यमंत्री के यहाँ आने की सूचना पाकर वे इकट्ठे होने लगे। कुछ ने अनुरोध किया कि संभव हो तो मुख्यमंत्री शिविरार्थियों से मिलें और मध्यप्रदेश के लोगों को भी संबोधित करें। इस बारे में मुख्यमंत्री की इच्छा और सुविधा के अनुसार ही कोई निर्धारण करने की बात कही गई। कुछ ही मिनटों बाद यह सूचना आ गई कि श्यामाचरण शुक्ल पंद्रह-बीस मिनट कार्यकर्त्ताओं से अपने अनुभव और विचार बाँटेंगे। उन दिनों जिस तरह की राजनीतिक गहमागहमी चल रही थी, उसके चलते किसी वरिष्ठ और खासकर सत्ता पक्ष के नेता का किसी आश्रम में अनिर्धारित भाषण देना अप्रत्याशित था। गुरुदेव से मिलने के बाद मुख्यमंत्री नीचे उतरे और सभागार में शिविरार्थियों से मिले। उन्होंने साधकों और परिजनों से अनौपचारिक संवाद किया, जो न किसी अखबार में छपा और न ही रिकार्ड किया गया। उसका विवरण आश्रम के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की दैनंदिनी में दर्ज है।

नेता नहीं स्वयंसेवक

श्यामाचरण शुक्ल इस संवाद के आरम्भ में ही मध्यप्रदेश से आये परिजनों और संगोष्ठी में आए अन्य प्रान्तों के कार्यकर्त्ताओं के लिए "श्यामा भैया" बन गए थे। उन्होंने शुरुआत ही इस तरह की थी कि वे राजनेता कम गायत्री परिवार के सदस्य ज्यादा लगें। उन्होंने बताया कि गुरुदेव से पहली मुलाकात १९६६ के आसपास रायपुर में हुई थी। तब उनने सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया ही था और शुरुआती दिनों में स्वाभाविक उभरने वाला जोश मन में भरा हुआ था। जोश इस तरह का कि प्रतिद्वन्द्वी को पल भर के लिए भी बर्दाश्त नहीं करें। उसे नष्ट कर देने के लिए आतुर हो उठे। रायपुर महायज्ञ में श्यामा भैया राजनैतिक कार्यकर्त्ता की हैसियत से नहीं, स्वयंसेवक की हैसियत से शामिल हुए थे। फिर भी मन में इसका राजनीतिक लाभ मिलने की ललक तो थीं ही। क्षेत्र के दूसरे राजनीतिक दलों के कार्यकर्त्ता भी आयोजन में शामिल थे। अपने अनुभव और लगन के कारण वे ज्यादा सक्रिय दिखाई दे रहे थे। उस क्षेत्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
के नागरिक भी उन्हें महत्त्व दे रहे थे। श्यामा भैया और उनके सहयोगियों को यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने दूसरी पार्टियों के सदस्यों को अलग थलग रखने की कोशिश की पर कामयाबी नहीं मिली। इस पर स्वयंसेवकों ने सोचा कि गुरुदेव से बात करनी चाहिए। उनके सामने इन लोगों की कलई खोल दी जाये कि ये लोग किस तरह समाज को तोड़ने में लगे हुए हैं और साम्प्रदायिक जातीय विद्वेष फैला रहे हैं।

इस इरादे से वे डाक बँगले पर पहुंचे, जहां गुरुदेव के ठहरने की व्यवस्था की गई थी। तीसरे पहर का समय था। गुरुदेव अभ्यर्थियों से घिरे बैठे थे। श्यामा भैया ने एक परची में कुछ लिखा और गुरुदेव के प्रणाम करते समय उनके चरणों में उसे रख दिया। गुरुदेव ने श्यामा भैया के सिर पर हाथ फेरा और पर्ची उठा ली। खोलकर देखा, पढ़ा और कहा 'आधा घंटे बाद,' श्यामा भैया ने पर्ची में अलग से और अकेले मिलने के लिए समय माँगा था। गुरुदेव के आधा घंटे बाद कहने पर उन्होंने और उनके सहयोगियों ने बाहर ही इंतजार करना ठीक समझा। वे अधीर हो रहे थे क्योंकि मिलने वालों का तांता लगा हुआ था। दो जा रहे थे तो तीन नए आ रहे थे। पंद्रह बीस मिनट में ही धैर्य डिगने लगा। पता नहीं गुरुदेव से मुलाकात हो भी पाएगी या नहीं। आधा घंटा बीतने को था और कक्ष के भीतर आठ दस लोग गुरुदेव से चर्चा की प्रतीक्षा कर रहे थे।

श्यामा भैया के एक साथी ने दरवाजे से भीतर झांका और तुरन्त बाहर निकल कर कहा कि अभी हमें कम से कम पंद्रह मिनट और रुकना पड़ेगा। वह साथी अपनी बात पूरी कर भी नहीं पाया था कि भीतर से एक स्वयंसेवक आया और उन युवा कार्यकर्त्ताओं को अंदर ले गया। इस बार गुरुदेव से जिस कक्ष में मुलाकात हुई, वहां श्यामा भैया उनके साथी और गुरुदेव के अलावा और कोई नहीं था। जिस जगह गुरुदेव बैठे थे, वहाँ दांयी ओर दीवार में तख्ती लगी हुई थी। उस पर लिखा था अपनी बात पांच मिनट में पूरी कर लें। पर्ची देखकर विचार आया कि अपनी बात संक्षेप में और जल्दी ही कह देनी चाहिए। मन में यह बात आई ही थी कि गुरुदेव ने कहा, 'इत्मीनान से बताइए, निस्संकोच।'

लगा कि गुरुदेव ने उनके विचारों को पढ़ लिया है और भीतर जाग रही सतर्कता को इंगित करते हुए निश्चिन्त कर दिया है। शान्तिकुञ्ज के सभागार में इस पृष्ठभूमि के बाद श्यामाचरण शुक्ल ने उस बातचीत के बारे में विस्तार से बताया। कहा कि उनका जोर दूसरे दल के कार्यकर्त्ताओं की खामियों और चालाकियों की शिकायत पर ही ज्यादा था। वे यह भी कह रहे थे कि इन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
लोगों को गायत्री परिवार से दूर ही रखें तो बेहतर होगा। उन्हें दूर रखने पर ज्यादा लोग मिशन से जुड़ेंगे।

गुरुदेव के समाधान या उत्तर को अद्भुत कहते हुए मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने कहा कि गायत्री परिवार का काम समाज का काम है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और सहयोग देने का अधिकार है। किसी परिजन को अपने संगी साथी में कोई कमी दिखाई देती है तो उनका तिरस्कार करना उपाय नहीं है। उपाय यह है कि अपनी सदाशयता से उन्हें जीतें और निष्ठा तथा कर्म की ऐसी बड़ी लकीर खींचे कि उनके दोष अपने आप छोटे हो जाएँ। इसके बाद श्यामा भैया ने गुरुदेव के निकट संपर्क में आने के बाद हुए कुछ आध्यात्मिक अनुभवों की चर्चा की। वहां कही गई बातों का सार यही था कि इस यात्रा का उद्देश्य राजनीतिक कतई नहीं था। वे सिर्फ निजी और नितान्त वैयक्तिक कारणों से आए हैं। अपनी बात कहकर मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री चले गए। जाते जाते उन्होंने यह भी कहा कि राज्य में ही नहीं राज्य के बाहर दूसरे प्रान्तों में भी वे गायत्री परिवार के कार्यक्रमों के लिए सदा उपलब्ध रहेंगे। उन्हें किसी भी समय याद किया जा सकता है।

गुरुदेव के पास आते जाते रहे विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं और कार्यकर्त्ताओं की समझ साफ थी। वे जानते थे कि उनकी दलगत राजनीति में यहाँ से कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है। जो भी मिलेगा वह सिर्फ आंतरिक दृष्टि से समृद्ध करेगा। कुछ नए लोग भी थे, जो गायत्री परिवार के जनाधार में अपने लिए समर्थन जुटाने की आकांक्षा रखते थे। जनवरी १९७७ में लोकसभा भंग होने के बाद नए चुनाव की तैयारियाँ शुरु होने लगीं तो इस तरह की इच्छा अपेक्षा से भी लोग आने लगे। गुरुदेव का स्नेह आशीष उन्हें भी उपलब्ध था और वे उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए प्रस्तुत किए गए चित्रों पर हस्ताक्षर कर देते थे। निश्चित ही ये चित्र आगन्तुक या कार्यकर्त्ता अपने साथ ही लाते थे। कुछ तो गुरुदेव के सान्निध्य में, उनके पास उनके चरणों में बैठकर ही फोटो खिंचवाते। फोटो तैयार होकर आने में समय लगता। तब तक वे आश्रम में रुकते और अगली सुबह गुरुदेव के सामने उन पर आशीर्वाद लिखवाने-हस्ताक्षर कराने के लिए रख देते।

इस तरह का लिखित और छायांकित आशीर्वाद लेते समय उन परिजनों के मन में यह योजना भी रही थी कि इसका लाभ मिलेगा। चुनाव के समय इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
तस्वीर का उपयोग गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं और सदस्यों का समर्थन जुटाने में करेंगे। उन्हें बताएंगे कि गुरुदेव ने उन्हें आशीर्वाद दिया है अब परिजनों को चाहिए कि वे समर्थन भी दें। यह तरीका चतुराई से ज्यादा चालाकी भरा था। लेकिन ऐसे कार्यकर्त्ताओं को प्रायः निराश ही होना पड़ा क्योंकि गुरुदेव सबके लिए उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए आशीष दे रहे थे। इस क्रम में कुछ नौसिखिए राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं को रोचक अनुभव भी हुए। बिहार में बेगूसराय से आए कांग्रेस कार्यकर्त्ता ने मान लिया कि गुरुदेव के साथ बनवाए फोटो और आशीर्वाद से पार्टी के क्षेत्रीय नेतृत्व को प्रभावित कर लेंगे। रंगनाथ पाण्डेय नामक एक कार्यकर्त्ता जब इस आधार पर अपना दावा जताने कांग्रेस कार्यालय गए तो पता चला कि चार अन्य कार्यकर्त्ताओं ने भी क्षेत्र में अपना प्रभाव सिद्ध करने के लिए गुरुदेव का चित्र प्रस्तुत किया हुआ है। निराश होने के साथ उन कार्यकर्त्ताओं को लज्जा का अनुभव भी हुआ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

समर्थन की निराशा

गुरुदेव के नाम, आशीर्वाद का उपयोग करने की बात यहीं तक सीमित नहीं थी। उच्च स्तर पर भी उनका समर्थन हासिल करने की कोशिश हुई थी। आपात्काल के दिनों में विभिन्न दलों के राजनेताओं ने गायत्री परिवार में अपने लिए आश्रय तलाशा था और इसके सामाजिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हाथ बटाया था। पिछले पन्नों पर कहा जा चुका है कि उनके राजनीतिक रुझानों और सम्बन्धों के बारे में गायत्री परिवार से कुछ छुपा नहीं था। कुछ वरिष्ठजनों के बारे में तो गुरुदेव को भी प्रत्यक्ष जानकारी थी और वे उनकी अनुमति से शान्तिकुञ्ज में भी रहे थे। शान्तिकुञ्ज में रहने की अनुमति देते हुए उनसे सिर्फ यही अपेक्षा की गई थी कि वे किसी तरह की राजनीतिक गतिविधियों का संचालन या निर्देशन न करें।

जनवरी १९७७ आते आते उस तरह के वरिष्ठ राजनीतिक कार्यकर्त्ता शान्तिकुञ्ज छोड़कर चले गए। आश्रम के अनुशासन नियम नहीं निभ पाने की मजबूरी हो या राजनीतिक सक्रियता का तकाजा, कारण जो भी रहे हों वे ज्यादा टिक नहीं पाए। आपात्काल समाप्त हुआ तो उनमें से कुछ अपने-अपने दलों की केन्द्रीय कमान का संदेश लेकर आए। इनमें दो केन्द्रीय मंत्री, एक विरोधी दल का समर्थन संचालन करने वाले सांस्कृतिक संगठन के वरिष्ठ नेता और समाज में रचनात्मक आन्दोलन चला रहे गांधीवादी संगठन के एक प्रतिनिधि भी थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिन केन्द्रीय मंत्री ने शान्तिकुञ्ज आकर संपर्क किया था, उनका कहना था प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी स्वयं शान्तिकुञ्ज आना चाहती हैं। वे गुरुदेव का आशीर्वाद और समर्थन चाहती हैं। यहां आकर वे सिर्फ गुरुदेव से भेंट करेंगी। किसी तरह का शोर-शराबा या समाचार प्रचार नहीं होगा। इस तरह के आगमन से किसे परहेज हो सकता था सो श्रीमती गांधी के आने का कार्यक्रम लगभग निश्चित हो गया। फरवरी १९७७ के अंतिम सप्ताह की कोई तिथि तय हुई। इसी बीच राजधानी के एक समाचार पत्र में खबर छपी कि श्रीमती गांधी स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रहे आचार्य श्रीराम शर्मा से भेंट करने जाएंगी। वे महात्मा गांधी के सहयोगी रहे हैं और बाद में सांस्कृतिक आध्यात्मिक पुनरुत्थान के कार्यक्रमों में व्यस्त हो गए। खबर कांग्रेस के सूचना स्रोतों से आई थी और इसमें यह भी उल्लेख था कि आचार्यश्री अब भी खादी के वस्त्र पहनते हैं। भारतीय धर्म और विश्वासों के प्रबल समर्थक और प्रचारक होते हुए भी उन्होंने दूसरे धर्म संप्रदायों के बारे में कभी कोई टिप्पणी नहीं की। यह खबर पहले एक छोटे स्थानीय समाचार पत्र में छपी। अगले दिन 'नवभारत टाइम्स' और 'हिन्दुस्तान' के डाक संस्करणों में प्रकाशित हुई। राजधानी के बाहर से प्रकाशित होने वाले दूसरे अखबारों ने भी इस सूचना को महत्त्व दिया।

समाचार माध्यमों में आई इस सूचना से संदेश जा रहा था कि गुरुदेव धर्मपुरुष होने से पहले राजनीतिक और वह भी कांग्रेस कार्यकर्त्ता रहे हैं। आपात्काल की ज्यादतियों से त्रस्त जन साधारण को सरकार के पक्ष में लाना है उन्हें सत्तारूढ़ दल के प्रति नरम बनाना है। इसलिए वे कांग्रेस का सहयोग करने का मन बना रहे हैं। इस बारे में गायत्री परिवार के परिजनों ने भी जिज्ञासा की। लेकिन उनके पूछने से पहले ही शान्तिकुञ्ज की ओर से एक पत्र कांग्रेस के केन्द्रीय कार्यालय और प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के पास व्यक्तिगत तौर पर भेज दिया गया। उसमें छप रहे समाचारों का उल्लेख करते हुए स्पष्ट किया गया था कि गुरुदेव स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय जरूर रहे हैं, लेकिन किसी दल विशेष के प्रति उनका कोई रुझान नहीं है। श्रीमती गांधी का आश्रम में स्वागत है लेकिन उससे आगे पीछे या उसी दिन किसी और पार्टी के वरिष्ठ नेता आना चाहेंगे तो उनका भी स्वागत होगा। जिन समाचार पत्रों में खबर छपी थी, उनमें भी कुछ के कार्यालयों में इस आशय की सूचना भिजवा दी गई। यह आग्रह भी किया गया कि संभव हो तो खबर के बारे में स्पष्टीकरण प्रकाशित कर दिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
जाए। यह ध्यान नहीं दिया गया कि समाचारों का स्पष्टीकरण छपा या नहीं लेकिन इस प्रक्रिया के बाद श्रीमती गांधी का शान्तिकुञ्ज आना स्थगित हो गया।

तत्कालीन प्रधानमंत्री की यात्रा निश्चित होने और फिर टल जाने की खबर ज्यादा चर्चित नहीं हुई थी। अखबारों में उनके आने की सूचना तो छपी थी लेकिन कार्यक्रम निरस्त होने की खबर नहीं आई थी। शायद यही कारण होगा कि दूसरे राजनीतिक दलों में भी गायत्री परिवार का जनाधार और लोकप्रियता को ललचाई दृष्टि से देखा जाने लगा। उन दिनों उत्तर प्रदेश के एक नामी नेता हेमवती नंदन बहुगुणा ने कांग्रेस (इं) छोड़कर लोकतांत्रिक कांग्रेस का गठन किया था। तत्कालीन केन्द्रीय खाद्य और आपूर्ति मंत्री जगजीवन राम भी पार्टी से अलग हो गए थे। उनके नेतृत्व में नई कांग्रेस बनी थी। उनके साथ कुछ और नेता आपात्काल लागू करने वाली सरकार और नेताओं को हराने का आह्वान करते चुनाव मैदान में उतर गए थे। उन्हीं दिनों कांग्रेस से निकले इन नेताओं और कांग्रेस का विकल्प देने के लिए विभिन्न दलों का गठबंधन हुआ। इस संगठन ने दिल्ली के रामलीला मैदान में एक बड़ी सभा का आयोजन किया।

रैली में मिले भारी जनसमर्थन, विपक्षी दलों के एक मंच पर आ जाने और अखबारों में आपातकाल की ज्यादतियों के वृत्तांत छपने से आभास होने लगा था कि चुनाव परिणाम अप्रत्याशित होंगे। नतीजे कांग्रेस के खिलाफ ही जाते दिखाई दे रहे थे। ४ फरवरी की शाम ओडिशा की पूर्व मुख्यमंत्री नंदिनी सत्पथी लोकतांत्रिक कांग्रेस के नेता हेमवती नंदन बहुगुणा से मिलीं। मुलाकात दिल्ली में हुई। उस मुलाकात में दोनों नेताओं ने विचार किया। विभिन्न मुद्दों पर चर्चा के साथ नंदिनी सत्पथी ने यह सुझाव भी रखा कि परिवर्तन के दौर में एक ऐसे संगठन को भी अपने साथ जोड़ना चाहिए जो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और सर्वोदय आन्दोलन के समान प्रभावशाली तो हो लेकिन वह राजनीति में दखल नहीं रखता हो। कहते हैं कि बहुगुणा जी इस पर मुस्करा दिए थे और बोले थे कि उस संगठन को राजनीति में कोई रुचि ही नहीं होगी तो वह हमारे साथ आएगा ही क्यों? इस पर श्रीमती सत्पथी ने कहा था कि गायत्री परिवार हमारी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लिए कैनवास का काम कर सकता है। उसका नैतिक समर्थन भी पर्याप्त है। फिर वे बोली थीं कि आपको याद होगा, पिछले दो वर्षों में हुई अंधाधुंध गिरफ्तारियों के दौरान संघ और सर्वोदय दोनों ही आंदोलनों के लोग गायत्री परिवार की ओर झुके थे। इन संगठनों के कार्यकर्त्ताओं ने पीले वस्त्र पहन कर गायत्री परिवार में मिलकर काम किया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बहुगुणा ने कहा कि आप चाहें तो हम आचार्यश्री के पास चल सकते हैं पर मैं उन्हें जितना जानता हूँ, उसके अनुसार उनसे समर्थन की उम्मीद नहीं की जा सकती। कम से कम वे हमें चुनाव जीतने का आशीवाद तो नहीं ही देंगे। न हमें देगें और न ही उन लोगों को, जो वापस सत्ता में आने के लिए उनके पास जाते रहे हैं और अब भी जा रहे हैं।

धर्मभावना का प्रभाव

बहुगुणा ने इस बातचीत के दौरान १९७४ की एक घटना का जिक्र किया। उन दिनों वे उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री थे। बद्रीनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार की चर्चा चल रही थी। सवाल था कि इस काम को सरकार कराये या किसी सामाजिक संगठन को सौंप दिया जाए। बहुगुणा मंदिर का काम सरकार द्वारा ही कराने के पक्ष में थे। निजी तौर पर श्रद्धालु और ईश्वर विश्वासी होते हुए भी बहुगुणा धार्मिक मामलों में ऐसा कोई कदम उठाने के पक्ष में नहीं थे, जिससे समाज के दूसरे वर्गों को कोई आपत्ति हो। उन दिनों वे पुरातत्त्व विभाग या ऐतिहासिक इमारतों की रक्षा और सारसंभाल के लिए बने विभागों के बारे में सोच रहे थे कि वहां से कोई प्रबंध हो सके। प्रसिद्ध उद्योगपति बिड़ला बंधुओं ने भी बद्रीनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार की इच्छा जताई थी। बिड़ला उद्योग समूह और परिवार ही इस काम की पूरी जिम्मेदारी लेना चाहते थे। साधु संतों और धर्म अनुरागियों का एक वर्ग था जो मंदिर को बिड़ला परिवार के हाथों सौंप देने के खिलाफ था। उनका तर्क था कि इस तरह मंदिर का पारंपरिक स्वरूप बदल जाएगा। वह बद्रीनाथ मंदिर की जगह बिड़ला मंदिर के नाम से जाना जाने लगेगा। इस द्वन्द्व से उबरने के लिए बहुगुणा ने मई १९७४ में बद्रीनाथ की यात्रा की थी। वहां के साधु संतों से मिले थे। दूसरे इलाकों में बद्रीनाथ मंदिर को किसी निजी और औद्योगिक घराने को सौंप देने का भले ही विरोध हो रहा हो लेकिन उस क्षेत्र में प्रभावशाली साधु संत और धर्मगुरु पता नहीं क्यों मंदिर को आधुनिक रूप देने के पक्ष में थे। इस पृष्ठभूमि का हलका सा जिक्र करते हुए बहुगुणा जी ने नंदिनी सत्पथी से कहा कि लौटते हुए वे हरिद्वार में शान्तिकुञ्ज भी रुके थे और आचार्यश्री के पास गए थे। मुलाकात बहुत अंतरंग आत्मीय थी। बद्रीनाथ मंदिर का प्रसंग चला तो गुरुदेव ने कहा कि आपको थोड़ा बहुत विरोध सहना पड़ेगा, लेकिन मंदिर का पारंपरिक स्वरूप बनाए रख सकें तो सबका भला होगा। आपका भी होगा ही।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आपका भी होगा ही। सुनकर बहुगुणा जी अवाक गुरुदेव की ओर देखने लगे। स्पष्ट करते हुए गुरुदेव ने कहा, 'आप अभी प्रांत के मुख्यमंत्री हैं। जरूरी नहीं कि इस पद पर निरंतर बने रहें। आपको दूसरी बड़ी जिम्मेदारियां निभाने के लिए इस पद से हटना भी पड़ सकता है। कठिन परिस्थितियां भी झेलनी पड़ सकती हैं। इसलिए धर्मभावनाओं का जितना निर्वाह कर सकें, उतना ही अच्छा है।'

इस यात्रा से करीब तीन महीने पहले ही हेमवती नंदन बहुगुणा ने उत्तर प्रदेश विधान सभा के चुनाव जीते थे। उनके राजनीतिक प्रभाव का यह आलम था कि समूचा विपक्षी दल एक था और राज्य में कांग्रेस विरोधी माहौल था, लेकिन बहुगुणा के नेतृत्व में लड़े गए चुनाव में जीत का सेहरा कांग्रेस के सिर बंधा। चारों तरफ यशोगान होने लगा था। खैर बहुगुणा सुनकर और गुरुदेव के कथन के दोनों अर्थ लगाकर वापस आ गए। उनकी इस यात्रा के बाद विधानसभा में बद्रीनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार पर चर्चा होनी थी। चर्चा में दोनों ही पक्ष सामने थे। एक पक्ष सरकार द्वारा जीर्णोद्धार कराना चाहता था और दूसरा पक्ष बिड़ला बंधुओं द्वारा मंदिर बनवाने का था।

११ जुलाई १९७४ को विधानसभा में कुछ विधायकों ने प्रस्ताव रखा कि जीर्णोद्धार का काम बिड़ला बंधुओं को सौंप दिया जाए। इस पर जम कर चर्चा हुई। विधायकों ने पक्ष विपक्ष में दलीलें दीं। चर्चा पूरी होने का समय आया तो हेमवती नंदन बहुगुणा उत्तर देने के लिए उठे। हरिद्वार में गुरुदेव से भेंट का दृश्य उनके मानस में कौंध गया और वे बोले कि बिड़ला जी की भावनाओं का हम लोग आदर करते हैं लेकिन हमारी और इस राज्य की, देश की जनता की भी भावनाएं हैं। इस मंदिर को तुड़वाकर उसके स्थान पर आधुनिक शैली में निर्माण कराने के वे जरा भी पक्ष में नहीं हैं। बिड़ला जी चाहें तो अरबों रुपए दें और मंदिर बनवाएं लेकिन यह कतई नहीं होने दिया जाएगा कि मंदिर की किसी दीवार पर उनका नाम लिखा जाए अथवा बद्रीनाथ मंदिर किसी और नाम से पुकारा जाए।

बद्रीनाथ का जीर्णोद्धार

बहुगुणा जैसे धर्मनिरपेक्ष और उस समय अल्पसंख्यकों की राजनीति को महत्त्व देने वाले राजनेता का यह रवैया आश्चर्यजनक था। फरवरी १९७६ की रैली के बाद अपने निवास पर नंदिनी सत्पथी से इस प्रसंग की चर्चा करते हुए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
उन्होंने कहा कि विधान सभा में की गई इस घोषणा ने मुझे अचानक निष्ठावान धार्मिक बना दिया। लोग कहने लगे कि मैं धार्मिक स्थलों की शुचिता और स्वायत्तता का प्रबल पक्षधर हूं। कांग्रेस का एक वर्ग मुझसे नाराज जरूर हुआ कि मैंने उद्योगपति परिवार के मन की नहीं की, लेकिन सहज श्रद्धालु जनों की बधाइयों का तांता लग गया।

इस वृत्तांत का अगला चरण तो बाकी ही था। उन्होंने श्रीमती सत्पथी से कहा कि बद्रीनाथ मंदिर के बारे में तय हो जाने के बाद उनकी लोकप्रियता अचानक बढ़ने लगी। इसलिए नहीं कि उन्होंने मंदिर का निजीकरण नहीं होने दिया। वह प्रसंग तो पीछे छूट गया। भगवान ने कुछ ऐसे काम करा दिए, जिनका प्रकट में तो विशेष महत्त्व नहीं था लेकिन उनके कारण प्रगतिशील और धर्मनिरपेक्ष छवि उभरने लगी। मंदिर मामलों में पुरातन और पारंपरिक रुख अपनाने के बावजूद मुस्लिम जगत में वे पहचाने, पसंद किए जाने लगे। उस समुदाय का विश्वास बदलने लगा। देश की प्रगतिशील शक्तियों के साथ संपर्क बढ़े और लगा कि राष्ट्रीय स्तर के नेता की छवि उभरने लगी है। करीब डेढ़ साल पहले गुरुदेव द्वारा कही गई कठिन चुनौती मिलने और उतार चढ़ाव आने की बात दिमाग से उतर गई। वह बात २८ अक्टूबर १९७५ को याद आई, जब कांग्रेस आलाकमान से निर्देश आया कि वे मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र दे दें। उन्हें तत्काल अपने पद से हटना पड़ा।

बहुगुणा जी ने बताया कि इस पद से हटने के बाद उन्हें कोई राजनीतिक जिम्मेदारी नहीं दी गई। उनके क्रियाकलापों पर नजर रखी जाने लगी। देश में जो हालात बन गए थे, उनके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता था कि कब तक ये रहेंगे। मन में यह विश्वास तो था कि हालात बदलेंगे तो सही, पर कब बदलेंगे कुछ समझ नहीं आता था। सो अपने मूल निवास चला गया। ज्यादा समय वहीं बिताया। श्रीनगर-पौढ़ी गढ़वाल से पंद्रह सोलह किलोमीटर दूर अपने पैतृक गांव बघाणी में बहुगुणा हफ्तों रहते और लोगों के दुख दर्द में शरीक होते। इस गांव से हिमालय की नंदादेवी चोटी भी दिखाई देती। जब भी कभी एकांत मिलता तो नंदा देवी को निहारते रहते। गांव में रहते, बीच बीच में बाहर आते और कभी कदा शान्तिकुञ्ज भी चले जाते। आने जाने के दौरान उन्होंने गुरुदेव की लिखी पुस्तकें पढ़ीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
श्रीमती सत्पथी को यह वृत्तांत बताने के बाद बहुगुणा जी ने कहा कि आचार्यश्री धर्म को राजनीति से दूर रखने के हिमायती हैं। एक अध्यापक छात्रों का अनुरागी, हितैषी और उसके लिए समय, प्रतिभा तथा साधन नियोजित करने वाला होने के बावजूद उनमें घुल मिल नहीं जाता, उसी तरह धर्मपुरुषों को भी राजनीति में रमना नहीं चाहिए। उनका काम समाज और राजनीति का मार्गदर्शन करना है। उनका हिस्सा बन जाना नहीं। यह वृत्तांत सुनकर श्रीमती सत्पथी चुप हो गई थीं और फिर उन्होंने गुरुदेव के पास किसी समर्थन सहयोग के प्रयोजन से जाने की बात नहीं कही। इस बारे में कभी सोचा भी नहीं। वही बताया करती थी कि मैं फरवरी १९७७ के तीसरे सप्ताह में व्यस्त राजनीतिक कार्यक्रमों से समय निकालकर मथुरा जरूर गई थी। वहां अपने बारे में किसी को बताए बिना ही गायत्री तपोभूमि गई और मंदिर की सीढ़ियों पर दस मिनट बैठकर प्रार्थना करती रही थी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

राजनीति और धर्मतंत्र के संबंधों को स्पष्ट करते हुए गुरुदेव ने इन घटनाओं से करीब दस वर्ष पहले इस विषय पर विस्तार से लिखा था। अखंड ज्योति के पृष्ठों पर छपे और बाद में पुस्तक रूप में भी आए वे आलेख १९७६ से १९८१ के बीच जैसे आकार लेने लगे। शब्दों ने जैसे शरीर धारण कर लिया और अपने कृत्यों से इस विषय में प्रमाण प्रस्तुत करने लगे।

मार्च १९७७ में हुए आम चुनाव में कुछ संन्यासी भी जीतकर आए। इनमें उत्तर प्रदेश के एक बड़े मठ के महंत और मध्यप्रदेश के एक युवा संन्यासी भी थे। कुछ क्षेत्रों में गायत्री परिवार के अति उत्साही और महत्वाकांक्षी कार्यकर्त्ता भी चुनाव लड़े थे। उनमें राजस्थान, गुजरात, बिहार और ओडिशा के कार्यकर्त्ता भी थे। इसमें से सिर्फ तीन कार्यकर्त्ताओं को सफलता मिली। उन्हें गायत्री परिवार के सदस्यों के कारण नहीं बल्कि क्षेत्र में पहले से की गई सेवाओं, वातावरण और उन दिनों चली लहर के कारण कामयाबी मिली थी। इस तथ्य से अच्छी तरह वाकिफ नए जन प्रतिनिधि अपनी मार्गदर्शक सत्ता से आशीर्वाद लेने शान्तिकुञ्ज आए थे। आशीर्वाद के साथ गुरुदेव ने उन्हें यही निर्देश दिया था कि विदेहराज जनक और भगवान राम के आदर्श को सामने रखकर काम करना है। इन आदर्शों के अनुसार काम करोगे तो युगधर्म को भलीभांति निभा सकोगे। वरना जनसेवा को सुख भोग और यश विलास का साधन बनाया तो कोई लाभ नहीं होगा। सत्ता और सिंहासन तो आते जाते रहते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सेवा कोई भोग नहीं

उन्हीं दिनों उत्तर भारत से चुनकर आए एक संन्यासी विधायक शान्तिकुञ्ज आए। घुटनों तक धोती और पांव में खड़ाऊं पहने ये महात्मा सप्त सरोवर के किसी आश्रम में ठहरे थे। गायत्री परिवार से वे परिचित तो थे लेकिन इसकी गतिविधियों में उनकी कोई भागीदारी नहीं थी। सप्त सरोवर स्थित अपने गुरु के आश्रम में रहते हुए उन्हें विचार आया कि गुरुदेव के दर्शन किए जाएं। शाम के समय आश्रम से फोन पर बातचीत की और पता चला कि अगले दिन दोपहर दो बजे बाद गुरुदेव से भेंट हो सकती है। जानकर मन प्रफुल्ल हो उठा। रात बीती और सुबह हुई। संन्यासी की सहज आकांक्षा स्फुरणा के अनुसार वे तड़के पांच बजे गंगा किनारे पहुंचे। उन स्वामी जी ने जिन्हें सुविधा के लिए पवन स्वामी कहा जाता है, गंगा तट पर बैठकर संध्यावंदन और गायत्री जप किया और प्रदक्षिणा के बाद अपने आसन पर बैठ गए। शांत बैठे-बैठे उन्हें ध्यान में प्रवेश का आभास हुआ और देखा कि सामने कुछ बिंब उभर रहे हैं। उन बिंबों के अनुसार एक योगी हाथ में वीणा लिए संस्कृत के पदों का गायन कर रहा है। पदों को ध्यान से सुनने की कोशिश की तो बोध हुआ कि ये बाल्मीकि रामायण में 'बालकांड' के श्लोक हैं।

आर्ष रामकथा में इन प्रसंगों या छंदों में विश्वामित्र द्वारा राम लक्ष्मण को अपने साथ ले जाते समय रास्ते की घटनाओं का वर्णन था। आगे आगे विश्वामित्र और उनके पीछे राम लक्ष्मण चले जा रहे थे। दोनों ने पीठ पर तरकश बांधे रखे थे। हाथों में धनुष लिए इन भाइयों के कटिप्रदेश में तलवारें भी लटक रहीं थीं। अयोध्या से डेढ़ योजन दूर जाकर सरयू के दक्षिण तट पर विश्वामित्र ने राम से कहा कि अब तुम इस नदी जल से आचमन करो। मैं तुम्हें बला और अतिबला नाम से प्रसिद्ध विद्याएं सिखाऊंगा। इनके प्रभाव से तुम्हें न कभी थकावट का अनुभव होगा और न ही चिंता के कारण किसी तरह का कष्ट। (पवन स्वामी ने इस पद से अर्थ लगाया कि चिंता और तनाव तो स्वाभाविक हैं। उनका होना अवश्यम्भावी है। बला-अतिबला नामक विद्याओं से उनके कारण होने वाली क्लांति और थकान को मिटाया जा सकता था) इन विद्याओं को सिद्ध कर लेने के बाद रात को सोते समय भी तुम पर आसुरी शक्तियां आक्रमण नहीं कर सकेंगी। महर्षि नारद आगे गा रहे थे कि ब्रह्मर्षि विश्वामित्र से ये विद्याएं सीखकर श्री राम और लक्ष्मण सहस्त्र सूर्यो से सुशोभित शरत्कालीन सूर्य के समान शोभा पाने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देवर्षि का गायन आगे बढ़ता है। उसमें विश्वामित्र सहित श्रीराम और लक्ष्मण के सरयू संगम के पार जाने और पास स्थित आश्रम में ठहरने, फिर ताटका वन में पहुंचने, ताटका का वध करने और उसके बाद ऋषि द्वारा श्रीराम को दिव्य अस्त्र देने के प्रसंगों का वर्णन था। विश्वामित्र के आश्रम में पहुंचकर यज्ञ की रक्षा और राक्षसों के संहार के प्रसंग थे। इन प्रसंगों का रामायण में आए क्रम के अनुसार पाठ या गायन किया जाए तो कम से कम दो घंटे का समय लगता है लेकिन पवन स्वामी को यह दृश्य देखने और अनुभव करने में पांच मिनट का समय भी नहीं लगा। यों कहें कि इससे भी कम समय में जितनी देर आंखें बंद किए बैठे रहे, उतनी देर में सब कुछ अनुभव कर लिया।

दृश्य इतना मनोरम था कि उस प्रवाह को आगे भी देखने की इच्छा जगी। आंखें बंद कीं तो लगा देवर्षि नारद वीणा हाथ में लिए खड़े हैं और कुछ कह रहे हैं। सुनने की चेष्टा की तो पाया कि वे 'बला' और 'अतिबला' विद्याओं के बारे में कह रहे हैं। उन्हें बीच में ही टोक कर कर स्वामी जी ने पूछा, 'मेरी जिज्ञासा अलग ही है देवर्षि कि महर्षि विश्वामित्र तो स्वयं क्षत्रिय कुल में जन्मे थे। उन्होंने अपने बल से नई सृष्टि की रचना तक शुरु कर दी थी और त्रिभुवन को जीत लिया था। उन्हें कई शस्त्रास्त्रों और दिव्य आयुधों का ज्ञान था। वे उनके संधान में समर्थ थे। उनका प्रयोग करने के स्थान पर उन्होंने राजा दशरथ से राम और लक्ष्मण को क्यों मांगा?'

देवर्षि के भावशरीर ने पवन स्वामी को उत्तर दिया कि आपके इन प्रश्नों का उत्तर कल सुबह ही मिलेगा स्वामी जी। वही महापुरुष समाधान देंगे, जिनसे आप मिलने जाएंगे। मेरा समाधान तो यही है कि ऋषि स्तर पर आने के बाद व्यक्ति राजपुरुष नहीं रह जाता। उसके अंतस में जो आलोक उत्पन्न हो जाता है, वह मार्ग दिखाता है-यात्रा नहीं करता। सूर्य और धर्म का एक नाम आदित्य भी है- आदित्य अर्थात जो आलोकित करें।

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सोलह

विडम्बना और तथ्य

आन्ध्र प्रदेश की राजधानी बंगलुरु से कुछ दूर कुंबलगुडु से आए रविवर्मन शान्तिकुञ्ज परिसर में आते ही बिलख उठे। अपने गृहनगर से यहां पहुंचने तक उन्होंने अपने आपको संभाल रखा था और अब रहा नहीं जा सका। उन्होंने कार्यालय में कदम रखा और अपना परिचय देने के तुरंत बाद कहना शुरु किया कि मुझे गुरुदेव से मिलवा दीजिए। मेरा स्वास्थ्य बुरी तरह जर्जर हो गया है। परिवार में दो लड़कियां हैं, पत्नी है और बूढ़ी मां है। डॉक्टरों ने मुझे जवाब दे दिया है। गुरुदेव ही मुझे बचा सकते हैं। कार्यालय में उपस्थित परिजन ने कहा कि गुरुदेव से भेंट हो जाएगी। आप निश्चिन्त रहें। इसके बाद उन्होंने रवि वर्मन की समस्या पूछी, घर परिवार का कुशल जाना और ठहरने की व्यवस्था की। रविवर्मन की दोनों किडनियां खराब हो गई थीं। डॉक्टरों ने सलाह दी थी कि एक किडनी निकलवा कर उसकी जगह नई प्रत्यारोपित करा लें। इसके लिए आर्थिक साधन चाहिए थे और उनसे भी बढ़कर ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो गुर्दादान कर सके। इसके लिए अपने संपर्क क्षेत्र में नजर दौड़ाते या अंगदान की व्यवस्था करने वाली एजेंसियों से संपर्क करना था। संपर्क शुरु किया ही था कि दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध संत के अनुयायियों ने उन्हें अपने गुरु की शरण में आने के लिए कहा। उन संत के बारे में कहा गया कि वे फूल की पंखुड़ी से भी आपरेशन कर सकते हैं और कई बार तो इसकी भी आवश्यकता नहीं पड़ती। पीड़ित अंग का सिर्फ स्पर्श कर या आशीर्वाद देकर भी वे ठीक कर सकते हैं। अनुयायियों ने उन संत की महिमा इस तरह बखान की कि रवि वर्मन ने इलाज या आपरेशन के चक्कर में पड़ने के बजाय उन संत के पास जाना ही ठीक समझा और वे गए भी।

जिस दिन उन संत के दर्शन हुए, उस दिन १४० और लोग भी मौजूद थे। प्रत्येक किसी न किसी रोग से पीड़ित। संत भव्य राजसी अंदाज में शिष्यों के बीच आए और पीड़ितों का स्पर्श किया। कुछ को भस्म का प्रसाद दिया और कुछ को आशीर्वाद मुद्रा में हाथ उठाकर अभिवादन किया। रवि वर्मन को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने अगले दिन दोपहर बाद अपने पास में बुलाया था। वहां जाने पर किन्हीं उपकरणों से, जो रवि वर्मन के बताए विवरण के अनुसार पूजा पाठ के काम आते होंगे, आपरेशन जैसा कुछ कृत्य किया। कृत्य इसलिए कि वह पेट और कमर के निचले हिस्से पर स्पर्श तथा मार्जन प्रक्रिया ही थी। उसे चिकित्सा का नाम दिया गया था। (रवि वर्मन ने उन संत का नाम तो नहीं बताया लेकिन उनसे बातचीत कर रहे शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ता ने समझ लिया) उन संत का हुलिया, व्यवहार और लक्षण पुट्टपर्ती के सत्य सांई बाबा जैसा था। कार्यकर्त्ता ने उनका नाम लिया तो रविवर्मन ने तपाक से मना कर दिया। इस बातचीत के बाद रवि वर्मन को ठहरा दिया गया। उसी दिन तीसरे पहर दो बजे बाद गुरुदेव से भेंट हुई। शिविर चल रहा था और रवि की भेंट शिविरार्थियों के बाद ही हुई थी। गुरुदेव से करीब दस मिनट तक उसने अपनी व्यथा कही और वहां से लौटे तो बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने अपने आप बताया कि गुरुदेव ने उपचार कराने के लिए कहा है। किसी चमत्कार की आशा नहीं करने और भगवान का नाम लेते हुए उनका काम करने से सब कुछ ठीक हो जाने की बात कही है।

रवि वर्मन अगले दिन वापस अपने निवास स्थान पर चले गए। कोई महीने भर बाद संदेश आया कि उपचार से आराम हो रहा है। परीक्षण के बाद डॉक्टरों ने कहा है कि एक किडनी पूरी तरह बेकार हो गई है। दूसरी में तीव्र संक्रमण है लेकिन ऐसा नहीं कि उसे बदले बिना काम ही नहीं चले। यथोचित चिकित्सा से संक्रमण कम किया जा सकता है। यह सूचना देते हुए रवि वर्मन ने एक बार फिर शान्तिकुञ्ज आने की इच्छा जताई थी। जिन कार्यकर्त्ता से रविवर्मन शान्तिकुञ्ज आते ही मिले थे; उन्हें भी अलग से पत्र लिखा। पत्र में उन्होंने लिखा कि गुरुदेव के आशीर्वाद से स्वास्थ्य सुधर रहा है। उन्होंने आशीष देते हुए कहा था कि रोग बीमारियां हो जाए तो किसी चमत्कार से ठीक होने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। उसका उपचार कराना चाहिए। संत महापुरुषों की, बड़ों की और माता-पिता की दुआएं काम तो आती हैं लेकिन बादलों से बरसते पानी की तरह है। धरती पर कुछ बीज पड़े हों तो उस पानी को पाकर वे अंकुरित हो जाते हैं वरना वह बेकार चला जाता है। पत्र में रवि वर्मन ने अपने और अनुभव भी लिखे थे।

उन दिनों पत्र पत्रिकाओं में खासी बहस छिड़ी हुई थी। बहस का विषय था कि चमत्कार वरदान से सचमुच रोग बीमारियां ठीक हो जाती हैं या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
इस बारे में किए गए दावे लोगों को बरगलाने फुसलाने के लिए होते हैं। इस बहस के केन्द्र में पुट्टपर्ती के सत्य सांई बाबा थे। मुंबई से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक अखबार 'ब्लिट्ज' ने सत्य सांई बाबा के बारे में दसियों अंकों तक चलने वाली लेखमाला प्रकाशित की। बहस कुछ इस तरह प्रकाशित हुई कि उसमें सत्य सांईबाबा को करामाती चमत्कारी भी बताया गया और दूसरे पक्ष से उनकी आलोचना भी की गई। विवाद की शुरुआत १९७६ में गुरुपूर्णिमा पर सत्य सांईबाबा की इस घोषणा से हुई थी कि वे 'शिव' और 'शक्ति' दोनों के अवतार हैं। यह उनका दूसरा जन्म या अवतार है। अपनी लीलाएं संवरण करने के बाद वे प्रेम सांई के नाम से एक अवतार और लेंगे।

सत्य सांईबाबा ने कहा था कि अपने इस दूसरे अवतार के रूप में वे लौकिक अलौकिक सभी तरह की शक्तियों और सिद्धियों का उपयोग करेंगे। बाबा के इन दावों से धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में हलचल मच गई थी। उन दिनों देश में आपात्काल लागू था। खबरों की दुनिया में सन्नाटा छाया हुआ था इसलिए सत्य सांईबाबा को लेकर उठा यह विवाद अरसे तक बना रहा। सत्य सांईबाबा की चमत्कारी क्षमताओं से प्रभावित और आगे चलकर अपने आप को ठगा सा महसूस करने वाले कई लोग उन दिनों शान्तिकुञ्ज आते थे। वे अपनी आपबीती गुरुदेव से मुलाकात के समय स्वयं कहते अथवा पत्र लिखकर उनके सामने भी रख देते। गुरुदेव उनके अनुभवों की न पुष्टि करते और न ही खंडन। सुनकर चुप रह जाते। कभी कभार इतना भर कह देते कि भगवान की बनाई यह दुनिया अपने आप में सबसे बड़ा चमत्कार है। इसी में परमात्मा को ढूंढ़ो और पाओ। गुरुदेव के इस उत्तर से बहुत से साधकों को संतोष नहीं होता। वे अपना आग्रह दोहराते लेकिन गुरुदेव इस बारे में स्वयं ही खोज करने और अपना समाधान तलाशने की राय देते।

अपने ही कर्मों का साथ

शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता और गायत्री तपोभूमि की स्थापना के समय दीक्षा प्राप्त शिष्य बद्री प्रसाद पहाड़िया ने भी सत्य सांई बाबा के सम्बन्ध में उठ रही चर्चाओं को सुना था। वे यद्यपि अखबार और पत्र पत्रिकाओं अथवा गुरुदेव के साहित्य से इतर सामग्री में रुचि नहीं रखते थे, लेकिन अखबारों में छपे चमत्कारी वर्णन उनकी जानकारी में आ चुके थे।। उनकी आस्था थी कि गुरुदेव से बढ़कर न तो कोई संत है और न ही विद्वान। सत्य सांईबाबा के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
चमत्कारों की कहानियां उन्होंने भी पढ़ी और सुनी। रोज की तरह एक सुबह वे प्रतिदिन की भांति गुरुदेव को प्रणाम करने गए। इस बार वे तय करके गए थे कि इन चमत्कारों के बारे में जरूर पूछेंगे। अगर इन चमत्कारों की महिमा है या इनसे अध्यात्म और साधना की महत्ता सिद्ध होती है तो हम लोगों को यानी गायत्री परिवार के सदस्यों को, गुरुदेव के शिष्यों को चमत्कारिक अनुभव क्यों नहीं होते? यह जिज्ञासा मन में लेकर गए पहाड़िया जी ने गुरुदेव को प्रणाम किया और हमेशा की भांति एक तरफ खड़े हो गए। वे शान्तिकुञ्ज की व्यवस्था में हाथ बटाते थे, उनके जिम्मे दैनंदिन आवश्यक सामग्रियों के प्रबन्ध का एक महत्त्वपूर्ण कार्य था। सुबह प्रणाम के समय वे दिन की योजनाओं के बारे में गुरुदेव को बताते। इस बार भी लगा कि एक तरफ खड़े हो जाने का उद्देश्य आज की दिनचर्या के बारे में बताना था, लेकिन वे कुछ पल चुपचाप खड़े रहे। कुछ क्षण इसी मुद्रा मे खड़े रहकर उन्होंने कहा, 'साहब इन दिनों सत्य सांईबाबा का बड़ा नाम हो रहा है। लोग उनकी सिद्ध अवस्था और चमत्कारों के दीवाने हुए जा रहे हैं।'

पहाड़िया जी के कहने की देर थी। वे चुप हुए ही थे कि गुरुदेव ने पूछ लिया, 'तुम भी सिद्धियों के दीवाने हो गए हो क्या?' पहाड़िया जी को इस प्रति प्रश्न की उम्मीद नहीं थी। वे सोच रहे थे कि गुरुदेव इस बारे में कुछ कहेंगे जो उन दिनों चल रही लहर को समझने में मदद करेगा। उनका समाधान होगा। गुरुदेव के कथन ने उनकी मन:स्थिति को जैसे उलट पुलट दिया। उनके मुंह से सिर्फ इतना ही निकला, 'हम किसी से प्रभावित कैसे हो सकते हैं साहब।'

गुरुदेव ने कहा, 'फिर क्यों परेशान होते हो? सिद्धि चमत्कार आसमान से चमकने वाली बिजली और गरजने वाले बादलों की तरह हैं। सदा नहीं रहते। हमेशा साथ देने वाली चीज तो व्यक्ति का अपना पुण्य है।'

पहाड़ियाजी इस समाधान के बाद कुछ नहीं कह सके। उन्हें ग्लानि होने लगी कि गुरुदेव के सान्निध्य में इतने वर्ष रहने के बावजूद वे यह क्यों नहीं समझ सके कि व्यक्ति के अपने कर्म ही प्रमुख हैं। कर्मों के परिणाम चमत्कार वरदान से बदले नहीं जा सकते। यह भाव कुछ गहराए इससे पहले ही गुरुदेव ने कहा, 'बहुत बार समय का प्रवाह और बाहरी परिस्थितियां भी मन को विचलित कर देती हैं। उनसे परेशान नहीं होना चाहिए। अपनी निष्ठा मजबूत हो तो कुछ नहीं बिगड़ता।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसके बाद गुरुदेव आज की दिनचर्या यानी दिन भर के कामों के बारे में पूछ लिया। इस तरह पहाड़िया जी के मन में उत्पन्न हुई उत्सुकता और कौतूहल का समाधान हुआ। उन्हें ग्लानि के साथ अपने गुरुदेव पर, उनके शिष्यत्व पर गर्व की अनुभूति होने लगी। उस अनुभूति की मस्ती में वे झूमते हुए से अपने कमरे में आए। भोजन किया और कुछ देर के लिए कुर्सी पर बैठ गए।

सुबह चार बजे उठने के बाद वे आठ नौ बजे तक प्रातःकालीन क्रियाकृत्य निपटा लेते थे। और भोजन के बाद अखंड ज्योति पत्रिका या गुरुदेव की लिखी पुस्तकें पढ़ा करते थे। जिस दिन की यह घटना है, उस दिन वे "सर्वोपयोगी सुलभ साधना" पढ़ रहे थे। पुस्तक में एक ध्यान का वर्णन है। उस विधि में साधक अपने आपको भगवान की या अपने इष्टदेव की गोदी में बैठा अनुभव करता है। आठ-दस माह के शिशु की भांति वह अपनी अभिभावक सत्ता के साथ बाल सुलभ क्रीड़ाएं करता और जिस गोद में वह बैठा होता है, उसका लाड़ दुलार अनुभव करता रहता है। पहाड़िया जी वह प्रकरण पढ़ ही रहे थे कि उन्हें अध्याय की पंक्तियों में एक विचित्र अनुभव होने लगा। सामने गुरुदेव की आकृति उभरने लगी। वह आकृति उभरती और फिर लुप्त हो जाती, उसके बाद उनका स्वयं का आपा दिखाई देता। फिर स्वयं की छवि लुप्त हो जाती और गुरुदेव का बिंब उभरता। यह क्रम तीन चार बार चला और अनुभव हुआ कि अपने सिर पर लम्बे बाल उग आए हैं। शरीर पर धारण किया कुर्ता लंबा हो गया और चोगे में बदल गया है। स्वयं को इस रूप में देखकर हैरानी हुई। फिर दिखाई दिया कि सामने गुरुदेव खड़े है और जैसे कह रहे हैं कि तुम हाथ से, पैर से या बालों से और चित्रों से भस्म प्रसाद निकलने को चमत्कार मानते हो। तुम्हारे इसी शरीर से भस्म प्रसाद के साथ रत्न आभूषण और सर्प बिच्छू भी प्रकट हो सकते हैं। ऐसा करना चाहोगे।

दृश्य देखकर पहाड़िया जी डर से गए। फिर गुरुदेव को सामने देखकर तुरंत सहज भी हो गए। उन्होंने तपाक से कहा, 'नहीं गुरुदेव। कुछ नहीं चाहिए। कोई चमत्कार नहीं चाहिए।' पहाड़िया जी इस दृश्य या भाव अनुभूति में खोए हुए थे कि बाहर से किसी ने आवाज लगाई। आवाज सुनकर वे भाव समाधि से बाहर आए और दरवाजे के बाहर खड़े कार्यकर्ता की बात का जवाब देने लगे। उन दिनों समाचार विश्व किन्हीं महत्त्वपूर्ण घटनाओं से या उनकी सूचनाओं से शून्य था तो धर्मजगत के समाचार ही छाये हुए थे। शायद शून्य ही कारण था कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
इस क्षेत्र की हलचलें वातावरण में गूंज रही थीं या वे हलचलें कारण रही होंगी कि समाज और राजनीति की सामान्य घटनाओं को स्थान नहीं मिल पा रहा था। १९७६-७७ के वर्षों में चमत्कारी महात्माओं के अलावा आधुनिकता के नाम पर हेय प्रवृत्तियों को स्वाभाविक और सहज बताने का फैशन भी चल पड़ा था। काम वासना से ऊपर उठकर आत्मचेतना को परिष्कृत करना निश्चित ही आध्यात्मिक व्यायाम है। इस सत्य की ओट में आचार्य रजनीश, (बाद में ओशो) तेजी से उभर रहे थे। चुटीली, वाग्मितापूर्ण शैली में अपनी बातों को रखने और भारतीय धर्मशास्त्रों, आप्त वचनों को अपने ढंग से परिभाषित करने के लिए विख्यात ओशो उन दिनों युवाओं में चर्चित हो रहे थे। गुरुदेव तक भी उनकी सूचनाएं पहुंच रही थीं। गुरुदेव उनकी गतिविधियों पर कोई टिप्पणी या प्रतिक्रिया नहीं करते थे। संभवत: १९७६ के अक्टूबर मास की ही कोई तिथि थी। पूना से ओशो के एक नजदीकी कार्यकर्त्ता स्वामी योगभारती गुरुदेव के पास आए। उन्होंने अपना परिचय दिया कि वे भगवानश्री (ओशो तब इसी नाम से जाने जाते थे) के प्रवचनों में पूछे जाने वाले प्रश्नों और उनके उत्तर के लिए आवश्यक तथ्यों की शोध करते हैं। उसके लिए आवश्यक जानकारी जुटाते है। यहां आने का उद्देश्य वेद उपनिषदों के गूढ़ रहस्यों की कुछ कुंजियां प्राप्त करना है। भगवानश्री भावी प्रवचन शृंखलाओं में वेदों के रहस्य उद्घाटित करने की योजना बना रहे हैं।

वेदशास्त्रों का अध्यात्म-भाष्य

ओशो के शिष्य इस शोध अनुसंधान के लिए दूसरे आश्रमों में भी गए थे। श्री अरविंद आश्रम पाण्डिचेरी, स्वाध्याय मण्डल पारडी, वेद संस्थान, गंगेश्वर धाम दिल्ली और आर्य साहित्य मंडल अजमेर आदि उनमें से कुछ आश्रमों के नाम थे। स्वामी योग भारती ने इस सबकी जानकारी दी तो गुरुदेव ने अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं। अतिथि ने अपनी आवश्यकता के बारे में फिर दोहराया तो गुरुदेव ने कहा, वेदों का जितना लौकिक और वाचिक अनुवाद भाष्य किया जा सकता था, वह दस साल पहले किया जा चुका है। उसके अगले चरण पर हम लोग काम कर रहे हैं। लेकिन वह पार्थिव कम और चेतना के स्तर पर ज्यादा है। भगवानश्री (गुरुदेव ने पूना से आए नव संन्यासी की श्रद्धा भावना का निर्वाह करने के लिए इसी नाम से संबोधित किया) तक हम लोगों का संदेश पहुंचाना कि इस स्तर पर काम होने के बाद हम स्वयं ही उन तक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संदेश पहुंचा देंगे। यह अनुरोध भी पहुंचाइएगा कि हो सके तो आर्ष परंपरा की साधना विधियों के बारे में भी अपने अनुयायियों को बताएं।

ओशो ने कुछ समय पहले अपने एक वक्तव्य में गुरुदेव के संबंध में कहा था कि वे परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सेतु हैं। इसलिए हमारे (ओशो) काम में अवरोध उत्पन्न करते हैं। इस वक्तव्य के कुछ ही सप्ताह बाद उनके सहयोगी योग भारती शान्तिकुञ्ज आए और वेद उपनिषदों के सम्बन्ध में गुरुदेव से परामर्श या दिग्दर्शन लेकर गए। यह संयोग था या गुरुदेव के परामर्श का प्रभाव कि ओशो ने गायत्री मंत्र पर अपना प्रसिद्ध वक्तव्य दिया। उन्होंने मंत्र के आध्यात्मिक रहस्य और साधक की स्थिति के अनुसार इसके प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता को अपनी परिचित शैली में परिभाषित किया। इससे पहले के वक्तव्यों में ओशो गायत्री मंत्र और उपासना की कड़ी आलोचना करते रहे थे। बाद में उन्होंने इसकी प्रचलित उपासना विधि और भाव तथा समझ विहीन साधना को तो आड़े हाथों लिया लेकिन मंत्र विज्ञान को कभी गलत नहीं ठहराया। योग भारती के अनुसार ओशो कहा करते थे कि साक्षी भाव से एकाग्रता पूर्वक जपा गया गायत्री मंत्र व्यक्ति के अंतर्जगत में ऊर्जा का संचार कर देता है। उन्होंने यह बात दोबारा शान्तिकुञ्ज आने पर कुछ वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं को भी बताई थी।

आसन सिद्धि का रहस्य

१९७६-७७ के वर्ष में एक और आध्यात्मिक वितण्डा योग तथा कुंडलिनी साधना के सम्बन्ध में भी उठ रहा था। भारत से योग का संदेश लेकर पश्चिमी जगत में गए एक योगी जोर शोर से दावा कर रहे थे कि उनकी बताई विधि से साधना करने वालों का आसन उठने लगता है। पालथी मारकर बैठने और उन योगी के बताए मंत्रों का जप करने से साधक का शरीर इतना हलका हो जाता है कि अपने आप छह इंच से लेकर दो फुट तक ऊपर उठ जाता है। आसन उठने के दावे की पुष्टि करते हुए कुछ साधकों के चित्र भी अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में छपे थे। कुछ महीनों तक इस दावे के आधार पर योग विज्ञान की बड़ी चर्चा हुई। बाद में उन योगी ने इस ध्यान सिद्धि का प्रदर्शन भी शुरु किया। बता देना उचित होगा कि महर्षि महेश योगी के नाम से विख्यात हुए उन्हीं संत ने वेद मंत्रों के वैज्ञानिक आधार की विवेचना के लिए कई आयोजन, अभियान और संस्थान चलाए। उससे उनकी ख्याति भी फैली लेकिन 'आसन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सिद्धि' का वह प्रचार योग को खास लोकप्रिय नहीं बना पाया। इस सिद्धि के प्रदर्शन के बाद साफ हो गया कि, साधकों का आसन ध्यान और जप के समय अपने आप नहीं उठता बल्कि अभ्यास के दौरान वे बैठे बैठे ही उछलने लगते हैं। इस तरह के प्रदर्शन की आलोचना हुई तो महर्षि के ध्यान शिक्षकों ने स्पष्टीकरण दिया। वे कहने लगे कि आसन सिद्धि का यह प्रारंभिक चरण है। अभ्यास में गति और गहराई आने के बाद साधक को 'हॉबिंग' की जरूरत नहीं पड़ती। यह प्रक्रिया अपनाते समय उसका आसन स्वत: स्थिर हो जाता है।

शान्तिकुञ्ज में चल रहे साधना शिविर में गुरुदेव ने एक प्रश्न के उत्तर में कथित 'आसन सिद्धि' के बारे में स्पष्ट किया था। शिविरार्थी जिस साधना उपासना का अभ्यास करते थे उसमें किसी तरह की सिद्धि या चमत्कारी क्षमता का आश्वासन नहीं होता था। स्वाभाविक ही था कि योग के चमत्कारों की सूचनाओं और दावों के बारे में सुनकर साधक भी उत्सुक होने लगे थे। गुरुदेव को अपनी अनुभूतियों, आवश्यकताओं और निजी समस्याओं के बारे में लिखे जाने वाले पत्रों में वे इस विषय में जिज्ञासा करते थे। इस तरह के एक प्रश्न का समाधान करते हुए गुरुदेव ने कहा कि स्थिरता पूर्वक सुख से बैठना ओर अपनी उपासना विधि का अभ्यास करना ही आसन सिद्धि है। भगवान पतञ्जलि ने अपने योग शास्त्र में आसन की यही परिभाषा की है। इससे अधिक किसी चमत्कार की आशा नहीं करनी चाहिए। यदि कोई साधक अपेक्षा रखता है तो उसे रामकृष्ण परमहंस के उस प्रसंग का याद रखना चाहिए जिससे उन्होंने एक सिद्धि प्राप्त महात्मा की चुनौती का उत्तर दिया था।

रामकृष्ण परमहंस का वह प्रसंग प्रसिद्ध है। यही प्रसंग भगवान बुद्ध के संबंध में भी कुछ कुछ अंतर से प्रचलित है लेकिन स्वामी रामकृष्ण परमहंस के उस बोध प्रसंग के प्रत्यक्ष दर्शी भी रहे हैं। कहते हैं कि किसी सिद्धयोगी ने वर्षों तक तप करने के बाद अपने शरीर को निर्भार करने की सिद्धि प्राप्त कर ली। वह हवा में उड़ने लगा था और नदी की बहती धारा पर पैर रखकर चलते हुए इस पार से उस पार भी चला जाता था। स्वामी रामकृष्ण परमहंस से भेंट हुई तो उसने अपनी सिद्धियों के बारे में बताया। सुनकर परमहंस ने कहा कि आप महान योगी है। आपने कठोर तप कर योग की महिमा का साक्षात्कार किया है। हम लोग मां के सामान्य उपासक है। उनकी आराधना करके ही प्रसन्न रहते हैं। योगी ने फिर अपनी सिद्धियों का बखान किया और परमहंस को चुनौती सी देते हुए कहा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'देखिए मैं अपने योग वैभव को प्रमाणित करके भी दिखाता हूँ।' कहते हुए वह सामने ही बह रही गंगा में उतरा। धारा को छूकर कदम आगे बढ़ाया तो पानी ने उसके पदतल को स्पर्श किया और जमीन की तरह कठोर हो गया। उसने फिर दूसरा, तीसरा कदम बढ़ाया और सतह पर चलता हुआ सा वह साधक गंगा के दूसरे किनारे चला गया। उस पार उतर कर वापस उसी तरह चलता हुआ इस पार आ गया। फिर परमहंस के सामने इठलाता हुआ खड़ा हो गया और कहने लगा कि यह है योग साधना का चमत्कार।

परमहंस ने योगी से कहा कि निश्चय ही यह आपकी योग साधना का चमत्कार है। आपने इसके लिए लम्बे समय तक साधना तो की किंतु वह व्यर्थ हो गई। सुनकर योगी चौंक उठा। वह परमहंस की ओर देखने लगा। परमहंस ने नदी की ओर इशारा किया। धारा पर एक नौका तैरती हुई आ रही थी। वे बोले उस नौका के स्वामी को दो पाई देकर आसानी से नदी पार की जा सकती है। इसके लिए दस बारह साल तक साधना करने से क्या लाभ?

गुरुदेव ने अपने प्रवासी जीवन में, एकांत साधना के समय और अज्ञातवास के दिनों में साधना पथ के कई पथिकों को इस तरह के प्रसंगों द्वारा योगाभ्यासियों को सही मार्ग दिखाया था। उनका उल्लेख किए बिना उन्होंने परिजनों द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में उक्त घटना का उल्लेख किया। उन्होंने साधकों को इस तरह की सिद्धियों से प्रभावित नहीं होते हुए अपने मार्ग पर बढ़ते रहने के लिए कहा। वे कहते कि चमत्कारी सिद्धियां तो मार्ग में चलते हुए मिल जाने वाले फूलों की तरह है। इन रंग बिरंगी उपलब्धियों में ही उलझ जाओगे तो अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकोगे। फूल चुनने के लिए रुको मत। आगे बढ़ते रहो। मार्ग में फूलों से भी ज्यादा सुंदर दृश्य बिखरे पड़े हैं। जो लोग सिद्धियों और चमत्कारों का प्रलोभन दे रहे हैं वे धर्म मार्ग का नहीं मायाजाल का प्रचार कर रहे हैं। यह जाल जंजाल ज्यादा दिन चलेगा नहीं।

कुण्डलिनी भस्म हुई

दिल्ली के पास एक महिला योगी उन दिनों सामूहिक शक्तिपात का दावा कर रही थी। वे सभा सत्संगों का आयोजन करती। उनमें बड़ी संख्या में लोग सम्मिलित होते और 'माता' के नाम से प्रसिद्ध वह योगिनी प्रवचन करती। प्रवचन के बाद साधकों को यौगिक व्यायाम के निर्देश देती। उस दौरान शिविर या सत्संग में बैठे साधक तरह-तरह की आवाजें करते। कुछ तो अपने स्थान से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
उठकर उछलने कूदने लगते। कुछ सर्प की तरह फन उठाने का अभिनय करते हुए लहराने लगते। इन हलचलों को कुण्डलिनी जागरण का चिह्न बताते हुए 'माता' साधकों को अभ्यास जारी रखने के लिए कहतीं। इन शिविरों में सम्मिलित हुए कुछ साधक शान्तिकुञ्ज के साधना शिविरों में भी आये। यहाँ ऐसा कोई चमत्कारी अनुभव नहीं हुआ तो निराश हुए।

१९७६ में दीपावली के आसपास एक सत्र में भी कुण्डलिनी साधना से चमत्कृत तीन-चार साधक आए। उन्होंने कहना शुरु किया कि यहां बताया जा रहा साधन अभ्यास तो सतही है। वास्तविक अनुभूति लेनी हो तो अमुक माता के पास चलना चाहिए। कुछ शिविरार्थियों से यह कहने के बाद वे अगले दिन प्रात:कालीन साधना और यज्ञ में सम्मिलित हुए। पता नहीं क्या हुआ कि एक साधक यज्ञ में आहुतियां देते हुए पसीना पसीना होने लगा। उसके चेहरे पर भय और चिंता की रेखाएं दिखाई देने लगीं। आहुतियां देने के बाद वह अपने स्थान से उठा तो कुण्डलिनी सिद्ध योगिनी के पास से आए अपने साथियों को तलाशता हुआ चला गया। वह पहले से अब कुछ ज्यादा चिंतित और परेशान दिखाई दे रहा था। कुछ ही देर में उसके साथी मिल गए। उनसे कहने लगा कि यज्ञ करते हुए विचित्र अनुभूति हुई है। ऐसा लगा कि जो कुण्डलिनी जागृत हुई थी वह निकलकर यज्ञ कुंड में उठ रही ज्वालाओं के संपर्क में आ गयी और जल कर भस्म हो गई है और अब अपने भीतर रीतापन आ गया। लग रहा है कि आंतरिक वैभव नष्ट हो गया है।

उस साधक की अनुभूति सुनकर साथी सहयोगी अवाक रह गए। उनमें से कुछ और ने भी अपने बारे में इसी तरह की बातें कहीं। किसी ने ध्यान के समय तो किसी ने अखण्ड दीपक के दर्शन के समय अपनी योग संपदा को लुप्त होते हुए अनुभव किया था। उन साधकों में एक गणपति राव मुले महाराष्ट्र से आए थे और महीनों से दिल्ली के उस आश्रम में रहे थे। गणपतिराव का अनुभव अपने साथी सहयोगियों से कहीं समृद्ध और विकसित था। उन्होंने कहा कि हम लोगों की आध्यात्मिक संपदा लुप्त नहीं हुई है बल्कि हम जिस माया मरीचिका में जी रहे थे, उसका भ्रम टूटा है।

गणपति राव ने इसके बाद संत ज्ञानेश्वर की लिखी 'गूढ़ार्थ दीपिका' के कुछ छंद सुनाए। उन छंदों में कुण्डलिनी जागरण के बाद आंतरिक जगत में उठने वाले तूफानों का उल्लेख था। उनमें बताया गया था कि जागृत कुण्डलिनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
किस तरह साधक के कषाय कल्मषों को चट कर जाती है, धो डालती है। यह प्रक्षालन इतना तीव्र और प्रखर होता है कि साधक को कई बार मृत्यु जैसा कष्ट होता है। यह प्रक्रिया अरसे तक चलती रहती है–कषाय कल्मषों के पूरी तरह धुल जाने तक यह क्रम जारी रहता है। दोपहर तक वे साधक अपने अनुभवों और भय चिंताओं के बारे में आपस में ही चर्चा करते रहे। इसके बाद उन्होंने प्रायश्चित पश्चाताप करते हुए साधकों द्वारा लिखे जाने वाले पत्रों की शृंखला में एक आत्मनिवेदन लिखा। अपने दोष दुर्भावों को स्वीकार करते हुए उन्होंने लिखा कि वे साधना शिविर में आए साधकों को बहलाने फुसलाने आए थे। उनका उद्देश्य था कि शिविर में आए कुछ लोगों को अपनी 'माता' के आश्रम में ले जाएं और उनकी श्रद्धा भावना को वहीं स्थिर कर दें। इसके लिए वे तरह तरह के अपवाद फैला रहे थे। उनके अपराधों को क्षमा कर दिया जाए। इस पत्र के बारे में गणपति राव मुले ने कोई पंद्रह बीस वर्ष बाद बताया था और यह भी कि उन 'माता' का कार्य व्यापार अब ठप हो गया है।

सिद्धियों और चमत्कारों के प्रति आकर्षण हमेशा ही रहा है। उनकी वास्तविकता जानने समझने और समझाने के साथ इनके नाम पर बरगलाने-फुसलाने वालों की कलई खोलने वाला जागरुक बुद्धिजीवी वर्ग भी सक्रिय रहा है। आठवें दशक के उन मध्यवर्ती वर्षों में पता नहीं क्यों यह वर्ग निष्क्रिय सा बैठा था। भस्म प्रकट करने, फूल की पंखुड़ी या पत्ते से आपरेशन करने, कुंडलिनी जगाने और यौन उत्तेजना को मोक्ष का मार्ग बताने से लेकर शक्तिपात, दिव्य दर्शन, संकल्प सिद्धि आदि दावा करने वालों की भी भरमार सी होने लगी थी। महाराष्ट्र के एक संत ने लोगों को पिछले जन्म की यात्रा कराने का आकर्षण दिया, इसके लिए जैन धर्म में महावीर की साधना विधि के प्रसिद्ध पक्ष "जाति स्मरण" का प्रयोग किया गया। वे महात्मा जैन परपंरा के ही अनुयायी थे। इस पद और विधि का उपयोग करते हुए उन संत के मन में साधकों के लिए मंगल का भाव ही रहा होगा। लेकिन जाति स्मरण के इस प्रयोग को उनके कुछ अनुयायियों ने ठगी का धंधा ही बना लिया। सम्मोहन या शामक दवाओं के प्रयोग द्वारा साधक को गहरी नींद में सुलाकर उन पर ऐसी बातें थोपी जाती कि प्रयोग से बाहर आने के बाद उनका वर्तमान जीवन अस्तव्यस्त हो जाता। जाति स्मरण के नाम पर लोगों की मनोचिकित्सा और आत्मिक उत्कर्ष के संगत असंगत प्रयोग किए जाने लगे। उन दिनों इस प्रयोग विधि के दुरुपयोग की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
बहुतेरी घटनाएं सामने आ रहीं थीं। कुछ घटनाएं तो अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं के पन्ने पर भी बिखरीं। इनमें मुंबई के एक संपन्न उद्योगपति परिवार की गृहिणी का मामला काफी चर्चित हुआ। साइकिल उद्योग से जुड़े इस परिवार की रंजना राजन का जीवन सुख शान्ति से बीत रहा था। पैंतीस वर्ष की यह गृहिणी दो होनहार बच्चों की मां थी, पति शिष्ट शालीन और अपने कारोबार में स्थापित थे। घर में सास और एक अविवाहित ननद थी। छोटा सा खुशहाल परिवार और एक दूसरे के प्रति समर्पित निष्ठावान राजन परिवार को मित्र परिचित और सगे संबंधी आदर्श कहते थे।

पिछले जन्म की याद

यों तो पूरा परिवार आस्तिक और आध्यात्मिक रुझान वाला था लेकिन रंजना की आस्था ज्यादा ही गहन थी। वह सत्संग, साधना शिविरों में जाया करती, उनमें बताए जाने वाले ध्यान, जप तप आदि का अभ्यास करती और प्राचीन तथा आधुनिक संतों के साहित्य भी पढ़ती थी। सत्संग संपर्क के प्रति इसी रुझान के चलते रंजना जाति स्मरण के उपदेष्टा एक धर्मगुरु योगी अद्वैत आनंद के पास गई। वह उपदेष्टा पूना में ओशो के प्रवचन सुनकर अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने के लिए इस विधि का उपयोग कर रहा था। रंजना उस गुरु की बातों से प्रभावित हुई। क्योंकि जाति स्मरण के पक्ष में दलील ही जबर्दस्त दी गई थी। अद्वैत आनंद का कहना था कि हम हर जन्म में एक ही गलती को बार बार दोहराते है। यदि पिछले जन्म का स्मरण रहे तो उन गलतियों से सावधान रह सकते हैं।

यह किसी ने नहीं पूछा कि पिछले जन्मों की याद रहने से गलतियों से बचा जा सकता था तो प्रकृति या परमात्मा ने ही उन स्मृतियों पर पर्दा क्यों डाल दिया? लाभ होता तो स्मृतियां बनी रहनी चाहिए थीं। फिर इसी जन्म में मोह, लोभ, क्रोध और मद आदि कारणों से हम उन्हीं गलतियों को दोहराते रहते हैं। योगी अद्वैत के प्रतिपादनों को लेकर किसी ने कोई प्रश्न नहीं किया। किसी के मन में यह प्रश्न उठा भी नहीं। रंजना के मन में भी नहीं।

इस विचार विवेक को दर किनार कर रंजना ने जाति स्मरण के प्रयोग शुरु किए। शुरु के अनुभव अच्छे लगे, उनमें मजा आया। अनुभव पिछले जन्म की स्मृतियों के फिर जाग उठने के थे। जाति स्मरण के शिक्षक द्वारा प्रक्षेपित कल्पनाओं को करना कठिन था लेकिन उनमें रोमांच था। अलौकिक घटनाओं से भरपूर फिल्म या उपन्यास की तरह कुछ दिन तक तो ये प्रयोग अच्छे लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किन्तु एक मुकाम पर जाकर रंजना हिल गई। स्मृतियों में अथवा प्रक्षेपित दृश्यों में उसने देखा कि आसपास कई पुरुष बैठे हैं, साजिंदे साज बाज सजाए हुए हैं, गीत संगीत चल रहा है और वह नृत्य कर रही है। नर्तकी के इस वेश में उसे अगला चरण याद आया। इस दृश्य में वह देह व्यापार में लगी हुई है। संरक्षक के नाम पर एक बड़ा जागीरदार है, उसकी उपपत्नी का दर्जा मिला हुआ है। उससे आगे वर्णन नहीं किया जाने जैसा नारकीय जीवन। उन बिंबों और भावों ने रंजना को बुरी तरह विचलित कर दिया। जाति स्मरण के कथित प्रयोग में वह शांत निष्पंद लेटी हुई थी। प्रयोग कर्ता इसे योगनिद्रा और पिछले जन्म के द्वार पर खड़े होने की अवस्था बताते थे। जो भी हो, वह चौंक कर उठ बैठी जैसे किसी ने झिंझोड़कर जगा दिया हो, अथवा कोई भयावह दृश्य देख लिया हो। बुरी तरह पसीना पसीना हुई रंजना की हालत बिगड़ी हुई थी। अनुभूति ने रंजना को इस बुरी तरह आहत कर दिया कि वह विक्षिप्त हो उठी।

परिवार के लोगों ने समझा कि योगी अद्वैत ने कोई तांत्रिक प्रयोग किया है। उन्होंने योगी को आड़े हाथों लिया, यह प्रयोग रोकने के लिए दबाव डाला। योगी ने कुछ उपचार भी किया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। रंजना पूर्व जन्म की स्मृतियों में जाने के नाम पर जिस मानसिक या आत्मिक ढलान पर फिसली वह रुक नहीं रही थी। पतिता जीवन की यातनाओं और स्मृतियों का जंजाल किसी प्रेत की तरह अपना पाश कसे ही जा रहा था। रंजना पागल हो गई, उसे मानसिक चिकित्सालय में भरती कराया गया और योगी अद्वैत को रंजना के परिवार वालों की दर्ज कराई रिपोर्ट के आधार पर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। करीब छह सप्ताह तक रंजना का इलाज हुआ। हालत कुछ सुधरी तो सही लेकिन पहले की तरह सहज और स्वस्थ नहीं हो सकी। करीब डेढ़ साल बाद परिवार के लोग रंजना को लेकर हरिद्वार आए। शान्तिकुञ्ज में एक साधना शिविर में सम्मिलित हुए। ब्रह्मसंध्या और गायत्री उपासना का अभ्यास किया। तब कहीं जाकर रंजना की स्थिति सुधरने लगी। उसके स्वजनों ने गुरुदेव के सामने अपनी और रंजना की आप बीती विस्तार से कही। गुरुदेव ने उन्हें भगवान की कृपा से सब ठीक हो जाने का आश्वासन दिया। साथ ही यह भी कहा कि अध्यात्म मार्ग पर अधीरता से काम नहीं लेना चाहिए। गुरु या शास्त्र द्वारा निर्दिष्ट साधना का धैर्यपूर्वक अभ्यास ही कल्याणकारी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुरु भगवान से सावधान

रंजना प्रसंग के उल्लेख का आशय यह है कि उन दिनों शिष्य बटोरने और अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए आतुर गुरु भगवानों की बाढ़ आई हुई थी। वृंदावन में एक महात्मा सख्यभाव की भक्ति का प्रचार कर रहे थे। उस प्रचार की ओट में विकृत व्यभिचार को बढ़ावा मिला। कुछ समय तो ठीक ठाक चला। फिर पीड़ित व्यथित लोगों ने उनके खिलाफ मुहिम छेड़ी। मुहिम ने धीरे-धीरे जोर पकड़ा और जुलाई १९८० में व्यभिचार, दुराचार के ऐसे मामले सामने आये कि उन महात्मा की गिरफ्तारी के बाद ही यत्किंचित निराकरण हो सका।

साधना उपासना की इन मनमानी विधियों तक ही बात सीमित नहीं थी। इससे आगे बढ़कर दूसरे संतों को लांछित करने और उनकी कमजोरियों को-चाहे वे आरोपित ही हों, उछालने की प्रकृति भी जोर पकड़ रही थी। नीति-अनीति को किनारे कर किसी व्यवसाय में आगे बढ़ने के लिए जो गला काट होड़ मचती है, उसी का प्रभाव धर्मक्षेत्र में भी दिखाई दे रहा था। इस प्रभाव की बानगी देखिए कि शिरडी में सांईबाबा की समाधि के बारे में अचानक चर्चाएं होने लगीं। उनकी सिद्धियों, चमत्कारी घटनाओं और उनसे लाभान्वित होने के अनुभवों के विवरण आने लगे। सांईबाबा की ख्याति तब फैलना ही शुरु हुई थी कि पुट्टापर्ती के सत्य सांई बाबा के कुछ भक्तों ने शिरडी के बाबा पर दावा जताना शुरु किया। उनका कहना था कि यह स्थान सत्य सांईबाबा की खोज है। समाधि के प्रथम दर्शन उन्होंने ही किए थे और सांईबाबा की आकृति, स्वभाव उनके जीवन वृत्त और समकालीन घटनाओं की जानकारी भी उन्होंने ही लोगों को दी थी। लोग, जो शिरडी की समाधि पर अपना अधिकार जता रहे हैं अथवा सत्य सांईबाबा के प्रभाव को नकार रहे हैं, वे गलत हैं। इधर शिरडी के अनुयायियों ने कहा कि सत्य सांईबाबा हमारे इष्ट आराध्य के यश और प्रभाव का लाभ उठाने की चेष्टा कर रहे हैं। दोनों पक्षों में तर्क वितर्क और दावों प्रतिदावों की जबर्दस्त होड़ मच गई। श्रद्धालुजन इस या उस खेमे में बंट गए अथवा तटस्थ रहकर चिंता जताने लगे।

सांईबाबा ही क्यों? तमिलनाडु में एक योगी ने कांची मठ के पास एक गांव अर्नाकुडम में अपने आपको महायोगी श्री अरविंद का अवतार घोषित कर दिया। स्थानीय लोग कुछ प्रतिकार करते, इससे पहले ही वे अर्नाकुडम छोड़ कर चले गए। अजय गोविन्द नाम के इन धर्वध्वजी ने वाराणसी में कुछ समय ठिकाना बनाया और एक फ्रेंच पर्यटक महिला को श्री मां का अवतार घोषित कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लापता हो गए। याद रहे इस घटना के करीब तीन वर्ष पहले ही १९७३ में अरविंद आश्रम की श्रीमां का निधन हुआ था। अजय गोविन्द के मित्रों ने और बाद में काशी के पंडितों ने भी यह स्मरण कराते हुए कहा था कि तीन साल पहले दिवंगत हुई आत्मा शरीर छोड़ने में पैंतीस वर्ष पहले ही नया शरीर कैसे धारण कर सकती है?

विस्मय विमुग्ध कर देने और धर्मक्षेत्र की दुर्दशा उजागर करने वाली एक और घटना है। श्रीमां के निधन के साल भर बाद नलगोडा (आन्ध्रप्रदेश) की एक किशोरी कमला रेड्डी को उसके अभिभावकों ने श्रीमां का अवतार घोषित कर दिया। कमला रेड्डी को लेकर उसकी मां अलेझा और पिता वीरा रेड्डी पाण्डिचेरी भी गए थे। कहते हैं कि इस परिवार का आश्रम या श्रीअरविंद के दर्शन से कभी कोई सम्बन्ध नहीं रहा। न जाने क्या सोच कर उन्होंने अपनी बेटी को श्रीमां का अवतार बताना शुरु किया। कमला रेड्डी का नाम बदल कर मीरा (श्रीअरविंद आश्रम की माताजी का नाम मीरा अलफांसो या मीरा रिचार्ड से मिलता जुलता) रख दिया और वे उसे लेकर जगह जगह घूमने लगे। १९७६ में ये लोग शान्तिकुञ्ज भी आए थे और गुरुदेव से मिलने का प्रयत्न भी किया था। किसी भी व्यक्ति से मिलने में कभी कोई संकोच नहीं करने वाले गुरुदेव ने कमला अथवा मीरा रेड्डी के प्रति अतिथि की मर्यादाओं का निर्वाह करते हुए विदा कर देने के लिए कह दिया था। शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने उन लोगों को गुरुदेव से भेंट नहीं हो पाने की विवशता जताते हुए हाथ जोड़ लिए। मदर मीरा के नाम से वह विदुषी इन दिनों जर्मनी में है और उनके अनुयायियों की वहां अच्छी खासी संख्या है।

चमत्कारों और सिद्धियों के बल पर अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ाने वाले इस दौर में विचार, विवेक और युक्ति संगत मान्यताओं का ही आग्रह रखने वालों की कमी भी नहीं थी। तर्क तथ्य और प्रमाण की कसौटी पर खरा उतरने के बाद ही वे उन मान्यताओं को स्वीकार करते थे। १९७६ की गुरुपूर्णिमा के दो दिन बाद संभवतः १४ जुलाई को शान्तिकुंज में महात्मा आनन्द स्वामी का संदेश आया। परिजनों को याद होगा कि आस्था और विश्वास की दृष्टि से आर्यसमाजी होते हुए भी आनंद स्वामी गायत्री की मां के रूप में आराधना करते थे। स्वामी दयानंद सरस्वती की वैदिक संध्या विधि के अनुसार नियमित उपासना करने के साथ वे गुरुदेव द्वारा शोधित और उपदिष्ट आदि शक्ति के सगुण साकार रूप को भी मानते थे। संन्यासी होते हुए भी गुरुदेव को अपना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
आध्यात्मिक मार्गदर्शक, गुरु मानने वाले आनंद स्वामी इस विधि निषेध को मान्यता नहीं देते थे कि उन्हें किसी गृहस्थ योगी का शिष्यत्व नहीं स्वीकार करना चाहिए। उनके समकालीन आर्यसमाजी संन्यासी नारायण स्वमी ने एक बार टोका भी था कि गृहस्थ योगी को अपना गुरु मानकर आप वैदिक अनुशासन का उल्लंघन कर रहे हैं। क्या यह क्षम्य है ? आपको इसका प्रायश्चित करना पड़ेगा ?

दंड भोग लूंगा

आनंद स्वामी ने कहा आप इसे अनुशासन तोड़ना कहते हैं। मेरी विनम्र मान्यता है कि युगऋषि पंडित श्रीराम जी को अपना गुरु मानने से कोई पाप होता है तो मैं उसका दंड भुगतने के लिए तैयार हूं। आप मुझे गायत्री को माता और श्रीराम जी को अपना गुरु कह लेने दीजिए। महात्मा आनन्द स्वामी की श्रद्धा संवेदना के कई प्रसंग हैं। यथा संन्यासी होते हुए भी गुरुदेव को प्रणाम करने में गर्व अनुभव करते थे, मंच से लेकर सार्वजनिक स्थलों पर और भेंट मुलाकात के समय भी गुरुदेव को ऊंचे आसन पर बैठे देखना चाहते थे। आश्चर्य की बात तो यह कि गुरुदेव भी उन्हें इसी प्रकार का आदर सम्मान देते थे। प्रसंग चल रहा था १९७६ में गुरुपूर्णिमा के आसपास का। महात्मा आनंद स्वामी हरिद्वार आए थे और सप्त सरोवर क्षेत्र में ही एक आश्रम में रुके हुए थे। उन्होंने संदेश भिजवाया कि शान्तिकुंज आना चाहते हैं, गुरुदेव का दर्शन करने। साथ ही यह अनुनय भी कि पता नहीं इसके बाद अपना शरीर रहे न रहे और इन्हीं आंखों से दर्शन हो पाए न हो पाए।

गुरुदेव ने संदेश वाहक को यथोचित उत्तर दिया। महात्मा आनंद स्वामी ने अगले दिन आने की इच्छा व्यक्त की थी लेकिन गुरुदेव उसी दिन संध्या होने से पहले आनंद स्वामी के आश्रम की ओर रवाना हो गए। उनके साथ शान्तिकुंज के दो वरिष्ठ कार्यकर्त्ता भी गए थे। गुरुदेव जब स्वामी जी के पास पहुंचे तब वे आश्रम के कुछ वानप्रस्थियों और कर्मचारियों से घिरे बैठे थे। कोई सामाजिक, आध्यात्मिक चर्चा चल रही थी। स्वामी जी बेंत से बनी कुर्सी पर बैठे थे। उनका शरीर भारी था। गुरुदेव को आश्रम में आते देखा तो भाव विह्वल हो कर उठने की चेष्टा करने लगे। उठने में देर लगी तब तक गुरुदेव उनके पास पहुंच गए और हाथ जोड़ कर नमस्कार कर चुके थे।

स्वामी जी इस बीच ब्रह्मचारियों को देखने लगे जैसे उठाने में सहायता करने के लिए कह रहे हों। ब्रह्मचारियों की मदद से वे उठे और भाव भरे कंठ से गुरुदेव का अभिवादन करते हुए बोले, 'आप महान हैं, वंदनीय हैं। मैं तो आपके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
पास आने की सोच ही रहा था। संदेश इसलिए भिजवाया कि आप मेरे लिए थोड़ा समय निकालें पर आप तो खुद दौड़े चले आए प्रभु।' कहते कहते आनंद स्वामी का गला रुंधने सा लगा। इस पर गुरुदेव ने कहा 'विराग की परम स्थिति में पहुंचे स्वामी जी आप दुनियादारों की तरह क्यों बोलते हैं। यहां हम दोनों में अंतर ही क्या है? कौन किसके पास आता जाता है।'

इस बीच किसी आश्रम वासी ने गुरुदेव के लिए भी वहीं एक कुर्सी लगा दी थी। आत्मीय औपचारिकता के बाद आनंद स्वामी ने कहा कि शरीर अब ज्यादा साथ देता नहीं लग रहा। वेद भगवान के बताए चारों आश्रम धर्म निभा लिए। जिन प्रणीत भावों के धरती पर उतरने की आशा संजोए जीवन आरंभ किया था, वे साकार होते नहीं लगते। हालात और बिगड़ते जा रहे हैं। गुरुदेव उनकी व्यथा सुनते रहे। स्वामीजी ने जमाने की धारा और समाज में आ रहे पतन पराभव के बारे में अपने मनोभाव प्रकट किए। जिस आधार पर आशा संजोई जा सकती है वह धर्मक्षेत्र ही विकृतियों और प्रवंचनाओं से आच्छादित होता जा रहा है। स्वामी जी ने यह कहते हुए अपनी व्यथा को विराम दिया। फिर कुछ रुक कर वही बोले, 'मां गायत्री सब ठीक करेगी। जिस परांबा ने मुझ जैसे वरदराज को विज्ञजनों में बैठने लायक बना दिया, वही भगवती अपने एक भृकुटि विलास से इस जगत को भी सही मार्ग पर आरूढ़ कर देगी। उसकी एक निःश्वास धर्म क्षेत्र में छाए कालिख को पोंछ कर रख देगी।'

गुरुदेव लगभग आधा घंटा स्वामी जी के पास रहे। दोनों में जो संवाद हुआ उसका सार लिखना तो मुश्किल है। चर्चा पूरी होते होते गुरुदेव ने कहा, 'मैं आपके पास शान्तिकुञ्ज आने का अनुरोध करने आया हूँ। आप वहां पधारें। पिछली बार आप जब आए थे, तब से अब तक शुरु किए गए प्रयासों को देखें और उन्हें अपना आशीर्वाद दें।'

कहकर गुरुदेव अपने स्थान से उठे। उन्हें उठता देख आनंद स्वामी ने कहा कि मन तो नहीं करता आपको जाने देने के लिए, लेकिन उसे दबाना पड़ता है। क्या किया जाए? परमात्मा ने आपको यह घनीभूत अंधकार भगाने के लिए नियुक्त किया, निमित्त बनाया है। हम लोग भी आपके अभियान के निमित्त हैं। कहते हुए आनंद स्वामी ने अपने आसन से उठ कर हाथ जोड़े, अभिवादन किया, सिर झुकाया और गुनगुनाने से लगे, 'एक तुम्ही आधार सदगुरु।'

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सत्रह

गायत्री योग का प्रवर्तन

१९७५ में शान्तिकुञ्ज में तब रामायण सत्र चल रहे थे। रामचरित मानस के आधार पर जनमानस को प्रगतिशील प्रेरणा देने की कला में प्रवीण रामायणी तो तीन सौ से ज्यादा तैयार हो गए थे। गुरुदेव ने एक दिन कहा कि दक्षिण भारत और भारत से बाहर विदेशों में भी लोग वाल्मीकि रामायण से ज्यादा परिचित हैं। रामकथा के प्रतिनिधि ग्रंथ के रूप में इसी ग्रंथ की मान्यता है। सो रामायण पर प्रवचन करने वाले वानप्रस्थी भी तैयार करने चाहिए। आश्रम के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से सुबह ही उन्होंने कहा और इस विचार को क्रियान्वित भी कर दिया। गुरुदेव ने एक साधक का नाम लिया और कहा कि उसे रामायण के अध्ययन और मंथन में लगा दिया जाए। अध्ययन तो उसका है ही, उसे रामकथा के संदर्भों और प्रसंगों के संचयन के लिए कह दें। वह गोष्ठी पूरी हुई तो गुरुदेव ने कहा, उसे अभी मेरे पास भेज दें।

कुछ ही मिनट बाद वह कार्यकर्ता गुरुदेव के सामने था। वह संस्कृत साहित्य के प्रति रुझान रखता था। अंग्रेजी भाषा और साहित्य में भी उसकी अच्छी गति थी और कुछ ही महीने पहले शांतिकुज आया था। गुरुदेव ने उसे उसका काम समझाया और आज से ही इस काम में जुट जाने के लिए कहा। साधक ने गुरुदेव का आदेश सुना और तुरंत दौड़ते हुए से नीचे प्रस्थान किया। तब शान्तिकुञ्ज की निचली मंजिल पर कुछ आलमारियों में रामायण, महाभारत, पुराण आदि ग्रंथ रखे हुए थे। अधिकांश ग्रंथ गुरुदेव के मथुरा से यहां आते हुए ही साथ ले आए थे। उन कार्यकर्ता ने अलमारी खोली और रखी हुई पुस्तकों में 'वाल्मीकि रामायण' की पोथी निकाली। व्यवस्था विभाग को इस बारे में बताया और अपने कमरे में ले जाकर पूजा स्थान पर रख दिया।

सुबह गायत्री जप और ध्यान आदि का नित्य क्रम पूरा कर लिया था। वाल्मीकि रामायण को पूजा स्थान पर रखा तो रखने से पहले उसे साफ किया, पोंछा, ग्रंथ के पन्ने उलटे पलटे और उसमें रखे धागे को पहले अध्याय के आरंभ में रखा। फिर ग्रंथ की पूजा की, दीपक जलाया और पूजा चौकी पर स्थापित कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
ग्रंथ देवता का आह्वान किया। कहीं पढ़ा था कि शास्त्र का श्रद्धाभाव से अध्ययन किया जाए तो उसके देवता ग्रंथ का रहस्य अपने आप खोल देते हैं। अनादर या आनन–फानन में पढ़ने लगने पर ग्रंथ अपने आपको सिकोड़ लेते हैं, अध्येता को अपने मर्म तक नहीं पहुँचने देते। उन साधक ने इस शिक्षा का स्मरण करते हुए ही पूजा चौकी पर ग्रंथ की प्रतिष्ठापना कर ली थी। इसके बाद उन्होंने ग्रंथकर्ता वाल्मीकि को प्रणाम किया और गुरुदेव का स्मरण करते हुए रामायण का पहला अध्याय पढ़ लिया। 'संक्षिप्त रामायण' अथवा 'मूल रामायण' के नाम से प्रसिद्ध इस अध्याय का स्वतंत्र अध्ययन भी किया जाता है। इस अध्याय में संपूर्ण रामचरित का संक्षिप्त वर्णन किया गया है।

पहला अध्याय पढ़ कर साधक ने ग्रंथ बंद कर दिया और दैनंदिन कार्यों में लग गए। दोपहर एक बजे के लगभग गुरुदेव प्रवचन के लिए नीचे उतर रहे थे। वे कार्यकर्ता सामने ही दिखाई दे गए। उन्होंने गुरुदेव को प्रणाम किया तो उन्होंने पूछा, काम शुरु कर दिया बेटा। साधक ने कहा, 'मूल रामायण के आधार पर एक रूपरेखा तैयार की है गुरुदेव। आपको बताना है।'

चलते–चलते गुरुदेव ने कहा, 'तीन बजे के करीब आ जाना। उस वक्त बात कर लेंगे।' यह कह कर गुरुदेव आगे बढ़ गए। साधक ने तय समय पर गुरुदेव के पास अपने सुबह के काम की रिपोर्ट दी। गुरुदेव ने सुन कर कुछ सूत्र बताए और कहा इस तरह तुम्हें रामायण समझने में महीना भर भी नहीं लगेगा। उस साधक ने अगले दिन से ही उन सूत्रों पर अमल शुरु कर दिया। देखा कि पहले ही खूब मन लगा। अध्ययन शुरु करते ही जैसे ग्रंथ स्वयं बात करने लगा। आनंद आया। अगला दिन, फिर दूसरे दिन और तीसरे चौथे दिन भी इसी तरह अध्ययन किया। लगता था जैसे आनंद की वर्षा हो रही है। ग्रंथ खोलते ही महर्षि वाल्मीकि रामायण पर प्रवचन करने लगते हैं।

इसी बीच एक दिन की बात है। स्वाध्याय साधना की व्यवस्था में जुटे प्रातःकालीन उपासना में तल्लीन थे। ब्रह्म संध्या के षट्कर्म संपन्न कर लेने के बाद सविता देवता के ध्यान के साथ गायत्री मंत्र का जप चल रहा था। ध्यान में सविता के तेजोमय प्रकाश के साथ गुरुदेव की छवि का स्मरण भी आ जाता। ध्यान की गहन भाव भूमिका में उन कार्यकर्ता ने देखा कि एक गौर वर्ण ऋषि अपने साथ दो किशोर बालकों को लेकर गंगा के तट पर विचरण कर रहे हैं। उन बालकों में एक श्यामवर्ण थे और दूसरे का रंग साफ गौर था। दोनों की उम्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चौदह पंद्रह वर्ष रही होगी। उन्होंने हाथ में धनुष बाण लिए हुए थे। यात्रा के समय धनुर्धारी अपना धनुष प्राय: बांए कंधे पर रखते हैं और दायें कंधे पर तूणीर होता है। युद्ध का अवसर आने पर बांए कंधे से उतर कर धनुष हाथों में आ जाता है और शर संधान करते समय दाहिने कंधे के पीछे संचित तीर निकाल कर धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ाते हुए शर संधान किया जाता है। उन किशोरों ने बांए हाथ में धनुष पकड़ रखा था और दाहिने हाथ में एक-एक तीर था। ध्यान जप में बैठे साधक ने अनुमान लगाया कि दोनों कुमार अपने गुरु के साथ आततायी शक्तियों का नाश करते घूम रहे हैं। साधक को आभास हो रहा था कि वे गंगा के तट पर स्थित एक पीपल के वृक्ष के नीचे बैठे संध्या-गायत्री का सेवन कर रहे थे।

ऋषि और उनके साथ चल रहे दोनों कुमार भी गंगा के तट पर रुके। ऋषि ने पास ही खड़े एक वृक्ष की ओर इशारा किया और कुमारों ने अपने धनुष बाण उस वृक्ष की शाखाओं पर रख दिए। वहां से आकर वे गंगा की धारा में उतरे। हाथ पैर मुंह आदि धोने के बाद उन्होंने सविता देवता को अर्घ्य चढ़ाया और बाहर आकर अपने गुरु को प्रणाम किया। तीनों ने आपस में कुछ बातें कीं, दरअसल उसे वार्तालाप कहना ठीक नहीं होगा। बोल तो ऋषि देव ही रहे थे, दोनों कुमार उनकी बातें सुन रहे थे और बीच बीच में कुछ पूछ लेते थे। उधर वृक्ष के नीचे बैठे साधक का ध्यान उन तीनों की ओर लगा हुआ था। वह बड़े ध्यान से देख रहे थे।

विष्णु की तपस्थली

ऋषि भगवान ने साधक की मन:स्थिति शायद समझ ली थी। और वे दोनों कुमारों के साथ उस वृक्ष की ओर ही बढ़ते हुए आने लगे। उन्हें अपनी ओर आता देख साधक अपने स्थान से उठ गए और दोनों हाथ जोड़ कर प्रणाम की मुद्रा में उनका स्वागत करते हुए आगे बढ़े। पास पहुंच कर उन्होंने ऋषि के चरण स्पर्श किए और उन दोनों किशोरों को भी प्रणाम किया। उन कार्यकर्ता को आभास था कि यह अनुभव प्रत्यक्ष जगत में हो रहा है, स्वप्न या भाव जगत में नहीं। लेकिन गंगा का जो तट दिखाई दे रहा था वह शान्तिकुंज या वाराणसी अथवा दक्षिणेश्वर आदि जैसा नहीं था, जहां गंगा का पाट चौड़ा है और न ही ऋषिकेश उत्तरकाशी या गंगोत्री जैसा था। गंगा के देखे हुए कोई भी किनारे अथवा प्रवाह उन साधक को स्मरण नहीं आ रहे थे, लेकिन दृश्य मनोहारी था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
फिर उन्होंने देखा ऋषि अपने साथ आए कुमारों से कुछ कहने लगे। जो कह रहे थे मद्धिम स्वरों में था, तीनों साधक से काफी दूर थे फिर भी उन्हें तीनों का वार्तालाप सुनाई दे रहा था। ऋषि उन कुमारों से कह रहे थे, इस स्थान पर युगों पूर्व भगवान विष्णु ने तप किया था। वामन अवतार लेने से पहले यहां उन्हीं का आश्रम था। यह स्थान सिद्धाश्रम नाम से प्रसिद्ध था। राजा बलि ने इन्द्र और मरुद्गणों को पराजित करने के बाद यहां एक विशाल यज्ञ किया था। उस यज्ञ में भगवान विष्णु ने वामन का अवतार लेकर तीनों लोकों को राजा बलि के आधिपत्य से बचाया था। उन्होंने अपनी शक्ति से बलि का निग्रह कर तीनों लोकों को पुन: इन्द्र के अधीन कर दिया था।

साधक को इस वृत्तांत से कुछ बोध हो रहा था। उन्हें वाल्मीकि रामायण का एक प्रसंग याद आ रहा था, जिसमें विश्वामित्र राजा दशरथ से राम और लक्ष्मण को मांग कर ले जाते है और उन्हें अपने यज्ञ की रक्षा का भार सौंपते हैं। ध्यान की अवस्था में साधक ने देखा और सुना कि ऋषि भगवान जो संभवत: महर्षि विश्वामित्र ही थे। वे दोनों किशोरों से, जिनके बारे में साधक ने समझा था कि राम और लक्ष्मण होंगे, कह रहे थे, वामन रूप में आपने यहां दीर्घकाल तक निवास किया था इसलिए यह आश्रम सब प्रकार के दु:खों और शोक संतापों से रहित है। इस आश्रम पर भगवान वामन के निवास का प्रभाव कुछ कम होने लगा है। इस कारण मेरे यज्ञ में विघ्न डालने के लिए यहां राक्षस गण आने लगे हैं। यहां तुम्हें उन दुराचारियों का अंत करना है। कहते हुए विश्वामित्र उन दोनों कुमारों को अपने साथ आश्रम में ले जाने के लिए उद्यत हुए। उन ऋषि को आया देख सिद्धाश्रम में रहने वाले तपस्वी पता नहीं कहां से और किस दिशा से दौड़े चले आए। उन सबने ऋषि की यथाविध पूजा वंदना की और दोनों राजकुमारों का भी सत्कार किया।

अनुभूति के इस चरण में प्रवेश करने के बाद साधक की भाव समाधि टूटी और प्रफुल्लित से वह उठे। इस अनुभव से उन कार्यकर्त्ता में उल्लास और उमंग का कुछ ऐसा भाव उमड़ा कि उसी दिन प्रात: दर्शन के समय ही उन्होंने माताजी से अपने अनुभव के बारे में बताया। माताजी ने कहा 'यह गुरुदेव की कृपा है बेटा। इसका रहस्य वही बताएंगे। मैं तुम्हें इतना ही कहूंगी कि तुम्हारी साधना प्रखर हो रही है।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

माताजी के इस प्रोत्साहन ने साधक को संतुष्ट कर दिया था। लगा कि उन्हें बता दिया है तो गुरुदेव को भी पता चल ही गया है। अब उन्हें अलग से बताने की क्या आवश्यकता है? यही सोचते हुए वे कार्यकर्ता प्रातःकाल के नियत क्रम के अनुसार सुबह गुरुदेव के पास पहुंचे। प्रणाम के बाद कल के कामकाज और आज के कार्यक्रम की जानकारी देना चाहा ही था कि गुरुदेव ने कहा, 'जल्दी ही तुम्हें सिद्धाश्रम जाना पड़ सकता है। अब वहां की स्थितियां बदल गई हैं। वह सिद्धों और योगी, यतियों की प्रयोग शाला की तरह हो गया है। इस बीच कई योगी यति वहां पहुँचे है और युग के अनुरूप साधना उपासना के प्रयोगों में लगे हुए हैं।'

सिद्धाश्रम की यात्रा

कार्यकर्ता ने समझा कि माताजी ने उनके अनुभव के बारे में बता दिया होगा। गुरुदेव ने आगे कहा, 'ध्यानावस्था में तुमने जो दृश्य देखा वह सिद्धाश्रम के एक अंश की झलक है। उसका विस्तार और गठन तो वहीं जाकर देख सकोगे'।

साधक ने कहा, 'वहां जाने के लिए जैसी पात्रता चाहिए वह मुझमें कहां है गुरुदेव?' यह बात अत्यंत ही विनय और प्रणत भाव से कही गई थी। अपनी असमर्थता जताते हुए यह विश्वास भी कायम था कि गुरुदेव उस स्थान पर जाने की बात कह रहे हैं तो उसके लिए आवश्यक सामर्थ्य भी वही प्रदान करेंगे। कार्यकर्ता इस विषय में उठ रहे संकल्प विकल्प में उलझता, उससे पहले ही गुरुदेव ने जैसे उसे रोक दिया। उन्होंने कहा, 'जिस सिद्धाश्रम की झलक तुमने देखी है, वहां इस स्थूल शरीर से नहीं जाया जा सकता। पंचतत्वों से बनी इस काया को सिद्धाश्रम से पहले ही छोड़ देना पड़ता है। साधना उपासना और योग द्वारा इतनी ऊर्जा संग्रहीत करनी होती है कि अपने अस्तित्व का पांचवा आयाम आत्म शरीर भलीभांति विकसित हो जाए और वहां की यात्रा संपन्न हो सके।'

गुरुदेव कह रहे थे कि कुछ विभूतियां उस स्थान की सशरीर यात्रा करने में भी समर्थ होती हैं, पर वे विरल होती हैं। मोक्ष या निर्वाण को प्राप्त ये आत्माएं भवबाधाओं से मुक्त होती हैं इसलिए कहीं भी आ जा सकती हैं। लेकिन उस अवस्था को प्राप्त करने से पहले साधना और गुरुकृपा का आश्रय मिलने पर उन्हें भी आत्मशरीर या वायवीय शरीर का ही सहारा लेना पड़ता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहकर गुरुदेव मौन हुए। उन्होंने साधक की ओर देखा। उन्हें अपनी ओर देखता पाकर साधक के शरीर में जैसे विद्युत की तरंगें दौड़ने लगी। यों उन कार्यकर्ता ने गुरुदेव को अपनी ओर देखते हुए पहले भी कई बार अनुभव किया था। बहुधा वह दृष्टिपात सामान्य ही हुआ करता था। चलते फिरते, कामकाज करते हुए जैसे कोई वरिष्ठ जन अपने सहयोगियों को निहारते हैं, उसी तरह का भाव उनके देखने में महसूस होता था। कभी कदा सुबह प्रणाम के समय अथवा पर्व प्रसंगों में या ध्यान कक्षाओं में अथवा जन्म दिन आदि के अवसर पर गुरुदेव की दृष्टि से ऊर्जा का प्रवाह आता अनुभव होता था और साधक को वह प्रवाह अपने भीतर समाविष्ट होने जैसी अनुभूति होती थी। लेकिन इस बार गुरुदेव की दृष्टि में अलग ही तरह का तेज था। उस तेज से लगा कि शीत में कांपते हुए शरीर को जैसे अचानक अग्नि का सान्निध्य मिल गया हो और ठिठुरन दूर होने लगी हो। अगले ही पल कुछ ऐसा लगा कि अंधेरी रात छंट गई है और पूर्व दिशा में भगवान सविता देव अपने प्रखर तेज से उदित हो रहे हैं। उनकी किरणें धरती पर पहुंच रही हैं उन किरणों में अपना अस्तित्व ओस की बूंदों की तरह लुप्त होता जा रहा है।

कुछ क्षण पहले जहां खड़े होकर गुरुदेव से अपनी बात कही जा रही थी, वहां सिर्फ काय कलेवर विद्यमान है। मिट्टी के पुतले की तरह अविचल और मौन। अनुभव हो रहा था कि अपनी ही प्रतिमा वहां खड़ी है। संग्रहालय में सजी, प्रदर्शन के लिए रखी गई मूर्तियों की तरह साफ सुथरी और मृण्मय आकृति। फिर गुरुदेव की ओर देखा। उनका आसन खाली था। उनकी आवाज भर सुनाई दी, 'चलो। मेरे साथ चलो। जहां हम चल रहे हैं, वहां सिर्फ देखते रहना। जरूरी लगे तो पूछ भी लेना लेकिन कोई तर्क वितर्क मत करना।'

इस उद्बोधन को सुनकर साधक ने उस दिशा में देखा तो पाया कि आकाश में एक स्वर्णिम पथ निर्मित हो चला है। जिस तेजी से वह बनता दिखाई दिया था उसे प्रकट होना ही कहेंगे। स्वयं का अस्तित्व एक बालक की तरह लगा जो अपने अभिभावक का हाथ पकड़ कर किसी यात्रा पर रवाना हो रहा हो। कहां जाना है, यह जानना भी उस बालक ने जरूरी नहीं समझा। अपने अभिभावक संरक्षक और मार्गदर्शक के निर्देश पर अवलंबित होकर उन्हीं के साथ साथ चलना जैसे अपनी नियति हो।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यात्रा कितनी देर चली, कुछ नहीं पता। मार्ग में आसपास कोई वृक्ष वनस्पति, जीव जंतु, आबादी या नदी नद और पहाड़ हैं, इसका भी कोई आभास नहीं हुआ। साधक अपनी मार्गदर्शक सत्ता के साथ उस स्वर्णिम प्रकाश पथ पर बढ़ता चला जा रहा था। बीच बीच में एकाध पल के लिए ध्यान बट जाता तो दूर दूर तक आकाश के सिवा कुछ नहीं दिखाई देता। फिर मार्ग पर दृष्टि जाती तो गुरुदेव के आगे बढ़ते हुए पैरों और उनके पीछे अपने चलते जाने वाले पगों के अलावा कुछ नहीं दिखाई देता। नीचे भी निस्तब्ध बिखरी हुई आभा के समान कुछ जान नहीं पड़ रहा था। लगता था जैसे दिग दिगंत में शून्य ही व्याप्त है। न कहीं धरती दिखाई देती थी और न ही ग्रह नक्षत्र। बीच बीच में कई बार मन में प्रश्न उठा कि अपना गंतव्य क्या है ? किस दिशा में और कहां जाया जा रहा है। कहीं शरीर छूट तो नहीं गया और मार्गदर्शक सत्ता उस अशरीरी चेतना का मार्गदर्शन करती हुई आगे बढ़ती जा रही है।

मन में उठ रहे इस तरह के विचारों को विवेक श्रद्धा और आस्था ने एक पल में झटक कर अलग कर दिया। दृष्टि ने अपने आपको निहारा और गुरुदेव को भी। कहीं भी ऐसा नहीं लगा कि शारीरिक सत्ता का लोप हो गया हो। चलने, देखने, स्पर्श करने के साथ एक अपरिचित संगीत भी सुनाई दे रहा था। फिर धीरे धीरे गंध आने लगी। संगीत धीरे धीरे स्पष्ट होता गया। इतना स्पष्ट कि प्रतीत हुआ वेदमंत्र गूंज रहे हैं। गंध भी स्पष्ट होने लगी जैसे कहीं कोई महायज्ञ हो रहा है और उसमें दिव्य औषधियों की आहुतियां दी जा रही हैं।

स्वर और गंध के इस आभास से प्रेरित होकर साधक ने फिर अपने भीतर टटोलने की कोशिश की कि गंतव्य कहाँ है ? मन हुआ कि गुरुदेव से पूछ ही लिया जाए। यह विचार आया ही था कि गुरुदेव ने तत्क्षण कहा। साधक के प्रश्न करने की नौबत ही नहीं आई। सिद्धाश्रम चल रहे हैं। पूरे क्षेत्र की यात्रा तो नहीं हो सकेगी, वहां विद्यमान ऋषिसत्ताओं से साक्षात्कार के बाद ही वापस लौट चलेंगे। गुरुदेव से मिले इस आश्वासन के बाद मन पूरी तरह निश्चिंत हो गया था। वैसे पहले भी कोई संदेह नहीं था। अविज्ञात और अपरिचय के प्रति सहज उत्सुकता को डर या चिंता का नाम दे लें तो अलग बात है। इस यात्रा में कितना समय लगा कुछ बोध नहीं हुआ, कितनी दूर आ गए यह भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता। शरीर वायु से भी ज्यादा निर्भार प्रतीत हो रहा था। कभी कभी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
तो लगता कि अपनी सत्ता सिर्फ प्रकाश की भांति ही है। जो दिशा और समय को क्षण भर में तय कर कहीं से कहीं पहुँच जाती है।

निर्बाध अस्तित्व

साधक की भावधारा में विराम लगा। गुरुदेव के साथ एक आश्रम में प्रवेश हो रहा था। चल कर आए थे या आकाश मार्ग से उतरे थे कुछ कहना कठिन है। साधक ने सिर्फ इतना ही सुना कि ध्यानावस्था में इन्हीं दिव्य पुरुष के दर्शन किंए थे। गुरुदेव कह रहे थे। उन दिव्य पुरुष की ओर दृष्टि गई तो पाया कि सुबह पांच-साढ़े पांच बजे इन्हें ही गंगा के तट पर देखा था। साथ में दो कुमार भी थे। आश्रम में वे कहीं दिखाई नहीं दिए। साधक ने उन दिव्य पुरुषों के चरणों में साष्टांग प्रणाम किया। परिचय जानने की जरूरत नहीं थी। समझ लिया था यह दिव्य आत्मा कोई और नहीं स्वयं विश्वामित्र हैं। आदि उपास्य गायत्री मंत्र के दृष्टा महर्षि विश्वामित्र। उन्हें देखते ही मन में कई जिज्ञासाएं उठने लगीं। गायत्री मंत्र तो आदिशक्ति का मंत्र है। चारों वेद, एक सौ आठ उपनिषद, छहों दर्शन, रामायण, महाभारत, पुराण आदि ग्रंथ इसी मंत्र का व्याख्या विस्तार है। फिर महर्षि विश्वामित्र इस मंत्र के दृष्टा ऋषि कैसे हो सकते हैं? वे तो भगवान राम के समय त्रेता युग में थे। जिज्ञासा का वेग जोर पकड़े और साधक उस वेग को अनुभव करते हुए थामने की चेष्टा करे इससे पहले ही महर्षि ने कहा, 'क्यों नहीं हो सकते। रामायण के समय में त्रेतायुग में होने के हजारों वर्ष बाद अब इस समय में भी हुआ जा सकता है तो इस युग के हजारों लाखों वर्ष पहले क्यों नहीं हुआ जा सकता?'

ऋषि ने समाधान के साथ साधक से प्रश्न भी कर लिया था। उस प्रश्न ने साधक के मन में उठी ही नहीं, उठ सकने वाली जिज्ञासाओं का भी निराकरण कर दिया। फिर ऋषि ने आश्रम के भीतर निहारा। उनके दृष्टि निक्षेप से ही चारों दिशाओं में सामगान गूंजने लगा। सैकड़ों ब्रह्मचारियों और उपाध्यायों, आचार्यों ने एक स्वर में वेदपाठ आरंभ कर दिया। साधक ने उन स्वरों के स्रोत को देखने कि लिए आसपास देखा तो पाया कि दूर दूर तक ऋत्विजगण बैठे हैं। निर्धूम जलती ज्वालाओं में आहुतियां देते हुए उन होताओं के मुख मंडल पर तेज चमक रहा था। यज्ञकुंड में समर्पित की जा रही दिव्य औषधियों की गंध से वातावरण सुरभित हो रहा था। साधक का मन पुलकित हो उठा। कुछ क्षण पहले जैसे नीरव, विजन और वीरान वातावरण में पहुंचने की प्रतीति हुई थी वह बदलने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लगी थी। सर्वथा अपरिचित, अज्ञात और कामनाओं से परे स्थान पर अनायास पहुंच जाने जैसी स्तब्धता अनुभव होती है, वैसा ही शून्य इस तपोभूमि में आने पर लगा था। अब साधक की मन:स्थिति धीरे धीरे सहज होने लगी थी और व्यवस्था में लगी तप:पूत विभूतियों को देख कर रोमांच हो रहा था। विस्मय विमुग्ध हो कर मन में भाव आ रहे थे कि इस दिव्य लोक में आने के लिए पता नहीं कितने जन्मों तक प्रतीक्षा करना पड़ती होगी।

गुरुदेव ने साधक को अपने साथ चलने का संकेत किया। अभिवादन के लिए प्रस्तुत हुए महर्षि ने आगे कदम बढ़ाया। उनके साथ गुरुदेव भी और पीछे पीछे साधक। मार्ग में चलते हुए अन्य ऋषि आत्माओं के दर्शन भी हुए। उन्होंने गुरुदेव को इसी संबोधन से पुकारा और प्रणाम किया। गुरुदेव ने अपने स्वभाव के अनुसार हाथ जोड़कर उनके अभिवादन का उत्तर दिया। महर्षि विश्वामित्र के साथ चलते हुए गुरुदेव और साधक एक पर्णकुटीर में पहुँचे। कुटीर समुचित क्षेत्र में फैला हुआ था, न ज्यादा बड़ा और न ही छोटा। आठ दस व्यक्ति बैठकर विचार विमर्श कर सकें उतना स्थान कुटीर में था। कुटीर में प्रवेश के बाद साधक ने देखा कि वहां तीन आसन बिछे हुए हैं। लगा कि आगंतुकों के लिए पहले से व्यवस्था थी। सिद्ध क्षेत्र में पहले से विद्यमान महर्षि ने गुरुदेव से अपना आसन ग्रहण करने के लिए कहा और साधक के लिए भी संकेत किया। दोनों के अपने आसन पर बैठ जाने के बाद वे भी सामने बैठ गए। सिद्धाश्रम की गतिविधियों की संक्षिप्त चर्चा के बाद उनके और गुरुदेव के बीच परामर्श का क्रम आरंभ हुआ।

महर्षि विश्वामित्र ने गुरुदेव से उनकी लौकिक गतिविधियों और उपलब्धियों की संक्षिप्त चर्चा करते हुए कहा कि गायत्री उपासना का व्यापक प्रचार हो गया है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। लाखों लोग पच्चीस वर्ष पहले प्रतिपादित, प्रवर्तित उपासना विधि का अभ्यास कर रहे हैं। वह विधि लोकप्रिय तो हुई है पर सार्वजनीन नहीं बन पाई है। उसे सार्वजनीन बनाने के लिए विशेष प्रयास करना है। दूसरे सनातन धर्म के अनुयायी संध्या वंदन और गायत्री उपासना की अनिवार्यता भूल से गए हैं। किसी समय तीन दिन तक संध्यावंदन नहीं करने पर वैदिक धर्म या सनातन धर्म के अनुयायी व्रात्य संज्ञक हो जाते हैं। उन्हें अपने व्रत नियमों और नित्य नैमित्तिक कार्यों से पतित हुआ मान लिया जाता था। सहज स्वभाविक स्थिति प्राप्त करने के लिए प्रायश्चित करना होता था

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
और छूटी हुई उपासना पूरी करना होती थी। अब उस तरह का प्रायश्चित तो दूर रहा, संध्या गायत्री उपासना की जरूरत तक नहीं समझी जाती। सनातन धर्म के अनुयायी जब तक संध्या गायत्री को अपनी दिनचर्या और जीवनचर्या का अंश नहीं बना लेते तब तक वे अपने आपको सिद्ध नहीं कर सकते। वेद शास्त्रों और भारतीय भूभाग में उद्भूत विश्वासों, जीवन मूल्यों को मानने वाले प्रत्येक व्यक्ति संध्या गायत्री को अपने जीवन में शामिल कर सकें, इसके लिए विशिष्ट प्रयोग किए जाने चाहिए।

सबके लिए उपयोगी साधन

उस कुटीर में हुई चर्चा में साधक ने भाग तो नहीं लिया सिर्फ उस चर्चा को सुन ही सका। वह इस संवाद का साक्षी बनने के सौभाग्य से ही गदगद था। उस कक्ष में बाद में और भी ऋषि सत्ताओं का आगमन हुआ। उन्होंने भी चर्चा में हिस्सा लिया। उस विमर्श का सार यह था कि संध्या उपासना या वंदन की पारंपरिक विधि बहुत लंबी और जटिल है। जप ध्यान तक आते आते उसमें पंद्रह से पच्चीस मिनट तक का समय लग जाता है। विधि विधान पूरा होने के बाद जप ध्यान के लिए समय नहीं बचता। मनुष्य समाज इन दिनों जितना जटिल और व्यस्त हो गया है, उसे देखते हुए एक डेढ़ घंटे तक चलने वाली उपासना या संध्या प्रक्रिया हर किसी के लिए संभव नहीं है। ऐसी विधि निर्धारित की जानी चाहिए कि सभी के लिए संध्या वंदन या गायत्री मंत्र का जप, ध्यान और पूजन वंदन संभव हो सके। गुरुदेव और महर्षि की चर्चा में यह तथ्य भी रेखांकित हुआ कि संध्या वंदन की पारंपरिक विधियों में भी भारी अंतर है। प्रत्येक संप्रदाय या साधन परंपरा ने अलग अलग विधियां तय कर लीं और अपने अनुयायियों को उन्हें ही अपनाने पर जोर दिया। इस विभेदीकरण से कोई भी विधि सार्वजनीन नहीं हो पाई और कालांतर में सभी लुप्तप्राय हो गईं।

महर्षि विश्वामित्र ने ऐसी चौंसठ विधियां गिनाई थीं। सिद्धाश्रम में विद्यमान अन्य ऋषि महर्षियों की सम्मति का भी उल्लेख आया। वे भी सरल और सबके लिए संभव व्यावहारिक विधान के पक्ष में थे।

लगभग छत्तीस वर्ष पहले गुरुदेव ने 'ब्रह्म संध्या' के नाम से दस मिनट में ही संपन्न हो जाने वाली विधि का प्रवर्तन किया था। साधक ने गुरुदेव के प्रवचनों और निजी चर्चाओं में इस विधान के बारे में सुना था। घंटों तक चलने वाली महापुरश्चरण साधनाओं के विधि विधान पर कोई प्रश्नचिह्न लगाए बिना ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
गुरुदेव ने आसान विधियों का भी उपदेश किया। इनमें चौबीस लाख जप से संपन्न होने वाले महापुरश्चरण के अलावा चालीस दिन में संपन्न होने वाली साधना और नौ दिन का पुरश्चरण चैत्र और आश्विन मास की नवरात्रियों में किया जाने लगा था। सामान्य दिनों में भी उपासक अपनी स्थिति और सुविधा के अनुसार यह अनुष्ठान करते थे। नवरात्रियों में तो यह विधि आमतौर पर अपनाई जाने लगी थी। सिद्धाश्रम में निवास करने वाली आर्ष मनीषी स्तर की दिव्य सत्ताओं का मानना था कि संध्यावंदन का पारंपरिक विधान लगभग लुप्त हो गया है। उसे जानने वाले गिने चुने लोग ही हैं। वे उस विधि को अपनाए रहें, लेकिन सामान्य जनों के लिए गुरुदेव ने एक अन्य विधि प्रस्तुत करें। उसे गायत्री योग का नाम दिया जा सकता है। यों वह संध्यावंदन ही है, सूर्योदय और सूर्यास्त के समय दिवस और रात्रि के मिलन काल में संपन्न होने वाली इस विधि में गायत्री की अभ्यर्थना के साथ पूजा ओर जप ध्यान का समावेश भी रहे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

उन दिव्य सत्ताओं ने युग साधना के लिए जो आधार निश्चित किए थे, उन्हें पूरा करते हुए गुरुदेव ने महर्षि विश्वामित्र के सामने गायत्री योग की संपूर्ण रूपरेखा रख दी। ऋषि प्रवर का विश्लेषण था कि संध्यावंदन में मुख्य कृत्य पांच ही हैं। पवित्रीकरण, प्राणायाम, पापों का नाश (अघमर्षण) सूर्यार्घ्यदान और गायत्री का जप ध्यान। गुरुदेव ने गायत्री योग की जो रूपरेखा तैयार की थी उसमें पांचों कृत्य संपन्न होते थे। निश्चित हुआ कि आगामी वसंत पंचमी से इस विधान को सार्वजनिक किया जाए।

इस निर्धारण के बाद गुरुदेव ने अपने शिष्य साधक को साथ लेकर शान्तिकुञ्ज के लिए प्रस्थान किया। साधक ने अनुभव किया कि गुरुदेव के साथ उनके साधना कक्ष से जुड़े जिस स्थान से यात्रा आरंभ की थी, वहीं पहुंच कर समापन हुआ है। वहां जो काय कलेवर छूटा था, वह ज्यों का त्यों पद्मासन लगाए मौजूद थे। प्रकाश की एक रेखा के भीतर उस कलेवर में प्रवेश हो रहा है और वह कलेवर उठ खड़ा हुआ है।

विधान

योग का आरंभ सुबह आंख खुलने के साथ शुरु किया जाए। उसमें परमात्मा के स्मरण के साथ आज के दिन को पूरा जीवन मान कर जीने की योजना बनाई जाती है। दिन भर का, दिन के प्रत्येक पल का श्रेष्ठतम उपयोग का संकल्प करते हुए दिनचर्या तय की जाए। उसे निभाने और रात को सोते समय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसकी समीक्षा करने को गायत्री योग का साधना पक्ष माना गया है। समीक्षा में दिन भर हुई गलतियों और दिनचर्या में आए विचलन की मीमांसा करते हुए उन्हें दोबारा नहीं होने देने का निश्चय हो। जो भूल हो गई, उसे यों ही नहीं भूलकर उसके प्रायश्चित का भी विधान है। गायत्री योग के साधक इस साधना पक्ष को 'हर दिन नया जन्म और हर रात नई मौत' के मंत्र से समझें।

सुबह शाम के लिए उपासना पक्ष भी है। उस पक्ष में आत्मशोधन, देवपूजन, जप, ध्यान और विसर्जन के नाम से पांच अंग हैं। पांचों अंग मिलकर संध्या और आराधना की आवश्यकता पूरी करते हैं। स्नानादि से निवृत्त होकर सुबह शाम इस उपासना के लिए बैठें। सुबह के समय बैठते हुए मुंह पूर्व की ओर तथा शाम के समय पश्चिम की ओर हो। समय सूर्योदय से दो घंटे पहले और सूर्यास्त के बाद एक घंटे के बीच में हो। सुबह सूर्योदय के एक घंटा बाद तक भी उपासना की जा सकती है। आराधना के लिए बैठते समय पास में जल से भरा एक छोटा कलश, आचमनी, एक तश्तरी में चुटकी भर चावल, धूप या अगरबत्ती, दीपक और नैवेद्य के रूप में मिश्री या इलायची दाने रखे जाएं। सामने चौकी पर गायत्री का चित्र स्थापित हो। जो लोग निराकार के प्रति श्रद्धा रखते हैं वे सूर्य या गायत्री मंत्र को भी प्रतीक मान सकते हैं।

आत्मशोधन–सुखासन से पालथी मारकर बैठें। गायत्री मंत्र पढ़ते हुए आचमनी से बाएं हाथ की अंजुलि में जल डालें और दांए हाथ की अंगुलियों से शरीर पर जल छिड़कें (पवित्रीकरण) फिर मंत्र पढ़कर आचमनी से तीन बार मुंह में जल डालें (आचमन) मंत्र पढ़ कर शिखा बांधें या उस स्थान का स्पर्श करें (शिखावंदन) गायत्री मंत्र पढ़ कर तीन बार प्राणायाम करें (प्राणायाम) फिर बाएं हाथ की अंजुलि में जल लेकर दाहिने हाथ की अंगुलियों को उसमें भिगोकर क्रम से सिर के बीच, मूर्धास्थान, दोनों आँख, दोनों कान, मुख, कंठ, हृदय, नाभि, भुजा और पैरों को लगाएं (न्यास)।

इन क्रियाओं को करते हुए पवित्रीकरण के समय शुद्धता की, आचमन के समय आंतरिक निर्मलता की, शिखा वंदन के समय संकल्प की, प्राणायाम के समय प्राण की और न्यास के समय शरीर के अंग अंग में दिव्य शक्ति के अवतरण और धारण करने की भावना की जाती है। प्रत्येक क्रिया के अलग–अलग यंत्र भी हैं। जिन्हें उनमें रुचि हो वे संबंधित यंत्रों का उच्चारण करें। जिन्हें मंत्र याद रखने में कठिनाई हो वे और दूसरे लोग भी गायत्री मंत्र का उपयोग कर सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देवपूजन में सामने रखे गायत्री के चित्र या सूर्य देवता अथवा निराकार परमेश्वर की उपस्थिति को प्रणाम करें। उनके आगमन की भावना करते हुए उसी क्रम से जल और फिर अक्षत चढ़ाएं। धूप या अगरबत्ती और दीपक जला कर आदि शक्ति का अभिवादन करें। मिश्री, इलायची चिरौंजी से नैवेद्य अर्पित किया जाए। पूजन के समय अपने भीतर इन पांचों पदार्थों के गुण विकसित होने, विनय, सामंजस्य, प्रसन्नता, पुण्य परमार्थ और माधुर्य आद गुण बढ़ने की भावना की जाए।

जप–गायत्री मंत्र का कम से कम तीन मालाओं का जप किया जाए। मंत्र प्रायः सभी जानते हैं। उसका जप करते हुए ईश्वरीय तेज को अपने भीतर अवतरित होने की भावना की जाए। माला का अभ्यास नहीं हो तो घड़ी देखकर पंद्रह मिनट तक जप चले। जप मौन रह कर करें। होठ, कंठ और मुंह हिलते रहे। जप की ध्वनि इतनी मंद रहे कि किसी को सुनाई नहीं दे।

ध्यान–जप के समय गायत्री के चित्र को देखते हुए उपास्य आराध्य की साक्षात उपस्थिति अनुभव करें। जप के साथ यह अनुभूति बराबर होती रहनी चाहिए।

अर्घ्यदान–विसर्जन–जप ध्यान पूरा होने पर पूजा वेदी पर रखे छोटे कलश का जल सूर्य के सामने अर्घ्य के रूप में चढ़ाना चाहिए। अर्घ्य चढ़ाते हुए मंत्र पढ़ना चाहिए। जल को आत्मसत्ता का प्रतीक माना जाता है और सूर्य को विराट् ब्रह्म विश्व का। अपनी सत्ता को समष्टि के लिए अर्पित करने का भाव अर्घ्य में है। अर्घ्य के बाद आह्वान की गई देवशक्तियों को अपने स्थान पर लौट जाने की भावना की जाती है। गायत्री योग के साधकों को सप्ताह में एक दिन एकाशन, अस्वाद व्रत और दिन में दो घंटे का मौन रखने के लिए भी कहा गया है।

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अठारह

कुछ अदृश्य पन्ने

१९७५ की दीपावली बीत चुकी थी। हवाएं सर्द और हिमालय की तराई में बर्फीली होने लगी थी। शान्तिकुंज से दूर पहाड़ियों पर यदाकदा बर्फीली चादर दिखाई देती। ये दृश्य शान्तिकुंज परिसर से भी दिखते थे। कभी वास्तव में और कभी कल्पना में। कल्पना में इसलिए कि सुबह के कुहासे को चीरता हुआ सूरज जब पूर्व दिशा में अपनी किरणें बिखेरता तो प्रतीत होता था कि बर्फ फैल रही है। नहीं होने पर भी आभास तो मिलता ही कि एक श्वेत धवल चादर तन रही है। कार्तिक शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि रही होगी। शान्तिकुञ्ज के बाहर और पीछे सड़क पर गायों के झुंड निकल रहे थे। सजी धजी गायों के गले में बंधी घंटियां बिना किसी लय ताल के बजती और वातावरण में संगीत बिखेर देती। उस दिन गोपाष्टमी थी। आसपास के आश्रमों में गो पूजा का उत्सव मनाया गया। पूजा के बाद गायें और उनके सेवक अर्चक नित्य कार्यों में लग गए थे। आश्रमों में बने अर्चागृहों में आरती स्तवन के स्वर गूंजने लगे थे। जो लोग तीर्थ सेवन और गंगा दर्शन के लिए आए थे, वे अपने-अपने आश्रम से निकलने लगे। राह चलते हुए वे जो भजन गाते और स्तुतिगान करते थे उनकी गुनगुनाहट वृक्षों पर चहचहाने वाले पक्षियों, उनके शावकों और घोंसला छोड़ कर उड़ने की तैयारी कर रहे पखेरुओं के स्वरों से मिलकर मधुर राग छेड़ देती।

शान्तिकुञ्ज में गुरुदेव ने उस दिन का लेखन कार्य संपन्न किया और कंधों पर ओढ़ी, तह कर रखी हुई शाल खोली। उसे लपेट कर वे कक्ष से बाहर निकले और बाहर बरामदे में चहलकदमी करने लगे। कुछ कदम ही चले होंगे कि उनका ध्यान आकाश में तैरते हुए एक बादल के टुकड़े की ओर गया। वह टुकड़ा जैसे गुरुदेव के पास ही उड़ा चला आ रहा था। इस तरह उड़ रहा था जैसे पग पग चल रहा हो। पास आते आते वह आकार लेने लगा। बरामदे के बाहर आकर रुक गया और मानवीय आकार लेने लगा। कुछ ही क्षणों में वहां एक वायवीय शरीर उभरने लगा। आकृति धीरे-धीरे स्पष्ट हुई। उन्नीसवीं शताब्दी में ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों जैसी वेशभूषा में एक अधेड़ अंग्रेज व्यक्तित्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
सामने हवा में खड़ा था। चेहरे पर घनी लंबी मूंछे। सिर पर थोड़े से बाल और हलकी दाढ़ी वाला यह व्यक्ति ऊंचे पूरे कद का था। गुरुदेव ने उस पुरुष छाया को चीन्हते हुए अभिवादन में हाथ उठाया। उस पुरुष आकृति ने झुककर प्रणाम किया और अपना परिचय देने के लिए होंठ खोले ही थे कि गुरुदेव ने कहा, 'आइए ह्यूम साहब। भीतर आ जाएं। आपका स्वागत है'।

वह आकृति बरामदे में उतर आई। गुरुदेव ने उन्हें अपने कक्ष में आमंत्रित किया और अपने साथ ले जाते हुए यह भी कहा कि आपके आगमन की सूचना मिल गई थी। सुबह या नौ दस बजे तक आपके आने की संभावना थी। प्रयोजन भी स्पष्ट था। सिर्फ आपसे मिलना बाकी था। वह साध भी पूरी हो रही है।

गुरुदेव के बताए स्थान पर बैठते हुए ह्यूम ने थोड़ा संकोच जताया। कहा कि साध तो मेरी पूरी हो रही है गुरुदेव। आपकी कृपा से हम लोगों ने सौ साल पहले जो काम शुरु किया था, वह आपके मार्गदर्शन में ही पूरा हो रहा है। ह्यूम के वायवीय शरीर ने गुरुदेव के चरणों में प्रणाम किया और आश्वस्त सा होते हुए कहा कि आपसे आज की मुलाकात के बाद हम लोग विश्राम से सो सकेंगे। मैडम ने हम अंतरंग पार्षदों को जो दायित्व सौंपा है, वह भी पूरा हो सकेगा।

इस प्रसंग को कुछ पल के लिए विराम देकर पृष्ठभूमि में चला जाए। जिस वायवीय शरीर का यहां उल्लेख किया गया है, वह १८८५ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना करने वाले सर एलन आक्टेवियन ह्यूम (१५२९-१९१२) का था। ब्रिटेन में जन्मे ह्यूम ने भारत में बंगाल सिविल सर्विस से अपना कामकाजी जीवन शुरु किया और १८८२ में रिटायर होने तक वे विभिन्न प्रशासनिक पदों पर रहे। कामकाजी जीवन के दौरान उन्होंने अनुभव किया कि सरकार के क्रियाकलापों, नीतियों और फैसलों से जनता में असंतोष फैल रहा है। इस असंतोष को संगठित करने के लिए उन्होंने समकालीन सामाजिक और राजनीतिक विभूतियों के साथ मिलकर काम शुरु किया। सन् १८८४ के अंत में उन्होंने सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और व्योमेशनाथ बनर्जी के साथ मिलकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का निश्चय किया। साल भर घनघोर प्रयत्न करने के बाद उन्होंने तथा दादा भाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता और गोपाल कृष्ण गोखले आदि ने साथ मिलकर दिसम्बर १८८५ में कांग्रेस की स्थापना कर ली। कांग्रेस की स्थापना से दो साल पहले ह्यूम ब्रिटिश राज की सेवाओं से निवृत्त हो चुके थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ए.ओ. ह्यूम के बारे में प्रसिद्ध है कि वे शरीर से भले ही भारतीय न हों लेकिन उनकी काया में भारतीय आत्मा का निवास था। भारत और भारतीय समाज के प्रति उनके लगाव को देखकर यह स्थापित हो चुका था कि उन्होंने सरकारी सेवा में रहते हुए अंग्रेज सरकार से भारतीयों को उनके अधिकार दिलाने की भरपूर चेष्टा की। उन्होंने यह बताने की चेष्टा भी कि भारत के लोग अपने देश का प्रबंध संभालने में सक्षम हैं। उन्हें भी सरकारी नौकरियों और प्रशासनिक सेवाओं में समानता मिलनी चाहिए।

यह तो ह्यूम के व्यक्तित्व का प्रशासनिक और राजनीतिक पक्ष था। दूसरा पक्ष आंतरिक और आध्यात्मिक है, जिसकी कम ही चर्चा होती है। इस पक्ष के सम्बन्ध में सूचना है कि १८७८ की गरमियों में ह्यूम ने अपने शिमला स्थित निवास में गोपनीय दस्तावेजों की सात बड़ी बड़ी जिल्दें पढ़ी थीं। तब ह्यूम सरकारी सेवा से रिटायर हो चुके थे। इन दस्तावेजों के बारे में कहा जाता है कि इन्हें शासनतंत्र ने इन्हें जिलास्तर की शाखाओं में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर तैयार किया था। इन दस्तावेजों के बारे में सी.एफ. ह्यूम, गिरिजा मुखर्जी, गुरुमुख निहालसिंह, लाला लाजपत राय और रजनी पामदत्त आदि विद्वानों ने अपने अपने ढंग से टिप्पणी की है। कुछ के अनुसार इनमें अंग्रेजों के प्रति भारतीय समाज में बढ़ रहे रोष की सूचना थी, कुछ के अनुसार लोगों द्वारा ब्रिटिश सरकार को धोखा देने और अपना अलग स्वायत्त तंत्र विकसित कर लेने की जानकारी थी। ए. ओ. ह्यूम के उस अध्ययन के बारे में प्रामाणिक जानकारी उनके समकालीन ब्रिटिश अधिकारी विलियम वेडरबर्न ने दी थी। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय मुंबई (तब बॉम्बे) हाईकोर्ट में जज रहे और बाद में मुंबई सरकार के मुख्य सचिव बनकर रिटायर हुए वेडरवर्न ह्यूम के अच्छे दोस्त थे। उन्होंने ह्यूम की जीवनी में लिखा है कि शिमला में बैठकर उन्होंने जो दस्तावेज देखे थे, उनमें देश भर में फैले मठों, महात्माओं और उनके शिष्यों के अलावा सिद्ध संतों के बारे में पर्याप्त सूचनाएं थीं। उनकी गतिविधियों के अलावा भारत के भविष्य के बारे में उनकी योजनाओं और अंतर्दर्शन के बारे में भी काफी सूचनाएं थीं। इन सूचनाओं के आधार पर वेडरबर्न ने लिखा है कि ह्यूम का ऐसे महात्माओं से संपर्क था, जो कंदराओं में रहकर रहस्यमय साधनाएं करते रहते थे। वे कहीं भी आ जा सकते थे लेकिन लोगों को दिखाई नहीं देते। वे अदृश्य रहते और संसार में किसी भी व्यक्ति, जीव और यहां तक कि जड़ वस्तुओं से भी संवाद कर सकते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सिद्धों से संचालित संग्राम

थियोसाफिकल सोसायटी, का एक प्रतिनिधि कूट हूमीलाल सिंह इन महात्माओं से मिलने के लिए जाया भी करता था। सोसायटी में मास्टर कूट हूमी के नाम से प्रसिद्ध इस प्रतिनिधि ने उन अशरीरी महात्माओं के हवाले से लिखा था कि सिद्धों की उस संसद ने ही १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम का संचालन किया। जिन क्रांतिकारियों और योद्धाओं को उन्होंने अपना माध्यम बनाया था, उन्होंने सिद्धों के निर्देशों का पूरी तरह पालन किया। संग्राम के जो परिणाम सामने आए, सिद्धपुरुष उससे संतुष्ट थे। इतिहास में वह संग्राम भले ही विफल लिखा गया हो लेकिन सिद्ध पुरुष उसे वहीं तक ले जाना चाहते थे। वे चाहते तो इसे आगे तक ले जा सकते थे पर उनकी दृष्टि में भारतीय जनमानस इससे आगे के परिवर्तन झेलने के लिए तैयार नहीं था। पूर्ण स्वतंत्रता या नए राष्ट्र राज्य की स्थापना के लिए उनके अनुसार नब्बे वर्ष का एक चक्र पूरा होना आवश्यक था। और वह चक्र पूरा हुआ भी सही। उस समय के उपलब्ध सोसायटी के दस्तावेज बताते हैं कि कूट हूमी जैसे कई प्रतिनिधि सिद्ध महात्माओं के संपर्क में थे और वे ह्यूम को उनकी योजनाओं के बारे में बताया करते थे। उन सूचनाओं के आधार पर और अपने प्रत्यक्ष संपर्कों से मिली जानकारी के अनुसार ह्यूम ने नवम्बर १८८६ में लार्ड डफरिन को लिखा था कि भारत परिवर्तन के लिए तैयार हो रहा है। भविष्य में वह नए विश्व के निर्माण में बड़ी भूमिका निभाएगा। इस देश में मौजूद अंग्रेजी राज उस भूमिका के लिए तैयार करने का एक छोटा सा दायित्व ही पूरा कर रहा है। जिस दिन वह दायित्व पूरा हो जाएगा, अंग्रेज यहां एक मिनट भी नहीं रह सकेंगे। इसलिए ब्रिटेन को यह नहीं सोचना चाहिए कि इस देश पर शासन करना अथवा यहां का मालिक होना उसकी नियति है।

इस पृष्ठभूमि के बाद हम १९७५ की गोपाष्टमी की सुबह पर वापस आते हैं। गुरुदेव के कक्ष में ए.ओ. ह्यूम की वायवीय उपस्थिति में शान्तिकुंज के एकाध वरिष्ठ कार्यकर्त्ता भी पहुंचे। उन्हें आभास तक नहीं हआ कि यहां कोई है और गुरुदेव से कोई अनुरोध या संवाद कर रहा है। कार्यकर्त्ता अपनी बात कह कर और गुरुदेव के निर्देश लेकर चले गए। इससे ह्यूम को अपना संवाद जारी रखने में कोई कठिनाई नहीं हुई। तिब्बत के पास एक रहस्यमय क्षेत्र में विश्व को नया रूप देने के लिए तप कर रहे महात्माओं के बारे में उन्होंने कहा कि वे एक बार गुरुदेव को अपने बीच देखना चाहते हैं। वे यहां भी आ सकते है लेकिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनकी संख्या इतनी अधिक है कि सब या अधिकांश अथवा उनके चुने हुए प्रतिनिधि भी यहां पहुंचे तो मार्ग में उथल पुथल मच जाएगी। जिस मार्ग से वे आएंगे, वहां का वातावरण उनके उपयुक्त नहीं है, उनकी उपस्थिति या प्रवास का स्पर्श उसमें परिवर्तन लाएगा और वह परिवर्तन मार्ग में रहने वाले व्यक्तियों को सहन नहीं होगा। इसलिए बेहतर यही होगा कि गुरुदेव स्वयं उस क्षेत्र में चलें और महात्माओं से संवाद करें। ह्यूम ने बताया कि उस क्षेत्र में २४ हजार ११८ सिद्ध पार्षद तप अनुष्ठान में निरत हैं और वे समय समय पर दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में जाते रहते हैं।

ह्यूम ने अपनी वायवीय सत्ता को भी उस सिद्ध क्षेत्र का अनुग्रह ही बताया। कहा कि वे उन महात्माओं के प्रतिनिधि और संदेशवाहक के रूप में ही काम करते हैं। यह भी कि १८८५ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में उनका योगदान निमित्त मात्र था। इतिहास उन्हें इस स्थापना का श्रेय देता है लेकिन वास्तव में तो वह समय की धारा का सूत्र संचालन करने वाले उन दिव्य पुरुषों की योजना का ही अंग था।

इस वार्तालाप में यह भी स्पष्ट हुआ कि थियोसाफी सोसाइटी की संस्थापक मैडम ब्लेवट्स्की, हेनरी स्टील आस्कर, लेड बीटर, एनी बीसेंट और विलियम कून आदि के अलावा भारतीय मूल के सिद्ध संतों और योगियों को भी उन महात्माओं से संदेश मिलते थे। इन योगियों में श्री अरविंद भी थे जो १९०८ में अचानक स्वतंत्रता आन्दोलन और राजनीति से पूरी तरह अलग होकर पाण्डिचेरी चले गए। उन्हें आभास हो गया था कि भारत की स्वतंत्रता निश्चित है। वातावरण को आध्यात्मिक दृष्टि से सुसंपन्न और उर्वर बनाने के लिए गुह्य साधनाएं आवश्यक हैं। सूक्ष्म दृष्टि से वे इस ज्यादा महत्त्वपूर्ण काम के लिए राजनीतिक क्रिया कलापों से अलग हुए थे। राजनीति में वापस लौटने का आग्रह लेकर गए कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं में, जिनमें लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक भी थे, से उन्होंने कहा था कि अज्ञात और अदृश्य सत्ता ने भारत के भाग्य में स्वतंत्र होना पहले ही लिख दिया है। उसके लिए प्रत्यक्ष जगत में अलग-अलग लोगों के लिए अलग अलग भूमिकाएं निश्चित कर दी गई हैं। कुछ अध्यात्म प्रधान व्यक्तियों को भारत की सूक्ष्म नियति के लिए काम करने का दायित्व दिया गया है। उन्हें वापस लाने का प्रयत्न करते हुए कई राजनेताओं को यह रहस्य गले नहीं उतरा था लेकिन लोकमान्य तिलक ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया था। वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठानों से लोकशिक्षण का प्रयास पहले ही कर चुके थे। गणेशोत्सव, गीता रहस्य अथवा कर्मयोग शास्त्र और पाठशाला तथा व्यायाम शालाओं के माध्यम से लोगों को बल की उपासना और संगठन के लिए तैयार करने की मुहिम उन्होंने १८९० के आसपास ही शुरु कर दी थी।

ह्यूम का रहस्योद्घाटन

ए.ओ. ह्यूम ने जब गुरुदेव से इस विषय पर चर्चा छेड़ी तो यह भी कहा कि आप स्वयं भी तो १९४० के आसपास अपने मास्टर (थियोसाफिस्ट गुरु और मार्गदर्शक सत्ता के लिए इसी संबोधन का प्रयोग करते थे) के कहने पर इसीलिए राजनीति से अलग हुए थे। लेकिन मैं यह बात दुनियादारी के हिसाब से कह रहा हूँ। वरना सचाई तो यही है न कि आप और मास्टर में क्या अंतर है? कहते हुए ह्यूम ने अपनी आंखों की पुतलियों को अजीब ढंग से नचाया और दोनों हाथों की हथेलियों को दांये-बांये हिलाते हुए कहा, 'कुछ नहीं।'

कहते हुए ह्यूम बस हंस दिए। इसके बाद उन्होंने अपने कोट की जेब से एक कागज निकाला और गुरुदेव के सामने रखा। कागज दरअसल किसी पत्र की प्रतिलिपि था। गुरुदेव ने वह कागज उठाया और देखने लगे। पत्र की कुछ पंक्तियां देखते ही उन्होंने कहा यह तो स्वामी विवेकानंद की लिखावट लगती है। ए.ओ. ह्यूम ने पुष्टि की और कहा, 'हाँ यह पत्र उन्होंने १८४९ में अपने एक गुरुभाई स्वामी तुरीयानंद को लिखा था। अमेरिका में तब उनका काम फैल रहा था। रामकृष्ण मठ और मिशन की शाखायें खुल रही थीं। कैलिफोर्निया में एक श्रद्धालु अमेरिकी ने उन्हें १६० एकड़ जमीन दान में दी थी ताकि वहां रामकृष्ण मिशन की सांगोपांग स्थापना हो सके। और दिशाओं से भी सहयोग मिल रहा था लेकिन उन्होंने भारत वापस आने का मन बना लिया था। स्वामी तुरीयानंद उन दिनों स्वामी जी के साथ ही प्रवास पर थे और सैन फ्रांसिस्को में वेदांत आश्रम की व्यवस्था बनाने में लगे हुए थे। गुरुदेव ने वह पत्र एक नजर से देखा और फिर ह्यूम की ओर दृष्टि घुमाई। अपनी ओर देखते पाकर ह्यूम ने कहा, 'गुरुदेव यह स्वामी विवेकानंद के पत्र की प्रतिलिपि है। पारलौकिक शक्तियों ने इसे तैयार किया है और मुझे आपको दिखाने के लिए सौंपा है।'

'पत्र में स्वामी विवेकानंद कुछ अधीर और उतावले से दिखाई दे रहे हैं। लगता है वे जल्दी में हैं। जैसे इनके पास समय की कमी हो और वे कुछ काम तुरत फरत पूरे कर लेना चाहते हों।' गुरुदेव ने कहा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ह्यूम ने कहा, 'हां यह सही है। हिमालय के योगियों का कहना है कि स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानंद जी को समय से पहले ही साक्षात्कार करा दिया था और उस साक्षात्कार को फिर पोंछ भी दिया था। कहा था कि सोलह वर्ष बाद जब समय आएगा तो तुम्हें इस अनुभूति का कोष फिर हासिल हो जाएगा। तब तक भगवान का काम करो। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने जो समय सीमा निर्धारित की थी, वह पूरी हो रही थी। इधर उनका स्वास्थ्य भी लड़खड़ा रहा था, इसलिए स्वामी जी अपनी मातृभूमि और गुरुभूमि लौटने के लिए अधीर थे।'

गुरुदेव ने पूछा, 'इस पत्र में स्वामी जी ने दोबारा आने की बात लिखी है परंतु भारत आने के बाद तो वे कभी विदेश लौटे ही नहीं। उनके भारत आने की बात का क्या रहस्य है?'

ए.ओ. ह्यूम ने कहा, 'स्वामी विवेकानंद अपने गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस के सान्निध्य में ज्यादा नहीं रह सके थे। मुश्किल से तीन चार वर्ष और वह भी टुकड़ों टुकड़ों में ही इन्हें गुरु का सान्निध्य मिला। इसके अलावा उनके मन में शुरु में संदेह भी था। निराकरण होने और समर्पण संपन्न होने के बाद गुरु के प्रत्यक्ष सान्निध्य की उनकी लालसा बनी रही। इसलिए वे चाहते थे कि एक जन्म और हो, जिसमें अपने गुरु का काम पूरे मन से, पूरा समय लगाकर और पूरी आयु भर करते रहे। यह तो आप भी जानते हैं कि आदि शंकराचार्य की भांति स्वामी विवेकानंद के लिए भी विधाता ने सत्रह अठारह साल की जीवन अवधि नियत की थी। उनके आध्यात्मिक अभिभावकों ने विधि का विधान उलटकर जीवन अवधि बढ़ाई। भगवान रामकृष्ण की कृपा से ही स्वामी विवेकानंद जीवित रह सके। पत्र में उन्होंने जिस वापसी की बात कही है. वह स्वामी रामकृष्ण परम हंस के अगले अवतार के समय की ओर इशारा करती है। उनका आशय था कि परमहंस देव जब एक बार फिर इस धरती पर आएंगे तो वे अर्थात विवेकानंद भी लौटेंगे। कहते कहते ए.ओ. ह्यूम अचानक रुक गए। इस विषय को यहीं छोड़कर बोले संदेश और संप्रेषण का यह तरीका हम लोग पहले भी अपनाते रहे हैं। आपके सामने उपस्थित इस शख्सियत ने अपने लौकिक जीवन में १८८३ में वायसराय रिपन को एक पत्र पढ़ाया था। जिसमें भावी विपत्तियों से बचने के लिए अंग्रेजी राज में सुधार लाने की बात कही गई थी। उस समय के कई धुरंधरों को थियोसाफिस्टों ने समय रहते सचेत किया और आज भी कर रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भूमि पर रक्षा विधान

१९७३ से ही डॉक्टर साहब को प्रत्यक्ष और परोक्ष संकेत मिलने लगे थे कि अपना जीवन गुरुदेव के काम में लगाना है। चिकित्सा और शरीर विज्ञान की पढ़ाई चलती रहे। वह अध्ययन अलग तरह से काम आएगा। इस दिशा के साथ आत्मविद्या का संधान भी करते चलना है। गुरुदेव ने तीन चार बार तो प्रत्यक्ष कहा कि यहां कब आ रहे हो? अभी मन बना या नहीं? डॉक्टर साहब हर बार 'हां' कहते और 'कब?' का उत्तर भी यही कि आप ही बताइए। गुरुदेव ने अथवा नियति ने पता नहीं किस तरह शान्तिकुंज बुलाने का निश्चय किया हुआ था। बुलाने की व्यवस्था के बारे में गुरुदेव से ही पूछते तो वे चुप रह जाते। उनका मौन और संकेत यही उत्तर देते दिखाई देते कि आने की विधि और उसका क्रियान्वयन तुम खुद ही चुनो। करीब तीन साल तक संकेत, निर्देश और आदेश के साथ साधक की ओर से स्वीकृति, तत्परता और अनुपालन की तैयारी दिखाई देती। तीन साल तक अलग अलग तरह से इन्हीं बिंदुओं के इर्द गिर्द गतिविधियां चलती रहीं। १९७६ के शुरुआती महीनों में डॉक्टर साहब हरिद्वार आए। आए क्या गुरुदेव ने ही बुलाया। लेकिन अपने लिए सर्वतोभावेन काम करने वाले कार्यकर्ता के रूप में कम युग साधना को समर्पित साधना करने वाले साधक के रूप में ज्यादा।

डॉक्टर साहब को सार्वजनिक उपक्रम भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स में चिकित्सा अधिकारी के रूप में नियुक्ति मिली। बीएचईएल परिसर में बने अस्पताल के डॉक्टर्स क्वार्टर्स में ही निवास की व्यवस्था हो गई। नियुक्ति तक तो गुरुदेव माताजी ने कुछ नहीं कहा। रहने की व्यवस्था होने लगी तो उन्होंने सख्ती से मना किया। कहा कि शान्तिकुंज का रहन सहन कष्टकर जरूर है। यहां तुम्हें निवास के लिए एक कमरा ही मिलेगा। पर युग साधना का अभ्यास करना है तो बीएचईएल रहने की इजाजत नहीं दी जा सकती।

डॉक्टर साहब ने कुछ नहीं कहा। असमंजस रहा कि क्या तय करें, अगर युग साधक के रूप में ही पूरा समय लगाना है तो चिकित्सा अधिकारी के रूप में काम क्यों करना पड़ रहा है? गुरुदेव ने वहां नौकरी ज्वाइन करने के लिए मना क्यों नहीं किया। चेहरे पर उभर रहे इन सवालों को गुरुदेव ने पढ़ लिया। वे बोले समय आने पर उसके लिए भी मना हो जाएगी। नियंता स्वयं तुम्हें आदेश बता देंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
बीएचईएल के क्वार्टर्स में रहने की बात वहीं समाप्त हो गई। निवास के लिए शान्तिकुञ्ज अपने निवास या कक्ष में डॉक्टर साहब सुबह सुबह तैयार होकर अस्पताल के लिए निकलते और देर शाम तक वापस लौटते। प्रात:काल ब्राह्ममुहूर्त में उठने और आश्रम की निर्धारित दिनचर्या के अनुसार यहां आरती में भाग लेने का नियम भी निभता। ड्यूटी पर जाने के लिए शुरु में तो कुछ दिन सार्वजनिक परिवहन का उपयोग किया। फिर लंब्रेटा कंपनी का एक स्कूटर इंदौर से मंगवा लिया। अस्पताल में डॉक्टर साहब को काम करते देख कुछ समय तक तो साथी सहकर्मियों ने शान्तिकुञ्ज का जिक्र किया। वहां के वातावरण, गुरुदेव माताजी के आध्यात्मिक स्तर के बारे में पूछते और सुनते हुए सहयोगियों को अच्छा लगता। डॉक्टर साहब के कामकाज और चिकित्सा कौशल का धीरे धीरे परिचय हुआ तो फिर बातचीत के नए विषय भी जुड़े। जाहिर है वे स्वास्थ्य, चिकित्सा, रोग और शरीर की व्यवस्था से संबंधित ही थे। उन विषयों में अध्यात्म का पुट भी रहता।

बीएचईएल में काम करते हुए कुछ माह बीते होंगे कि अदृष्ट ने एक दुर्घटना की रचना की। गुरुदेव और माताजी उन दिनों सायंकालीन भ्रमण के लिए जाया करते थे। उनका रिक्शा चलाने वाला चालक मोती बड़ी भावना से उन्हें हर की पौड़ी या उससे आगे बाजार तक ले जाता। भ्रमण के लिए ऋषिकेश रोड का मार्ग ही चुनते। १९७६ में अगस्त महीने की २८ तारीख थी। उस दिन रिक्शा मुश्किल से दो किलोमीटर चला होगा कि गुरुदेव ने रुकने के लिए कहा। जिस जगह रिक्शा रुका, वहां पास ही बिरला जी की बगीची (अब यहाँ जैन मंदिर है) थी। गुरुदेव रिक्शे से उतरे और बगीची तक होकर वापस लौट आए। माताजी रिक्शे में ही बैठी रहीं। गुरुदेव को इस तरह आते जाते देख उन्हें कुछ असहज लगा। उन्होंने पूछा क्या बात है साहब? कुछ भूल रहे हैं क्या या आज आगे जाने का मन नहीं है?

वापस लौटते हुए गुरुदेव पुलिया पर बैठ गए। माताजी कुछ समझ नहीं पा रही थीं। कहने लगी मन नहीं है तो वापस चलते हैं साहब। फिर कल देखेंगे। गुरुदेव इस बार भी कुछ नहीं बोले। वे आसपास की जगह गौर से देख रहे थे। नजरें ऐसे घूम रहीं थीं जैसे कुछ पढ़ रही हों या लकीरें खींच रही हों। पांच सात मिनट वे इसी तरह चहल कदमी करते, पुलिया पर बैठते और आसपास की जगह निरखते रहे। माताजी उन्हें यह सब करते हुए अपलक देख रहीं थीं। उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जगह सभी ओर देख भाल कर, चहलकदमी कर गुरुदेव रिक्शे के पास आए और बोले, 'चलो मोती अब आगे नहीं जाएंगे।'

एक ही जीवन में दूसरा जन्म

माताजी ने इस पर कुछ नहीं कहा। वे चुप रहीं। रिक्शा कुछ आगे बढ़ा तो गुरुदेव उस जगह के संस्कार आदि के बारे में बताते हुए सामान्य विषयों पर कुछ कहने लगे। दोनों शान्तिकुंज वापस पहुंचे। वापसी के बारे में वहां किसी ने कुछ नहीं पूछा और बताया। मुख्य द्वार के पास खड़े कुछ कार्यकर्ता जरूर आश्चर्य से देखने लगे कि गुरुदेव माताजी इतनी जल्दी वापस कैसे आ गए। कुछ ही पलों में वे इस बात को भी भूल गए।

ऊपर जाने के कुछ ही देर बाद गुरुदेव फिर वापस आ गए। ऐसा कम ही होता था कि कहीं से लौटने के बाद गुरुदेव अपने कक्ष में चले गए हों और फिर वहां से लौटे हों। गेट के पास आकर वे चहलकदमी करने लगे। वहां आसपास मौजूद कार्यकर्ताओं से कुछ बातचीत भी की। इसी बीच गेट के पास उत्तर प्रदेश सड़क परिवहन निगम की एक बस आकर रुकी। ड्राइवर ने दरवाजा खोला और धम्म से कूदा। गेट से उतरते ही उसने आवाज लगाई, 'ओ साहब जी! मदद करो डॉक्टर साहब को गाड़ी से नीचे उतारो।'

गुरुदेव ने सुना ही था कि कार्यकर्ताओं को आवाज लगाई। 'गाड़ी प्रणव को लेकर आयी है। एक्सीडेन्ट हो गया है जल्दी से उसे नीचे उतारो।' वहां मौजूद कार्यकर्ता दौड़े। उन्होंने बस की सीट पर संभालकर लिटाए गए डॉक्टर साहब को नीचे उतारा। ड्राइवर ने भी हाथ बटाया। वह कहता जा रहा था.....'बहुत नेक और रहमदिल डॉक्टर हैं, उन्होंने मेरा जीवन बचाया है। हमारे डॉक्टर साहब हैं, उन्हें कुछ नहीं होगा।'

नीचे उतारकर डॉक्टर साहब को भीतर ले जाया गया। आसपास जो चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध थी उसका प्रबंध किया। वहां मौजूद डॉक्टरों ने डॉक्टर साहब की चोटें देखकर कहा कि नुकसान दिखाई नहीं दे रहा है लेकिन दुर्घटना बहुत घातक हुई है। चोटें भीतरी हैं। वहां मौजूद डॉक्टरों की राय से ही डॉक्टर साहब को बीएचईएल अस्पताल में भर्ती कराया। प्राथमिक जरूरी चिकित्सा तो हुई लेकिन डॉक्टरों ने यह भी कहा कि इलाज यहां न करायें, साधन नहीं हैं। बेहतर होगा कि दिल्ली ले जायें। गुरुदेव भी अस्पताल तक साथ आए थे। दिल्ली ले जाने की सलाह देने पर उन्होंने कहा दिल्ली नहीं भोपाल ले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
जाओ और सुनो किसी को चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।

जीजी उन दिनों इंदौर में ही रह रहीं थीं। उन्हें और बाई (मां) तथा पिताजी को पता चला तो तीनों पहली गाड़ी से दौड़े चले आये। तब तक डॉक्टर साहब को चिकित्सकों की देखरेख में भोपाल ले जाया जा चुका था। ले जाते समय गुरुदेव ने वीरेश्वर जी को साथ कर दिया। कहा कि उपचार होने तक और वापस ठीक होकर यहां आने तक प्रणव के साथ ही रहना। घटना के दस दिन बाद ७ सितम्बर को भोपाल में डॉक्टर साहब का आपरेशन हुआ। करीब तीन सप्ताह वहीं रहे और वापस लौटे तो लगा कि रोम रोम में नया जीवन संचरित हो रहा है। शान्तिकुंज आते ही वे गुरुदेव के पास प्रणाम के लिए पहुंचे। गुरुदेव ने सिर पर हाथ फेरा और कहा, 'मैं अब कह सकता हूँ कि तुम्हें कहीं भी जाने की जरूरत नहीं है न ही कोई नौकरी करना है। दो साल से भगवान का काम करने के लिए कहता रहा पर मुझे लगता था कि यह शायद नए जीवन में ही संभव हो सकेगा। उसके लिए फिर से जन्म लेने तक इंतजार करना पड़ता। लेकिन महाकाल ने तुम्हें यहीं नया जीवन दे दिया।'

गुरुदेव ने जब यह कहा तो डॉक्टर साहब की स्मृतियों में वे दृश्य उभर आये जो भोपाल में चिकित्सा उपचार के दौरान दिखाई दिये थे। गुरुदेव, माताजी, अखंड दीपक, हिमालय, दादागुरु, सूक्ष्म लोक में गूंजता गायत्री मंत्र और स्वयं के वाचक शब्द (ॐ) की ध्वनि। याद भी नहीं आ रहा था कि शरीर के किस किस हिस्से की अस्थियां शिराएं और मज्जायें चरमराई थीं। स्वस्थ सबल सक्षम और उद्देश्यपूर्ण नया जीवन राह देख रहा था।

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्नीस

साधना स्वर्ण जयंती

सन् १९७५ की गीता जयंती को गुरुदेव ने कहा कि अगले वर्ष वे एक लाख साधकों को चुनेंगे और उन्हें गायत्री की विशेष साधना सिखाएंगे। यह घोषणा शान्तिकुञ्ज परिकर में आयोजित एक कार्यक्रम में की गई थी। गीता जयंती पर पर्व देवता के पूजन के समय की गई इस घोषणा को सुनकर वहां उपस्थित परिजन थोड़े चकित हुए। समारोह में शिविरार्थियों के अलावा आश्रम में निवास कर रहे कार्यकर्ता और बाहर से आए परिजन भी थे। उस समय गायत्री परिवार का तेजी से विस्तार हो रहा था और परिजनों को आश्चर्य इसलिए हो रहा था कि एक लाख साधकों की ही सीमा क्यों? उस समय गायत्री परिवार के सदस्यों की संख्या पंद्रह बीस लाख के आसपास थी। सामान्य दृष्टि में उचित तो यह है कि साधकों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए।

एक लाख साधकों का मंडल बनाने और उन्हें विशिष्ट साधना में नियोजित करने की सूचना आश्रम के बाहर विभिन्न स्थानों, शहरों में काम कर रहे कार्यकर्त्ताओं तक भी पहुंची। गुरुदेव ने उस आयोजन में कहा था कि अब से पचास वर्ष पहले उन्होंने अपनी मार्गदर्शक सत्ता की प्रेरणा से और उसी के सान्निध्य में चौबीस वर्ष तक चलने वाले चौबीस महापुरश्चरण आरंभ किए थे। उसी मार्गदर्शक सत्ता का संदेश है कि एक लाख साधकों को उस स्तर के तो नहीं, लेकिन एक विशिष्ट साधना प्रयोग में नियोजित किया जाए। इस प्रयोग से एक लाख साधकों द्वारा सम्मिलित रूप से २४ लाख मंत्रों के २४ महापुरश्चरण प्रतिदिन संपन्न किए जाने थे। गुरुदेव ने कहा था कि जितनी साधना उन्होंने २४ वर्ष में की थी, उतनी साधना प्रतिदिन हो जाया करेगी। यह अभियान आगामी वसंत पंचमी (५ फरवरी १९७६) से आरंभ किया जाना था।

विशिष्ट साधना प्रयोग के लिए गुरुदेव ने एक विशेष नाम दिया था। 'स्वर्णजयंती वर्ष की विशेष साधना।' स्वर्ण जयंती वर्ष नाम पचास साल पहले गुरुदेव की आरंभ की गई महापुरश्चरण श्रृंखला को ध्यान में रखकर दिया गया था। इस विशिष्ट संबोधन का उद्देश्य प्रतिदिन होने वाले महापुरश्चरणों में पर्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समारोह का उत्साह भरना भी था। गुरुदेव के इस आह्वान और प्रयोग की सूचना क्षेत्रों में फैलते ही परिजनों के पत्र आने लगे। कुछ परिजन तो अगले दो चार दिनों में शान्तिकुंज आने लगे। वे पत्रों द्वारा या खुद यहां आकर पूछ रहे थे कि एक लाख साधकों में उनका भी नाम है या नहीं। यदि नहीं है तो आग्रह था कि उनका नाम भी सम्मिलित किया जाए।

एक लाख साधकों का चयन वसंत पंचमी तक कर लिया जाना था। गुरुदेव ने कहा था कि चयन कर लिया गया है। यह अभियान हिमालय के गुह्यप्रदेश में विश्व के आध्यात्मिक और उनसे प्रेरित लौकिक क्रियाकलापों का संचालन कर रही दिव्य शक्तियों द्वारा संचालित किया जा रहा है। वे स्वयं सिर्फ मार्गदर्शन करते हुए दिखाई भर दे रहे हैं। एक लाख साधकों के चुनाव, साधन अनुष्ठान, संरक्षण और दोष परिमार्जन की व्यवस्था हिमालय के उन्हीं दिव्य पुरुषों द्वारा की जा रही है। जरूरी नहीं कि एक लाख साधक ही यह साधना क्रम अपनायें। जिनकी भी निष्ठा और उत्कंठा हो वे इस उपासना अनुष्ठान में लगें। सफलता और सार्थकता की कसौटी यह है कि साधना क्रम बिना रुके चलना चाहिए और वह संपन्न भी नियत समय पर हो जाए।

साधना क्रम का विधान अगले महीने जनवरी १९७६ की अखण्ड ज्योति में भी छपा। इससे स्पष्ट हो गया कि विधि विधान में गुह्य रखने जैसी कोई प्रक्रिया नहीं है। वह सबके लिए खुला है। नियत समय पर, निश्चित समय तक इसे संपन्न करना आवश्यक था। समय सूर्योदय से पूर्व करीब दो घड़ी अर्थात पैंतालीस मिनट पहले आरंभ करने का था। सूर्य उदय होने तक इसे संपन्न कर लिया जाना चाहिए । इस साधन विधान को अपनाने के लिए कार्यकर्ताओं में अदभुत उत्साह उभरा।

समाचार मिल रहे थे कि शाखाओं में अखंड ज्योति के जनवरी ७६ अंक में प्रकाशित 'अपनों से अपनी बात' स्तंभ का गीता रामायण की तरह पाठ किया गया है। जिन लोगों के पास पत्रिका नहीं पहुँचती थी, वे भी विशेष साधना में भागीदार बने। उन्होंने अपने लिए 'स्वर्ण जयंती वर्ष की विशेष साधना' लेख की फोटो प्रतियां तैयार करा लीं। जिनके लिए यह संभव नही हो सका उन्होंने लेख की नकल कर प्रतिलिपि बना ली। वसंत पंचमी में अभी समय था। साधना का विधिवत आरंभ उसी दिन होना था, लेकिन उत्साही साधकों ने विधि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का पता चलते ही अभ्यास आरंभ कर दिया। यह मान ही लिया कि विशिष्ट साधकों की मंडली में उनका नाम तो शुमार होगा ही।

पश्चिम बंगाल में दक्षिणेश्वर मंदिर के पास कृष्णानंद चट्टोपाध्याय नामक कार्यकर्ता गीता जयंती पर शान्तिकुंज में ही थे। वहां उन्होंने गुरुदेव का संदेश सुना था। शिविर से लौटते ही उन्होंने साधना आरंभ कर दी। विधि विधान तब मालूम नहीं हुआ था। कृष्णानंद ने दो वर्ष पहले प्राण प्रत्यावर्तन साधना शिविर में भाग लिया था। उस समय गुरुदेव जिस साधना का अभ्यास करा रहे थे, उसे ही जारी रखा। बीच में थोड़ी शिथिलता आई थी, उसे दूर कर लिया। महाशिवरात्रि के दिन उन्होंने अपने आपको स्वर्ण जयंती साधना में निरत होने वाले साधकों की मंडली का सदस्य मान लिया और प्रातः सायं दोनों समय भगवान सविता देव की साक्षी में भगवती गायत्री महाशक्ति की आराधना करने लगे। जब तक नया विधान मालूम नहीं हो गया, तब तक इसे ही चलाते रहें। इस बीच कृष्णानंद को एक अनूठा अनुभव हुआ।

मान्यता के मोहताज नहीं

मंदिर के पास जिस बस्ती में कृष्णानंद रहते थे, वहां पास में एक बगीची थी। बगीची में एक छोटा सा मंदिर भी था। प्रांगण में भजन कीर्तन के कार्यक्रम होते रहते थे। कभी कभार सत्संग आदि का आयोजन भी होता। महाशिवरात्रि बीते तीन चार दिन हुए होंगे। बगीची में कुछ भक्त श्रद्धालु एकत्र हुए। वे किसी संत में दैवी गुणों की चमत्कारी क्षमताओं की संभावना के बारे में चर्चा कर रहे थे। कुछ लोगों का मानना था कि चमत्कारी क्षमताएँ होती हैं और कुछ का कहना था कि नहीं होती। चर्चा बढ़ते बढ़ते विवाद में बदल गई और एक बहस का रूप धारण कर गई। उपस्थित श्रद्धालु जोर जोर से बोलने लगे और अपना पक्ष बताने लगे। विवाद और जोर पकड़ता कि उस स्थल पर एक साधु ने प्रवेश किया और लगभग फटकारते हुए से कहा, 'यह बहस बंद करो। ईश्वरीय गुणों की संभाव्यता के बारे में चर्चा से क्या लाभ ?'

उन साधकों या बुद्धिजीवियों में से एक ने कहा, 'हम ईश्वर के दिव्य गुणों की नहीं, उत्तरांचल में विद्यमान एक संत के गुणों की चर्चा कर रहे हैं। उनके बारे में बहुत लोगों का मानना है कि वे अलौकिक महापुरुष हैं और संकल्प मात्र से कुछ भी करने में सक्षम हैं।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुनकर उन साधु ने कहा, 'बिना जाने समझे उनके या किसी के भी गुण दोषों को बातचीत से कैसे समझा जा सकता है। या तो चुप रहो अथवा परखना है तो उनसे व्यवहार बनाकर परखो।' फिर वे साधु कुछ देर रुके और चुप्पी तोड़ते हुए बोले, 'भगवान अपनी उपस्थिति का भान कराने और अपनी सृष्टि को सुंदर बनाने के लिए साधु संतों और दिव्य आत्माओं के रूप में मानवीय शरीर का उपयोग करते हैं। वे किसी की मान्यता और अस्वीकृति के मोहताज नहीं होते।' कहकर उन साधु ने आंखें बंद की और कुछ क्षण बाद खोलीं। उन्होंने संभवतः अपने इष्ट या गुरु का स्मरण किया था। इस स्मरण के बाद फिर उन्होंने अपनी बात शुरु की। उन्होंने दो तीन उदाहरणों और संस्मरणों से दिव्य आत्माओं से मिल सकने वाले सहयोग के बारे में बताया। तभी बगीची में एक दिगम्बर संन्यासी का आगमन हुआ। उन संन्यासी को बगीची में मौजूद साधकों ने पहले कभी नहीं देखा था। कुछ साधक दक्षिणेश्वर स्थित काली मंदिर भी नियमित रूप से जाया करते थे। वहां भी इन संन्यासी को कभी नहीं देखा था। ऊंचा पूरा शरीर, बर्फ जैसे सफेद बाल, तपे हुए गेहुंए रंग का ताम्बे जैसा शरीर और तेज से भरी हुई आंखें कि जिस पर नजर पड़ जाए उसे रोमांचित कर दें।

साधकों से चर्चा कर रहे उन साधु ने दिगम्बर संन्यासी को प्रणाम किया। उनके देखा देखी दूसरे साधकों या सत्संगियों ने भी प्रणाम किया। दिगम्बर संन्यासी ने कोई भी अभिव्यक्ति दिए बिना उन साधकों का अभिवादन स्वीकार दिया और बोले, 'यहां उपस्थित साधकों में से कितने लोग भजन पूजन करते हैं?'

सुनकर चार व्यक्तियों ने हाथ उठाये। कृष्णानंद ने भी हाथ उठाया। उन दिगम्बर साधु ने कृष्णानंद को इंगित कर कहा कि तुम अपने हाथ नीचे कर लो। तुम भजन पूजन नहीं कर रहे हो, वृथा ही हाथ उठा दिए। इस पर वहां मौजूद साधकों में से कुछ को हंसी आ गई। संन्यासी ने उन लोगों के हंसने पर कुछ नहीं कहा। इस पर कृष्णानंद ने कहा, 'मगर प्रभु मैं तो कई वर्षों से प्रातःकाल उठकर नियमित उपासना करता हूँ। मैंने अपने गुरु से दीक्षा लेने के बाद उनसे उपासना का विधान सीखा है। उसी का अभ्यास कर रहा हूँ।'

यह सुनकर दिगम्बर संन्यासी ने कहा, 'लेकिन यह घोषणा करना जरूरी नहीं है कि तुम भजन पूजन करते हो। तुम्हें तो तुम्हारे गुरु ने इसके लिए चुना है। जब उन्होंने स्वयं चुना है तो तुम्हारे करने या नहीं करने का कोई अर्थ नहीं है। मैंने तो सायास भजन पूजन करने वालों के बारे में पूछा था।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसके बाद दिगम्बर संन्यासी ने साधना, सिद्धि, साधु संतों की दिव्य क्षमताओं और ईश्वरीय गुणों के बारे में क्या कहा, क्या नहीं ? कृष्णानंद को कुछ नहीं सुनाई दिया। वह दिगम्बर योगी के एक वक्तव्य को सुनकर ही अपने पथ प्रदर्शक की स्मृति में, उनके गुणों और भावों में खो गया।

गीता जयंती पर साधना स्वर्ण जयंती की घोषणा के करीब दो माह बाद कहा गया था कि इस शृंखला में एक लाख साधकों की संख्या पूरी होने के बाद नये साधकों का समावेश नहीं किया जायेगा। उन साधकों का चुनाव वसंत पंचमी से पहले ही कर लिया जायेगा। संख्या पूरी होने के बाद अन्य इतने लोग भी यह साधनाक्रम अपना सकते हैं लेकिन विशेष संरक्षण और अनुदान प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रतीक्षा करनी होगी। अपने को इस योग्य बनाने के लिए उन साधकों को साधना में श्रम करना होगा ओर प्रतीक्षा भी। इस प्रतिबंध ने कई साधकों को व्यथित किया। उनकी शिकायत थी कि इस अवसर से उन्हें क्यों वंचित किया जा रहा है ? शिकायत करते हुए उन परिजनों ने वंदनीया माताजी को पत्र लिखे, उनसे भेंट का अवसर मिलने पर कहा भी सही। शान्तिकुंज में चलने वाले साधना शिविरों में पहुंचे ऐसे लोगों ने गुरुदेव के सामने भी अपना दुखड़ा रोया। उन साधकों को उनकी मन:स्थिति और आवश्यकता के अनुसार समझा दिया गया। लेकिन ऐसे साधक भी थे जिनकी आन्तरिक स्थिति विकसित थी। नहीं चुने जाने का कोई कारण नहीं था लेकिन उन्हें स्वर्ण जयंती साधना मंडली में नहीं चुना गया। आंध्रप्रदेश में मुबारकपुर के साधक जगन तारक इसी तरह के साधक थे। उन्होंने १९५८ में गुरुदेव से दीक्षा ली थी और वे प्रात:सायं दोनों समय ब्रह्मसंध्या करते थे। सूर्योदय और सूर्यास्त के निर्धारित समय अनुशासन का उन्होंने सदा पालन किया। रोग बीमारी की अवस्था में या यात्रा में रहने के समय भले ही कभी व्यवधान हुआ हो, अन्यथा ऐसी स्थिति कभी नहीं आयी कि नियम अनुशासन टूटा हो।

जगन तारक के सम्बन्ध में विदाई सम्मेलन के समय १९७१ में गुरुदेव ने कहा था कि वे निष्ठापूर्वक कदम से कदम मिलाकर चल रहे हैं। पिछले चौदह वर्षों में उन्होंने सभी निर्देशों का निष्ठापूर्वक पालन किया। चाहे वह आत्मिक प्रगति के लिए दिये गए हों या समाज साधना के लिए। गुरुदेव ने विदाई सम्मेलन से कुछ ही समय पूर्व बुलाये गये परामर्श शिविरों में जगन तारक को आगे चलकर नई जिम्मेदारियां उठाने के लिए कहा था। जगन ने अपने लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
साधना उपासना की दृष्टि से विशेष निर्देश मांगे थे तो गुरुदेव ने आश्वासन लिया कि अभी इसकी आवश्यकता नहीं है। जरूरी होने पर वे कहेंगे। शायद जरूरत पड़े भी नहीं। क्योंकि उनकी आत्मिक क्षेत्र की आवश्यताएं वे स्वयं पूरी करते रहेंगे।

जहां तक जगन तारक की आत्मिक प्रगति का प्रश्न है गुरुदेव उससे संतुष्ट हैं। जगन तारक की तरह नवसारी (गुजरात) के गोकुल भाई, जौनसार (बिहार) के रमण कुमार सिंह, नलिनपुर (तामिलनाडु) के पी.आर. गोपालन, कोझिपेड की शालिनी, मंडला (मध्य प्रदेश) के मधुसूदन, मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) के नारायण शर्मा और भीलवाड़ा (राजस्थान) के फतेह सिंह आदि कार्यकर्ताओं के अनुसार गुरुदेव ने उनकी आत्मिक स्थिति पर भी संतोष व्यक्त किया था। यह बात पत्रों, निजी चर्चाओं और उन क्षेत्रों या क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं की गोष्ठियों में उन्होंने कही भी थी। इन कार्यकर्त्ताओं का विश्वास इतना सुदृढ़ था कि वे शान्तिकुंज से अपने चुन लिये जाने की सूचना का इंतजार कर रहे थे। वसंत पंचमी तक सूचना नहीं आई तो इनमें से कुछ शान्तिकुंज गये। वैसे कार्यकर्ता प्रतिवर्ष वसंत पंचमी पर गुरुदेव माताजी के दर्शन करने शान्तिकुंज आया करते थे। इस बार जिद लेकर गये कि अपने नहीं चुने जाने का कारण पूछेंगे। कहीं कोई भूलचूक हो गई हो तो अलग बात है। वरना उन्हें वंचित रखा गया है तो अपनी आपत्ति दर्ज करायेंगे।

नलिनपुर के पी.आर. गोपालन और मण्डला के मधुसूदन इसी तरह की शिकायत लेकर चले थे और संयोग से भोपाल में मिल गए। दोनों ने तमिलनाडु एक्सप्रेस का टिकट लिया था। वे एक ही कंपार्टमेंट में थे। दोनों की बर्थ अलग अलग थी। कंपार्टमेंट में चहल कदमी करते हुए पता चला कि दोनों गुरुभाई हैं तो सहयात्रियों से निवेदन कर बर्थ की अदला बदली कर ली और पास पास आ गए। आपस में बातचीत करते हुए दोनों में आत्मीयता के तार जुड़ गए। दोनों ने विशेष साधना में नहीं चुने जाने की पीड़ा एक दूसरे से कही। इस पीड़ा को बांटते हुए दोनों ने एक मुकाम पर तो यहां तक निश्चय कर लिया कि उन्हें नहीं चुना गया तो गुरुदेव से जिद करेगे। बात जिद से नहीं बनी तो झगड़ा भी करेंगे। इस निश्चय के बाद थोड़ी ग्लानि हुई तो गोपालन ने यह कहते हुए उसे दूर किया कि झगड़ा क्यों नहीं कर सकते? वे अपने पिता हैं और जब पिता हमें अपना वांछित नहीं देता तो संतान झगड़ा करती है या नहीं? हम भी तो उन्हीं के पुत्र हैं। कहते कहते दोनों हंस दिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समाधान की फिक्र नहीं

वसंत पंचमी पर 'अपनी इस तरह की शिकायतें लेकर आए परिजनों की संख्या का अनुमान लगाना कठिन था। उन परिजनों ने अपनी व्यथा किसी से कही सुनी तो थी नहीं। इक्का दुक्का ही थे जिनने मन की बात अपने आत्मीय बने परिजनों से कही। लेकिन आश्चर्य यह कि गुरुदेव माताजी के चरणों में प्रणाम निवेदन के बाद कई साधकों का समाधान हो गया। समाधान का यह संदेश जाते जाते उनके द्वारा गुरुदेव के नाम लिखे पत्रों में व्यक्त हुआ। गुरुदेव ने उन परिजनों की भावनाओं के बारे में दो दिन बाद हुई कार्यकर्ता गोष्ठी में बताया।

उस गोष्ठी में गुरुदेव ने वसंत पर्व पर आये साधकों की मनोदशा का जिक्र किया। इस उल्लेख में एक लाख साधकों की परिधि से बाहर रह गए परिजनों की उलझनों और समाधान के संकेत थे। जिन परिजनों के मन में विशेष साधना में सम्मिलित नहीं होने की पीड़ा थी, उन्हें गुरुदेव ने कहा था कि इस शृंखला से कुछ साधक गायत्री जयंती से स्वतः हटेंगे शृंखला से बाहर रहते हुए जो परिजन विशेष साधना कर रहे होंगे, उन्हें प्रवेश मिल सकेगा। छोड़ दिए गये साधकों में कुछ ऐसे भी थे, जिन्हें स्थानीय मंडलियों के लिए स्थानीय आयोजनों की व्यवस्था संभालनी थी। जहां जहां भी मंडलियां बनी, वहां वहां चार दिवसीय साधना सत्र लगाये जाने थे। इन सत्रों की व्यवस्था का काम विशिष्ट दायित्व के लिए सुरक्षित कार्यकर्ताओं को देखना था। उन चार दिवसीय साधना सत्रों में शान्तिकुंज हरिद्वार से एक प्रतिनिधि भेजने का निश्चय दिया था।

इतनी जानकारी देने के बाद गुरुदेव ने कार्यकर्ताओं से कहा कि साधना मंडली के सदस्यों को क्या समाधान दिए गए हैं, इस बारे में आश्रम के कार्यकर्ताओं को ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं है। उन्हें तो अपने आपको इसके लिए तैयार करना है कि वे साधना मंडलियों के जहां भी स्थानीय शिविर हों, वहां जाने और शिविरों को संचालित करने के लिए अपने आपको साधें। उन साधकों के लिए निर्धारित साधना क्रम स्वयं अपनायें और आश्रम व्यवस्था में अपने जिम्मे जो काम हो उसे भी निष्ठा पूर्वक करते चलें।

यह भी भगवान का काम

वसंत पंचमी के बाद साधकों को विलक्षण अनुभूतियां हुईं। उन्हें भी जो इन मंडलियों में सम्मिलित नहीं हो सके थे। जहांगीरपुर (महाराष्ट्र) के एक कार्यकर्ता संयम जोगलेकर गुरुदेव के मथुरा छोड़ देने के बाद से ही ज्ञानरथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चलाते थे। यों उनका बिजली का अच्छा व्यवसाय था। बल्ब, बिजली के तार और प्रेस, चूल्हे जैसे उपकरणों की डीलरशिप थी। उन्होंने एक स्थाई कार्यकर्ता ज्ञानरथ चलाने के लिए नियुक्त कर रखा था जो सुबह आठ बजे से शाम दस बजे तक चल पुस्तकालय चलाता। दोपहर में दो घंटे का भोजनावकाश होता। संयम जोगलेकर को इतने भर से संतोष नहीं होता। शाम चार बजे से सात बजे तक वे स्वयं ज्ञानरथ चलाते। गाड़ी लेकर जहांगीरपुर के गली मोहल्लों में जाते और साहित्य में उत्सुकता जताने वालों को पुस्तकें देते। जिनसे संपर्क किया जाता वे पुस्तकें खरीदें या लायब्रेरी की सदस्यता लेकर पढ़ने के लिए लें, यह उनकी इच्छा पर होता था। संयम अपना काम उस विचार प्रवाह के संपर्क में लाना और उससे जोड़ देना भर मानते थे। यह काम करते हुए उन्हें सात वर्ष हो गए थे। मथुरा में हुए विदाई सम्मेलन से पहले ही उन्होंने चल पुस्तकालय शुरु कर दिया था।

स्वर्ण जयंती वर्ष के विशिष्ट साधना क्रम का उन्हें पता चला और उसका विधि विधान पत्रिका के पन्नों पर पढ़ा तो उमंग उठी कि स्वयं भी इसे अपनाया जाये। कामकाजी जीवन में यह थोड़ा कठिन लगा। ग्यारह बजे तक बाजार से फुरसत मिलती। घर लौटकर दिन भर का हिसाब किताब करने और उसके बाद सोने की तैयारी में एक डेढ़ बजते। सुबह साढ़े पांच-पौने छह बजे तक उठकर तैयार होने और साधना पर बैठने पर कठिनाई महसूस हुई। फिर शाम के लिए ज्ञानरथ का क्रम भी बदलना होगा। इसके लिए संयम का मन इजाजत नहीं दे रहा था। विशेष साधना के लिए अपना नाम प्रस्तावित करें या नहीं? इसी उधेड़बुन में मन विकल हो उठा। अखंड ज्योति के जनवरी ७६ अंक में जिस दिन स्वर्ण जयंती वर्ष का आह्वान पढ़ा, उसी दिन से मन में पुकार उठने लगी। गुरुदेव को संबोधित कर कई बार प्रार्थना की कि कोई रास्ता सुझायें। ऐसी व्यवस्था बने कि स्वयं भी विशिष्ट साधकों के इस वर्ग में सम्मिलित हुआ जा सके। मन को समझाने के लिए कई प्रयत्न किए, अपने आपको बार-बार समझाया कि विशेष साधकों में चुना जाना है तो गुरुदेव स्वयं व्यवस्था करेंगे। उसके लिए व्यथित होना या चिंता करना बेकार है। बार बार समझाये जाने पर भी मन राजी नहीं हो रहा था।

एक दिन संयम के मन में विचार आया कि ज्ञानरथ स्वयं चलाना बंद कर दें। उसके लिए जिस कार्यकर्ता को नियुक्त किया गया है उसका वेतन पारिश्रमिक पच्चीस तीस प्रतिशत बढ़ा दें और शाम का बचने वाला समय स्वर्ण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जयंती साधना में लगायें। इस विचार के उठते ही सवाल उठा कि नियुक्त कार्यकर्ता इतना भावनाशील और विचारवान तो होगा नहीं कि नए इलाकों में जाकर लोगों को अपने जैसी लगन और निष्ठा से साहित्य के बारे में बता सके। यह विचार उठते ही अंतरात्मा ने फटकारा कि अपने आपको ज्यादा भावनाशील मानने का अहंकार क्यों उठ रहा है? वह परिचालक पिछले छह सात साल से ज्ञानरथ चला रहा है। उसने वेतन पारिश्रमिक बढ़ाने की कभी मांग नहीं की। अपनी तुलना में तो वह ज्यादा उदार और भावनाशील है। अंतरात्मा की इस प्रताड़ना से पहले क्षण भर के लिए यह विचार भी आया था कि अभी काम देख रहे कार्यकर्ता को हटा दिया जाए और उसके स्थान पर अधिक शिक्षित योग्य तथा मिशन से जुड़ा युवक नियुक्त कर लिया जाए। यह विचार भी देर तक नहीं टिक सका। उठते ही ढलती हुई धूप की तरह उतर गया।

मन में कई तरह के संकल्प विकल्प उठे। उनमें से कोई भी नहीं टिक सका। मन और मस्तिष्क को इस उधेड़बुन ने बुरी तरह थका दिया। दिन भर के कामकाज पूरा होने के बाद रात में सोने की तैयारी की और बिस्तर पर लेटना हुआ तो संयम को 'हर दिन नया जन्म-हर रात नई मौत' के शेष सूत्र का स्मरण आया। इस सूत्र का उत्तरार्ध चिंतन आरंभ हुआ था कि मन में दिन भर उठते रहे संकल्प विकल्पों की याद आई। उनकी समीक्षा करते करते चेतना ने ज्ञानरथ चलाना छोड़ने के विचार से छलांग लगाई और मार्च १९६९ में गुरुदेव से हुई भेंट के क्षणों में पहुँच गई। उस समय गायत्री तपोभूमि मथुरा में नवरात्रि साधना शिविर लगा था। संयम ने भी उसमें हिस्सा लिया था। शिविर के पांचवे या छठे दिन गुरुदेव ने संयम को अपने पास बुलाया और उसकी निजी पारिवारिक, सामाजिक समस्याओं, गुत्थियों और आकांक्षाओं के बारे में पूछा। बिस्तर पर पड़े पड़े दिन भर चले विचारों की समीक्षा करते हुए संयम को मथुरा के शिविर में हुई और बातें तो याद नहीं आई, गुरुदेव से अपनी साधना उपासना के बारे में हुई चर्चा का स्मरण हो गया। संयम ने गुरुदेव से कहा था कि साधना उपासना में नियमितता नहीं बन पा रही है। पढ़ाई लिखाई और कामकाज में ज्यादा ध्यान अटका रहता है इसलिए दोनों समय जप ध्यान नहीं होता। यह नियम सध जाए, ऐसा आशीर्वाद दें।

गुरुदेव ने कहा था कि प्रयत्न करने से नियमितता सधे तो ठीक और नहीं सधे तो तुम्हारी जिम्मेदारी मैं लेता हूँ। जिन विचारों और संस्कारों में तुम्हारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
आस्था सुदृढ़ हुई है, उनका प्रचार करते रहो। यह भी गायत्री माता का और हमारा ही काम है। यह काम करते रहोगे तो तुम्हारी आत्मिक प्रगति के लिए जो भी आवश्यक होगा, उसका उपाय हो जायेगा। यह संवाद याद आते ही संयम की सारी दुविधा दूर हो गई। मन में उठने वाले द्वन्द्व मिट गए और आकाश में छाए घटाटोप बादल छट जाने के बाद छिटक उठने वाली चांदनी की तरह मन और मस्तिष्क में आश्वासन की धारा बिखर गई। अब चिंता की कोई बात नहीं।

समर्थन और विरोध भी

स्वर्ण जयंती साधना का जो स्वरूप गुरुदेव ने साधकों के सामने रखा था उसमें दैनिक पूजा उपचार के साथ सोहम प्राणयोग, गायत्री जप और ध्यान, खेचरी मुद्रा तथा सूर्य अर्घ्य दान की विधियां समाविष्ट थीं। उपासना आरंभ करते समय पवित्रीकरण, आचमन आदि षटकर्म भी पूरे किए जाने थे। साधकों को इस विधान में रंचमात्र भी संदेह नहीं था लेकिन प्रकाशित होते ही कुछ धर्माचार्यो ने मीनमेख निकालना शुरु किया। पहली प्रतिक्रिया धर्मसंघ के प्रमुख स्वामी हरिहरानंद की आई। करपात्री जी के नाम से विख्यात इन विभूतिवान संत ने गुरुदेव द्वारा गायत्री मंत्र को सर्वजन सुलभ बनाने की प्रशंसा की थी। प्रशंसा अब भी की थी लेकिन उन्हें इस विधान को आने वाले समय में संध्यावंदन की युगीन पद्धति बताए जाने से विरोध था। गुरुदेव को लिखे पत्र में उन्होंने कहा कि गायत्री मंत्र की उपासना हर कोई करे, हम लोग सिद्धान्त रूप में इसके विरुद्ध हैं, लेकिन इस उपासना और संध्याविधि को लोग भूलते जा रहे हैं। समय और विधि का लोप होने लगे तो क्रिया का लोप नहीं होना चाहिए। इस शास्त्रीय मान्यता में विश्वास करते हुए हम लोग आपके प्रयासों की सराहना करते हैं। आपत्ति यह है कि आप नया विधान रचकर उसे प्रचलित करने के उपक्रम में जुट गए हैं। आपका उद्देश्य कितना ही शुभ हो लेकिन शास्त्र मर्यादा की अवहेलना तो हो ही रही है। हम लोग असहमति ही नहीं अपना विरोध भी दर्ज कराते हैं। सनातन धर्म की मर्यादा बनाए रखने के लिए इस उपक्रम को यथाशीघ्र स्थगित करें तो शुभ होगा।

गुरुदेव ने इस पत्र का अत्यंत संक्षिप्त उत्तर दिया। उसमें अपने मत को सही या करपात्री जी के मत को त्रुटिपूर्ण नहीं बताया। सिर्फ इतना ही कहा कि भगवान की जब भी इच्छा होगी हम आपसे भेंट करेंगे और अपना पक्ष रखेंगे। अपना पक्ष रख चुकने के बाद भी आपको कोई त्रुटि दिखाई दे तो बताइगा। हम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
अपना मार्ग बदल देंगे। गुरुदेव ने यह पत्र स्वयं लिखा था। वेदमाता गायत्री ट्रस्ट के लैटर हेड पर लिखे इस पत्र को पोस्ट करने के लिए उन्होंने माताजी के पास भिजवा दिया। करीब आधा घंटे बाद माताजी ने पत्र के बारे में चर्चा करनी चाही। गुरुदेव ने माताजी की बात सुनी और कहा संदेश प्रासंगिक है। स्वामी जी ने सचमुच उसमें कोई दोष सिद्ध किया तो दिए गए वचन के अनुसार हमें अपना विधान बदलना पड़ेगा। लेकिन निश्चित मानो कि इसकी जरूरत ही नहीं पड़ेगी। यह हमारा अपना विधान या मानवीय प्रयत्न थोड़े ही है।

पत्र भेज दिया गया। लौटती डाक से करपात्री जी का उत्तर आया। उन्होंने कहा था कि निकट भविष्य में उनका हरिद्वार आने का कार्यक्रम नहीं है। आप शान्तिकुञ्ज छोड़कर अन्यत्र नहीं जायेंगे, इस विषय में हम किसी निष्कर्ष पर कैसे पहुंच सकते हैं? गुरुदेव ने इस पत्र का तुरंत कोई उत्तर नहीं दिया। इसमें उन्होंने लिखा था कि अब कोई संशय नहीं रहा। आप अपने प्रस्थान बिंदु पर सही हैं। भगवान शंकर की जय हो। सभी जानते हैं कि करपात्री जी श्रीविद्या के सिद्ध साधक थे। इस विषय में उन्होंने कई ग्रंथ लिखे थे और उनके विवेचन को सभी जगह सराहा गया था। उनकी मान्यताओं को शास्त्रीय आधार पर इतना स्तुत्य माना जाता था कि क्या पारंपरिक और क्या आधुनिक सभी श्रेणी के विद्वान मनीषी उनकी पुष्टि करते थे। जिस किसी भी विद्वान मनीषी ने उनकी सदाशयता को समझा और परखा, उसने सराहा और उसका समर्थन किया।

इस संबंध में १९५६ की एक घटना प्रसिद्ध है, जिसमें विनोबा भावे की प्रेरणा से काशी विश्वनाथ मंदिर में हरिजनों ने प्रवेश किया और करपात्री जी ने इसकी आलोचना की। उन्होंने शास्त्रीय और आध्यात्मिक आधार पर इसे वर्जित करार दिया। यही नहीं भविष्य में कभी उस काशी विश्वनाथ मंदिर में प्रवेश नहीं करने का संकल्प भी ले लिया। काशी विश्वनाथ की आराधना के लिए उन्होंने धर्मसंघ परिसर में एक नया मंदिर बनवाया और उसे विश्वनाथ मंदिर का नाम दिया। समाज सुधार और मंदिरों में सभी के प्रवेश को सही ठहराने की दृष्टि से करपात्री जी की यह पहल सही नहीं थी। जे. कृष्णमूर्ति ने 'द इलेस्ट्रेटेड वीकली' को दिए साक्षात्कार में उन्हें अपने समय का विशिष्ट धर्माधिकारी बताया था। उन्होंने मंदिर बनाने की आवश्यकता से इंकार किया था लेकिन जबर्दस्ती मंदिर प्रवेश को व्यर्थ बताते हुए करपात्री जी के दृष्टिकोण का पक्ष लिया। जे. कृष्णमूर्ति की शैली में वर्षों बाद ओशो ने भी मंदिर विज्ञान पर चर्चा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करते हुए एक प्रवचन में करपात्री जी के पक्ष को अध्यात्म विज्ञान की दृष्टि से सही माना था।

इन तथ्यों का उल्लेख धर्म परंपरा में करपात्री जी की आधिकारिक मान्यता के संदर्भ में किया जा रहा है। गुरुदेव ने उनके पत्र का उल्लेख वर्षों बाद किया। इस बारे में उन्होंने माताजी से सिर्फ इतना ही कहा कि करपात्री जी का समाधान हो गया है। वे साकार उपासना, पूजा और प्रार्थना समन्वित गायत्री उपासना या ब्रह्मसंध्या अथवा गायत्री योग के अभिनव विधान को शास्त्रसम्मत मानने लगे हैं। बिना किसी चर्चा, विमर्श और तर्क वितर्क के उन्होंने गायत्री योग को कैसे मान्यता दे दी? जिन संत ने समाज सुधार की भावना से चलाए गए मंदिर प्रवेश अभियान को शास्त्र विरुद्ध बताया था उन्होंने पांच सात मिनट में ही संपन्न हो जाने वाली ब्रह्मसंध्या को ज्यों का त्यों कैसे स्वीकार कर लिया? इस विषय में न गुरुदेव ने कुछ कहा और न ही किसी ने पूछने की जरूरत समझी।

शास्त्र सम्मत गायत्री योग

करपात्रीजी द्वारा गायत्री योग को शास्त्र सम्मत मान लेने का रहस्य भागवत के प्रसिद्ध विद्वान कथावाचक डोंगरे जी महाराज ने किया था। किसी प्रसंग में चर्चा चलने पर उन्हें स्वयं करपात्री जी ने बताया था। डोंगरे जी ने कहा कि करपात्री जी से गायत्री योग के सम्बन्ध में पूछा तो उन्होंने गोस्वामी तुलसीदास का प्रसंग सुनाया। कहा कि गोस्वामी जी की रची रामायण रामचरित मानस को उस समय के पंडितों, विद्वानों ने और धर्माचार्यों ने अमान्य कर दिया था। विद्वानों ने मानस की परीक्षा का एक उपाय निकाला। उस उपाय में मानस की हस्तलिखित प्रतिलिपि काशी विश्वनाथ मंदिर में रख दी गई। उस प्रति पर अन्यान्य धर्मग्रंथ रख दिए गए और मंदिर के द्वार रात्रि में यथा समय बंद कर दिए गए। तय किया कि सुबह मानस की स्थिति और स्वरूप को भगवान विश्वनाथ प्रमाणित करेंगे। भाव यह था कि ग्रंथ से काशी विश्वनाथ का विग्रह क्या व्यवहार करता है?

सुबह हुई। उन सभी विद्वानों की उपस्थिति में मंदिर के पट खोले गए। सबने देखा रामचरित मानस की प्रति सब ग्रंथों से ऊपर रखी है। उस पर भगवान शंकर की मुद्रा अंकित है और लिखा है सत्यं, ज्ञानं, अनंतं। उपनिषद के इस वाक्य के आगे 'ब्रह्म' शब्द नहीं लिखा था। करपात्री जी ने डोंगरे महाराज से कहा कि गायत्री योग के सम्बन्ध में भी उन्होंने इसी तरह का प्रयोग किया था। आचार्य जी (गुरुदेव) ने स्वर्णजयंती साधना या गायत्री योग का जो विधान भेजा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

था, उसे भूतभावन भगवान काशी विश्वनाथ के सामने रख दिया गया। यह शिवरात्रि के बाद वाला दिन था। उस विधि के साथ अन्य संध्या विधियां भी थीं और सुबह मंदिर के पट खोले गए तो आचार्यजी की प्रवर्तित गायत्री योग की विधि सबसे ऊपर थी। उस प्रति पर 'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म' का पूरा वाक्य लिखा था और नीचे काशी विश्वनाथ की मुहर थी।

सन् १९७४ के कुंभपर्व में मार्च अप्रैल के महीनों में करपात्री जी हरिद्वार आए थे। डोंगरे महाराज के सुनाए प्रसंग का जिक्र करते हुए एक राष्ट्रीय दैनिक के संवादादाता ने उनसे पूछा 'और लोग तो रामचरित मानस पर भगवान शंकर द्वारा 'सत्यं शिवं सुंदरम' लिखे होने की बात कहते हैं। डोंगरे महाराज ने उनसे पूछा आप 'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म' लिखा गया मानते हैं। सही क्या है?

करपात्री जी ने कहा कि 'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म' ही सही है। दूसरा पद तो प्रार्थना समाज के केशवचंद्र सेन द्वारा यूनानी शब्दों का किया अनुवाद है। वे शब्द यूनानी दार्शनिक सुकरात कहा करते थे। कह कर करपात्री जी रुक गए थे। संवाददाता ने पूछा कि सुकरात ने जो कहा वह भी आध्यात्मिक ही है। भगवान को उसे लेने या नहीं लेने से क्या परहेज। वे सत्यं शिवं सुंदरम भी तो लिख सकते हैं। पूछने पर करपात्री जी ने तपाक से कहा, नहीं लिख सकते। मानस की वह प्रति मैंने भी देखी है और एक बार यह प्रयोग मैंने भी किया है। उस समय भी उपनिषद वाक्य ही अंकित था। यही नहीं मान्यता के अनुसार जो सत्य है वह कल्याणमय भी है और सुंदर भी है। सत्य में ये विशेषताएं स्वयमेव निहित हैं। इसलिए उसके साथ कल्याण और सुंदरतावाची शब्द लगाना आवश्यक नहीं हैं। करपात्री जी के इस सूक्ष्म विवेचन से सहमत हुआ जाए या नहीं, यह अलग बात है लेकिन उन्होंने अपने प्रयोग में प्रयोज्य विधेय का उल्लेख नहीं किया था। अंगरेजी के सुनाए प्रसंग का जिक्र आया तो उन्होंने युवकों से हामी भरते हुए कहा कि पुरानों के स्थान पर नए विधान सहज स्वाभाविक ढंग से आने चाहिए।

स्वर्ण जयंती साधना, जो भविष्य में गायत्री योग के रूप में स्थापित प्रचलित होनी थी, को समकालीन साधु संतों ने आसानी से मान्यता नहीं दी। वेदान्त का प्रचार और शिक्षण कर रहे स्वामी चिन्मयानंद 'अहं ब्रह्मास्मि' आदि महावाक्यों का मर्म समझते हुए विश्वभर में यात्राएं कर रहे थे। वे भगवदगीता, उपनिषद और ब्रह्मसूत्र को आधार बनाकर भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
युगानुरूप विवेचना करते थे। हिंदू धर्म का परिचय नामक पुस्तक में उन्होंने लिखा भी था कि प्रत्येक भारतीय धर्मानुयायी को कम से कम दोनों समय संध्यावंदन और गायत्री का जप करना चाहिए। लेकिन संध्या विधि के सम्बन्ध में वे मौन थे। साधना स्वर्ण जयंती वर्ष में गायत्री परिवार की मंडलियों ने उन्हें गायत्री योग के बारे में बताया और सत्संग प्रवचनों में पूछा कि क्या यही साधना की युगानुकूल विधि है। इस पर पहली बार तो वे चुप रह गए। दोबारा तिबारा पूछने पर उन्होंने कहा कि सभी विधियां एक ही मार्ग की ओर ले जाती हैं, इसलिए किसी एक पर जोर नहीं देना चाहिए। उन्हीं साधक ने फिर पूछा, गुरुदेव क्षेत्रों में लोग हमसे इस बारे में पूछने लगते हैं। कहते हैं कि वेद वेदांग के प्रत्येक अनुयायी के लिए संध्या गायत्री की उपासना अनिवार्य है तो हमें कौन सी विधि अपनानी चाहिए।

स्वामी चिन्मयानंद ने गायत्री परिवार के साधकों को उस समय तो स्पष्ट कुछ नहीं कहा लेकिन स्वामी विद्यानंद विदेह ने उनसे स्पष्ट पूछ लिया। चारों वेदों के भाष्यकर्ता और संस्कृत शिक्षण की अभिनव पद्धति के अन्वेषक स्वामी विद्यानंद विदेह अजमेर (राजस्थान) में वेद संस्थान का वैदिक साहित्य और आर्यसमाज की विचारधारा का प्रचार कर रहे थे। स्वामी विदेह ने १९७७ में दिल्ली आए स्वामी चिन्मयानंद से उन्होंने पूछ लिया कि स्वामी जी आपका स्थगित निर्धारण अब भी किया जा सका है या नहीं। स्वामी जी ने यह बात अनायास ही पूछ ली थी। इसके बाद स्वामी चिन्मयानंद ने कहा था कि हमने तो पिछले वर्ष गीता जयंती पर ही 'ब्रह्मसंध्या' के पक्ष में अपनी सम्मति व्यक्त कर दी थी।

हमारे गुरु तपोवन महाराज की अनुमति से अपने सनातन धर्मियों से अनुरोध किया था कि जो लोग पारंपरिक विधान अपनाने में कठिनाई अनुभव कर रहे हैं, वे इस ब्रह्मसंध्या को अपनाएं। मध्यकाल में स्वामी रामानुजाचार्य ने जिस तरह अत्यंत गोपनीय बताए जा रहे तारक मंत्र को सबके लिए उद्घाटित कर दिया था। उन्हीं रामानुज ने इस युग में जैसे श्रीराम बन कर गायत्री मंत्र का उत्कीलन कर दिया है। शास्त्रीय भाषा में उस पर लगे प्रतिबंध और उत्कीलन हटा दिए हैं। स्वामी विद्यानंद ने इस घटना का उल्लेख बाद में साधु संतों का उपहास करने के लिए किया था लेकिन गुरुदेव के प्रति इस प्रयोग के लिए आभार ही जताया था। कहा था कि सनातन धर्म का स्वरूप मृतप्राय हो गया है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और आर्यसमाज अपनी प्रासंगिकता खोता जा रहा है। इस संक्रमण काल में गुरुदेव ने 'ब्रह्मसंध्या' अथवा 'गायत्री योग' के माध्यम से सर्वजनीन भारतीय उपासना विधि का नया उन्मेष किया है।

१९७६-७७ में छपे समाचारों और आलेखों में ब्रह्मसंध्या, गायत्री योग या साधना स्वर्ण जयंती को वर्ष की महत्त्वपूर्ण घटना बताया गया। इस विधान का विरोध करते हुए लोग भी सामने आए थे तो दबे ओर मुखर स्वरों में आलोचना करने वालों की संख्या भी कम नहीं थी। साल भर बीतते न बीतते विरोध शांत हो गया। साधना स्वर्ण जयंती का समापन होने पर विश्व अध्यात्म परिषद नामक मंच ने भारत के दस महानगरों, अट्ठाइस नगरों तथा करीब डेढ़ हजार कस्बों का सर्वे किया। सर्वे का उद्देश्य यह जानना था कि सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में चल रहे आध्यात्मिक प्रयोगों में किसकी क्या स्थिति थी। ऐसे प्रयोगों की संख्या उन्नीस थी। प्रजापति ब्रह्माकुमारी, हरे कृष्ण आंदोलन, स्वाध्याय आंदोलन, संकीर्तन, गीता प्रचार, भावातीत ध्यान और जीवन क्रांति ध्यान आंदोलन जैसे प्रयास भी इस सूची में थे। परिषद ने जनवरी १९७७ में अपने परिणाम घोषित किए और बताया कि साधना स्वर्ण जयंती अनुष्ठान लोकप्रियता और मान्यता की दृष्टि से सबसे आगे था। साधना स्वर्ण जयंती के सूत्र संचालक गुरुदेव के जल उपवास ने आंदोलन में प्रखरता भर दी थी। उस बारे में आगे के पन्नों पर चर्चा करेंगे।

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बीस

जल उपवास : प्रक्षालन प्रयोग

अक्टूबर १९७६ की दूसरी तारीख बीती भी नहीं थी कि गुरुदेव ने चौबीस दिन के जल उपवास की घोषणा कर दी। इस निश्चय का पता शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्ताओं को भी नहीं चला। यों परिजन इस तथ्य से परिचित रहे हैं और अभ्यस्त भी कि वर्ष की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का निर्धारण वसंत पर्व पर होता रहा है। पिछले वसंत पर्व पर, ५ फरवरी १९७६ को इस तरह का कोई संकेत नहीं था। तब साधना स्वर्ण जयंती की धूम मची हुई थी। साधक मंडलियों का गठन, उनमें प्रवेश पाने की पात्रताएं, उन पात्रताओं के आधार पर अपने आपको कसने और विशिष्ट साधना करने, नहीं करने के विचारों में डूबने-उतराने का ही उत्साह उमड़ा दिखाई दे रहा था। स्वर्ण जयंती साधना का गठन गायत्री जयंती को पूरा हो जाना था। वह पूरा हो गया था। उससे पहले चैत्र नवरात्र और बाद में आश्विन नवरात्र के अनुष्ठान भी संपन्न हो गए। कोई संकेत नहीं मिले कि गुरुदेव निकट भविष्य में इतना बड़ा निर्णय लेने वाले हैं।

परिजनों को गुरुदेव के स्वास्थ्य और शरीर के बारे में ज्यादा चिंता नहीं थी। सन् १९५२ में मथुरा में गायत्री तपोभूमि की स्थापना के समय भी २४ दिन का जल उपवास किया था। उस तप साधना के प्रत्यक्षदर्शी परिजन अब भी मौजूद थे। वे बताते थे कि तब गुरुदेव के शरीर में कैसा अद्भुत प्राण प्रवाह बहता था। वे कंबल या चादर ओढ़े रहते थे, लकड़ी के तखत पर सोते थे और किसी को भी अपने पैर नही छूने नहीं देते थे। परिजनों के प्रति दुलार व्यक्त करते हुए उनके सिर पर हाथ रखने, थपथपा देने वाला स्पर्श भी तब उन्होंने बंद कर दिया था। उन परिजनों का मानना था कि गुरुदेव के चुंबकीय स्पर्श से इस बार भी वंचित रहना पड़ेगा। शान्तिकुञ्ज में एक कार्यकर्ता ऐसे भी थे, जिन्होंने १९५२ में गायत्री तपोभूमि की स्थापना का समय देखा था ओर गुरुदेव के शरीर पर जल उपवास का प्रभाव भी देखा था। कन्हैयालाल श्रीवास्तव नामक कार्यकर्ता जल उपवास का निश्चय सुनकर विचलित हो उठे। २४ दिन तक निर्जल निराहार की घोषणा सुनते ही उनकी आंखों से अश्रुधार बह निकली। कुछ ही क्षण बीते होंगे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कि वे फूट फूट कर रोने लगे। आसपास के कार्यकर्ताओं ने उन्हें संभाला और गोष्ठी से उठाकर बाहर ले गए। उन्हें बाहर ले जाते देख गुरुदेव ने कहा, 'किसी तरह की चिंता मत करो कन्हैयालाल। २९ अक्टूबर को हम लोग फिर मिलेंगे और माताजी के बनाए व्यंजन खाएंगे।'

कन्हैयालाल का विलाप इस पर भी रुका नहीं था। गोष्ठी से जिन कार्यकर्ता की बांह पकड़कर वे बाहर आए थे, उनसे उन्होंने कहा था, 'हमें पता है ५२ के जल उपवास में गुरुदेव की क्या दशा हो गई थी? उनसे उठते नहीं बना था। मंदिर से यज्ञशाला तक आने के लिए उन्हें कार्यकर्ताओं को सहारा देना पड़ रहा था। बड़ी मुश्किल से गुरुदेव यज्ञशाला तक पहुंच सके थे।' उन्होंने १९५२ के जल उपवास को याद किया और चार अक्टूबर को, गुरुदेव का जल उपवास आरंभ होने से एक दिन पहले फिर कहा, 'कहीं ऐसा न हो कि गुरुदेव इस तरह अपनी लीला समेट रहे हों। तपोभूमि की स्थापना के समय उन्होंने जल उपवास खोलते समय कहा था कि चौबीस वर्ष बाद हम एक नये अध्यात्म जगत में प्रवेश करेंगे। उस प्रवेश से हजारों लोग व्यथित होंगे। लेकिन महाकाल किसी के व्यथित होने से अपने इरादे बदल तो नहीं देता।'

चौबीस वर्ष पुरानी याद

कन्हैयालाल जी ने हिसाब लगा लिया था कि तपोभूमि की स्थापना के चौबीस वर्ष पूरे हो रहे हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि उन्होंने लोकांतर यात्रा का निश्चय कर लिया हो। लगे हाथों वे यह भी कह रहे थे कि चौबीस साल पहले गुरुदेव स्वस्थ युवा थे। उनके शरीर में दम खम था। उस वक्त भी वे उपवास के बाद बहुत कमजोर हो गए थे। उपवास की अवधि में भी वे कमजोर दिखाई देते थे। अब तो उनका शरीर वृद्ध हो गया है–पैंसठ वर्ष से अधिक। पता नहीं उनकी काया उपवास के प्रभाव को सह पाए या नहीं। कहते कहते उनका गला रुंध गया। चौबीस दिन के जल उपवास की घोषणा से शान्तिकुञ्ज में रहने वाले सभी कार्यकर्ता चिंतित ओर दुखी थे। निश्चिंत और अप्रभावित सिर्फ माताजी थीं। साफ ओर दो टूक वाक्यों में उन्होंने कहा था कि गुरुदेव ने जो कहा है, उसमें तनिक भी संदेह करने की जरूरत नहीं है। आप अपने मन की शंकाओं को तूल नहीं दें, उनके वचनों पर विश्वास करें।

जल उपवास का निर्णय जिस समय किया गया था तब तक अखंड ज्योति अक्टूबर १९७६ का अंक छपकर परिजनों के पास पहुंच गया था। उन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
दिनों परिजनों के पास कोई संदेश पहुंचाने या कार्यक्रम देने का यही एक माध्यम था। सूचना संचार का तंत्र इतना विकसित नहीं हुआ था कि उसका उपयोग कर गायत्री परिवार की हजारों शाखाओं तक जल उपवास की सूचनाएं पहुंचाई जा सकें। आश्रम में निवास करने वाले कार्यकर्ताओं ने अपने स्वजन संबंधियों को और मित्र परिचितों को पत्र लिख कर जल उपवास की जानकारी दी। उन दिनों फोन की सुविधा भी इतनी सुलभ नहीं थी कि तुरंत सूचना दी जा सके। दूर संचार विभाग के लैंडलाइन फोन ही थे और उनका विस्तार भी ज्यादा नहीं हुआ था। एसटीडी सुविधा भी चलन में नहीं आई थी। दूर बात करने के लिए टेलीफोन एक्सचेंज में ट्रंककाल बुक कराना होता और अपनी बारी का इंतजार करना पड़ता था। लिहाजा उपलब्ध संचार सेवाओं से जिनमें डाक विभाग ही था, से गुरुदेव के जल उपवास की सूचना परिजनों तक पहुंचाई जा सकी। इस तरह जब तक लोगों को जानकारी पहुंची होगी तब तक जल उपवास का एक अंश पूरा हो गया।

लेकिन बात इतनी ही नहीं है। विस्मित कर देने वाला पक्ष तो यह था कि जल उपवास आरंभ होने के दूसरे तीसरे दिन से ही गायत्री परिवार की शाखाओं से सहयोगी कार्यक्रमों के समाचार आने लगे। परिजन बताने लगे कि उन्होंने अपने यहां क्रमिक उपवास शुरु कर दिए हैं। स्थानीय शाखा कार्यालयों में जैसी भी हो सकी व्यवस्था की गई थी। एक दो कमरे में या कार्यकर्ताओं के निवास पर लोगों ने अखंड जप आरंभ कर दिया था। परिजन वहां चौबीस चौबीस घंटे के उपवास करने लगे थे ओर उस दिन का बचा हुआ भोजन, अन्न या उसके मूल्य के बराबर की राशि गायत्री परिवार के प्रयोजनों में लगाने के लिए अलग रख रहे थे।

डाक द्वारा सूचना पहुंचने और जवाब आने में लगभग एक सप्ताह लगा होगा। लेकिन सात अक्टूबर को मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र, ओडिशा, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, मुंबई, गोवा, हिमाचल, पंजाब और हरियाणा आदि प्रांतों से करीब तीन सौ पत्र आ गए। इन पत्रों में गुरुदेव के जल उपवास का संदर्भ यद्यपि नहीं दिया गया था लेकिन स्थानीय स्तर पर जो आयोजन शुरु हुए थे वे गुरुदेव के इस तप से जुड़े हुए ही प्रतीत हो रहे थे।

जल उपवास की सूचना विलक्षण ढंग से लोगों तक पहुंची। गायत्री तपोभूमि मथुरा में तो यह संवाद उपवास के निर्धारण की शाम को ही पहुंच गया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

था। युग निर्माण योजना पाक्षिक का ५ अक्टूबर अंक छप कर लगभग तैयार था। अगले दिन डिस्पैच में जाना था। तुरत फुरत व्यवस्था की गई और छपे हुए पन्ने रोक कर उनमें उपवास की सूचना जोड़ी गई। साथ ही यह निर्देश भी कि इन दिनों परिजन शान्तिकुञ्ज आने के बजाय अपने यहीं साधना उपासना के कार्यक्रम चलाएं। नई जोड़ी गई सामग्री में जल उपवास के उद्देश्य भी संक्षेप में लिख दिए गए थे।

संवाद पहुंचाने के इस प्रयास को गंतव्य तक जाने में तीन चार दिन लगे। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कई जगह अपनी मार्गदर्शक सत्ता से कदम मिलाकर चलने वाली सक्रियता पहले ही उभर आई थी। बिना किसी सूचना और संवाद के लोगों को पता चलने वाले अनुभव भी कम विलक्षण नहीं थे। पाकिस्तान की सीमा से लगे गुजरात के गांव चोपर में सक्रिय कार्यकर्ता जाधवनाथ मेहता ने महसूस किया कि किसी ने झिंझोड़कर जगा दिया था। तड़के सुबह का वक्त था और जाधव भाई उस समय सो रहे थे। गांव में पंद्रह बीस परिवार थे। सीमा पार कर अक्सर घुसपैठिए या तस्कर आया करते थे। जाग कर देखा तो दाढ़ी वाले एक अधेड़ पुरुष ने उठने का इशारा किया। जाधव भाई ने सोचा तस्कर ही है, अपना सामान छिपाने के लिए कह रहा होगा। उसकी बात नहीं मानने का मन बनाकर जाधव भाई उठ ही रहे थे कि उस व्यक्ति ने कहा, 'ऐ उठ। चौकी लगा। उपवास कर गुरु का यही आदेश है।'

चौकी लगाने का मतलब गायत्री की विशेष साधना के लिए वेदी सजाना था। बात समझ में नहीं आई। जाधव भाई ने पूछा कि गुरुदेव की बात तुम क्यों कर रहे हो। तुम कौन हो ? कहीं ऐसा वैसा मानस (मनुष्य) तो नहीं। इस पर आगन्तुक ने सिर्फ इतना ही कहा, 'तुम्हारी तुम जानो। मेरा फर्ज संदेश पहुंचाना था पहुंचा दिया। तुम्हारा गुरु उपवास पर बैठने वाला है।' सुनकर जाधव भाई सहज हुए ओर आगंतुक ने जैसा बताया था वैसा ही किया।

५ अक्टूबर को वाराणसी और आसपास के कुछ कार्यकर्त्ता विंध्येश्वरी देवी गये थे। उन कार्यकर्ताओं में कुछ ने दर्शन के समय अनुभव किया कि विग्रह ने अपना स्वरूप बदल लिया है और प्रात: सायं गायत्री की जिस छवि की आराधना, उपासना कर रहे हैं उसी के दर्शन हो रहे हैं। उस छवि में गुरुदेव की छाया भी बीच बीच में दिखाई पड़ती है। पूरी तरह तो नहीं पर ग्रीवा से ऊपर का शिरोभाग साफ दीख रहा है। कोई संदेश दिया जा रहा था। कही हुई बात स्पष्ट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं सुनाई देती। ध्यान लगाकर सुनने पर आभास होता है-जप करो-तप करो। गुरुदेव के मुंह से तीन बार यह संदेश सुनाई दिया ओर वे परिजन वहीं बैठकर जप करने लगे। चालीस मिनट बाद उठे और निश्चय किया कि आज के दिन से उपवास भी करना है। यहां चार परिजन हैं। चारों परिजन बारी बारी से उपवास करें और अपने गांव पहुंचकर अखंड जप की व्यवस्था बनाएं।

रमता जोगी तपता तपसी

मध्य प्रदेश के कुछ गांवों में प्रभाती गाते हुए अलख जगाने का रिवाज है। सुबह चार पांच बजे कुछ साधु दो दो की मंडली में या अकेले भी डमरू बजाते हुए फेरी लगाते हैं। चलते-चलते सौ दो सौ कदम की दूरी पर रुक कर खड़े हो जाते हैं और कुछ वचन बोलते हैं। मालवा के परुखेड़ी गांव में एक साधु ने फेरी लगाते हुए कहा, 'रमता जोगी तपता तपसी और सुना गुरुवाणी, चौबीस दिन का लंघन (उपवास) करता यह तथ बुझै वो ध्यानी।' यह वचन गाने के बाद साधु ने अभिलषित भिक्षा की मात्रा का उल्लेख किया और आगे चलता बना। उस गांव में गायत्री परिवार के चार सदस्य रहते थे। उनमें तीन आसपास के कस्बों में नौकरी व्यापार के लिए जाते। साधु की वाणी पर विचार किया तो सूझा कि शान्तिकुंज फोन लगाया जाये। मंडी में काम कर रहे नाथूराम ने फोन लगाया ओर पता चला कि गुरुदेव ने जल उपवास शुरु किया है। उनकी साधना में भागीदारी के लिए अपने यहां भी जप हवन और पाठ आदि के आयोजन की प्रेरणा थी।

जल उपवास शुरु करने से करीब महीने भर पहले गुरुदेव ने साधना विज्ञान की शोध और नये निर्धारण के बारे में कहा था। इस सम्बंध में कुछ बिन्दुओं पर पत्रिकाओं और पत्राचार में भी गुरुदेव ने चर्चा की थी। गुरुदेव यों कभी कदा ही पत्र लिखते थे। यह काम माताजी के जिम्मे था। गुरुदेव किसी अत्यंत आत्मीय और निकटवर्ती संत महात्मा अथवा उच्च कोटि के साधक को ही पत्र लिखते। अक्टूबर महीने में कलकत्ता के गंगाधर घटक के पौत्र अनुनय विश्वास का पत्र आया। विश्वास १९६६ में गुरुदेव के संपर्क में आए थे। वे श्रीरामकृष्ण परमहंस की परंपरा मे हुए स्वामी अखंडानंद के वंशजों में थे। गंगाधर घटक स्वामी अखंडानंद का उनके पूर्व आश्रम का नाम था। उन्होंने स्वामी विवेकानंद के साथ भारत में अनेक स्थानों की यात्रा की और तिब्बत भी गये थे। बाद में वे रामकृष्ण संघ के तृतीय अध्यक्ष बने।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुनय विश्वास की उम्र तब साठ वर्ष के आसपास रही होगी। अपनी किशोर और युवावस्था में उन्होंने काफी समय अपने पितामह के साथ बिताया। स्वामी अखंडानंद ने उन्हें विभिन्न प्रसंगों में श्रीकृष्ण की जन्म और लीलाभूमि में होने वाले एक संत के बारे में बताया था। उन संत के बारे में स्वामी जी का कहना था कि वह गायत्री का अनन्य उपासक और सिद्ध संत होगा। उसके उदय के साथ ही गायत्री आराधना का प्रचार भी बढ़ने लगा। वह विभूति होगा तो संत ही, लेकिन सद्गृहस्थ का जीवन जियेगा और चौथापन शुरु होने के दस बारह साल पहले नई साधना का अनुसंधान करेगा। उसका स्वरूप रचेगा। अनुनय को बहुत बाद में बोध हुआ कि उनके पितामह ने जिस संत की ओर संकेत किया था वह वस्तुतः गुरुदेव ही थे। गुरुदेव का जल उपवास शुरु होने से करीब दो सप्ताह पहले उन्होंने स्वामी अखंडानंद का एक संस्मरण लिख भेजा था। उस संस्मरण में स्वामी जी ने अपने पूर्व आश्रम की साधना के बारे में बताया था। स्वामी जी पूर्व आश्रम में स्वामी श्रीरामकृष्ण परमहंस के पास जाया करते थे। स्वभाव से वे बहुत कट्टरपंथी थे और शास्त्रीय मर्यादा का यथेष्ट पालन किया करते थे। शरीर में बिना तेल लगाये दिन भर में चार बार गंगा स्नान करते, बिना तला, बिना मसाले वाला भोजन करते। अपना भोजन स्वयं पकाते थे। भोजन के बाद हल्दी चूसते और सिर्फ गंगाजल का ही सेवन करते। जमीन पर सोते और अपना काम अपने ही हाथों से करते।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वामी अखंडानंद तब रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में नहीं आए थे। संपर्क में आने के बाद प्रातः सायं संध्या गायत्री का सेवन और डेढ़ दो घंटे तक प्राणायाम का अभ्यास करते। धीरे धीरे अखंडानंद जी ने प्राणायाम की मात्रा इतनी बढ़ा दी की शरीर पसीने पसीने हो उठता था और कंपकंपी छूटने लगती। गंगा स्नान के समय उन्होंने प्राणायाम के और प्रयोग भी किए। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने एक बार उनके साधना विधान के बारे में पूछा तो उनके प्राणायाम अभ्यास के बारे में सुनकर आश्चर्य जताते हुए अपने मुंह पर हाथ रख लिया। बोले ज्यादा प्राणायाम मत किया करो। इस तरह करने से कोई प्राणलेवा व्याधि हो जायेगी। तुम तो जितना हो सके गायत्री मंत्र का जप किया करो, इसी से कल्याण होगा।

अखंडानंद जी ने रामकृष्ण परमहंस से पूछा कि प्राणायाम का अभ्यास जरूरी नहीं है क्या? इस पर परमहंस ने कहा कि किसने कहा जरूरी नहीं है, पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उतना ही जितने से प्राणों का रक्षण और पोषण हो। गायत्री का जप जितना चाहो कर सकते हो। स्वामी अखंडानंद के हावभाव से लगा कि उन्हें बात गले नहीं उतरी है। रामकृष्णदेव ने कहा कि इस तरह क्या देखते हो? अगले भव (जनम) में देखोगे कि गायत्री और संध्या का विधि विधान ही बदल गया है। तुम्हें इस जन्म की याद रहेगी तो पाओगे कि मैं तुम्हें उसी पद्धति की ओर ठेल रहा हूँ। अभी इतना ही कि प्रतिदिन यथाशक्य गायत्री का जप करो।

परमहंस के संकेत

अनुनय ने इस घटना का वृतान्त लिखते हुए गुरुदेव से पूछा था कि अब से करीब सौ वर्ष पहले स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने जिस साधना विधान की बात कही थी, कहीं उसी के अनुसंधान निर्धारण का समय तो नहीं आ गया। आप उसी विधान की शोध तो नहीं कर रहे। गुरुदेव ने इस पत्र का उत्तर लिखा था जब कभी यहां आओगे, तभी विस्तार से इस बारे में बातचीत होगी। अभी इतना जानना पर्याप्त है स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने आपके पितामह से जिस विधान की बात कही थी वह निर्धारित हो चुका है। उनके वचनों में तलाशोगे तो पाओगे कि अखंडानंद जी से परमहंस देव ने जिस समय नया साधन विधान रचे जाने की बात कही थी, वह समय यही है।

पाप तापों का शमन

गुरुदेव ने जिस दिन जल उपवास आरंभ किया उस दिन कई परिजन व्यथित थे। ५ अक्टूबर की सुबह कार्यकर्ता और परिजन उन्हें प्रणाम करने पहुंचे तो वे अपने कक्ष में एक तख्त पर पद्मासन लगाये बैठे थे। इस मुद्रा में देख कुछ परिजनों का हृदय और विकल होने लगा। गुरुदेव उनकी विकलता समझ और अनुभव कर रहे थे। सांत्वना देने के लिए उनका दाहिना हाथ आश्वस्त करती हुई मुद्रा में उठ जाता। चिंतित और परेशान साधकों को संदेश मिलता अनुभव होता कि इस उपवास से उत्पन्न ऊर्जा साधकों के पाप तापों का शमन करेगी।

उपवास करने से पहले गुरुदेव ने जो कारण बताए थे, प्रणाम करने आये परिजनों को प्रतीत होता कि उन्हीं की गूंज अंतर्मन में प्रतिध्वनित हो रही है। जल उपवास का एक उद्देश्य यह बताया गया था कि स्वर्ण जयंती की विशेष साधना प्रारंभ हुए आठ महीने हो रहे थे। एक लाख साधक गुरुदेव के शब्दों में 'युग' की कुण्डलिनी जगाने का पुरुषार्थ कर रहे थे। इस साधना का संरक्षण हिमालय के गुह्य क्षेत्र में बैठी, तप रही दिव्य आध्यात्मिक सत्ताएं कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
रही थीं। उनके द्वारा किया जा रहा संरक्षण दोष परिमार्जन स्पष्ट अनुभव नहीं हो रहा था। संरक्षण दोष परिमार्जन की वह प्रक्रिया गुरुदेव के जल उपवास रूप में प्रत्यक्ष हो रही थी।

जल उपवास के दिनों में गुरुदेव तीन चार घंटे ही परिजनों से मिलते थे। यों उनका जीवन खुली किताब की तरह सबके लिए सुलभ था। कोई भी व्यक्ति उन तक अपनी पुकार वैखरी वाणी से भी पहुंचा सकता था। पांच अक्टूबर से जल उपवास आरंभ होने पर इस व्यवस्था में थोड़ी रोक लगाई गई। शान्तिकुंज के कायकर्ताओं और गायत्री परिवार के लिए चार घंटे से ज्यादा समय और श्रम देने वालों तथा आत्मिक विकास के लिए प्रखर साधना कर रहे परिजनों के लिए भी मिलने का समय सीमित कर दिया गया। परिजनों तक जल उपवास की जैसे जैसे सूचना पहुंचती गई, उनका आना शुरु हो गया। यों उन्हें अपने क्षेत्र में ही रहने और शान्तिकुज आने के लिए आतुर नहीं होने के लिए कह दिया गया था पर अपनी मार्गदर्शक सत्ता को इस तरह तपते हुए देखना किसे सहन था। उनके आने का सिलसिला शुरु हुआ तो धीरे धीरे बढ़ता ही गया। गुरुदेव दोपहर बाद नियत अवधि में उनसे भी मिलते रहे।

मिलने, दर्शन करने से ज्यादा भावभरा दृश्य उस मुख्य भवन के सामने निर्मित हो गया था जहां से गुरुदेव के कक्ष की खिड़की दिखाई देती थी। मालूम था कि गुरुदेव परामर्श कक्ष में लेटे हुए हैं या एकांत साधना कर रहे हैं। फिर भी परिजनों की ललक ही थी कि उन्हें खिड़की से झांकते हुए देखने की प्रतीक्षा करवा रही थी। जल उपवास का प्रभाव गुरुदेव के स्थूल शरीर पर धीरे धीरे दिखाई देने लगा था। कमजोरी बढ़ने लगी। आश्रम में विद्यमान चिकित्सक उनके रक्तचाप, हृदयगति और तापमान आदि की जांच करते। उन्होंने पाया कि सब कुछ सामान्य है। वजन, रक्तचाप आदि पर २९ अक्टूबर तक कोई असर नहीं दिखाई दिया। चिकित्सकों को जो गायत्री परिवार के सदस्य और कार्यकर्त्ता भी थे आश्चर्य हुआ कि गुरुदेव कमजोर दिखाई दे रहे हैं? इस बारे में उन्होंने पूछा भी तो गुरुदेव ने कहा सक्रियता में कमी आई है इसलिए शरीर क्लान्त दिखाई देता है, वस्तुत: है नहीं।

सुनकर चिकित्सकों और कार्यकर्ताओं को संतोष हुआ। लेकिन उनमें एकाध ऐसे भी थे जिनके दिमाग में कुछ और ही चल रहा था। गुरुदेव ने जल उपवास के कारण बताते हुए पांच अक्टूबर के अपने संदेश में कहा था कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसका एक उद्देश्य साधना विज्ञान की सामयिक शोध और उसकी स्थापना करना है। साधना पद्धति का निर्धारण करते समय ध्यान रखना होगा कि वह हर साधक की मन:स्थिति, परिस्थिति स्तर और उद्देश्य के अनुरूप हो। गुरुदेव के उत्तर को सुनकर भी जिन कार्यकर्ता की भावुकता में कुछ और विचार आए थे वे गुरुदेव की ओर टकटकी लगा कर देख रहे थे। गुरुदेव की दृष्टि भी उन पर पड़ी ओर वे बोले, 'तुम जो सोच रहे हो, ऐसा नहीं है। सामयिक युग साधना का निर्धारण तो हो चुका है बेटा।'

वे कार्यकर्ता देखते रह गए। मन में क्या चल रहा है, यह गुरुदेव ने पढ़ लिया था और तदनुरूप समाधान भी कर दिया था। गुरुदेव ने आगे कहा 'इन रहस्यों को ज्यादा लोग नहीं समझेंगे। उस युग साधना को बल देने के लिए सारी प्रक्रिया चल रही है। कोई साधना उसकी पद्धति रच देने से जीवंत नहीं हो जाती। हजारों लाखों साधक उसका अनुष्ठान करते है और सूक्ष्म जगत में हलचल उत्पन्न की जाती है तब उस विधान में प्राणों का संचार होता है, गुरुदेव के यह कहने के बाद वे कार्यकर्ता स्वर्णजयंती साधना के रूप में संपन्न हो रहे साधना अनुसंधान का हिसाब लगाने लगे। चौबीस चौबीस लाख गायत्री मंत्र के चौबीस महापुरश्चरण प्रतिदिन, उतने ही या उससे भी ज्यादा साधकों द्वारा सम्मिलित रूप से प्रतिदिन की जाने वाली इतनी ही विपुल साधना, उन साधकों द्वारा व्रत, उपवास, तितिक्षा, तप और संयमित-अनुशासित जीवनचर्या इन सबके साथ हिसाब में नहीं आने वाला विस्तार, उसके बाद गुरुदेव द्वारा किया जा रहा अद्भुत विलक्षण, रहस्यपूर्ण जल उपवास। रहस्यपूर्ण इसलिए कि गायत्री परिवार के सदस्यों में शायद ही किसी को इस अनुष्ठान का मर्म समझ आया हो। परिजन अपनी अपनी तरह से भी व्याख्याएं कर रहे थे।

साधकों का परिमार्जन

मुम्बई से हरिद्वार आने वाले देहरादून एक्सप्रेस में बारह साधक रवाना हुए थे। बड़ोदरा, रतलाम और कोटा आते आते आते उनकी संख्या ६८ हो गई। सभी साधक अलग अलग डिब्बों में थे और वे स्वर्ण जयंती साधना भी कर रहे थे। शाम के समय गाड़ी कोटा से पहले झालावाड़ के आसपास पहुंची थी कि साधकों ने सायंकालीन उपासना आरंभ की। उस समय स्लीपर क्लास (तब थ्री टायर) में यात्रा कर रहे पांच सात परिजनों ने ही एक दूसरे को पहचाना। झालावाड़ में गाड़ी ज्यादा रुकती नहीं थी। गाड़ी में और भी परिजन थे। थोड़ी देर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
के स्टापेज की वजह से एक दूसरे के संपर्क में नहीं आए। दिल्ली में गाड़ी ठीक सूर्योदय के समय पहुंची-बल्कि कुछ ही पहले। गाड़ी यहां करीब चालीस मिनट रुकती थी। इस बीच कुछ साधकों ने फटाफट नहाने का जुगाड़ कर लिया। और स्नान आदि से निवृत्त होकर प्रात:कालीन साधना के लिए बैठ गए। यहाँ पता चला कि मुम्बई से दिल्ली तक चालीस पचास साधक इकट्ठे हो गए हैं।

सुबह की साधना उपासना के बाद ज्यादातर एक ही कम्पार्टमेंट में आ गए और गुरुदेव के जल उपवास के बारे में चर्चा करने लगे। इस चर्चा में जल उपवास के कारणों पर भी बात चली और तीन चार साधकों ने उन तत्वों के बारे में चिंता, उत्सुकता जगाई जिसके कारण गुरुदेव क्षुब्ध हुए थे। उन तत्वों के आचरण स्खलन का परिष्कार करने के लिए वे प्रायश्चित कर रहे हैं। चर्चा ज्यादा चल नहीं सकी क्योंकि दूसरे कार्यकर्ताओं ने तुरंत उत्तर दिया हममें से कौन है जो शत प्रतिशत गुरुदेव की निर्धारित कसौटियों पर खरा उतरता हो। प्रत्येक में विचलन है। गुरुदेव उस विचलन दोष को दूर करने के लिए अभी यह साधना कर रहे हैं, ऐसा मानें।

इस विचलन के बारे में गुरुदेव ने कोई संकेत नहीं किया। यद्यपि आश्रम में और बाहर भी कई परिजनों को इस कार्यकर्त्ता के बारे में पता चल गया था। क्षेत्रों में प्रचार के लिए भेजी गई टोली का संरक्षक बनाकर भेजे गए उस कार्यकर्त्ता ने प्रसंगों में अनैतिक आचरण किया था। उस बारे में पता चला तो गुरुदेव ने उस परिजन से अपनी भूल मानने और प्रायश्चित करने के लिए कहा। कार्यकर्त्ता ने भूल मानने और प्रायश्चित करने के बजाय पलायन कर दिया। उस कार्यकर्ता के पलायन करने की सूचना पा गुरुदेव की पहली प्रतिक्रिया थी, 'मेरे आसपास कोई इतना कमजोर आदमी काम करता रहा यह अकल्पनीय है। टीम का कोई सदस्य यदि चूक करता है तो उसके प्रमुख की जवाबदेही ज्यादा होती है। विचलन का प्रायश्चित किया जाना चाहिए। उस कार्यकर्ता में साहस नहीं है तो जवाबदेही बढ़ जाती है और यह जवाबदेही मेरी है। यह जल उपवास उस विचलन के प्रायश्चित रूप में भी है।' गुरुदेव ने आगे कहा कि यह प्रायश्चित किसी सामाजिक और पारमार्थिक अभियान के प्रमुख की आचरण मर्यादा के रूप में भी जाना जाएगा।

गुरुदेव ने अपने जल उपवास जिन कारणों में एकाध किसी घटना का उल्लेख किया था, उसे परिजनों ने अपने से जुड़ी मान लिया और संतोष किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
इन परिजनों में अलीराजपुर से आए एक गंभीरमल अग्रवाल ने गुरुदेव से पूछने का मन बनाया। ऊपर जिन साधकों ने गुरुदेव के क्षोभ और प्रायश्चित का कारण स्वयं को बताया उनमें गंभीरमल भी एक थे। शान्तिकुज पहुंचकर उन्होंने जैसे ही निश्चय किया लगा कि गुरुदेव सामने खड़े हैं। उसी कमरे में जहां वे ठहरे हैं और पिछली बार यहां आने पर उन्हें मंच पर जिस तरह खड़े हो जाते देखा था, उसी मुद्रा में। गंभीरमल उनसे पूछने का मन बना ही रहे थे कि गुरुदेव की ओर से प्रश्नों की झड़ी लग गई। 'तुम्हारे पास समय और साधनों की कितनी कमी है? नहीं है तो युग की पुकार सुनने और पूरा करने में उनका कितना अंश लगाते हो? इस बारे में आलस्य प्रमाद बरतना और अपने दायित्व से कतराना कम बड़ा अपराध नहीं है क्या? इस सबके लिए मुझे प्रायश्चित करना पड़ रहा है।'

मनस क्षेत्र में यह उद्बोधन सुनने के बाद गंभीरमल ने गुरुदेव से कुछ पूछने का विचार छोड़ दिया। इस तरह के प्रश्न लेकर कई परिजन गुरुदेव के दर्शन करने गए लेकिन पूछने की नौबत ही नहीं आई। ज्यादातर का समाधान उनकी आंतरिक चेतना में ही हो गया और जिन्हें इससे तसल्ली नहीं हुई उन्हें अपने अभ्यंतर में हुए अनुभवों, दिखाई देने वाले दृश्यों से समाधान हो गया। जल उपवास चौबीस दिन के लिए था। गुरुदेव ने इसे पंद्रह दिन में भी पूरा कर देने की बात कही थी। यह आश्वासन उन परिजनों का मन रखने या हिम्मत बंधाने के लिए था, जो गुरुदेव के स्वास्थ्य और शरीर के सम्बंध में चिंतित थे कि लम्बे उपवास से कहीं वह गड़बड़ा न जाये। एक बार घोषणा कर दी गई, पंद्रह दिन राजी खुशी बीत गये तो बीच में ही उपवास रोकने या स्थगित करने की कल्पना भी किसी के मन में नहीं उठी।

२९ अक्टूबर को गुरुदेव ने माताजी के हाथों से नारियल का पानी लेकर उपवास पूरा किया। उस समय शान्तिकुंज में हजारों कार्यकर्ता मौजूद थे। गुरुदेव अपने कक्ष में उसी स्थान पर बैठे परिजनों से मिल और बात कर रहे थे जहाँ उपवास के समय बैठे थे। नीचे मिलने वालों की लम्बी कतार लगी थी। उस दिन गुरुदेव के प्रवचन या संदेश जैसा कोई आयोजन नहीं हुआ। लेकिन आगन्तुकों से, सभी से मिले। किसी को भी उनके दर्शन, श्रवण और चरण वंदन से वंचित नहीं रहना पड़ा।

जल उपवास पूरा होने के बाद राजनीति, साहित्य, कला, विज्ञान, संस्कृति और दर्शन क्षेत्र के विभूतिवान व्यक्तियों का ध्यान अनायास ही शान्तिकुंज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
या गायत्री परिवार की ओर आकर्षित हुआ। यों कहें कि उनके मन में युग साधना विज्ञान और परिवर्तन की वेला, जिसे गुरुदेव दो शब्दों में 'गायत्री चेतना' कहते थे, के प्रति रुझान पैदा हुआ। इन क्षेत्रों के लब्ध प्रतिष्ठित नाम गायत्री परिवार के संपर्क में आने लगे। उस समय उत्तर प्रदेश में बेहद चर्चित और प्रभावशाली नामों में एक नाम वहां के राज्यपाल एम. चेन्नारेड्डी का ही था। करीब साल भर पहले चेन्ना रेड्डी के नाम से राज्य के धर्म संस्थान बुरी तरह विचलित हो उठे थे।

चेन्ना रेड्डी की प्रेरणा

दरअसल चेन्ना रेड्डी आंध्रप्रदेश के खांटी राजनेता थे। वे दो बार वहां के मुख्यमंत्री रहे। राजनीतिक जीवन के उतार चढ़ावों से गुजरते हुए १९७४ में वे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल बने। आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री रहते हुए चेन्ना रेड्डी ने वहां की धार्मिक संस्थाओं और मंदिरों की व्यवस्था में सुधार के लिए कई कदम उठाये थे। धर्म संस्थानों ने शुरु में इन प्रयासों का जबर्दस्त विरोध किया। कुछ ने उन सुधारों को लागू भी किया पर ज्यादातर उनके विरुद्ध ही थे। चेन्नारेड्डी उन दिनों आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री-चुने हुए जनप्रतिनिधि थे। इसलिए कितना ही सही कदम हो, वे जनमत के खिलाफ नहीं जा सकते थे। फिर बाद में अन्य कारणों से उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटना पड़ा और वे सुधार प्रयास पूरी तरह लागू नहीं हो सके।

१९७४ में उत्तर प्रदेश का राज्यपाल बनने के कुछ ही समय बाद उन्होंने उच्च प्रशासनिक अधिकारियों का एक दल धर्म संस्थानों में किए सुधारों का अध्ययन करने के लिए आन्ध्रप्रदेश भेजा। चेन्नारेड्डी ने शैक्षणिक और प्रशासनिक सुधारों के प्रयास भी किए थे लेकिन धार्मिक सुधारों के लिए उन्हें ज्यादा जाना जाता है। आंध्रप्रदेश भेजी गई अधिकारियों की टीम ने लौटकर रिपोर्ट दी और उत्तर प्रदेश में धर्मसंस्थानों के सुधार के लिए भी जरूरी उपायों की सिफारिश की। उन सिफारिशें को राज्य के मंत्रीमंडल ने स्वीकृत कर लिया। साथ ही उच्च अधिकारियों की एक और टीम नियुक्त कर दी और उसे अपने अध्ययन का दायरा तमिलनाडु, केरल तथा कर्नाटक राज्यों तक बढ़ाने का निर्देश दिया। इस तरह अध्ययन दल को एक बड़े क्षेत्र और ज्यादा समय तक अध्ययन करने का मौका मिल गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मंत्रीमंडल के इस फैसले का अर्थ लगाया गया कि राज्य सरकार धर्म संस्थानों को नाराज नहीं करना चाहती। इसलिए वह समय खींच रही थी। लेकिन दिसम्बर १९७५ में उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू हो गया। कुछ ही सप्ताह बाद राज्यपाल ने एक अध्यादेश जारी कर दिया और सभी धार्मिक संस्थाओं, मंदिरों, देवालयों की व्यवस्था और उनकी संपत्ति के उपयोग को विनियमित करने के लिए एक वैधानिक निकाय बना दिया। यह व्यवस्था हिन्दू संस्थाओं के लिए ही की गई थी। सरकारी मान्यता के अनुसार जैन और बौद्ध संस्थाएं भी हिन्दू की परिभाषा में ही आती थीं। इस अध्यादेश ने धार्मिक संस्थाओं, आश्रमों और मंदिरों के प्रबंधन को झकझोर कर रख दिया। उन्होंने न्यायालय की शरण लेना चाही। कुछ ने याचिकायें भी दायर की। कई ने केन्द्र सरकार से दखल की अपील की। केन्द्र ने इसे राज्य का मामला बताते हुए दखल देने से इंकार कर दिया। जब सभी धर्म संस्थाएं आंदोलन करने, कोर्ट में जाने और विरोध जताने की रणनीति बना रही थी तो गायत्री परिवार ने अपने सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों, गतिविधियों का एक प्रतिवेदन राज्य सरकार के पास भेजा। उस प्रतिवेदन में दिए गए लक्ष्यों के मुताबिक किसी सरकारी अधिकारी को संस्था का प्रशासक नियुक्त किया जाता तो गायत्री परिवार की लोकसेवी गतिविधियों पर बुरा प्रभाव पड़ता।

शान्तिकुंज और गायत्री तपोभूमि के कार्यकर्ता भी इस अध्यादेश से चिंतित दिखाई दिये थे। गुरुदेव के सामने उन्होंने अपनी आशंकाएं रखीं तो निश्चिंत रहने का संकेत मिला। गुरुदेव ने कहा था कि भगवान का काम करने में जुटे हैं। हममें से हर किसी को विश्वास रखना चाहिए कि उनके काम को वही चलाएंगे। अगर कोई बाधा आती है तो उसे भी वही दूर करेंगे। और माना कि भगवान हमारी परीक्षा लेना ही चाहता है तो हम लोग कुटिया में रहकर भी उनका काम करेंगे।

हरिद्वार की धार्मिक संस्थाओं और आश्रमों ने उस अध्यादेश के खिलाफ आंदोलन छेड़ने की योजना बनाई। इसके लिए संत मंडल के लोगों ने गुरुदेव से संपर्क किया। गुरुदेव ने उन्हें भी उत्तर दिया था कि हम भगवान का काम करने में जुटे हैं। वे जैसे कराए करेंगे। किसी सरकारी हस्तक्षेप को निश्चित ही नहीं मानेंगे लेकिन हमारे नियंता ने अभी इसके विरुद्ध उठ खड़े होने के लिए नहीं कहा है। आंदोलन में भागीदार बनाने के लिए आए संत वापस चले गए। उनमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से कुछ तो यह सोच कर चुप बैठ गए कि गायत्री परिवार जैसी विराट संस्था निश्चिंत निर्भय है तो हमें ही क्यों परेशान होना चाहिए।

धर्म संस्थानों द्वारा विरोध के लिए बनाई जा रही योजनाएं जहां की तहां धरी रह गईं। न केवल विरोध धरा रह गया बल्कि उस अध्यादेश पर भी अमल नहीं हुआ। रोक कहां से लगी, कुछ पता नहीं चला। राष्ट्रपति शासन समाप्त होने के बाद राज्य में नई सरकार बनी तो इस विषय में तरह तरह के मत सामने आए। इनमें सबसे ज्यादा प्रचलित कारण यह बताया जा रहा था कि राज्य का प्रशासनिक तंत्र चलाने वाले अधिकारी धर्मभीरू थे और उन्होंने अध्यादेश के बारे में कोई दिलचस्पी नहीं ली। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन सचिव राजेश माथुर ने बताया कि अध्यादेश के बारे में सुनकर विभागीय अधिकारी हंसे थे। श्री माथुर बाद में राज्य सरकार के सार्वजनिक निर्माण विभाग में आ गए थे और वहां से निवृत होने के बाद सामाजिक कार्यों में रुचि लेने लगे थे। उन्होंने कहा कि अध्यादेश की खबर सुनकर कुछ अधिकारी तो सन्न रह गए। उन्हें बद्रीनाथ, केदारनाथ, काशी विश्वनाथ आदि प्रसिद्ध मंदिरों की व्यवस्था का अध्ययन करने में लगाया गया था। यह दायित्व सौंपे जाते समय उपहास के बाद चिंता का भाव भी आया। उपहास इसलिए कि धर्मनिरपेक्षता का दावा करने वाली सरकार और उसका प्रशासन तंत्र अब मंदिरों और देवस्थानों के बारे में सोचने लगा है। ही ही ही कर हंसते हुए माथुर के सहयोगी राम नारायण शुक्ला ने कहा कि गैर हिंदू धर्म संस्थानों के बारे में भी सरकार सोचे न जरा। वह तो हम लोग ही हैं। इतनी बात कहते कहते वे रुके और बोले कुछ भी हो भाइयों हमें यह मंशा पूरी नहीं होने देनी है।

अध्यादेश में भारतीय धर्म के दायरे में आने वाले तमाम संस्थानों को छुआ गया था। जैन स्थानकों ने सवाल उठाया कि उनके मंदिरों में कामकाज करने वालों के लिए जैन मर्यादाओं का पालन करना अनिवार्य है। जैन मंदिरों में पुजारी पुरोहितों का काम ब्राह्मण समाज के लोग करते हैं। उनके शील सदाचार भले ही कुछ अलग हों लेकिन मंदिर से जुड़े रहने तक उन्हें भी रात्रि भोजन का त्याग, अनायास मिल गए भोजन और निर्वाह साधनों का उपयोग, अपना काम स्वयं करने, जमीन पर सोने और खुले पांव चलने जैसी जैन मुनियों की मर्यादाओं का पालन करना होता है। इन विधि नियमों का हवाला देते हुए राजभवन के ही एक जैन अधिकारी प्रमोद कुमार ने माननीय राज्यपाल महोदय से सवाल कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
दिया कि अध्यादेश लागू हो गया तो सरकार के संबंधित अधिकारी इन मर्यादाओं का पालन करेंगे क्या? इन मर्यादाओं में चूक हुई तो मंदिर और देवस्थान की गरिमा विक्षत होती है। प्रमोद कुमार ने जैन-इतर समुदाय के अधिकारियों से सभी इसी तरह का विमर्श किया था।

एक सूचना यह भी थी कि वाराणसी, इलाहाबाद, मथुरा, अयोध्या और सारनाथ आदि तीर्थों के छोटे बड़े अधिकारियों ने दबे छुपे रोष जताया था। इस बात में काफी दम था कि अध्यादेश के बारे में तत्कालीन प्रशासन ने खास दिलचस्पी नहीं ली थी। लेकिन राज्यपाल चेन्ना रेड्डी का मन था कि धर्म संस्थाओं की व्यवस्था में हर हाल में सुधार आना चाहिए।

कहते हैं कि गायत्री परिवार के किन्हीं कार्यकर्ता ने उन्हें गुरुदेव की एक लिखी पुस्तिका (ट्रैक्ट) 'मंदिर जन जागरण के केन्द्र बनें' भेंट की थी। पुस्तक का शीर्षक देखकर ही उन्होंने परिवार के कार्यकर्ता से ट्रैक्ट के प्रतिपाद्य विषय के बारे में पूछा। उन कार्यकर्ता के मुताबिक चेन्ना रेड्डी को विषयवस्तु और गायत्री परिवार के बारे में बताया भी था। पता नहीं १९७५ के अध्यादेश में इस ट्रैक्ट और मिशन के परिचय की कितनी नैमित्तिक पृष्ठभूमि थी। लेकिन यह सही है कि मंदिरों, देवस्थानों के प्रभाव और वैभव को जनहित में लगाने की राज्यपाल की मंशा सूक्ष्म दैवी प्रेरणाओं के कारण भी बनी थी।

फरवरी १९७७ में शान्तिकुंज आने पर उन्होंने खुद भी इस बारे में उत्सुकता जताई थी। उनका कहना था कि मंदिरों को मिलने वाली श्रद्धा और लोगों की उदारता, भावना और सेवा शक्ति का उपयोग जनकल्याण में लगने का तंत्र अपने आप विकसित हो सके तो सरकार को दखल देने की जरूरत ही क्यों पड़े? गायत्री परिवार के संबंध में एक मुट्ठी अनाज, या दस पैसा प्रतिदिन अथवा महीने में एक दिन की आय के अलावा एक घंटा प्रतिदिन देने के व्रत ने चेन्ना रेड्डी को अभिभूत किया था। हजारों लाखों लोगों के सहयोग या अंशदान से गायत्री परिवार की गतिविधियां सुचारू चलती रही हैं। राज्यपाल ने इन सबके बारे में पता चलने पर कहा था कि मिशन की कार्यप्रणाली की यह जानकारी रही होती तो वे अधिकारियों की टीम दक्षिण भारत में भेजने के बजाय यहां शांतिकुंज भेजते।

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इक्कीस

यथार्थ की कसौटी पर विश्वास

१९७९ में गायत्री जयंती पर ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की विधिवत स्थापना हुई। आरंभ परंपरागत उद्घाटन प्रक्रियाओं से हट कर अलग ढंग से हुआ था। संस्थान के परिसर में बनी यज्ञशाला में उस दिन पलाश और बबूल की चुनी हुई समिधाएं रची गई थीं। भोर सबेरे उनमें गोघृत से सिक्त रुई की बत्तियों से अग्नि का संधान हुआ। अग्नि प्रज्वलित करने के लिए माचिस की तीली या कहीं ओर से लाई गई बत्ती अथवा अंगार का उपयोग नहीं हुआ। गुरुदेव के चुने हुए पाँच साधक यज्ञकुण्ड के आसपास बिठाए गए। इन्होंने चालीस दिन का अनुष्ठान किया था और हविष्यान्न पर रहते हुए गुरुदेव द्वारा निर्दिष्ट नियम अनुशासन का पालन किया था। पवित्रीकरण, आचमन आदि षटकर्मों के बाद देवपूजन के उपचार संपन्न हुए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इन उपचारों के बाद विधिवत यज्ञ अग्निहोत्र आरंभ हुआ। आहुतियां दी जाने लगीं। अग्निकुंड से उठती हुई लपटें और उनमें स्वाहा होती आहुतियों से जो धूम्र निकलता था, उसे देखकर उपस्थित जन अद्भुत अनुभव कर रहे थे। उन्हें प्रतीत हो रहा था कि अग्निदेव अपनी सातों जिह्वाओं से आहुति स्वीकार कर रहे हैं। इस अलौकिक अनुभूति के साथ एक और दृश्य वहां माध्यम बने बैठे साधकों से बन रहा था। उन साधकों की कलाई पर, बाहों में, सीने पर, माथे पर और पैरों में चिकित्सकीय उपकरण बांधे गए थे। नब्ज की गति रक्तचाप, हृदय की गति, मस्तिष्कीय तरंगें और शिराओं में होने वाले परिवर्तनों को रिकार्ड करने वाले इन यंत्रों की रिकार्डिंग परखने और नोट करने के लिए तीन चिकित्साकर्मी लगे हुए थे। यह दृश्य अस्पतालों में होने वाले जांच परीक्षणों जैसा था। लग रहा था जैसे उन युवकों की स्वास्थ्य परीक्षा की जा रही हो। यज्ञ आरंभ होने से पहले भी इन्हीं उपकरणों से युवकों की जांच की गई थी और उनसे प्राप्त विवरण अलग रखे गए थे। यज्ञ संपन्न होने के बाद रक्तचाप, हृदय, मस्तिष्कीय तरंगे और शरीर में होते रहने वाले परिवर्तनों को भी नोट किया जा रहा था। इसी तरह परिसर में लगे पुष्प पादपों ओर औषधीय वनस्पतियों, वहां के पानी और हवा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
को जांचने के उपाय भी किए गए थे। इन उपायों के जो निष्कर्ष आए, उनकी चर्चा आगे करेंगे। यहां एक संदर्भ के तौर पर ही कि यज्ञ के प्राचीन स्वरूप और रहस्य की एक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के साथ उसके प्रभावों के अध्ययन की यह शुरुआत थी। शुरुआत जिसे इस परिसर तक ही सिमट कर नहीं रह जाना था, बल्कि आने वाले वर्षों में दिग दिगंत तक फैल जाना था। बहुत सारे आमजन इसके साक्षी नही थे।

इस स्थापना से पहले वसंत पर्व पर भी ब्रह्मवर्चस आरण्यक में साधकों ने एक आयोजन में हिस्सा लिया था। उस दिन सुबह होने से पहले ही पानी बरसना शुरु हो गया। लगता था जैसे वर्षा के अधिपति देव वरुण भी संस्थान के शिला पूजन और संस्थापन कार्यक्रम के साक्षी बनने के लिए उत्सुक थे। बरसते पानी में शान्तिकुञ्ज में निवास कर रहे कार्यकर्ताओं और बाहर से आए परिजनों ने भूमि पूजन किया। उसके बाद अपने हाथ से एक एक ईंट रखी। इस प्रतीक से संकल्प जताया कि वे इस दिव्य अनुष्ठान में भागीदारी कर रहे थे। औपचारिक उद्घाटन लगभग १० बजे उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल जी.डी. तपासे ने किया। उद्घाटन के बाद उन्होंने कहा भी कि वे यहां एक साधक और प्राचीन विधाओं के अन्वेषक विद्यार्थी के रूप में आए हैं। उद्घाटन के बाद उन्होंने कुछ कहने से यह कहते हुए मना कर दिया कि गुरुदेव के होते हुए अध्यात्म और संस्कृति विषयों पर बोलना ठीक नहीं होगा।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान बीसवीं शताब्दी पूरी होने से कोई बीस वर्ष पहले एक प्रयोग के रूप में जन्म लेता दिखाई दिया। आरंभ तो १९६५ के आसपास ही हो गया था। तब यह प्रयोग अखंड ज्योति पत्रिका के पन्नों पर और तत्वज्ञानी विज्ञानियों को परामर्श प्रेरणा के रूप में दिखाई देता था। विधिवत और व्यवस्थित शोध अनुसंधान की प्रक्रिया अब होती दिखाई दी। ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना के समय वैदिक विद्वान आचार्य सत्यव्रत विद्यालंकार, डॉ. हर गोविन्द, आर्यसमाज के संन्यासी महात्मा वेदभिक्षु भी मौजूद थे। दिल्ली विश्वविद्यालय से आए विज्ञान के प्रोफेसर डॉ. अजय मलिक, केन्द्र सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय के अधीन चलने वाले निकाय आयुर्वेद संस्थान और बंगलूर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. एच. नरसिम्हैया (जिन्होंने चमत्कारों और साधु संतों के दावों को खुली चुनौती दी थी) के सहयोगी डॉ. रामलिंगम भी मौजूद थे। इन विद्वानों ने समिधाधान की प्रक्रिया को भी बारीकी से निरखा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
परखा था कि मंत्र पढ़ने से अग्नि प्रकट होने का दावा कहीं दिखावा तो नहीं है। वे पूरी तरह संतुष्ट थे और आयोजन संपन्न हो गया तो दोपहर बाद उन्होंने गुरुदेव से अपनी शंका के बारे में बताया भी। साथ ही यह भी कहा कि हमारी शंकाए निर्मूल साबित हुई हैं। गुरुदेव ने उनसे कहा'आप जैसी विभूतियाँ थोड़ा सा प्रयत्न करें तो आज जिन आर्ष तथ्यों को सही साबित करने के लिए प्रमाण देना पड़ता है, वही तथ्य हमारी वैज्ञानिक संपदा बन सकते हैं।'

उन विभूतिवान अतिथियों ने इस आश्वासन को चुपचाप सुना और स्वीकार भी किया। फिर गुरुदेव ने कहा, 'यह प्रयोग तो उस विज्ञान का परिचय प्रतीक है। हम लोग संकल्पबद्ध हैं कि भारतीय मनीषा को विज्ञान के आधार पर कसकर दिखायेंगे। अपने अनुभव से तो हम यह बात कह सकते हैं कि भारत की ऋषि परंपरा वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है लेकिन सैंकड़ों साल से अंधेरे में खोई हुई इस परंपरा को तर्क, तथ्य और प्रमाणों से सही साबित करेंगे।

आकार लेता अभियान

१९७९ का वर्ष गायत्री परिवार के साधना स्वर्ण जयंती वर्ष के उत्तरार्ध रूप में भी मनाया जा रहा था। इसी वर्ष गायत्री शक्तिपीठों की स्थापना और निर्माण का संकल्प भी उभरा था। गुरुदेव ने कई मोर्चे खोल दिये थे। यह भी कह सकते हैं कि ये मोर्चे नवसृजन के लिए बड़ी विकट चुनौती के रूप में थे। इन स्थापनाओं में ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान ही था जो आकार लेता दिखाई दे रहा था बाकी दो कार्यक्रम या अभियान साधकों के मन, मस्तिष्क और क्रियाकलापों में उथल पुथल मचा रहे थे। सूक्ष्म जगत में शोध संस्थान की रूपरेखा पंद्रह सोलह साल पहले ही उभरने लगी थी। प्रत्यक्ष जगत में उसकी झलक १९७८ के आसपास मिलने लगी। उस समय सप्त सरोवर मार्ग पर संस्थान का भवन बनकर तैयार हो गया था। साल भर से बन रहे इस भवन के बारे में यदाकदा ही चर्चा होती थी। यों गुरुदेव लगभग प्रतिदिन कार्य की प्रगति देखने जाते थे। शान्तिकुञ्ज से ब्रह्मवर्चस के लिए तब सप्तर्षि आश्रम होकर आना पड़ता था। शान्तिकुञ्ज और सप्तसरोवर को जोड़ने वाली सड़क तब नहीं बनी थी और गुरुदेव पैदल ही ब्रह्मवर्चस तक आते जाते थे। भवन के बारे में तो वे कभी कदा चर्चा करते भी थे लेकिन शोध संस्थान की कार्ययोजना और पद्धति के बारे में उन्होंने तब किसी चर्चा में विशेष उल्लेख नहीं किया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

डॉक्टर साहब को गुरुदेव ने शान्तिकुंज के मुख्य भवन में यहां वहां रखी पुस्तकों को व्यवस्थित करने के काम में लगाया था। उन दिनों डेढ़ दो सौ शिविरार्थी शान्तिकुञ्ज में होते। साठ सत्तर देवकन्याएं भी तब यहां थीं। दस पंद्रेह कार्यकर्त्ताओं के परिवार तब ब्रह्मवर्चस के कार्यकर्त्ता खण्ड में और आसपास के मकानों में रहते थे। डॉक्टर साहब ने शान्तिकुंज के मुख्य भवन में बनी आलमारियों से अपना काम शुरु किया। मुख्य भवन के भूमितल और पहली मंजिल पर तब करीब अठ्ठाइस आलमारियों में रखी पुस्तकों में अगर कोई संवेदना या अनुभूति हो सकी तो उन्हें खुशी ही हुई होगी कि सात आठ वर्ष बाद उनकी सुध ली जा रही थी। अभी तक जिसे जरूरत होती वह अपने काम की पुस्तक या संदर्भ तलाशने के लिए भूमितल पर बनी बीस आलमारियों को खंगालना शुरु करता। तीन चार आलमारी देखने के बाद अभीष्ट विषय की दो तीन पुस्तकें मिल जाती और काम वहीं ठहर जाता। पुस्तकें टटोलने या संदर्भ जांचने की जरूरत भी कम पड़ती क्योंकि अखंड ज्योति के प्रायः सभी लेख गुरुदेव के लिखे होते थे। उन दिनों प्रकाशित 'युग शक्ति गायत्री' भी उन्हीं की लेखनी से आती थी। गुरुदेव को कोई संदर्भ देखने की जरूरत ही नहीं पड़ती। युग निर्माण योजना मासिक और पाक्षिक (बाद में साप्ताहिक) की सामग्री मथुरा में तैयार होती। शान्तिकुंज में उन दिनों जो कार्यकर्त्ता थे वे प्रायः व्यवस्था कार्यों में ही लगे रहते थे। गुरुदेव ने डॉक्टर साहब को पुस्तकों और संदर्भ सूचनाओं को व्यवस्थित करने में लगाया तो देखने वालों में कुछ को थोड़ा आश्चर्य जरूर हुआ पर ज्यादातर ने इसे किसी महती योजना का अंश ही समझा।

उपलब्ध पुस्तकों को विषयों के अनुसार अलग-अलग करने, एक ही जगह रखने और फिर उनके रजिस्टर तैयार करने में करीब डेढ़ महीना समय लगा। सुबह शाम डॉक्टर साहब नियमित रूप से गुरुदेव को आज के किए जाने वाले और हो चुके कार्यों की जानकारी देते। रिपोर्ट देते समय गुरुदेव बीच बीच में किसी पुस्तक के बारे में कुछ पूछ भी लेते जैसे यह किस सन की है, प्रकाशक कौन है या पन्ने पलटते समय इसमें क्या खास बात दिखी ? इस विधि से पुस्तकों की सूची तैयार करने पर डॉक्टर साहब को प्रतीत होने लगा कि किताबें व्यवस्थित ही नहीं हो रही हैं, वे अपने पन्नों में बिखरी सूचनाएं उंडेल भी रही हैं। यह काम संपन्न हो गया तो गुरुदेव ने कहा, तुम्हारा चालीस दिन का एक अनुष्ठान पूरा हो गया। अब दूसरे अनुष्ठान की तैयारी करो। दिल्ली से लेकर चेन्नई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तक और मुंबई से कलकत्ता तक जहां जहां भी अपने काम की पुस्तकें उपलब्ध हो सकती हैं, उनका पता करो। जो उपयोगी लगें उन्हें खरीदो, मंगवा लो, जाकर लाना सुविधाजनक लगता हो तो जाकर ले आओ।

शान्तिकुञ्ज में उपलब्ध पुस्तकों की सूची तैयार करते हुए विषय, अनुविषय से संबंधित अन्य पुस्तकें और प्रकाशकों की जानकारी इकट्ठी होने लगी थी। उन सूचनाओं को अलग नोट कर लेने से गुरुदेव के बताए दूसरे अनुष्ठान में काफी सहायता मिली। हरिद्वार तीर्थनगरी तो है, साहित्य और संस्कृति का केन्द्र भी है पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर की गतिविधियों और प्रकाशनों के बारे में जानने की यहां कोई व्यवस्था नहीं थी। इन सूचनाओं को संकलित करने के लिए भारत भर के डेढ़ सौ विद्वानों और प्रकाशकों की सूची तैयार की गई। सूची में शामिल अधिकांश नाम गुरुदेव ने बोलकर ही लिखा दिए थे। उन नामों के पते और संपर्क सूत्र भी इकट्ठे कर लिए गए। इसके बाद डॉक्टर साहब ने उन पतों और व्यक्तियों से संपर्क शुरु किया। करीब महीने भर के प्रयत्नों के बाद उल्लेखनीय जानकारी जुटाई जा सकी।

सूची तैयार हो जाने के बाद तो आवश्यक पुस्तकें, प्रबंध-पत्र मंगाने में और भी ज्यादा समय लगा। हिसाब में समझना चाहें तो महीनों। इन कार्यों के लिए नई दिल्ली, वाराणसी, प्रयाग, लखनऊ, कोलकाता, अड्यार, चेन्नई, कांची, बंगलूर, मुंबई, पूना, अहमदाबाद, अजमेर, जालंधर, लुधियाना, तिरुअनंतपुरम आदि स्थानों की यात्रा और वहां विद्या संस्थानों, पुराने नए प्रकाशकों तथा आश्रमों और संस्थानों में उपलब्ध पुस्तकें अथवा संदर्भ इकट्ठे किए। उन दिनों यात्रा इसलिए भी जरूरी थी की पत्राचार करने पुस्तके मंगाने में हफ्तों लग जाते और पुस्तकों के शीर्षक देखकर आर्डर देने पर जरूरी नहीं था कि उनके पन्नों पर अभीष्ट जानकारी होती ही। देख कर और पन्ने पलटकर ही पुस्तकें लाने से अनावश्यक किताबों से बचा जा सका। पुस्तकों की खरीद के लिए कई यात्राएं करनी पड़ीं। पत्राचार से पुस्तकें मंगाने में हफ्तों लग जाते और शीर्षक देखकर आर्डर देने पर जरूरी नहीं था कि उनके पन्नों पर अभीष्ट जानकारी होती हो। देखकर और पन्ने पलटकर ही पुस्तकें लाने से अनावश्यक पुस्तकों से बचा जा सका। पुस्तकें खरीदने में आश्रम के वरिष्ठ कार्यकर्ता वीरेश्वर उपाध्याय दो बार साथ गए। इतनी ही बार श्याम प्रताप सिंह ने भी पुस्तक यात्रा में साथ दिया। हर यात्रा में कई कई पुस्तकें लाई गईं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

डॉक्टर साहब और वीरेश्वर जी या श्याम प्रताप जी जब भी नई पुस्तकें लेकर आते तो सीधे गुरुदेव के पास ले जाते। गुरुदेव उन पुस्तकों को देखते। देखते क्या जांचते थे। एक बार में ढाई सौ पुस्तकें भी आ जातीं। गुरुदेव उन्हें अपने पास ही रखवा लेते और अक्सर ऐसा होता कि शाम को रखी गई पुस्तकें अगले दिन वापस कर देते। एकाध बार लगा कि गुरुदेव इन पुस्तकों को नजर भर कर देखते ही हैं या उलटते पलटते भी हैं। मन में क्षण भर के लिए यह उत्कंठा जगी ही थी कि गुरुदेव ने कहा, 'सुबह छह बजे इन पुस्तकों में कुछ पन्नों पर निशान लगा कर रखूंगा। उन अंशों को अलग कागज पर नोट कर लेना। इससे ब्रह्मवर्चस के सिद्धांत पक्ष पर लिखने में सहायता मिलेगी।'

अद्भुत एकाग्र तन्मयता

डॉक्टर साहब सोचते रहे कि मन में यह विचार नहीं आना चाहिए था। इतना विचार आया ही था कि गुरुदेव ने कहा कुछ ही क्षणों में पुस्तक पढ़ लेना या किसी दृश्य को समझ लेना कोई बड़ी सिद्धि नहीं है। मन को इसके लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है। कैमरे के लैंस में और उसके भीतर की फिल्म क्षण भर में सामने के विहंगम दृश्य को अंकित कर लेती है या नहीं। कहीं कोई चूक नहीं होती, एक्सरे की मशीन किसी वस्तु के भीतर की बनावट भी पकड़ लेती है। साधारण मशीनें यह सब काम कर लेती हैं तो मनुष्य की इंद्रियां और मन इस काम को सहज ही कर सकते हैं। फिर गुरुदेव दूसरे कार्यों और विषयों पर बताने लगे। उनकी बातों पर पूरा ध्यान था लेकिन मन में पहले कहीं पढ़ा हुआ एक प्रसंग भी याद आ रहा था। कहीं पढ़ा था कि स्वामी विवेकानंद के किसी पुस्तक को पढ़ने में उतना ही समय लगाते थे जितनी देर उसके पन्ने पलटने में लगती थी। मन को एकाग्र कर पढ़ते थे तो उस पुस्तक की पंक्तियां महीनों, वर्षों तक जस की तस याद रहतीं।

खैर! सुबह हुई। नियत समय पर गुरुदेव के पास जाना हुआ। उनकी मेज के बांई ओर पचासी पुस्तकें करीने से रखी हुई थीं। पुस्तकों की ओर इशारा करते हुए गुरुदेव ने कहा इन किताबों में ब्रह्मवर्चस के सिद्धांत पक्ष के विवेचन में सहायक दो सौ संदर्भों पर निशान लगाए हैं। बाकी चार सौ अन्य संदर्भों को भी चिह्नित किया है। पुस्तकें लाकर रखने और सुबह वापस ले जाने की यह तीसरी या चौथी बारी थी। इससे पहले भी देखी गई पुस्तकों को गुरुदेव ने कहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
रेखांकित तो कई मार्जिन पर चिह्नित किया था। कई पुस्तकें उनने बतायी कि इनकी शोध में उपयोगिता नहीं है। फिर भी उलाहना नहीं दिया।

उन पुस्तकों को समेटते समय डॉक्टर साहब को गुरुदेव दैनिक जीवन में अध्यात्म और विज्ञान के कुछ व्यावहारिक सूत्र भी बताते जा रहे थे। कल आई किन पुस्तकों में किन स्थलों पर इस बारे में थोड़ी बहुत या पर्याप्त सूचनाएं है, यह सब बताते हुए उन्होंने अनुसंधान प्रयोगों के लिए काम आने वाले उपकरणों और यंत्रों की सूची तैयार करने के लिए कहा। उसी समय यह उल्लेख आया कि अगली गायत्री जयंती तक शोध संस्थान आरंभ कर लेना है। गुरुदेव जिस समय यह बात कह रहे थे तब शान्तिकुंज में कार्यकर्ता गीता जयंती के संबंध में विमर्श कर रहे थे। गुरुदेव आधा घंटे बाद ही उन्हें इस बारे में कुछ निर्देश देने वाले थे। पर्व तिथि के उल्लेख से आभास होता है कि ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के आरंभ होने में पांच छह महीने का ही समय शेष था। इस बीच पुस्तकालय-संदर्भ स्रोत-तैयार होने के साथ प्रयोग परीक्षण के सरंजाम भी जुटा लेने थे। एक अभिनव और विलक्षण स्थापना की तिथियां अत्यंत सन्निकट थीं, जिसकी तैयारियों के लिए कई वर्ष चाहिए। लेकिन उस स्थापना से जुड़े किसी भी कार्यकर्त्ता के मन में व्यग्रता कतई नहीं थी और न ही यह चिंता कि यह सब कैसे होगा?

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान को गुरुदेव ने मौटे तोर पर तीन हिस्सों में बांटा था। एक भाग में प्रयोग शाला, योग, स्वास्थ्य, साधना और गुह्य प्रयोगों के स्थूल जगत पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन। दूसरे गायत्री के चौबीस स्वरूपों की स्थापना-चौबीस देवशक्तियों की स्थापना। तीसरा शोध ग्रन्थालय। पहला भाग शुद्ध विज्ञान से जुड़ा था और दूसरा आस्था, श्रद्धा विश्वास से इन तीनों भागों को समवेत रूप से साधने के लिए। गुरुदेव ने प्राचीन और अधुनातन ऋषियों, मनीषियों विज्ञानियों और विद्वानों के अनुभव, निष्कर्ष तथा प्रतिपादन की शोध के लिए अध्येताओं को आमंत्रित किया। जिन लोगों में योग, यज्ञ और तंत्र के क्षेत्र में प्रयोग परीक्षण की प्रतिभा थी और जो प्रयोगशाला में इस तरह की पहल कर सकते थे, उन्हें भी आमंत्रित किया। नवंबर १९७८ तक सौ से ज्यादा शोधार्थियों ने अपने नाम दोनों प्रयोजनों के लिए लिखा दिए। उन्हें मार्गदर्शन देने के लिए गुरुदेव ने दस-दस दिन के शोध शिविर भी आयोजित किए। यह तैयारी अपने स्तर पर चल रही थी। उधर डॉक्टर साहब इस विषय की पुस्तकों और संदर्भों की खोज के साथ योग, मंत्र और यज्ञ के प्रभावों को आंकने वाले उपकरणों को भी तलाश रहे थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अवधूत का सहयोग

ग्रंथों की खोज के समय कई बार लगा कि सूक्ष्म और दिव्यशक्तियों ने जैसे काम पहले ही करके रख दिया है। वे निमित्त मात्र बने हुए हैं। लेकिन निमित्त बनने के लिए भी तो पात्रता चाहिए। मन में यह विचार चल ही रहा था वाराणसी के असीघाट चौराहे पर पुस्तकों की अभीष्ट दूकान ढूंढ रहे डॉक्टर साहब को सूक्ष्म आवाज सुनाई दी, 'वह पात्रता भी पुरुषार्थ से नहीं मिलती है। जिसे निमित्त बनाना हो ऋषि सत्ताएं उन पर पात्रता भी बरसा देती हैं।'

आवाज की दिशा में देखा तो एक अवधूत साधु का छाया शरीर दिखाई दिया। छाया शरीर अर्थात आकृति तो स्पष्ट दिखाई दे रही थी लेकिन स्वरूप पारदर्शी था। श्वेत धवल केश और लंबी दाढ़ी मूंछ वाले उस अवधूत ने डॉक्टर साहब को अपनी ओर देखते हुए पाकर अवधूत खिलखिला कर हंस दिया। फिर बोला, 'मन में पात्रता का विचार आना भी अध्यात्म जगत में अनुचित है बालक। सब गुरु की कृपा समझो।'

इतना संबोधित कर उस अवधूत ने पीछे वाली गली की ओर इशारा किया और कहा 'इस दिशा में चले जाओ। गली पार कर दाहिनी ओर मुड़ना। वहां से दस घर छोड़कर ग्यारहवें घर में प्रवेश करना। बाहर से वह निवास दिखाई देता है लेकिन वास्तव में वह शिवालय है। उस शिवालय में तुम्हें वह कोष मिलेगा, जिसकी खोज में यहां घूम रहे हो। गिनती के पांच वाक्य बोल कर वह अवधूत लुप्त हो गया। डॉक्टर साहब उस बाबा की इंगित दिशा और पहचान में गए। शिवालय में पहुंचे। शिवालय में एक वृद्ध उपासक बैठे हुए थे। लगा वर्षों से यही रहते हों। डॉक्टर साहब को देख कर उपासक उठे, अभिवादन किया और उन्हें एक कोठरी में ले गए। उस कोठरी में कुछ संदूकचियां रखी हुई थीं। उन्हें खोलकर बताया तो देखा मोटे पीले कागजों पर काली स्याही से लिखी साठ सत्तर पुरानी पुस्तकें रखी हुई है। उपासक ने वह संदूकची डॉक्टर साहब को सौंपी और कहा, 'मेरा काम पूरा हुआ। इन्हें आपके लिए ही संभाल कर रखा था। जिनके लिए इन ग्रंथों को तलाश रहे हैं, उन तक पहुंचाना अब आपकी जिम्मेदारी है।'

अभीष्ट पुस्तकों की तलाश के दौरान इस तरह के कई अनुभव हुए। मद्रास (अब ये चेन्नई) के अड्यार इलाके में, जहां थियोसोफिकल सोसायटी का मुख्यालय है डॉक्टर साहब को मैडम ब्लावट्स्की एनी बीसेंट, लेडबीटर आदि विद्वानों और साधकों के रहस्यमय अनुभवों से पूरित करे पुस्तकों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
सूचना मिली थी। अड्यार स्थित केन्द्र पर पहुँचे तो पता चला कि जो सूची लेकर आए थे, उसमें से आधी से ज्यादा किताबें तो है ही नहीं। मुख्यालय के सभी विभागों, साधकों और अधिकारियों से संपर्क किया। कोई लाभ नहीं हुआ। जब वे निराश और थके होकर मुख्यालय के पार्क में एक बेंच पर बैठे। वापस लौटने के बारे में सोच रहे थे तो एक गेरुआ वस्त्रधारी व्यक्ति ने उन्हें हैलो कहा। उस व्यक्ति के वस्त्र गेरुआ रंग के थे पर वह संन्यासी नहीं लग रहा था। उस व्यक्ति ने अपना परिचय रामकृष्ण मिशन के स्वामी रंगनाथानंद के रूप में दिया और अड्यार के पास विल पार्ले रोड पर रह रहे एक बुजुर्ग थियोसाफिस्ट का पता दिया। कहा कि वह व्यक्ति आपकी मदद कर सकता है।

स्वामी रंगनाथानंद तब रामकृष्ण मिशन हैदराबाद के प्रमुख थे। उनसे हुई बातचीत में गुरुदेव का जिक्र आया। स्वामीजी ने गुरुदेव का सम्मान से उल्लेख किया। कहा कि आपको समय हो तो हमारी सभा में चलिए। आचार्यश्री ने अद्वैत वेदांत पर जितना काम किया है, अद्‌भुत है। आप मठ के संन्यासियों को उस बारे में बताइए। डॉक्टर साहब ने फिर कभी आने की बात कही और स्वामी जी को प्रणाम कर उनके बताए पते पर चल दिए। वहां स्वामी रंगनाथानंद द्वारा बताए गए बुजुर्ग व्यक्ति से भेंट हुई। उस व्यक्ति ने डॉक्टर साहब से इस तरह व्यवहार किया। जैसे उनके आने के बारे में पहले से पता हो। फिर उनके हाथ की सूची लेकर एक नजर डाली और उस कमरे की दो अलमारियों को खोला। देखा उन में अभिलषित पुस्तकें सिलसिलेबार ढंग से रखी थी। उपासक ने कहा ये आपके लिए है। डॉक्टर साहब ने देखा, ये वही पुस्तकें थी जो मद्रास में कहीं नहीं मिल रही थी। यहीं पर परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित सम्पूर्ण आर्ष साहित्य देखने का अवसर मिला जो कि एक सुखद सुयोग था।

पुस्तकें खरीदने जुटाने का सिलसिला निरंतर चलता रहा। शान्तिकुञ्ज लाकर गुरुदेव के सामने रखने और सुबह उन्हें उठा कर वापस ले जाने, पुस्तकालय के अनुसार व्यवस्थित करने में जरा भी ढील नहीं आई। गुरुदेव उन पुस्तकों को देखने और पढ़ने और उपयोगी अंशों पर निशान लगाकर वापस सौंप देते। इस प्रक्रिया में कभी कदा विचित्र अनुभव हुए। एक अनुभव का उल्लेख जरूरी होगा। मुंबई और पूना से उस समय कोई छह सौ पुस्तकें लाई गई। डॉक्टर साहब ने सिर्फ हिंदी की पुस्तकें गुरुदेव के सामने रखीं और अंग्रेजी तथा मराठी की पुस्तकें वापस ले जाने लगे। गुरुदेव ने उन्हें रोका और कहा कि इन किताबों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को कहां ले जा रहे हो। डॉक्टर साहब ने कहा, 'आपके लिए हिंदी की और संस्कृत की पुस्तकें रख दी हैं। दूसरी भाषाओं की पुस्तक शायद आप नहीं पढ़ना चाहें। गुरुदेव ने कहा इन्हें भी देखूँगा। यहीं रख दो। सुबह सभी पुस्तकें एक साथ ले जाना।'

किताबें गुरुदेव के पास छोड़ दी गई। सुबह डॉक्टर साहब उन्हें वापस लेने गए तो देखा साठ पुस्तकें एक तरफ रखी हुई थीं। अंग्रेजी और मराठी की पुस्तकें भी देखी जा चुकी थीं और उनके अंशों पर भी हिंदी तथा संस्कृत की पुस्तकों की तरह निशान लगाए जा चुके थे। अलग रखी गई पुस्तकों के बारे में गुरुदेव ने कहा कि इनसे कोई काम की सामग्री नहीं मिली है। फिर भी इन्हें अपने विषयों की पुस्तकों के साथ रखना।

प्रयोगशाला के लिए यंत्र

गुरुदेव ने चर्चाओं में, शान्तिकुञ्ज के शिविरों में चलने वाले व्याख्यानों और पत्रिकाओं में शोध संस्थान का उद्देश्य कई बार स्पष्ट किया था। उन उद्बोधनों के अनुसार उद्देश्य अध्यात्म तत्त्वज्ञान के दार्शनिक और प्रयोगात्मक दोनों ही पक्षों का जिम्मा संभालने वाला तंत्र खड़ा करना था। इस विषय में जो भी जानकारी विचार और तथ्य जहां कहीं भी उपलब्ध हैं उन्हें जुटाना पहला कदम था। दूसरे चरण में अध्यात्म दर्शन और मान्यताओं का प्रत्यक्ष परीक्षण किया जाना था। इस उद्देश्य के लिए प्रयोगशाला की व्यवस्था, जिसमें यज्ञ चिकित्सा, उपासना के विभिन्न पक्षों और उसके प्रभावों का अध्ययन तथा योग और तंत्र के विभिन्न प्रयोगों, विधियों का विश्लेषण शामिल था। प्रयोगशाला के लिए गुरुदेव ने पहले चरण में चौबीस यंत्रों की एक सूची नोट कराई। इन यंत्रों से साधना उपासना के शरीर, मन और वातावरण पर पड़ने वाले प्रभावों का परीक्षण आकलन किया जाना था। करीब तीन महीने के प्रयत्नों से जो मशीनें जुटाई गई, ब्रह्मवर्चस संस्थान में लगाई गई उनसे भवन एक विराट प्रयोगशाला की तरह लगने लगा था। योग, मंत्र और तंत्र के विश्लेषण, परीक्षण प्रयोग के लिए भारत में बने हुए उपकरणों को प्राथमिकता दी गई। कुछेक उपकरण ही बाहरी देशों से मंगाए गए। लगाए गए उपकरणों में इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम (ई.सी.जी.) जिसके जरिए हृदय की गति, लय और विद्युत तरंगों को मापा जाता है, उसके साथ जुड़ा आटो रिकार्डर, हार्टरेट मीटर तथा कार्डियोस्कोप यंत्र भी था। साधना कक्ष कार्डियोलॉजी कक्ष में ही बनाया गया था, क्योंकि किसी भी प्रयोग अभ्यास का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
पहला प्रभाव हृदय पर ही पड़ता है। इन मशीनों की खरीद के समय वीरेश्वरजी प्राय: साथ होते थे। उपकरणों की खोज के लिए जगह-जगह भटकना पड़ता। मशीनें भारी भी होती और हलकी भी। कुछ तो इतनी भारी कि कुली भी उन्हें उठाने से इनकार कर देते। उस हालत में वीरेश्वरजी और डॉक्टर साहब भी कुली के स्थान पर जुटते।

प्राणायाम तथा उससे जुड़े अभ्यासों को प्रारंभिक जांच के लिए वायटेलोग्राफ, पीएच मीटर, ब्लड गैस एनालाइजर पल्मोनरी कक्ष में लगाए गए। शरीर की चयापचय क्रियाओं को परखने के लिए बीएमआर मशीन और यज्ञ की ऊष्मा, धूम तथा प्रक्रियाओं का प्रभाव जांचने के लिए कैलोरोमीटर, क्रोमेटोग्राफ, पॉलीग्राफ, इएमजी यंत्रों की व्यवस्था की गई। प्रयोग परीक्षण में लगने वाली ऊर्जा की व्यवस्था सूर्य के ताप और धूम से की जानी थी। इसके लिए सौर ऊर्जा का संग्रह और वितरण संचालक वाले यंत्रों की व्यवस्था की गई। संस्थान के लिए इन उपकरणों की व्यवस्था के समय कुछ कार्यकर्ताओं को लगा कि गुरुदेव को इन यंत्रों के बारे में बता देना चाहिए। हृदय, मस्तिष्क, रक्त परिवहन और मस्तिष्कीय तरंगों के साथ मांसपेशियों के आकुंचन संकुचन जांचने वाले यंत्रों की सूची बनाने में ज्यादा देर नहीं लगी। व्यवस्था में जुटे परिजन इन मशीनों के बारे में बताना शुरु करते, इससे पहले ही गुरुदेव ने चौबीस मशीनों की एक सूची थमा दी। उसमें मशीनों के नाम, उनके द्वारा संपन्न होने वाली जांच, मशीनें मिलने का पता और संभावित मूल्य आदि की जानकारी चार पांच पन्नों में लिखी हुई थी। सूची देख कर परिजन चकित रह गए लेकिन थोड़ी ही देर में सहज भी हो गए। कुछ मन ही मन सकुचाए भी कि अपनी मार्गदर्शक सत्ता की क्षमताओं को आंकने में चूक क्यों हो जाती है? इस तरह की ग्लानि शोध संस्थान में बनी टीम के कुछ नए सदस्यों को ही हुई।

क्षय का यज्ञ उपचार

इसी गोष्ठी में गुरुदेव ने कहा कि संस्थान में जो प्रयोग किए जाने हैं उनके बारे में किसी को संदेह नहीं होना चाहिए। गायत्री तपोभूमि में १९५६-५७ में भी यज्ञ चिकित्सा का परीक्षण किया जा चुका है। यहां ये प्रयोग बड़े और व्यवस्थित रूप में किए जा रहे हैं। हमारे अपने हिसाब से स्वरूप में इतना ही अंतर है। बाकी इनका प्रभाव दुनिया देखेगी। उसी दिन मथुरा से एक कार्यकर्त्ता शान्तिकुञ्ज आए हुए थे। नाम था श्यामलाल। वे गुरुदेव के आध्यात्मिक और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
सांस्कृतिक कार्यक्रमों से कम ही जुड़े हुए थे। अपने आपको उनका अनुयायी या शिष्य कम और मित्र ज्यादा मानते थे। गुरुदेव भी उन्हें मित्रवत ही समझते थे। सन १९५६ में उनकी आयु करीब चालीस वर्ष रही होगी। शुरु में कुछ दिन तक खांसी उठी और फिर खांसते खांसते मुंह से रक्त आने लगा। वैद्यों को बताया तो पता चला कि खांसने के कारण गले में खरोंचे आ गई हैं, इससे रक्त आने लगा है। लक्षण देखकर अनुमान से निदान करते हुए आयुर्वेदिक औषधियां दी जाने लगीं। उनसे कोई लाभ नहीं हुआ। कुछ और वैद्यों ने परीक्षा की। उन्होंने क्षयरोग की आशंका जताई। तब यह रोग असाध्य समझा जाता था। पता लगने पर मित्र परिचित और संबंधी तो क्या अपने स्वजन और पत्नी पुत्र कलत्र भी किनारा करने लगते। कहीं यह रोग उन्हें भी न लग जाए।

प्रत्यक्ष को क्या प्रमाण

परिवार के लोग तिरस्कार न कर दें, इस भय से श्यामलाल जी ने घर के लोगों को नहीं बताया। वे गुरुदेव के पास सुबह शाम रोज आते थे। समय मिलने पर दिन में भी तपोभूमि आ जाते। गायत्री तपोभूमि का तब निर्माण ही चल रहा था। वैद्य द्वारा क्षय रोग की आशंका जताते ही उन्होंने गुरुदेव से कहा। सुनकर गुरुदेव ने चिंता जताने के स्थान पर श्यामलालजी को आश्वस्त करने वाली आशा भरी वाणी में कहा, 'चिंता मत करो मित्र। मैं तुम्हारा यह रोग एक माह में दूर कर दूंगा। हमारे ऋषि मुनियों ने इसके लिए जिस तरह के उपचार की व्यवस्था की है उससे यह रोग तो क्या इसकी याद दिलाने वाली खांसी का उभार भी कभी नहीं होगा।'

गुरुदेव ने उसी दिन उपचार क्रम निश्चित कर दिया। उस क्रम के अनुसार श्यामलालजी को अगले दिन सुबह पांच बजे ही तपोभूमि आ जाना था और वहां यज्ञशाला में बैठकर चौबीस आहुतियां देनी थीं। आहुतियों के लिए विशेष हवन सामग्री का प्रबंध गुरुदेव ने उसी दिन करा लिया। इसके लिए वे स्वयं तपोभूमि के दो कार्यकर्त्ताओं को साथ लेकर वृंदावन के पास किसी जगह गए और जड़ी बूटी लेकर आए। कार्यकर्त्ताओं को इसलिए साथ ले गए कि आगे जब भी जरूरत हो वे उस जगह से दोबारा औषधियां ला सकें। इस व्यवस्था के बाद उन्होंने श्यामलालजी को अगले ही दिन तपोभूमि बुला लिया। शुरु में तय हुआ था कि रोज आते जाते रहेंगे लेकिन पहले दिन यज्ञ में बैठने के बाद वापस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाने लगे तो गुरुदेव ने कहा, आप महीने भर तक यहीं रहिए। पूरी तरह स्वस्थ होकर ही वापस जाएं।

श्यामलालजी ने कहा, घर के लोगों को इस बारे में बताने के लिए एक बार तो जाना पड़ेगा। कुछ पल रुककर वे हंसते हुए बोले, उन लोगों को भी संतोष होगा कि रात भर खों खों की आवाजें अब नहीं सुनाई देंगी। दोपहर तक श्यामलाल जी आवश्यक वस्त्र और बर्तन बिस्तर सहित तपोभूमि वापस आ गए। प्रतिदिन यज्ञशाला जाते और वहाँ नियत विधानों में भाग लेने के साथ गुरुदेव द्वारा बताई, तैयार की गई सामग्री से यज्ञ में चौबीस आहुतियां भी देते। दो सप्ताह तक यह सिलसिला चलता रहा। पंद्रहवें दिन घर के लोगों ने कहा कि अब आप वापस चलिए। आपके चेहरे की रंगत देखकर तो लगता है कि आप ठीक हो गए। नानूराम जी (वैद्य) भी आपको कल देखकर गए थे। वे भी यही बता रहे थे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

श्यामलालजी ने कहा, पंडित जी (वे गुरुदेव को इसी संबोधन से पुकारते थे) जब तक अपने आप नहीं कहते, यहां से जाना ठीक नहीं होगा। यज्ञ में विशिष्ट आहुतियां देते हुए सत्ताइस दिन हो गए। गुरुदेव नानूराम जी के साथ मथुरा के जिला अस्पताल से डॉ. मोतीलाल को भी साथ लेकर आए। वैद्यजी और डॉक्टर दोनों ने जांचा परखा श्यामलालजी पूर्ण स्वस्थ थे। उनकी सांस, बलगम या थूक और सीने में कहीं कोई विकार नहीं था। पूरी तरह निरोग करार दिए जाने के तीन दिन बाद गुरुदेव श्यामलालजी को अपने साथ रिक्शे में बिठा कर घर ले गए। ये गुरुदेव के ढाई मित्रों में से एक थे।

आर्ष पद्धति से रोगोपचार का एक मामला १९७४ का है। तब भोपाल में सेवारत एक कार्यकर्त्ता बृजमोहन जी को विकट मनोरोग हो गया था। दधीचि के नाम से विख्यात ये कार्यकर्त्ता गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में जाया करते थे और मंच को अपनी ओजस्वी वाणी तथा ठहाकों से जीवंत कर देते थे। अचानक पता नहीं क्या हुआ वे गुमसुम रहने लगे। गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में जाना बंद कर दिया। दो एक दिन बाद कार्यालय जाना भी छोड़ दिया। फिर घर में चुपचाप बैठे रहने लगे। बैठे बैठे ही उन्माद उभरता और जोर जोर से हंसते, अनर्गल वार्तालाप करते। बीच बीच में स्वस्थ भी हो जाते। गुरुदेव को इसकी सूचना दी गई। आदेश आया कि उन्हें लेकर तुरंत शान्तिकुञ्ज आ जाएं। उन्हें लाना भी समस्या थी। भारी भरकम और बलिष्ठ काया। बहक जाएं तो किसी के संभाले न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
संभलें। गुरुदेव ने इस बारे में भी निर्देश दिया कि किसी तरह मथुरा तक भिजवा दें। वहां से शान्तिकुञ्ज बुलाने की व्यवस्था हो जाएगी। दधीचि जी के परिवार में तब पत्नी के अलावा कोई और नहीं था।

आराम भी एक काम

भोपाल के परिजनों ने उन्हें मथुरा पहुंचा दिया। वहां से पंडित जी ने एक कार्यकर्ता को साथ बिठाकर दधीचिजी को शान्तिकुञ्ज भेज दिया। मथुरा से तब हरिद्वार रोडवेज की एक बस आती थी। जो सुबह पांच छह बजे यहां पहुंचती। उसी बस में दधीचिजी आए। कार्यकर्त्ता को बीच रास्ते में एकाध बार विचार आया कि दधीचिजी अपना आपा खों देंगे तो क्या करेंगे? विचार आते ही कार्यकर्त्ता ने गुरुदेव का स्मरण किया और मन शांत हो गया। सुबह बस स्टेंड पर उतरे और रिक्शे में बैठ कर दोनों शान्तिकुञ्ज पहुंचे। तब छह सात बजे का समय होगा। दधीचिजी अपने लिए नियत कक्ष में ठहरे ही थे कि गुरुदेव के पास से तुरंत ऊपर आने का संदेश आया। उस समय तक दधीचिजी ने मंजन आदि ही किया था। निर्देश मिलते ही वे ऊपर गए और गुरुदेव को प्रणाम किया। गुरुदेव ने कहा, 'यह क्या हाल कर लिया है बृजमोहन'।

'माई माइंड हेज गोन', दधीचिजी ने गुरुदेव से अंग्रेजी में कहा। फिर हिंदी में बोले, 'अब मैंने कामकाज भी बंद कर दिया है। आपका काम भी नहीं कर रहा। आगे भी नहीं करूंगा।'

'हां मत करना बेटा, किसी का काम मत करना।' गुरुदेव ने कहा, 'बहुत काम कर लिया। अब यहां मेरे पास सिर्फ एक ही काम करना।'

सुनकर दधीचि जी ने गुरुदेव की ओर देखा कि वे क्या कहने जा रहे हैं। वे अवाक से थे-मुंह खुला ही रहा। जैसे अभी चिर परिचित अट्टहास करते हुए हंस उठेंगे। गुरुदेव ने कहा, 'मैं जब तक कहूं सिर्फ यहीं आराम करना। यह भी एक काम है अच्छा।'

इतना कह कर गुरुदेव ने अपनी आलमारी से इलायची के कुछ दाने और लौंग के टुकड़े दधीचि जी के हाथ पर रख दिए। अब जाओ अपना काम शुरु करो। नहा धोकर तैयार हो जाओ। मैं तुम्हें नौ बजे बुलाऊंगा और बताऊंगा कि क्या करना है।

गुरुदेव का आदेश पाकर दधीचि जी धीरे धीरे सीढ़ियां उतरते हुए नीचे आ गए। शान्तिकुञ्ज में वे करीब तीन सप्ताह रहे। गुरुदेव ने उन्हें श्वास लेने की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ खास विधियां बताई और सिर में लगाने के लिए तेल दिया। फिर हवन आरती में भी आने के लिए कहा। तीन सप्ताह बीतने के बाद दधीचि जी पहले की तरह स्वस्थ खिलखिलाते और अट्टहास करते हुए वापस लौट रहे थे।

साधना प्रयोगों के प्रतिबंध

गुरुदेव के सान्निध्य में रह कर इस तरह के विशेष उपचारों से स्वस्थ होने वालों के सैंकड़ों प्रसंग हैं। ये प्रसंग निजी अनुभवों के दायरे में ही आते हैं। ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के जरिए उन विधियों और प्रयोगों को विज्ञान की कसौटी पर भी खरा सिद्ध करना था। औपचारिक उद्‌घाटन और यज्ञशाला के प्रायोगिक स्वरूप को प्रकट करने से पहले गुरुदेव माताजी ने भवन के भूमितल पर बने मंदिरों में गायत्री के चौबीस विग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा की थी। यह कार्यक्रम सबसे पहले संपन्न किया गया और गिने चुने लोग ही इसमें सम्मिलित हुए। जिन चौबीस साधकों ने समारोह में अर्चक के रूप में हिस्सा लिया था उन्होंने चालीस दिन का एक अनुष्ठान किया था और पिछले चालीस घंटों से निराहार व्रत रखा था। कुछ अर्चकों ने वैदिक विधि से अनुष्ठान किया था तो कुछ ने तांत्रिक विधियों से। दोनों विधियों से अनुष्ठान करने वालों की संख्या आधी आधी रही होगी।

गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों को बीज मंत्र के रूप में प्रयोग करते हुए चौबीस शक्तियों के आह्वान का विधान है। अनुष्ठान करने वाले अर्चकों से गुरुदेव ने अपने अनुभव और परिचय को गुप्त रखने के लिए कहा था। इस प्रतिबंध अनुशासन के बाद ही उन्हें चौबीस महाशक्तियों-महाविद्याओं, बीज अक्षरों और मंत्र के अक्षरों के साथ देवता और अभिभावक पित्र सत्ता के रहस्य बताए थे। वैदिक साधनाओं की दिशा निर्दिष्ट करने वाली साधना और शक्तियों के नाम इस प्रकार हैं-आद्यशक्ति, ब्राह्मी, वैष्णवी, शांभवी, वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता, ऋतंभरा, मंदाकिनी, अजपा, ऋद्धि और सिद्धि। वैदिक साधनाओं के अलावा तांत्रिक साधनाओं की दिशा देने वाली अधिष्ठात्री शक्तियों में सावित्री, सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, कुंडलिनी, प्राणाग्नि, भवानी, भुवनेश्वरी, अन्नपूर्णा, महामाया, पयस्वनी और त्रिपुरा के नाम हैं। चौबीस विग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा के बाद गुरुदेव ने चौबीस अर्चकों से कहा कि तुम लोगों को जन समुदाय के सामने नहीं आना है। एकांत में और अज्ञात स्थान पर ही रहना है। एक ही काम है-हमने अपने जीवन में जिन चौबीस शक्तियों को लोगों तक पहुंचाया है, उसी तरह चुपचाप तपना और गलना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
है। सर्वथा एकांत और अज्ञान रहने का प्रतिबंध इसलिए कि अपना समय इन साधनाओं के शोध अनुसंधान में ही लगा सको। अनुभव बांटते चले तो स्खलन निश्चित है क्योंकि तुम लोगों के लिए साधना उपासना की ही मर्यादा तय की गई है।

५ जून १९७९ को गायत्री जयंती के दिन अर्चकों को जब यह निर्देश दिया जा रहा था तो वह संकल्प कराना मात्र था। इसका उद्‍बोधन और वचन तो दो ढाई महीने पहले चैत्र नवरात्रियों के समय ही ले लिया गया था, जब उनका चुनाव किया गया था। उस संकल्प के साथ साधनाओं के सफल होने का निश्चित आश्वासन था। आश्वासन इसी आधार पर था कि अर्चकों को हमेशा साधनारत ही रहना है। साधना की मर्यादा अनुशासन का अतिक्रमण होते ही उस समय तक अर्जित शक्तियों के क्षीण हो जाने का उस प्रक्रिया का ही हिस्सा बताते हुए एक दुलार भरी चेतावनी भी थी।

प्रज्ञापुराण का वाचन

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पुराणखंडी या पंथी शब्द से ध्वनि निकलती है कि उस तरह का व्यक्ति लकीर का फकीर होगा। अठारह पुराण और इतने ही उप तथा औप पुराण किस जमाने में लिखे गये किसी को नहीं पता। प्रत्येक पुराण के अनुयायियों का मानना है कि भगवान वेदव्यास ने इन पुराणों की रचना वेदों के गुह्य ज्ञान को सुगम बनाने के लिए की। मंत्र, उपनिषद और आरण्यक आदि के अंश बहुत संक्षेप में होते हैं, कई बार तो एक ही शब्द के। उन्हें समझना विद्वानों के वश की ही बात है। आम आदमी या कम पढ़े लिखे लोगों को उनसे धर्मप्रेरणा नहीं मिलती। ऐसे व्यक्तियों को कथाप्रसंगों के माध्यम से ही धर्म तत्व समझाया जाता है। पुराणों में वैदिक सिद्धान्तों को कथाओं के माध्यम से समझाने की चेष्टा की गई है। जिस जमाने में इनकी रचना हुई तब संबंधित पुराणों के प्रतिपादन सामयिक रहे होंगे। लोगों ने उन्हें स्वीकार भी किया होगा। लेकिन समय इतना बदल गया है कि उन्हीं पुराणों के उल्लेख हास्यास्पद लगते हैं। गुरुदेव ने पुराणों की इस कमी को चिह्नित किया साथ ही यह व्यवस्था भी की कि कथाप्रसंगों के माध्यम से आज के अनुकूल प्रेरणायें उभरें।

मूल पुराणों की संख्या अठारह है। उप और औपपुराणों की संख्या भी अठारह अठारह है। इस संख्या में नए पुराण शामिल होते रहते हैं और कुछ गणनाओं में वे पुराने पुराणों को हटा भी देते हैं। इसलिए अठारह पुराणों की गणना में संप्रदाय भेद से अलग अलग पुराणों का उल्लेख मिलता है। उदाहरण के लिए कुछ गणनाओं में देवी भागवत, कल्कि और भविष्य पुराण को एक साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
या अलग अलग भी अठारह पुराणों में सम्मिलित किया जाता है। कुछ गणनाओं में भागवत, भविष्य, देवी, कल्कि आदि पुराणों को हटा दिया जाता है। यह विवेचन का अलग विषय है और इस पद्धति को स्पष्ट करने के लिए बहुत विस्तार भी चाहिए। संस्कृत और पौराणिक वाङ्मय के विद्वानों के अनुसार कल्कि और भविष्य पुराण सबसे नये ग्रंथ हैं। इनकी रचना या अवतरण का समय भी ढाई सौ से तीन सौ वर्ष पहले तक निश्चित किया गया है।

१९७५-७६ में प्रज्ञा पुराण के अवतरण की पृष्ठभूमि बनने लगी और गुरुदेव ने ब्रह्मवर्चस साधना सत्र के दौरान कहा कि इसका अध्ययन पठन आज की समस्याओं का समाधान अत्यंत सुगम सुबोध ढंग से प्रस्तुत करेगा। जिन दिनों गंभीर साहित्य के अध्ययन चिंतन की परंपरा कमजोर होने लगी, वेद उपनिषदों की शिक्षा आमजनों की पहुँच से बाहर होती गई उन दिनों विद्या और बोध की अधिष्ठाता ऋषि सत्ता ने पुराणों का प्रकटीकरण शुरु किया। उद्देश्य यह था कि कथा कहानियों के माध्यम से लोगों को धर्म अध्यात्म की शिक्षा दी जाए। इन पुराणों में अलग-अलग कालखंडों में अलग अलग उपास्य देवों की आराधना का विवेचन है। उस विवेचन के साथ तदनुकूल प्रेरणाएं भी हैं।

नया युग-बीसवीं इक्कीसवीं शताब्दी का संधिकाल और उसके बाद का समय ज्ञान, मनीषा तथा बुद्धि विवेक का समय है। गायत्री युग शक्ति है। वेदों की माता और ज्ञान तथा ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री देवी गायत्री की चेतना तथा उसकी प्रेरणा के लिए कोई एक शब्द चुनना हो तो मनीषी विद्वान प्रज्ञा के संबोधन पर ही सहमत होते हैं। 'प्रज्ञा' शब्द का योग की उच्च कक्षा में स्थित बुद्धि विवेक के लिए उपयोग किया जाता है। बुद्धि जब इतनी निर्मल हो जाती है कि राग द्वेष उसे प्रभावित नहीं कर पाते और इतनी सूक्ष्म कि वह चेतना के समकक्ष हो जाती है तो उसे प्रज्ञा कहते हैं। उस निर्मल बुद्धि के सामने ज्ञात अज्ञात रहस्य अपने आप खुलने लगते हैं। उस अवस्था की ओर सामान्यजनों को अथवा हर किसी को सहज ढंग से प्रेरित करने के लिए जिस पुरातन विद्या धारा को प्रकट होना था- गुरुदेव ने उसे प्रज्ञा पुराण नाम दिया।

अठारह खण्डों में प्रस्तुत किए जा रही इस पुराण शृंखला को प्रज्ञा-उपनिषद भी कहा गया है। आशय यह कि प्रज्ञा पुराण में पौराणिक शैली-विस्तार और कथा प्रसंगों के साथ-साथ उपनिषद शैली का भी समन्वय हुआ है। कथा प्रसंगों में विस्तार के बाद उसी तत्वज्ञान को उपनिषद की सूत्र शैली में भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिपिबद्ध किया गया। इस तरह प्रज्ञा पुराण आयोजनों के साथ मनीषियों, बुद्धिजीवियों के लिए भी समान रूप से उपयोगी हुआ।

जिस दिन गुरुदेव ने प्रज्ञा पुराण के अवतरण की घोषणा की, उसके कुछ ही महीनों बाद चार खंडों में वह अवतरित हो गया। गुरुदेव ने आज की समस्याओं का समाधान बताने वाले प्रकरण कथा प्रधान, बिचारोत्तेजक और तथ्यों पर आधारित प्रतिपादन चार खंडों में लिख कर रख दिए। इनका विस्तार डेढ़ हजार पृष्ठों से ज्यादा था। साथ ही कहा कि युग देवता इस पुराण को अठारह खंडों तक भी विस्तारित कर सकते हैं। कालांतर में पांचवा और छठा खंड भी प्रकाशित हुआ। प्रज्ञा पुराण के बाकी खंड भी गुरुदेव के संकेतों की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना के दिनों में प्रकाशित इस पुराण के पठन पाठन की परंपरा भी वहीं शुरु हुई। शांतिकुंज और ब्रह्मवर्चस आरण्यक के सात कार्यकर्ताओं की एक मंडली बनाई गई। इस मंडली के जिम्मे पुराण के नियमित पाठ का काम सौंपा गया। पहले दिन पाठ शुरु हुआ शांतिकुंज के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता महेन्द्र शर्मा ने सस्वर गान छेड़ा तो मंडली के बाकी सदस्यों ने भी समवेत गान छेड़ा। पाठ की-प्रज्ञा पुराण के प्रकरणों की व्याख्या शुरु हुई। पहले दिन के पाठ प्रवचन में समझाया कि मनुष्य ईश्वर का पुत्र है। उसकी गरिमा और महिमा इतनी गहन है कि उसे दुखी होना ही नहीं चाहिए। फिर भी वह दुखी रहता है तो आगे आ रही कथाओं के प्रकाश में समझा जा सकता है कि दुख का कारण क्या है और उसका निराकरण कैसे किया जा सकता है। यह भी कि पुराण में व्यक्त प्रेरणाओं के अनुसार आचरण करने से मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग उतरेगा।

मंडली ने पहली कथा सात दिन में पूरी की। बीच में एक दिन का विश्राम था। फिर कथा सप्ताह का नया सत्र शुरु हुआ। शुरु में पुराण के चार खण्ड ही आए थे। चार मण्डलों के नाम से विभाजित इन खंडों में लोक कल्याण, महामानव-देवमानव, परिवार और देवसंस्कृति के शीर्षक से गायत्री परिवार का-नये युग का जीवन दर्शन विवेचित हुआ था। कथा को यदि दृष्टान्तों के माध्यम से समझाने, गाने या पाठ करने का आयोजन किया जाए तो एक महीना या इससे ज्यादा समय भी लग सकता है। लेकिन सामान्य तौर पर यह आयोजन सात आठ दिन में संपन्न कराया जा सकता है।

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बाईस

प्रज्ञावतार के लीला केन्द्र

मार्च १९७९ में गायत्री परिवार का रजत जयंती वर्ष चल रहा था। पिछले वर्ष गायत्री जयंती पर स्थानीय संगठनों, शाखाओं, शाखाओं के पुनर्गठन, कार्यक्रमों और दायित्वों के नए सिरे से निर्धारण के बारे में परिजनों ने अपने लिए युग साधना का कोई न कोई अनुष्ठान चुन लिया था। गुरुदेव ने सार्वजनिक रूप से घोषित किया कि इस वर्ष क्षेत्रों में गायत्री परिवार की शाखाओं में कमाल की गतिविधियां चलीं। शान्तिकुञ्ज के सभागार में नवरात्रि साधना के लिए आए साधकों को वर्ष प्रतिपदा पर, नवरात्र के पहले दिन उन्होंने कहा कि इस बीच केन्द्रीय स्तर पर भी तीन उपलब्धियाँ हुईं। गुरुदेव ने कहा कि ब्रह्मवर्चस आरण्यक में गायत्री शक्तिपीठ, ब्रह्म विद्यालय और शोध संस्थान की त्रिवेणी बहने लगी है। यह इस वर्ष की केन्द्रीय उपलब्धि है। पहले उसे मात्र साधनाश्रम के रूप में बनाया गया था, अब उस गंगा ने त्रिवेणी का रूप ले लिया है। क्षेत्रीय स्तर पर आरंभ की जा रही स्थापनाओं में चौबीस गायत्री शक्तिपीठ हैं। आरंभ में इनकी संख्या चौबीस रहेगी। आगे इनकी संख्या बढ़ सकती है। ये कलेवर की दृष्टि से बहुत बड़े नहीं होंगे और न ही अनावश्यक रूप से खर्चीले।

इस घोषणा में गुरुदेव ने स्पष्ट नहीं किया था कि किन स्थानों को गायत्री तीर्थों के लिए चुना जाएगा। पर इतना निश्चित है कि एक भी ऐसा स्थान नहीं बचेगा जहां लोग तीर्थयात्रा के उद्देश्य से जाते हों। नवरात्र शिविर में आए साधकों के लिए यह सूचना अनूठी थी। प्राय: सभी साधक जानते थे कि भारत में विभिन्न तीर्थ स्थानों पर पुराने, पौराणिक शक्तिपीठ हैं। उन शक्तिपीठों के संबंध में तरह तरह के विश्वास और आस्थाएं हैं। संख्या इक्यावन, बावन, बहत्तर या चौरासी जो भी हो प्रत्येक स्थल पर पूजा, विधान और अलग अलग परंपराएं हैं। ये शक्तिपीठ सती की अलग अलग शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हुए साधकों में भी उन्हीं संभावनाओं को जागृत करते हैं। गायत्री शक्तिपीठों के बारे में सुन कर साधकों को स्पष्ट नहीं हुआ था कि वहां आत्मिक कल्याण का मार्ग कैसे मिलेगा या जनकल्याण कैसे सिद्ध होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिस शिविर में गुरुदेव ने घोषणा की उसमें कुछ विशिष्ट स्तर के साधक भी आए थे। इनमें एक तो वर्षों बाद गुरुदेव के पास पहुंचे थे। वे गुरुदेव से करीब सात आठ साल पहले मथुरा में ही मिले थे। नाम था उनका मुनि धर्मकाय। १९७१ तक वे गायत्री परिवार के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। गुरुदेव अज्ञातवास जाने लगे तो कुछ दिन पहले एक विचित्र संदर्भ प्रस्तुत हुआ और वे परिवार से उपराम होकर साधना उपासना में ही लग गए। हुआ यह कि मथुरा से गुरुदेव की विदाई में तीन सप्ताह बाकी थे, धर्मकाय उनके पास सुबह-सुबह अखंड ज्योति संस्थान पहुंचे। कहने लगे गुरुदेव मैंने मिशन के काम को ही सब कुछ समझा है। पूजा, उपासना, जप, अनुष्ठान और आरती, स्तुति की ओर कभी मन नहीं गया। अब आप जा रहे हैं तो बताइए कि मुझे आगे भी यही सब करते रहना है अथवा आपने मेरे लिए कुछ और निश्चित किया हुआ है।

गुरुदेव के सामने धर्मकाय ने जो कुछ कहा, वह संक्षेप में और विनय से प्रेरित होने के कारण कम ही था। सत्रह-अठारह वर्ष की उम्र में उन्होंने अपने आपको पूरी तरह गुरुदेव के काम में लगा दिया था। गायत्री यज्ञों की विधि व्यवस्था, जगह-जगह संस्कार आयोजन, विचार गोष्ठियां, गायत्री साधना का प्रचार और लोगों से दुष्प्रवृत्तियां छुड़वाने, सत्प्रवृत्तियों के संकल्प कराने में दिन रात जुटे रहे। मुनि धर्मकाय ने न दिन देखा न रात और न घर देखा न बाहर। गायत्री परिवार का काम करते हुए उन्होंने परिवार को भी बाधा समझा और घर गृहस्थी नहीं बसाई। १९७१ से पहले तक, गुरुदेव के सामने किए उपरोक्त निवेदन के समय तक उनका नाम धर्मशील द्विवेदी था। वे उत्तर प्रदेश में बनारस के पास किसी गांव के रहने वाले थे। अपने बारे में कम ही चर्चा करते थे। इसलिए गांव, घर परिवार आदि की सूचनाएं उपलब्ध नहीं हुई। चर्चा करते भी कहां से, लोक जीवन और मिशन के कार्यकर्त्ताओं से भी उनका संपर्क लगभग टूट ही गया।

मिशन से मुक्ति

उस दिन धर्मशील या धर्मकाय ने गुरुदेव से विदाई के बाद अपने लिए मार्ग पूछा तो लगा जैसे पहले से ही तय था। गुरुदेव ने कहा, "अब मैं तुम्हें मिशन के काम से मुक्त करता हूँ। तुम्हारे लिए मैंने नया क्षेत्र चुन रखा है। अब साधना, उपासना में लगो और आंतरिक जीवन का वैभव देखो, उसका साक्षात्कार करो। इसी प्रसंग में गुरुदेव ने कहा कि अब तुम धर्मशील नहीं रहे, धर्मकाय हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
गए। मुनि धर्मकाय मुनि जो लौकिक जीवन से उपरत होकर धर्मसाधना में ही प्रवृत्त हो। गुरुदेव के इस आदेश के बाद धर्मशील मथुरा से चले गए। वर्षों तक उनके बारे में किसी को पता नहीं चला। सन् १९७८ में शान्तिकुंज में वे पहली बार दिखाई दिये। संन्यासी की वेशभूषा में थे। नाम, रूप और वेश विन्यास से उन्हें पहचानना मुश्किल था। मथुरा से विदाई के आठ वर्ष बाद वे शान्तिकुंज आये तो कुछ कार्यकर्त्ताओं ने उन्हें पहचाना। लेकिन वे कार्यकर्त्ताओं के नजदीक नहीं गए। जो उन्हें पहचानते थे, उनसे भी नहीं घुले-मिले। शिविर में उन्होंने शक्तिपीठों की घोषणा सुनी तो उनके चेहरे पर मुस्कान खिली। इस स्मित हास्य में व्यक्त हो रहा था कि जो कुछ उन्होंने सुना था उसका आभास उन्हें जैसे पहले से रहा हो।

शिविर का पहला दिन बीतने के बाद मुनि धर्मकाय को अगले दिन गुरुदेव ने अपने पास बुलाया। सुबह साढ़े सात आठ बजे के आसपास का समय होगा। मथुरा से जाने के बाद अब तक मुनि धर्मकाय ने क्या किया, क्या नहीं? इसका परिचय देने की जरूरत नहीं हुई। गुरुदेव को उनकी साधना, यात्रा, सफलता और बाधा आदि के बारे में सब कुछ पता था। मुनि धर्मकाम गुरुदेव के पास जाकर बैठ गए। चरण वंदन और स्नेह प्रदर्शन का लौकिक उपक्रम पूरा हुआ।

गुरुदेव ने इसके बाद कहा, 'तुम्हें पता है न कि तुम्हारा पूर्व नाम धर्मशील था इसलिए धर्मकाय का संबोधन नहीं मिला है।

मुनि धर्मकाय ने गरदन हिलाकर विनय पूर्वक हामी भरी। नामकरण के समय उन्होंने वास्तव में नहीं सोचा था कि नया नाम क्यों दिया जा रहा है। गुरुदेव ने कहा, "बौद्ध ग्रंथों के अनुसार प्राचीन काल में भगवान बुद्ध से भी पहले धर्माकर नाम के एक भिक्षु थे, जो आगे चलकर लोकनाथ, अमिताभ या अवलोकितेश्वर कहलाए। शास्त्र कहते हैं कि वे दस कल्प पहले बुद्धत्व को प्राप्त हो चुके हैं। धर्माकर ने जब साधना आरम्भ की तो संकल्प लिया कि संबोधि को प्राप्त होने के बाद बुद्धक्षेत्र नामक पवित्र और आननदमयी नगरी का निर्माण करेंगे। इस नगरी का नाम सुखावती भी हो सकता है।"

"कोई साधक जब साधना करते करते परिपक्व होने लगता है किन्तु किन्हीं कारणों से निर्वाण को प्राप्त नहीं होता तो सुखावती नगरी में निवास करता है। यहाँ रहकर वह अपनी मुक्ति की प्रतीक्षा करता है और तब तक सामान्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवों के कल्याण के लिए काम करते हैं।'' वे प्रतीक्षारत साधक अमिताभ अथवा धर्माकर के साथ रहकर उत्कृष्ट श्रेणी के साधकों की सहायता करते हैं। गुरुदेव के कहते ही मुनि धर्मकाय को बोध हुआ। अभी तक वे गुरुदेव की बातें में समाधिस्थ की तरह सुन रहे थे। सहज स्थिति में आते ही उन्होंने पूछा, 'मुझे अब क्या करना है गुरुदेव? मैं जानता हूँ कि आपने अवलोकितेश्वर स्तर की जिस स्थिति का उल्लेख किया है, मैं उसके आसपास भी नहीं हूँ।'

गुरुदेव ने कहा, ''तुम यहाँ स्वयं अपने आप नहीं आये, बुलाये गये हो। यह तो जानते ही हो। तुम्हारा नाम धर्मकाय इसलिए रखा गया था कि तुम ऐसे क्षेत्र बनाने की तैयारी करो जहां संस्कारवान आत्माओं को विश्राम और ऊर्जा मिले।''

''समझा गुरुदेव!'' मुनि धर्मकाय ने कहा, ''आप शक्तिपीठों के बारे में कह रहे हैं। अपनी स्थिति और योग्यता के बारे में मैं स्वयं क्या कहूँ? आप आदेश दें। मुझे यह तो समझ में आया है कि आप नए तीर्थों की स्थापना करने जा रहे हैं उसमें मुझे क्या करना है।''

'तुम्हें तीर्थ शिल्पी की भूमिका में रहना है। तुम्हारी तरह तेईस और साधक वर्षों से इस काम के लिए अपने आपको तैयार कर रहे हैं। श्रेय और प्रेय के आकर्षण से मुक्त होकर वे भी इसी साधना में निरत होंगे। सामाजिक कर्मों से उनका सरोकार नहीं रहेगा।'

धर्मकाय ने इन निर्देशों या संकेतों को ध्यान पूर्वक सुना और कहा कि मुझे तो आदेश दीजिए गुरुदेव बस। ज्यादा कुछ नहीं जानना। कहते हुए धर्मकाय ने गुरुदेव के चरणों में सिर रख दिया। उनका स्नेहिल स्पर्श पाकर धर्मकाय उठकर चले आए। कुछ और भी परिजन थे, जो उस शिविर में या शिविर के बाद धर्मकाय की तरह सामने आए। वे मिशन के प्रचार और रचनात्मक कामों से अलग होकर साधना उपासना में ही रत रहते। इन साधकों में एक थे सत्यानंद सरस्वती। संन्यासी थे और गाहे बगाहे गायत्री परिवार के यज्ञ सम्मेलनों में जाया करते थे। गुरुदेव के संपर्क में वे संन्यासी होकर ही आए थे। उनके गुरु स्वामी कृष्णतीर्थ किसी समय गृहस्थ अवस्था में गुरुदेव के शिष्य रहे थे। लेकिन गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में सक्रिय नहीं थे।

शिष्य समर्पित

१९७० में उन्होंने सत्यानंद सरस्वती (पूर्व आश्रम का नाम सद्धर्म प्रकाश), को संन्यासी बनाया और अमरकंटक का आश्रम छोड़कर ऋषिकेश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चले आए। उन्होंने चाहा था कि सत्यानंद सरस्वती अमरकंटक आश्रम का दायित्व संभालें और वे स्वयं ऋषिकेश चले जाएं। अमरकंटक में स्वामी कृष्णतीर्थ का आश्रम कुछ खास नहीं था। नर्मदा के कनारे यों ही डेढ़ दो सौ गज जमीन घेरी हुई थी। चारों तरफ बाड़ लगा दी थी और एक कुटिया बना ली थी। सद्धर्म प्रकाश को संन्यास दीक्षा देने के बाद कुटिया को थोड़ा और विस्तार दे दिया, बाकी जगह फूल पत्तियाँ और पौधे लगे हुए थे। उन्होंने अपने शिष्य से इस आश्रम या कुटिया को संभालने के लिए कहा तो सत्यानंद ने हठ किया कि आपके साथ ही चलना है। स्वामी कृष्णतीर्थ यों सामान्य साधु थे, उनके शिष्यों और अनुयायियों की संख्या नगण्य थी। लेकिन उनकी वीतरागता आसपास के गांवों में प्रसिद्ध थी। शायद यही कारण था कि उन्हें किसी वस्तु का अभाव नहीं रहा। लोक श्रद्धा से लेकर भजन पूजन और निर्वाह की व्यवस्थाएं सदा उपलब्ध रहीं। गुरु जब आश्रम या कुटी छोड़कर जाने की तैयारी करने लगे तो शिष्य ने भी अपनी गठरी संभाल ली और दोनों ऋषिकेश रवाना हो गये।

यह १९७२ के आसपास की बात है। गुरुदेव तब शान्तिकुंज आ गये थे लेकिन शिविर आदि शुरु नहीं हुए थे। प्राण प्रत्यावर्तन सत्रों की तैयारियां चल रही थीं। तिथियां घोषित हो गई थीं लेकिन सत्र अभी आरंभ नहीं हुए थे। स्वामी कृष्णतीर्थ और सत्यानंद सरस्वती हरिद्वार पहुँचकर ऋषिकेश के लिए रवाना हुए तो स्वामीजी को शान्तिकुंज और गुरुदेव की याद आ गयी। उन्होंने ऋषिकेश जाते हुए गुरुदेव से मिलने का निश्चय किया और रास्ते में ही उतर गए। गुरु शिष्य दोनों गुरुदेव से मिले। इस भेंट के दौरान ही गुरुदेव ने स्वामी कृष्णतीर्थ से कहा कि सत्यानंद को हमें दे दो। वह रहेगा आपके साथ ही लेकिन जप-तप योग सब गायत्री माता के लिए करेगा।

स्वामी कृष्णतीर्थ ने सत्यानंद की ओर देखा। उसकी आँखों में निरीह असमंजस था। जैसे कि गुरु का साथ तो नहीं छूट जाएगा, कहीं गुरुजी कह न दें कि आप (गुरुदेव) जैसा चाहें, बच्चा आपका ही है। गुरुदेव ने इस असमंजस को पढ़ा और दूर करते हुए कहा "हम अपने पास नहीं रखेंगे। अपने गुरु की सेवा ही करना। स्वामी जी भी हमसे अलग थोड़े ही हैं।"

गुरुदेव ने यह बात बहुत सहज भाव से कही थी लेकिन स्वामी सत्यानंद ने अपने आपको आश्वस्त अनुभव किया। फिर उन्होंने अपने गुरु से भी हठ नहीं किया और ऐसी मुद्रा बनाई जैसे कह रहे हों कि स्वीकार है। स्वामी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कृष्णतीर्थ ने अपने शिष्य की मनोदशा देखकर कहा, "आप जबसे चाहें सत्यानंद को अपनी शरण में ले सकते हैं गुरुदेव। हम तो रामनाम के सिवा कुछ नहीं जानते। आपके सान्निध्य में यह कुछ सीख जाएगा तो लोगों का भला कर सकेगा।"

उसके बाद स्वामी सत्यानंद एक बार तो अपने गुरु के साथ ऋषिकेश चले गए। तीन चार दिन बाद वे वापस शान्तिकुंज आये और यहां गुरुदेव के पास दो ढाई घंटा रुक कर फिर वापस चले गए। दोबारा फिर वे प्राण प्रत्यावर्तन शिविर में ही आए थे। इस बीच उनके गुरु स्वामी कृष्णतीर्थ ब्रह्मलीन हो गए और सत्यानंद ने ऋषिकेश भी छोड़ दिया। किसी अज्ञात प्रदेश में चले गए। सात आठ साल बाद, शक्तिपीठों की स्थापना का अभियान शुरु हुआ तो वे फिर शान्तिकुज में दिखाई दिए। इस बीच वे कहां रहे, क्या करते रहे, किसी को नहीं पता। न किसी ने पूछा और न ही बताया। शक्तिपीठों की योजना अवतरित हुई तो उनका और मुनि धर्मकाय का आमना सामना हुआ। दोनों ने पिछले छह सात वर्ष के अपने अनुभव बांटे। योग मार्ग या आध्यात्मिक साधनाओं के अपने अनुभव बांटने के लिए आम तौर पर मनाही है लेकिन दोनों को लगा कि वे अपने अनुभव बांट नहीं रहे बल्कि स्मरण कर रहे हैं।

मुनि धर्मकाय और स्वामी सत्यानंद की तरह दूसरे साधकों ने भी भारत के विभिन्न तीर्थस्थानों की, सिद्धक्षेत्रों की यात्राएं कीं। उन स्थानों के अनुभव संचित किए। उनमें तीर्थों की वर्तमान स्थिति भी उजागर होती थी। शक्तिपीठों की संख्या यों इक्यावन है। इससे कम और ज्यादा का उल्लेख भी मिलता है। उन स्थानों की गणना भी कराई जाती है। लेकिन ज्यादातर लोग इक्यावन के पक्ष में ही हैं। इनमें भी चार प्रधान या आदि शक्तिपीठ कहे जाते हैं। एक असम में गुवाहाटी के पास कामाक्षी शक्तिपीठ, दूसरा पश्चिम बंगाल में कोलकाता के पास दक्षिण कालिका, तीसरा और चौथा ओडिशा में क्रमश:जगन्नाथपुरी के पास और बरहामपुर में। यों इनमें कामाक्षी या कामाख्या, उत्तरप्रदेश में विंध्येश्वरी, उज्जैन में गढ़कालिका, प्रयाग में अलोपी, केरल में कन्याकुमारी, वाराणसी में विलाशाक्षी, गुजरात में अंबाजी आदि शक्तिपीठों की विशेष मान्यता है। इन स्थानों पर हजारों लोग जाते रहते हैं। श्रद्धा और संवेदना के अनुसार यात्रियों को वहां अनुभूतियां भी होती हैं। वे अनुभव साधकों की अपनी आंतरिक स्थिति के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुसार हैं। गुरुदेव ने कहा था कि तीर्थ या शक्तिपीठों का स्वरूप ऐसा होना चाहिए कि आत्मिक दृष्टि से अत्यंत सामान्य व्यक्ति को भी उत्कर्ष की प्रेरणा मिले। उसे प्रतीत हो कि जैसे कोई हाथ पकड़ कर ऊपर उठा रहा है।

कामाख्या देवी के संबंध में प्रसिद्ध है कि वहां तांत्रिक उपासक हर समय अपनी साधना में लीन रहते हैं और दिव्य शक्तियां अर्जित करते हैं। शास्त्रीय मान्यता के अनुसार सती का शव कंधे पर रखकर शिव विक्षिप्तों की तरह चारों दिशाओं में भाग रहे थे। यह अंतर्कथा बहुतों को मालूम है कि सती के पिताजी प्रजापति दक्ष ने अपने यहां वृहस्पति सव नामक यज्ञ का अयोजन किया था। इसमें सभी देवताओं को बुलाया था किंतु शिव को नहीं बुलाया। पिता के यहां यज्ञ का समाचार पाकर सती ने जाने की तैयारी की। शिव ने समझाया कि वहां हम लोगों को बुलाया नहीं गया है, इसलिए नहीं जाना चाहिए लेकिन सती का कहना था कि पिता के यहां आयोजन हो रहा है। उसमें आमंत्रित किया जाए अथवा नहीं किया जाए, अवश्य जाना चाहिए। शिव जानते थे कि प्रजापति दक्ष उनसे वैर विरोध मानते हैं, इसलिए जान बूझकर आमंत्रित नहीं किया है। यज्ञ आयोजनों में शिव को देवाधिपति महादेव होने के कारण अनिवार्य रूप से आमंत्रित किया जाता है। यह आमंत्रण स्वजन संबंधी या पुत्री और जामाता का रिश्ता होने के कारण ही नहीं देवसत्ताओं में वरिष्ठ और अधीश्वर की महाशक्ति महादेव होने के नाते भी दिया जाना चाहिए। ऋषियों और पुरोहितों के समझाने पर भी प्रजापति दक्ष ने महादेव की अवमानना की और उन्हें अनाहूत ही छोड़ दिया।

शिव का विक्षोभ

पिता के बिना बुलाए भी सती यज्ञ में गईं। वहां देखा कि यज्ञ में शिव का भाग नहीं रखा गया है और पिता दक्ष देवताओं और ऋषियों के सामने उनकी निंदा भी कर रहे हैं। सती अपने पति की निंदा सहन नहीं कर पाईं। वह इतनी दुखी और कुपित हुई कि यज्ञशाला में ही अपना शरीर त्याग दिया। सती के शरीर छोड़ देने से भगवान शिव भी कुपित हुए। दुख और क्रोध से विह्वल होकर सती की निष्प्राण काया को कंधे पर उठा कर वे उन्मत्त भाव से नृत्य करते हुए तीनों लोकों में घूमने लगे। इससे चारों ओर विनाश होने लगा। शिव का उन्मत्त भाव शांत करने के लिए भगवान विष्णु ने अपने चक्र से सती के शरीर के टुकड़े

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

टुकड़े कर दिए। कहते हैं इक्यावन स्थानों पर उनके शरीर के अंग और आभूषण गिरे। प्रत्येक स्थान पर एक एक शक्ति और एक एक भैरव अर्थात शक्ति के कल्याणकारी स्वरूप की स्थापना हुई। इन स्थानों को महापीठ कहा जाता है।

इक्यावन शक्तिपीठों में अब कम ही स्थान हैं जहां साधना उपासना के क्षेत्र में विशेष गतिविधियां चलती हों। ज्यादातर स्थानों पर सामान्य मंदिरों की तरह पूजा आरती, दर्शन जैसी गतिविधियां चलती हैं। उन कार्यक्रमों या गतिविधियों से श्रद्धालुजनों को खास लाभ नहीं होता। गुरुदेव ने शक्तिपीठों का रहस्य समझाते हुए कहा था कि प्रजापति दक्ष का यज्ञ विध्वंस और शिव द्वारा सती के शव को कंधे पर लेकर पृथ्वी पर विचरण और शक्ति के अंगों के कट कट कर गिरने तथा उन उन स्थानों पर शक्तिपीठों की स्थापना का वर्णन जिस रूप में मिलता है, वह व्यंजनात्मक ही है। और शायद संभव भी नहीं है। इस रूपक से एक आध्यात्मिक सत्य को उद्घाटित किया गया है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

शिव अर्थात् कल्याण के अधिष्ठाता देव और सती अर्थात उस सत्ता को व्यक्त करने वाली शक्ति। समाज में जब कुछ चतुर लोग जो प्रतिभाशाली हैं और प्रभाव भी रखते हैं, शिव और शक्ति की अवमानना करने लगते हैं तो संतुलन डगमगाने लगता है। अवमानना से शक्ति निष्प्राण हो जाती है और फिर उससे कुपित हुए प्राण, स्पंदन, प्रवाह उन्मत्त होकर विनाश की भूमिका रचने लगते हैं। कल्याण अथवा शुभ जब शक्ति से रहित हो जाता है तो अस्तव्यस्तता और अराजकता उत्पन्न होती है। उसका निवारण करने के लिए संतुलन और व्यवस्था की अधिष्ठात्री सत्ता सक्रिय होती है। उसी सत्ता के हस्तक्षेप से स्थितियां अनुकूल होती हैं।

शक्तिपीठों की स्थापना अवतरण का यह काव्यात्मक अर्थ है। आध्यात्मिक रहस्य इसके आगे बहुत गूढ़ और अर्थपूर्ण हैं। उसे उद्घाटित करने के लिए साधना उपासना के क्षेत्र में उतरना पड़ता है और ऐसी स्थिति अर्जित करनी पड़ती है कि न केवल रहस्य उद्घाटित हों, बल्कि उन संस्थानों का गौरव भी स्थापित हो। उस गौरव का निर्वाह भी हो। शास्त्रों में अथवा परंपरा में जिन शक्तिपीठों का उल्लेख आया है, वे साधना उपासना के सामान्य केन्द्र नहीं हैं। उन्हें सिद्ध महात्माओं ने अपनी उपासना से गरमाया है। वहां तप अनुष्ठान किए और आध्यात्मिक ऊर्जा के ऐसे प्रवाह उत्पन्न किए कि वहां जाने वालों की आत्मिक स्थिति स्वाभाविक ही उन्नत होती चले।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विधि व्यवस्था की शोध

गुरुदेव ने जिन साधकों को अलग-अलग समय में इन सिद्ध क्षेत्रों की मूल विधि व्यवस्था के अध्ययन के लिए चुना था, उनमें कुछ अपना काम पूरा कर आने लगे थे। ऐसे साधकों को करीब सात आठ वर्ष पहले अलग अलग क्षेत्रों में भेजा गया था। संसिद्धि के लिए प्राचीन और परंपरागत सिद्ध क्षेत्रों का अध्ययन आवश्यक नहीं था। गुरुदेव ने उन स्थानों और सिद्ध तरंगों के संसर्ग में कुछ साधकों को भेजा तो इसलिए कि नए शक्तिपीठों का विधान सम्पन्न करने वाली प्रतिभाओं को निखारा जा सके।

शक्तिपीठों के संबंध में गुरुदेव ने भव्य भवन बनाने की संकल्पना नहीं रखी थी। गायत्री परिवार के अधिकांश कार्यकर्ता सामान्य आर्थिक स्थिति अथवा मध्यम वर्ग के रहे हैं। एक आना-दस पैसा और एक रुपया अथवा एक मुट्ठी अनाज प्रतिदिन निकाल कर नए युग का अभिवादन आराधन करने में जुटे हैं। इसलिए निर्माण के बजाय वहां से चल रहे कार्यक्रमों और प्रेरणा प्रवाहों को जीवंत बनाने पर जोर था। निर्माण भव्य हों या बाद में निखरते उभरते रहें तो स्वागत है, लेकिन वहां के प्रवाह प्राणवान रहें यह महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार के सूत्र संचालक (परिजन उस सत्ता को दादा गुरुदेव के नाम से पुकारते हैं) ने तय किया है कि चौबीस शक्तिपीठों की स्थापना की जाए। चौबीस की यह संख्या तो आरंभ है। आगे तो चौबीस सौ और चौबीस हजार या उससे भी ज्यादा बड़ी संख्या तक पहुंच सकता है। आरंभ में चौबीस शक्तिपीठ उन पुण्य क्षेत्रों में बनाए जाएंगे जहां पहले से ही तीर्थों की मान्यता रही है।

गुरुदेव ने उन तथ्यों की ओर भी इंगित किया था, जिनके कारण इन स्थानों को तीर्थों की मान्यता मिली हुई थी। वे तथ्य और तत्व अब भी किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं। उन स्थानों पर शक्तिपीठों की स्थापना का उद्देश्य तीर्थो के जीर्ण शीर्ण हो रहे प्राणतत्व को प्रखर बनाने के साथ नई ऊर्जा का प्रवाह उत्पन्न करना भी था। १९७९ की चैत्र नवरात्र के समय जिन चौबीस शक्तिपीठों का संकल्प घोषित किया गया उनके क्षेत्र और नाम इस प्रकार हैं—उत्तरप्रदेश में (१) प्रयाग (२) काशी (३) अयोध्या (४) चित्रकूट (५) बद्रीनाथ, बिहार में (६) गया (७) वैजनाथ धाम, उड़ीसा में (८) जगन्नाथपुरी, मध्यप्रदेश में (९) उज्जैन (१०) ओंकारेश्वर (११) अमरकंटक, गुजरात में (१२) अंबाजी, (१३) डाकौर जी (१४) गिरनार (१५) जूनागढ़ (१५) द्वारका (१६) सोमनाथ,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हरियाणा में (१७) कुरुक्षेत्र, राजस्थान में (१८) नाथद्वारा (१९) पुष्कर जम्मू कश्मीर में (२०) वैष्णो देवी, महाराष्ट्र में (२१) नासिक, दक्षिण भारत में (२२) रामेश्वरम (२३) तिरुपति बालाजी और असम में (२४) कामाख्या गौहाटी।

जिस समय स्थानों और शक्तिपीठों की योजना घोषित की गई, उसी समय उनका स्वरूप भी बता दिया गया था। सामान्य तौर पर इन स्थापनाओं को तीन मंजिला रखा जाना था। पहली मंजिल पर मुख्य पीठ। वहां पर गायत्री माता की भव्य प्रतिमा ओर दीवारों पर संगमरमर की गायत्री महाशक्ति के चौबीस स्वरूपों की प्रतिमाएं। उनका परिचय देने और मर्म समझाने के लिए हर समय एक कार्यकर्त्ता उपलब्ध। दूसरी मंजिल में सत्संग भवन और परामर्श कक्ष का प्रावधान रखा गया। शक्तिपीठ आने वाले जिज्ञासुओं को गायत्री विद्या का परिचय देंगे, जिज्ञासुओं का समाधान करेंगे। उनकी निजी, पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं का हल भी सुझाएंगे। इस स्तर के समाधान के लिए कार्यकर्ताओं का अपना व्यक्तित्व भी उच्च स्तर का होना चाहिए। वैसा आत्मविश्वास भी हो। कदाचित वह नहीं हो तो आगंतुकों की समस्याएं सुनकर उनके अनुरूप युग साहित्य प्रस्तुत कर दिया जाए। इन नए तीर्थों-शक्तिपीठों की व्यवस्था और संचालन के लिए आवश्यकतानुसार परिव्राजकों की नियुक्ति की जानी थी।

पहला शक्तिपीठ

घोषणा हुई तो शांतिकुंज में उपस्थित क्षेत्र से आए गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं में से कुछ ने तय किया कि आए हैं तो यहीं संकल्प भी ले लिया जाए। एक आकर्षण यह भी था कि स्थापना क्रम में पहला संकल्प होगा। कह सकेंगे कि हमने गुरुदेव के आह्वान पर सबसे पहले पहल की। नाम बताए बिना इतना ही जान लेना पर्याप्त होगा गुरुदेव ने इस तरह की प्रतिस्पर्धा को निरुत्साहित किया। ओडिशा में जगन्नाथपुरी के एक कार्यकर्त्ता हरिहर महापात्र अपने चार साथियों के साथ उस नवरात्र शिविर में आए थे। शक्तिपीठों की घोषणा सुनते ही उन्होंने सप्त सरोवर जाकर पोस्ट आफिस से 'पुरी' शाखा के कुछ कार्यकर्ताओं से संपर्क साधने की सोची। संपर्क शायद कर भी लिया और अगले दिन व्रतबंध लेने, कलावा बंधवाने का अनुरोध किया तो गुरुदेव ने आशीष दिए। व्रतबंध के बाद हरिहर ने कहा, पूज्यवर हम लोगों को सबसे पहले संकल्प लेने का सौभाग्य मिला है न।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुरुदेव ने कहा, 'नहीं बेटा और लोग भी व्रतबंध लेकर हाल ही में गए हैं। सुनकर हरिहर और उनके साथ आए कार्यकर्त्ता कुछ उदास से होते दिखाई दिए। उन्हें उदास देखकर गुरुदेव ने कहा, यह तो भगवान का काम है बेटा। प्रत्येक व्यक्ति और साधक अपने स्थान पर प्रथम ही है। किसी की किसी से प्रतिस्पर्धा नहीं है। आगे आना है तो अपने आप से ही आगे आना है। एक बड़े जहाज में सवार हो कर सागर पार कर रहे है तो कौन आगे और कौन पीछे। जाओ संकल्प लिया है उसे पूरा करो।'

गायत्री शक्तिपीठों का विचार जन सामान्य में पहुंचने लगा तो तरह तरह की कल्पनाएं और अपेक्षाएं होने लगीं। गायत्री परिवार के ही कुछ कार्यकर्ताओं को लगने लगा था कि परंपरागत स्थापनाओं की तरह ही यहां भी साधना उपासना के विशिष्ट प्रयोग होंगे। लोग दर्शन करने जाएंगे, अपनी कामनाएं दोहराएंगे और गुरुदेव के आशीर्वाद से तुरंत या कुछ देर बाद वे पूरी हो जाएंगी। इन अपेक्षाओं का संशोधन भी नहीं किया जा सकता था, किस किस को समझाया जाए। शक्तिपीठों के संबंध में तांत्रिक और प्रचंड योग साधनाओं का केन्द्र होने की मान्यता भी प्रचलित है। शान्तिकुञ्ज आने वाले कार्यकर्ता यहां के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से या कभी कभार तो गुरुदेव से ही स्वयं पूछ लिया करते थे।

तांत्रिकों का मेला

असम में कामाख्या शक्तिपीठ जा चुके मथुरा के कार्यकर्ता अवतार नारायण के मन में भी इसी तरह के बिंब बनने लगे। कामाख्या शक्तिपीठ की यात्रा उन्होंने पंद्रह-बीस साल पहले की थी। तब वे युवा थे और अंबुवाची पर्व पर गुवाहाटी से पैदल ही कामाख्या गए थे। अंबुवाची पर्व ज्येष्ठ या आषाढ़ मास में बृहस्पति के विशिष्ट ग्रहयोग बनने पर मनाया जाता है। उस समय यहां तांत्रिकों का विराट मेला सा लगता है। दूर दूर से तांत्रिक आते हैं और साधनाएं करते हैं। तीन दिन के इस आयोजन में मंदिर के कपाट बंद रहते हैं। कोई भी भीतर नहीं जा सकता, यहां तक कि पुजारी भी नहीं। मंदिर में महाशक्ति की योनिमुद्रा स्थापित है। परंपरागत मान्यता है और श्रद्धालु विश्वास भी करते है कि तीन दिनों में भगवती रजस्वला होती है। शक्ति के विग्रह रूप से रज प्रवाह निकलता है और गर्भगृह में रखे गए सफेद वस्त्र उस रज से रक्तिमवर्ण के हो उठते हैं। कपाट बंद होने से पहले श्रद्धालु जन पुजारियों से अनुनय विनय कर कुछ वस्त्र गर्भगृह में रखवा देते हैं। तीन दिन पूरे होने के बाद द्वार खुलता है तो रज से सने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
रंगे वस्त्र प्रसाद रूप में साथ ले जाते हैं। मंदिर के अधिकारी स्वयं भी कुछ वस्त्र व्यवस्था की ओर से रखवा देते हैं। उन्हें भी आशीर्वाद के रूप में वितरित किया जाता है।

अंबुवाची पर्व पर आए तांत्रिकों का उद्देश्य इन सिद्ध और आशीर्वाद रूप वस्त्रों को प्राप्त करना तो होता ही है, इस क्षण मुहूर्त का लाभ उठा कर सिद्धियां, दिव्य शक्तियां अर्जित करना भी होता है। पता नहीं कितने लोगों को सिद्धियां मिलती है और कितनों को नहीं, किंतु इन दिनों सामान्य जनों की, श्रद्धालुओं की संख्या कई गुना बढ़ जाती है। उनमें से कई तो इस स्थान पर अपने आपको उपस्थित पाकर ही गदगद हो उठते हैं। कामाख्या शक्तिपीठ को सर्वप्रधान पीठ माना जाता है। अवतार नारायणजी ने इस पीठ की यात्रा खास उमंग के साथ की थी लेकिन वे बताया करते थे कि वहां पहुंच कर निराशा ही हुई। मंदिर कूच बिहार के राजा विश्वसिंह और शिवसिंह ने बनवाया था। करीब तीन सौ वर्ष पुराने इस सिद्ध पीठ की दीवारें और छतें उस यात्रा के समय मरम्मत को तरसने लगी थीं। देव स्थान निश्चित ही पुराना है। अपने समय में देवी के आराधक रहे काला चांद ने जातीय भेदभाव के कारण सताए जाने से कुपित होकर धर्मांतरण कर लिया था। अपने इष्ट के प्रति अगाध श्रद्धा रखता था लेकिन जातीय भेदभाव और सवर्णों से मिले तिरस्कार ने उसे आहत कर दिया। अपमान और तिरस्कार का दंश इतना गहरा चुभा कि उसने हिंदू धर्म छोड़कर इस्लाम अपना लिया। वह कला चंद राय से काला चांद खां बन कर धर्मस्थलों पर कहर ढाने लगा। पुरी का जगन्नाथ मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर और रास्ते में पड़ने वाले देव स्थानों को खंडित या नष्ट करते हुए वह कामाख्या शक्तिपीठ तक पहुंचा। सन् १५६४ में उसने मंदिर तुड़वा दिया। बाद में कूच बिहार के राजाओं ने इसका फिर से निर्माण कराया।

मंदिर के पास ब्रह्मपुत्र नदी के बीच स्थित चट्टानी टापू पर शिव का मंदिर है। उस विग्रह को कामाख्या का भैरव या प्रहरी समझा जाता है। आश्विन और चैत्र की नवरात्रियों में भी इस क्षेत्र में उत्सव आयोजनों की भरमार रहती है। यात्रा के समय अवतार नारायणजी को कई तरह के अनुभव हुए। उनमें सुखद कम थे और त्रासद ज्यादा। त्रासद इसलिए कि अंबुवाची पर्व पर तांत्रिकों के कारण क्षेत्र का वातावरण वीभत्स हो उठता है। सात्विक और सरल प्रकृति के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोग उस वातावरण में आह्लादित होने के स्थान पर खिन्न ही होते हैं। जिन दिनों अवतार नारायण जी ने कामाख्या की यात्रा की, उन दिनों एक महिला को शव साधना करते देखा। यह शव उसकी एक शिष्य साधिका के पति का था। उस साधिका ने अपने पति को षडयंत्र रच कर मार दिया था। लालच यह था कि शव साधना के बाद उसे अपने घर के पीछे गड़े खजाने का पता चल जाएगा। खजाने का अता पता तो नहीं चला, पुलिस ने उस महिला और तांत्रिक को जरूर गिरफ्तार कर लिया।

सिद्धपीठों की प्रासंगिकता

एक स्थान पर कुछ तांत्रिक लोगों का भविष्य बताते दिखाई दे रहे थे। इसके लिए वे पांच से पचीस रुपए तक दक्षिणा की मांग करते। नहीं देने पर शाप देने का भय दिखाते। इन अनुभवों के बावजूद अवतार नारायण जी का मानना था कि कामाख्या शक्तिपीठ में दैवी शक्ति का प्रचंड प्रवाह बहता है और उससे संपर्क किया जा सकता है। शक्तिपीठ की घोषणा होने के बाद वे व्रज क्षेत्र में एक स्थापना का संकल्प लेने के लिए आए। उन्होंने निवेदन किया कि गुरुदेव आप आशीर्वाद दें कि व्रज क्षेत्र में कामाख्या जैसा सिद्ध स्थान बन जाए। दरअसल वे गायत्री शक्तिपीठ के प्रति कामाख्या जैसी कल्पनाएं करके ही आए थे। उस समय की वास्तविकता से हटकर बल्कि पुराणों, तंत्र ग्रंथों और सिद्ध महापुरुषों की जीवन लीलाओं से प्रभावित होकर एक ऐसे मनोलोक की रचना उन्होंने कर ली थी, जहां पहुंचते ही व्यक्ति के हर तरह के कष्ट दूर हो जाएं। इसी भावना से उन्होंने गुरुदेव के सामने अपनी तरह के गायत्री शक्तिपीठ का विचार रखा। गुरुदेव ने समझाया कि तुम जिस तरह की स्थापना की बात कर रहे हो वे तंत्र से संबंधित हैं। किसी जमाने में स्थितियां रही होंगी कि इस तरह की स्थापनाएं बनी और साधकों तथा सामान्य जनों में सिद्धि शक्ति का आविर्भाव हुआ। अब उस तरह के निर्माणों के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए।

'तो गुरुदेव क्या तंत्र विद्या अब मिथ्या हो गई?' अवतार नारायण जी ने पूछा, इस पर गुरुदेव ने कहा, 'मिथ्या तो नहीं है लेकिन उसे साधने की पात्रता बहुत कम लोगों में है। इस विद्या में विद्युत जैसा प्रवाह और परमाणु जैसी ऊर्जा है। कुछ खास लोगों के लिए यह विद्या साध्य हो सकती है। सबके लिए साध्य बनाना अभीष्ट नहीं है। हमे तो गंगा की तरह सबको निर्मल और पवित्र करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाली धारा चाहिए। यह धारा गायत्री उपासना, साधना और समाज सेवा से ही बह सकती है। सीधा, सरल और व्यावहारिक मार्ग अपनाना हो तो गायत्री शक्तिपीठों के अभियान में जुटो, सुनकर अवतार नारायण जी का संशय मिट गया। उन्होंने कामाख्या शक्तिपीठ के बारे में अपने अनुभव भी कहना चाहे थे। स्मृतियां जैसे धक्का दे रही थीं लेकिन चेतना उस बाढ़ को व्यर्थ बताकर जहां की तहां थाम लेती थी। यह ठहराव बताता था कि बताने की कोई जरूरत नहीं है, गुरुदेव तक सभी सूचनाएं, भावनाएं और व्यक्त होने से रह गई बातें संप्रेषित हो गई है।

तंत्र साधनाओं के प्रचार और शिक्षण पर मध्यकाल से ही अघोषित प्रतिबंध सा रहा है। इक्का दुक्का योगी ही कभी कदा इस मार्ग पर कदम रखते थे। अवतार नारायण जी की तरह और भी कई साधकों को लगा था कि गायत्री शक्तिपीठों में गायत्री की वाममार्गी, सौम्य तांत्रिक साधनाएं भी होंगी। उनका अभ्यास भी किया जा सकेगा। जिन परिव्राजकों को शांतिकुंज में तैयार किया जाएगा और शक्तिपीठों में भेजा जाएगा, उन्हें इस संबंध में भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। ये अपेक्षाएं और कल्पनाएं गुरुदेव द्वारा किए गए विवेचन से ज्यादा साधकों के अनुभवों से ज्यादा स्पष्ट हुई। गुरुदेव ने गायत्री शक्तिपीठों की योजना के बारे में अपने लिखित निर्देश से अथवा प्रवचनों में उन्होंने सकारात्मक पक्षों पर काफी कुछ कह दिया था। निषेधों को लेकर कुछ कहने की जरूरत नहीं समझी थी। कार्यकर्त्ताओं को इस बारे में जांच परख की जरूरत महसूस नहीं हुई। फिर भी कुछ तथ्य साधकों को और परिवेश में भी स्पष्ट होते रहे।

सभी जानते हैं कि शक्तिपीठों की संख्या इक्कावन तक ही सीमित नहीं है। यह संख्या पूरा हो जाने के बाद और भी स्थापनाएं होती रही हैं। तंत्र और सिद्धि साधना की दृष्टि से नवीन शक्तिपीठ पश्चिम बंगाल में वीरभूमि के पास तारापुर में है। द्वारका नदी के किनारे बने इस शक्तिपीठ को वामाक्षेपा से पहले बहुत कम लोग जानते थे। वामाक्षेपा स्वामी रामकृष्ण के समकालीन थे और अपनी इष्ट तारादेवी की भक्ति में भावविह्वल रहते थे। तारापुर से ही थोड़ी दूर आटला ग्राम में जन्में इन संत का वास्तविक नाम वामाचरण था। उनके एक छोटे भाई और थे रामचंद्र या रामाचरण। वामाचरण बड़े थे, बचपन से ही अपने गांव के पास भगवती तारा के मंदिर में ही उनका सारा समय बीतता था। इस स्थान के बारे में मान्यता है कि यह भी उन स्थानों में है जहां पौराणिक संदर्भों के अनुसार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
सती के शरीर का एक अंग गिरा था। कहते हैं कि इस स्थान पर सती के आंखों की पुतली,नयन का तारा गिरा था, इसलिए यहां का नाम तारापीठ हो गया। मध्यकाल में यह जगह मुगल शासकों ने अपने अधिकार में कर ली थी। करीब दो सौ साल पहले नाटोर की रानी भवानी ने इस जगह को विनिमय में वापस ले लिया। राज्य के शासक राजा रामकृष्ण ने यहां एक छोटा सा मंदिर बनवाया और मंदिर में भोग आदि की व्यवस्था की। उन्होंने वामाक्षेपा के परमगुरु आनन्दनाथ को पीठ का प्रमुख बनाया और व्यवस्था सौंपी। उनके बाद स्वामी मोक्षदानंद तारापीठ के कौलिक हुए।

वामाक्षेपा को उन्होंने कौल साधना की दीक्षा दी थी। बचपन में देवी देवताओं की मूर्तियां बनाना और उनसे खेलना वामा का प्रिय शौक था। खासतौर पर वे काली की मूर्ति बनाया करते। कभी कभार राम कृष्ण और अन्य दैवी स्वरूपों की भी। पिता उन्हें इस काम के लिए रोकते टोकते थे। नहीं मानते तो पीट भी देते। लेकिन वामा अपने काम में लगे रहते। वे छोटे ही थे कि पिता का निधन हो गया। वामाचरण बहुत प्रसन्न हुए। पिता के निधन से वे इसलिए खुश हुए कि अब कोई रोकने वाला नहीं रहा। लेकिन पिता के नहीं रहने के बाद उनके कंधों पर परिवार का दायित्व भी आ गया। उस दायित्व के साथ मां ने उन पर विवाह का दबाव बनाया। वामा ने इसके लिए मना कर दिया और गांव में ही एक मंदिर में पुजारी का काम करने लगे। कुछ समय तक उन्होंने गांव में पूजा पाठ का काम संभाला और बाद में तारापुर चले गए। वहां के तारापीठ में कौलिक मोक्षदानंद से तांत्रिक दीक्षा ली और उन्हीं की देखरेख में साधना करने लगे।

माँ तारा की वापसी

याद रहे क्षेपा शब्द क्षिप्त शब्द से बना है क्षिप्त अर्थात उन्मत्त। पिछले जन्म के साधना संस्कारों और तंत्र के प्रभाव से उनका आचरण अव्याख्येय हो चला था। इसलिए श्रद्धालु उन्हें क्षेपा कहते थे। पिता के न रहने के बाद उन्हें तारापीठ में पुजारी बना दिया गया। वामाचरण को मंदिर की मर्यादाएं और अनुशासन से ज़्यादा मां की भक्ति सुहाती थी। भावप्रवण भक्त की तरह वे मां तारा के विग्रह से मनुष्यों जैसा व्यवहार करते। मां को चढ़ाए जाने वाला भोजन सुस्वादु है या नहीं ? मां सुखी और प्रसन्न है या नहीं ? यहां की व्यवस्था मां के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिए अनुकूल है अथवा नहीं? आदि बातों का वे ध्यान रखते थे। ममता, वात्सल्य और श्रद्धा के भाव के कारण कभी कभी वे ऐसा व्यवहार कर बैठते कि मंदिर के प्रबंधकों को नागवार गुजरता। जैसे कभी कभार वे भोग प्रसाद के लिए आया भोजन मां की प्रतिमा को चढ़ाने से पहले खुद ही चख लेते। उन्हें प्रतीत होता कि मां सो रही है तो वे मंदिर में समय पर आरती पूजा नहीं करते। उन्हें लगता कि मां उठ गई है तब घंटा घड़ियाल बजाते थे। बहुधा वे मंदिर छोड़कर निबिड़ वन में या श्मशान में भी चले जाते। वन में कहीं भी बैठकर वे ध्यान पूजा करने लगते। मरघट में बैठकर जलती हुई चिता और उनकी ठंडी हुई राख को देखते रहते। फिर ध्यान आता कि मां जाग गई होगी तो वे दौड़े चले आते और मां तारा की प्रतिमा निहारने लगते। पूछते कि कैसा लग रहा है मां?

वामाक्षेपा के इस तरह के व्यवहार को मंदिर के प्रबंधक अचरज भरी दृष्टि से देखते थे। कुछ दिन बाद नए पुजारी पर नाराज होना और डांटना-डपटना शुरु किया। मंदिर की मालिक नतोर की रानी से इसकी शिकायत की। रानी मां ने शिकायत को सुना अनसुना कर दिया। शिकायत का अपेक्षित असर नहीं होने पर प्रबंधक और कुपित हुए। उन्होंने एक दिन वामाक्षेपा की पिटाई कर दी।

इस घटना के चार पांच दिन बाद रात में रानी मां ने स्वप्न देखा कि मां तारा शक्तिपीठ छोड़कर जा रही है।। रानी मां ने पूछा कि मां कहाँ जा रही हो तो वह बोली कि कैलास जा रही हूँ। मैं अब यहां नहीं रहूंगी। मां दुखी दिखाई दे रही थी और उनके माथे पर तिलक, वेणी में फूल और गले में हार भी नहीं था।

रानी मां सपने में बहुत बुरी तरह डर गई और मां से जाने का कारण पूछने लगी। मां ने कहा, 'यहां मेरे बच्चे को मारा पीटा जाता है। तुम्हें पता नहीं, वह जन्मों से यहां है। उसका तिरस्कार हुआ है।'

रानी मां भगवती तारा से माफी मांगने लगी। जगदम्बा ने उसकी क्षमायाचना को नकार दिया और कहा, 'उस बच्चे ने चार दिन से कुछ नहीं खाया है। तुम्हारे लोगों ने उसे मेरे पास आने से रोक दिया। वह जहां तहां भटक रहा है। उसने कुछ नहीं खाया तो मैं कैसे कुछ खा सकती हूं।'

रानी मां बिलख बिलख कर रोने लगी और रोते रोते उनकी आंख खुल गई। उन्हें लग रहा था कि वाकई कुछ अनहोनी हो गई है।

रानी मां ने मंदिर के प्रबंधकों को बुलाया। उन्हें डांटा डपटा और वामाक्षेपा को बुलाकर मनाकर लाने के लिए कहा। प्रबंधकों ने वामा को जगह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जगह ढूंढा। शाम होते होते वह उन्हें मिले एक पेड़ के नीचे बैठे किसी से बात कर रहे थे। किस से कर रहे थे। यह पता नहीं चल रहा था। मंदिर प्रबंधकों को देखकर वे भागने लगे पर प्रबंधकों ने उन्हें दूर तक पीछा कर आखिर रोक ही लिया और वापस चलने के लिए मनाया। वामा वापस आ गए। उन्होंने मंदिर में पूजा करना शुरु किया और तारापीठ की रौनक वापस लौटी।

इस तरह के कितने ही भाव भरे प्रसंग वामा के जीवन चरित में बिखरे पड़े हैं। योग विद्या के जानकारों का मानना है कि उनकी आध्यात्मिक स्थिति अपने समकालीन संत स्वामी रामकृष्ण परमहंस जैसी ही थी। राग द्वेष से सर्वथा मुक्त और निस्पृह। स्वामी रामकृष्ण ने भी तंत्र के साथ भक्तिमार्ग को ही अपनाए रखा। उस समय के साधकों और श्रद्धालुओं का मानना था कि बाबा को सब कुछ सिद्ध है।

वामाक्षेपा का इतना उल्लेख करने के बाद एक घटना का विवरण अभीष्ट है। इस घटना का उल्लेख 'हमारे संत महात्मा' पुस्तक में किया गया है। दिल्ली के एक संत चरण अनुरागी राधाकांत जायसवाल ने पुस्तक तैयार कराई और १९५७ में प्रकाशित की थी। इस पुस्तक की भूमिका मानव सेवा संघ वृंदावन के संस्थापक स्वामी शरणानंद जी ने लिखी है। पुस्तक के लेखन प्रकाशन में उनकी प्रेरणा ही प्रमुख थी। स्वामी जी यद्यपि प्रज्ञाचक्षु थे लेकिन उन्होंने राधाकांत जी को इसे तैयार करने का आदेश दिया था। भारत के अठारह संतों का परिचय उकेरती हुई लिखी इस पुस्तक में वामाक्षेपा से संबंधित एक विलक्षण घटना का उल्लेख है। राधाकांत जी ने लिखा है कि उनके पितामह जय प्रकाश जी १९१४ के कुंभ में हरिद्वार गए। गंगातट पर घूमते दर्शन करते हुए वे कदली वन के पास बह रही धारा के किनारे तप कर रहे किसी महात्मा के पास पहुंचे। उन्होंने महात्मा को प्रणाम किया। महात्मा ने ओमप्रकाश जी को देख कर गहरी सांस ली।

जय प्रकाश जी ने पूछा कि कोई गलती हुई है महाराज तो महात्मा ने कहा, ऐसा कुछ नहीं है पर मुझे दिखाई दे रहा है कि पंद्रह दिन बाद तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी। जय प्रकाश जी ने महात्मा की यह बात साथ आई पत्नी और बड़े पुत्र से कही। वे लोग वापस उन्हीं महात्मा के पास गए और असमय मृत्यु से छुटकारा पाने का उपाय पूछने लगे। उन महात्मा ने कहा कि संत वामाक्षेपा ही तुम्हें इस संकट से छुटकारा दिला सकते हैं। तुम लोग उन्हीं के पास जाओ और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्हीं का आशीर्वाद प्राप्त करो। जयप्रकाश जी और उनका परिवार संत वामाक्षेपा का पता पूछ कर गिरते पड़ते तारापुर पहुंचे। राधाकांत ने लिखा है कि उन संत ने बाबाजी को देखते ही पहचान लिया। बाबाजी प्रणाम करे इसके पहले कह दिया कि मृत्यु तुम्हारा पीछा कर रही है। तीन दिन और बचे हैं। बाबाजी और दादी आदि ने वामाक्षेपा के चरण पकड़ लिए। वामा ने कहा वह देखो, तुम्हारे पीछे काल पहुंच गया है। उन लोगों ने पीछे मुड़ कर देखा एक विषधर सर्प फन फैलाए बैठा था। वामा ने उसकी ओर अपने तेजस्वी नेत्रों से देखा। सर्प कुंडली खोल कर वापस चला गया। उन लोगों ने अभय का अनुभव किया। लेकिन वामा ने सावधान किया, 'अभी बेफिक्र नहीं हो जाना है। आधी रात को सांप फिर आएगा और तुम्हें डंसने की कोशिश करेगा। तुम आदि शक्ति की आराधना करना। संकट दूर हो जाएगा।'

जयप्रकाश जी और उनके परिवार वालों ने समझा संत वामा तारा देवी की आराधना के लिए कह रहे हैं। उनकी आराधना और मंत्र आदि तो आते नहीं है। उन्होंने आराधना विधि पूछी। संत ने कहा आदिशक्ति यानी गायत्री। गायत्री मंत्र तो आता है न? नहीं आता है तो बता दूं। स्नान आदि से निवृत्त होकर चुपचाप जप करते रहना है। प्रत्यक्ष अनुभव होगा। सचमुच ऐसा ही हुआ। जय प्रकाश जी और उनके परिवार के लोग गायत्री का जप कर रहे थे। जप करते करते आधी रात हो गई। परिवार के सभी लोग जाग रहे थे। ठीक मध्य रात्रि के समय उन्होंने देखा कि एक भयानक विषधर बिजली की गति से रेंगता हुआ आ रहा है। जिस मकान में परिवार ठहरा था, वहां बाहर पहरा लगा दिया था। पहरे पर नियुक्त लोगों ने सांप को देखते ही लाठियां उठाई और मारने दौड़े। लेकिन सर्प उनके प्रहार से बचता हुआ उसी गति से आराधना कक्ष में चला गया। रोकने वालों को भी समझ नहीं आया कि उनके प्रहार का कोई असर क्यों नहीं हुआ? कक्ष में जहाँ और लोग गायत्री जप कर रहे थे, सर्प ने विद्युत की गति से प्रवेश किया और परिवार के लोगों को देखकर आश्चर्य हुआ कि वहां पहुंचते ही नाग की गति कम हो गई है। अचानक वह रुक गया है और निष्क्रिय निश्चेष्ट हो गया है। उसकी मृत्यु हो गई थी। उसकी मृत काया से फिर एक धूम्र ज्योति निकलती दिखाई दी। वह ज्योति मानव आकृति में बदली और वहां से तिरोहित हो गई। सुबह होने पर वामाक्षेपा स्वयं उस स्थान पर आए और कहा अब तुम्हारा संकट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दूर हो गया। यह सर्प सात पीढ़ियों पहले का तुम्हारा पूर्वज है। अभी तक मुक्ति नहीं मिल रही थी, इसलिए कुपित था। आदिशक्ति की आराधना ने उसे भी सद्‌गति दे दी है और तुम लोगों को भी भयमुक्त कर दिया है। स्नान ध्यान से निवृत्त होकर मां तारा के पास आना।

जयप्रकाश जी का परिवार सुबह नौ बजे के करीब तारापीठ गया। वहां संत वामा के सान्निध्य में कुछ समय रहा। वामा ने भगवती तारा के चरणों में समर्पित फूल उठाया और कहा, 'इसे अपने इष्ट को चढ़ाना।' जय प्रकाश तुम तो तब नहीं रहोगे लेकिन अपने पुत्र-पौत्रों से कहना कि ठाकुर (रामकृष्ण परमहंस देव) उनके समय में अपनी लीला का विस्तार करने लगेंगे। उनके सहचर बनने की कोशिश करना। पंद्रह बीस साल पहले ठाकुर ने शरीर छोड़ा था। अब यमुना के पास उन्होंने नया शरीर धारण कर लिया है और पचास पचपन साल बाद वे मथुरा में ही मां का एक पीठ बना रहे होंगे। तुम्हारी पीढ़ी में उस समय जो भी कोई हो, वे उनकी सेवा करें।

प्रवास और स्थगन

१९७९ में गायत्री शक्तिपीठों की स्थापना का संकल्प अवतरित हुआ था। पहले चौबीस, फिर २४० और उसके बाद २४०० की संख्या पार करते हुए प्रज्ञावतार के लीला केन्द्र गणना से परे होते चले गए। चौबीस शक्तिपीठों की घोषणा के समय बहुतों को लग रहा था कि असंभव नहीं भी कहे किन्तु दुःसाध्य कर्म तो है ही। इस तरह सोचते या संशित रहने वालों के मन उस समय आशा उत्साह की रोशनी से भर गए जब सात महीने के भीतर ही संकल्पित संख्या पूरी हो गई। कुछ शक्तिपीठों का संकल्प ही नहीं निर्माण भी चमत्कारी ढंग से पूरा हुआ। उनके उद्घाटन, गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा के लिए गुरुदेव के पास अनुरोध आने लगे। उन अनुरोधों को यथाक्रम स्वीकार किया गया और गुरुदेव कुछ स्थानों पर प्राण प्रतिष्ठा, शक्तिपीठों के स्थापना समारोहों में गए भी सही। स्थापना-प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रमों में जाने का क्रम करीब डेढ़ साल तक चला। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रमों के दौरान भी नई जगह शक्तिपीठों का और उनके लिए संकल्पों का आविर्भाव हुआ। जिन स्थानों पर स्थापना हुई, उन सत्र का विवरण अपने आपमें एक महाकुम्भ का विषय है। फिर भी कुछ उल्लेख उन स्थापनाओं के पीछे निहित दैवी योजनाओं का संकेत देती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुजरात में एक कस्बा है छीपड़ी। खेड़ा जिले के इस छोटे से कस्बे में बुधाभाई नामक कार्यकर्त्ता उन दिनों रहते थे। पीढ़ियों से यहीं वास कर रहे बुधाभाई के परिवार में थोड़ी सी जमीन थी। शक्तिपीठ स्थापना के संकल्प लिए जाने लगे तो बुधा भाई अपने दोनों भाइयों को साथ लेकर शान्तिकुञ्ज गए। वहां उन्होंने अपने निवास को शक्तिपीठ की स्थापना के लिए समर्पित कर दिया। गुरुदेव ने पूछा कि अपना घर दे दोगे तो रहोगे कहां ? इस पर बुधा भाई आदि का कहना था जहाँ गायत्री माता और आप रखेंगे, वहीं रह लेंगे पर इस जगह तो मां को ही रहना है। बुधा भाई ने बाद में परिजनों को बताया। वर्षों पहले परिवार के किसी संदर्भ में तीनों भाइयों ने संकल्प लिया था कि जहां हम लोग रहते हैं, उसे गुरुदेव के काम में लगाएंगे। गुरुदेव से तब इस तरह का अनुरोध भी किया था पर उन्होंने आगे यथावसर उपयोग करने की बात कह कर जगह अपने पास ही रखने के लिए कहा था।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अब शक्तिपीठों की स्थापना का सिलसिला शुरु हुआ तो तीनों भाइयों के मुंह से एक दिन अनायास एक साथ ही एक ही बात निकली। उनका कहना थ कि गुरुदेव के लिए हम लोगों ने अपना जो मकान समर्पित किया था वहीं शक्तिपीठ बनाते हैं। मकान में ज्यादा जगह नहीं थी फिर भी निवेदन सो निवेदन। गुरुदेव के पास जाकर अपना संकल्प व्यक्त किया। वहां से पहली ही बार में स्वीकृति मिली। बुधा भाई ने कहा जगह छोटी है, कम पड़ेगी। गुरुदेव ने कहा जागृत स्थान आकार से नहीं, भावना और तप से बनते हैं। तुम काम शुरु करो और एक बार काम शुरु हुआ तो निरंतर चलता ही रहा। कुछ ही हफ्तों में पूरा हो गया। गुरुदेव तब स्थापना-प्राण प्रतिष्ठा के लिए गए तो उन्हीं के निर्देश पर तीन दिन का साधना सत्र चला।

शामलाजी, गुजरात के ही एक स्थानीय तीर्थ में परिजनों को छोटी सी जगह मिली। साबरकांठा के परिजनों ने वहां मिल जुल कर छोटा सा निर्माण किया। शुरु दिनों में इस शक्तिपीठ को लोग मढ़िया के नाम से पुकारते थे। निर्माण कार्य के दौरान ही स्थानीय परिजन गुरुदेव के पास गए तो प्रेरणा मिली कि मढ़िया को चार मंजिला बना लो। कार्यालय, सत्संग, साधना और आगंतुकों के आवास के लिए जगह निकल आएगी। एक संकोच आड़े आ रहा था कि गायत्री की प्रतिमा भूमितल पर रहेगी। निर्माण उस तल से ऊपर तक जाएंगे। इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
पर गुरुदेव ने कहा संकोच की जरूरत नहीं है। गायत्री की स्थापना वाला क्षेत्र छोड़ कर भवन के ऊपर तक जाने दो। वैसे कोई हर्ज नहीं है लेकिन स्थानीय लोगों को परहेज हो तो उसका निराकरण हो जाएगा वैसा ही किया गया। आज यह एक चार मंजिला विशाल तीर्थ पहाड़ियों की गोद में स्थित है।

मध्यप्रदेश के शुजालपुर जिले में एक कस्बा है खोकरांकलां। वहां शक्तिपीठ की स्थापना के लिए बड़ी संख्या में परिजन आए। इनमें भोपाल के भी कई कार्यकर्त्ता थे। संकल्प लिया गया-यहां भी जगह कम ही थी। गुरुदेव ने परिजनों से कहा अरे इस शक्तिपीठ में तो पहले ही दिन बड़ी संख्या में लोग आएंगे- कम से कम आठ सौ। उनके और बाद में आने वालों के लिए भी थोड़ी ज्यादा जगह चाहिए। जमीन के लिए नए सिरे से प्रयास हुए और पहले से ज्यादा जगह में शक्तिपीठ का निर्माण हुआ।

शक्तिपीठों की स्थापना का एक ही क्रम रहा। परिजन गुरुदेव के पास आते-उनकी साक्षी में संकल्प करते। गुरुदेव उनके हाथ में रक्षा सूत्र बांधते हुए वचनबद्ध करते। यह प्रक्रिया गुरुदेव के कक्ष में ही संपन्न होगी। वहां से माताजी के पास जाते माताजी आशीर्वाद स्वरूप उन्हें कुछ प्रसाद देतीं। प्रसाद का एक हिस्सा तो माताजी के सामने ही सिर माथे पर रखते हुए ग्रहण कर लिया जाता। दूसरा हिस्सा संकल्पित स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया जाता अथवा वहां के परिजनों में वितरित हो जाता।

कांवट में एक कार्यकर्त्ता थे वीरेन्द्र अग्रवाल बाद में वे जयपुर आकर बस गए। शक्तिपीठों के लिए गुरुदेव का प्रवास शुरु हो गया था। गुरुदेव राजस्थान में किसी शक्तिपीठ की स्थापना के लिए जा रहे थे। रास्ते में जयपुर के पास नीम का थाना के पास कावट पड़ता था। गुरुदेव का प्रवास कार्यक्रम बना तो मार्ग निश्चित हुआ कि वे यहां से हो कर निकलेंगे। प्रवास आरंभ हुआ-नीम का थाना में गुरुदेव कुछ देर के लिए रुके। वीरेन्द्र अग्रवाल वहीं पहुँचे। गुरुदेव से कहा कि आप यहां रुके हैं। पास ही आपका (वीरेन्द्र अग्रवाल का) घर है। रात वही निवास कीजिए घर पवित्र हो जाएगा। गुरुदेव ने कहा कि जब अपना ही घर है तो जरूर आऊंगा! पर अभी नहीं । तुम कांवट में शक्तिपीठ बना दो। मैं वहीं आकर पूरे चौबीस घंटे रहूँगा। गुरुदेव की इस प्रेरणा को परिवार के सभी लोगों ने हृदयंगम किया और कुछ ही महीनों में वहां एक भव्य शक्तिपीठ बन कर तैयार हो गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उपरोक्त प्रसंग तो बानगी स्वरूप है। गुरुदेव के समय में और उनके बाद भी स्थापित हुए शक्तिपीठों का अलग-अलग इतिहास है। सैंकड़ों शक्तिपीठों में वे उन्नीस स्थानों पर ही गए। भूमिपूजन उनके हाथों अगणित के हुए। अप्रैल १९८२ में उन्होंने यकायक बाहर जाना रोक दिया। कहा कि आगे का काम माताजी को देखना है-वे यहीं यानी शान्तिकुंज रहते हुए ही उन आत्माओं, विभूतियों को संस्कारित करेंगे जिन्हें आगे चल कर विभिन्न क्षेत्रों में समाज का नेतृत्व करना है। फिर उन्होंने दोबार यही दोहराया-नेतृत्व शब्द से कुछ लोगों के मन में शायद राजनीति की गंध आए। इसलिए कहता हूं कि नए मनुष्य को तैयार करने के लिए जिन जागृत और संस्कारवान आत्माओं को दायित्व निभाते हैं, उन्हें तैयार करने के लिए काम करना है।

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तेईस

गायत्री तीर्थ : जहाँ लोग तर जाते हैं

गुरुदेव १९८२ तक गायत्री शक्तिपीठों की स्थापना, प्राण प्रतिष्ठा के लिए गए। उन्नीस स्थानों-शक्तिपीठों में जाने के बाद उन्होंने प्रवास रोक दिया। जहां पहले स्वीकृति दी जा चुकी थी, कार्यक्रम भी तय हो गए थे और तैयारियां चल रही थीं, वहां सूचना भेज दी गई कि गुरुदेव अब नहीं आएंगे। कारण कोई नहीं बताया गया था। सुधी परिजनों ने समझ लिया कि गुरुदेव की मार्गदर्शक सत्ता का निर्देश होगा। प्रवास कार्यक्रम अचानक स्थगित हुए हैं, इसका अर्थ है कि नए चरण का निर्धारण हुआ है। वह निर्धारण अधिक महत्त्वपूर्ण होगा।

शान्तिकुंज में निवास कर रहे कार्यकर्ताओं को भी इस निर्णय का पता चला तो उन्हें कोई आश्चर्य नहीं हुआ। भाव शरीर से गुरुदेव की भक्ति करने वाले भक्तिमार्गी कार्यकर्ताओं को तो खुशी ही हुई कि गुरुदेव अब पहले की तरह नित्य उपलब्ध रहेंगे। प्रवास कार्यक्रम लगभग डेढ़ वर्ष तक चले थे। गुरुदेव ज्यादा समय बाहर नहीं रहे, पर भावुक मना परिजनों के लिए तो यह विछोह भी भारी पड़ रहा था। इन कार्यकर्ताओं के साथ आश्रम के बच्चे भी प्रसन्न हुए। वे गुरुदेव के रूप में अपने पितामह को देखते थे। उन्हें पता चला कि गुरुदेव अब बाहर नहीं जाएंगे तो उन्हें गुरुदेव को प्रणाम करने उनके पास दौड़े गए। प्रणाम किया और कुछ देर चुपचाप खड़े रहे। गुरुदेव ने उनकी पीठ थपथपाई और कुछ टाफियां उनकी हथेली पर रख दीं। उनकी भावनाओं को मान्यता देते हुए कहा जाओ अब पढ़ो और खेलो।

उसी दिन अंतरंग गोष्ठी में प्रवास संबंधी घोषणा के बाद गुरुदेव ने कहा कि शक्तिपीठों का विस्तार होना है। जहाँ बड़ी स्थापनाएं नहीं हो सकेंगी, गायत्री माता की प्रतिमा नहीं स्थापित की जा सकेगी, वहां गायत्री माता के चित्र स्थापित किए जायेंगे, संभव हुआ तो छोटी प्रतिमायें लगेंगी। वे संस्थान प्रज्ञापीठ कहलायेंगे और जहां यह भी संभव नहीं होगा वहां चरणपीठ बनाए जाएंगे। उन स्थानों पर एक शिला स्थापित की जाएगी। चार वर्ग फुट की इस शिला पर गायत्री माता के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चरण खुदे होंगे। इन स्थापनाओं का उद्देश्य छोटे-छोटे कस्बों और गांवों में भी गायत्री चेतना का विस्तार होगा। गायत्री माता विश्व ब्रह्माण्ड को आलोड़ित करने वाली महाशक्ति के साथ लोकदेवता के रूप में भी अवतरित होने की भूमिका रहेगी।

संध्या समय गुरुदेव ने अपने एक वरिष्ठ सहयोगी से कहा आकाश में एक ही सूर्य है और एक ही चंद्रमा। सागर, नदी, तालाब और झील में दोनों का एक-एक प्रतिबिंब ही होता है न। लेकिन मनुष्य और अन्य प्राणियों के चित्त में वह कई रूपों में झलकता है। गायत्री चेतना को भी इसी तरह विभिन्न रूपों में व्यक्त होना है। गुरुदेव यह सब कह रहे थे लेकिन उन कार्यकर्त्ता का मन किन्हीं और विषयों में भी चला जाता। लगता था भीतर कोई और मंथन चल रहा है। गुरुदेव ने उन कार्यकर्त्ता की मनःस्थिति ताड़ ली और पूछा, 'बेटा तुम्हारा मन कहीं और है। अपनी ये बातें तो पीछे भी होती रहेंगी। तुम उन बातों को पूछो जो तुम्हें मथे जा रही हैं।'

'मेरा मन आपके पास ही है गुरुदेव' उन कार्यकर्त्ता ने कहा, फिर स्वगत ही बोला गुरुदेव आपका आहार दिनों दिन अल्प होता जा रहा है। कई बार तो लगता है कि आप कुछ भी नहीं लेते। कैसे शरीर चलता है?

गुरुदेव प्रश्न सुनकर थोड़े रुके। कुछ कहें इसके पहले ही उन कार्यकर्त्ता ने जैसे बच्चों की तरह हठ किया, 'यह मत कहना गुरुदेव कि योगियों को आहार की जरूरत नहीं पड़ती। बिना खाए भी उनका काम चल जाता है।'

उत्तर के लिए यह सीमा बांध देने के बाद गुरुदेव की मुस्कुराहट हलकी सी हंसी में खिल उठी। फिर वे गंभीर हुए और बोले, 'तुम शरीर विज्ञान या चिकित्सा शास्त्र की दृष्टि से पूछ रहे हो न। बिना आहार और पोषण के शरीर कैसे रहता है, यही न! तो सुनो मैं आकाश खाता हूँ। आकाश में अपने स्वजनों का रोग और द्वेष प्रचुर मात्रा में घुला है। उसे निगलता हूँ।

इतना सुनने के बाद उन कार्यकर्त्ता को लगा कि समूचा परिदृश्य ही बदल गया। सामने न कोई भवन है, न छत, न दीवारें और दालान। दूर दूर तक बर्फ फैली हुई है। उस बर्फ पर लपटें उगलती हुई आग धधक रही है। धरती पर और आकाश में वे लपटें जिह्वाओं की तरह लहरा रही हैं। पास ही एक दिगम्बर साधु अपना मुंह फाड़े उन लपटों को निगलने की कोशिश कर रहा है। वे ज्वालाएं मुख में प्रवेश करती हुई कंठ में ठहर जाती हैं। कंठ का रंग धीरे धीरे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नीलवर्ण का होता जा रहा है। उस संन्यासी की आकृति विराट रूप धारण करती जाती है और फिर धीरे-धीरे सब शांत होता जाता है। चित्त जैसे अपने आपमें स्थिर होता है और दिखाई देता है कि सामने गुरुदेव चहलकदमी करते हुए कह रहे हैं-'राग एक जलती हुई आग है और द्वेष उसका धुआं। अपने आपको जो भी प्रभु के मार्ग पर ले जाता है, उसके मन में ये विकार तिरोहित हो जाने चाहिए।'

'दूसरी तरफ राग द्वेष शरीर का धर्म भी है। शरीर और संसार है तो वे भी उठेंगे ही। जब साधक अपने आपको गुरु के हवाले कर देता है तो उसके राग-द्वेष गुरु ही लीलने लगते हैं।' गुरुदेव ने यह कहते हुए अपनी बात पूरी की। इस पर उन कार्यकर्ता का प्रश्न था, तो क्या साधकों और शिष्यों का दायित्व संभालने वाले सभी महात्मा आहार छोड़ने लगते हैं।

गुरुदेव ने कहा, 'नहीं। आहार कोई नहीं छोड़ता। अपने परिजनों का गुरुतर दायित्व ग्रहण करने के बाद हवा और आकाश वे पोषक तत्व सीधे ही प्रदान करने लगते हैं। यह भी तो देखों कि जिस अन्न और आहार से शरीर पोषण प्राप्त करता है वे भी तो आकाश से ही ऊर्जा और प्राण लेकर पुष्ट होते हैं।' सुन कर उन कार्यकर्ता का समाधान हो गया। उस समाधान से भी ज्यादा समाधि जैसा आनंद मिलने लगा। श्रीकृष्ण का विराट रूप देखने के बाद अर्जुन ने जो सौम्य रूप देखा, लगभग वैसी ही प्रफुल्लता अनुभव हो रही थी।

उन्हीं कार्यकर्ता को गुरुदेव ने बताया कि अब हम इसी जन्म के नहीं, पिछले जन्म में जागृत और जीवंत रही आत्माओं को भी खोज निकालेंगे। एक एक व्यक्ति को ढूंढने और परखने का काम दुष्कर है। उसके लिए बड़ी संख्या में लोगों को एकत्रित करना और परखना होगा। दो साल से हम लोग जन्म समय के आधार पर परिजनों के स्तर और क्षमताओं की निगरानी कर रहे हैं। उस प्रयोग के कुछ सार्थक परिणाम भी आए हैं।

ज्योतिर्विद्या का उन्मेष

जन्म समय के आधार पर सक्षम प्रतिभाओं की खोज अर्थात ज्योतिष के आधार पर प्रतिभाओं की परख के परिणाम आने लगे थे। इस संवाद से दो साल पहले फरवरी १९८० में गायत्री परिवार के कार्यकर्ताओं से उनके जन्म का विवरण मांगा गया था। इसमें जन्म का समय, तिथि, वर्ष और स्थान के अलावा पारिवारिक पृष्ठभूमि की सूचनाएं शामिल हैं। इन दिनों प्रचलित ज्योतिष की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गणना में पुराने मानदंड और सिद्धांतों का ही प्रयोग किया जाता रहा है। नतीजतन परिणाम भी उलट पुलट आते हैं। दूसरे ज्योतिष जानने वाले विद्वान फलित बताते समय अपने लालच को रोक नहीं पाते। वे ऐसी घोषणाएं करने में दिलचस्पी लेते हैं जिनसे यजमान डर जाए और दान, पूजा, रत्न तथा उपाय आदि के नाम पर पंडित के सामने जेब उंडेलता रहे। गुरुदेव इन कारणों से फलित ज्योतिष के आधार पर अपनी समस्याओं को समझने और समाधान ढूंढने की प्रकृति को निरुत्साहित करते रहे। इस मान्यता में अब भी कोई बदलाव नहीं आया था। फलित ज्योतिष और उसके प्रचलित स्वरूप के प्रति उनकी धारणा ज्यों की त्यों थी। समय और संस्कार के अभाव में इस विद्या और इसके विद्वानों में मल विक्षेप की भरमार ने ज्योतिष को उपेक्षणीय और निंदित कर दिया।

फरवरी १९८० में गुरुदेव ने इस विद्या के नवोन्मेष की पहल की। उनके अनुसार ज्योतिष का उपयोग भविष्य कथन के लिए कतई नहीं किया जाना चाहिए। यह वर्जना जितनी कठोर है, उतनी ही यह संभावना भी सहज है कि इसका उपयोग भविष्य निर्धारण के लिए किया जाए। इस उद्देश्य से गुरुदेव ने अपने परिजनों, उनके बच्चों और संबंधियों के जन्म समय तथा स्थान आदि के विवरण मंगाए। बहुतों के पास अपनी जन्म कुंडलियां भी थीं। पर उन्हें भी केवल जन्म समय और संबंधित विवरण भेजने के लिए कहा गया। उनकी कुंडलियां गुरुदेव ने अपने काम के लिए अनुपयुक्त बताईं। कारण कि वे सैकड़ों साल से चले आ रही पंचांग पद्धतियों और गणनाओं के आधार पर तैयार हुई थी। सूरज कोई घड़ी पल देखकर नहीं उगता, अस्त नहीं होता। धरती पर प्रकाश बिखरने का उसका समय प्रतिदिन घटता बढ़ता रहता है। पृथ्वी भी सूर्य की परिक्रमा ठीक तीन सौ पैंसठ दिन में नहीं करती। ग्रह नक्षत्रों की गति और स्थिति में भी यही नियम लागू होता है। इसलिए आकलन वही उपयोगी है, जिस समय के लिए किया जा रहा हो।

जन्म विवरण मंगाने और उनके आधार पर शांतिकुंज में ही उस जातक की संभावना परखने का उद्देश्य परिजनों का आत्मिक स्तर समझना था। वह समय और ग्रह स्थिति यथातथ्य समझी जा सके इसके लिए आश्रम में ही नई वेधशाला बनाई गई। अखण्ड ज्योति के पन्नों में यह घोषणा छपी तो परिजनों द्वारा भेजे गए विवरणों का ढेर लग गया। बीसियों पत्र प्रतिदिन कुंडली बनवाने और अध्ययन कराने के लिए आने लगे। कुछ पत्रों में फलादेश भेजने का अनुरोध भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किया गया था। लेकिन इस बात के लिए पहले ही मनाही कर दी गई थी। फलादेश नहीं भेजे जाने थे और न ही भेजे गए।

कुंडलियां मंगाने और उस आधार पर परिजनों का आत्मिक स्तर जांचने की जरूरत क्यों पड़ी? गुरुदेव स्वयं समर्थ हैं, एक सामान्य संकल्प या इच्छा मात्र से वे किसी भी व्यक्ति का भूत भविष्य तथा वर्तमानस्तर जांच सकते हैं। कुछ परिजनों के मन में इस तरह के प्रश्न उठे। उनमें से कुछ ने पत्र भी लिखे। इस बारे में कोई उत्तर प्रायः नहीं दिए गए। साफ था कि ये प्रश्न सिर्फ कौतूहल वश ही किए गए हैं। राजस्थान के प्रसिद्ध ज्योतिषी पंडित ईश्वर चंद शर्मा के शिष्य पंडित कृष्णदत्त गुरुदेव के प्रति सहज श्रद्धा रखते थे। उनके गुरु कहा करते थे कि पंडित जी (गुरुदेव) की दृष्टि में ही वह तेज है, जो जहां भी पड़ जाए, वहां उसका ओर छोर अपने आप बोलने लगता है। अध्ययन की जरूरत नहीं पड़ती, व्यक्ति अथवा वस्तु और स्थिति स्वयं अपना बखान करने लगती है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

उन्होंने अपना एक अनुभव भी बताया था। १९५० के आसपास का समय रहा होगा। गुरुदेव उन दिनों अक्सर उत्तराखण्ड के गुह्य क्षेत्रों में जाया करते थे। पंडित ईश्वरदत्त शर्मा भी पंचांगुली साधना और सिद्धि की शोध में उधर गए हुए थे। रुद्र प्रयाग से आगे एक उपेक्षित किंतु अतिप्राचीन गौरी मंदिर में दोनों की भेंट हो गई। पंडितजी ने गुरुदेव को देखा।

पहचान तो नहीं सके लेकिन उनकी उपस्थिति और आभा से प्रतीति हो गई कि कोई दिव्य विभूति सामने है। बिना प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त किए ही पंडित जी ने गुरुदेव को प्रणाम कह दिया। उधर गुरुदेव ने अत्यंत सहज और सरल भाव से विनत होकर पंडित जी के प्रणाम का उत्तर दिया। फिर कहा। आपको यहां देखकर अति प्रसन्नता हुई पंडित जी। आप ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं कि इस क्षेत्र में दिव्य विधाओं के भांडार भरे हुए हैं। आपके अपने विषय ज्योतिष के तो चमत्कारी सूत्र यहां के मंदिरों में है।

उद्‌बोधन सुनकर पंडितजी देखते रह गए। पूछने का मन हुआ कि आप कौन? वे पूछें इससे पहले ही गुरुदेव ने अपना परिचय दे दिया। पंडित जी कहने लगे 'सामुद्रिक शास्त्र के आधार पर मैं समझ तो रहा था कि आप कोई असाधारण विभूति है लेकिन इतना स्पष्ट परिचय नहीं पा सका था। मैं अभी इस विषय में विद्यार्थी ही हूँ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अगर आप अब भी विद्यार्थी है तो फिर मैं तो नितांत अनगढ़ ही हूँ। अक्षर ज्ञान भी नहीं है। गुरुदेव ने कहा पंडित जी के इसके उत्तर में और भी विनय भाव व्यक्त किया इस पर गुरुदेव ने एक दूसरे के प्रति शिष्टाचार का क्रम वहीं रोकते हुए कहा आप जिस विद्या को सिद्ध कर चुके हैं, उस क्षेत्र में हमारा भी कुछ करने का मन है। उपयुक्त समय आने पर करेंगे।

आपको इसकी क्या जरूरत महाप्रभु? आप तो जहां भी नजर फेंकते हैं वहीं सब कुछ अनायास ही उद्घाटित हो जाता है, पंडित जी ने कहा। इस पर गुरुदेव का उत्तर था, दीपक जलाने से रोशनी उत्पन्न हो जाए तो उस काम के लिए अपनी साधना सामर्थ्य का उपयोग क्यों किया जाए?

सुनकर पंडित जी गदगद हुए। उन्होंने विनोद भी किया, तो हम लोग रोशनी जलाने का काम कर रहे हैं? गुरुदेव ने कहा, आप विद्वान हैं। अच्छी तरह जानते हैं कि भगवान ने प्रत्येक व्यक्ति को अलग अलग भूमिका दी है। उसे अपना ही काम करना चाहिए।

इसके बाद उन्होंने चर्चा को विराम दिया और कहा कि खैर। आप इस क्षेत्र में आए हैं तो यहां से करीब चार मील बाघंबरी बाबा के पास जरूर जाए। वे त्रिकालदर्शी है। पास आने वालों पर बाघ की तरह गुर्राते हैं और हर किसी को नजदीक फटकने नहीं देते। उनके पास आपको ज्योतिष के महत्त्वपूर्ण सूत्र हाथ लगेंगे।

इस संवाद के बाद पंडित जी और गुरुदेव दोनों अलग अलग दिशाओं में चले गए। कुछ माह बाद गुरुदेव मथुरा आ गए। पंडित जी भी अपने गृह नगर लौट गए। दोनों मे संपर्क और संवाद बना रहा। उन्हीं पंडित जी के शिष्य कृष्णदत्त शान्तिकुंज आए तो उन्होंने अपने गुरु से सुने संस्मरणों का हवाला दिया। गुरुदेव ने कहा, 'पहले उनसे हुई चर्चा मुझे अब भी याद है। उनसे कहा था कि ज्योतिष विद्या का उपयोग हम लोग किसी दिन अवश्य करेंगे। इसका उद्देश्य भविष्य कथन नहीं लोगों के भविष्य का निर्धारण होगा।'

पंडित कृष्ण दत्त ने कहा, हमारे गुरु भी इसी मत के समर्थक थे। वे कहते थे कि पंडित लोग यजमानों से दान दक्षिणा लेकर, रत्न बेचकर या यंत्र मंत्र के पुर्जे देकर धन ऐंठते हैं, यह गलत है। ऐसा ज्योतिषी जातक का और अपना अहित करता है।

उन्होंने कहा, 'पिछले कर्मों का परिणाम तो भुगतना ही पड़ेगा। दान पुण्य और सत्कर्म के द्वारा उसकी धार को सहनीय बनाया जा सकता है। पूजा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रार्थना से पात्रता विकसित हो सके तो उन परिणामों को टाला भी जा सकता है। लेकिन किसी भी मुमुक्ष को इसकी आकांक्षा नहीं करनी चाहिए।

पंडित कृष्णदत्त ने इस भेंट के बाद कुछ समय शान्तिकुञ्ज में ही बिताया। यहां विज्ञान और शुद्ध गणित के आधार पर सही जन्म कुंडलियों के निर्माण में कुछ समय सहयोग भी दिया। जिस समय पंडित जी यहां आए थे, ग्यारह और ज्योतिष आचार्य इस काम में लगे हुए थे। पंडित कृष्ण दत्त ग्रह नक्षत्रों की गणना, गति और स्थिति जानने की आसान विधियों के अच्छे जानकार थे। उन्होंने शान्तिकुञ्ज में शोध कर रहे कुछ विद्वानों से इस विषय में विमर्श भी किया। बहरहाल ज्योतिष के आधार पर प्रतिभाओं को पहचानने और तराशने की प्रक्रिया आरंभ हुई।

उन दिनों शान्तिकुञ्ज के मुख्य भवन से गायत्री मंदिर के बीच मार्ग के दोनों ओर सुरम्य वाटिकाएं सजी हुई थीं। दोनों ओर चौदह वाटिकाएं जैसे चौदह भुवन की प्रतीक हों। लता बल्लरियों से आवृत छत वाली इन वाटिकाओं के बीच में पत्थर की बने तख्तनुमा आसन थे। जमीन से करीब दो फुट ऊंचे बने इन आसनों पर बैठकर लोग आसानी से ध्यान लगा सकते थे। उनकी लंबाई चौड़ाई इतनी थी कि पांव फैलाकर विश्राम भी किया जा सकता था।

कुछ समय पहले ही इन वाटिकाओं का नवीनीकरण हुआ। नए नए पौधों और लता पत्रों को लाकर रोपा गया था। अंकुरित और पल्लवित होकर उनकी बेलें ऊपर चढ़ने लगी थीं तथा आसन को ऊपर से आच्छादित भी करने लगी थीं। साधक और शिविरार्थी उन लता कुंजों में बैठकर ध्यान स्वाध्याय करते। दोपहर के समय जब धूप तेज हो जाती और हवा में भी थोड़ी तल्खी आ जाती तो साधकों को ये वाटिकाएं बहुत लुभाती थीं।

कोई तीन चार महीने पहले ही गुरुदेव ने इन वाटिकाओं को नए सिरे से संवारने सजाने की व्यवस्था की थी। प्रवचन हाल से या शान्तिकुञ्ज अथवा गायत्री नगर से लौटते हुए साथ चल रहे वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से वे यदा कदा इनके बारे मे परामर्श भी करते और राह चलते हुए इन्हें और सुंदर बनाने के लिए निर्देश देते।

आश्रम का नया रूप

प्रसंग वश यह उल्लेख जरूरी है कि गुरुदेव के समय में ही शान्तिकुञ्ज के विस्तार और परिवर्तन ने गति पकड़ ली थी। १९७३ में गुरुदेव मुख्य भवन के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
ऊपरी कक्ष में चले गए थे। सूक्ष्मीकरण की प्रक्रिया संपन्न हो जाने तक वे इसी जगह रहे। इससे पहले वे माताजी के पास वाले कक्ष में बैठते, काम करते और आगंतुकों से मिलते थे। नीचे शान्तिकुञ्ज के खुले परिसर में नए भवन निर्मित होने लगे थे। गायत्री मंदिर के पास देवात्मा हिमालय वाला कक्ष बनने लगा था। हिमालय दर्शन से पहले यहां प्रवचन हाल था और गुरुदेव शिविरार्थियों को इसी सभागार में प्रशिक्षण देते थे। १९७९ के आसपास शान्तिकुञ्ज के मुख्य परिसर से लगी जमीन पर गायत्री नगर का निर्माण शुरु हो गया था। उससे पहले ब्रह्मवर्चस का स्वरूप उभर कर आया।

इन दिनों जहां आगंतुक अतिथि विश्राम करते है और दिन मे अन्न प्राशन, मुंडन आदि संस्कार होते हैं, उस जगह तब पुष्प पादप और लतापत्रों से छाई रहने वाली वाटिकाएं थीं। उस वाटिका को हटाने के बाद बीच वाली जगह एक गैरेज और एक ओर एक शिक्षण प्रशिक्षण विभाग बनाया गया था। गैरेज में आश्रम की गाड़ियां खड़ी रहतीं। उन दिनों गायत्री नगर का निर्माण शुरु होने तक गुरुदेव दिन में कम से कम एक बार आश्रम के विकास का निरीक्षण करने जरूर निकलते। कभी कभार तो जहां निर्माण चल रहा होता वहीं कुर्सी लगा कर बैठ जाते। उस काम को देख रहे परिजनों से ईंट गारे के बारे में, निर्माण की मजबूती और अगले दिन या हफ्तों की योजना के बारे में बात करते। कोई परिजन इस बीच आता तो उसे अपने कक्ष में बुलाकर मिलने के बजाय निर्माण स्थल पर ही बुला लेते और वहीं कुशल क्षेम पूछ लेते।

एक दिन माताजी ने गुरुदेव की इस रीति नीति के बारे में पूछ ही लिया। कहा कि आप पहले तो कभी निर्माण कार्यों के निरीक्षण में इतना समय नहीं लगाते थे। माताजी अपना वाक्य पूरा करतीं इससे पहले ही गुरुदेव ने कहा, 'एक नया तीर्थ विकसित हो रहा है। कोई आश्चर्य नहीं कि आने वाली पीढ़ियां इस तीर्थ को चार धामों की तरह महत्व देने लगें। गायत्री तीर्थ का विधिवत विकास शुरु होने से पहले गुरुदेव ने गायत्री मंदिर के पास सात ऋषियों की स्थापना की।

विश्वामित्र, वसिष्ठ, चरक, परशुराम, भगीरथ, बाल्मीकि, याज्ञवल्क्य ऋषियों की प्रतिष्ठा करते समय गुरुदेव ने उस स्थान पर रुद्राभिषेक भी कराया। अभिषेक और स्थापना के समय गुरुदेव ने इस स्थान को कल्पवृक्ष का नाम दिया। बहुत लोग इसे अब कल्पक्षेत्र भी कहते हैं। अभिषेक और स्थापना के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
समय गुरुदेव ने कहा कि इसे अनवरत चलने दें। ऋषि तीर्थ में श्रद्धापूर्वक दर्शन भजन करने वालों का कल्याण होगा। उनकी लौकिक और आध्यात्मिक आकांक्षाएँ तुष्ट होंगी। शातिंकुंज में तब ऐसे साधक, परिजन और नए लोग भी आ रहे थे जिनके लिए गुरुदेव संत हृदय और साधु पुरुष थे। उनके हिसाब से हरिद्वार आदि तीर्थों में इस तरह के संत महात्मा बड़ी संख्या में हैं।

शान्तिकुञ्ज जैसे प्रांजल, अभिजात्य और भारतीय धर्म संस्कृति की परिभाषा के लिए नए मुहावरे चुनने अपनाने वाला कोई संस्थान नहीं था। अपने नाम और विशेषण से नवीनतम और पुरातन का बोध कराने वाले परिचय के बावजूद उनकी निगाहें गुरुदेव के वेश और सामान्य से दीखने वाले कलेवर पर ही अटक जाती थी। उनके लिए आश्रम व्यक्तित्व से नहीं वैभव और वेश विन्यास से ही पहचाने जाते हैं। गुरुदेव के संबंध में यह विख्यात हो चला था कि उनके पास विभिन्न सभा संगठनों और राजनैतिक दलों के लोग आते हैं। उनसे परामर्श करते हैं और उनका समर्थन सहयोग भी चाहते हैं, पर वे किसी का साथ देने या जुड़ने के लिए राजी नहीं हैं। आम धारणा यह बन चली थी कि किसी दल, संगठन और सभा सोसायटी की ओर उन्हें आकर्षित नहीं किया जा सकता। आजादी के बाद से ही उन्हें लुभाने, अपनी ओर करने के प्रयास होते रहे हैं लेकिन उन्हें जरा भी राजी नहीं किया जा सका। ऐसे व्यक्तियों के प्रति गुरुदेव सामान्य शिष्टाचार तो निभाते थे पर उन्हें महत्त्व नहीं देते थे। कभी कभार तो उनसे बचते भी थे।

जिन दिनों गायत्री नगर का निर्माण शुरु ही हुआ था, उन दिनों की घटना है। गुरुदेव शान्तिकुञ्ज के पिछले हिस्से में खड़े कुछ कार्यकर्ताओं से बातें कर रहे थे। देखा भवन के मुख्य द्वार की ओर से लगभग दौड़ते हुए एक कार्यकर्त्ता चले आ रहे थे। गुरुदेव के पास पहुंचते पहुंचते वे हांफने लगे थे। वह पास आकर रुके। किसी केन्द्रीय मंत्री का नाम लिया और कहा कि वे पहुंचने ही वाले हैं। उनके पीए का फोन आया है। गुरुदेव ने कहा 'अच्छा, उन्हें माताजी के पास लिवा जाना। वे मंत्रीजी की बात सुन लेंगी।'

इतना कह कर गुरुदेव फिर अपनी चर्चा में व्यस्त हो गए। वे मंत्री शान्तिकुञ्ज आए, माताजी के पास गए। वहां उनसे अपनी बात कही, जो स्पष्ट रूप से राजनीति के क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत बनाने से संबंधित थी। करीब पंद्रह बीस मिनट वे कहाँ रुके होंगे। गुरुदेव इस बीच में कार्यकर्त्ताओं से चर्चा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
परामर्श करते रहे। बात पूरी हो गई तो उन्होंने पास ही खड़े एक अन्य कार्यकर्त्ता से कहा, जरा पता करना कि मंत्री जी हैं या चले गए। वह कार्यकर्ता जानकारी लेने के लिए दौड़कर गया। लौट कर आया और बताया कि अभी नीचे उतर रहे हैं, जाने ही वाले हैं। सुनकर गुरुदेव कुछ समय रुके। वहां आसपास खड़े कार्यकर्त्ताओं को आवश्यक निर्देश दिए और गायत्री मंदिर की ओर चले गए। निर्माण और संबंधित व्यवस्था में लगे परिजन अपने अपने काम में जुट गए थे।

पूर्व जन्म की स्फुरणा

शान्तिकुञ्ज गायत्री तीर्थ के रूप में विकसित होगा। यहां आने और भावभरी श्रद्धा से कुछ समय व्यतीत करने वालों को वह सब मिलेगा जो किन्हीं और जीवंत तीर्थों में मिलता है। गुरुदेव ने १९८१ की गायत्री जयंती को कहा था। घोषणा सबके सामने की गई थी इसलिए किसी के मन में जिज्ञासा उठी हो तो पूछने का अवसर नहीं मिला। वह दिन प्रणाम अभिवादन में ही बीत गया। अगले दिन दक्षिण के कामाक्षी मंदिर से आए अनंत मूर्ति से रहा नहीं गया। भेंट के समय पूछूंगा, यह सोचकर प्रातःकालीन जप ध्यान में बैठा। इसी तरह के भाव वाराणसी से आए एक अन्य परिजन काशी के मन में भी उठे। संयोग की बात कि दोनों परिजन सुबह प्रणाम के समय साथ साथ गए। दोनों एक दूसरे से अपरिचित थे। पहले आपस में कभी मिले या अपने सामने भी नहीं हुए थे। प्रणाम के लिए गए तो दोनों ने एक दूसरे को देखा और उन्हें लगा कि हम लोग न जाने कब से एक दूसरे को जानते है। प्रणाम के लिए लगी पंक्ति धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। आम तौर पर सुबह के समय अखंड दीप के दर्शन कर ही परिजन लौट जाते थे।

गुरुदेव और माताजी उस समय कम ही मिलते, किंतु गायत्री जयंती के दिन आए कई साधक उस दिन प्रणाम नहीं कर सके थे। उनके लिए गुरुदेव अपने कक्ष में विराजमान थे। साथ ही माताजी भी। अखंड दीप के दर्शन कर अनंत मूर्ति और काशी धीरे धीरे गुरुदेव के कक्ष की सीढ़ियां चढ़ने लगे। दोनों आगे पीछे। सीढ़ियां चढ़ते हुए पता नहीं क्यों यह भाव गहराता गया कि दोनों न केवल एक दूसरे से परिचित हैं बल्कि बचपन में साथ भी रहे हैं। इस भाव बोध के साथ दोनों परिजन गुरुदेव माताजी के सामने पहुंच गए। अनंत माताजी को प्रणाम कर आगे बढ़ा और गुरुदेव के चरण स्पर्श करने लगा। तब तक काशी ने माताजी के चरणों में सीस नवाया। दोनों प्रणत मुद्रा में थे ही कि गुरुदेव ने कहा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनंत और काशी तुम लोग जो रास्ते में सोचते हुए आ रहे हो, वह यूं ही नहीं है। तुम्हारे पिछले संस्कार जागे हैं और थोड़ी देर बाद तुम्हें अपनी पुरानी बातें साफ साफ याद आने लगेंगी।

गुरुदेव के वचनों को सुनकर अनंत और काशी दोनों हतप्रभ रह गए। दोनों को अभी तक एक दूसरे का नाम भी नहीं मालूम था। गुरुदेव ने पुकारा तब नाम पता चला। दोनों एक दूसरे का मुंह देखने लगे। गुरुदेव ने अनंत और काशी के सिर को हलके से थपथपाया और दोनों आगे खिसक गए। इस घटना के बारे में किसी को पता नहीं चलता। अनंत ने करीब सप्ताह भर बाद माताजी को पत्र लिखा। दो दिन बाद काशी का पत्र भी आया। उन दोनों ने कहा था कि हम दोनों पिछले जन्म में गुरुदेव के साथ थे, सहोदर भाई की तरह काम करते थे। धीरे-धीरे सब याद आ गया है कि मथुरा के सहस्त्रकुंडीय महायज्ञ में स्वयंसेवक बन कर आए थे। करीब तीन साल तक साथ-साथ काम किया। फिर एक सड़क दुर्घटना में शरीर छूट गया। शरीर छूटते समय मन में यही भाव रहा कि अगले जन्म में फिर गुरुदेव के चरणों में ही स्थान देना। यह कामना पूरी होने जा रही है। माताजी ने दोनों को महीने भर बाद शान्तिकुञ्ज आने और चालीस दिन का अनुष्ठान करने के लिए कहा।

अनंत मूर्ति और काशीनाथ दोनों ने सावन में शान्तिकुञ्ज आकर गुरुदेव माताजी के आदेश अनुसार गायत्री पुरश्चरण किया। जन्माष्टमी तक वे यहीं रहे और जाने लगे तो गुरुदेव के सामने पहुंचते हुए रुलाई फूट पड़ी। लगा कि इस सान्निध्य के लिए पूरे जन्म प्रतीक्षा करनी पड़ी है। अगली भेंट पता नहीं कब हो। अपनी व्यथा सुनाना शुरु की तो गुरुदेव ने कहा, मैं हर क्षण तुम्हारे साथ ही रहूँगा। सांसों में और हृदय की धड़कन में भी। जाओ, दोनों मिल कर तुंगभद्रा के किनारे गायत्री माता का काम करो। वहां ज्ञानयज्ञ को प्रमुखता देना। हम लोगों (गुरुदेव और माता जी) को हृदय में मौजूद पाओगे।

गुरुदेव का यह आश्वासन पाकर अनंत और काशी नीचे उतरने लगे। सीढ़ियों से उतरे ही थे कि काशी ने कहा, भाई मुझे एक बात समझ नहीं आई। अनंत ने काशी की ओर देखा जैसे पूछ रहा हो कि क्या बात है। काशी ने कहा, 'हम लोग गायत्री जयंती के दिन गुरुदेव का प्रवचन सुनकर सोच रहे थे कि गुरुदेव से तीर्थ के बारे में पूछेंगे। उनसे कहेंगे कि शान्तिकुञ्ज को अपने पुराने तीर्थों में स्थान कैसे मिल जाएगा। यह सब तो हम अभी तक नहीं पूछ पाए।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहते हुए काशी के चेहरे पर अहो और आश्चर्य के मिले जुले भाव उभर आए। सुन कर अनंत की आंखें चौड़ी हो गई और होठ खिले। फिर वह कहने लगा, 'अब भी पूछने की जरूरत है क्या? बिना पूछे ही गुरुदेव ने सब बता दिया। दोनों ने तुंगभद्रा के तट पर गायत्री साधना के प्रचार का ताना बाना बुनना शुरु कर दिया। दक्षिण भारत की यह पवित्र नदी कर्नाटक और आंध्रप्रदेश में बहती हुई यह नदी कृष्णा नदी में मिल जाती है। गंगा और यमुना की तरह तुंग और भ्रदा नदी के संगम स्थल शिमोगा के पास अनंत और काशी ने गायत्री प्रचार का निश्चय किया। काशी ने इसके लिए अपने गृहनगर वाराणसी को छोड़ देने का मन भी तुरंत बना लिया। दोनों की उम्र बाईस तेईस साल थी। पारिवारिक जिम्मेदारियां कुछ खास नहीं थीं इसलिए दोनों ने तुरंत काम शुरु करने का निश्चय किया।

तीर्थों का महत्व उस नगर या बस्ती के कारण नहीं होता। उसे जीवंत बनाते हैं वहां के देवता ऋषि और शक्ति। इन तीनों अधिष्ठाताओं को उस स्थान पर एकत्र होने और आते जाते रहने वाले यात्रियों की साधना पोषित करती है। गुरुदेव ने उन्हीं दिनों एक व्याख्यान मे कहा था कि हम इस स्थान को इतना तप्त और ऊर्जावान बनाए जा रहे हैं कि जो यहां अपनी उपस्थिति दर्ज करा जायेंगे, उन्हें भी प्रकाश और आत्मिक बल मिलेगा। शर्त सिर्फ एक ही है कि यात्री अपने आपको, अपने चित्त और मन मानस को खुला रखें। उनकी चेतना में अनुदान बरसेंगे। चित्त और चेतना को बंद रखा गया तो सीप खोल की तरह खाली ही रह जाएगा। उसमें मोती बनने वाली बूंद प्रवेश नहीं पा सकेगी। शक्तिपीठों के उद्घाटन, प्रवास के दिनों में गुरुदेव गायत्री नगर को तीर्थ की सामर्थ्य से संपन्न कर रहे थे। कुछ प्रयोग तो परिजनों को स्पष्ट अनुभव होते थे लेकिन कई अविज्ञात भी थे। कभी कदा किसी साधक को उनका आभास हो जाता था।

सामान्य दिनों में गुरुदेव शाम के समय आश्रम के कार्यकर्ताओं को बुला कर यहां की भावी रीति नीतियां और मर्यादाओं के बारे में समझाते थे। इन गोष्ठियों में आश्रम में निवास कर रहे परिवारों की गृहिणियां और बच्चे भी शामिल होते। चर्चा में सामान्य जीवन के विषय ही होते। व्यवहार, नियमित दिनचर्या, स्वच्छता, श्रमशीलता, विनय, नियमित साधना आदि की बारीकियों पर गुरुदेव इस तरह समझाते जैसे ये विषय ब्रह्मविद्या के गूढ़ रहस्य हों। वे कहते भी थे कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
सभी बच्चे इन मर्यादाओं का निष्ठापूर्वक पालन कर रहे हैं। यह बात हम लोगों को पता है। लेकिन इन बातों का स्मरण और अनुस्मरण अत्यंत आवश्यक है तभी ब्रह्मविद्या के रहस्य प्रकट होते हैं। विद्या का तत्वदर्शन तो एकाध सूत्र वाक्य में ही आ जाता है। असल बात उसे जीवन में उतारने की कला है। गायत्री नगर को जीवंत तीर्थ बनाने के उनके अपने प्रयास जैसे जैसे सूक्ष्म और गहन होते गए, वैसे वैसे व्यावहारिक शिक्षण की गति भी बढ़ने लगी। बाद में होने वाले साधना सत्रों में भी आध्यात्मिक व्यायाम अथवा दैनंदिन साधना के साथ इन बारीकियों का विवेचन किया जाता। इस बीच एक महत्वपूर्ण प्रकल्प गायत्री परिजनों के बच्चों के लिये गायत्री विद्यापीठ के निर्माण का भी बना।

व्यसन के लिए द्वार बंद

तीर्थ की तेजस्विता प्रकट करने वाले प्रयोग इन सबसे अलग थे। उनके बारे में सिर्फ उन्हें ही पता चलता जिन्हें गुरुदेव की सूक्ष्म या मूक अनुमति मिलती। इस तरह के प्रयोगों में कुछ संध्या समय संपन्न होते। तब चर्चा परामर्श या आश्रम के परिवारों से संवाद का आयोजन नहीं होता। गुरुदेव तब संध्या समय अपने कक्ष के बरामदे में चहल कदमी करते अथवा साधना कक्ष में होते या अपने आसन पर अकेले ही कुछ सोच विचार या संवाद कर रहे होते थे। किसी कार्यकर्ता ने उस दिन देखा सूरज अस्ताचल की ओर जा रहा था। उसकी सातों रश्मियां अपने उन्हीं रंग के घोड़ों का रंग लिए सविता देवता को वाहन में बिठाए दौड़ी जा रही थीं। यह उस शाम का स्थूल दृश्य था। वे कार्यकर्ता कोई जरूरी सूचना देने के लिए गुरुदेव के कक्ष की सीढ़ियां छलांगते हुए चले जा रहे थे। कक्ष के द्वार खुले थे। बिना रुके वे भीतर चले गए। बाहर बरामदे में खड़े गुरुदेव अकेले ही कुछ कर रहे थे। उनके वाक्य स्पष्ट सुनाई दे रहे थे लेकिन वे किस के प्रति कहे जा रहे हैं, कुछ समझ नहीं आ रहा था। स्पष्ट लग रहा था कि वह व्यक्ति अथवा सत्ता अदृश्य या सूक्ष्म शरीर धारी है। लेकिन सूक्ष्म शरीर धारी है तो फिर वैखरी वाणी में बोलने की क्या आवश्यकता है ? उन कार्यकर्ता के मन में संदेह उठा।

जैसे ही संदेह उभरा कार्यकर्ता को गुरुदेव के सामने उपस्थित शक्ति या प्रवृत्ति की रेखाए दिखाई देने लगीं। रेखाएं कुछ ही पलों में स्पष्ट हुई और आकृति में बदल गई। एक मलीन, कृशकाय और गंदे पुराने वस्त्र पहने उस आकृति की आंखों से अश्रुधारा बह रही थी। हाथ जोड़े खड़े उस आकृति ने कहा, 'मैं आपके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निर्देशों का पूरी तरह पालन करूंगा गुरुदेव। इस परिसर में रहने वाले आपके किसी अनुचर की छाया पर भी पैर नहीं रखूंगा।'

'न सिर्फ इस परिसर में, बल्कि यहां रह कर गए यात्री को बाहर जाने के बाद भी तंग मत करना। तुम्हारे लिए इतना प्रतिबंध ही पर्याप्त है।' गुरुदेव ने उस सूक्ष्म काया को निर्देश दिया और जाने का इशारा करते हुए हाथ उठा दिया। वह आकृति तत्क्षण तिरोहित हो गई। अब गुरुदेव ने उन कार्यकर्ता की ओर देखा जो इस दृश्य के साक्षी बने हुए थे। साक्षी बनने के साथ वे यह भी समझ रहे थे कि गुरुदेव को उनके आने का भान नहीं हुआ है। गुरुदेव ने उन कार्यकर्ता को इंगित करते हुए कहा, इस घटना के बारे में कहीं चर्चा नहीं करनी है। अपने जीते जी तो कदापि नहीं। जानते हो क्यों? इस आसुरी प्रवृत्ति को हमने कीलित कर दिया है। इस तीर्थ में यह प्रवेश नहीं कर पाएगी।

वे कार्यकर्ता गुरुदेव की बात को सुनते रहे। कुछ बोले नहीं। गुरुदेव ने कहा इस असुर का नाम है व्यसन। इस तीर्थ क्षेत्र में आने वाले किसी व्यक्ति को यह नहीं सताएगा। जो यहां बेमन से आएंगे और इससे वास्ता रखेंगे, उन पर भी यह हमला नहीं कर सकेगा। चोर की तरह ही उनके दर दीवार में घुसपैठ करेगा।

जिन कार्यकर्ता ने यह दृश्य देखा, वे अब नहीं हैं। कोई वर्ष भर पहले उन्होंने लेखकद्वय को इस शर्त पर यह घटना बताई थी कि इसे केवल गुरुदेव के जीवन वृतांत में ही सम्मिलित किया जाए। जीते जी इस घटना के उल्लेख का हवाला दिया तो कहने लगे गुरुदेव ने मना किया था पर अब मैं जीवित हूँ ही कहां। उनकी कृपा से वर्षों पहले जीवन्मुक्त हो गया। घटना की प्रामाणिकता के बारे में उनसे पूछा तो कहने लगे, प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता? गायत्री तीर्थ में प्रतिदिन हजारों लोग आते हैं। मैंने किसी भी व्यक्ति को यहां कोई व्यसन करते नहीं देखा। उस असुर ने चोरी छुपे किसी को अपना शिकार बनाया हो तो पता नहीं। मुझे ही क्या किसी को भी पता नहीं।

उन परिजन से पूछा कि गुरुदेव ने जिस तरह व्यसन को कीलित किया, उसी तरह और दोषों को भी प्रतिबंधित किया होगा। उनका उत्तर था कि निश्चित ही किया होगा पर मुझे इस बारे में पता नहीं है। जहाँ तक मैं समझता हूँ यह सिद्ध क्षेत्र है यहाँ महाकाल की इच्छा के विपरीत कोई कुछ नहीं कर सकेगा। जो देखा और अनुभव किया उसे गायत्री चेतना की अभ्यर्थना में प्रस्तुत कर दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महाकाल का नीड़

गायत्री तीर्थ के मर्म देवता और ऋषि के बारे में जानने की किसी को उत्सुकता नहीं हुई। कारण कि इस संबंध में पहले ही सब कुछ स्पष्ट है। गुरुदेव द्वारा करीब पचासी वर्ष पहले प्रज्वलित अखंड दीप, उनका और माताजी का कक्ष, उन दिव्य आत्माओं की समाधियां और गुरुदेव के आश्वासन को दोहराएं तो तीर्थ का कण कण पारस है। उनके आराधकों, उपासकों के लिए तीर्थ के देवता स्वयं गुरुदेव और वंदनीया माताजी हैं। गुरुदेव कहा करते थे कि यह तीर्थ महाकाल का घोंसला है। कोई अवधि निश्चित नहीं है लेकिन धरा धाम के रहने तक यह क्षेत्र महाकाल का निवास, उनकी लीला का केंद्र रहेगा। कुछ साधकों को अनुभव है कि सविता देवता ही महाकाल हैं या महाकाल ही सविता देव। दिवस के अवसान और नए दिवस के उदय में उन्हीं की उपस्थिति कारण बनती है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गायत्री तीर्थ की प्राण प्रतिष्ठा किसी एक दिन या मुहूर्त में नहीं हुई। ज्यादा विस्तार में जाए बिना गंगा, यमुना और सरयू के तट पर मचान बनाकर तप करने वाले देवरहा बाबा का एक प्रसंग शायद पर्याप्त हो। देवरहा बाबा के बारे में प्रसिद्ध है कि उनकी आयु सैकड़ों वर्ष थी। कहते हैं कि प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने उन्हें १९३०-३२ में उसी वय और अवस्था का देखा था, जिस अवस्था में उनके पितामह ने देखा था। उनकी आयु को लेकर कई तरह की मान्यताएं हैं, लेकिन यह तथ्य है कि गुरुदेव के शरीर छोड़ने के ठीक एक पखवाड़े बाद उन्होंने भी इहलीला का संवरण कर लिया। वे गुरुदेव को अपना अभिन्न अंग मानते थे और कहते भी थे कि, पिछले किसी जन्म में दोनों ने एक ही क्षेत्र में तप किया था। १९८३ में प्रयाग अर्धकुंभ के समय उन्होंने पुरी के शंकराचार्य के पास संदेश भिजवाया था कि कभी गायत्री तीर्थ भी हो कर आओ। आदि शंकर होते तो वहीं अपना प्रमुख मठ बनाते।

यह संदेश पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ द्वारा गायत्री परिवार की आलोचना के संदर्भ में भिजवाया था। याद रहे चारों प्रमुख शंकराचार्य गुरुदेव की चिन्तन धारा का विरोध करते रहे हैं। १९८१-८२ में हरिद्वार में गायत्री तीर्थ की स्थापना हो गई तो उन्होंने विरोध को नए तेवर दिए। पुरी के शंकराचार्य तो यहां तक कहने लगे थे कि भगवती गंगा की तरह गायत्री भी इस लोक से चली गई है। भला यह कोई बात हुई कि उसके नाम से भी तीर्थ बनाया जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शंकराचार्य ने देवरहा बाबा को उलाहना भिजवाया कि वे शास्त्र मर्यादा का विचार किए बिना ही आचार्य जी (गुरुदेव) की प्रशंसा करते रहते हैं। देवरहा बाबा ने तब अपने एक सहयोगी से पत्र लिखवाया था कि गायत्री तीर्थ के रूप में गुरुदेव ने परीक्षित जैसा ही काम किया है। वहां जा कर किसी भी व्यक्ति के मन में झूठ, छल, कपट भर और लोभ लालच से लड़ने की शक्ति आ जाती है। वह गुरुदेव के संसर्ग में इन बुराइयों को जीत भी सकता है। तीर्थ की यह क्षमता लगातार काम करेगी। गायत्री तीर्थ के पुण्य प्रताप की अवहेलना करने के बजाय शंकराचार्य महाराज को उसका आदर करना चाहिए।

१९८३ के प्रयाग अर्धकुंभ में एक धर्म संसद ने तो रुचि नहीं ली लेकिन नये संन्यासियों ने उत्साह से हिस्सा लिया। चीवर और उत्तरीय पहने इन संन्यासियों ने नये युग के मठों और आश्रमों के संतों से दीक्षा ली थी। संन्यासी प्रायः शिवानंद मठ, कैलास आश्रम, चिन्मय मिशन, रामकृष्ण आश्रम से थे। वे अद्वैत मिशन और कांची कामकोटि मठ से जुड़े थे। इन मठों में रामकृष्ण आश्रम और कांची मठ की बड़ी प्रतिष्ठा रही है। धर्म संसद की अध्यक्षता कांची मठ से आए ब्रह्मचारी स्वामी अद्वैतानंद सरस्वती ने की। निर्मल योगी, अनामय स्वामी और स्वामी निरंजनानंद ने पहल की कि भारतीय धर्म परंपरा को उदार बनाया जाए। यों गायत्री मंत्र की उपासना का अधिकार जाति वर्ग और लिंगभेद का विचार किए बिना हर किसी को देने का प्रतिपादन आर्यसमाज करीब सौ साल पहले ही कर चुका था। उस प्रवर्तन का पुराणपंथी धर्माचार्यों ने घोर विरोध किया और आर्यसमाज को भारतीय धर्म परंपरा की मूलधारा से कुछ अलग ही रखा।

प्रयाग में एकत्रित हुए इन संन्यासियों ने आचार्यश्री के कार्य में सहयोग देने या भागीदारी करने का संकल्प किया। उस समय तक गायत्री तीर्थ आकार ले चुका था। तीर्थ सेवन के उद्देश्य से लोग आने लगे थे। संस्कार, कथा, स्वाध्याय, अनुष्ठान और साधना, उपासना का क्रम चलने लगा था। नये युग के आह्वान और अभिवादन में जुटे सृजनकर्मियों की अच्छी संख्या अपने पूरे परिवार के साथ आकर यहां बस गई थी। जीवन साधना, कल्प साधना, रामायण, भागवत आदि शिविरों की शृंखला आरंभ हुई और अनवरत चलने लगी। जीवन साधना सत्र नौ दिन के होते। युवा पीढ़ी इन साधना सत्रों की ओर ज्यादा आकर्षित हुई। महीने में तीन दिन पहली, ग्यारहवीं और इक्कीसवीं तारीख को शुरु होने वाले इन सत्रों में गायत्री पुरश्चरण का लघु अनुष्ठान कराया जाता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
प्रतिदिन गुरुदेव शिविरार्थियों को संबोधित करते। उद्‌बोधन में जीवन की सामान्य समस्याओं का समाधान सुझाया जाता। इन समस्याओं का सामना प्रायः हर किसी को करना पड़ता है। समाधान के लिए सुझाए या किए जाने वाले उपाय आमतौर पर अनगढ़ और तात्कालिक होते हैं जिनके परिणाम शुभ तो नहीं ही होते हैं। गुरुदेव के उद्‌बोधनों में मिलने वाला मार्गदर्शन नई पीढ़ी को इतना भाया कि प्रवचनों के समय वे नोट बुक लेकर बैठते और महत्वपूर्ण बिन्दुओं को लिखते जाते। प्रवचनों के अलावा साधकों को गुरुदेव से संपर्क परामर्श का अवसर भी मिलता। वे व्यक्तिगत रूप से, अलग एकांत में गुरुदेव से मिलते और उनके सामने अपने मन की वे गुत्थियां खोलते, जिन्हें किसी के सामने कह नहीं पाते। इन सत्रों में साधकों को अक्सर अनुभव हुआ कि एक ऐसा व्यक्तित्व उन्हें मार्गदर्शक सत्ता के रूप में मिल रहा है जो गुरु कम मित्र, साथी और सखा-सहचर ज्यादा है। पग पग पर उसकी सहायता मिल रही है।

कल्प साधना सत्र तपश्चर्या प्रधान थे। प्रायः एक माह के इन सत्रों में साधना, शिक्षण और स्वाध्याय के अलावा आहार, समय और दिनचर्या में संयम, अनुशासन के अभ्यास भी करना होते थे। संयम अनुशासन का स्वरूप साधकों की निजी स्थिति और आवश्यकता के अनुसार तय किया जाता। इन शिविरों में अनुभवी, प्रौढ़ और जीवन तथा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय परिजन साधक आ रहे थे। जाहिर है इन साधकों के भी अपने अलग अलग अनुभव थे अहोभाव और धन्यता के बोध से भरे इन अनुभवों के विवरण कई ग्रंथों में समेटे जाने लायक हैं। साधकों का मानना है कि इन्हें बांटना नहीं चाहिए। बांटना चाहें तो भी नहीं बांट सकेंगे। 'गूंगे केरि सरकरा खाई के मुसकाय' कल्प साधना सत्र में भाग ले चुके परिजन भगवती चरण सिंह का कहना था। उनसे इतना भर कहा था कि कल्प साधना का कोई अनुभव या प्रभाव बता सकें तो उसे अन्य परिजनों तक पहुंचाएं। इस आशय का कबीर का पद दोहराते हुए उन्होंने कहा कि वह अनुभव तो गूंगे के गुड़ की तरह है जिसे चखा तो जा सकता है पर कह कर व्यक्त नहीं किया जा सकता। चेहरे पर छाया रहने वाला उल्लास ही उसकी झलक देगा।

विभिन्न शिविरों में साधकों की संख्या बढ़ने लगी। साधना, अनुष्ठान और परिष्कार सत्रों के अलावा लोकसेवा के लिए आने वाले कार्यकर्ताओं की संख्या भी बढ़ने लगी। गायत्री तीर्थ आकार लेने लगा। संस्कार, कथा, स्वाध्याय,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुष्ठान और साधना उपासना का क्रम चलने लगा। नये युग के आह्वान और अभिवादन में जुटे सृजनकर्मियों की अच्छी संख्या अपने परिवार के साथ यहां आकर बस गई थी। उन्हें तैयार करने और तराशने के लिए गुरुदेव प्रतिदिन अलग अलग वर्गों में उन्हें बुलाते और कार्यकर्ताओं को सौंपे गए दायित्वों की बारीकियां समझाते। परामर्श प्रशिक्षण के इस क्रम के साथ गोष्ठियों का भी सिलसिला चल पड़ा था। गुरुदेव इन गोष्ठियों में शांतिकुंज के कार्यकर्ताओं को, उनके परिवारों को एक साथ बुलाते। उन्हें लोकसेवी कार्यकर्ताओं की धर्म मर्यादा और व्यवहार सूत्रों के बारे में बताते। गुरुदेव इन गोष्ठियों के लिए जिस तरह समय देते थे, उससे लगता था कि गायत्री नगर के कार्यकर्ताओं की टीम को संस्कारित करने का काम उनकी पहली प्राथमिकताओं में शामिल हो रहा है।

◈◈◈◈◈◈◈

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चौबीस

सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा

१९८१ में नवंबर महीने की आठवीं तारीख। उस दिन देवोत्थान एकादशी थी। भारतीय धर्मानुयायियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण तिथि। पौराणिक गाथाओं के अनुसार इस दिन भगवान विष्णु चार महीने की निद्रा से जागते हैं। निद्रा आषाढ़ महीने की शुक्ल एकादशी से आरंभ होती है और चार महीने की इस अवधि में प्रायः सभी शुभकार्य जैसे विवाह, दूकान, व्यवसाय, बारोबार आदि का आरंभ और नए मंदिरों, मकानों का निर्माण बंद रहता है। आषाढ़ शुक्ल एकादशी को भगवान के सोने और कार्तिक शुक्ल एकादशी को जागने के पौराणिक आख्यान का आशय संभवतः वर्षाकाल से है। बरसात के इन दिनों में विशिष्ट कार्य संपन्न करने में तरह-तरह की बाधाएं आती रही होंगी, इसलिए उन्हें वर्जित रखा गया। जिस घटना का जिक्र यहां किया जा रहा है वह तिथि संदर्भ के कारण ही है। इस दिन संध्या समय गुरुदेव के पास चार पांच कार्यकर्ता बैठे थे। इनमें दो बाहर क्षेत्र से आए थे और बाकी शांतिकुंज में ही निवास कर रहे जीवनदानी स्तर के स्थाई कार्यकर्ता। चर्चा आगामी योजनाओं को लेकर हो रही थी। यों ही सहज भाव से। बीच बीच में किसी कार्यकर्ता के परिवार या उसकी अपनी स्थिति का जिक्र भी आ जाता। किसी संदर्भ में गुरुदेव ने कहा, 'अगले दिनों हमें शांतिकुंज के ऋषिकेश रोड वाले गेट की तरफ दो छतरियां भी बनवानी हैं।'

मौजूद कार्यकर्ता गुरुदेव की इस बात का आशय समझने के लिए सामान्य से ज्यादा सजग हो गए। गुरुदेव ने कहा 'जब हम और हमारे बाद माताजी शरीर छोड़ देंगी तो हम लोगों के अवशेष इन छतरियों में स्थापित किए जाएंगे। हम लोग इस शांतिकुंज में ही निवास करेंगे। छतरियां हमारे स्थूल स्वरूप का प्रतिनिधित्व करेंगी।'

गुरुदेव ने पिछली पंक्ति पूरी करने के बाद बिना रुके कहा था। इतना सुनना था कि वहां मौजूद कार्यकर्ता सन्न रह गए। उन्हें लगा कि गुरुदेव शरीर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
छोड़ने की योजना बना रहे हैं। इस कल्पना या आभास के साथ तरह तरह के बिंब उन कार्यकर्ताओं के मन मस्तिष्क में उभरने लगे। गुरुदेव के बाद कैसा लगेगा फिर उनसे प्रत्यक्ष संवाद नहीं हो सकेगा। कोई भी समस्या या प्रश्न उपस्थित होने पर अभी जिस तरह दौड़े चलें आते हैं, तब यह संभव नहीं हो सकेगा। उनकी समाधि के पास बैठकर ही अपना जी हल्का कर लेना होगा। इतने भर से संतोष कैसे होगा? आदि आदि प्रश्न मन में एक साथ फन उठाने लगे। उनके दंश से चित्त इतना व्यथित हुआ कि भीतर ही भीतर रुलाई फूटने लगी। एक कार्यकर्ता तो बिलख ही उठे और दूसरे की भी अश्रुधारा बहने लगी।

कार्यकर्ताओं को उदास और रुआंसा या विलाप करता देख गुरुदेव ने कहा, 'अरे तुम लोग तो बिसूरने लगे। मैं तो शरीर छूटने के बाद भी यही रहने की बात कर रहा हूँ और तुम लोग ऐसे दुखी हो रहे हो, जैसे मैं अभी ही अपनी काया-माया समेट कर जा रहा हूं।'

इतना कह कर उन्होंने बातचीत की दिशा मोड़ी और हलकी फुलकी विनोदपूर्ण टिप्पढ़ियां कीं। उन्हें सुनकर कार्यकर्ताओं के दुखी और उदास दिखाई दे रहे चेहरे खिलने लगे। बातचीत का माहौल सहज हुआ और गुरुदेव ने कहा 'अभी कम से कम नौ वर्ष मैं इधर ही हूं। यहीं तुम सब लोगों के बीच। जीते जागते इसी कलेवर में।'

वहां मौजूद कार्यकर्ताओं में एक को करीब बीस वर्ष पहले की घटना याद आई। उस समय माताजी को तीव्र हृदयाघात हुआ था। डॉक्टरों ने उनके जीवन को लेकर उम्मीद ही छोड़ दी थी। उस समय गुरुदेव ने कहा था कि माताजी हमारे बाद यह संसार छोड़ेंगी। हमारे जाने के लगभग पांच वर्ष तक वे इसी धरती पर रहेंगी और परिजनों को स्नेह दुलार बांटेंगी। यह स्मरण आते ही उक्त कार्यकर्ता के मन में निश्चिंतता का भाव आया।

आश्वासन

गुरुदेव ने कहा, 'तुम सभी लोग जानते हो कि शरीर एक न एक दिन तो छूटना ही है। जीवन चेतना का अस्तित्व उसके बाद भी बना रहता है। अपने इष्ट अभीष्ट आराध्य और प्रेमास्पद व्यक्तित्व तो शरीर छूटने के बाद भी मन प्राण में बसते हैं। उनका क्षय कहा होगा। बल्कि वे ओर निकट आ जाते हैं। हमारे आपके संबंधों का आधार सामान्य तो नहीं है। जन्म जन्मांतरों का संबंध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है। इसलिए स्नेह और आलोक की अनुभूति अगले दिनों प्रगाढ़ ही होगी। शरीर छूटने के बाद तो और भी प्रगाढ़ बनेगी।'

कह कर गुरुदेव रुके। फिर कहने लगे, 'इन छतरियों के बारे में विशेष बात यह है कि ये हमारे जीते जी हमारे सामने ही निर्मित हो रही हैं। दुनिया में शायद ही किसी का स्मारक उसके जीते जी बना हो। लेकिन ये छतरियां हमारा स्मारक थोड़े ही है। हमारा निवास है। जन्म के बाद मरण की स्वाभाविक प्रक्रिया पूरी हो जाने के बाद हमारे पार्थिव स्वरूप का निवास।'

चर्चा यहीं पूरी हो गई। इसके बाद गुरुदेव के बताए स्थान पर दो छतरियों का निर्माण शुरु हुआ। उनके निर्माण के लिए विभिन्न तीर्थों से जल-रज और आवश्यक शिलाएं मंगाई गई थीं, जिन्हें छतरी के गर्भ में स्थापित किया गया। निर्माण के दौरान लगभग प्रतिदिन गुरुदेव उस स्थान पर आते थे और निरीक्षण करते। कभी कभार वे पत्थरों और निर्माण सामग्री को हाथ से छूकर देखते भी। उस समय जो परिजन वहाँ मौजूद रहते उन्हें लगता कि गुरुदेव अपने दिव्य स्पर्श से उस सामग्री में प्राण चेतना का संचार कर रहे हैं। निर्माण कार्य में लगे साधकों और शिल्पियों ने इस दौरान जप-तप और अनुष्ठान भी किया। १९८२ की वसंत पंचमी तक वह पूरा हो गया और उसी समय गुरुदेव ने उनका नामकरण किया 'प्रखर प्रज्ञा' एवं 'सजल श्रद्धा'। स्थापना के समय माताजी भी उपस्थित थीं। ऐसा संदेश कतई नहीं जा रहा था कि गुरुदेव या माताजी अपनी लीला समेटने की तैयारी कर रहे हैं। पर कुछ कार्यकर्ताओं को ये स्थापनाएं न जाने किन आशंकाओं और असुरक्षा भावना के कारण असहज बन रही थी। गुरुदेव ने शायद उनके मन को पढ़कर ही कहा कि अब यहाँ हमारी उपस्थिति को हमेशा के लिए सुनिश्चित मान लिया जाए। जो हमारे अंतस से जुड़े हुए हैं, उन्हें इस बात की सचाई दिनों दिन प्रगाढ़ महसूस होगी और वे इस सच के दूसरे आयामों से भी साक्षात करते रहेंगे।

जिस जगह स्थापना की गई वहां पास ही पिछले कुछ वर्षों से गुरुदेव विशेष पर्व प्रसंगों पर ध्वाजारोहण किया करते थे। स्वतंत्रता दिवस (१५ अगस्त) गणतंत्र दिवस (२६ जनवरी) के अलावा वसंत पंचमी, गायत्री जयंती के दिनों भी। १९८२ की उस वसंत पंचमी पर भी गुरुदेव ने वहीं ध्वाजारोहण किया। उस दिन आयोजन स्थल पर अद्‍भुत सन्नाटा था। सन्नाटा कहने की बजाय शान्ति कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। मौजूद परिजनों में कई को लगा कि ध्यान या समाधि जैसी अवस्था है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुबह आठ बजे का समय रहा होगा। सूर्योदय के समय पूर्व दिशा में छाई लालिमा धीरे-धीरे समाधि स्थल को अरुणिम आभा से आवृत किए जा रही थी और धीरे धीरे वासंती धूप गायत्री नगर में खेलने लगी थी। 'प्रखर प्रज्ञा' और 'सजल श्रद्धा' का स्थापना संस्कार शुरु हुआ तो धूप यकायक सिमटने लगी और आकाश में इधर उधर से दौड़ कर आ रहे बादलों के टुकड़े गायत्री नगर पर छाने लगे। गुरुदेव और माताजी के हाथों जब समाधियों के संस्कार शुरु हुए तो बादलों ने बूंदाबांदी की एक लहर छोड़ दी। उस स्थान पर-गायत्री नगर में इन्द्र देव ने जैसे छिड़काव किया। पवित्रीकरण और मार्जन की तरह हुई उस बूंदाबांदी के बाद आसमान कुछ ही मिनटों में साफ हो गया। वसंत की शीतल गुनगुनी धूप फिर खिल उठी।

समारोह संपन्न हो गया। प्रणाम का दौर शुरु हुआ। उस दिन आश्रम में हजारों लोग उपस्थित थे। गुरुदेव माताजी शान्तिकुंज के मुख्य भवन में-अखंड दीप के पास परिजनों से मिल रहे थे। इधर सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा की स्थापना के पास भी परिजन प्रणाम करते हुए आ रहे थे। अखंड दीप के सामने प्रणाम का क्रम यहीं से शुरु हो रहा लगता था।

उसी वसंत पंचमी की शाम, प्रणाम समाप्त होने के बाद कुछ परिजन 'सजल श्रद्धा'-'प्रखर प्रज्ञा' के पास बैठे ध्यान कर रहे थे। दिन में और इससे पहले भी विभिन्न अवसरों पर गुरुदेव के व्यक्त किए उद्‌गार याद कर रहे थे, ''गंगा की गोद और हिमालय की छाया में बना शान्तिकुंज इस युग का ऊर्जा अनुदान केन्द्र है। हिमालय की दिव्य ऋषि सत्ताओं का अवतरण केन्द्र और युगान्तरीय चेतना का मुख्यालय है। महाकाल का घोसला है। राह चलते लोग भी इस स्थान पर-'सजल श्रद्धा'-'प्रखर प्रज्ञा' के पास आकर जो भावनाएं और अपेक्षाएं व्यक्त करेंगे, उन्हें सुख संतोष मिलेगा। ऐसे किसी भी व्यक्ति को निराश नहीं होना पड़ेगा।

पूछें या न पूछें ?

'सजल श्रद्धा'-'प्रखर प्रज्ञा' की स्थापना के बाद कुछ बुद्धिजीवी और तथ्यों तथा संगतियों के सतही धरातल पर ज्यादा निर्भर रहने वाले परिजनों के मन में तरह-तरह के सवाल उत्पन्न हो रहे थे। बाहर रहने वाले कतिपय परिजनों ने तो ये सवाल पत्रों में लिखकर पूछे भी पर शांतिकुंज में ही निवास कर रहे कुछ कार्यकर्ता संकोच महसूस कर रहे थे। गुरुदेव से पूछें तो कैसे पूछें ? उनके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
प्रति अविश्वास और संदेह का दोष लगेगा, गुरुद्रोह होगा ? नहीं पूछें तो मन खिन्न रहेगा, अशांति बढ़ेगी। आस्थाएं डगमगायेगी।

इस असमंजस ने एक पुराने कार्यकर्ता को बुरी तरह व्यथित कर दिया। इस बुरी तरह कि वे विक्षिप्त से रहने लगे। यह कार्यकर्ता पांच साल पहले भी इसी तरह की मन:स्थिति से गुजरे थे और इस समय कारण अलग थे। पारिवारिक कारणों में इस समय उन्हें तोड़ दिया था। १९७५-७६ में वे मनोविक्षोभ से जूझते हुए गुरुदेव के पास कुछ सप्ताह तक रहे भी थे। तब वे क्षेत्रों में चल रहे गायत्री महायज्ञों और युग निर्माण सम्मेलनों में जाया करते थे। १९८२ के दिनों में वे 'सजल श्रद्धा'-'प्रखर प्रज्ञा' की स्थापना के समय विचलित दिखाई दिए और लगा कि पराकाष्ठा होने जा रही है तो गुरुदेव ने एक दिन पूछ ही लिया, 'क्या बात है मोहन। पिछले कुछ दिनों से कुछ ज्यादा ही परेशान दिखाई दे रहे हो, मुझे बताओ क्या बात है ?'

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गुरुदेव ने उन कार्यकर्ता को व्यवहार के लिए एक प्राचीन ऋषि का नाम दिया था। बाकी दुनिया के लिए यही नाम था लेकिन गुरुदेव उन्हें मोहन के वास्तविक और पुराने नाम से पुकारते थे। १९९० में गुरुदेव के शरीर छोड़ने के बाद उन्होंने 'मोहन' नाम लिखना ही छोड़ दिया। उनका कहना था कि इस नाम से पुकारने वाला ही चला गया तो इसे लिखने का क्या औचित्य। इसके बाद वे ऋषिसत्ता के नाम से ही पहचाने, संबोधित किए जाते। गुरुदेव ने अपने इस शिष्य की व्यथा के बारे में पढ़ा और पूछा तो वे बोले, 'मैं क्या बताऊं गुरुदेव आप अच्छी तरह जानते हैं।'

'तू इस परेशानी से उबरना चाहता है' गुरुदेव ने कहा। इस पर मोहन का जवाब था, 'आप जैसा ठीक समझें'।

इसके बाद गुरुदेव ने कहा कि मथुरा छोड़ने से महीने पहले मैंने कहा था कि मेरे मरने के बाद यह शरीर किसी प्रयोगशाला को सौंप दिया जाए जीवविज्ञान पढ़ने वाले विद्यार्थी इसे चीरे-फाड़ें और शरीर के सम्बन्ध में अपना ज्ञान बढ़ायें। इससे पहले इस शरीर के सभी स्वस्थ अंग निकाल लिए जायें और उन्हें जरूरत मंदों के शरीर में प्रत्यारोपित कर दिया जाए। शरीर के वे हिस्से, जो किसी भी काम में न आए उन्हें जंगल में फेंक दिया जाए ताकि चील कौवे उनसे अपना उदर भरण कर लें। कहकर गुरुदेव रुके। उन कार्यकर्ता के चेहरे पर संतोष का भाव था कि उनके मर्म को समझ लिया गया है। गुरुदेव ने पूछा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
'अब छतरियों की स्थापना से तुम्हें लगा है कि पहले कही गई और अखंड ज्योति में छपी उन घोषणाओं का क्या होगा? यही न!'

'हां गुरुदेव' उन कार्यकर्ता ने कहा, 'मुझे डर लगता है कि लोग पिछली घोषणाओं से तुलना करेंगे तो मेरे गुरु के बारे में अपवाद फैलेगा।'

सुनकर गुरुदेव के चेहरे पर स्मित भाव आया। उन्होंने पूछा, 'बेटा तुझे तो मेरी बातों पर अविश्वास नहीं है न।'

'नहीं गुरुदेव', शिष्य ने कहा। इस पर गुरुदेव ने कहा, 'तो सुन। विदाई से पहले से पहले जो घोषणाएं की थी, वे अक्षरशः सही हुई हैं और जो बाकी बची है, वे भी सही होंगी। यथा समय उन घटनाक्रमों का साक्षात भी हो जाएगा। यह शरीर वही शरीर नहीं है जो मथुरा छोड़कर हरिद्वार आया था। और यहां से अपने गुरु के पास चला गया था........।'

कहते कहते गुरुदेव रुके फिर बोले, 'अभी इतना काफी है। तुमसे कोई दुनियादार साथी पूछे तो इतना ही कहना कि हमारे गुरुदेव ने अपने आपको हजारों लाखों कार्यकर्ताओं में बांट दिया है। उनकी लौ से उनके तमाम परिजनों की लौ प्रदीप्त हुई और उनके एक शरीर ने नहीं सैकड़ों शरीरों ने अपने अंगों का दान किया है। बहुत से निष्प्राण आदिवासी शरीर और शहरी लोगों के कायिक अवशेष चील कौओं के लिए जंगलों में छोड़ दिए गए हैं। तुम चाहो तो ऐसे लोगों के नाम, निवास और परिचय आदि के ब्यौरे भी दे सकते हो। लेकिन ध्यान रखना संदेह करना जिनकी फितरत में शामिल हो उन्हें संतुष्ट नहीं किया जा सकेगा।'

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गंगा की गोद में

जुलाई १९६९ का वह प्रसंग फिर याद करें कि उन दिनों शांतिकुंज बन रहा था और गंगा यहां से दो ढाई किलोमीटर दूर तक बहती थी जिसे आज कदली वन कहते हैं, गंगा स्नान के लिए वहां जाना पड़ता था। शांतिकुंज का निर्माण कार्य देख रहे परिजनों ने शिकायत की थी गुरुदेव हमें गंगा स्नान के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है। गुरुदेव ने भरोसा दिया था कि जल्दी ही यह समस्या हल हो जाएगी। और इसके कुछ ही दिन बाद गंगा की धारा शान्तिकुंज के पास तक मुश्किल से पांच सात सौ मीटर दूर तक आ गई।

'सजल श्रद्धा'-'प्रखर प्रज्ञा' जहां स्थापित है उसके बारे में गुरुदेव ने बताया था कि इसके नीचे बहुत गहरे में करीब नौ सौ मीटर गहराई में भागीरथी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की एक धारा आज भी बहती है। भूगर्भ विज्ञानी भी इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं। विज्ञानियों के अनुसार इस धारा के भागीरथी या किसी और नाम से संबोधित किए जाने का तो कोई प्रमाण नहीं है लेकिन धारा की आयु कम से कम पांच हजार वर्ष पुरानी जरूर है।

गुरुदेव का कहना था भगवती गंगा राजा भगीरथ के पीछे पीछे जिस मार्ग से चली वह सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा के नीचे से ही गुजरता है। गुरुदेव माताजी की समाधि के पास श्रद्धा सुमन अर्पित करने और ध्यान लगाने वालों में कई को इस तथ्य से जुड़े अनुभव आज भी होते हैं। साधक इन अनुभवों को कभी कभार अखंड ज्योति के लिए भी भेजते हैं। समाधि के पास अथवा अखण्ड दीपक के समीप गुरुदेव माताजी और महाकाल की स्थापनाओं के निकट भी इन अनुभवों की लिखित पातियां छोड़ी, रखी मिलती हैं।

'सजल श्रद्धा'-'प्रखर प्रज्ञा' की छतरियां उस अवस्था में सभी कार्यकर्ताओं के समर्पण, निवेदन का केन्द्र बनती रही, जब गुरुदेव और माताजी से संपर्क नहीं हो पाता था। गुरुदेव के महाप्रयाण के बाद इनका महत्व विशेष रूप से बढ़ने लगा। १९९० में गायत्री जयंती पर गुरुदेव के महाप्रयाण के बाद उनके पार्थिव अवशेष 'प्रखर प्रज्ञा' में स्वयं माताजी ने स्थापित किए। उस स्थापना के दिन से ही परिजन अपनी व्यथा, भावना, संवेदना और श्रद्धा गुरुदेव के सामने यहां व्यक्त करने लगे।

(प्रसंग चूंकि सजल श्रद्धा और प्रखर प्रज्ञा का चल रहा है इसलिए कथाक्रम को सिरा आगे से पकड़ने के लिए पाठक कृपया क्षमा करेंगे।) गुरुदेव के महाप्रयाण के बाद अश्वमेध यज्ञों की शृंखला आरंभ हुई। यज्ञों के लिए जाते समय हर बार माताजी 'प्रखर प्रज्ञा' में अपने आराध्य के चरणों में प्रणाम करतीं और रवाना हो जातीं। बड़ौदा अश्वमेध यज्ञ के लिए रवाना होने से पहले एक कार्यकर्ता गोष्ठी में वे सहज ही बोल उठी कि मेरे भगवान प्रखर प्रज्ञा में भस्मावशेषों के रूप में स्थापित हैं। मुझे भी तुम उनके पास ही सजल श्रद्धा में स्थापित कर देना।

नया रूप कुछ दिनों बाद

१९९२ में उत्तरकाशी में भूकंप आने पर प्रखर प्रज्ञा के ढांचे में कुछ 'क्रैक्स' आ गए थे। शांतिकुंज में रहने और बाहर के परिजनों की राय बनी कि यह क्षेत्र भूकंप प्रधान बेल्ट में आता है। अक्सर यहाँ भूकम्प आते रहते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
इसलिए समाधियों को मजबूत आधार देकर बाहर से नया रूप दे देना चाहिए। परिजनों ने उसी समय माताजी से निवेदन किया था।

माताजी ने उस समय तो मना कर दिया। करीब एक डेढ़ साल बाद बड़ौदा अश्वमेध यज्ञ में जाने से पहले उन्होंने शांतिकुंज में हुई कार्यकर्ता गोष्ठी में कहा कि समाधि का आवरण अब बदला जा सकता है लेकिन कुछ समय बाद। तब मैं भी अपने आराध्य से एकाकार हो जाउंगी। इस निर्देश में माताजी प्रकारांतर से अपने महाप्रयाण की सूचना भी दे रहीं थीं। १९९२ के बाद वे समाधि के जीर्णोद्धार की स्वीकृति तो देती थीं लेकिन कुछ समय रुकने को भी कहती थीं। १९९३ में उन्होंने इस बारे में स्पष्ट निर्देश दिए थे। चित्रकूट अश्वमेध के लिए जाते समय वे उसी स्थान पर प्रणाम करने के बाद वे भाव विह्वल हो उठीं। इस तरह की विह्वलता उनमें कम ही दिखाई दी। कुछ देर वे खड़ी रहीं और पास खड़े वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की तरफ मुड़ीं और बोली, 'अब समय आ गया है कि तुम लोग कुछ दिनों बाद इसे नये सिरे से बनवा दो। स्मृति चिह्न वाले स्थान यथावत रहें। छतरियों का ढांचा जर्जर हो गया है, उसे बदल दें।'

माताजी ने उस जगह की ओर देखा जहां गुरुदेव के शरीर को अग्नि दी गई थी। उधर देखते हुए कहा यहां भी पक्का निर्माण करवाना है लेकिन अभी नहीं। इसी स्थान पर मेरे शरीर को भी यहीं पंच महाभूतों के हवाले कर देना है। इसके बाद ही यहां पक्का चबूतरा बनवा देना।'

माताजी ने उसी अवसर पर सजल श्रद्धा और प्रखर प्रज्ञा की रूपरेखा खड़े खड़े ही समझा दी। जिस समय वे रूपरेखा बता रही थीं, उस समय उपस्थित परिजन समय और स्थिति के बोध से शून्य हो गए थे। उन्हें लग रहा था कि माताजी के प्रत्यक्ष और लौकिक सान्निध्य से वंचित होने का समय आ गया है। माताजी उसी संबंध में संकेत कर रही हैं या उसी स्थिति को पढ़ रही हैं। इस नियति को सुनने में भी अपने आपको असहाय और विचलित अनुभव कर रहे परिजन स्तब्ध थे। स्तब्धता इस समय टूटी जब माताजी ने कहा कि ठीक है। इसी तरह करना। इस योजना को अंजाम देते समय थोड़ा बहुत आगा पीछा करना पड़े तो वह भी देख लेना।

कहते हुए माताजी ने गुरुदेव की समाधि को एक बार फिर प्रणाम किया और आगे बढ़ गईं। परिजन भी अपने भाव में लौटे और माताजी चित्रकूट के लिए रवाना हो गईं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यात्राओं को विराम

चित्रकूट का महायज्ञ संपन्न होने के बाद माताजी ने अपनी यात्राओं को विराम दिया और अपने आराध्य के दिए निर्देशों के अनुसार सूक्ष्मीकरण की स्थिति में चली गईं। गुरुदेव ने वर्षों पहले लीला संवरण का जो समय बताया था, वह पूरा होने जा रहा था। सितंबर १९९४ में महाप्रयाण के बाद उनके पार्थिव अवशेष सजल श्रद्धा में स्थापित कर दिए गए। इसके बाद समाधियों के नए और समग्र स्वरूप का आकार लेना शुरु हुआ। गुरुदेव और माताजी का जहां अंतिम संस्कार किया गया था, उस चबूतरे को भव्य रूप दिया गया। इसके निर्माण के परिजनों को कारसेवा का अवसर भी दिया गया। नींव में उस चबूतरे की मिट्टी को कूट कूट कर भरा गया जिस पर गुरुदेव और माताजी का अंतिम संस्कार किया गया था।

नींव पूरी होने के बाद करीब एक महीने में ग्रेनाइट का स्मारक तैयार हुआ। स्मारक के दोनों ओर गुरुदेव और माताजी के अंतिम संदेश उकारे गए। उस संदेश के अलावा गुरुदेव की लिखावट में ही गायत्री मंत्र भी अंकित किया गया। गायत्री मंत्र जो गुरुदेव के स्वरूप में समाया हुआ था। योगी देवरहा बाबा के शब्दों में वह गायत्री मंत्र जिसे मानव रूप में देखें तो आचार्य श्रीराम शर्मा या वह गुरुदेव जिन्हें लिपि के रूप में देखें तो गायत्री मंत्र।

समाधियों को आकर्षक और स्थाई रूप दिया गया। ऐसा स्वरूप कि समाधियां वर्षों तक सुरक्षित रहें। इतना सुरक्षित और मजबूत कि महाकाल का यह घोसला अपनी स्थिति अक्षुण्ण बनाये रह सके। चारों तरफ के स्थान को इतना विस्तार दे दिया गया कि पांच सौ साधक वहां बैठकर ध्यान कर सकें। चारों ओर हरियाली, पुष्पपादप और सुगंधित यज्ञीय वातावरण साधकों को युगांतर चेचतना से जुड़ने में सहायक ही बनते हैं। गुरुदेव और माताजी कहते, आश्वासन देते रहे हैं कि उनका निवास यों तो समूचे शांतिकुंज में है। साधकों की अनुभूति है कि उनके इष्ट आराध्य की घनीभूत प्राणऊर्जा उनके स्मृति अवशेषों के ईर्दगिर्द और भी स्पष्ट रूप में अनुभव होती है।

◈◈◈◈◈◈◈

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पच्चीस

सूक्ष्म में प्रवेश

चार वेद, एक सौ आठ उपनिषद्, छह दर्शन, चौबीस गीता, बीस स्मृतियां, अठारह पुराण, गायत्री महाविज्ञान, तीन हजार से ज्यादा पुस्तकें, चार आश्रम, चौबीस-दो सौ चालीस और फिर चौबीस सौ शक्तिपीठ, चार हजार से ज्यादा शाखाएं, चौबीस लाख से ज्यादा सहयोगी.......हिसाब लगाते लगाते उस ऋषि आत्मा की कलम थकने लगी थी। सूची थी कि पूरी ही नहीं हो रही थी। दृश्य गुरुदेव के कक्ष का था जहां वे एक साधारण कुर्ता या सिली हुई बनियान और धोती पहन कर कुछ लिखते पढ़ते रहते। नहीं लिखते पढ़ते तो आए आगंतुक अतिथियों और परिजनों से कुशलक्षेम पूछने के अलावा दुनिया जहान के विषयों पर चर्चा करते रहते। उन गुरुदेव के सामने श्वेत केश और श्मश्रु दाढ़ी धारण किए कमर से ऊपर खुले बदन उन महात्मा को फिर याद आया। पूछने लगे १९५२ से अब तक आपने यज्ञ कितने कराए होंगे पूज्यवर। सवाल गुरुदेव से किया गया था और उनका उत्तर पता नहीं। हमने कुछ किया ही नहीं तो हिसाब क्यों रखें। फिर उन्हीं ऋषि आत्मा ने कहा दस हजार, बीस हजार, लाख, सवा लाख। एक -एक संख्या बोलते हुए वे गुरुदेव से पूछते जा रहे थे। गुरुदेव ने कहा कि हमसे क्यों पूछते हो। हम तो बांस की एक खाली और खोखली पोंगली की तरह हैं। हमारे गुरुदेव ने उसे जिस तरह बजाना चाहा बजा दिया। फिर उन्हीं ऋषि आत्मा ने पूछा और तप, अनुष्ठान, महापुश्चरण आदि का भी कोई हिसाब नहीं होगा ?

नहीं प्रभु नहीं। नहीं 'महाराज'! लेकिन आप यह सब क्यों पूछे जा रहे हैं ? इस बार गुरुदेव की बारी थी। उत्तर में उन ऋषि ने कहा, 'जब रामावतार का उद्देश्य पूरा हो गया तो रावण का आसुरी आतंक नष्ट हुआ और चारों दिशाओं में सुख शांति छा गई तो जानते हैं न कि धर्मदेव उनके पास आए थे। उन्हें याद दिलाने के लिए प्रभु आपका काम पूरा हुआ। अब इस धराधाम से प्रस्थान कीजिए और अपने धाम में विराजिए।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
गुरुदेव ने उन ऋषि की बात सुनी और कहा, हमें समझ नहीं आ रहा। हम तो यहां कोई राम राज्य स्थापित नहीं करना चाहते थे। न ही किसी राजवंश से आए हैं। कोई राज्य या शासन भी नहीं चलाया। हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने जैसे चलाया, चल लिए। उनके इशारे पर चलते हुए सत्तर वर्ष का यह जीवन बिता लिया। अब क्या करें? आप ही बताइए।

गुरुदेव से यह संवाद और भी लंबा खिंचता। सीढ़ियों पर किसी के आने की आहट हुई। उस ऋषि आत्मा ने अपने पोथी पन्ने समेटे और क्षण भर में अपना काय कलेवर बदल कर मानवी रूप में आ गई। मानवीय कलेवर धारण करते हुए उस दिव्य आत्मा ने कहा, 'अब बस हुआ। जिस सिद्धलोक से आए हैं, वहां का भी ध्यान कीजिए। संसार को चलाने वाले यति योगी अनाश्रित हो रहे हैं। उन्हें कहीं से संरक्षण नहीं मिल रहा। अब बहुत हुआ पूज्यवर।' उन महापुरुष ने कहा और उठने को हुए। तब तक सीढ़ियों पर आ रही आहट द्वार पर आ गई थी। गुरुदेव ने उस आकृति की ओर देखा और पूछा क्या खबर लाए हो बेटा। उस आकृति ने द्वार पर ही खड़े खड़े कहा हिमालय की तराई क्षेत्र से कुछ परिजन आए हैं। शक्तिपीठों का संकल्प लेना चाहते हैं।

गुरुदेव ने कहा, 'अब तुम लोग ही संकल्प ग्रहण करा दो। उन्हें माताजी के पास ले जाओ।' यह पहला क्षण था जब गुरुदेव ने कोई पुण्य संकल्प किसी और की साक्षी में करने के लिए कहा हो। फिर उन्होंने कहा, हम जिन दिनों अज्ञातवास में थे, तब भी तो यह सब होता था या नहीं। संकल्प, अनुष्ठान, दीक्षा, संस्कार, संरक्षण आदि की व्यवस्था माताजी की देखरेख में ही होती थी। अब आगे से वही यह सब करेंगी। हम दूसरे कामों में लगेंगे। वे ज्यादा जरूरी हैं। वे कार्यकर्ता द्वार से ही लौटने लगे। पलटते हुए फिर ठिठके और उन विभूति को निहारा जो गुरुदेव के सामने बैठे थे। लेकिन वहां तो कोई नहीं था। कहीं भ्रम तो नहीं हुआ है। विचार आया। आंखें मली और गौर से देखा। उस स्थान पर एक छायाकृति दिखाई। पहचानने की कोशिश करते कि वह आकृति फिर लुप्त हो गई। अब उन्होंने कोई प्रयास नहीं किया ओर चुपचाप जैसे आए थे, वैसे ही सीढ़ियां उतरते हुए लौट गए। उस दिन सन १९८४ की रामनवमी थी। शान्तिकुञ्ज में करीब ढाई हजार कार्यकर्ता नवरात्र अनुष्ठान की पूर्णाहुति कर रहे थे। सूचना आई कि साधक प्रणाम करने आ रहे हैं। नीचे लंबी कतार लगी हुई है। गुरुदेव ने कुछ नहीं कहा। दाहिना हाथ उठाया और बोले 'अब बस।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुरुदेव के जीवन और कृतित्व का अविज्ञात रहने वाला अध्याय खुल गया था। इसे बाद में, शायद उस दोपहर को ही सूक्ष्मीकरण में प्रवेश का नाम दिया गया। गुरुदेव अब किसी से मिलेंगे या नहीं, मिलेंगे तो कब और किससे मिलेंगे, उनका प्रत्यक्ष दर्शन कैसे होगा, कब होगा आदि प्रश्न साधकों के मन में उठे तो सही पर अनुत्तरित ही रह गये।

सीमित संपर्क

परिजनों और अतिथियों से गुरुदेव का मिलना जुलना पहले ही सीमित हो गया था। जिस दिन की यह घटना है उस दिन लगभग विराम लग गया। समझा गया कि वही लोग मिल सकेंगे जिन्हें गुरुदेव बुलायेंगे। लेकिन धीरे धीरे यह अपेक्षा ऐसे ढंग से पूरी होने लगी जिसकी कल्पना नहीं की गई थी। गायत्री नगर में प्रवेश द्वार के पास बनी सजल श्रद्धा, प्रखर प्रज्ञा के सामने ही परिजन अपनी बात कहते और उन्हें लगता कि गुरुदेव से प्रत्यक्ष संवाद हो रहा है।

सूक्ष्मीकरण का निर्णय लेने से पहले गुरुदेव ने परिजनों को तरह तरह से संकेत दिये थे। एकाधिक अवसर पर कहा था कि आने वाला समय गहन संकटों और चुनौतियों से भरा हुआ है। इन आकलनों की पुष्टि विज्ञान जगत भी कर रहा था। सन १९८१ से उभरने वाले सौर कलंक, उसी वर्ष १८ फरवरी को होने वाला असाधारण सूर्यग्रहण, बृहस्पति ग्रह की क्षुब्ध स्थिति आने वाले दिनों के अत्यंत कष्टकर होने की घोषणा कर रही थी। इन अशुभ आशंकाओं को टालने के लिए विशेष साधना पर जोर दिया गया। परिजनों को याद होगा कि गुरुदेव ने १९८० से १९८४ तक जागृत आत्माओं से विशिष्ट साधना क्रम अपनाने के लिए कहा था। इस साधना में प्राण आकर्षण, नियति संतुलन, आहार विहार के संयम, गायत्री यज्ञों के विशेष आयोजन, सत्प्रवृत्ति संवर्धन और दुष्प्रवृत्ति निवारण जैसे प्रयोग शामिल हैं।

युगसंधि की वेला

अशुभ आशंकाओं को शुभ व कल्याण की दिशा में मोड़ने के लिए उन दिनों एक विलक्षण कार्ययोजना प्रस्तुत की गई थी। सन १९८० से २००० के बीस वर्षों को युगसंधि वेला बताते हुए उस अवधि को चार पंचवर्षीय योजनाओं में विभाजित किया गया। विशिष्ट साधना उपासना इस युगसंधि वेला के प्रथम चरण का अनुष्ठान था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्नीस शक्तिपीठों में प्राण प्रतिष्ठा-स्थापना कार्यक्रमों और अगणित भूमिपूजन आयोजन सम्पन्न करने के बाद गुरुदेव ने प्रवास कार्यक्रम स्थगित कर दिए। तब भी परिजनों को अप्रिय और अशुभ लगा था। भावनाशील परिजनों ने अपने कार्यक्रम जारी रखने का अनुरोध किया तो उन्हें समझाया भी। फिर भी कार्यकर्ताओं का भावुक मन नहीं माना और जगह जगह से अपना निवेदन लेकर वे शान्तिकुञ्ज आने लगे। गुजरात में बड़ोदरा के पास से मनसुख भाई और आंध्रप्रदेश में हैदराबाद से शिवरत्नम के दौड़े चले आने का किस्सा मशहूर है। १९८२ के शुरुआती महीने रहे होंगे जब इन परिजनों ने आकर गुहार मचाई। मनसुख भाई ने तो हठ ठान लिया कि गुरुदेव आपने अपना निर्णय नहीं बदला तो हम लोग यहीं बैठकर उपवास करेंगे। उनका साथ देने के लिए शिवरत्नम और दूसरे परिजन भी आगे आये।

गुरुदेव ने कहा कि दो तीन दिन अभी यहीं रुक जाओ। इसके बाद भी तुम्हारा निर्णय नहीं बदला तो मैं तुम्हारी बात अपने गुरुदेव के सामने रखूंगा। उनसे अनुमति लूंगा। मनसुख भाई और शिवरत्नम को सुनकर आश्चर्य हुआ। मनसुख भाई ने तो पूछ ही लिया कि आप अपने इन कार्यक्रमों, छोटे छोटे फैसलों के लिए भी अपनी मार्गदर्शक सत्ता से पूछते हैं क्या? गुरुदेव चुप रहे। मनसुख भाई के साथ आये एक अन्य कार्यकर्ता ने कहा कि यह छोटा मोटा निर्णय नहीं है भाई। धुंआधार चल रहे आयोजनों को बीच में रोक देना मामूली बात थोड़े ही है। फिर गुरुदेव तो हर काम दादागुरु से अनुमति लेकर ही करते हैं। उन कार्यकर्ता ने ऐसे निर्णयों की एक फेहरिस्त ही सुना दी। जिसमें पिछले फैसलों को पलटा गया था। इन फैसलों में राजनीति से अचानक उपराम होने, बार-बार अपना निवास (आगरा, मथुरा, हरिद्वार और हिमालय) बदलने, कई नए आरंभ अचानक रोक देने, गायत्री परिवार की लोकप्रियता बढ़ने पर उसके सदस्यों की छटनी करने लगने जैसे निर्णय उन कार्यकर्ता को याद आ गये। उनके साथी परिजन ने स्थितियां बदलते ही नये निर्धारण कर लेने के बारे में बताया तो मनसुख भाई ने कहा, 'हमारा प्रयत्न विफल जायेगा क्या?'

उन साथी ने कहा 'अभी से क्यों यह सब कहा जाए। गुरुदेव ने तीन दिन रुकने के लिए कहा है तो देखते हैं। या तो हमारा मन बदलता है अथवा उनका फैसला।' यह बातचीत हुए दो ही दिन बीते थे कि मनसुख भाई को लगा, उन्हें ही अपना हठ छोड़ना पड़ेगा। शान्तिकुञ्ज में उन दिनों प्रत्यक्ष रूप से ऐसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गतिविधियां चल रहीं थी। जिन्हें देखते हुए गुरुदेव के प्रवास स्थगित रहने में ही सार समझ आया। देखा कि आश्रम को जागृत तीर्थ बनाने के लिए सूक्ष्म स्तर पर भी कई प्रयोग चल रहे हैं। गुरुदेव दिन में दो तीन बार गायत्री नगर क्षेत्र में आते। यहां हो रही संरचनाओं की प्रक्रिया देखते। और निर्माण में लगे लोगों को निर्देश देते। आश्रम में गायत्री परिवार के सदस्यों का आना जाना तो लगा ही रहता, इन तीन दिनों में कई विशिष्ट व्यक्ति भी आते जाते देखे गये। उन्होंने गुरुदेव से अपने काम के बारे में पूछा, परामर्श लिया और मार्गदर्शन मांगा।

गुरुदेव हर जगह

जिस कमरे में मनसुख भाई और उनके साथी ठहरे थे, वहीं पास वाले कमरे में तिरुअनंतपुरम के एक वैज्ञानिक दयानिधि वर्धन (डी. वर्धन) भी आये हुए थे। बातों ही बातों में उन्होंने बताया कि केरल की कुछ पश्चिमी रुझान वाली संस्थाएं यज्ञ अग्निहोत्र पर काम कर रही हैं। उनका उद्देश्य इस विज्ञान को हथिया लेना है। हम लोग अपनी विद्या को अपने पास ही बचाये रखना चाहते हैं। गुरुदेव से इस बारे में परामर्श किया है। मनसुख भाई ने पूछा कि आपको ठीक लगे तो हमें बताइये न कि गुरुदेव ने आपका क्या समाधान किया। इस पर डी. वर्धन ने बताया कि गुरुदेव ने आज ब्रह्मवर्चस देख आने के लिए कहा है। वहां यज्ञ अग्निहोत्र की सूक्ष्म और विशेष सामर्थ्य पर अनुसंधान चल रहा है। प्रयोग भी हो रहे हैं।

डी. वर्धन पहली बार शान्तिकुञ्ज आये थे। मनसुख भाई ने ब्रह्मवर्चस आरण्यक के बारे में अपनी समझ और जानकारी के बारे में बताया। डी. वर्धन ने कहा कि वहां जाकर देखते हैं। इस बारे में और पता चलेगा। गुरुदेव की प्रेरणा हुई तो केरल में भी हम लोग इसी तरह की संस्थापना करेंगे। सुनकर मनसुख भाई के मन में विचार आया कि अपनी बात भी कर ही ली जाए। उन्होंने कहा कि आप लोग तिरुअनंतपुरम में ब्रह्मवर्चस जैसी योजना शुरु करेंगे तो वहां गुरुदेव को भी ले जाएंगे क्या? पूछने के बाद वे थोड़ा झेंपे। लगा कि क्या बचकाना बात कह दी है। डी. वर्धन ने कोई खास प्रतिक्रिया तो नहीं की सिर्फ इतना ही कहा कि हम अभी विचार ही कर रहे हैं। संस्थान बनाते हैं तो गुरुदेव जाएंगे या उनके प्रतिनिधि, यह देखना उनका काम है। मुझे तो लगता है कि वे यहां से सब कुछ संचालित, आयोजित कर सकते हैं। उन्हें कहीं आने जाने की आवश्यकता शायद नहीं है। मनसुख भाई ने यह उत्तर सुना तो पहली बार लगा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि वे लोग व्यर्थ ही हठ करते हुए यहां आए हैं। क्या यह उचित नहीं है कि गुरुदेव के प्रयास जारी रखने के बजाय उनके मिशन और संदेश को नये क्षेत्रों में फैलाया जाए। यह विचार आते ही मनसुख भाई ने अपना माथा झटका और वापस अपनी जिद पर सवार हो गये।

क्षेत्रों में प्रवास स्थगित हो जाने के बाद कार्यकर्ताओं का आना जाना बढ़ गया था। जगह जगह बन रहे शक्तिपीठों और प्रज्ञा संस्थानों के जरिये एक तो नये कार्यकर्ता जुड़ रहे थे, दूसरे गुरुदेव के यात्रा कार्यक्रमों को लेकर परिजन जिस तरह व्यस्त हो जाते थे उससे भी उन्हें अवकाश मिल रहा था। कामाख्या (असम) की ओर से आए साधकों की मंडली उन दिनों शान्तिकुञ्ज में कुछ परिजनों का ध्यान आकर्षित किए हुए थी। बालकिन साव, चंद्रिका प्रसाद, अवनी शरण और रमेश नहलानी जिस जगह ठहरे थे वहां कुछ उत्सुक कार्यकर्ता भी थे। बालकिन साव उन्हें बता रहे थे कि इस बार नवरात्रियों में कामाख्या आए कुछ तंत्र साधकों ने गायत्री मंत्र के तान्त्रिक प्रयोग किए हैं। उत्सुक परिजनों ने उन प्रयोगों के बारे में जानना चाहा। उनके अनुसार तो तंत्र का अर्थ ही मद्य, मांस, मीन आदि मकारों का खुला प्रयोग था। बालकिन ने कहा कि हम लोग भी यही समझते थे। जब सुना कि शक्तिपीठ में कुछ उपासक गायत्री का यह प्रयोग करने वाले हैं तो हम लोग वहां गए। उनसे कहने लगे कि गायत्री तो परम सात्विक भावनाओं से प्रसन्न होने वाली शक्ति है। आप तंत्र से इसे क्यों दूषित कर रहे हैं? इस पर संकल्प ले चुके साधक ने पास रखा तकिया उठाया और पूछा न तो आप अपनी जगह से हिलें और न ही मैं यहाँ से उठूं, अब बताइये इस तकिये को आप तक कैसे पहुंचा सकता हूं।

साव उन साधक से तीन चार मीटर की दूरी पर थे। उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। उत्तर शायद तुरंत सूझ नहीं रहा था। उन साधक ने अपनी जगह पर बैठे-बैठे ही तकिया उठाया और साव की तरफ फेंका। दोनों में से कोई भी अपनी जगह से नहीं हिला और तकिया जहां पहुंचना था वहां पहुंच गया। उन साधक ने अब कहा बन गयी न बात। तंत्र इसी का नाम है। अपने आपको विस्तार देने का नाम तंत्र है। वह न वाममार्गी होता है और न ही अभिचार कर्म वाला। बालकिन साव ने बताया कि उन साधक ने इसके बाद गायत्री तंत्र की जो व्याख्या की, वह हम लोगों को अभिभूत कर रही है। गायत्री महाविज्ञान में गुरुदेव ने गायत्री के तंत्र प्रयोगों का जिक्र किया है। उन साधकों को देख सुनकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
लगा कि उन्होंने गुरुदेव द्वारा इंगित इन प्रयोगों के अभ्यास की कोशिश भी की है। इसके बाद साव ने उन प्रयोगों के अनुभव भी बताये। एक तंत्रमार्गी साधु के बारे में बताया जो कह रहा था कि तुम लोग यहां क्या कर रहे हो। अपने पिता (गुरु) के घर जाओ। वहीं निवास करो। इन दिनों तो कम से कम उनके पास ही रहना चाहिए। गुरुसत्ता के आसपास अमृत झरता है।

अहं पर विजयी अनुग्रह

इधर मनसुख भाई और उनके साथियों का शान्तिकुञ्ज में तीसरा दिन पूरा हो रहा था। मन स्थिर नहीं हो रहा था। कि गुरुदेव के सामने अपनी बात दोहरायें या नहीं। संयोग कहें या सौभाग्य कि उस दिन गुरुदेव किसी कार्यक्रम के सिलसिले में गायत्री नगर की ओर आये। मनसुख भाई को लगा कि अच्छा मौका है। वह प्रणाम करने के लिए तेज कदमों से उनकी ओर बढ़े। पास पहुंचते ही गुरुदेव ने पूछा 'तुम्हारे तीन दिन पूरे हो रहे हैं बेटा! क्या सोचा? अभी रुकोगे या जाओगे?'

www.vicharkrantibooks.org

मनसुख भाई को लगा कि भीतर ही भीतर जो उद्वेलन चल रहा था वह रुक गया है। झील में पानी जैसे ठहरने लगा है। कुछ देर किसी पत्थर के गिरने पर जो हिलोरे उठने लगीं थीं वे शांत हो गयी हैं और साफ सुथरे जल में दृश्यबिंब स्थिर हो रहा है। गुरुदेव ने पूछा ही था कि मनसुख भाई ने शांत और स्थिर मन से कहा 'आप जैसा कहें गुरुदेव।'

'भगवान जिस तरह हम लोगों से काम लेना चाहें लेने दो। उसे अपनी इच्छा के अनुसार चलाने की कोशिश मत करो।' गुरुदेव के इन दो वाक्यों ने मनसुख भाई का संशय साफ कर दिया। अब वहां कोई दुविधा नहीं रह गयी थी। आग्रह भी नहीं था। उसने देखा गुरुदेव आगे निकल रहे हैं। वह लौटकर अपने कमरे में आया और साथियों से बोला कि हम लोग गुरुदेव से आग्रह और हठ करने की बजाय उनकी बात मानें इसी में भला है।

संगी साथियों के साथ थोड़ी देर बातचीत चलती रही फिर वे उठे और गायत्री नगर में बन रही प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा की छतरियों की ओर चले। निर्माण कार्य लगभग पूरा हो चुका था। उसके आसपास खाली पड़ी जगह पर कुछ साधक आसन बिछाये बैठे ध्यान का अभ्यास कर रहे थे। मनसुख भाई और दूसरे सदस्य भी पास ही बैठ गये। कुछ मिनट बीते होंगे कि ध्यान की गहराई में जाने की अनुभूति हुई तो लगा कि आसपास और भी कई लोग ध्यान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर रहे हैं। जो लोग सशरीर वहां बैठे थे ध्यान कर रहे साधकों की संख्या उन सबसे कई गुना अधिक थी। उनके श्वास उच्छवास की आवाजें सुनाई दे रही थीं। पूरक और रेचक की गति इतनी लयबद्ध थी कि लगता था कि कई लोग नहीं उन सबका समुच्चय एक विराट इकाई की तरह प्राणायाम का अभ्यास कर रहे हैं। एक ही लय ताल में सैकड़ों लोग श्वास लेते और छोड़ते प्रतीत हो रहे थे। पता नहीं कितनी देर बैठे जब आँखें खोली तो देखा कि और साधकों की भी पलकें खुली हुई हैं। वे अपने आसपास बैठे साधकों को देखने लगे हैं। मानो पूछ रहे हों कि जो अनुभूति हमें हुई वह आपको भी हुई क्या?

शताब्दी अंत के संकट

दो साल पहले १९८१ में अंतर्राष्ट्रीय जगत में स्वास्थ्य विज्ञानियों ने एक नयी बीमारी की सूचना दी थी। 'एड्स' नामक इस संक्रामक बीमारी के बारे में कहा गया था कि अकेला यही रोग कुछ ही वर्षों में पूरी मानव जाति को नष्ट कर सकता है। रोग का कोई उपचार आज तक नहीं ढूंढा जा सका है। सिर्फ परहेज ही उसने बचने का उपाय है। एक बार चपेट आ जाये तो फिर परहेज भी कोई काम नहीं देगा। इस बीमारी पर अब तक कितने ही शोध प्रयोग किए गये लेकिन कोई निवारक उपचार नहीं मिला।

करीब चार साल पहले एक अंतरिक्ष यान अपनी कक्षा से भटक गया वह पृथ्वी की ओर दौड़ने लगा। उसकी गति और संहारक क्षमता के आधार पर आशंका जताई गई कि यदि वह पृथ्वी के किसी भूभाग पर गिरा तो खंडप्रलय जैसी स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। ध्रुव प्रदेशों में गिरा तो चारों ओर विनाश ही विनाश नाच उठेगा। जरूरी था कि वह समुद्र में ऐसी जगह गिरे जहां का जल स्तर अत्यंत गहरा हो। उस गहराई में वरुण देव की शामक शक्ति ही उसे शांत कर सकती है। ग्यारह जुलाई की रात तक इस आकाशीय प्रयोग शाला ने लाखों लोगों का चैन उड़ा दिया।

करीब छह महीने में पृथ्वी के लगभग ३५००० चक्कर लगाकर स्काईलैब जब आस्ट्रेलिया के पास समुद्र में गिरा तो मनुष्य जाति ने चैन की सांस ली। स्काई लैब जिस गति और दिशाधरा से घूमता दौड़ता हुआ पृत्वी की ओर आ रहा था, उससे लगता था कि यह ठोस जमीन पर ही गिरेगा। समुद्र में गिरने की संभावना पांच प्रतिशत बताई जा रही थीं। यह पांच प्रतिशत संभावना कैसे सौ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
प्रतिशत में बदल गई ? इस प्रश्न का हल ढूंढते हुए वैज्ञानिक अद्भुत संयोग और अध्यात्म विद ईश्वरीय अनुग्रह अथवा किसी विराट आध्यात्मिक प्रयोग की परिणति बताते हैं।

पिछले दस वर्षों में दुनिया ने इतने बड़े उतार चढ़ाव देखे कि इतिहासकारों के मुताबिक पिछले दस हजार वर्षों में नहीं देखे होंगे। संयुक्त राष्ट्र की संस्कृति और इतिहास परिषद द्वारा जारी विवरणों के मुताबिक १९७१ से १९८० के बीच दुनिया भर में अठ्ठाईस सौ छोटे बड़े युद्ध लड़े गए। भारत पाक, वियतनाम (दक्षिण), ईरान-इराक, इजराइल मिस्र के बड़े युद्ध भी इनमें शामिल हैं जिनमें हजारों लोगों की जानें गईं। परखनली शिशु और अंतर्राष्ट्रीय आदान प्रदान के अलावा अंतरिक्ष यानों के प्रक्षेपण जैसी वैज्ञानिक सफलताएं छोड़ दें तो मनुष्य जाति ने ऐसा कुछ भी हासिल नहीं किया, जो उससे सभ्य, और संस्कारित और मेधावी होते जाने को सिद्ध कर सके।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इस अवधि में शिक्षा, सुविधा और संपन्नता का एक नखलिस्तान जरूर उभरता दिखाई दिया। किंतु दुनिया की अस्सी प्रतिशत से ज्यादा आबादी भूख और गरीबी के निम्नतम स्तर पर ही जीती दिखाई दी। इस बीच इकोरस जैसा क्षुद्र ग्रह सौर कलंक और आकाशीय उत्पात भी मनुष्य जाति को भयभीत करने में जुटे हुए थे। गुरुदेव ने १९८१ के बाद भारत के महाशक्ति बनाने का आश्वासन दिया। १९८२ के आसपास अपनी बाहरी गतिविधियों को समेटना शुरु किया तो परिजनों से कहा कि नया युग आरंभ होने से पहले कुछ कषाय कल्मष भी ऊपर आयेंगे। उनसे चिंतित नहीं होना है। समुद्र मंथन में भी तो पहले कूड़ा करकट, अनीति अमंगल और गरल विष निकला था। अमृत तो उस सबके बाद की निष्पत्ति है।

'भगवान अपनी दुनिया को हेय स्थिति में पड़े नहीं रहने देना चाहते। वे इसे उबारेंगे और उबारेंगे इसलिए कि भारत का उत्थान आवश्यक है। उसके बिना दुनिया भी नहीं उठेगी।' गुरुदेव ने उन दिनों मुलाकात के लिए आयी एक संत विभूति से कहा था। इस पर उन संत ने कहा कि भगवान भारत को क्यों उठाना चाहते हैं गुरुदेव ? क्या उन्हें भारत से विशेष स्नेह है ?

'विशेष स्नेह नहीं' गुरुदेव ने कहा 'भगवान प्रत्येक कल्प में एक देश को चुनते हैं। उसे सजाते संवारते और वहाँ प्रकाश उत्पन्न करते हैं। जब कभी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वह मनुष्य को उसके किये का दंड देना चाहते हैं तो पहले चुने हुए देश को ही श्री और संपदा से हीन करते हैं। उस देश को कुछ समय के लिए दबा देते हैं।'

'१९७१ से १९८१ के बीच दुनिया में जो कुछ हुआ अब उसका उलटा चक्र घूमना है। प्रकृति का चक्र अब लोम गति से घूमेगा और आने वाले बीस वर्षों में (सन २००० तक) शुभ चिन्ह दिखने लगेगें । फिर २०२० तक सुखद परिणाम आने लगेंगे। मनुष्य अपने वर्तमान और भविष्य के प्रति आश्वस्त दिखाई देगा।' उन्हीं संत से गुरुदेव ने अगले अन्य संदर्भ में कहा कि गायत्री परिवार के सदस्यों को इस तरह का आश्वासन और निर्देश पहले कई बार दिया गया है।

१९८३ की रामनवमी के बाद गुरुदेव ने गायत्री नगर में आना जाना भी कम कर दिया। वहां जाने पर भी परिजन घेर लेते थे। नगर के मुख्य द्वार पर बनी छतरियों का काम पूरा हो गया था। अभी तक परिजन सोच रहे थे कि उन्हें क्यों बनवाया जा रहा है ? क्या उपयोग होगा ? शून्य और निराकार की प्रतीक हैं या यहां से कोई प्रेरणा प्रवाह उत्पन्न होगा।

रामनवमी पर उन्होंने मिलना जुलना लगभग नब्बे प्रतिशत कम कर दिया। उसी समय माताजी के माध्यम से संदेश पहुंचाया। गुरुदेव ने कहा कि शरीर छोड़ने के बाद भी वे यहीं रहेंगे। उनके पार्थिव अवशेष परिसर से बाहर नहीं जायेंगे। शरीर जिन पंचतत्वों से बना है वे तत्व बदले हुए रूप में इसी तीर्थ में निवास करेंगे। उनके जाने के पांच वर्ष बाद माताजी को भी इहलीला का संवरण कर लेना है। और वे भी अपने पार्थिव अवशेषों सहित यहीं विद्यमान रहेंगी।

संदेश सुनने के बाद परिजन व्यथित तो हुए लेकिन मिलना जुलना रुक जाने पर गुरुदेव की उपस्थिति और सघन अनुभव होने लगी। प्रतिदिन प्रणाम का क्रम ही तो बंद हुआ था। गुरुदेव जब मिलना चाहते या अपनी आवश्यकता जोर मारती तो बुलावा आ जाता। लेकिन यह सक्रिय और जीवंत होने का दौर था।

गुरुदेव ने नैष्ठिक साधकों को उच्चस्तरीय साधनायें सिखाना आरंभ किया। प्रत्यक्ष उनसे भेंट नहीं होती थी लेकिन साधना के समय कई परिजनों को लगता कि वे सामने बैठे ध्यान करा रहे हैं। अपने उच्चार का अनुकरण करने के लिए कहते हुए जप करा रहे हैं। और कभी कभार तो पलकों को भी ठीक से खोलना और बंद करना सिखा रहे हैं। सामने बैठे किसी शिक्षक या इंस्ट्रक्टर की तरह भी उस समय गुरुदेव के सान्निध्य की अनुभूति होती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रतीति की भावभूमि

प्रतीति भाव जगत में होती है या प्रत्यक्ष? गुरुदेव के पास किसी ने लिखकर भेजा था। जैसा कि कभी कभार होता था गुरुदेव उस समय गायत्री नगर में अपने परिजनों से कुछ कहने के लिए आये थे। प्रवचन देने का छुटपुट सिलसिला तब भी किसी रूप में जारी था। किंतु इस बार गुरुदेव ने मंच पर आने का निश्चय किया। उस संदर्भ को स्पष्ट करने से पहले गुरुदेव का उत्तर बता दें। लिखकर भेजे गये जवाब में गुरुदेव ने प्रवचन में कहा 'यह प्रतीति करने वाले पर निर्भर'है। भाव शरीर के तल पर जागृत और चैतन्य साधक ने पुकारा हो तो प्रतीति प्रत्यक्ष हो सकती है। ठीक उसी तरह जैसे हम और आप आम्मने सामने बैठकर मिल रहे हैं। लेकिन भाव शरीर अभी स्वाभाविक स्थिति में है, प्रत्यक्ष और सूक्ष्म का अंतर बना हुआ है तो प्रतीति हृदय चक्र में ही होगी। स्वप्न की भांति या गंध, रस और रूप की भांति। उस स्थिति में आप किसी को छूना चाहें तो कठिन है।'

जल प्लावन के उदाहरण से और स्पष्ट करते हुए गुरुदेव ने समझाया कि मनु ने उस समय सृष्टि बीजों को नौका में रखकर सुमेरू पर्वत पर आसन जमा लिया लिया। नौका बंधी हुई थी। चारों ओर जल ही जल। लेकिन जल से नौका बांधी तो नहीं जा सकती। इसलिए मनु ने सुमेरू का आश्रय लिया वह हिमगिरि के रूप में विद्यमान था। हिम और जल में सघनता और तरलता का ही अंतर है। हिम जल का ठोस रूप है और जल उसी हिम का तरल रूप। दोनों तत्वों या रूपों में से किसे सही कहें? बर्फ को या पानी को? यह प्रसंग पूरा करते हुए गुरुदेव ने कहा कि आपका मन कहे तो इस बारीकी में जाइये अथवा जैसा अनुभव होता है अपने लिए वही सही मानें। ध्यान रहे सिर्फ अपने ही लिए। उसे किसी दूसरे को परखने के लिए आधार न बनायें। जो जिस आत्मिक और आंतरिक स्थिति में जी रहा है, उसे वहीं से आगे बढ़ने दें। उसकी यात्रा में अपने अनुभवों का रोड़ा न अटकायें।

गुरुदेव ने तो उल्लेख नहीं किया लेकिन उस उत्तर को समाचार और लेख का स्वरूप देते हुए पत्र पत्रिकाओं में भगवद् गीता का हवाला भी दिया। अर्जुन को उपदेश देते हुए वहां श्रीकृष्ण कहते हैं कि मुझे जो जिस रूप में भजते हैं, उन्हें उसी रूप में प्राप्त होता हूँ। ज्ञानीजनों को चाहिए कि कम समझदार और कम शिक्षितजनों को अपने अनुभव या निष्कर्षों से भ्रमित न करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपवादों का क्षरण

प्रसंग वश यह उल्लेख आवश्यक होगा कि मिलना जुलना कम कर देने के कारण गुरुदेव के सम्बंध में कुछ अफवाहें फैलने लगी थीं। लोग यों अत्यंत आवश्यक होने पर उनसे मिलते ही थे पर यह समय सीमित कर दिया गया था। साल छह महीने पहले गुरुदेव सैकड़ों लोगों से एक साथ–एक ही बार में मिल लेते थे। उनसे किसी भी वक्त मिला जा सकता था। अब उन्होंने डेढ़ दो घंटे का समय ही नियत कर दिया था और वह भी चुने हुए व्यक्तियों के लिए ही। उन व्यक्तियों का चयन उनकी आवश्यकता, पात्रता और अभीप्सा के आधार पर किया जाता था। इस बदलाव का लाभ उठाने के लिए किसी समय गुरुदेव के निकट रहे लोगों ने अपने आपको उनका प्रतिनिधि या उत्तराधिकारी बताना शुरु कर दिया। गुरुदेव ने हजारों बार स्पष्ट किया है कि वे कोई परंपरा नहीं शुरु कर रहे हैं। गायत्री परिवार के सभी परिजन और भारतीय धर्म संस्कृति के अनुयायी, यहां तक कि धर्म विश्वास की अन्य धारा के व्यक्ति भी उन्हीं के अभिन्न रूप हैं। जहां तक उनकी आध्यात्मिक विरासत या उत्तराधिकार का सवाल है मठों और दूसरे आश्रमों की तरह किसी भी व्यक्ति को नहीं सौंप रहे हैं। जो भी है महाकाल की सृजन सेना का समान भागीदार है, ज्ञान यज्ञ की लाल मशाल है।

गुरुदेव की इन दो टूक बातों के बावजूद कतिपय लोगों ने अपने आपको उनका एकमात्र उत्तराधिकारी बताना शुरु किया। भारत में तो ऐसे तत्वों की दाल कम ही गली। पश्चिमी देशों में वे कुछ कामयाब होने लगे। कुछ धर्मध्वजियों ने तो अपनी वल्दियत बदलकर भी काम शुरु कर दिया। धर्म के नाम पर लोगों को ठगने वाले ऐसे धर्मध्वजियों पर उनकी अपनी आत्मा के सिवा कोई और रोक नहीं लगा सकता था। उन लोगों ने गुरुदेव के सम्बंध में अशुभ और अप्रिय अफवाहें फैलाना शुरु किया तो वहीं के नैष्ठिक साधकों ने गुरुदेव से सामने आने का अनुरोध किया। गुरुदेव हमेशा की तरह प्रवचन मंच पर आये और परिचित शैली तथा स्वर में परिजनों को संबोधित करने लगे। यह शुरु करते ही किसी की आलोचना या खंडन किये बगैर ही अपवादों का अपने आप शमन हो गया। जब कहीं कोई विपर्यय नहीं रहा तो गुरुदेव की एकांत साधना पहले की तरह फिर चलने लगी। परिवार और उसमें सम्मिलित होकर युग देवता की साधना कर रहे साधकों के मन में विक्षोभ दूर हुआ। फिर इसके बाद गुरुदेव ने उन तत्वों के लिए क्षमादान की घोषणा कर दी जो उनके एक मात्र प्रतिनिधि होने का दावा कर रहे थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रतिभा और अमानत

मिलना जुलना सीमित कर देने के बाद गायत्री परिवार के सदस्यों की संख्या बेतहाशा बढ़ने लगी। पर्व त्यौहारों पर यहां आने और प्रणाम करने के लिए कतार लगाने वालों की संख्या बीस पचीस हजार तक पहुंच जाती। सभी गुरुदेव को प्रणाम करने, उनका चरण स्पर्श करने के लिए उत्सुक लेकिन अपनी मार्गदर्शक सत्ता के निर्देश पर यह क्रम रुका तो रुक ही गया। प्रणाम दर्शन के लिए उत्सुक जनों को दूर ही रहने और बहुत हुआ तो मन में अनुभव कर लेने का निर्देश था। गायत्री परिवार के अथवा बाहर के कुछ ऐसे महानुभाव भी थे, जिन्हें गुरुदेव की अनुमति मिल जाती। ऐसे आगंतुकों से गुरुदेव बातचीत कर लेते।

उन्हीं दिनों इंडियन एक्सप्रेस पत्र समूह के एक वरिष्ठ पत्रकार गुरुदेव से मिले। उन्होंने राजनीति, अर्थ, समाज आदि विषयों पर लंबी बातचीत की। गुरुदेव ने यही कहा कि मेरी राय में प्रतिभाओं को भगवान का न्यासी बनकर काम करना चाहिए। ईश्वर ने उन्हें यह संपत्ति सौंपी है। वे दी गई प्रतिभा के मालिक नहीं है, उसे भगवान के काम में उसकी विश्व वसुंधरा को सुंदर बनाने के लिए इस का उपयोग करे। अगर अपनी सुख सुविधाओं के लिए अपनी प्रतिभा को काम में लाते हैं तो 'अमानत में खयानत' के दोषी बनते हैं।

उन पत्रकार ने कहा, 'मैं आपके आदेश को जीवन में उतारने की कोशिश करूंगा गुरुदेव।' उन्हें बीच में ही रोकते हुए गुरुदेव ने कहा 'आदेश नहीं निवेदन। इस निवेदन को औरों तक भी पहुंचाइएगा'

वरिष्ठ बुद्धिजीवी ने कहा 'आप इस बात के लिए निवेदन शब्द चुन रहे हैं यह आपका बड़प्पन है। मैं तो इसे आदेश ही मानता हूँ।' बातचीत का समय पूरा होने लगा तो उन पत्रकार ने स्वयं ही उठने का उपक्रम किया। गुरुदेव ने कहा 'बैठिए बैठिए।'

'आपका एक एक क्षण महत्वपूर्ण है।' वे कुछ रुके और बोले, 'मैंने अबसे करीब चालीस साल पहले आपको देवास जिले के एक गांव में यज्ञ कराते हुए देखा है। तब आपके सामने पच्चीस तीस लोगों का समूह था। आज आपका यश चारों दिशाओं में फैल रहा है। पच्चीस तीस हजार आदमी किसी भी पर्व त्यौहार पर आपको प्रणाम करने आ जाते हैं। आप अपने इस यश की एक झलक भी देखना नहीं चाहते। धन्य हैं गुरुदेव।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिन दिनों गुरुदेव ने मिलना जुलना अत्यंत सीमित कर दिया था और उनके दर्शन के लिए आने वालों की संख्या नित्य निरंतर बढ़ रही थी उन दिनों गुरुदेव ने अपनों के नाम एक पत्र लिखा। हजारों लोगों को संबोधित इस पत्र में लिखा था 'चलते समय काफिला इतना लम्बा किंतु मंजिल पर पहुंचने का समय आने तक साथी अंगुलियों पर गिने जा सकने योग्य ही। इसे असफलता कहा जाये? दुर्भाग्य? विधि की विडम्बना? या उस मिट्टी को दोष दें जिससे यात्रियों की कतार तो गढ़ी थी पर संरचना इतनी अनगढ़ कि दो कदम चलते चलते यायावरों की तरह भटकी और मृगतृष्णा की आतुरता में विभ्रांत होकर कहीं से कहीं चली गयी।'

एक और संदेश उसी पत्र के साथ लिखा उसमें गुरुदेव ने कहा 'समूचा समाज और उसका मान्य प्रचलन दुष्टता और भ्रष्टता से भरा है। उसे सहन करते रहने की अभ्यस्त कुसंस्कारिता तभी उखड़ती है जब उसके विरुद्ध विद्रोह का झंडा खड़ा कर लिया जाए। मनोरथ सफल नहीं होने की भविष्यवाणी कोई भी व्यवहार बुद्धि वाला आदमी छाती ठोककर कर सकता है किंतु वास्तविकता यही है कि साहसी लोगों ने आदर्शवादी निर्णय अपनी अंतःप्रेरणा से किए हैं। ईमान और भगवान का परामर्श लेने के अतिरिक्त किसी तीसरे से पूछताछ करने की आवश्यकता पड़ती ही नहीं।'

ये पंक्तियां अखंड ज्योति के पन्नों पर भी छपी थीं। जितने लोगों ने इन्हें पढ़ा उनसे ज्यादा लोगों ने अपने अंतःकरण में उसकी गूंज सुनी। उनमें से कितनों ने ही यहां आने का मन बनाया और जैसा कि श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता में कहा है 'जितने लोग मन बनाते हैं उनमें से गिने चुने ही पग बढ़ा पाते हैं पग बढ़ाने वालों में कोई बिरले ही अपने चुनाव पर स्थिर रहते और आगे बढ़ते हैं। उन आगे बढ़ने वालों में भी कोई ही अपने लक्ष्य तक पहुंचता है।' (७/३)

गुरुदेव के सपनों को साकार करने, उन्हें जीने और जीवन में उतारने वाले लोग कितने हैं यह तो वही जाने। यहां शान्तिकुंज गायत्री नगर और गांव गांव में फैले गुरुदेव के सपनों की छोटी सी झलक पाना जरूरी है। यह झांकी अप्रैल १९८४ के आखिरी सप्ताह से पहले की है। आश्रम को बने तब चौदह वर्ष हुए थे। इस अवधि में थोड़े समय के लिए आए और प्रशिक्षण प्राप्त कर लौट जाने वालों की संख्या बीस हजार के ऊपर थी। अपने आपको इस संस्था का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अंग मानकर जीवनदानी की तरह स्थाई निवास का संकल्प लेने वालों की संख्या पांच सौ से ज्यादा थी। भारत भूमि के छह सौ में से चार सौ पचास जिलों और तीन लाख गांवों में युग शक्ति की उपासना करने वाले दो करोड़ साधक। भारत के बाहर देशों में ७४ जागृति केंद्र और निरंतर प्रवास करती, युग साधना का संदेश पहुंचाती पच्चीस जीप मंडलियां। इस विस्तार के लिए हिमालय के प्रवेश द्वार पर तपस्यारत एक ऋषि आत्मा। श्वेत वस्त्रों से भूषित, अपने कक्ष और बरामदे में चहलकदमी करती हुई, लाखों हृदयों को जगाती, उनमें आलोक बिखेरती उस आत्मा ने संवत दो हजार इकतालीस का पहला सूर्योदय होने से पहले ही वह खिड़की भी बंद कर दी, जहां से बाहर की झलक मिलती थी।

◈◈◈◈◈◈◈

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at

www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org